إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

क़ुर्आन का पैग़ाम

क़ुर्आन का आसान हिन्दी अनुवाद

सन्देशः- इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान

मुफ़क्किरे इस्लाम ह़ज़रत मौलाना सय्यद

अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी (अ़ली मियाँ) (रह़०)

अनुवाद-

मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

(सदर- जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

जमअ़ीयत पयामे अम्न

मर्कज़ुत्तौहीद अल् इस्लामी, अम्न कालोनी (सिकरौरी)

हरदोई रोड, लखनऊ (यू0पी0) इण्डिया–226101

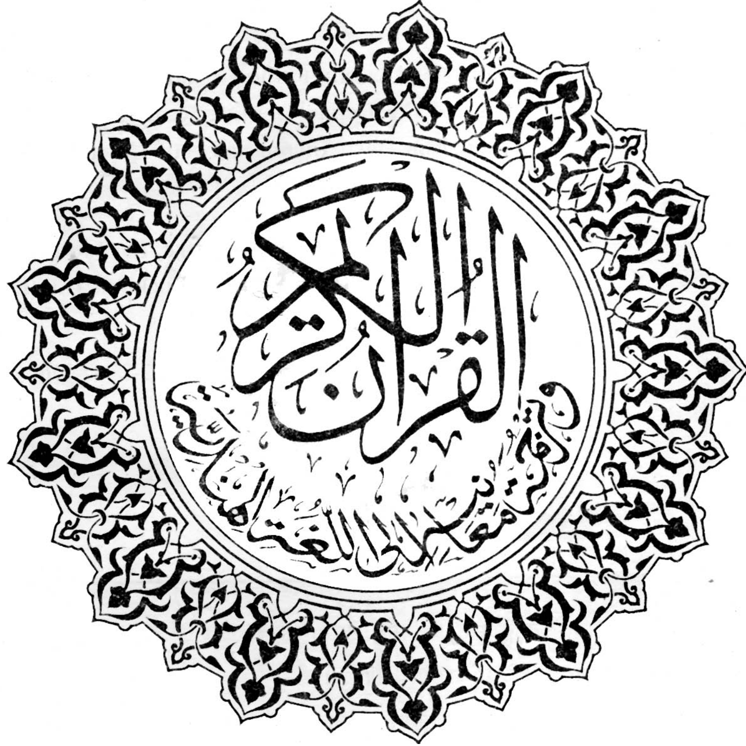
नाम-	क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन का आसान हिन्दी अनुवाद)
अनुवाद और व्याख्या	मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
संस्करण	चौदहवाँ संस्करण
पुस्तक संख्या	5100
वर्ष-	2014
प्रकाशक-	जमअ़ीयत पयामे अम्न

Name :	**Quran Ka Paigam** **(Quran ka Asan Hindi Anuwad)**
Translation :	**Mufti Mohd-Sarwar Farooqui Nadwi**
S. No.	**5100**
Publisher.	**Jamiat Payam-e-Amn, Nadwa Road, Daliganj, Lucknow, U.P. (INDIA)**
Website:	**www.upfngo.org, www.islamicjpamn.com**
Mobile–	**0091– 9919042879, 9984490150**
E- Mail–	**maktaba.pyameamnlko@gmail.com, info@upfngo.org jpa_lko@yahoo.com, ataullah2012@gmail.com**

मिलने के पते

1. मजलिसे तह्क़ीक़ात, नदवतुल उलमा (लखनऊ)
2. सत्य सन्देश फ़ाउन्डेशन 182-A 5 ग्रीन लैण्ड कैम्पस, पोखरपुर, जाजमऊ कानपुर- 9935044343
3. जामिया दारे अरक़म मुहम्मदपुर गौंती, फ़तेहपुर
4. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मुहम्मद अ़ली बिल्डिंग भिंडी बाज़ार, मुम्बई. 400003
5. मुहम्मद असलम काज़मी, मुहल्ला दीवान, निकट तय्यिब मस्जिद देवबन्द- 9760849186
6. मकतबः अल् फ़ुरक़ान, नज़ीराबाद (लखनऊ)
7. आसिफ़ किताब घर, मीना मार्केट जामा मस्जिद रोड, शाह मारूफ़ गोरखपुर, यू०पी०-9415857727
8. सुब्हानिया बुक डिपो, नया मुहल्ला, जबलपुर मध्य प्रदेश- 9424708020

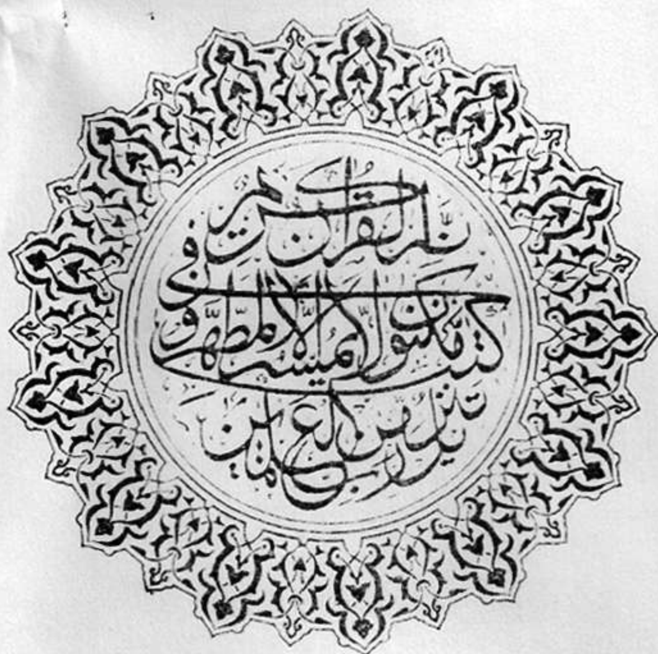
إنا نحن نزلنا الذكر وإنا له لحافظون



क़ुर्आन के अनुवाद की शुरूआत पेज नं० २५ से है,

उस से पहले ''विश्व विख्यात प्रसिद्ध विद्वानों'' के सन्देश, प्रस्तावना, भूमिका, प्राक्कथन में क़ुर्आन का संक्षिप्त परिचय तथा क़ुर्आन की विशेषता से सम्बन्धित बातों का उल्लेख है। और अन्त में फिर कुछ क़ुर्आन व ह़दीस पर गहरी निगाह रखने वाले साहित्यकारों के सन्देश भी सम्मिलित हैं।

انا نحن نزلنا الذكر وانا له لحافظون



पवित्र क़ुर्आन को पाक साफ़ (वुज़ू करके) शुद्ध होकर आदर के साथ अ़मल की नियत से ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उच्चारण का भी ख़्याल रखें।

दो शब्द

यह अनुवाद इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान और दाई़ी मुफ़स्सिरे क़ुर्आन 'ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी (आचार्य) साह़ब' जो हिन्दी और अ़रबी दोनों भाषाओं का ज्ञान रखते हैं, वह इस्लामी 'धर्मशास्त्र' से आ़लिम, फ़ाज़िल और मुफ़्ती, हिन्दू धर्मशास्त्र से आचार्य हैं, इनकी लगभग 180 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनमें महत्वपूर्ण, ह़ज़रत मौलाना यूसुफ़ कान्धलवी (रह०) की ''मुन्तख़ब अहादीस'' का हिन्दी अनुवाद है जो बड़ी संख्या में प्रकाशित हो चुका है इसी तरह इनकी तीस्वे पारः की तफ़्सीर और पाँच-पाँच पारों की तफ्सीर 'तफ़्सीर फ़ारूक़ी' के नाम से प्रकाशित हो रही है। जिसे माशाअल्लाह हर हल्क़े के लोगों ने बहुत पसन्द किया है। अल्ह़म्दु लिल्लाह यह दस्वाँ एडीशन है, इस तर्जुमे में निम्न बातें विशेष रुप से ध्यान में रखी गई हैः

विशेषता-

१- इस के अनुवाद में उन्हीं शब्दों का इस्तिमाल हुआ है जो क़ुर्आनी हैं, और समाज में भी इस्तिमाल होते हैं। जैसे 'ज़ालिम' उर्दू का शब्द है लेकिन आ़म फ़हम है जबकि हिन्दी में उसको 'अत्याचारी' कहते हैं, इस तरह़ 'क़रीब' माने 'समीप' होता है, लेकिन क़रीब सभी लोग समझते हैं इस लिए इसी को इस्तिमाल किया गया है।

२- इस तरह़ वह शब्द जो मुसलमानों के यहाँ तो बहुत इस्तिमाल होते हैं जैसे- रह़मत, मग़्फ़िरत, रह़मान, रह़ीम आदि, लेकिन हिन्दू भाई उनसे बिल्कुल ना वाक़िफ़ होते हैं, तो ऐसे शब्दों की व्याखया ब्रेकेट में कर दी गई है;

३- इसी तरह़ उन शब्दों से एहतियात की गई है जिसके माने पिछली सदी में कुछ थे और अब वही शब्द दूसरे माने में इस्तिमाल होने लगे हैं;

४- इस तर्जुमः में पहले अस्ल क़ुर्आन को सामने रखा गया है, ताकि तर्जुमः अस्ल अ़रबी से क़रीबतर हो, फिर मौलाना फ़तेह़ मुह़म्मद ख़ाँ साह़ब जालनधारी, व मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी (रह०) के तर्जुमें के अलावह दूसरे अनेक तर्जुमों से भी फ़ायदा उठाया गया है।

५- इसी तरह़ इस में पारिभाषिक तर्जुमः के साथ शाब्दिक रिआ़यत भी की गई है, जिसकी वजह से यह कोशिश हर समाज के लिए मुफ़ीद व मक़्बूल बन गई है, चाहे वह ज़्यादा पढ़े लिखे समाज से तअ़ल्लुक़ रखता हो या आ़म लोगों में से हो।

इस तरह यह एक मुफीद तोहफ़ा तमाम इन्सानों के लिए तय्यार हो गया है जिस पर अहम उलमा जैसे ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०) व मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबेअ़ हसनी नदवी, मौलाना मुह़म्मद सालिम क़ासमी देवबन्दी, मौलाना सईदुर्रहमान नदवी, मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी, मौलाना शम्सुल हक़ नदवी, मौलाना अब्दुल क़ादिर नदवी, मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी मद्दज़िल्लहुल आली आदि की तस्दीक़ के प्रमाणित सन्देश भी मौजूद हैं।

25 मई 2011 — प्रकाशक

विषय सूची

❖

-: सन्देश:-

इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान तथा पूरी दुनिया के प्रसिद्ध एवं श्रेष्ठ विचारक (मुफ़क्किरे इस्लाम)

हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०) के शुभ क़लम से-

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन वस्सलातु वस्सलामु अ़ला सय्यिदिल्मुर्सलीन मुहम्मदिन व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अजमअ़ीन

मुसलमानों की ज़िन्दगी में तमाम अ़िबादतों में नमाज़ ही वह अहम और बुनियादी रूकून है जिसे दिन में पांच बार फ़र्ज़ (अनिवार्य) किया गया है, अल्लाह का बन्दा जब अपने पालनहार के सामने बन्दगी के लिए खड़ा होता है तो सबसे पहले उस ज़ात की तअ़रीफ़ और बेशुमार नेअ़मतों का शुक्रिया अदा करता है जो उसके पालनहार ने उस पर किये हैं, यह वह परवरदिगार है जो केवल मुसलमानों का पालने वाला ही नहीं बल्कि तमाम मख़लूक़ को ज़िन्दगी और रिज़्क़ देने वाला और सबसे ज़्यादा उन पर रहम करने वाला है। उसी ने तमाम मख़लूक़ को अपनी क़ुदरत से पैदा किया और उसी का हुक्म सब पर जारी होता है। इस दुनिया की हर चीज़ उसी की मुहताज है,वह एक है उसका कोई साझीदार नहीं,वही सीधी राह दिखाता है। कोई मुसलमान जब भी नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो वह इस सूरः को बार-बार पढ़ता और सुनता है कि इसमें पूरे क़ुर्आन मजीद के पैग़ाम की रूह और खुलासा है। इस सूरः के अन्दर तमाम इन्सानी तबक़ात की ज़रूरतों और ख़्वाहिशों के इख़्तिलाफ़ के बावजूद हर गिरोह और शख़्स की तस्कीन (तसल्ली) का सामान मौजूद है। इस मुख़्तसर सूरः में ज़िन्दगी का पैग़ाम है, उम्मीद और ख़ुशख़बरी है, उस इन्सान के लिए जिसको हर तरफ़ से धुत्कारा जाता है हर तरफ़ से तकलीफ़ों और आज़माइशों के तूफ़ान में जो घिरा हुआ है। माल,क़ुव्वत,मन्सब और सेहत इसका साथ छोड़ देते हैं। महबूबतरीन औलाद भी काम नहीं आती ऐसा कमज़ोर व मुहताज इन्सान सूरः फ़ातिहा पढ़ कर अपने दिली एहसासात व जज़्बात की तर्जुमानी करता है, वह उस रब से मदद मांगता है। जो तमाम मख़लूक़ का पालनहार है। जो रोज़े जज़ा का मालिक है। वही अ़िबादत का मुस्तहिक़ है, वही सीधी राह दिखाता है।

जहाँ तक मुसलमानों का तअ़ल्लुक़ है उनके बच्चों और नई नस्ल के लिए, और दीनी मरकज़ों के लिए, और मदारिस और फ़ायदे न उठाने वालों के लिए, क़दीम अर्सा से उर्दू में इस्लाम के मबादी व तअ़लीमात से वाक़िफ़ कराने के लिए मुतअ़द्दिद किताबें और रिसाले लिखे गये, जिनसे बहुत फ़ाइदा पहुँचा। जब तक फ़ारसी का रिवाज था "माला बुद्दमिन्हु" जैसी किताबें लिखी गईं फिर "तअ़लीमुल इस्लाम" के नाम से कई मुस्तनद उलमा ने मुतअ़द्दिद कुतुब व रसायल लिखे जो इब्तिदाई मदारिस में और कम पढ़े लिखे हल्क़ों में रायज और मक़बूल हैं, और उनसे हज़ारों बल्कि लाखों बच्चों और कम इस्तेअ़दाद के लोगों ने फ़ायदा उठाया, और दीन का इल्म मालूम करने और उन पर चलने का तरीक़ा सिखाया, और मुस्लिम दाअ़ीयाने इस्लाम की कोशिश और खुद फ़ित्रते सलीम के तक़ाज़ा और हिदायते रब्बानी

से हिन्दुस्तान की ग़ैर मुस्लिम आबादी और हमारे हमवतन पड़ोसियों में से हर इलाक़े में बहुत सी जगह सैकड़ों की तअ़दाद में और बहुत सी जगह हज़ारों की तअ़दाद, और बाज़ जगह गाँव के गाँव और इलाक़े में अपने इरादा व इख़्तियार और अपने क़द्रो इन्साफ़ से दीने इस्लाम को क़ुबूल किया।

वक़्त की एक अहम ज़रूरत थी जिसको अज़ीज़ुल क़द्र 'मोलवी मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी ने अन्जाम दिया और वक़्त की एक ज़रूरत और दीन की तफ़हीम व तब्लीग़ व तर्बियत का एक मुतालबा और तक़ाज़ा पूरा किया। इससे पहले विभिन्न किताबचे इनके क़लम से हिन्दी में आ चुके हैं जिनसे हमारे ग़ैर मुस्लिम भाईयों को ख़ासतौर से इस्लाम के बारे में मुफ़ीद मालूमात ह़ासिल हुई। इस बात की बड़ी ज़रूरत है कि आसान हिन्दी ज़बान में ऐसी किताबें बकसरत तय्यार की जाएं, ताकि इस मुल्क में सदियों से रहने वाले शहरी एक दूसरे के मज़हब,अक़ायद,तहज़ीब व तारीख़ से वाक़िफ़ हों, जिससे ग़लतफ़हमियां दूर होंगी, प्रेम व मुहब्बत और भाईचारगी में इज़ाफ़ा होगा।

इस में मुसन्निफ़ ने पहले क़ुर्आन मजीद का तआ़र्रुफ़ इख़्तिसार से कराया है, और बताया है कि क़ुर्आन ही एक ऐसी मह़फ़ूज़तरीन किताब है जो हर प्रकार की तहरीफ़ व तब्दीली से पाक है। जिसे अल्लाह तआ़ला ने इस क़ुर्आन की ह़िफ़ाज़त का ख़ुद वादा अपने ज़िम्मे लिया है। मुसन्निफ़ ने इन्सानी ज़िन्दगी से उसका तअ़ल्लुक़, फिर इस सूरः के तआ़रूफ़ के साथ उसके एक-एक लफ़्ज़ का मफ़हूम और उसकी तशरीह़ की है। उम्मीद है कि यह किताबचा क़ुर्आन के तआ़र्रुफ़ के बारे में मुफ़ीद होगा। अल्लाह पाक अज़ीज़ेग्रामी की इस कोशिश को क़ुबूल करते हुए पूरे क़ुर्आन के तर्जुमे व तशरीह़ की भी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

अबुल ह़सन अ़ली नदवी
18 ,जमादिल अव्वल **1419** हि०

नोटः अल्ह़म्दुलिल्लाह इस काम को मैंने ह़ज़रत मौलाना के मश्वरह से शुरू किया था, और आप की ज़िन्दगी ही में सूरः फ़ातिह़ा और कई सूरतों की तफ़्सीर मुकम्मल हो चुकी थी, ऊपर की तह़रीर ह़ज़रत मौलाना ने सूरः फ़ातिह़ा के मुक़दमे में, यह दुआ़इया कलिमात तह़रीर फ़रमाए थे, चूँकि यह सूरः क़ुर्आन की भूमिका है इसलिए इसे शुरू में पेश कर दिया गया।

-:प्रस्तावना:-

प्रख्यात विश्व विद्वान तथा प्रसिद्ध एवं श्रेष्ठ विचारक हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी मद्दज़िल्लहुलूआ़ली के क़लम से-

'नाज़िम,' दारूल उलूम, नदवतुल उलमा, लखनऊ, व 'अध्यक्ष,' मुस्लिम प्रस्नल्ला बोर्ड (इन्डिया)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

दीने इस्लाम को अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों के लिए तजवीज़ करदा और तय करदा दीन क़रार दिया है। और फ़रमाया है कि अल्लाह तआ़ला इसी को क़ुबूल करेगा, इसके अ़लावह को क़ुबूल न करेगा। इन्सानों की तबीअ़तों और आने वाले ज़मानों में जो फ़र्क़ पड़ सकता है इस दीन में उसकी रिआ़यत भी रख दी है, और ख़ास तौर पर यह अहद और दौर जो छठी सदी ई० के वक़्त से शुरू हुआ और इल्म की उसअ़त और तमद्दुनी तरक़्क़ी का दौर बना, और यह दुनिया के तरक़्क़ीपज़ीर हालात और इन्सानी नस्लों और क़ौमों की खुसूसियात के लिहाज़ से अहम तब्दीलियों का दौर है और उसकी यह खुसूसियत दुनिया के इख़्तिताम तक क़ायम रहने वाली है, उस दीने इस्लाम में इस अहद की इस खुसूसियात की रिआ़यत रखी गयी है।

इसी बात की रिआयत में इस दीन को आख़िर और मुकम्मल दीन, और इस दीन को बयान करने वाली आसमानी किताब, क़ुर्आन मजीद को आसमानी किताबों में आख़री और मुकम्मल किताब बताया गया है, इस तरह अब जिस शख़्स को भी मरने के बाद की ज़िन्दगी में कामियाबी और राहत हासिल करना है उसको इस दीन पर अ़मल करना और उसकी आसमानी किताब की रहनुमाई में ज़िन्दगी गुज़ारना है, और इसके लिए हर एक शख़्स को उस दीन को जानने और इस किताब से रहनुमाई हासिल करने की लाज़मी ज़रूरत है।

यह किताब चूँकि अ़रबी में है इसलिए अ़रबी के लिए इससे फ़ायदा उठाने में ज़बान के मसले में रूकावट नहीं, लेकिन जो लोग अ़रबी नहीं जानते, और उनको अ़रबी सीखने का मौक़ा भी नहीं है। उनके लिए यह काम इस किताब के तर्जुमे के ज़रिये अन्जाम पा सकता है, इस तरह इस किताब का तर्जुमः ऐसी ज़बान में होना ज़रूरी है जिससे लोग क़ुर्आन मजीद से रहनुमाई हासिल करने की ज़रूरत महसूस करते हों, इसके साथ-साथ वह लोग जो इस दीन, और इस किताब की अहमियत और ज़रूरत को अभी तस्लीम न कर सकें हों, और मुसलमान न हों, उनके लिए इस दीन से वाक़फ़ियत और इस किताब का मुतालअ़, इस हैसियत से मुफ़ीद है कि उनको इस्लाम और क़ुर्आन की हक़ीक़त और

खुसूसियत और उनकी तालीमात का इल्म हो सके, और किसी बात का इल्म होना, और उसकी अस्ल हक़ीक़त से वाक़िफ़ होना, नावाक़िफ़ होने से बेहतर होता है, और हर उस शख़्स के लिए जो अ़क़्ल की सिफ़त और इल्म की खुसूसियत रखता हो, ज़रूरी होता है कि वह अपनी वाक़्फ़ियत में इज़ाफ़ा करे।

हमारे इस मुल्क में जहाँ ग़ैर मुस्लिम भाइयों की कसरत है, और उनके दर्मियान में हमारे मुसलमान भाई अपनी इस्लामी इबादत और मामलात के साथ रहते हैं, हमारे ग़ैर मुस्लिम भाइयों के लिए अपने पड़ोसी मुसलमान भाइयों के दीन और उनके मज़हबी किताब से वाक़्फ़ियत ह़ासिल करना, एक इन्सानी सिफ़त और आपसी तअ़ल्लुक़ात का तक़ाज़ा है, चूँकि इस मुल्क की अक्सरियत हिन्दी ज़बान को जानती और इस्तिमाल करती है इस लिए मुतअ़द्दिद अह्ले इल्म ह़ज़रात ने क़ुर्आन मजीद को हिन्दी ज़बान में पेश करने की ज़रूरत समझी और यह काम अन्जाम दिया।

उन्हीं ह़ज़रात में हमारे अज़ीज़ मौलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब भी हैं जो एक फ़ाज़िल शख़्स और अ़रबी व हिन्दी दोनों से अच्छी वाक़िफ़ियत रखने वाले हैं, मेरे सामने इस वक़्त इन्हीं का हिन्दी तर्जुमः क़ुर्आन है जिसको इन्होंने बड़ी मेह़नत व क़ाबिलियत से तय्यार किया है।

उम्मीद है कि सारे मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम भाई जो हिन्दी ज़बान ही के ज़रिये, ज़्यादा बेहतर समझ सकते हैं, इस तर्जुमे से सही फ़ायदा उठाएँगे। मुसलमान ह़ज़रात तो अ़मल करने के लिए और उसकी रहनुमाई में अपनी ज़िन्दगी संवारने के लिए, और ग़ैर मुस्लिम भाई इस्लाम और क़ुर्आन की सही ह़क़ीक़त, और तालीमात से वाक़्फ़ियत ह़ासिल करने के लिए। मेरी दुआ़ है कि यह तर्जुमः मुफ़ीद और कामियाब साबित हो।

मु॰ राबे

मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी
नाज़िम, नदवतुल उलमा, लखनऊ
१४ रबीउस्सानी १४२५ हि०

सन्देश

इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद सालिम क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

मोहतमिम, "दारुल् उलूम वक़्फ़", देवबन्द व उपाध्यक्ष मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड इण्डिया

हिन्दी ज़बान में एक क़ाबिले एतिमाद तफ़्सीर क़ुर्आन

क़ुर्आन करीम इस दुनिया में वह वाह़िद किताब है जो ह़क़ीक़ी तौर पर कलामुल्लाह के नाम से मौसूम होने की ह़क़दार है, इसलिए बक़िया क़ुतुब मुनज़्ज़िला यानी तौरेत, इन्जील, ज़बूर और दीगर सह़ायफ़ बसूरत क़ुतुब अम्बिया-ए-किराम को अ़ता फ़रमाई गईं, लेकिन क़ुर्आन करीम वह वाह़िद और अव्वलीन किताब है जिस का ह़क़ तआ़ला रब्बुल् इ़ज़्ज़त ने अपनी शान यकताई के साथ तकल्लुम फ़रमाया। नबी करीम (सल्ल०) ने क़ुर्आन करीम की इस मुन्फ़रिद और बेमिसाल ख़ुसूसियत का इस जामेअ़ तअ़बीर में इज़्हार फ़रमाया कि لا تنقضی عجائبه ولا یخلق عن كثره الرد (इस क़ुर्आन करीम के इ़ल्मी व इ़रफ़ानी अ़जायबात व नवादिर न कभी ख़त्म होने वाले हैं और न बकस्रत पढ़े जाने के बावजूद यह किताब पुरानी पड़ने वाली है।)

"क़ुर्आन करीम" का वाह़िद और मुन्फ़रिद, इख़्तिसास व इम्तियाज़ यह है कि वह "कलामुल्लाह" है किताबुल्लाह नहीं है, इस के अ़लावा दीगर सह़ायफ़ अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) कुतुबुल्लाह हैं, कलामुल्लाह नहीं हैं। कलाम के लिए ज़रूरी है कि मुतकल्लिम ने उस को तकल्लुम किया हो, क़ुर्आन करीम के अ़लावा किसी किताब का न अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने तकल्लुम किया और न तकल्लुम पर दाल कोई सीग़ा उन कुतुब के लिए इस्तेमाल किया गया है, बख़िलाफ़ क़ुर्आन करीम के कि तकल्लुम के तमाम सीग़े ह़क़ तआ़ला ने अपनी ज़ात बाबरकात के लिए इस्तेमाल फ़रमाये हैं।

लफ़्ज़ "ह़िफ़्ज़" आयते करीमा "انا نحن نزّلنا الذّكر وانا له لحافظون" तह़फ़्फ़ुज़ के साथ उस ह़िफ़्ज़ पर भी दाल है कि जो तकल्लुम से ही मुतहक़्क़क़ होता है और इस मअ़ना में लफ़्ज़ ह़िफ़्ज़ का इस्तेमाल नादिर नहीं बल्कि कसीर है, क्योंकि ह़िफ़्ज़ के मअ़ना सिर्फ़ याददाश्त से बग़ैर देखे तकल्लुम के हैं और उन मआ़नी पर कलामुल्लाह की मुतअ़द्दिद आयात शाहिद हैं। जैसे-

انا نحن نزّلنا الذّكر وانا له لحافظون या ان ربی علی كل شئی حفیظ या "فالله خیر حافظا وهو ارحم الرحمین

यानी ह़क़ तआ़ला की ज़ात वरा उल्वरा है कि सिर्फ़ बग़ैर देखे ही तकल्लुम पर दलालत नहीं करता, बल्कि ह़क़ तआ़ला का तकल्लुम अल्फ़ाज़ व आवाज़ जैसे मोह़दिसात से भी मुनज़्ज़ह है।

क़ुर्आन करीम ने सिर्फ़ तेईस (23) साल की मुख़्तसर तरीन मुद्दत में एक जाहिल तरीन और तहज़ीब

व तमद्दुन की अब्जद तक से नावाक़िफ़ क़ौम अ़रब को इल्म-ए-अ़ज़ीम से क़ौमी इ़ज़्ज़त और फ़िक्र सलीम से तमुद्दुनी रफ़अ़त की दौलत से मालामाल कर दिया।

यह क़ुर्आन करीम ही था जिस ने अ़रबों को इस मक़ाम पर पहुँचा दिया कि तख़्त शाही उन के क़दमों तले आ गये और ताजेशाही को क़ुद्रत ने उन के सर की ज़ीनत बना दिया। आज मुवर्रिख़ का क़लम अ़रबों को, सल्जूक़ को, ख़िल्ज को, तुग्लक और तुर्क को, अगर ख़िराजे अ़क़ीदत व तह़सीन पेश कर रहा है तो उन की यह तमामतर इ़ज़्ज़त व अ़ज़्मत क़ुर्आनी हिदायत के सामने सरे तस्लीम ख़म कर देने का मुबारक समुरह है वरना इस से पहले गोशा गुमानी में पड़े हुए उन इ़ज़्ज़त तबक़ात के नामों तक से भी दुनिया नाआशना थी।

क़ुर्आन करीम ही इस कायनात में वह वाह़िद व मुस्तनद ख़ुदाई किताब है जिस ने रंग व नस्ल और क़ौम व वतन के बेमअ़ना अफ़्कार व नज़रियात को नेस्तवनाबूद करके इ़ज़्ज़त मन्दाना आ़लमग़ीर फ़िक्र-ए-इन्सानियत मरह़मत फ़रमाया।

इन्सानी ज़िन्दग़ी के हर जुज़्व व कुल पर मुह़ीत क़ुर्आन करीम की बाअ़ज़्मत व हमागीर रहनुमाई इन्फ़िरादी और इज्तिमाई ज़िन्दगी का सालिह़ाना शुऊर ताआ़त व अ़िबादात की ज़रूरत व ह़लावत मामलात में दियानत, क़राबतों में सिलह़ रह़मी, ख़ानदानी अ़ज़्मतों की बरक़रारी, कस्ब मआ़श में ऊलुलअ़ज़्मी, तिजारत में अमानत दाराना उसूल की पास्दारी, तमुद्दनी तरक़्क़ी के लिए सनअ़त व तिजारत की ज़रूरत व अहमियत तमद्दुनी इर्तिक़ा के लिए अ़क़ीदत व इ़बादत की अहमियत, इम्साल व क़िसस-ए-क़ुर्आनी से इ़ब्रत व नसीह़त और आ़लमग़ीर इन्सानी उख़ूव्वत-ए-तअ़लीम व तअ़ल्लुम की ज़बरदस्त तश्वीक़, पेश आमदह ह़वादिस व सानिह़ात में अल्लाह रब्बुल् इ़ज़्ज़त पर ए़तिमाद, नागवार वाक़िआ़त से ख़ुशगवार नतायज की तख़्लीक़, मराह़िले ज़िन्दग़ी बचपन, जवानी और बुढ़ापे से ह़ुस्न अन्जाम की रहनुमाई, अपने दौर की जिद्दत आमेजियों में क़ुर्आनी ए़तिदाल की बरक़रारी का सलीक़ा वग़ैरह, यह वह लवाज़िम ह़यात हैं कि जिन के लिए क़ुर्आन करीम की पेशकर्दा इन्सानी क़द्रें और उन से अ़सरी तक़ाज़ों के मुताबिक़ दअ़वते इस्लाम के मुवस्सिर तरीक़ों का इस्तिख़राज जब ही मुम्किन है कि जब क़ुर्आन करीम की हादियाना तअ़लीमात व हिदायात इ़ल्म में आ जाएँ।

पेशे नज़र तफ़्सीर "क़ुर्आन का पैग़ाम, "तफ़्सीर फ़ारूक़ी" बज़बान हिन्दी और इन के ज़रिये दअ़वत "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी" ने इ़ल्मी ज़ौक़-ए-सलीम, वक़ीअ़ दीनी सलाह़ियत, वसीअ़ मुतअ़ला और उ़लूमे क़ुर्आनी से इस्तिफ़ादह की राह अ़वाम व ख़वास के लिए खोल दी है।

उम्मीद है कि यह तफ़्सीर मुवल्लिफ़ीन, मुसन्निफ़ीन, मुह़क़्क़िक़ीन, मुक़र्रिरीन और मुदर्रिसीन के लिए एक इ़ल्मी तोह़फ़ा समीनः साबित होगी। ह़क़ तआ़ला मौसूफ़ की इस क़ुर्आनी तफ़्सीरी ख़िद्मत को क़ुबूलियत व मक़्बूलियत से नवाज़े और ज़ादे आख़िरत फ़रमाये।

(मौलाना) मुह़म्मद सालिम क़ासमी (साह़ब)
मोहतमिम दारुल उलूम वक़्फ़ देवबन्द
30-01-2014

-ःभूमिकाः-

प्रख्यात विश्व विद्वान तथा प्रसिद्ध एवं श्रेष्ठ साहित्यकार ह़ज़रत मौलाना सअ़ीदुर्रह़मान आज़मी नदवी मद्दज़िल्लहुलूआली के क़लम से-

'चान्सलर', इन्टीग्रल यूनिवर्सिटी, 'सम्पादक' अल्बअ़सुल इस्लामी (अ़रबी मासिक पत्रिका) व 'प्रधानाचार्य' दारूल उलूम, नदवतुल उलमा, लखनऊ

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिलआ़लमीन वस्सलातु वस्सलामु अ़ला सय्यिदिल्मुर्सलीन व इमामिल मुत्तक़ीन व अ़ला मन तबिअ़हुम बिइहसानि इला यौमिद्दीन

अम्मा बअ़द!

क़ुर्आन करीम अल्लाह का कलाम (ईश्वाणी) है, यह रहती दुनिया तक इन्सानी ज़िन्दगी की भरपूर रहनुमाई करता रहेगा और काइनात, ज़िन्दगी और इन्सान सब के लिए हमेश-हमेश रौशनी का मनार (ज्ञान का प्रतीक) बन कर क़ाइम रहेगा और ज़िन्दगी के तमाम मसाइल (समस्यायों) का हर ज़मान व मकान (काल व स्थान) में फ़ित्री (स्वभाविक) ह़ल पेश करता रहेगा, ज़माना चाहे जितना ही बदल जाये, इल्म चाहे जितना तरक़्क़ी कर ले, साइन्स व टेक्नालाजी के मैदान में इन्सान चाहे कितना ही आगे बढ़ जाये, तरह़-तरह़ के ह़ैरत अंगेज़ दरयाफ़्तों (अन्वेषणों)से इल्म का सीना कितना ही मअ़मूर हो जाये मगर अल्लाह के कलाम की रहनुमाई पूरी ताक़त के साथ अपना मुअ़जिज़ः (चमत्कार) दिखाती रहेगी तारीख़ अपने ह़ैरत अंगेज़ सफ़्ह़ात में इज़ाफ़ा करती रहेगी, ज़मीन का सम्बन्ध आसमान से गहरा व मज़बूत होता जायेगा ईमान व यक़ीन (आस्था) अपने क़ाइदाना क़िरदार (मार्गदर्शन) तमाम तारीक़ी गोशों को रौशन करते रहेंगे, इन्सान के अन्दर रौशनी की तलाश में शदीद इस्रार का जज़्बा कार फ़र्मा होता रहेगा और कोई माद्दी ताक़त इसको तलाश सुब्ह़ रौशन से रोकने में कामियाब न हो सकेगी, यह वह ह़क़ीक़तें हैं। जो रसूल (सल्ल०) की अ़मली सीरत (जीवनी) में पूरी तरह़ मौजूद हैं।

क़ुर्आन करीम अपनी बे पनाह उस्अ़त (विशालता) के लिहाज़ से रौशनी दर रौशनी का एक बह़्र मौव्वाज (अथाह समुद्र) है, उसी के रहनुमा दाइमी वसूलों (प्राकृतिक नियमों) पर नौअ़े बनी इन्सान (इन्सानी बिरादरी) का वजूद क़ाइम है, इसलिए हमारी सबसे पहली ज़रूरत यह है कि हम इस किताबे जावेदाँ से मुकम्मल तौर पर फ़ाइदा उठाने के लिए इसके मअ़ना व मतलब (अर्थ व व्याख्या) को समझने

उसके ह्क़ाएक, और बारीकियों पर ग़ौर करने और ज़िन्दगी के माज़ी, ह़ाल, मुस्तक़बिल (भूत, वर्तमान, भविष्य) को समझने और उसको रौशन करने की राह में अपना इल्मी सफ़र शुरू करें, और सबसे पहले इस किताबे अज़ीम के मआ़नी व मफ़ाहीम का इदराक (गूढ़ ज्ञान) ह़ासिल करने के लिए उसकी आयतों के तर्जुमः पर ग़ौर करें और देखें कि कामियाब ज़िन्दगी के लिए कितना ज़रूरी और नागुज़ीर है।

यूँ तो इस किताबे अज़ीज़ के बहुत सी ज़बानों में तर्जुमें हो चुके हैं, और लोगों नें बक़द्रे ज़र्फ़ (अपनी योग्यता के अनुसार) उनसे फ़ाइदा भी उठाया है, हमारे इस मुल्क में हिन्दी ज़बान में क़ुर्आन करीम का तर्जुमे मुख़्तलिफ़ इदारों और शख़्सियात की तरफ़ से शाअ़े (प्रकाशित) हो कर मक़बूल हो चुके हैं, लेकिन अभी तक किसी ऐसे आ़लिमे दीन की तरफ़ से जिसको हिन्दी ज़बान पर पूरी तरह़ उबूर ह़ासिल हो और वह अ़रबी ज़बान के रूह़ को समझ कर हिन्दी ज़बान में मुन्तक़िल करने की भरपूर सलाह़ियत (योग्यता) रखते हों, कोई काम न हो सका था। हमें इस बात का एतिराफ़ करने में निहायत ख़ुशी हो रही है कि हमारे ह़लक़-ए-नदवतुल उलमा की तरफ़ से यहाँ के आ़लिमे दीन, अ़रबी, उर्दू, हिन्दी के माहिर मायानाज़ अदीब (साहित्यकार) आ़लिम और सह़ाफ़ी (पत्रकार) क़ुर्आन करीम का हिन्दी ज़बान में एक निहायत ही क़ाबिले उसूक और अ़रबी ज़बान की रूह़ से क़रीब तर हिन्दी तर्जुमः पेश कर रहे हैं इस तर्जुमः की चन्द ख़ुसूसियात पेश की जा रही हैं।

१- इससे क़ब्ल चन्द उर्दू के तर्जुमें हिन्दी रस्मुलख़त (लिपि) में तब्दील किये गये लेकिन उनमें बअ़ज़ लोगों ने ख़ालिस उर्दू ज़बान का इस्तिमाल किया है जिससे हिन्दीदाँ या ग़ैर मुस्लिम बिल्कुल नावाक़िफ़ हैं, और बअ़ज़ लोगों ने सख़्त हिन्दी का इस्तिमाल किया है, जिस की वजह से मुसलमानों के लिए बिल्कुल नाक़ाबिले फ़हम हो गया, इसकी वजह मेरे नज़दीक यह है कि अगर मुतर्जिम अ़रबीदाँ या आ़लिमे दीन जो तमाम इस्तिलाह़ात (पारिभाषिक शब्दों) से वाक़िफ़ होता, तो तर्जुमः का सह़ी फ़ायदा हिन्दादाँ तबक़ः को निहायत अच्छे और अ़मली अन्दाज़ में पहुँचता, और इसका बुनियादी मक़सद पूरा होता, इसलिए ज़रूरत थी कि ऐसा तर्जुमः जो अस्ल अ़रबी से क़रीबतर और अल्फ़ाज़ दर्मियानी, यानी न सख़्त हिन्दी हों, और न सख़्त उर्दू, तो इसमें दोनों की ही रिआ़यत की है।

२- उन्हीं अल्फ़ाज़ का इस्तिमाल किया गया है जो क़ुर्आनी हैं, और मुआ़शिरे में भी इस्तिमाल होते हैं। जैसे 'ज़ालिम' उर्दू का लफ़्ज़ है लेकिन आ़म फ़हम है जबकि हिन्दी में उसको 'अत्याचारी' कहते हैं, इस तरह़ 'क़रीब' बमअ़ना 'समीप' लेकिन क़रीब सभी लोग समझते हैं इस लिए इसी को इस्तिमाल किया है।

३- इस तरह़ वह अल्फ़ाज़ जो मुसलमानों के यहाँ कसरत से इस्तिमाल होते हैं जैसे- रह़मत, मग़्फ़िरत, रह़मान, रह़ीम व ग़ैरह लेकिन हिन्दू भाई बिल्कुल ना वाक़िफ़ होते हैं। तो ऐसे अल्फ़ाज़ की तश्रीह़ ब्रेकेट में कर दी गई है;

४- इसी तरह़ उन अल्फ़ाज़ से एहतियात बरती गई है जिसके मअ़ना क़दीम में कुछ थे और अब वही अल्फ़ाज़ दूसरे मअ़ना में इस्तिमाल होने लगे हैं;

५- इस तर्जुमः में अस्ल क़ुर्आन के अल्फ़ाज़ को सामने रखा गया है ताकि माना अस्ल अ़रबी से क़रीबतर हो, इसमें मौलाना फ़तेह़ मुह़म्मद ख़ाँ साह़ब जालनधारी, व मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह० और दूसरे अनेक तर्जुमों से भी इस्तिफ़ादा किया गया है।

६- इसी तरह़ बयक वक़्त इस्तिलाह़ी तर्जुमः के साथ लफ़्ज़ी रिआ़यत भी की गई है, जिसकी वजह से यह कोशिश हर ह़लक़े के लिए मुफ़ीद व मक़बूल बन गई है, ख्वाह वह अअ़ला तअ़लीम यफ़्ता तबक़े से तअ़ल्लुक़ रखता हो या आ़म ख़्वान्दह गिरोह से मतअ़ल्लिक़ हो।

इन तमाम ख़ुसूसियात की बिना पर जनाब **"मौलाना मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी"** का यह इल्मी तोह़फ़ा उनकी यह इल्मी काविश हमारे इस मुल्क के हिन्दीदाँ तब्क़े के लिए ख़ास तौर पर बेइन्तिहा ज़रूरी और मुफ़ीद है, दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला मौलाना की ख़िद्मते क़ुर्आन से मुतअ़ल्लिक जुमला मसाई़ को क़बूलियते आ़म से सरफ़राज़ फ़रमाए, और अपने शायाने शान जज़ा-ए-ख़ैर से नवाज़े,

आमीन-

सईदुर्रह़मान आ़ज़मी नदवी

'चान्सलर' *इन्टीग्रल यूनिवर्सिटी,* व 'सम्पादक'-अल्बासुल् इस्लामी व
प्रधानाचार्य, नदवतुल उलमा, लखनऊ

१६ रबीउस्सानी १४२५हि०, मुताबिक़ ६.६.२००४ ई०

प्राक्कथन

अल्लाह ने इंसानों की रहनुमाई के लिए, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अपना क़लाम नाज़िल किया जिसे क़ुर्आन के रुप मे जाना जाता है।

क़ुर्आन का शाब्दिक अर्थ-

'क़ुर्आन', अ़रबी भाषा का शब्द है, जिस का 'फ़ुअ़लान' मस्दर है। क़ुर्आन का अर्थ होता है- पढ़ना, यह 'मफ़अूल' के माने में है, जिसके माने हैं, 'पढ़ा गया; या अक्षरों और शब्दों को सार्थक क्रम के साथ जोड़ कर ज़बान से अदा करना।

दुनिया में बहुत सी किताबें पढ़ी गई, लेकिन क़ुर्आन का पढ़ा जाना एक अजीब व-ग़रीब चमत्कार है, कि पूरे चौबीस घंटे में ऐसा कोई सिकेण्ड नहीं गुज़रता जिसमें कहीं न कहीं क़ुर्आन पढ़ा न जाता हो इससे क़ुर्आन का नाम क़ुर्आन होना स्वयं सिद्ध हो जाता है।

क़ुर्आन एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं, यह इन्सानों को अन्धविश्वास, वहम परस्ती और अपनी गुलामी जैसे भ्रष्ट मार्गों से निकाल कर ईमान व यक़ीन के सीधे और मज़बूत रास्ते पर लाता है।

अल्लाह तआ़ला ने पवित्र क़ुर्आन में कई स्थान पर इन्सानों को उनकी पैदाइश और उनके अस्ल (मिट्टी और नुत्फ़ा) की ओर मुतवज्जेह कर के बतला दिया कि देखो! यह तुम्हारी अस्ल ह़क़ीक़त है, जैसे-

सूरः साफ़्फ़ात आयत नं० ११, सूरः रह़मान आयत नं० १४ , सूरः यासीन आयत नं० ७७, और सूरः अ़-ब-स आयत नं० १८-१९ में विस्तारपूर्वक मौजूद है।

दूसरी ओर इन्सान को उसके अन्त और अन्जाम के बारे में भी ख़बरदार किया गया है कि तेरी ज़िन्दग़ी और तमाम गुण (हुस्न खूबसूरती, उच्च कोटि का दिमाग़ और इल्म व फ़न आदि) हमेशा नहीं रहेंगे, बल्कि इन सब को फ़ना हो जाना है और तेरी ज़िन्दग़ी मौत से बदल जाएगी। जिसका विस्तारपूर्वक उल्लेख सूरः आ़राफ़ आयत नं० २५ व सूरः ताहा आयत नं० ५५ में मौजूद है। अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को उसकी पैदाइश और उसके अन्त के बारे में अस्ल ह़क़ीक़त का इ़ल्म दे कर उसकी नसीह़त व हिदायत का पूरा सामान क़ुर्आन के रूप में अ़ता कर दिया।

पवित्र क़ुर्आन ईश्वरीय ग्रन्थ है

الٓمٓ ۚ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ

"इस किताब में किसी प्रकार के सन्देह की गुन्जाइश नहीं"

पवित्र क़ुर्आन के ईश्वरीय ग्रन्थ होने में किसी को सन्देह नहीं हो सकता, (यदि कुछ ज्ञान रखता हो) जिसे पवित्र क़ुर्आन ने स्वयं इस की पुष्टि करते हुए कई स्थान पर खुला चैलेंज दिया है, कि यदि तुम्हारा ख़याल यह हो कि यह क़ुर्आन खुदा की ओर से अवतरित किया हुआ नहीं है, बल्कि किसी बन्दे (मुह़म्मद) का स्वयं, बनाया हुआ कलाम है, तो तुम इसकी एक छोटी सी सूरत के समान सूरत बना कर लाओ; तो मान लें, कि तुम अपने ख़याल में सह़ी और सच्चे हो लेकिन ऐसा करना तुम्हारे बस में नहीं!

सूरः बक़रः आयत नं० २३-२४, व सूरः यूनुस आयत नं० ३७-३८ की आयतों में क़ुर्आन के मुख़ालिफ़ीन को न केवल चैलेंज दिया गया है बल्कि भरपूर यक़ीन के साथ पहले ही यह एलान कर दिया गया कि मुख़ालिफ़ीन (विरोधी) अपनी पूरी क्षमता (सलाहियत) का प्रयोग करते हुए, तमाम अपने मददगारों को भी साथ ले लें, बल्कि पूरी इन्सानी और जिन्न बिरादरी एक साथ मिलकर भी कोशिश कर ले तब भी वह नाकाम ही रहेंगे। पवित्र क़ुर्आन जैसी एक सूरः भी बना कर, क़ियामत तक, नहीं ला सकते!

पवित्र क़ुर्आन संशोधन से पाक है

पवित्र ग्रन्थ क़ुर्आन पर हमेशा अल्लाह तआ़ला की निगरानी (संरक्षता) का हाथ रहा है इस लिए कि यह केवल मुसलमानों के लिए ही नहीं बल्कि तमाम इन्सानों के लिए नाज़िल किया गया है, जैसा कि स्पष्ट है कि पिछले तमाम ग्रन्थों में से कोई भी ग्रन्थ ऐसा नहीं है जो संशोधन से पाक हो, हर ग्रन्थ में उसके अनुयायियों ने ही बढ़ा घटा दिया यहाँ तक कि अब कोई भी ग्रन्थ, पूरे विश्व में, अपने अस्ली रूप में मौजूद नहीं।

इस प्रकार क़ुर्आन जब से नाज़िल होना शुरू हुआ उसी समय से उसके याद करने, लिखने और उच्चारण को सही़ रखने और उसके लिपि की सुरक्षा का काम बराबर होता रहा और शुरू से हर ज़माने में ह़ज़ारों बल्कि लाखों लोग याद करते रहे, यहाँ तक कि आज भी केवल हिन्दुस्तान में पूरा क़ुर्आन याद करने वालों की संख्या लाखों में है जो हर साल रमज़ान शरीफ़ में सुनाते हैं।

इस तरह़ क़ुर्आन एक ऐसा ग्रन्थ है जो चौदह सौ साल गुज़रने के बाद भी पूरी तरह सुरक्षित और पाक है, जैसा कि इतिहास गवाह है, और आइन्दा भी कोई इसमें अपनी राय को शामिल नहीं कर सकता है, अतः इसमें किसी भी प्रकार की तब्दीली न पहले कभी हुई, और न ही आइन्दा हो सकती है। इसलिए कि इसके सुरक्षा की ज़िम्मेदारी स्वयं अल्लाह तआ़ला ने ली है। जिसे अल्लाह तआ़ला ने **सूरः हिज्र आयत नं० ६ में और सूरः ह़ामीम सज्दः आयत नं० ४२** में विस्तारपूर्वक ज़िक्र किया है।

पवित्र क़ुर्आन की विशेषता, उसकी श्रेष्ठता, उसका आदर व सम्मान केवल अल्लाह के इन शब्दों से होता है जिसे स्वयं क़ुर्आन ने सूरः ह़श्र में उदाहरण के ज़रिए स्पष्ट किया है। "कि यदि हम क़ुर्आन को किसी पहाड़ पर नाज़िल करते तो वह भी इसके डर से ज़र्रा-ज़र्रा हो जाता"।

क़ुर्आन का संक्षिप्त परिचय

'क़ुर्आन', रह़मान व रह़ीम (महा दयावान, अतिकृपाशील), की ओर से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर नाज़िल (अवतरित) होने वाली किताब (ग्रन्थ) का नाम है, जिस समय ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की आयु उन्तालीस साल साढ़े तीन माह की थी उसी समय १७ रमज़ान ६१० ई० को पहली वह्य ''इक़रा बिस्मि....नाज़िल हुई। फिर पूरा क़ुर्आन २३ साल तक अर्थात सफ़र ११ हिजरी तक नाज़िल होता रहा, नाज़िल होने के बाद आप (सल्ल०) १३ वर्ष मक्के में दीन की दअ़वत का काम करते रहे, फिर अल्लाह के आदेश से हिजरत (देश त्याग) कर के मदीना चले आए, तो जो सूरतें मक्के में क़याम के दौरान नाज़िल हुई उन्हें मक्की कहा जाता है और जो सूरते मदीने में क़याम के दौरान नाज़िल हुई उन्हें मदनी कहा जाता है।

सूरः क़ुर्आन पूरे का पूरा एक लगातार लेख नहीं है बल्कि यह एक सौ चौदह हिस्सों में बटा हुआ है, जो अध्याय के सामान है, जिसे सूरः कहा जाता है।

आयत– सूरः के टुकड़ों और वाक़्यों को आयत कहते हैं।

कुर्आन या 'वह्य' के नाज़िल होने के तरीक़े

अल्लाह अपने रसूलों पर जो किताबें नाज़िल करता है उस के विभिन्न तरीक़े होते हैं, जिसमें से कुर्आन शुरु के चार तरीक़ों पर नाज़िल हुआ।

१- कभी तो फरिश्ता वह्य लेकर आता और एक आवाज़ घंटी जैसी मालूम होती।

२- कभी फरिश्ता इन्सानी रूप अपनाये बिना आ कर रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दिल पर आवाज़ के साथ वह्य करता।

३- कभी फ़रिश्ता इन्सानी रूप में आ कर बात चीत करता।

४- अल्लाह ने जागते में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से बात की जैसे शबे मेराज में।

५- अल्लाह सपने की हालत में कभी बात करते हैं।

६- कभी-कभी फ़रिश्ता सपने की हालत में बात करता है।

कुर्आन लिखने का तरीक़ा

जिस वक़्त कुर्आन उतरता था, उसी समय याद करके लिख भी लिया जाता था, जिस में से कुछ मुख्य लिखने वाले सहाबा के नाम इस तरह़ हैं।

१- हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़(रज़ि०) २- हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ३- हज़रत उस्माने ग़नी (रज़ि०) ४- हज़रत अ़ली (रज़ि०) ५- हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) ६- हज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि०) ७- हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन अ़ास (रज़ि०) ८- हज़रत हन्ज़ला बिन रबीउलअसदी (रज़ि०) ९- हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम (रज़ि०) १०- हज़रत मुआ़विया बिन अ़बी सुफ़्यान (रज़ि०) आदि जैसे बहुत से सहाबा लिखने के लिए नियुक्त थे।

कुर्आन याद करने का तरीक़ा

कुर्आन जैसे उतरता था वैसे ही हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) सहाबा को याद भी करा देते थे, जिन में मुख्य याद करने वाले सहाबा के नाम इस तरह है।

१- हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) २- हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ३- हज़रत उस्माने ग़नी (रज़ि०) ४- हज़रत अली (रज़ि०) ५- हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) ६- हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) ७- हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) ८- हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) ९- हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) १०- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) ११- हज़रत आइशा सिद्दीक़ः (रज़ि०) १२- हज़रत उम्मे सलिमः (रज़ि०) आदि जैसे बहुत से सहाबा सहाबियात पूरे कुर्आन को याद कर लेते थे।

कुर्आन के शब्दों का उच्चारण

क़ुर्आन जिस तरह़ उतरता था ठीक उसी तरह़ उच्चारण के साथ ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) सिखा भी देते थे, जिन में से मुख्य सहाबा यह हैं।

१- हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि०) २- हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब (रज़ि०) ३- हज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि०) ४- हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) ५- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ६- हज़रत अबूदर्दा (रज़ि०) ७- हज़रत अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि०) ८- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) आदि ह़ज़रात उच्चारण के माहिर थे।

कुर्आन के व्याख्याकार सहाबा

जिस तरह याद करने और लिखने, और उच्चारण करने का प्रबन्ध था, उसी तरह व्याख्या का भी प्रबन्य था कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हर आयतों की व्याख्या भी करके बता देते थे, जिसे यह मुख्य सहाबा लिख लेते थे जैसे- १- हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) २- हज़रत उमर (रज़ि०) ३- हज़रत उस्माने ग़नी (रज़ि०) ४- हज़रत अ़ली (रज़ि०) ५- हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) ६- हज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि०) ७- हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) ८- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) ९- हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) आदि हज़रात व्याख्याकार थे।

कुर्आन, अर्थात वह्य की लिपि

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं, ''हमने पैग़म्बरों में से किसी को नहीं भेजा मगर उस की क़ौम की ज़बान में, ताकि उनको अच्छी तरह समझा दे'', इस तरह कुर्आन की लिपि भी अ़रबी है और भाषा भी, ताकि किसी तरह का सन्देह न रहे।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के बाद

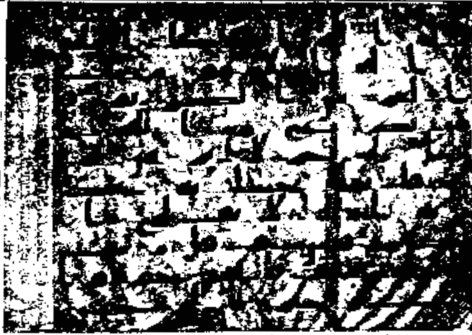
हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर चूँकि कुर्आन उतरता, और उसे वह याद करवा देते और लिखवा देते, लेकिन इन्तिक़ाल के समय तक इस तरह दो दाफ़्तियों के बीच में इकट्ठा नहीं था, अलग-अलग चीज़ों, जैसे चमड़े, पत्ते, आदि पर सूरते; लिखी हुई थीं और अक्सर सहाबा को पूरा कुर्आन याद होता था।

सबसे पहले कुर्आन को इस तरह एक जगह जमा करने का खयाल हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ी०) के दिल में पैदा हुआ जबकि उस समय खालीफ़ा हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि०) थे, हज़रत फ़ारूक़े आज़म ने उन से अर्ज़ किया कि कुर्आन के हाफ़िज़ शहीद होते जा रहे हैं, और बहुत से यमामा की जंग में शहीद हो गये, इस लिए कुर्आन मजीद के जमा करने का प्रबन्ध किया जाय, तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने बहुत ग़ौर करने के बाद, हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) को जमा करने का हुक्म दिया। चूँकि हर साल रमज़ान में नबी करीम (सल्ल०) हज़रत जिब्रईल (अलै०) को सुनाते थे, और इन्तिक़ाल के साल आप (सल्ल०) ने दो बार सुनाया था, जिसमें हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) शरीक थे।

इस तरह हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने पहली बार पूरा कुर्आन जमा करवा दिया, फिर हज़रत फ़ारूक़े आज़म की खिलाफ़त के ज़माने में उस के पढ़ने पढ़ाने की व्यवस्था हुई और सहाबा को दूर-दूर तक सिखाने के लिए भेजा गया।

फिर हज़रत उस्माने ग़नी (रज़ि०) की ख़िलाफ़त के ज़माने में सात नक़लें (प्रतियाँ) करा कर दूर-दूर शहरों में भेज दी गईं। मगर कुछ उच्चारण में मतभेद होने की वजह से केवल एक किरअ़त पर पढ़ने का हुक्म दिया गया, जिसे अब तक चाहे किसी भी देश का कुर्आन हो उसी तरह लिखा और पढ़ा जाता है, उसमें एक अक्षर की भी तब्दीली नहीं हो सकी। हाँ सहाबा (रज़ि०) के ज़माने में कुर्आन की सूरतों के नाम, पारों के निशान और नुक्ते (बिन्दु) आदि न थे, बाद में यह अब्दुल मलिक के ज़माने में अबुल असवद या हज़रत हसन बसरी (रह०) ने इस में नुक़्ते लगवाए। सूरः और पारों के नाम भी लिख दिए, जिससे पढ़ने में आसानी हो गयी। इस तरह आज भी उस समय का कुर्आन एक कुस्तुन्तुनिया में, एक तिल्मिस्तान में, एक जामे अज़हर के कुतुबख़ाना, मिस्र में, एक बहरैन के कुतुबख़ाना में, एक क़ाहिरा में, एक ताशकंद में, एक इस्तम्बोल में मौजूद है जिसमें से ताशकंद और इस्तम्बोल के कुर्आन की फोटो इस तरह है,

مصحف عثمانی محفوظ تاشقند | بسم اللہ الرحمن الرحیم | مصحف عثمانی محفوظ استنبول

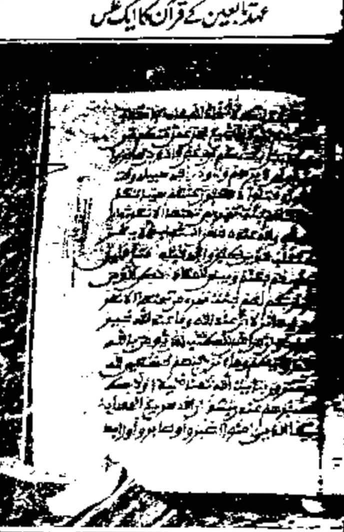


حضرت عثمانؓ کے دور کا ایک نسخہ جو استنبول کے عجائب گھر توپ کاپی میں بہت قیمتی ہے اسکی بارہ میں عام خیال یہ ہے کہ یہ نسخہ مصحف عثمانی ہے یعنی ان نسخوں میں سے ہے جسکو حضرت عثمانؓ نے نقل کرا کے بلاد اسلام میں بھیجا تھا، اسی نسخہ کے ایک صفحہ کا عکس آپکے سامنے ہے یہ ہمارے رفیق محترم مولانا عتیق احمد بھوپالی کے توسط سے ہمیں موصول ہوا ہم ان کی اس مہربانی کی شکر گذار ہیں

ابن مقلہ متوفی ۳۲۸ھ کی مستند یادگار



عہد تابعین کے قرآن کا ایک عکس



یہ نسخہ عہد تابعین کا ایک مبارک یادگار ہے فی الحال یہ کتب خانہ دار العلوم دیوبند میں محفوظ ہے

ماخوذ از ماہنامہ نظام کانپور

अनुवाद का काम

हमारे मुल्क में सबसे पहले फारसी में क़ुर्आन का अनुवाद- ह़ज़रत शाह वली- उल्लाह साह़ब देहलवी (रह़०) ने १० ज़िल्‌हिज्ज ११५० हि० को शुरू किया, और ११५१ हि० में मुकम्मल किया। फिर उनके बेटे ह़० शाह अब्दुल क़ादिर (रह़०) ने १२०४ हि० में उर्दू भाषा में अनुवाद किया, उस के बाद से आज तक विभिन्न अनुवाद अनेक भाषाओं में होते रहे।

पवित्र क़ुर्आन का विषय

पवित्र क़ुर्आन इन्सानी ज़िन्दग़ी के हर शोबे (क्षेत्र) में रहनुमाई करता है, जैसे अल्लाह पर ईमान या आस्था, ताकि मानव भ्रष्ट अक़ीदे से पाक हो कर एक अल्लाह पर अपनी आस्था जमा ले, अर्थात तौह़ीद (अद्वैतवाद) का विश्वास। उसकी क़ुदरत व ज्ञान का उल्लेख पैग़म्बर की रिसालत, क़ियामत व अ़िबादात से लेकर अच्छे मामलात, अच्छे अख़लाक़, सदाचार, व अच्छे आचरण के बाद, ह़लाल व ह़राम के साथ अच्छे कामों और बुरे कर्मों का अन्जाम तथा इबरतनाक क़िस्से और अच्छे कामों पर उभारने, बुरे कामों से घृणा दिलाने का मुकम्मल बयान है। जिसे अल्लाह तआ़ला ने स्वयं पवित्र क़ुर्आन में इस तरह़ फ़रमाया है;

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ

“और हमने तुझ पर ऐसी किताब उतारी जिसमें हर चीज़ का बयान है।” (सूरः नह़ल आयत नं० ८९)

एक नज़र किताब के पन्नों पर

सबसे पहले मैं अपने मालिक की ह़म्द (प्रशंसा) बयान करता हूँ जिसने अपने कलाम को मुझ नाचीज़ के ज़रिए लिखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई। वरना कलाम (वाणी) इतना पाक और बुलन्द है कि यदि वह तौफ़ीक़ न दे, तो किसी की हिम्मत नहीं कि कोई कुछ लिख सके फिर क़ुर्आन का तर्जुमः तो हो ही नहीं सकता, बस क़ुर्आन के माने की तर्जुमानी हो सकती है, वैसे किसी भी भाषा का दूसरी भाषा में तर्जुमः आसान नहीं होता तो क़ुर्आन के माने का कैसे आसान होगा। इस लिए कोशिश की गई है कि यह तर्जुमानी क़ुर्आन के अरबी मफ्हूम से क़रीबतर हो। अल्लाह के फ़ज़्ल से इस में सबसे पहले क़ुर्आन पढ़ने के तरीक़े का ज़िक्र, फिर हर सूरः का अनुवाद किया गया है। जिसमें निम्न बातों को ध्यान में रखकर किया गया है।

१ क़ुर्आन के अनुवाद में आसान से आसान शब्दों का प्रयोग किया गया है ताकि मुस्लिम और गैर मुस्लिम दोनों, एक साथ समझ सकें अगर कहीं वह शब्द, जो मुसलमानों के यहाँ बहुत प्रयोग होते हैं लेकिन हिन्दू भाई जानते भी नहीं जैसे रह़मत, मग्फ़िरत आदि तो ऐसे शब्दों की हिन्दी, कोष्ठक में कर दी गई है।

२- इसमें यह भी ध्यान रखा गया है कि जो क़ुर्आन के शब्द है, और उनके स्थान पर दूसरे शब्द भी हैं जैसे ज़ालिम = अत्या चारी, करीब = समीप, अ़ज़ाब = यातना आदि, तो इस अनुवाद में वही शब्द प्रयोग किए गये हैं जो क़ुर्आनी होने के साथ समाज में भी बोले जाते हों।

३- अनुवाद में यह भी कोशिश की गई है कि अनुवाद मूल अ़रबी से ज़्यादा से ज़्यादा क़रीब हो, कहीं-कहीं ज़रूरत के अनुसार कोष्ठक में व्याख्या कर दी गई है, और उन शब्दों से भी बचने की कोशिश की गई है, जो हमारे ज़माने से पहले उचित थे मगर आज वही शब्द दूसरे अर्थों में प्रयोग होने लगे हैं।

४- अनुवाद में विशेष रूप से मूल अ़रबी क़ुर्आन, फिर मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह० व मौलाना फ़तेह़ मुह़म्मद ख़ाँ साह़ब का अनुवाद सामने रखते हुए अब तक जितने भी अनुवाद हिन्दी, उर्दू, अ़रबी, इंग्लिश में हुए हैं, सबसे फ़ायदा उठाया गया है।

अन्त में कुर्आन में आए हुए मुश्किल शब्दों की व्याख्या भी दे दी गयी है, उम्मीद है बहुत उपयोगी होगी। अब हम अपने मुश्फ़िक़ व मुरब्बी **हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी मद्देज़िल्लहुल आली** के एहसानमंद हैं, जिन्होंने अपना क़ीमती समय देकर कहीं-कहीं पढ़वा कर सुना और जहाँ तस्हीह़ (Correction) की ज़रूरत महसूस हुई तस्हीह़ फ़रमाई और मुफ़ीद मश्वरे से नवाज़ कर हिम्मत अफ़ज़ाई फ़रमाई।

इसी तरह जनाब मौलाना अ़ब्दुल्लाह हसनी नदवी साहब, व जनाब डा० हारून रशीद साहब, व जनाब अनीस अहमद साहब नदवी व अहमद अलाना व सिद्दीक़ अलाना साहब के शुक्रगुज़ार हैं जिन्होंने हर प्रकार से हिम्मत दिलाई और मुफ़ीद मश्वरे दिये। विशेष रूप से हम अपनी हमशीरा सादिक़ा तस्नीम के, जिन्होंने लिखवाने और प्रूफ़ पढ़वाने में मदद की और घर की तमाम औ़रतों ने इस में पूरा साथ दिया, फिर हम अज़ीज़ी डा० तस्नीम अहमद, व बिलाल अहमद, नदीम अहमद, मसूद फ़ारूक़ी, सय्यद जुनेद अहमद, अताउल्लाह, नादिर, नोअ़मान व मुहम्मद इमरान, नौशाद अहमद के अलावह बहुत से उन लोगों के भी शुक्रगुज़ार हैं, जिन्होंने प्रूफ़ के देखने में, या इसके लिखने में या इसके छपवाने में किसी तरह की मदद फ़रमाई। अल्लाह पाक अपनी शान के मुताबिक़ सभी हज़रात को अज्र अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाए और कुर्आन के ख़ादिमों में हिस्सा अ़ता फ़रमा कर कुर्आन की शिक्षानुसार अ़मल करने और सारी इन्सानी बिरादरी तक कुर्आन का पैग़ाम पहुँचाने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए।

आमीन

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

दारूल उलूम नदवतुल उलमा, लखन ऊ

5 रजब 1419 हि०

नोट- अहले इल्म हज़रात से दरख़्वास्त है कि अगर कहीं इन्सानी ग़ल्ती, मुम्किन है हो गई हो, या प्रूफ़ में कहीं कमी रह गयी हो, जिसे इस्लाह (सुधार) के लिए ज़रूरी समझें, बाख़बर करने की ज़हमत फ़रमाएँ! एहसानमन्द रहूँगा।

पवित्र क़ुर्आन पढ़ने से पहले कुछ विशेष बातें

पवित्र क़ुर्आन एक ऐसा ग्रन्थ है, जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर अल्लाह की ओर से नाज़िल (अवतरित) हुआ। चूँकि यह ग्रन्थ उस बड़े मालिक की ओर से आया है जो तमाम सृष्टि का सृष्टा है। इस लिए इस ग्रन्थ क़ुर्आन को छूने, हाथ लगाने और पढ़ने व सुनने के लिए उसके शान के अनुसार, उसके आदर व सम्मान को भी अल्लाह तआ़ला ही ने बताया है जिसे स्वयं पवित्र क़ुर्आन में इस प्रकार कहा गया है।

لَّا يَمَسُّهُۥٓ إِلَّا ٱلْمُطَهَّرُونَ

अनुवादः- "(इस क़ुर्आन को) नहीं छूते मगर पाक लोग" (सूरः वाक़िअः ७९)

इस प्रकार बिना पाकी (अर्थात बिना पाकी और वुज़ू) के पवित्र क़ुर्आन को छूना जाइज़ नहीं, और जब पवित्र क़ुर्आन पढ़ा जाए तो उसका आदर यह है कि उसे ख़ामोशी से ध्यानपूर्वक सुना जाए, जिसे क़ुर्आन में इस प्रकार ज़िक्र किया गया है।

وَإِذَا قُرِئَ ٱلْقُرْءَانُ فَٱسْتَمِعُوا۟ لَهُۥ وَأَنصِتُوا۟ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

अनुवादः- "और जब क़ुर्आन पढ़ा जाए तो उसकी ओर कान लगाकर सुनो और शांतिपूर्वक सुनो ताकि तुम पर रह़म किया जाए"। (सूरः अअ़राफ़ २०४)

इसी प्रकार क़ुर्आन पढ़ने का एक अदब यह भी है कि जब क़ुर्आन शुरू करें तो ''अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम'' और ''बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम'' पढ़ें।

''अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम'' के पढ़ने को इस्तिआ़ज़ा या तअ़व्वुज़ कहते हैं जिसका अर्थ होता है ''मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह (शरण) में आता हूँ जिसे अल्लाह ने पवित्र क़ुर्आन के शुरू करने से पहले पढ़ने का हुक्म दिया है।

فَإِذَا قَرَأْتَ ٱلْقُرْءَانَ فَٱسْتَعِذْ بِٱللَّهِ مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ ٱلرَّجِيمِ

अनुवाद- "जब क़ुर्आन पढ़ें तो शैतान मरदूद की दुर्वासना से बचने के लिए अल्लाह की शरण मांगे"।

(सूरः नह़ल ९८)

निष्कर्षः- इस प्रकार निष्कर्ष यह निकला कि पवित्र क़ुर्आन के पाठ(तिलावत) से पहले वुज़ू करके शुद्ध होकर,आदर के साथ अ़मल करने और तमाम इन्सानों तक पहुँचाने की नियत से ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा अ़रबी के सही उच्चारण का ख़्याल रखते हुए ''अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैत़ानिर्रजीम'' (जो सुन्नत है) और ''बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम'' दोनों पढ़ें। फिर तिलावत करते करते अगर नई सूरः शुरू हो तो केवल सूरः बराअ़त(तौबः) के अ़लावा सभी सूरतों में ''बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम'' पढ़ें। और हर सूरः के ख़त्म होने के बाद जब नई सूरः शुरू करें तो ''अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैत़ानिर्रजीम'' न पढ़ें।

यदि तिलावत करते-करते सूरः बराअ़त आ जाए तो उससे पहले बिस्मल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम भी न पढ़ें। और यदि क़ुर्आन की तिलावत सूरः बराअ़त से ही शुरू करें तो ''अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिनश्शैत़ानिर्रजीम'' और ''बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम'' दोनों पढ़ें, और जहाँ सज्दः वाली आयत आये वहाँ सज्दः करें।



कुर्आन की व्याख्या अगले पेज से शुरू हो रही है

पवित्र कुर्आन को पाक साफ़ (वुज़ू करके) शुद्ध होकर आदर के साथ अ़मल की नियत से ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उच्चारण का भी ख़्याल रखें।

अनुवाद-सूरतुल्फ़ातिहति

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के १२३ अक्षर, २५ शब्द, ७ आयतें और १ रूकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

पारा नं०-१

* اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ

१- सब तरह की तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम आ़लमों (सृष्टियों) का रब (पालन कर्ता) है,

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ

२- बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म वाला है;

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ

३- बदला दिए जाने वाले दिन का मालिक है,

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ

४- हम तेरी ही इबादत करते हैं और 'तुझ' ही से मदद माँगते हैं,

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ

५- हमें सीधे रास्ते पर चला;

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ

६- उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनआ़म फ़रमाया,

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ࣖ

७- उन लोगों का रास्ता नहीं, जिन पर तेरा गज़ब (प्रकोप) हुआ, और न भटके हुओं का।



अनुवाद-सूरतुल्‌बक़रति

यह सूरः मदनी है, इसमें अ़रबी के २०००० अक्षर, ६०२१ शब्द २८६ आयतें और ४० रूकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- अलिफ्‌- लाम्‌- मीम्‌,

الٓمّٓ ۝

२- इस किताब (क़ुर्आन) में कोई सन्देह नहीं,रहनुमा है परहेज़गारों के लिए।

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝

३- जो ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान (आस्था) लाते, और नमाज़ क़ायम करते, और जो कुछ 'हमने' उनको दे रखा है उसमें से ख़र्च करते हैं;

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝

४- और जो लोग ईमान लाते हैं उस पर, जो आप की ओर (क़ुर्आन) उतारा गया है, और जो आप से पहले उतारा गया, और आख़िरत (परलोक) पर भी यक़ीन रखते हैं;

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝

५- यही लोग अपने रब(पालनहार) की ओर से हिदायत(सीधी राह) पर हैं और यही नजात (कामियाबी) पाने वाले हैं।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

६- जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिए बराबर है, चाहे आप उन्हें ख़बरदार करें या न करें, वे ईमान लाने वाले नहीं;

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

७- अल्लाह ने उनके दिलों और उनके कानों पर मुहर लगा रखी है, और उनकी आँखों पर पर्दा है, और उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब तैयार है।

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ۗ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۫ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝

वَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ بِالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝

८- और कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते है, हालाँकि वे ईमान नहीं रखते;

يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ
وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝

९- वे अल्लाह को और ईमान वालों को धोखा देते हैं, हालांकि वे अपने आप को धोखा दे रहे हैं, और वे इससे बेख़बर हैं।''

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝

१०- उनके दिलों में (इन्कार का) रोग था, तो अल्लाह ने उनके रोग को और बढ़ा दिया, और उनके झूठ बोलने की वजह से उन्हें दुःख देने वाला अ़ज़ाब होगा;

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ ۙ قَالُوْٓا اِنَّمَا
نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ۝

११- और जब उनसे कहा जाता है कि ''ज़मीन (मुल्क) में फ़साद न मचाओ,'' तो कहते हैं, ''हम तो सुधार करने वाले हैं;

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ۝

१२- जान लो, वही लोग फ़साद करने वाले हैं, लेकिन उन्हें एह़सास नहीं होता।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا
اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ۗ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ
وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝

१३- और जब उनसे कहा जाता है कि जिस तरह और लोग ईमान ले आए तुम भी ईमान ले आओ, तो कहते हैं, ''क्या हम ऐसा ईमान लाएँ जैसे वे मूर्ख लोग ईमान ले आए हैं?'' जान लो! यही मूर्ख हैं, लेकिन जानते नहीं।

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى
شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ
مُسْتَهْزِءُوْنَ ۝

१४- और ये लोग जब ईमान लाने वालों से मिलते हैं तो कहते हैं, ''हम ईमान ले आए हैं; और जब एकांत में अपने शैतानों (दुष्ट मुखियों) से मिलते हैं तो कहते हैं, हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो केवल हंसी मज़ाक़ के लिए ऐसा करते हैं;''

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝

१५- अल्लाह उनका मज़ाक़ उड़ा रहा है, और उन्हें ढ़ील दे रहा हैं, कि वे इस सरकशी में भटक रहे हैं;

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى فَمَا رَبِحَتْ
تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝

१६- यही वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत (सन्मार्ग) के बदले गुमराही मोल ली, तो उनकी इस तिजारत ने न कोई लाभ पहुँचाया और न ही वे सीधी राह पा सके;

१७- उनकी मिसाल उस व्यक्ति की सी है जिसने आग जलाई, फिर जब उसके आस-पास खूब रोशनी हो गई, तो अल्लाह ने (अचानक) उनकी (आँखों की) रोशनी छीन ली, और उन्हें अंधेरों में छोड़ दिया कि उन्हें कुछ सुझाई नहीं दे रहा है;

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ لَا يُبْصِرُونَ

१८- वे बहरे हैं,गूँगे हैं, अन्धे हैं, कि लौटने वाले नहीं;

صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ

१९-या (उनकी मिसाल ऐसी है) जैसे आसमान से वर्षा हो रही हो, जिसके साथ अंधेरियाँ हों और गरज और चमक भी हो, वह बिजली की कड़क की वजह से मरने के डर से अपने कानों में उँगलियाँ दे ले रहे हों, और अल्लाह ने तो काफ़िरों (इन्कारियों) को घेर रखा है;

أَوْ كَصَيِّبٍ مِنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَاتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۚ وَاللَّهُ مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ

२०- क़रीब है कि बिजली उनकी आँखों की रोशनी उचक ले जाए; जब उनके आगे बिजली चमकती है, तो उसमें चलते हैं और जब उन पर अंधेरा छा जाता है तो खड़े रह जाते हैं, और अगर अल्लाह चाहता तो उनकी सुनने और देखने की ताक़तें छीन लेता, बेशक अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) है।

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ ۖ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ مَشَوْا فِيهِ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

२१- ऐ लोगो! अपने ‘रब’ की इबादत करो, जिसने तुमको और उन लोगों को जो तुमसे पहले गुज़रे हैं पैदा किया, ताकि तुम परहेज़गार(संयमी) बन जाओ;

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

२२- (वही है) ‘जिसने’ तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श, और आसमान को छत बनाया, और आसमान से पानी बरसा कर उससे तुम्हारे खाने की चीज़ें और फल पैदा किये; तो न बनाओ अल्लाह के बराबर किसी दूसरे को, और ‘तुम तो जानते हो।’

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ ۖ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ

२३- और जो ‘हमने’ अपने बन्दे (मुहम्मद) पर (क़ुर्आन) उतारा है; अगर तुमको इसमें शक हो तो इस जैसी तुम एक (ही) सूरः बना कर ले आओ, और अल्लाह के सिवा जो तुम्हारा मदद्‌गार हो, उन सब को बुला लाओ, अगर तुम सच्चे हो;

وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِنْ مِثْلِهِ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚ أُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾

२४- फिर अगर तुम ऐसा न कर सको, और तुम हरगिज़ नहीं कर सकते,तो डरो उस आग से जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं, जो काफ़िरों (इन्कारियों) के लिए तैयार की गई है।

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ۚ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾

२५- और ख़ुशख़बरी सुना दीजिए उनको जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उनको ऐसे बाग़ मिलेंगे कि बहती होंगी उनके नीचे नहरें, जब उनको वहाँ का कोई फल खाने को मिलेगा तो कहेंगे, ''यह तो वही है जो हम को इससे पहले मिला था, और उन्हें इससे मिलता जुलता ही (फल) मिलेगा।'' उनके लिए वहाँ पाक-साफ़ पत्नियाँ होंगी,और वे वहाँ हमेशा-हमेश रहेंगे।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

२६- अल्लाह इस बात से नहीं शर्माता; चाहे किसी मच्छर ही की मिसाल क्यों न हो, या उससे भी घटिया किसी और चीज़ की, फिर जो ईमान ला चुके हैं वे तो जानते हैं कि वह उनके रब की ओर से सत्य है! और जो इन्कार करने वाले हैं तो वे कहते हैं, "इस मिसाल से अल्लाह का इरादा क्या है?'' इससे बहुतों को भटकने देता है और बहुतों को सीधी राह दिखा देता है, और भटकते तो केवल वही हैं, जो नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हैं।

الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۠ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٢٧﴾

२७- जो अल्लाह से अ़हद (प्रतिज्ञा) करने के बाद अपना वचन तोड़ देते हैं, और जिसे अल्लाह ने जोड़े रखने का हुक्म दिया है उसे काट डालते हैं, और ज़मीन पर फ़साद करते हैं,वही लोग नुक़सान उठाने वाले हैं।

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٨﴾

२८- अल्लाह का इन्कार तुम कैसे कर सकते हो! जबकि तुम निर्जीव थे तो उसने तुमको जीवित किया, और तुम को वही मौत देता है, फिर तुमको ज़िन्दा करेगा, फिर तुम उसी की ओर लौट कर जाओगे।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾

२९- वह(अल्लाह) जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन की तमाम चीज़ों को पैदा किया, फिर आसमान की ओर ध्यान दिया, तो सात आसमान बना दिये और 'वह' तो हर चीज़ की जानकारी रखता है।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۖ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

३०- और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा, ''मैं ज़मीन में अपना नायब (प्रतिनिधि) बनाने वाला हूँ।'' (तो फ़रिश्ते) बोले, ''क्या! आप ज़मीन में ऐसे व्यक्ति को (नायब) बनाएँगे, जो फ़साद करें, और ख़ून ख़राबा करें, और हम तो आपका ज़िक्र और पवित्रता बयान करते ही रहते हैं।'' (रब ने) कहा, ''बेशक जो मैं जानता हूँ, तुम नहीं जानते।''

وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ فَقَالَ أَنبِئُونِي بِأَسْمَاءِ هَٰؤُلَاءِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣١﴾

३१- और (अल्लाह ने) आदम को तमाम नाम सिखाए, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया और कहा, ''अगर सच्चे हो! तो मुझे इन चीज़ों के नाम बताओ।''

قَالُوا سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۖ إِنَّكَ أَنتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٣٢﴾

३२- उन सबने कहा, (ऐ अल्लाह!) ''तू पाक है, 'तूने' जो कुछ हमें बताया उसके सिवा हमें कोई इल्म नहीं, बेशक तू इल्म वाला, हिकमत वाला है ।''

قَالَ يَا آدَمُ أَنبِئْهُم بِأَسْمَائِهِمْ ۖ فَلَمَّا أَنبَأَهُم بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٣٣﴾

३३- (तब अल्लाह ने) हुक्म दिया,''ऐ आदम! इन (फ़रिश्तों) को उनके नाम बता दो, जब उन्होंने उनको उनके नाम बता दिये तो फ़रमाया, ''क्या मैंने तुम से (पहले ही) नहीं कहा था, कि ज़मीन और आसमानों की छिपी बातों को मैं ही जानता हूँ, और मैं जानता हूँ, जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो।''

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٤﴾

३४- और जब 'हमने' फ़रिश्तों से कहा, ''आदम को सज्दः करो,'' तो इब्लीस (शैतान) के सिवा सब ने सज्दः किया, उसने इन्कार किया और घमंड में आ गया और वह काफ़िर (अवज्ञाकारी) हो गया।

وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣٥﴾

३५- और 'हमने' कहा, ''ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी जन्नत में रहो, और जहाँ से चाहो तुम दोनों जी भर के खाओ और इस पेड़ के पास मत फटकना! अन्यथा ज़ालिमों में हो जाओगे।''

३६- फिर शैतान ने उन्हें वहाँ से फिसला दिया, फिर उन दोनों को वहाँ से निकलवा दिया जहाँ वे थे, और ‘हमने’ हुक्म दिया कि, तुम सब उतरो यहाँ से, तुम एक-दूसरे के दुश्मन रहोगे और ज़मीन में तुम्हारे लिए एक वक़्त तक ठिकाना और (जीवन काटने का) सामान है।’’

فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۖ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ إِلٰى حِيْنٍ ۝

३७- फिर आदम ने अपने ‘रब’ से कुछ शब्द प्राप्त किये, तो (अल्लाह ने) उनकी तौबः क़ुबूल कर ली, बेशक वही तौबः क़ुबूल करने वाला,रह़म वाला है।

فَتَلَقّٰى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝

३८- ‘हमने’ कहा, ‘‘तुम सब यहाँ से उतर जाओ, फिर अगर मेरी ओर से तुम लोगों के पास कोई हिदायत (पथ-प्रदर्शन) पहुँचे तो जिन्होंने मेरी हिदायत की पैरवी की उन को न तो डर होगा और न वे दुखी होंगे,’’

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

३९- और जिन्होंने इन्कार किया, और हमारी आयतों को झुठलाया, वही दोज़ख़ी हैं, वे हमेशा उसी में रहेंगे।’’

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

४०- ऐ बनी इस्राईल! (याक़ूब की संतान) मेरे एह़सान को याद करो, जो ‘मैं’ तुम पर कर चुका हूँ, और तुम मेरे अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करो तो मैं तुम्हारे अ़हद को पूरा करूँगा, और मुझ ही से डरते रहो;

يٰبَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ أُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَإِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ۝

४१- और ईमान लाओ उस चीज़ (क़ुर्आन) पर जो मैंने उतारा है जो तुम्हारे किताब (तौरात) की तस्दीक़ करती है; और सबसे पहले (तुम ही) इसके इन्कार करने वाले न बनो, और मेरी आयतों को थोड़ी सी क़ीमत के बदले मत बेचो और मुझ ही से डरते रहो;

وَاٰمِنُوْا بِمَآ أَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا أَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ ۖ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۚ وَإِيَّايَ فَاتَّقُوْنِ ۝

४२- और तुम ह़क़ को झूठ के साथ मत मिलाओ, और ह़क़ को मत छिपाओ जान बूझ कर;

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝

४३- और नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात दिया करो, और झुकने (रूकूअ़ करने) वालों के साथ तुम भी झुका (रूकूअ़) करो;

وَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ
تَتْلُونَ الْكِتَابَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٤٤﴾

४४- क्या! तुम लोगों को भलाइयों का हुक्म करते हो, और अपने आप को भूल जाते हो, हालाँकि तुम किताब (तौरात) भी पढ़ते रहते हो! क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते!!

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ
إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ﴿٤٥﴾

४५- और सब्र और नमाज़ के ज़रिये (अल्लाह से) मदद चाहो, और बेशक यह (नमाज़) कठिन काम है मगर उन लोगों के लिए नहीं, जो (अल्लाह का) डर रखने वाले हैं।

الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلَاقُو رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ
رَاجِعُونَ ﴿٤٦﴾

४६- जो समझते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है, और उसी की ओर उन्हें पलटकर जाना है।

يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ
وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾

४७- ऐ बनी इस्राईल (याक़ूब की सन्तान) मेरे एहसान को याद करो, जो मैं तुम पर कर चुका हूँ, और उस बात को भी (याद करो) कि मैंने तुम्हें सारे संसार पर फ़ज़ीलत (प्रधानता) दी थी;

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ
مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ
يُنْصَرُونَ ﴿٤٨﴾

४८- और उस दिन से डरो, जब कोई किसी के काम न आएगा, न उसकी ओर से (किसी की) सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी और न उससे कुछ बदले में लिया जाएगा और न लोगों को (कहीं से) मदद पहुँचेगी।

وَإِذْ نَجَّيْنَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ
الْعَذَابِ يُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۚ وَفِي
ذَٰلِكُمْ بَلَاءٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٤٩﴾

४६- और (याद करो) जब 'हमने' तुमको फ़िरऔ़न के लोगों से छुटकारा दिया, वे तुम को सख़्त सज़ा दिया करते थे, (यानी) तुम्हारे बेटों को क़त्ल कर देते थे, और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और इसमें तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे लिए एक बड़ी आज़माइश थी;

وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَأَنْجَيْنَاكُمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ
فِرْعَوْنَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٠﴾

५०- और (वह वक़्त भी याद करो) जब 'हमने' तुम्हारी वजह से समुद्र को फाड़ कर तुम को बचा लिया, और फ़िरऔ़न वालों को डुबो दिया, और तुम देख रहे थे;

وَإِذْ وَاعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ
مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٥١﴾

५१- और जब 'हमने' मूसा से चालीस रातों का वादा किया, (तूर पहाड़ पर) फिर इसके बाद तुम बछड़े (की इबादत) में लग गये, और तुम ज़ालिम थे

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ﴿٥٢﴾

५२- फिर 'हमने' तुमको माफ़ कर दिया,उस अपराध के बाद भी, ताकि तुम शुक्र करो;

وَإِذْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ
وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝٥٣

५३- और (याद करो) जब 'हमने' मूसा को किताब (तौरात) और कसौटी (सच और झूठ में अन्तर करने वाले मोजिज़े) अ़ता की ताकि तुम सीधी राह पर चल सको;

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ
أَنفُسَكُم بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوبُوا إِلَىٰ بَارِئِكُمْ
فَاقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِندَ بَارِئِكُمْ
فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۚ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝٥٤

५४- और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ''भाइयो तुमने बछ़डे को (मअ़बूद) ठहराने में अपने ऊपर बहुत ज़ुल्म किया, तो तुम अपने पैदा करने वाले के सामने तौबः करो और अपनो को (जिन्होंने बछड़े की पूजा में ह़िस्सा लिया उन्हें) अपने हाथों से क़त्ल करो, तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक तुम्हारे ह़क़ में यही बेहतर है,'' तो 'उसने' तुम्हारी तौबः क़ुबूल कर ली, बेशक 'वही' तौबः क़ुबूल करने वाला, रह़म वाला है।

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً
فَأَخَذَتْكُمُ الصَّاعِقَةُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ۝٥٥

५५- और जब तुमने कहा, ''ऐ मूसा! हम तुम्हारे कहने पर ईमान नहीं लाएँगे जब तक कि अल्लाह को सामने न देख लें,'' फिर तुम पर (बिजली का) कड़ाका टूट पड़ा और तुम देख रहे थे।

ثُمَّ بَعَثْنَاكُم مِّن بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝٥٦

५६- फिर तुम्हारे मरने के बाद 'हमने' तुमको ज़िन्दा कर दिया ताकि तुम शुक्र अदा करो।

وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ ۖ
كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ۖ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن كَانُوا
أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝٥٧

५७- और 'हमने' तुम पर बादलों की छाया की, और तुम पर 'मन्न' और 'सलवा' उतारते रहे; और 'हमने' जो तुम को पाकीज़ा चीज़ें दी हैं उनमें से खाओ, और उन्होंने 'हमारा' तो कुछ भी नहीं बिगाड़ा, बल्कि अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते थे।

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ
شِئْتُمْ رَغَدًا وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ
نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطَايَاكُمْ ۚ وَسَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ۝٥٨

५८- और जब 'हमने' कहा था, ''दाख़िल हो जाओ इस बस्ती में, जितना और जहाँ से चाहो, जी भर के खाते रहो, और सज्दे करते हुए शहर में दाख़िल होना और मुँह से "हित्ततुन" (तौबः-तौबः) कहते जाना तो 'हम' तुम्हारी ग़ल्तियाँ माफ़ कर देंगे, और भलाई पर क़ायम रहने वालों को और भी ज़्यादा देंगे।''

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنزَلْنَا
عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا
يَفْسُقُونَ ۝٥٩

५९- तो जो ज़ालिम थे, उन्होंने बदल डाली वह बात जो उनसे कही गई थी तो ऐसे ज़ालिमों पर 'हमने' आसमान से भयंकर अ़ज़ाब उतारा, यह सब उनकी नाफ़रमानी की वजह से हुआ।

६०- और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी की दुआ़ की, तो 'हमने' कहा, "चट्टान पर अपनी लाठी मारो," तो उस से बारह स्रोत फूट निकले, और हर गिरोह ने अपना-अपना घाट जान (कर पानी पी) लिया, खाओ और पियो अल्लाह के दिये हुए (रिज़्क़) से और ज़मीन पर फ़साद करते न फिरो।

وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِب بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِن رِّزْقِ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٦٠﴾

६१- और जब तुमने कहा, ''ऐ मूसा! हम को सब्र न होगा एक ही तरह के खाने पर, तो अपने 'रब' से हमारे लिए दुआ़ करो कि हम को ज़मीन में उगने वाली सब्ज़ी, ककड़ी, गेहूँ, मसूर और प्याज़ निकाल कर दे।'' (मूसा) बोले, ''क्या किसी अच्छी चीज़ को छोड़ कर, बदले में घटिया चीज़ को लेना चाहते हो? तब तो किसी शहरी आबादी में जाओ, जो तुम माँगते हो वहाँ मिलेगा।'' और (आख़िरकार) उन पर ज़िल्लत थोप दी गई, और उन्होंने अल्लाह का ग़ज़ब अपने सर ले लिया; यह इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों से इन्कार करते थे, और नबियों को बिला वजह मार डाला करते थे, यह इसलिए हुआ कि हुक्म को न मानते और हद(सीमा) का उल्लंघन करते थे।

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَن نَّصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ مِن بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ۖ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۚ اهْبِطُوا مِصْرًا فَإِنَّ لَكُم مَّا سَأَلْتُمْ ۗ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٦١﴾

६२- जो लोग ईमान लाए और जो भी यहूदी और ईसाई और साबिई, अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए और नेक काम करे तो उनका बदला उनके रब के यहाँ मौजूद है, और न तो उनको डर होगा और न वह दुखी होंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

६३- और जब 'हमने' तुमसे अह़द (वचन) लिया, और "तूर" पहाड़ को तुम्हारे ऊपर उठा खड़ा किया, (और कहा,) जो चीज़ (किताब) 'हमने' तुम्हें दी है उसे मज़बूती के साथ पकड़ो, और जो कुछ उसमें है उसे याद रखो ताकि तुम परहेज़गार (संयमी) बन जाओ।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾

६४- फिर इसके बाद भी तुम फिर गये, तो अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रह़मत तुम पर न होती, तो तुम घाटे में पड़ गये होते।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ ۖ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنتُم مِّنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾

६५- और तुम उन लोगों को खूब जानते हो, जो हफ़्ते (शनिवार) को (मछली का शिकार करने में) हद से आगे बढ़

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿٦٥﴾

गये थे, तो 'हमने' उनसे कहा, धिक्कारे, फिट्कारे हुए बन्दर बन जाओ;

६६- फिर 'हमने' इस घटना को उन लोगों के लिए जो उस वक़्त मौजूद थे और उन लोगों के लिए भी जो बाद में आने वाले थे चेतावनी और (अल्लाह से) डरने वालों के लिए नसीहत बना दिया।

فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَ
مَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝

६७- और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ''अल्लाह तुमको हुक्म देता है कि एक गाय (या बैल)[1] ज़ब्ह करो।'' वे कहने लगे, ''क्या आप हमसे हंसी करते हैं?'' (मूसा ने) कहा, ''अल्लाह की पनाह माँगता हूँ इससे कि मैं नादान बनूँ।''

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖٓ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا
بَقَرَةً ؕ قَالُوْٓا اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ
اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝

६८- कहने लगे, ''अपने रब को पुकारो! वह हमें साफ़-साफ़ बताएं कि वह गाय (या बैल) कैसी हो।'' (मूसा) बोले, 'वह' (अल्लाह) फ़रमाता है कि वह गाय न बूढ़ी हो न बच्चा, बल्कि दोनों के बीच की हो, बस तुम को जो हुक्म दिया गया है उसको पूरा करो,''

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ
اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ بَيْنَ ذٰلِكَ ؕ
فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ۝

६९- उन्होंने कहा, ''अपने 'रब' से हमारे लिए दुआ़ कीजिए, 'वह' हमको अच्छी तरह समझा दे कि उसका रंग कैसा हो।'' (मूसा ने) कहा, ''अल्लाह फ़रमाता है, कि उस गाय का रंग ख़ूब गहरा ज़र्द हो कि देखने वालों को भला लगे;''

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ
يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ
النّٰظِرِيْنَ ۝

७०- उन्होंने कहा, ''अपने रब से हमारे लिए पूछिए, कि हमको अच्छी तरह समझा दे कि वह क्या (गुण रखती) हो, हमको तो (इस रंग की बहुत सी) गाय एक ही तरह की मालूम होती हैं, और अल्लाह ने चाहा तो हम ज़रूर ठीक-ठीक पता लगा लेंगे;''

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ
عَلَيْنَا ؕ وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ۝

७१- (मूसा ने) कहा, ''वह अल्लाह फ़रमाता है, कि वह न किसी काम काज में ली गई हो, न ज़मीन जोतने में, और न खेती के सिंचाई में हो, हर तरह बे ऐब हो, उसमें किसी तरह का दाग़ न हो।'' वे बोले, ''अब तुम ठीक (पहचान) लाए हो फिर उस को (बड़ी मुश्किल से) ज़ब्ह किया और लगता न था कि वे ऐसा करेंगे?

قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ
وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ
قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا
يَفْعَلُوْنَ ۝

१- मौलाना फ़तेह मुहम्मद खाँ साहब जालंधरी ने बैल के अर्थ मे लिया है लेकिन अक्सर मुफस्सिरीन ने गाय के अर्थ मे प्रयोग किया है।

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَءْتُمْ فِيهَا ۖ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾

७२- और जब तुमने एक व्यक्ति को मार डाला, फिर उसके बारे में (आपस में) झगड़ने लगे, लेकिन जो बात तुम छिपा रहे थे; और अल्लाह उसको खोलने वाला था।

فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۚ كَذَٰلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٣﴾

७३- फिर 'हमने' कहा, (गाय का) ''कोई टुकड़ा मुर्दे पर मार दो (वह ज़िन्दा हो जाएगा)।'' इसी तरह (क़ियामत में) अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और 'वह' तुमको अपनी निशानियाँ (चमत्कार) दिखाता है, ताकि तुमको समझ आ जाए;

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٤﴾

७४- फिर इस (चमत्कार) के बाद भी तुम्हारे दिल कठोर ही रहे, जैसे वे पत्थर (दिल) हो गये बल्कि उससे भी अधिक कठोर; और पत्थरों में कुछ ऐसे भी होते हैं कि उनमें से नहरें फूट निकलती हैं, और कुछ ऐसे भी होते हैं जो फट जाते हैं और उनमें से पानी निकलने लगता है, और कुछ ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह के डर से लुढ़क पड़ते हैं; और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं।

أَفَتَطْمَعُونَ أَن يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ مِن بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

७५- क्या तुमको उम्मीद है कि (यहूदी) तुम्हारी बात मानकर ईमान ले आएंगे? (जबकि) उनका हाल यह है कि उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अल्लाह का कलाम (तौरात) सुनते हैं फिर उसको सुन लेने के बाद भी बदल देते हैं, और वे इसे (खूब) जानते हैं।

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ قَالُوا أَتُحَدِّثُونَهُم بِمَا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُم بِهِ عِندَ رَبِّكُمْ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٧٦﴾

७६- और जब ये लोग उनसे मिलते हैं जो ईमान ला चुके हैं, तो कहते हैं, ''हम भी ईमान ले आए हैं,'' और जब एक-दूसरे से अकेले में मिलते हैं, तो कहते हैं; ''क्या तुम उन्हें वे बातें, जो अल्लाह ने तुम पर खोलीं, बता देते हो कि वे उनके ज़रिये तुम्हारे रब के यहाँ तुमको इल्ज़ाम दें सो क्या तुम समझते नहीं!''

أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٧﴾

७७- क्या यह लोग (इतना भी) नहीं जानते! कि अल्लाह को इसकी भी ख़बर है, जिसको यह छिपाते हैं, और जिसे यह ज़ाहिर करते हैं।

وَمِنْهُمْ أُمِّيُّونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ۝

७८- और कुछ उनमें अनपढ़ (भी) हैं, जो किताब (इलाही) का कोई इल्म नहीं रखते सिवाय झूठी तमन्नाओं (कामनाओं) के, और वह तो बस अटकल से काम लेते हैं।

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَٰذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا يَكْسِبُونَ ۝

७९- तो बड़ी ख़राबी है उन लोगों के लिए जो (अल्लाह की) किताब को अपने हाथ से लिखते हैं, फिर कह देते हैं, ''यह अल्लाह की ओर से है,'' ताकि उसके ज़रिये थोड़े से दाम हासिल कर लें, तो तबाही है उनके लिए जो वह अपने हाथों से लिखते हैं और तबाही है उनके लिए जो वह कमा रहे हैं।

وَقَالُوا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَعْدُودَةً ۚ قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ ۖ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

८०- और कहते हैं, ''हमको तो दोज़ख़ की आग छुएगी भी नहीं, सिवाय कुछ गिने-चुने दिनों के।'' कह दीजिए, ''तुम ने अल्लाह के यहाँ से कोई वचन ले रखा है, जो अब अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ न करेगा? या (यूँही) अल्लाह के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जो तुम नहीं जानते;

بَلَىٰ مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

८१- जो बुरे काम करता हो और हर ओर से गुनाहों में घिरा हो, तो ऐसे ही लोग दोज़ख़ी हैं कि वे हमेशा (जहन्नम की) आग ही में रहेंगे;

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

८२- और जो लोग ईमान लाए और नेक काम करते रहे ऐसे ही लोग जन्नती हैं कि वे हमेशा उसी में रहेंगे;

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُعْرِضُونَ ۝

८३- और (याद करो) जब 'हमने' बनी इस्राईल (याकूब के बेटों) से अ़हद (प्रतिज्ञा) लिया, ''तुम इबादत न करना किसी की सिवाय अल्लाह के, और अच्छे व्यवहार से पेश आना; (अपने) माँ बाप से, रिश्तेदारों और यतीमों और मुहताजों से, और लोगों से भली बात कहना और नमाज़ क़ायम रखना, और ज़कात देते रहना।'' फिर तुम सब इन हुक्मों से फिर गये, सिवाय तुम में से कुछ लोगों के, और तुम (अहद से) मुँह फेर कर बैठ गये।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُونَ أَنْفُسَكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ۝

८४- और (याद करो) जब 'हमने' तुम से अ़हद (बचन) लिया, ''अपनों के खून न बहाओगे और न अपने लोगों को

अपनी बस्तियों से निकालोगे, फिर तुमने इक़रार किया, और तुम (खुद ही) गवाह हो;''

८५- फिर तुम वही हो कि अपनों को क़त्ल करते हो, और अपने में से कुछ लोगों को गुनाह और ज़ुल्म से चढ़ाई करके उन्हें वतन से निकाल भी देते हो और अगर वे तुम तक बन्दी बनकर पहुँच जाते हैं, तो तुम फ़िदिया (अर्थदण्ड) देकर छुड़ा भी लेते हो, हालाँकि उनका (वतन से) निकालना ही तुम पर ह़राम था; तो क्या तुम किताब के कुछ हुक्मों को तो मानते हो और कुछ को इन्कार करते हो? बस तुममें से जो ऐसा करे, उसकी सज़ा क्या है! सिवाय दुनियावी ज़िन्दगी में रूसवाई के? और क़ियामत के दिन यह सख़्त अ़ज़ाब में डाले जाएँगे, और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं, जो कुछ तुम करते हो।

ثُمَّ أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا مِنْكُمْ مِنْ دِيَارِهِمْ تَظَاهَرُونَ عَلَيْهِمْ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَإِنْ يَأْتُوكُمْ أُسَارَىٰ تُفَادُوهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ ۚ أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتَابِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَاءُ مَنْ يَفْعَلُ ذَٰلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يُرَدُّونَ إِلَىٰ أَشَدِّ الْعَذَابِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٨٥﴾

८६- यही वे लोग हैं जिन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी ख़रीद ली है, आख़िरत के बदले में, सो उन पर से न अ़ज़ाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें मदद ही पहुँचेगी।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۖ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿٨٦﴾

८७- और 'हमने' मूसा को किताब प्रदान की, और उनके पीछे 'हमने' एक के बाद एक, कई नबी भेजे; और मरयम के बेटे ईसा को 'हमने' खुली हुई निशानियाँ (चमत्कार) प्रदान कीं, और रूहुल कुदुस(जिब्राईल अ़लैहि़स्सलाम) के ज़रिये उनकी पुष्टि (मदद) की; तो जब कभी तुम्हारे पास कोई रसूल (ईशदूत) ऐसी बातें लेकर आते जो तुम्हारी इच्छाओं के ख़िलाफ़ होतीं, तो तुम अकड़ने लगते? फिर एक गिरोह को तो तुम ने झुठला दिया था और एक गिरोह को क़त्ल करते रहे।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ ۖ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۗ أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ ﴿٨٧﴾

८८- और (यहूदी) कहते, ''हमारे दिल पर्दे में (सुरक्षित) हैं,'' (नहीं) बल्कि अल्लाह ने उन पर लानत कर रखी है; उनके कुफ़्र की वजह से; तो वह बहुत कम ईमान लाते हैं।

وَقَالُوا قُلُوبُنَا غُلْفٌ ۚ بَلْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا
مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۫ فَلَعْنَةُ
اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝

८९- और जब उनके पास एक किताब अल्लाह की ओर से आयी तस्दीक़ करने वाली, उसकी जो उनके पास (पहले से) मौजूद है; और इसके पहले वे (ख़ुद ही इस किताब द्वारा) काफ़िरों पर फ़त्ह (विजय) माँगा करते थे; फिर जब उनके पास वह आ गया, जिसको वे ख़ूब पहचानते थे, तो उसी से इन्कार कर बैठे; सो अल्लाह की लानत हो काफ़िरों (इन्कारियों) पर;

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ
بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ
مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ۚ وَلِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝

९०- बुरी है, वह चीज़ जिसके बदले में उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला है; इस जलन से कि अल्लाह अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है अपनी मेहरबानी में से नाज़िल करता है (अल्लाह की नाज़िल की हुई किताब से) कुफ़्र करने लगे तो वे (उसके) ग़ज़ब पर ग़ज़ब में मुब्तिला हो गये, और काफ़िरों के लिए ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब है;

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَاۤ
اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۚ وَهُوَ الْحَقُّ
مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۗ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ
مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

९१- और जब उनसे कहा जाता है, ''ईमान लाओ, उस कलाम पर जो अल्लाह ने उतारा है,'' तो कहते हैं, हम उस पर ईमान रखते हैं जो (किताब) हमारे ऊपर उतारी गई है; और जो कुछ उसके अ़लावा है, उससे इन्कार करते हैं;'' हालाँकि वह (ख़ुद भी) ह़क़ है और उसकी भी तस्दीक़ करने वाली है जो उनके पास है, कह दीजिए, ''अच्छा तुम इससे पहले नबियों को क्यों क़त्ल करते रहे, अगर तुम ईमान वाले हो?''

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ
مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝

९२- और तुम्हारे पास मूसा खुली-खुली निशानियाँ लेकर आए इस पर भी तुमने बछड़े को अपना (उपास्य बना) लिया, और तुम तो हो ही ज़ालिम;

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ۚ خُذُوْا
مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ۚ قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ۗ
وَاُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ
بِهٖۤ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

९३- और जब 'हमने' तुमसे पक्का अ़हद (वचन) लिया, और तुम्हारे ऊपर तूर (पहाड़) को बुलन्द किया, ''जो कुछ 'हमने' तुम्हें दिया है, उसे मज़बूती के साथ पकड़ो, और सुनो;'' वे बोले, ''हमने सुना, लेकिन हम मानते नहीं और उनके कुफ़्र की वजह से बछड़ा उनके दिल में समाया हुआ था, कह दीजिए, ''अगर तुम ईमान वाले (बनते) हो तो तुम्हारा ईमान तुमको कैसी बुरी बात सिखाता है;''

९४- कह दीजिए, ''अगर अल्लाह के यहाँ आख़िरत का घर (परलोक का सुख) ख़ास कर तुम्हारे ही लिए है, दूसरे लोगों के लिए नहीं; तो अगर तुम्हारा यह ख़याल सच्चा है तो मौत की तमन्ना करो;''

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ

९५- लेकिन वे इसकी इच्छा कभी न करेंगे, उन बुरे कामों की वजह से जो वे अपने हाथों आगे भेज चुके हैं; और अल्लाह तो ज़ालिमों को खूब जानता है;

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيْهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالظّٰلِمِيْنَ

९६- और आप उन्हें जीवन का हरीस (लालची) सब लोगों से बढ़कर पाएँगे, और (यहाँ तक कि) मुश्रिकों से भी बढ़कर; उनमें से हर-एक यह चाहता है कि हज़ार वर्ष की उम्र पाए, और अगर इतनी उम्र पा भी जाएँ तो वह उन्हें (आख़िरत के) अ़ज़ाब से बचा न सकेगी, और जो कुछ वे कर रहे हैं अल्लाह उसे खूब देख रहा है।

وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ أَشْرَكُوْا ۚ يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُّعَمَّرَ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِمَا يَعْمَلُوْنَ

९७- कह दीजिए, ''जो कोई जिब्रईल का दुश्मन हो, उसने तो इस (क़ुर्आन) को आप के दिल पर अल्लाह के हुक्म से उतारा है, वह तस्दीक़ (सत्यापन) करने वाला है उस (किताब) की जो उसके पहले से है; और ईमान वालों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी है।

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَإِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ

९८- जो व्यक्ति अल्लाह का दुश्मन हो, और उसके फ़रिश्तों का, और उसके रसूलों का, और जिब्रईल,और मीकाईल (फ़रिश्तों) का, तो अल्लाह भी ऐसे काफ़िरों (इन्कारियों) का दुश्मन है।

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَإِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ

९९- और (ऐ पैग़म्बर!) 'हमने' तुम्हारे पास स्पष्ट निशानियाँ भेजी हैं और बद्‌किरदारों (दुष्कर्मियों) के सिवा, और कोई उनसे इन्कार न करेगा।

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ إِلَّا الْفٰسِقُوْنَ

१००- क्या यह (उनकी नीति) है, कि उन्होंने जब कभी कोई अ़हद (प्रतिज्ञा) किया तो उन्हीं में से किसी (न किसी) गिरोह ने उसे तोड़ डाला, बल्कि अक्सर तो ईमान ही नहीं रखते;

أَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا
مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾

१०१- और जब उनके पास अल्लाह की ओर से रसूल आए, और (वह) उस किताब (तौरात) की, जो इन (यहूदियों) के पास है तस्दीक़ (पुष्टि) करते हैं, तो जिन लोगों को किताब दी गई थी उनमें से एक गिरोह ने, अल्लाह की किताब को अपनी पीठ के पीछे फेक दिया, जैसे कि वे जानते ही नहीं।

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ
وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ
النَّاسَ السِّحْرَ ۗ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ
هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ۚ وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى
يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۚ فَيَتَعَلَّمُوْنَ
مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ۚ وَمَا
هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَ
يَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۚ وَلَقَدْ عَلِمُوْا
لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۚ
وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ۚ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٢﴾

१०२- और उन (ढकोसलों) के पीछे लग गये, जिसे शैतान सुलेमान की हुकूमत में पढ़ते थे, (जादू का) और सुलेमान ने तो कभी कुफ़्र नहीं किया, बल्कि शैतान (ही) कुफ़्र किया करते थे; कि लोगों को जादू सिखाते थे और उन बातों के भी पीछे हो लिए जो बाबुल (शहर) में 'हारूत' और 'मारूत' दो फ़रिश्तों पर उतरा था; और वे (दोनों) किसी को कुछ नहीं सिखाते थे जब तक यह कह न देते थे कि ''हम तो आज़माइश के लिए हैं, तो तुम (इसे सीखकर) कुफ़्र में न पड़ो।'' लोग उनसे ऐसा (जादू) सीखते जिसके ज़रिये पति-पत्नी में जुदाई डाल दें, हालाँकि अल्लाह के हुक्म के बिना वह अपनी इन बातों से किसी को नुक़सान नहीं पहुँचा सकते थे, मगर यह कुछ ऐसे (मन्त्र) सीखते जिनसे इन्हें ही नुक़सान पहुँचता और फ़ायदा कुछ न होता, और वह इतना ज़रूर जानते थे; कि जो व्यक्ति इन बातों (जादू) का ख़रीदार होगा उसके लिए आख़िरत (परलोक) में कोई हिस्सा, नहीं, वह बहुत बुरा था जिसके बदले में उन्होंने अपने आप को बेच डाला, काश! वे जानते।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
خَيْرٌ ۚ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٣﴾

१०३- और अगर वे ईमान ले आते और तक़वा (परहेज़गारी) अपनाते तो उसका सवाब अल्लाह के यहाँ कहीं बेहतर होता; काश! वे (इतना) जानते।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا
انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ۗ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٤﴾

१०४- ऐ ईमान वालो! (पैग़म्बर के साथ) 'राअ़िना' न कहा करो बल्कि 'उन्ज़ुर्ना' कहा करो; और ध्यान से सुनो और काफ़िरों के लिए दुखदाई अ़ज़ाब है;

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

१०५- जो लोग काफ़िर हैं (चाहे) अह्ले किताब (किताब वाले)

وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿١٠٥﴾

में से हों या मुश्रिकों में से, वे इसे ज़रा भी पसंद नहीं करते कि तुम्हारे ऊपर कोई भी भलाई तुम्हारे रब की ओर से उतरे; हालाँकि अल्लाह अपनी रहमत में जिसे चाहता है खास (नियुक्त) कर लेता है और अल्लाह बड़ा ही फ़ज़्ल (मेहरबानी) वाला है।

مَا نَنْسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنْسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِنْهَا أَوْ مِثْلِهَا ۗ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٦﴾

१०६- (ऐ पैग़म्बर!) 'हम' कोई आयत मन्सूख़ (स्थगित) कर देते हैं या उसे भुला देते हैं तो उससे अच्छी या वैसी ही (दूसरी आयत) भेज देते हैं, क्या तुमको मालूम नहीं, कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्य) है?

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٠٧﴾

१०७- क्या तुमको मालूम नहीं कि आसमानों और ज़मीन का राज्य 'उसी' अल्लाह का है, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त और मददगार नहीं।

أَمْ تُرِيدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿١٠٨﴾

१०८- क्या तुम यह चाहते हो कि अपने रसूल से उसी तरह के सवाल करो जिस तरह के सवाल पहले मूसा से किये गये थे? और जो ईमान के बदले कुफ़्र अपनाए, तो वह सीधे रास्ते से भटक गया।

وَدَّ كَثِيرٌ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُدُّونَكُمْ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۖ فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٩﴾

१०९- बहुत से अह्ले किताब हक़ के ज़ाहिर हो जाने के बावजूद, अपने दिली हसद (ईर्ष्या) की वजह से चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान लाने के बाद फिर तुमको काफ़िर बना दें, तो तुम माफ़ करो, और उन पर ध्यान न दो, यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म जारी कर दे, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थ्य) रखता है;

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٠﴾

११०- और नमाज़ की पाबन्दी रखो, और ज़कात देते रहो; और जो कुछ भलाई तुम अपने लिए आगे भेज दोगे,उसे अल्लाह के पास पा लोगे, बेशक तुम जो कुछ कर रहे हो, अल्लाह उसका ख़ूब देखने वाला है।

وَقَالُوا لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ ۗ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١١١﴾

१११- और (यहूदी और ईसाई) कहते हैं कि यहूदियों और ईसाइयों के सिवा कोई जन्नत में जा नहीं पाएगा,'' यह उन लोगों की बातिल इच्छाएँ हैं, कह दीजिए, ''अपनी सनद (प्रमाण) लाओ, अगर तुम सच्चे हो।''

بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ
أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

११२- हाँ सच बात तो यह है कि जिसने अपने आप को (भक्ति पूर्वक) अल्लाह के हवाले कर दिया और भले काम करने वाला (सत्कर्मी) हो गया, तो उसको इसका बदला उसके रब से मिलेगा; और ऐसे लोगों को (क़ियामत में) न डर होगा और न वे दुखी होंगे।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصَارَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ
وَقَالَتِ النَّصَارَىٰ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ
وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَابَ ۗ كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ
مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا
كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

११३- और यहूदी कहते हैं, ‘‘ईसाई (का मज़हब) कुछ नहीं,’’ और ईसाई कहते हैं, ‘‘यहूद (का मज़हब) कुछ नहीं,’’ हालाँकि वे (दोनों ही) किताब (तौरात व इंजील) के पढ़ने वाले हैं, इसी तरह उन्हीं जैसी बातें ये(मुश्रिक भी) करते हैं, जो (कुछ भी) नहीं जानते, तो जिस बात में ये लोग झगड़ रहे हैं, क़ियामत के दिन अल्लाह इनमें उसका फ़ैसला कर देगा।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسَاجِدَ اللَّهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا
اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا ۚ أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ
أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا
خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

११४- और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा!! जो अल्लाह की मस्जिदों को इससे रोक दे, कि उनमें उसका नाम लिया जाए, और उसकी बरबादी का प्रयास करे? यह लोग इस योग्य ही नहीं कि उसमें दाखिल हों, मगर हाँ यह कि डरते हुए; उनके लिए दुनिया में रूसवाई है और आख़िरत में (भी) बड़ा अ़ज़ाब है।

وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ
اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝

११५- और (यहूद व नसारा अपने-अपने क़िब्लों के लिए झगड़ते हैं हालाँकि) अल्लाह ही का है पूरब (भी) और पश्चिम (भी), तो जिस ओर भी तुम मुँह करो, उधर ही अल्लाह की ज़ात है। बेशक अल्लाह बेहद वुसअ़त वाला (सर्वव्यापी), जानने वाला है।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۖ بَلْ لَهُ مَا فِي
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَهُ قَانِتُونَ ۝

११६-और ये लोग कहते हैं, ‘‘अल्लाह औलाद रखता है (हालाँकि) ‘वह’ इन बातों से पाक है, बल्कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब ‘उसी’ का है और सब उसी के फ़रमांबरदार (आज्ञाकारी) हैं;

بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا
يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

११७- (वह) बनाने वाला है आसमानों और ज़मीन का; और जब (वह) किसी काम को करना चाहता है, तो बस इतना ही उससे कहता है, ‘‘हो जा’’ तो वह हो जाता है ।

११८- और जिन्हें इल्म (जानकारी) नहीं है, वे कहते हैं, ''अल्लाह हमसे बात क्यों नहीं करता? या हमारे पास कोई निशानी (बड़ी) क्यों नहीं आ जाती?'' इसी तरह वे लोग कह चुके हैं, जो इनसे पहले हो चुके हैं वे भी इन्हीं की सी बातें किया करते थे, इन लोगों के दिल आपस में मिलते-जुलते हैं। हमने अपनी निशानियां बयान कर दी हैं उन लोगों के लिए जो यक़ीन रखते हैं।

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ
اَوْ تَاْتِيْنَاۤ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ
قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ
يُّوْقِنُوْنَ ۝

११९- (ऐ मुहम्मद) हमने आपको हक़ के साथ भेजा है ख़ुशख़बरी सुनाने वाला, और डराने वाला बनाकर, और आपसे दोज़ख़ वालों के विषय में कुछ भी पूछ न होगी;

اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْـَٔلُ
عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ۝

१२०- और आपसे हरगिज़ न यहूदी खुश होंगे और न ईसाई जब तक कि आप उनके मज़हब पर न चलने लग जाएँ। कह दीजिए, ''अल्लाह की (बतलाई हुई) हिदायत ही हिदायत है और अगर बाद उस इल्म के, जो आप को पहुँच चुका है, उनकी इच्छाओं की पैरवी करने लगेंगे! तो आपके लिए अल्लाह (की पकड़) के सामने न कोई दोस्त होगा न कोई मदद्गार।

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى
تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ
وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِىْ جَآءَكَ مِنَ
الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝

१२१- जिन लोगों को 'हमने' किताब दी, वे उसे उसी तरह पढ़ते हैं, जिस तरह उसके पढ़ने का हक़ है, वे लोग उस पर ईमान रखने वाले हैं, और जो लोग इससे इन्कार करते हैं तो वही लोग घाटे में रहेंगे।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ
اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

१२२- ऐ बनी इस्राईल! मेरी वह नेअ़मतें याद करो, जो 'मैंने' तुम को दीं, और यह कि मैंने तुमको सारे संसार के लोगों पर फ़ज़ीलत (प्रधानता) दी;

يٰبَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْۤ اَنْعَمْتُ
عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝

१२३- और उस दिन से डरो, कि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति का बोझ न बाँट सकेगा, और न उसकी ओर से कोई बदला स्वीकार किया जाएगा, और न सिफ़ारिश उसको फ़ायदा देगी, और न लोगों को कोई मदद पहुँचेगी।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا
يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ
يُنْصَرُوْنَ ۝

१२४- और (याद करो) जब इब्राहीम को उनके रब ने कुछ बातों में आज़माया, तो उन्होंने उन बातों को पूरा कर दिखाया,

وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ
اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ ؕ قَالَ

لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ۝

(तो अल्लाह ने) कहा, ''मैं ज़रूर तुमको, लोगों का इमाम (पथ प्रदर्शक) बनाऊँगा।'' उन्होंने कहा, ''मेरी नस्ल में भी,'' कहा, ''मेरा वादा ज़ालिमों (अत्याचारियों) को नहीं पहुँचता।''

وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا ۚ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ إِبْرٰهِمَ مُصَلًّى ۚ وَعَهِدْنَآ إِلٰٓى إِبْرٰهِمَ وَإِسْمٰعِيْلَ أَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ۝

१२५- और (याद करो) जब 'हमने' कअ़बः को लोगों के जमा होने और अमन पाने की जगह बनाया; और (लोगों को हुक्म दिया कि) इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ की जगह बना लो; और 'हमने' इब्राहीम और इस्माईल को हुक्म दिया कि ''मेरे घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों, और एतिकाफ़ करने वालों, और रूकूअ़ व सज्दः करने वालों के लिए पाक-साफ़ रखा करें।

وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ أَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَأُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهٗٓ إِلٰى عَذَابِ النَّارِ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ۝

१२६- और जब इब्राहीम ने दुआ़ की, ''ऐ मेरे रब! इस शहर को अमन वाला बना दे और इसमें रहने बसने वालों में से जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाएँ।'' उनके खाने को मेवे अता कर (अल्लाह ने फ़रमाया), ''जो कुफ़्र करेगा, 'मैं' उसे भी कुछ दिन मज़े उड़ाने दूँगा, फिर उसे घसीटते हुए जहन्नम के अ़ज़ाब तक पहुँचा दूँगा और वह कैसा बुरा ठिकाना है!''

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرٰهِمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمٰعِيْلُ ۚ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۚ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ۝

१२७- और (वह वक़्त भी याद रखना चाहिए) जब इब्राहीम और इस्माईल कअ़बे की बुनियादें ऊँची कर रहे थे। (और दुआ़ कर रहे थे) ''ऐ हमारे रब! हमसे (यह खिदमत) क़ुबूल कर; बेशक 'तू' सुनने वाला, जानने वाला है;

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۖ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ۝

१२८- ऐ हमारे रब! हम (दोनों) को अपना फ़रमाँबरदार बनाए रख और हमारी औलाद में और हमको हमारी इबादत (हज्ज) के तरीक़े बता और हमारी तौबः क़ुबूल कर; बेशक 'तू' बड़ा तौबः क़ुबूल करने वाला, रह़म वाला है।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ۚ

१२६- ऐ हमारे रब! उनमें एक रसूल उन्हीं में से भेज, जो उन्हें तेरी आयतें पढ़कर सुनाए, और उन्हें अल्लाह की किताब और

إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

हिकमत की तालीम (शिक्षा) दे, और उन्हें पाक (संय्यमी) करे, बेशक तू ज़बर्दस्त, हिकमत वाला है।''

وَمَن يَرْغَبُ عَن مِّلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَن سَفِهَ نَفْسَهُ ۚ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا ۖ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ

१३०- और इब्राहीम के मज़हब से कौन फिरेगा? मगर वही जिसने अपने को मूर्ख बना लिया हो, और 'हमने' उनको दुनिया में भी चुन लिया, और आख़िरत (परलोक) में (भी) वह नेकों (सदाचारियों) में से होंगे।

إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ ۖ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ

१३१- जब उनसे उनके रब ने फ़रमाया, ''इस्लाम ले आओ तो वह बोले,''मैं तो सारे जहान के रब की फ़रमाँबरदारी के लिए सर झुकाता हूँ।''

وَوَصَّىٰ بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ يَا بَنِيَّ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ لَكُمُ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ

१३२- और इब्राहीम इसी की वसीयत कर गये अपने बेटों को, और इसी तरह याक़ूब ने भी की, ''ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने इस दीन को तुम्हारे लिए पसंद फ़रमाया है, तो तुम न मरना मगर मुसलमान हो कर (अर्थात आज्ञाकारी हो कर)।

أَمْ كُنتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتُ إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِن بَعْدِي قَالُوا نَعْبُدُ إِلَٰهَكَ وَإِلَٰهَ آبَائِكَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِلَٰهًا وَاحِدًا وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ

१३३- (ऐ यहूद) क्या तुम मौजूद थे, जब याक़ूब के सामने मौत आ खड़ी हुई? जब उन्होंने अपने बेटों से पूछा, ''मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे?'' तो उन्होंने जवाब दिया, ''हम आपके मअ़बूद (उपास्य) और आपके बाप-दादा यानी इब्राहीम, और इस्माईल और इस्हाक़ के मअ़बूद, की इबादत करेंगे जो अकेला मअ़बूद (उपास्य) है और हम तो उसी के फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी) हैं,''

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُم مَّا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ

१३४- यह एक गिरोह था जो गुज़र गया; जो कुछ उस गिरोह ने कमाया वह उसके लिए है, और जो कुछ तुमने कमाया है, वह तुम्हारे लिए है; और वे जो कुछ करते रहे थे, उसके बारे में तुम से नहीं पूछा जाएगा।

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ تَهْتَدُوا ۗ قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

१३५- और कहते हैं, ''यहूदी या ईसाई हो जाओ, तो सच्चे रास्ते पर आ जाओगे।'' उनसे कह दीजिए, ''(नहीं) बल्कि हम इब्राहीम के दीन की पैरवी करते हैं, जो 'एक' (अल्लाह) के हो रहे थे और मुश्रिकों में से न थे।''

قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى
اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ
وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ
رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَ نَحْنُ لَهٗ
مُسْلِمُوْنَ ۝

१३६- कह दो, हम तो ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हम पर (किताब) उतारी गई है, और उस पर जो कि इब्राहीम, और इस्माईल, और इस्हाक़, और याक़ूब, और उनकी औलाद पर उतारी गई; और मूसा और ईसा को जो (किताब) मिली (उस पर भी); और जो (दूसरे) नबियों को 'उनके' रब से मिला (उस पर भी); हम इनमें से किसी एक में भी फ़र्क़ (विभेद) नहीं करते, और हम उसी (एक अल्लाह) के फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी) हैं।''

فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ
وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

१३७- तो अगर यह लोग भी उसी तरह ईमान ले आएँ, जिस तरह तुम ईमान लाए हो, तो वे हिदायत (राह) पा जाएँ, और अगर वह मुँह मोड़े रहें, तो वह बड़ी मुख़ालिफ़त में पड़े हैं; तो अल्लाह तुम्हारी ओर से उनके मुक़ाबिले में काफ़ी है और 'वह' खूब सुनता, जानता है ।

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّ
نَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ۝

१३८- (कह दो कि हमारे ऊपर) ''अल्लाह का रंग है, और अल्लाह से बेहतर रंग किस का हो सकता है?'' और हम तो 'उसी' की इबादत करने वाले हैं।

اَتُحَآجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ وَ هُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا
وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَ نَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ۝

१३९- कह दीजिए, ''क्या तुम हमसे अल्लाह के बारे में हुज्जत (कुतर्क) करते हो? हालाँकि 'वही' हमारा रब है, और तुम्हारा भी रब है; और हमारे काम हमारे लिए हैं, और तुम्हारे काम तुम्हारे लिए, और हम तो ख़ास उसी की इबादत करने वाले हैं।

اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَ
يَعْقُوْبَ وَ الْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ۚ قُلْ
ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ۚ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً
عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ۚ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

१४०- क्या तुम्हारा (यह) दावा है कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद यहूदी थे, या ईसाई थे?'' (ऐ पैग़म्बर! इनसे) कह दीजिए, ''क्या तुम ज़्यादा जानने वाले हो, या अल्लाह? और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा? जो उस गवाही को छिपाए जो उसके पास अल्लाह की ओर से है; और तुम्हारे करतूतों से अल्लाह बेख़बर नहीं।''

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ
وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

१४१- वह एक गिरोह था जो गुज़र गया उन लोगों ने जो कुछ कमाया वह उनके लिए है, और तुमने जो कुछ कमाया वह तुम्हारे लिए है, उन के आमाल के बारे में तुम से नहीं पूछा जाएगा।

१४२- मूर्ख लोग कहेंगे,''यह (मुसलमान) जिस क़िब्ले पर (पहले) थे (यानी बैतुलमुक़द्दस) उससे (कअ़बे की ओर को) मुड़ जाने की क्या वजह है?'' कह दीजिए, ''पूरब और पश्चिम (सब) अल्लाह ही का है, 'वह' जिसको चाहता है सीधी राह दिखाता है।''

* سَيَقُولُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ۚ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

१४३- और इसी तरह 'हमने' तुमको एक दर्मियानी उम्मत बनाया, ताकि लोगों पर तुम गवाह बनो, और रसूल तुम पर गवाह बनें, और (ऐ रसूल!) जिस क़िब्ले पर तुम थे 'हमने' उसको इसी मक़सद से ठहराया था ताकि 'हमको' मालूम हो जाए, कि कौन रसूल के अधीन रहेगा और कौन उल्टे पाँव फिरेगा; और यह बात भले ही भारी हो लेकिन उन पर नहीं, जिनको अल्लाह ने हिदायत (राह) दी है, और अल्लाह ऐसा नहीं, कि तुम्हारा ईमान अकारथ कर दे, अल्लाह तो लोगों पर बड़ा रह़म करने वाला, मेहरबान है।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ۗ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

१४४- 'हमने' देख लिया आपके चेहरे का बार-बार आसमान की ओर उठना, सो ज़रूर 'हम' आप को फेर देंगे उस क़िब्ले की ओर, जिसे आप पसंद करते हैं; अच्छा अब कर लीजिए अपना चेहरा मस्जिदे-ह़राम की ओर; और तुम लोग जहाँ कहीं भी हो, अपना मुँह उसी तरफ़ फेर लिया करो और जिन लोगों को किताब दी जा चुकी है वह खूब जानते हैं कि उनके 'रब' की ओर से ह़क़ है, और अल्लाह बेख़बर नहीं उन लोगों के कर्तूतों से।

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۖ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۗ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝

१४५- और अगर आप उन लोगों के सामने, जिन्हें किताब दी जा चुकी है, तमाम दलीलें ले आएँ तब भी वे आपके क़िब्ले की पैरवी न करेंगे, और न आप उनके क़िब्ले की पैरवी करने वाले हैं, और न वे आपस में एक-दूसरे के क़िब्ले को मानने वाले हैं, और अगर (कहीं) आप उन के इच्छा की पैरवी करने लगे, बाद इसके कि आपके पास इल्म आ चुका है, तो आप ज़ालिमों में हो जाएँगे।

وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

१४६- जिन लोगों को 'हम' किताब दे चुके हैं, वे उसे (मुहम्मद को) ऐसे पहचानते हैं, जिस तरह कोई अपनी औलादों को पहचानता हो (कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं) और उनमें से एक गिरोह जानते बूझते हक़ को छिपाता है।

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤٦﴾

१४७- यह आप के रब की ओर से हक़ है, आप हरगिज़ सन्देह करने वालों में से न होइएगा।

الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١٤٧﴾

१४८- और हर एक के लिए एक दिशा है जिधर (इबादत में) वह अपना मुँह करते हैं तो तुम नेकियों में बाज़ी ले जाओ भलाइयों की ओर लपको, तुम जहाँ भी होगे अल्लाह तुम सबको ले आएगा, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।

وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا ۖ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٤٨﴾

१४९- और आप जिस जगह से भी (बाहर) निकलें, अपना मुँह मस्जिदे-ह़राम कअ्बः की ओर कर लिया करें; और यह आपके रब की ओर से ह़क़ बात है; और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं, जो कुछ तुम कर रहे हो।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِن رَّبِّكَ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٩﴾

१५०- और आप जिस जगह से भी (बाहर) निकलें, अपना मुँह मस्जिदे-ह़राम की ओर कर लिया करें; और तुम लोग जहाँ कहीं (भी) हो अपना मुँह 'उसी की' ओर कर लिया करो, ताकि लोगों को तुम्हारे मुक़ाबिले में हुज्जत न रह जाए सिवाय उन लोगों के, जो ज़ालिम हैं, सो तुम उनसे न डरो बल्कि (केवल) 'मुझ' ही से डरो, ताकि 'मैं' अपना इनआ़म तुम पर पूरा करूँ और ताकि तुम सीधी राह पर क़ायम रहो।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٠﴾

१५१- जिस तरह 'हमने' तुम्हारे दर्मियान तुम्हीं में से एक रसूल भेजा जो तुमको हमारी आयतें पढ़ कर सुनाते, और तुम्हें पाक करते, और तुम्हें किताब और ह़िकमत की तअ़लीम देते, और तुम्हें उसकी तअ़लीम देते जो तुम नहीं जानते थे।

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿١٥١﴾

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ۝

१५२- सो तुम मुझे याद करते रहो, मैं तुम्हें याद करता रहूँगा, और मेरी शुक्रगुज़ारी करते रहो, और नाशुक्री न करो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

१५३- ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से मदद लिया करो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ۭ بَلْ اَحْيَاۗءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ۝

१५४- और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये जाएँ, उनको मुर्दा न कहो, बल्कि वे ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम्हें शोऊ़र (एह़सास) नहीं।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ۭ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ۝

१५५- और 'हम' तुम्हारी आज़माइश (परीक्षा) करके रहेंगे कुछ डर और भूख से, और माल व जान से, और फलों के नुक़सान से; और (आप) सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝

१५६- जब उन लोगों पर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो कहते हैं, ''हम अल्लाह ही के लिए हैं, और हमें अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है।''

اُولٰۗىِٕكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۣ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ۝

१५७- यही लोग हैं जिन पर उनके रब की ओर से फ़ज़्ल (कृपा) और रह़मतें होंगी और यही सीधी राह (पाने) वाले हैं।

اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَاۗىِٕرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ۭ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ۝

१५८- बेशक सफ़ा और मर्वः (नामी पहाड़) अल्लाह की निशानियों में से हैं तो जो व्यक्ति कअ़बः का ह़ज या उ़मरः करे, उस पर इन दोनों के बीच फेरे (सई) करने में कुछ गुनाह नहीं; और जो ख़ुशदिली से नेक काम करे, तो अल्लाह बड़ी क़द्र करने वाला, जानने वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتٰبِ ۙ اُولٰۗىِٕكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ۝

१५९- जो लोग छिपाते हैं उस चीज़ को, जो 'हम' खुली हुई निशानियों और हिदायतों (निर्देशों) में से उतार चुके हैं, बाद इसके कि 'हम' उसे लोगों के लिए अल्लाह की किताब में खोल चुके हैं, यही लोग हैं कि अल्लाह उन पर लानत करता है और तमाम लोग लानत करते हैं;

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰۗىِٕكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝

१६०- सिवाय उनके जिन्होंने तौबः कर ली, और सुधार कर लिया, और साफ़-साफ़ बयान कर दिया तो उनकी तौबः

क़ुबूल कर लेता हूँ, और 'मैं' बड़ा तौबः क़ुबूल करने वाला, रह़म वाला हूँ;

१६१- जिन लोगों ने कुफ़्र (इन्कार) किया, और कुफ़्र ही की ह़ालत में मर गये; उन पर अल्लाह की, फ़रिश्तों की, और तमाम इन्सानों की लानत है;

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ

१६२- वे इस (लानत) में हमेशा-हमेश रहेंगे, न उनके अ़ज़ाब में कमी होगी और न उनको मोहलत ही मिलेगी।

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ

१६३- और तुम्हारा इलाह, (पूज्य) एक ही इलाह है, 'उस' रह़मान और रह़ीम (करूणामय और दयावान) के सिवा कोई इलाह(पूज्य) नहीं।

وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ

१६४- बेशक आसमानों और ज़मीन को पैदा करने में, और रात-दिन के आने-जाने में, और किश्तियों में, जो लोगों के फ़ायदे की चीज़ें समुद्र में लेकर चलती हैं, और बारिश में जिसको अल्लाह ने आसमान से बरसाया; फिर उसके ज़रिये ज़मीन को, उसके मर जाने के बाद ज़िन्दा किया, और उसमें हर क़िस्म के जानदार (जीवधारी) फैलाए; और हवाओं के फेरने में, और बादल में जो(अल्लाह के हुक्म से) आसमान और धरती के बीच काम में लगे हैं, (इन सब में) अक्लमन्दों (बुद्धिमानों) के लिए निशानियाँ हैं।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ

१६५- और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह के सिवा और को भी बराबर (समवर्ती पूज्य) ठहराते हैं; कि जैसी मुह़ब्बत अल्लाह से रखनी चाहिए, वैसी मुह़ब्बत उनसे रखते हैं; और ईमान वाले जो हैं, उनको तो सबसे बढ़कर अल्लाह ही से मुह़ब्बत होती है; और क्या ही अच्छा होता कि इन ज़ालिमों को सुझाई दे जाता जो उस समय सुझाई देगा, जब अ़ज़ाब उनके सामने होगा; कि सारी ताक़त अल्लाह ही के अधीन है, और यह कि अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है;

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾

१६६- उस वक़्त (कुफ़्र के) अगुवाकार अपने पीछे चलने वालों से अलग हो जाएँगे और (अपनी आँखों से) अ़ज़ाब देख लेंगे, और उनके आपसी सम्बन्ध टूट जाएँगे;

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا ۗ كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾

१६७- और पीछे चलने वाले कह उठेंगे, ''क्या ही अच्छा होता! कि हमको फिर एक बार लौटकर दुनिया में जाने को मिल जाता,तो जैसे यह हमसे बेज़ार (विरक्त) हो गये, इसी तरह़ हम भी इनसे बेज़ार हो जाते।'' यूँ तो अल्लाह उनके कारनामे सामने लाएगा, कि उनको ह़सरत होगी और वे आग से कभी निकल न सकेंगे।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿١٦٨﴾

१६८- ऐ इन्सानो! ज़मीन में जो चीज़ें ह़लाल और शुद्ध हैं उनमें से खाओ; और शैतान के पदचिन्हों पर मत चलो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है;

إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٦٩﴾

१६९- वह तो तुम्हें बुराई और बेशर्मी ही का हुक्म देगा, और इसका कि तुम अल्लाह पर ऐसी बातें गढ़ लो जिसका तुम इल्म भी नहीं रखते।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۗ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٧٠﴾

१७०- और जब उनसे कहा जाता है, ''जो अल्लाह ने उतारा है उस पर चलो,'' तो जवाब में कहते हैं, ''नहीं, हम तो उसी पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है।'' भला अगर उनके बाप-दादा कुछ समझ न रखते रहे हों! और न सच्चे मार्ग पर चलते रहे हों (तब भी यह उन्हीं की पैरवी करेंगे।)

وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ۚ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٧١﴾

१७१- और इन इन्कार करने वालों (काफ़िरों) की मिसाल ऐसी है जैसे कोई उस बात को चीखे, जो उसे स्वयं भी एक पुकार और आवाज़ के सिवा कुछ और सुनाई न दे; (ये लोग) बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं, सो (कुछ) नहीं समझते।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١٧٢﴾

१७२- ऐ ईमान वालो! पाक चीज़ों में से जो कुछ 'हमने' तुम्हें दिया है खाओ (पियो) और अल्लाह का शुक्र अदा करते रहो, अगर तुम 'उसकी' इबादत करते हो;

१७३- 'उसने' तो तुम पर केवल मुर्दार(मरा हुआ जानवर) और खून, और सुअ़र का गोश्त, और जिस (जानवर) पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो (अर्थात भेंट चढ़ाया गया हो तो) ह़राम ठहराया है, फिर जो बहुत मजबूर और विवश हो, (परन्तु) नाफ़रमानी (अवज्ञा) करने वाला और ह़द से बढ़ जाने वाला न हो, तो उस पर कोई गुनाह नहीं; बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ
وَمَا أُهِلَّ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ ۖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا
عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٧٣﴾

१७४- जो लोग उन आदेशों को, जो अल्लाह ने अपनी किताब (तौरात) में उतारे; छिपाते हैं, और उसके बदले थोड़ी सी क़ीमत का सौदा करते हैं, वे इसके सिवा कुछ नहीं! कि अपने पेटों में अंगारे भरते हैं, और क़ियामत के दिन अल्लाह उनसे बात भी नहीं करेगा और न उनको (गुनाहों से) पाक करेगा, और उनको बड़ा ही दुःख देने वाला अ़ज़ाब होगा;

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ
وَيَشْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۙ أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ
فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٤﴾

१७५- यही लोग हैं जिन्होंने हिदायत (मार्गदर्शन) के बदले गुमराही मोल ली, और मग़्फ़िरत (मुक्ति) के बदले अ़ज़ाब मोल लिया, यह आग को कैसे बर्दाश्त करने वाले हैं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابَ
بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾

१७६- यह (अ़ज़ाब) इसलिए होगा कि अल्लाह ने तो ह़क़ के साथ किताब उतारी, और जिन लोगों ने किताब के मामले में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) किया, वह हठधर्मी और विरोध में बहुत दूर निकल गये।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَّلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ
اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿١٧٦﴾

१७७- भलाई केवल यही नहीं कि तुम अपना चेहरा पूरब या पश्चिम की ओर कर लो; बल्कि भलाई तो यह है कि जो अल्लाह पर, और आख़िरत के दिन पर, और फ़रिश्तों पर, और (अल्लाह की) किताब पर, और नबियों पर ईमान लाए; और अल्लाह की मुह़ब्बत में अपना माल नातेदारों और यतीमों (अनाथों) और मुहताजों और मुसाफ़िरों और माँगने वालों को और (ग़ुलामी आदि की क़ैद से लोगों की) गर्दनों के छुड़ाने में ख़र्च करें, और नमाज़ क़ायम करें, और ज़कात दें, और जब (किसी) बात का इक़रार या अ़हद (वचन) करें तो अपना अ़हद पूरा करे, और तंगी में, और मुसीबत और लड़ाई के

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ
وَالْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ ۖ وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ
حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَابْنَ
السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ ۖ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ
وَآتَى الزَّكَاةَ ۖ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا ۖ
وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ ۗ
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾

समय सब्र करे; यही लोग सच्चे हैं और यही लोग परहेज़गार (संयमी) हैं।

१७८- ऐ ईमान वालो! फर्ज़ किया गया तुम पर, कि क़त्ल किये गये लोगों के खून का क़िसास (बदला) दिलाओ, आज़ाद, (मक़तूल हो तो उस) के बदले आज़ाद और ग़ुलाम (मक़तूल) के बदले ग़ुलाम, और औरत (मक़तूल) के बदले औरत से क़िसास (खून का बदला) लिया जाए, अगर क़ातिल को भाई चारे के ख़याल से कुछ माफ़ी दी जाए, तो भले तरीक़े से एहसान मानकर, "खूँ बहा" की रक़म अच्छे तरीक़े से अदा करे; यह तुम्हारे रब की ओर से एक छूट और मेहरबानी है, फिर इसके बाद भी जो ज़्यादती करे तो उसके लिए दर्दनाक (दुखद) अज़ाब है;

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنْثَى بِالْأُنْثَى فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ذَٰلِكَ تَخْفِيفٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

१७९- और इसी तरह क़िसास (के हुक्म) में तुम्हारी ज़िन्दगी (सुरक्षित) है, ऐ अक़्ल वालों! ताकि तुम(खून ख़राबे से) बचो।

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَاةٌ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝

१८०- तुम पर फ़र्ज़ (अनिवार्य) किया गया है कि जब तुम में से कोई मरने लगे और (वह अपने पीछे) माल छोड़ रहा हो, तो अपने माँ-बाप और अपने क़रीबी रिश्तेदारों के लिए अच्छे तरीक़े से (नियमानुसार) वसीयत कर जाए, परहेज़गारों पर यह एक हक़ है।

كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ۝

१८१- तो जो व्यक्ति (वसीयत को) सुनने के बाद बदल डाले, तो उस (के बदलने) का गुनाह बदलने वाले पर होगा, बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है;

فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَمَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

१८२- फिर जिस वसीयत करने वाले को न्याय से किसी तरह के हटने, या हक़ मारने का डर हो, तो उनके (वारिसों के) बीच सुधार की व्यवस्था कर दे, तो उस पर कोई गुनाह नहीं; बेशक अल्लाह तआला माफ़ करने वाला, रहम वाला है।

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُوصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

१८३- ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ (अनिवार्य) किये गये, जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गये थे, ताकि तुम मुत्तक़ी (परहेज़गार) बन जाओ;

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝

اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ
عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ
يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا
فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝

१८४- (यह रोज़े) गिनती के कुछ दिन हैं, तो जो आदमी तुम में से बीमार हो, या सफ़र में हो, तो दूसरे दिनों में रोज़ों की गिनती पूरी कर ले; और जो (खिलाने का) क़ुदरत (सामर्थ्य) रखते हों, उनके ज़िम्मे बदले में, एक मुहताज का खाना है; तो जो अपनी ख़ुशी से कुछ और नेकी करे, तो यह उसके लिए बेहतर है; और यह कि तुम रोज़ः रखो तो तुम्हारे लिए बहुत बेहतर है, अगर तुम समझो।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى
لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ
شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ؕ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا
اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ
بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۫ وَلِتُكْمِلُوا
الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ۝

१८५- रमज़ान का महीना वह है, जिसमें क़ुर्आन उतारा गया, जो इन्सानों के लिए हिदायत (रहनुमा) है; और जिसमें हिदायत (रहनुमाई) और हक़ व बातिल (सत्य-असत्य) में अन्तर करने के प्रमाण हैं, तो तुम में से जो कोई इस महीना को पाए उसे चाहिए कि (पूरे महीने का) रोज़ः रखे, और जो बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में उसकी गिनती पूरी कर ले, अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, और सख़्ती नहीं चाहता; और (यह आसानी का हुक्म) इसलिए (दिया गया है) कि तुम रोज़ों की गिनती पूरी कर लो; और इस एह्सान के बदले, कि अल्लाह ने तुमको हिदायत (रहनुमाई) दी; तो अल्लाह की बड़ाई बयान करो, और ताकि तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ।

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ
دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ
وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ۝

१८६- और (ऐ मुह़म्मद)! जब तुमसे मेरे बन्दे 'मेरे' सम्बन्ध में पूछें, तो (कह दो कि) 'मैं' तो (तुम्हारे) क़रीब ही हूँ; पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूँ, जब वह मुझे पुकारता है; तो उनको चाहिए कि 'मेरे' हुक्मों को मानें, और 'मुझ' पर ईमान लाएँ ताकि हिदायत(सत्य मार्ग) पा लें।

اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى
نِسَآئِكُمْ ؕ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ
عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ
عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ
وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۪ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى
يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ
مِنَ الْفَجْرِ ۪ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ

१८७- रोज़ों की रातों में तुम्हारे लिए अपनी औ़रतों के पास जाना जायज़ कर दिया गया है, वह तुम्हारी लिबास (परिधान) हैं, और तुम उनके लिबास हो, अल्लाह को मालूम है, कि तुम (उनके पास जाने से) अपने ह़क़ में ख़ियानत (कपट) कर रहे थे तो 'उसने' तुम पर मेहरबानी की और तुम्हारी ह़रकतों को दरगुज़र किया; तो अब तुम उनसे मिलो-जुलो (अर्थात रोज़ा के अ़लावा हर समय में सम्भोग कर सकते हो) और अल्लाह

وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ ۗ
تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٨٧﴾

ने जो कुछ तुम्हारे लिए लिख दिया है, उसे तलाश करो; और खाओ पियो, यहाँ तक कि सुबह़ की सफ़ेद धारी (उषाकाल, रात की) काली धारी से स्पष्ट नज़र आने लगे; फिर रोज़ः (रखकर) रात तक पूरा करो; और जब तुम मस्जिदों में 'एतिकाफ़' की ह़ालत में हो, तो तुम उनसे न मिलो (अर्थात सम्भोग न करो), यह अल्लाह की बाँधी हुई सीमाएँ हैं, तो उनके क़रीब भी न जाओ, इसी तरह़ अल्लाह अपनी निशानियाँ लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि वह परहेज़गार (डर रखने वाले) बन जाएँ।

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا
إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ
بِالْإِثْمِ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾

१८८- और एक-दूसरे का माल आपस में नाह़क़ (अवैध रूप से) न खाओ, और न उन्हें ह़ाकिमों के पास ले जाओ कि ह़क़ मारकर (रिश्वत लेकर) लोगों के कुछ माल जानते बूझते हड़प लो।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهِلَّةِ ۖ قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ
لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ۗ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَن تَأْتُوا الْبُيُوتَ
مِن ظُهُورِهَا وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَأْتُوا الْبُيُوتَ
مِنْ أَبْوَابِهَا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٨٩﴾

१८९- लोग आप से नये चाँद (के घटने बढ़ने) के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए, ''यह लोगों के (वक़्त बताने के) लिए और ह़ज का समय जानने का ज़रिया हैं।'' और नेकी यह नहीं, कि तुम घरों में उनके पिछवाड़े से आओ, और नेकी तो उसकी है जो डर रखे; और तुम घरों में उनके दरवाज़ों से आओ और अल्लाह से डरते रहो,ताकि तुम कामियाब हो सको।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا
تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩٠﴾

१९०- और तुम अल्लाह की राह में लड़ो उन लोगों से जो तुम से लड़ते हैं, मगर ज़्यादती (अत्याचार) न करना कि अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता;

وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُم مِّنْ حَيْثُ
أَخْرَجُوكُمْ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ
عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۖ فَإِن
قَاتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ ۗ كَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿١٩١﴾

१९१- और (ऐसे काफ़िरों को जो ज़ुल्म कर रहे हैं) उनको जहाँ कहीं पाओ क़त्ल करो, और उनको निकाल दो, जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला; और (इसलिए कि) फ़ितना (उत्पीड़न) पैदा करना क़त्ल से भी बढ़कर है, और उनसे मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) के पास न लड़ना, जब तक कि वे उस जगह तुमसे न लड़ें; फिर अगर वे खुद ही तुम से लड़ें, तो उन्हें क़त्ल करो, यही काफ़िरों (सच्चाई का इन्कार करने वालों) की सज़ा है; (मगर जो न लड़ें उन्हें केवल काफ़िर होने की वजह से मारा या परेशान न किया जाए)

१६२- फिर अगर वह (ज़ुल्म से) रूक जाएँ, तो अल्लाह माफ़ करने वाला, मेहरबान है;

فَإِنِ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

१६३- और उनसे लड़ो (जिन काफ़िरों ने ज़ुल्म किया) यहाँ तक कि फ़ित्ना (ज़ुल्म) बाक़ी न रहे और दीन अल्लाह के लिए हो जाए, फिर अगर वे (ज़ुल्म से)बाज़ आ जाएँ तो ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज़्यादती न करो।

وَقٰتِلُوهُمْ حَتّٰى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَّيَكُونَ الدِّينُ لِلّٰهِ ۖ فَإِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظّٰلِمِينَ

१६४- बड़ाई वाला (प्रतिष्ठित) महीना बराबर है, बड़ाई वाले महीने के, और सम्मान रखने में बदला है; फिर अगर जिसने तुम पर ज़्यादती की, तो (केवल उसी को) तुम भी उसके ज़्यादती की सज़ा दो, जैसा उसने तुम पर ज़्यादती की है; और अल्लाह से डरते रहो, और जान लो! कि अल्लाह डरने वालों (परहेज़गारों) के साथ है।

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ

१६५- और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करो और अपने आपको तबाही में न डालो, और अच्छे से अच्छा तरीक़ा अपनाओ; बेशक अल्लाह नेकी करने वालों को पसंद करता है।

وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَأَحْسِنُوا ۛ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ

१६६- और हज और उ़मरः अल्लाह के लिए पूरा करो फिर अगर तुम रोक दिये जाओ, (या घिर जाओ) तो तुम पर कुर्बानी का जानवर ज़ब्ह़ करना है; जो आसानी से मिले; और अपने सरों को न मुडाओ जब तक कि कुर्बानी का जानवर अपने ठिकाने न पहुँच जाए; फिर अगर जो तुम में बीमार हो या उसके सर में कुछ तकलीफ़ हो, (सर मुड़ा ले) तो उसके बदले रोज़े रखे या सदक़ः दे या कुर्बानी के रूप में फ़िद्या (दान) दे, फिर जब तुम अम्न की ह़ालत में हो जाओ तो जो ह़ज तक उमरे का फ़ायदा उठाना चाहे- तो जो कुर्बानी का जानवर आसानी से मिले पेश करे- फिर जिसको क़ुर्बानी का जानवर न मिले, तो वह तीन रोज़े ह़ज के दिनों में रखे, और सात रोज़े जब वापस हो, यह पूरे दस हुए; यह हुक्म उस व्यक्ति के लिए है जिसके बाल-बच्चे मस्जिदे ह़राम के पास न रहते हों, और अल्लाह से डरते रहो और जान लो! कि अल्लाह की सजा (दण्ड) बहुत सख़्त है।

وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ۚ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۖ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِّنْ رَّأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَا أَمِنْتُمْ ۗ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ ۗ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۗ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ أَهْلُهُ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللّٰهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَاتٌ ۚ فَمَن فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللَّهُ ۗ وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُونِ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ

१९७- हृज के (कुछ) महीने मालूम (निश्चित) हैं तो जो व्यक्ति अपने ऊपर हृज को लाज़िम (नियत) कर ले, तो फिर हृज में न कोई बुरी बात (कामवासना की) होने पाए और न कोई बेहुक्मी की, और न कोई झगड़े की; और भलाई का तुम जो भी काम करोगे, वह अल्लाह को मालूम हो जाएगा; और (हृज पर जाने से पहले) सफ़र का सामान साथ में ले लिया करो, और सबसे अच्छा सामान तो 'परहेज़गारी है, और ऐ अक़्ल वालो! 'मुझसे' ही डरा करो।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ ۚ فَإِذَا أَفَضْتُم مِّنْ عَرَفَاتٍ فَاذْكُرُوا اللَّهَ عِندَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۖ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ وَإِن كُنتُم مِّن قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ

१९८- तुम्हारे लिए इसमें कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो; फिर जब अ़रफ़ात से लौटो तो 'मशअ़रिल हृराम' (मुज़दलफ़ा) के पास ठहर कर अल्लाह को याद करो, और उसे याद करो जैसा कि उसने तुम्हें बताया है; और इससे पहले तुम लोग (इन तरीक़ों से) अंजान थे;

ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

१९९- फिर जहाँ से और लोग वापस हों, वहीं से तुम भी वापस हो, और अल्लाह से माफ़ी चाहो, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रहृम वाला है;

فَإِذَا قَضَيْتُم مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۗ فَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ

२००- फिर जब हृज के कामों को पूरा कर चुको, तो अल्लाह को याद करो, जिस तरह तुम अपने बाप-दादा को याद किया करते थे, बल्कि उससे भी ज़्यादा याद करो; फिर कुछ लोग ऐसे हैं, जो कहते हैं, ''ऐ हमारे रब! हमको (जो देना हो) दुनिया में दे,'' और ऐसे लोगों का आख़िरत (परलोक) में कोई हिस्सा नहीं;

وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

२०१- और उन में कुछ ऐसे हैं, जो दुआ़एँ माँगते हैं, ''कि ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भी भलाई दे,'' और आख़िरत में भी भलाई दे, और हमें आग के अ़ज़ाब से बचाए रखना।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۚ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ

२०२- यही लोग हैं जिन्हें हिस्सा (अच्छा बदला) मिल कर रहेगा, उसके बदले में जो इन्होंने अ़मल कर रखा है, और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ۭ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝

२०३- और गिनती के (मिना में ठहरने के) दिनों में अल्लाह को याद करते रहो, फिर जो कोई जल्दी करके दो ही दिन में कूच करे, तो इस में भी उस पर कोई गुनाह नहीं, और जो बाद में ठहरा रहे, उस पर भी कोई गुनाह नहीं यह उस के लिए है जो डरता रहता है; और तुम लोग अल्लाह से डरते रहो, और जाने रहो! कि तुम (सब) उसी के पास इकट्ठा किये जाओगे।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰي مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَھُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ۝

२०४- और लोगों में कुछ तो ऐसे हैं कि उनकी बातें तुमको दुनिया में भली मालूम होती हैं, इस (खोट) के बावजूद जो उसके दिल में होती हैं; वह अल्लाह को गवाह बनाता है, हालाँकि वह सख़्त झगड़ालू (दुश्मन) है;

وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ۝

२०५- और जब लौटता है, तो इस दौड़ धूप में रहता है कि धरती पर फसाद पैदा करे, और खेती और जानवरों को तबाह करे, जबकि अल्लाह फ़साद को पसंद नहीं करता;

وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ۭ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝

२०६- और जब उससे कहा जाता है, ''अल्लाह से डरो,'' तो उसका घमण्ड उसे और गुनाह पर आमादा करता है;फिर ऐसे को दोज़ख काफ़ी है और वह बहुत बुरा ठिकाना है;

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَاۗءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝

२०७- और इन्सानों में कुछ ऐसे भी होते हैं, जो अल्लाह को राज़ी करने के लिए अपनी जान खपा देता है, और अल्लाह भी अपने (ऐसे) बन्दों के प्रति बड़ी शफ़्क़त (ममता) रखता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَاۗفَّةً ۠ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝

२०८- ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो जाओ, और शैतान के क़दमों पर न चलो; वह तुम्हारा खुला दुश्मन है;

فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

२०९- फिर अगर तुम इन स्पष्ट दलीलों के बाद भी, जो तुम्हारे पास आ चुकी हैं, फिसल जाओ, तो जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त (प्रभुत्वशाली) हिकमत वाला है।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝

२१०- क्या यह लोग इन्तिज़ार कर रहे हैं कि इनके पास अल्लाह बादलों की छायों में सामने आ जाएं, और फ़रिश्ते भी और (उसका) क़िस्सा ही ख़त्म हो जाए; और सारे मामले तो अल्लाह ही की ओर लौटते हैं।

२११- बनी इस्राईल से पूछो! ''हमने'' उन्हें कितनी खुली हुई निशानियाँ दीं और जो व्यक्ति अल्लाह की नेअ़मत को इसके बाद कि वह उसे पहुँच चुकी हों, बदल डाले, तो अल्लाह भी सज़ा देने में बड़ा सख़्त है।''

سَلْ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍ بَيِّنَةٍ ۗ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

२१२- जो लोग काफ़िर (इन्कार करने वाले) हैं दुनिया की ज़िन्दगी उनकी नज़र में भली कर दी गई है; और वे ईमान वालों की हँसी उड़ाते हैं; हालाँकि जो लोग परहेज़गार (संयमी) हैं उनके दर्जे क़ियामत के दिन उनसे बढ़ कर होंगे, और अल्लाह जिसे चाहता है, बेहिसाब रोज़ी देता है।

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

२१३-सारे इन्सान एक ही उम्मत (अर्थात एक ही दीन पर) थे (उन्होंने मत-मतान्तर पैदा किये), तो अल्लाह ने नबियों (सन्देशवाहकों) को भेजा, जो ख़ुशख़बरी देते थे, और सचेत करते थे; और उनके साथ सच्ची किताबें भेजीं, ताकि जिन बातों में लोग मतभेद करते थे उन बातों का (वह किताब) फ़ैसला कर दे; और उन्हीं लोगों ने, जिनको वह (किताब) मिली थी, आपस की ज़िद से किताब में मतभेद किया, बावजूद इसके कि उनको खुले हुए हुक्म पहुँच चुके थे; फिर वह सच्चा रास्ता, जिसमें लोग मतभेद कर रहे थे, अल्लाह ने अपनी मेहरबानी से ईमान वालों को दिखला दिया, और अल्लाह जिसको चाहता है सच्ची राह पर चला देता है।

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۗ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۖ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ۗ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

२१४- क्या तुम यह समझते हो कि जन्नत में (यूँही) दाख़िल हो जाओगे, हालाँकि (अभी) तुम पर उन लोगों जैसी ह़ालत नहीं पेश आई जैसी तुमसे पहले के लोगों पर पेश आई थी, कि उन पर तंगियाँ और तकलीफ़ें आईं, और उन्हें हिला (झिंझोड़) दिया गया, यहाँ तक कि रसूल (सन्देष्टा) बोल उठे, और ईमान वाले भी जो उनके साथ थे, (आख़िर) ''अल्लाह की मदद कब आएगी?'' (ढारस बाँधते हुए कहा गया) ''जान लो कि, अल्लाह की मदद बहुत क़रीब है।''

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ۗ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ۗ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ۝

२१५- (ऐ रसूल) लोग आपसे पूछते हैं ''क्या ख़र्च करें?'' कह दीजिए, (जो चोहे ख़र्च करें मगर) ''जो माल खर्च करना

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۗ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

चाहो तो वह (दर्जा-ब-दर्जा हक़ वालों जैसे) माँ बाप पर, और क़रीबी रिश्तदारों पर, और यतीमों पर, और मुहताजों पर, और मुसाफ़िरों पर, और जो भलाई तुम करोगे अल्लाह उसको जानता है।''

وَابْنِ السَّبِيْلِ ۭ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ

२१६- तुम पर क़िताल (धर्म युद्ध) फ़र्ज़ (अनिवार्य) किया गया है, और वह तुम्हें नापसंद तो होगा, मगर हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें नापसंद हो, और वह तुम्हारे लिए भली हो; और हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें पसंद हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो; और अल्लाह ही जानता है तुम नहीं जानते।

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـــًٔـا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـــًٔـا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ

२१७- लोग आपसे अदब वाले (प्रतिष्ठित) महीने में युद्ध के विषय में पूछते हैं, कह दीजिए, ''उसमें लड़ना बड़ी (गंभीर) बात है; और अल्लाह के रास्ते से रोकना, और उसके साथ कुफ़्र (अविश्वास) करना है, मस्जिदे हराम (कअ़बः) से रोकना और उसके रहने वालों को वहाँ से निकाल देना; अल्लाह के नज़दीक उससे भी बड़ा (गुनाह) है, और फ़ितना पैदा करना क़त्ल से भी बढ़कर (बुरा) है,'' और यह लोग (काफ़िर) तो हमेशा तुमसे लड़ते ही रहेंगे, और इनका बस चले तो वे तुम को तुम्हारे दीन से फेर ही दें; और जो तुममें से अपने दीन से फिर जाए, और उसी हालते कुफ़्र (इन्कारी की हालत) पर मर जाए, तो यही लोग हैं कि उनके आ़माल (कर्म) दुनिया व आख़िरत में बर्बाद हो जाएँगे, और यही लोग दोज़ख़ी हैं जिसमें वे हमेशा रहेंगे।

يَسْــَٔـلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ۭ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۭ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۤ وَاِخْرَاجُ اَھْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۭ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ۭ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَھُوَ كَافِرٌ فَاُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ ھُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ

२१८- जो लोग ईमान लाए और अल्लाह की राह में हिजरत की (घर-बार छोड़ा) और जिहाद किया; तो वही लोग अल्लाह की रहमत (दयालुता) के उम्मीदवार हैं, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला (क्षमाशील), मेहरबान है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ ھَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰۗىِٕكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

२१९- लोग आप से शराब और जुएँ के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए ''इनमें बड़ा गुनाह है, अगर्चे लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं, लेकिन उनका गुनाह उनके फ़ायदे से कहीं ज़्यादा है'' और आप से पूछते हैं, (अल्लाह की राह में) ''क्या ख़र्च करें? बता

يَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۭ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۡ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ۭ وَيَسْــَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ڛ قُلِ الْعَفْوَ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ

दीजिए, ''जितना आसान हो।'' इसी तरह् अल्लाह तुम लोगों से खोल-खोलकर अपनी आयतें बयान करता है ताकि तुम सोचो;

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ ۖ
قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۖ وَإِن تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۚ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَأَعْنَتَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٠﴾

२२०- दुनिया और आख़िरत की बातों में; और (लोग) आप से यतीमों के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए, ''उनके सुधार के लिए (जो भी तरीक़ा अपनाया जाए) अच्छा है, और अगर तुम उन्हें अपने साथ (नाते और ख़र्च में) सम्मिलित कर लो तो वे तुम्हारे भाई हैं,'' और अल्लाह बिगाड़ने वालों और संवारने वालों को (खूब) जानता है; और अगर अल्लाह चाहता तो तुम को तकलीफ़ में डाल देता, बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त (प्रभुत्वशाली), हिकमत वाला है।

وَلَا تَنكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ حَتَّىٰ يُؤْمِنَّ ۚ وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ
خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۗ وَلَا تُنكِحُوا
الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا ۚ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّن
مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۗ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۖ
وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ ۖ
وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٢١﴾

२२१- और मुश्रिक (बहुदेववादी) औ़रतें जब तक ईमान न लाएँ उनसे निकाह न करो, एक ईमान वाली बांदी(दासी) मुश्रिक औ़रत से कहीं बेहतर है, चाहे वह तुम्हें कितनी ही अच्छी क्यों न लगे; और (ईमान वाली औ़रतों का) मुश्रिक मर्दों से निकाह न करो, जब तक कि वे ईमान न लाएँ, एक ईमान वाला गुलाम आज़ाद मुश्रिक से कहीं बेहतर है, चाहे वह तुम्हें कितना ही अच्छा क्यों न लगे; ये (शिर्क वाले) आग की ओर बुलाते हैं, और अल्लाह अपने हुक्म से जन्नत और माफ़ी (क्षमा) की ओर बुलाता है, और वह अपनी आयतें लोगों के सामने खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि नसीहत हासिल करें।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ ۖ قُلْ هُوَ أَذًى فَاعْتَزِلُوا
النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ ۖ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ ۖ
فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ ۚ
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ﴿٢٢٢﴾

२२२- और लोग आप से हैज़ (मासिक धर्म) के हुक्म के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए, ''वह एक गन्दगी (पीड़ाजनक हालत) है, अतः इन (हैज के) दिनों में औ़रतों से अलग रहो, और जब तक पाक-साफ़ न हो जाएँ, उनके पास (सम्भोग के इरादे से) न जाओ; फिर जब वह पाक हो जाएँ, जिस तरह् अल्लाह ने तुम्हें बताया है उनके पास जाओ।'' अल्लाह मुहब्बत रखता है तौबः करने वालों से और मुहब्बत रखता है पाक व साफ़ रहने वालों से।

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ وَقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُم مُّلَاقُوهُ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٢٣﴾

२२३- तुम्हारी बीवियाँ (पत्नियाँ) तुम्हारी खेती हैं तो तुम अपने खेत में आओ, जिस तरह़ चाहो; और अपने बारे में आइन्दा के लिए कुछ भेजते रहो, और अल्लाह से डरते रहो, और अच्छी तरह़ जान लो कि तुम्हें उससे मिलना है, और ईमान लाने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِّأَيْمَانِكُمْ أَن تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٤﴾

२२४- और अल्लाह (के नाम) को अपनी क़समों के ज़रिये से, अपनी नेकी के और परहेज़गारी के,और लोगों के बीच मेल-मिलाप (सुधार) कराने के सिलसिले में आड़ न बनाओ; और अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है;

لَّا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِن يُؤَاخِذُكُم بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢٢٥﴾

२२५- अल्लाह तुम्हारी बेकार क़समों पर तुम्हारी पकड़ नहीं करेगा, लेकिन उन क़समों पर 'वह' तुम्हें ज़रूर पकड़ेगा जो तुम्हारे दिलों ने इरादा किया है, और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला (क्षमाशील) बर्दाश्त करने वाला (सहनशील) है।

لِّلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِن نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ ۖ فَإِن فَآءُو فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾

२२६- जो लोग अपनी बीवियों (पत्नियों) से (सम्भोग न करने की) क़सम खा बैठें, उनको चार महीने तक की मुहलत है; फिर अगर (इस मुद्दत में) मेल कर लें, तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٧﴾

२२७- और अगर तलाक़ (ही) की ठान लें, तो भी अल्लाह (सब कुछ) सुनता-जानता है;

وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوٓءٍ ۚ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَن يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِيٓ أَرْحَامِهِنَّ إِن كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَٰلِكَ إِنْ أَرَادُوٓا إِصْلَاحًا ۚ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٨﴾

२२८- और तलाक़ वाली औरतें तीन ह़ैज़ (मासिक धर्म) गुज़रने तक अपने आप को रोके रखें; और अगर वे अल्लाह और आख़िरत (परलोक) पर यक़ीन रखती हों तो उनके लिए यह जायज़ न होगा कि, अल्लाह ने उनके रह़िम (गर्भाशय) में जो कुछ पैदा किया हो, उसे छिपाएँ; इस बीच उनके पति उनको वापस लेने के ज़्यादा ह़क़दार हैं; अगर उनका इरादा सुधार का हो और औ़रत का ह़क़ (मर्दों पर) वैसा ही है जैसे नियमानुसार (मर्दों का) ह़क़ है, हाँ मर्दो को औ़रतों पर फ़ज़ीलत (प्रधानता); है और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त, ह़िकमत वाला है।

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌۢ
بِاِحْسَانٍ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْ
هُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ
اللّٰهِ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ تِلْكَ حُدُوْدُ
اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ

२२९- तलाक़ तो दो ही बार की है उसके बाद (या तो) नियम के अनुसार रख लेना है या अच्छे बर्ताव के साथ छोड़ देना है; और जो तुम उनको (महर) दे चुके हो, उसमें से तुमको कुछ भी वापस लेना जायज़ नहीं, सिवाय यह कि दोनों को डर हो कि वे अल्लाह की (निर्धारित) सीमाओं (हदों) पर क़ायम न रह सकेंगे तो अगर तुम को यह डर हो कि वे अल्लाह की सीमाओं (हदों) पर क़ायम न रहेंगे तो औ़रत जो कुछ (महर से माल) देकर छुटकारा ह़ासिल करना चाहे, उसमें उन दोनों के लिए कोई गुनाह नहीं; ये अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाएँ (क़ानून) हैं, अतः इनसे आगे न बढ़ो, और जो अल्लाह की सीमाओं(क़ानून) का उल्लंघन करे, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं;

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ
زَوْجًا غَيْرَهٗ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ
يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ وَتِلْكَ
حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ

२३०- (दो तलाक़ों के बाद) फिर अगर वह उसे तलाक़ दे दे, तो इसके बाद वह उसके लिए जायज़ न होगी, जब तक कि वह उसके अ़लावा किसी दूसरे से निकाह़ न कर ले; हाँ अगर वह (दूसरा पति भी) उसको तलाक़ दे दे, तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं, कि फिर मिल जाएँ, बशर्ते कि दोनों को उम्मीद हो कि अल्लाह की निर्धारित सीमाओं (क़ानून) को क़ायम रखेंगे, और यह अल्लाह की सीमाएँ (क़ानून) हैं, जिन्हें 'वह' उन लोगों के लिए बयान फ़रमाता है जो जानना चाहते हों;

وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ
فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ
وَّلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا وَمَنْ يَّفْعَلْ
ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ
هُزُوًا وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ
اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ
بِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ

२३१- और जब तुम औ़रतों को (दो बार) तलाक़ दे चुको और वह अपनी निश्चित अवधि (इद्दत) को पहुँच जाएँ, तो (अब या तो) उन्हें इ़ज़्ज़त के साथ रोक लो, या इ़ज़्ज़त के साथ रिहाई (विदा कर दो) दे दो, और उनको ज़्यादती पहुँचाने के इरादे से न रोके रखो, और जो कोई ऐसा करेगा, वह ख़ुद अपने ही ऊपर ज़ुल्म करेगा। और अल्लाह के हुक्मों को हंसी (मज़ाक़) न समझो, और अल्लाह की नेअ़मतें जो तुम पर हुई हैं, उसे याद करो और (उस) किताब व ह़िकमत (तत्वदर्शिता) को भी जो 'उसने' तुम पर उतारी हैं, कि उससे 'वह' तुम्हें नसीह़त करता रहता है; और अल्लाह से डरते रहो और जाने रहो, कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है;

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا
تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا
بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ ذَٰلِكَ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ
مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ ذَٰلِكُمْ أَزْكَىٰ
لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٢﴾

२३२- और जब तुम (अपनी) औ़रतों को (तीन बार) तलाक़ दे दो और वे अपनी निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी कर लें, तो उन्हें इस से मत रोको कि वह अपने (होने वाले दूसरे) पतियों से निकाह न करें, जबकि वह आपस में रज़ामन्दी के साथ अच्छी तरह मामला तय करें; यह नसीहत तुममें से उसको की जा रही है, जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, यही तुम्हारे लिए पाकीज़ा(पवित्र) और साफ़ सुथरा तरीक़ा है, और अल्लाह(सब कुछ) जानता है तुम नहीं जानते।

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ
كَامِلَيْنِ ۖ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۚ وَعَلَى
الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ لَا
تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ
بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَهُ بِوَلَدِهِ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ
مِثْلُ ذَٰلِكَ ۗ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا
وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ
تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ
مَا آتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٣﴾

२३३- और माएँ अपनी औलाद को पूरे दो साल तक दूध पिलाएँ, यह उस व्यक्ति के लिए है जो (तलाक़ देने के बाद अपने बच्चे को) दूध पिलाने की अवधि को पूरा करना चाहे; और (उस सूरत में) जिसका वह बच्चा है, (अर्थात बाप), उस पर नियम के अनुसार माओं को खाना,कपड़ा देना लाज़िम है; किसी व्यक्ति को तकलीफ़ नहीं दी जाती, मगर जहाँ तक उस का सामर्थ्य (अपनी समाई भर की ज़िम्मेदारी) हो; न तो माँ को उसके बच्चे की वजह से तकलीफ़ पहुँचाई जाए, और न उस (के बाप) को जिसका बच्चा है, (यानी उस के बाप को) उसके बच्चे की वजह से (तकलीफ़ दी जाए); और (दूध पिलाने और खाना कपडा देने की जैसी बाप पर ज़िम्मे दारी है) वैसे ही (उसके न होने पर उसके) वारिस पर भी है; फिर अगर (माता-पिता) दोनों अपनी मर्ज़ी और सलाह से (दूध) छुड़ाना चाहें, तो उन पर कुछ गुनाह नहीं; और अगर तुम अपनी औलाद को किसी (दूसरी औ़रत) से दूध पिलवाना चाहो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, बशर्ते कि जो तुमको, नियम के अनुसार, देना था (उसके) हवाले कर दो, और अल्लाह से डरते रहो, और जाने रहो कि जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उसको देख रहा है।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا
يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۖ
فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا
فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٣٤﴾

२३४- और तुममें से जो लोग मर जाएं, और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जाएँ, तो वे पत्नियाँ अपने आप को, चार महीने और दस दिन तक रोके रखें; फिर जब वे अपनी निर्धारित अवधि (इद्दत) को पहुँच जाएँ, तो नियम के अनुसार, वे अपने लिए जो पसंद (निकाह) करें, उसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं; जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी खूब ख़बर रखता है।

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُم بِهِ مِنْ خِطْبَةِ
النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنتُمْ فِي أَنفُسِكُمْ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ
سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَٰكِن لَّا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَن
تَقُولُوا قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۚ وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ
حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا
فِي أَنفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝

२३५- और तुम पर कोई गुनाह नहीं, कि तुम उन (इद्दत वाली) औ़रतों के निकाह़ का पैग़ाम देने के बारे में कोई बात इशारों से कहो, या (यह इरादा) अपने दिलों ही में छिपा कर रखो, अल्लाह को तो मालूम है, कि तुम उन औ़रतों को याद करोगे, परन्तु छिपकर उनसे कोई वादा न करो, मगर हाँ कोई बात जायज़ तौर पर अच्छे तरीके़ से (कहना चाहो तो संकेत से) कह दो और जब तक इद्दत की निर्धारित अवधि न पूरी हो जाए, निकाह की बात पक्की न करो, और जाने रहो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अल्लाह उसे (ख़ूब) जानता है, तो उसी से डरते रहो, और जाने रहो कि अल्लाह बख़्शने वाला (अत्यन्त क्षमाशील) सहनशील है।

لَّا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِن طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمَسُّوهُنَّ
أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً ۚ وَمَتِّعُوهُنَّ عَلَى الْمُوسِعِ
قَدَرُهُ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهُ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ ۖ
حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ۝

२३६- तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम उन पत्नियों को जिन्हें तुमने न हाथ लगाया, और न उनके लिए 'महर' निश्चित किया, तलाक़ दे दो, तो नियम के अनुसार उन्हें कुछ ख़र्च दे दो, सामर्थ्य वाले अपनी हैसियत के अनुसार और बेसामर्थ्य वाले अपनी हैसियत के अनुसार उनको ख़र्च दें; जैसा कि दस्तूर है, यह नेक लोगों पर एक तरह़ का ह़क़ है।

وَإِن طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِن قَبْلِ أَن تَمَسُّوهُنَّ
وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا
فَرَضْتُمْ إِلَّا أَن يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوَ الَّذِي
بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَأَن تَعْفُوا أَقْرَبُ
لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَلَا تَنسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ
بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

२३७- और अगर हमबिस्तरी (सम्भोग) करने से पहले और महर निश्चित करने के बाद औ़रतों को तलाक़ दो, तो जो कुछ तुमने निश्चित किया था उसका आधा देना होगा, सिवाय उस सूरत में कि पत्नियां आधा महर खुद ही छोड़ दें; या (मर्द) जिसके हाथ में निकाह के सम्बन्ध की बातें हैं, वह (अपना हक़) छोड़ दे, और अगर अपना हक़ छोड़ दो, तो यह परहेज़गारी के ज़्यादा क़रीब है, और अपने बीच इस भलाई के विचार को मत भूलो, जो (कुछ तुम) करते हो, बेशक अल्लाह तुम्हारे सब कामों को देख रहा है।

حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ
وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ ۝

२३८- (सभी) नमाज़ों की पाबन्दी रखो और (विशेष रूप से) दर्मियानी नमाज़ (अ़स्र) की, और अल्लाह के आगे आजिज़ी (भक्तभाव) से खड़े रहा करो;

فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۖ فَإِذَا أَمِنتُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ

२३९- फिर अगर तुमको (दुश्मन का) डर हो तो पैदल हो या सवार (हर हाल में नमाज़ पढ़ लो) फिर जब तुम निश्चिन्त हो जाओ, तो जिस तरह अल्लाह ने तुम को (नमाज़) सिखाया है, जिसको तुम पहले नहीं जानते थे, (उसी तरह) अल्लाह को याद करो।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا وَصِيَّةً لِّأَزْوَاجِهِم مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ مِن مَّعْرُوفٍ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

२४०- और जो लोग तुम में से मर जाएँ और पत्नियाँ छोड़ जाएँ, तो (उन के लिए ज़रूरी है कि) अपनी पत्नियों के हक़ में वे वसीयत कर जाएँ; कि घर से निकाले बिना एक साल तक खर्चा (खाना पीना आदि) दिया जाए, लेकिन अगर वे खुद ही निकल जाएँ तो जायज़ तौर पर जो कुछ भी अपने हक़ में करें उनका तुम पर कुछ गुनाह नहीं, और अल्लाह ज़बरदस्त (प्रभुत्वशाली), हिकमत वाला है।

وَلِلْمُطَلَّقَاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ

२४१- और तलाक़ पाई हुई औरतों को नियमानुसार (इद्दत की अवधि में), खर्च भी मिलना चाहिए, यह डर रखने वालों पर एक हक़ है;

كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

२४२- अल्लाह इसी तरह तुम्हारे लिए खोल- खोल कर अपनी आयतें (हुक्मों को) बयान करता है, ताकि तुम समझ से काम लो।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ

२४३- क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जो हज़ारों की संख्या में होने पर भी, मौत के डर से अपने घर बार छोड़ कर निकल गये थे, तो अल्लाह ने उनसे कहा,'' मर जाओ,'' फिर 'उसने' उन्हें जिला दिया, कि अल्लाह लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल (कृपा) करने वाला है, लेकिन अक्सर लोग शुक्रगुज़ार नहीं होते।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

२४४- और अल्लाह की राह में युद्ध (क़िताल) करो, और जान लो कि अल्लाह बड़ा सुनने वाला, जानने वाला है।

مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً ۚ وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْسُطُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

२४५- कौन है जो अल्लाह को खुशदिली से (क़र्ज़ हसना) क़र्ज़ दे? फिर अल्लाह उसे बढ़ाकर उसके लिए कई गुना कर दे? और अल्लाह तंगी और कुशादगी (ग़रीबी अमीरी) भी देता है, और उसी की ओर तुम सबको लौट कर जाना है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنْ بَعْدِ
مُوسَىٰ إِذْ قَالُوا لِنَبِيٍّ لَهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُقَاتِلْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ
عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا ۖ قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا
نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا
وَأَبْنَائِنَا ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا
إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٢٤٦﴾

२४६- क्या तुमने मूसा के बाद बनी इस्राईल के सरदारों को नहीं देखा? जबकि उन्होंने अपने नबी से कहा, ''हमारे लिए एक बादशाह नियुक्त कर दीजिए ताकि हम अल्लाह की राह में युद्ध करें।'' (नबी ने) कहा, ''कहीं ऐसा तो नहीं कि अगर तुम पर क़िताल (युद्ध) अनिवार्य कर दिया जाए, तो तुम युद्ध न करो, वह कहने लगे, ''हमारे लिए कौन सा ऐसा उज़्र (रूकावट) हो सकता है! कि हम अल्लाह की राह में न लड़ें, जबकि हम अपने घरों से तो निकाले और बाल बच्चों से अलग किये ही जा चुके हैं।'' लेकिन जब उन पर युद्ध अनिवार्य कर दिया गया, तो उनमें से थोड़े लोगों के सिवा, (सब) फिर गये और अल्लाह ज़ालिमों को भली भांति जानता है;

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ
مَلِكًا ۚ قَالُوا أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ
أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِنَ الْمَالِ ۚ
قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً
فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَنْ
يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٧﴾

२४७- और नबी ने उनसे कहा, ''अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह (सम्राट) नियुक्त किया है,'' वे बोले, ''उसकी बादशाही हम पर कैसे हो सकती है, जबकि हम उसके मुक़ाबले में बादशाही के ज़्यादा हक़दार हैं और जबकि उसे तो माल से भी ऐसी अमीरी नसीब नहीं,'' (नबी ने) कहा, ''अल्लाह ने तुम्हारे मुक़ाबले में उसी को चुना है, और 'उसने' उसे इल्म और शारीरिक क्षमता में कुशादगी दी है; और अल्लाह अपना मुल्क (राज्य) जिसे चाहता है देता है, और अल्लाह बड़ी वुसअ़त वाला (समाई वाला), जानने वाला है;

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ
التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِمَّا
تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ ۚ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾

२४८- और उनसे उनके नबी ने कहा, ''उस (तालूत) के बादशाहत की निशानी यह है, कि तुम्हारे पास एक सन्दूक़ आएगा जिसको फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे, उसमें तुम्हारे रब की ओर से तसल्ली की चीज़ होगी और कुछ और चीज़ें भी होंगी जिसे मूसा और हारून छोड़ गये थे, बेशक इस में तुम्हारे लिए बड़ी निशानियां हैं, अगर तुम ईमान वाले हो।''

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ
مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ

२४९- फिर जब तालूत सेनाएँ लेकर चला तो उसने कहा ''अल्लाह निश्चित रूप से एक दरिया (नदी) के ज़रिये तुम्हारा

مِنِّيْ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّيْٓ اِلَّا مَنِ
اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا
مِّنْهُمْ ۗ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ
قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ۗ
قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ
فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ
وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

इम्तिहान लेने वाला है; तो जो व्यक्ति उसमें से पानी पी लेगा वह मेरा नहीं है; और जो न पिएगा वह मेरा है, हाँ अगर कोई हाथ से चुल्लू भर पानी ले ले'' फिर उनमें से थोड़े लोगों के सिवा सभी ने उसका पानी पी लिया; फिर जब तालूत और ईमान वाले, जो उसके साथ थे नदी पार कर गये तो कहने लगे, ''आज हममें जालूत और उसकी सेनाओं का मुक़ाबला करने की शक्ति नहीं है,'' इस पर उन लोगों ने जो समझते थे, कि उन्हें अल्लाह से मिलना है, कहा, ''कितनी बार एक छोटी सी टुकड़ी ने अल्लाह के हुक्म से एक बड़े गिरोह पर विजय पाई है, और अल्लाह तो सब्र करने (जमने) वालों के साथ है,''

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ
عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى
الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

२५०- और जब वे लोग जालूत और उसकी सेनाओं के मुकाबले पर आए तो कहा, ''ऐ हमारे रब! हम को सब्र दे और हमारे क़दम जमा दे और काफ़िरों पर हमारी मदद फ़रमा,

فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ
وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا
يَشَآءُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ
بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝

२५१- तो अल्लाह के हुक्म से, उन्होंने पराजित कर दिया; और दाऊद ने जालूत को क़त्ल कर दिया; और अल्लाह ने उसे (दाऊद को) बादशाहत और हिकमत प्रदान की, और जो कुछ चाहा उन्हें सिखाया; और अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे से हटाता न रहता तो धरती फ़साद से भर जाती, लेकिन अल्लाह तो दुनिया वालों पर बड़ा मेहरबान है।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّكَ
لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝

२५२- ये अल्लाह की आयतें हैं, हम आप को (हक़) सच्चाई के साथ पढ़ कर सुनाते हैं, और (ऐ मुहम्मद!) बेशक आप रसूलों में से हैं।

पारा नं०-३

* تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ
مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ۗ وَاٰتَيْنَا
عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۗ
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ
مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا
فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
مَا اقْتَتَلُوْا ۟ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝

२५३- इन रसूलों में से 'हमने' कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी है, कुछ ऐसे हैं जिनसे अल्लाह ने कलाम (बातचीत) किया है और उनमें से कुछ के दर्जे बुलन्द किये; और मरयम के बेटे ईसा को हमने खुले हुए चमत्कार दिये, और 'हमने' उनको रूहुल कुदुस (जिब्रईल) के ज़रिये ताईद (समर्थन) किया; और अगर अल्लाह चाहता तो उनके बाद के लोग आपस में खून न बहाते; इसके बाद कि उनके पास खुली

निशानियां आ चुकी थीं लेकिन (लोगों ने) आपस में विरोध किया, फिर कुछ तो उनमें से ईमान लाए और कुछ कुफ़्र (इन्कार) ही करते रहे; और अगर अल्लाह चाहता तो ये लोग आपस में खून न बहाते, लेकिन अल्लाह जो चाहता है, करता है।

२५४- ऐ ईमान वालो! जो कुछ (रोज़ी) हम ने तुम्हें दे रखा है उसमें से ख़र्च करो, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिस दिन न कोई तिजारत (क्रय-विक्रय) काम आएगी और न दोस्ती, और न सिफ़ारिश और काफ़िर लोग (सच्चाई के इन्कारी) तो ज़ालिम हैं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَنفِقُوا۟ مِمَّا رَزَقْنَٰكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِىَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَٰعَةٌ ۗ وَٱلْكَٰفِرُونَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ

२५५- अल्लाह (वह है कि) उसके सिवा कोई इबादत (उपासना) के योग्य नहीं वह ज़िन्दा और हमेशा रहने वाला (चिरन्तर) है, 'उसे' न ऊंघ आती है न नींद, 'उसी' का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ धरती में है, कौन ऐसा है जो 'उसके' सामने बिना 'उसकी' इजाज़त के सिफ़ारिश कर सके, जो कुछ लोगों के सामने है और जो कुछ उनके पीछे हो चुका (दृश्य और अदृश्य) 'उसको' मालूम है, और लोग उस इल्म में से कुछ भी क़ाबू नहीं पा सकते (हावी नहीं हो सकते) सिवाय उसके कि जितना 'वह' चाहे, 'उसकी' कुर्सी (प्रभुत्व) आसमानों और ज़मीन को व्याप्त है, और उनकी हिफ़ाज़त 'उसके' लिए कुछ भी मुश्किल नहीं; और 'वह' बड़ा अज़मत वाला (महा महिमावान) है;

ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْحَىُّ ٱلْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَّهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۗ مَن ذَا ٱلَّذِى يَشْفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذْنِهِۦ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَىْءٍ مِّنْ عِلْمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ ۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْعَظِيمُ

२५६- धर्म के विषय में कोई ज़बर्दस्ती नहीं, हिदायत तो गुमराही से साफ़-साफ़ खुल चुकी है तो अब जो सरकश (शैतान) को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान लाए, तो उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटने वाला नहीं, और अल्लाह खूब सुनने वाला, जानने वाला है।

لَآ إِكْرَاهَ فِى ٱلدِّينِ ۖ قَد تَّبَيَّنَ ٱلرُّشْدُ مِنَ ٱلْغَىِّ ۚ فَمَن يَكْفُرْ بِٱلطَّٰغُوتِ وَيُؤْمِنۢ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱسْتَمْسَكَ بِٱلْعُرْوَةِ ٱلْوُثْقَىٰ لَا ٱنفِصَامَ لَهَا ۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

२५७- अल्लाह उन लोगों का दोस्त (संरक्षक) है जो ईमान लाए कि उनको अंधेरे से निकाल कर रोशनी की ओर लाता है, और जो काफ़िर (इन्कारी) हैं, उनके दोस्त शैतान हैं, कि

ٱللَّهُ وَلِىُّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ يُخْرِجُهُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِ ۖ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ أَوْلِيَآؤُهُمُ ٱلطَّٰغُوتُ يُخْرِجُونَهُم مِّنَ ٱلنُّورِ إِلَى ٱلظُّلُمَٰتِ ۗ أُو۟لَٰٓئِكَ

أَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ۝

जो उनको रोशनी से निकाल कर अंधेरे की ओर ले जाते हैं, यही लोग जहन्नमी हैं उसमें वे हमेशा रहेंगे।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرٰهِيمَ فِي رَبِّهِ أَنْ آتٰهُ اللَّهُ الْمُلْكَ ۘ إِذْ قَالَ إِبْرٰهِيمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۙ قَالَ أَنَا أُحْيِي وَأُمِيتُ ۖ قَالَ إِبْرٰهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ۝

२५८- क्या तुम ने उस व्यक्ति को देखा नहीं? जिसने इब्राहीम से उसके 'रब' के सिलसिले में हुज्जत (बहस) किया था इस वजह से कि अल्लाह ने उसको बादशाहत दे रखी थी, जबकि इब्राहीम ने उससे कहा, ''मेरा रब तो 'वही' है जो जिलाता और मारता है'', उसने कहा, ''मैं भी तो जिलाता और मारता हूँ'' इब्राहीम ने कहा, ''अच्छा तो अल्लाह सूर्य को पूरब से लाता है, तो तू उसे पश्चिम से ले आ, इस पर वह काफ़िर (इन्कारी) चकित रह गया, और अल्लाह ज़ालिमों को सीधी राह नहीं दिखाता।

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَىٰ قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحْيِي هٰذِهِ اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۖ فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۖ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَل لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانظُرْ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ وَانظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِّلنَّاسِ ۖ وَانظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

२५९- या उस जैसे व्यक्ति को (नहीं देखा,) जिसका एक ऐसी बस्ती पर से गुज़र हुआ, जो अपनी छतों के बल गिरी हुई थी, उसने कहा, ''अल्लाह इसको मरने के बाद कैसे जिलाएगा'' तो अल्लाह ने उसे सौ वर्ष तक मुर्दा रखा फिर उसे उठा खड़ा किया, कहा, ''तू कितनी अवधि तक इस हालत में रहा, उसने कहा, मैं एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा रहा, कहा, (नहीं) बल्कि तू सौ वर्ष रहा है, अब अपने खाने और पीने की चीज़ों को देख ले, उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, और अपने गधे को भी देख और यह इसलिए कह रहे हैं ताकि हम तुझे लोगों के लिए निशानी बना दें, और हड्डियों को देख, कि किस प्रकार हम जोड़ देते हैं फिर उन पर माँस चढ़ाते हैं तो जब यह हक़ीक़त उस पर खुल गई तो वह पुकार उठा मैं जानता हूँ कि अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) है।''

وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۖ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِن ۖ قَالَ بَلَىٰ وَلٰكِن لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِي ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

२६०- और (याद करो) जब इब्राहीम ने कहा, ''ऐ मेरे रब! मुझे दिखा दे कि 'तू' मुर्दो को किस तरह जिलाएगा?'' कहा, ''क्या आपको यक़ीन नहीं है?'' (उन्होंने) कहा, ''क्यों नहीं, लेकिन (मैं देखना चाहता हूँ) ताकि दिल को इत्मिनान हो जाए,'' कहा, ''अच्छा चार परिन्दे लें, फिर उन्हें अपने साथ हिला-मिला लें, फिर उनका एक-एक टुकड़ा हर एक पहाड़ पर रखवा दें, फिर उनको बुलाएँ तो वे आप के पास दौड़ते चले

आएँगे और जान लें कि अल्लाह बड़ी ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली), हिकमत वाला है।''

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝

२६१- जो लोग अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, उन (के माल) की मिसाल उन दानें की तरह है जिससे सात बालें उगें और हर एक बाली में सौ-सौ दानें हों और अल्लाह जिस (के माल) में चाहता है ज़्यादा करता है 'वह' बड़ी वुसअ़त (समाई) वाला, (सब कुछ) जानने वाला है।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

२६२- जो लोग अपना माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं उसके बाद न उस ख़र्च का (किसी पर) एहसान रखते हैं, और न (किसी को) तकलीफ़ देते हैं, उनका बदला उनके 'रब' के पास है, और (क़ियामत के दिन) न उनको कुछ डर होगा, और न वे ग़मगीन होंगे।

قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ۝

२६३- एक भली बात कहना और माफ़ी से काम लेना, उस सदक़े से बेहतर है जिसके देने के बाद तकलीफ़ दी जाए, और अल्लाह बड़ा ग़नी (निस्पृह) सहनशील है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝

२६४- ऐ ईमान वालो! अपने सदक़े को एहसान जताकर और तकलीफ़ दे कर, उस व्यक्ति की तरह बर्बाद न कर दो, जो लोगों को दिखाने के लिए अपना माल ख़र्च करता, और अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान नहीं रखता, तो उस की हालत उस चट्टान जैसी है जिस पर कुछ मिट्टी पड़ी हो फिर उस पर ज़ोर की बारिश हो, तो वह उसे बिल्कुल साफ़ कर दे, इसी तरह ये लोग अपने आ़माल का कुछ भी बदला हासिल नहीं कर सकेंगे, और अल्लाह ऐसे नाशुक्रों को हिदायत नहीं दिया करता।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

२६५- और उन लोगों की मिसाल जो अपना माल अल्लाह को राज़ी करने, और अपने आप में मज़बूती पैदा करने की इच्छा से खर्च करते रहते हैं, (उनकी हालत) एक बाग़ की तरह है, जो किसी अच्छी उपजाऊ भूमि पर हो, और उस पर घंघोर बारिश हो, तो उसमें दो गुना फल आएँ, और अगर ज़ोरदार बारिश उस

पर न भी हो तो हल्की फ़ुहार ही सही, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे खूब देख रहा है।

२६६- क्या तुम में से कोई यह पसंद करता है कि उसका एक बाग़ खजूरों और अंगूरों का हो, जिसके नीचे नहरें बह रही हों, उसमें हर तरह के फल हों, उसे बुढ़ापा आ पकड़े, और उसके नन्हें-नन्हें बच्चे भी हों तो (यकायक) उस बाग़ पर आग का भरा हुआ बगोला (बवंडर) चले और वह जल जाए, इस तरह अल्लाह अपनी निशानियों को खोल-खोल कर बयान करता है ताकि तुम सोच-विचार से काम लो।

أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيلٍ وَ
أَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ لَهُ فِيهَا
مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ
ضُعَفَاءُ فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ

२६७- ऐ ईमान वालो! अपनी पाक कमाई में से और उन चीज़ों में से भी, जो हमने ज़मीन से तुम्हारे लिए निकाली हैं, ख़र्च करो और उन में से ख़राब चीज़ों के देने का इरादा भी न करना, और तुम ख़ुद भी (दिये जाने पर) उनको न लोगे, मगर यह कि आँखें ही बन्द कर लो, और जान लो कि, अल्लाह बेपरवाह (निस्पृह) ह़म्द के लायक़ (प्रशंसनीय) है।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوٓا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ
وَمِمَّآ أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ وَلَا تَيَمَّمُوا
الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيهِ إِلَّآ أَنْ
تُغْمِضُوا فِيهِ وَاعْلَمُوٓا أَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ

२६८- शैतान तुम्हें मुहताजी से डराता है, और बेशर्मी के कामों में उभारता है, जबकि अल्लाह अपनी ओर से माफ़ी और रह़म (कृपा) का, तुम से वादा करता है और अल्लाह बड़ी वुसअ़त (समाई) वाला, खूब जानने वाला है।

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ
وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا وَاللّٰهُ
وَاسِعٌ عَلِيمٌ

२६९- 'वह' जिसे चाहता है ह़िकमत अता करता है, और जिसे ह़िकमत अता हो गई, बेशक उसको बड़ी नेअ़मत मिल गई, और नसीह़त तो वही लोग क़ुबूल करते हैं, जो अक़्लमंद हैं।

يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ وَمَنْ يُّؤْتَ
الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا وَمَا
يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُولُوا الْأَلْبَابِ

२७०- और तुम जो कुछ ख़र्च करते हो, या जो भी नज़र (मन्नत) मानते हो अल्लाह उसे जानता है, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

وَمَآ أَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ
نَّذْرٍ فَإِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهُ وَمَا لِلظّٰلِمِينَ مِنْ
أَنْصَارٍ

२७१- अगर तुम खुले रूप में सदक़े दो तो यह अच्छा है, और अगर छिपाकर मुहताजों को दो, तो यह तुम्हारे लिए और

إِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ وَإِنْ تُخْفُوهَا
وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَيُكَفِّرُ

عَنكُم مِّن سَيِّـَٔاتِكُمْ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
خَبِيرٌ ۝

बेहतर है, और (वह) तुम्हारे गुनाहों को भी दूर कर देगा, और अल्लाह को तुम्हारे कामों की खूब ख़बर है।

لَّيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن
يَشَاءُ ۗ وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنفُسِكُمْ ۚ وَمَا
تُنفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ ۚ وَمَا تُنفِقُوا
مِنْ خَيْرٍ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ۝

२७२- (ऐ मुहम्मद!) उन लोगों की हिदायत (सत्य मार्ग) के आप ज़िम्मेदार नहीं हैं बल्कि अल्लाह ही जिसको चाहता है हिदायत देता है, और तुम जो कुछ माल में से ख़र्च करोगे, तो अपने ही लिए, और तुम अल्लाह ही को राज़ी करने के लिए ख़र्च करते हो, और तुम माल में से जो कुछ ख़र्च करते हो (सब) तुम को पूरा-पूरा लौटा दिया जाएगा, और तुम पर कोई ज़ुल्म न होगा।

لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أُحْصِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ
الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُم
بِسِيمَاهُمْ ۚ لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا ۗ وَمَا
تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۝

२७३- यह उन मुहताजों के लिए है, जो अल्लाह के रास्ते में घिर गये हैं, मुल्क में कहीं चल फिर नहीं सकते, और माँगने में शर्म करते हैं, यहाँ तक कि न माँगने की वजह से अन्जान आदमी उनको मालदार ख़याल करता है, और तुम उन्हें उनके लक्षण से पहचान सकते हो, वे लिपट कर लोगों से नहीं माँगते, और जो माल भी तुम ख़र्च करोगे, अल्लाह उस को खूब जानने वाला है।

الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُم بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا
وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

२७४- जो लोग अपना माल रात और दिन छिपे और खुले ख़र्च करते रहते हैं, तो उन का बदला उनके रब के पास है, और न उनके लिए कोई डर है, और न वह ग़मगीन होंगे।

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا
يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ ۚ
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا ۗ وَأَحَلَّ
اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا ۚ فَمَن جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِّن
رَّبِّهِ فَانتَهَىٰ فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ ۖ
وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ۝

२७५- जो लोग ब्याज खाते रहते हैं वे लोग (क़ब्रों से) खड़े न हो सकेंगे मगर जिस तरह़ वह व्यक्ति उठता है, जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो। यह (सज़ा) इसलिए होगी, कि वे कहते हैं कि व्यापार भी तो वैसा ही है जैसे ब्याज (लेना), जबकि अल्लाह ने व्यापार को ह़लाल और ब्याज को हराम किया है, अतः जिस व्यक्ति को उसके रब की ओर से नसीह़त पहुँची और वह बाज़ आ गया, तो जो कुछ पहले हो चुका वह उस का हो चुका, और उसका मामला अल्लाह के हवाले रहा, और जिसने फिर यही काम किया, तो यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, उसमें वे हमेशा पड़े रहेंगे।

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ
كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ۝

२७६- अल्लाह ब्याज को मिटाता है, और सदक़े को बढ़ाता है, और अल्लाह किसी नाशुक्रे गुनहगार को पसंद नहीं करता।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ
وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

२७७- जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे, और नमाज़ की पाबन्दी की और ज़कात देते रहे, उनका बदला उनके रब के पास है न उन पर कोई डर होगा, और न वह ग़मगीन होंगे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ
مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

२७८- ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और जो कुछ ब्याज बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो, अगर तुम ईमान वाले हो।

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ
وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ
وَلَا تُظْلَمُوْنَ ۝

२७९- फिर अगर तुम ने ऐसा न किया तो ख़बरदार हो जाओ, जंग के लिए अल्लाह और उसके रसूल की ओर से, और अगर तुम तौबः कर लो तो मूल-धन तुम्हारा ही है, न तुम (किसी पर) ज़ुल्म करो, और न तुम पर ज़ुल्म किया जाए।

وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ۚ
وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝

२८०- और अगर (क़र्ज़ लेने वाला) तंगी में हो तो (उसे फ़राख़ी या) हाथ खुलने तक मुहलत दो; और अगर सदक़ा कर दो (अर्थात मूलधन भी न लो) तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है, बशर्ते कि समझो।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى
كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝

२८१- और उस दिन से डरते रहो, जबकि तुम अल्लाह की ओर लौटाए जाओगे, फिर हर व्यक्ति को जो कुछ उसने कमाया था, पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा, और उन पर ज़ुल्म (अन्याय) न होगा।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰٓى
اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ۗ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ
كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ ۠ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا
عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ
وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـًٔا ۗ فَاِنْ
كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا
يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ۗ
وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ
لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ

२८२- ऐ ईमान वालो! जब क़र्ज़ (ऋण) का मामला किसी निश्चित अवधि के लिए करो तो उसे लिख लिया करो, और लिखने वाला तुम्हारे बीच इंसाफ़ से लिखे, और लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे, जिस तरह अल्लाह ने उसे सिखाया है, (उसी तरह वह दूसरों के लिए लिखने के काम आए,) और बोल कर वह व्यक्ति लिखाए जिसके ज़िम्मे हक़ की अदायगी हो, और चाहिए कि वह अपने रब, अल्लाह से डरता रहे, और उसमें से कुछ भी कम न करे फिर अगर वह व्यक्ति जिसके ज़िम्में हक़ की अदायगी हो, वह कमसमझ या कमजोर हो, या

مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا
فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَىٰ ۚ وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَاءُ إِذَا
مَا دُعُوا ۚ وَلَا تَسْأَمُوا أَنْ تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا
إِلَىٰ أَجَلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ
وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا ۖ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً
حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۗ وَأَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ ۚ
وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ ۚ وَإِنْ تَفْعَلُوا
فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَيُعَلِّمُكُمُ اللَّهُ ۗ
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٨٢﴾

वह बोल कर न लिख सकता हो तो उसके संरक्षक को चाहिए कि वह इंसाफ के साथ बोल कर लिखवा दे, और अपने में से दो मर्दो (पुरूषों) को गवाह बना लिया करो, और अगर दो मर्द न हों, तो एक मर्द और दो औ़रतें, जिन्हें तुम गवाही के लिए पसंद करो, कि अगर एक भूल जाए तो दूसरी उसे याद दिला दे, और गवाहों को जब बुलाया जाए, तो आने से इन्कार न करें, और क़र्ज़ चाहे थोड़ा हो या बहुत एक निश्चित (अवधि तक) के लिए हो, तो उसे लिखने में सुस्ती न करो, यह बात अल्लाह के नज़दीक बहुत ही मुन्सिफ़ाना (न्यायोचित) है, और गवाही के लिए भी यही तरीक़ा बेहतर है, और इससे बहुत उम्मीद है कि तुम किसी संदेह में न पड़ोगे, हाँ अगर कोई सौदा नक़्द हो जिसका लेन-देन तुम आपस में कर रहे हो, तो उसके न लिखने में, तुम पर कोई दोष नहीं, और जब आपस में ख़रीद-फ़रोख़्त का मामला करो तो, उस समय भी गवाह कर लिया करो, और न किसी लिखने वाले को नुक़सान पहुँचाया जाए, और न किसी गवाह को, और अगर ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की बात होगी, और अल्लाह से डरते रहो अल्लाह तुम्हें सिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ का खूब जानने वाला है।

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهَانٌ
مَقْبُوضَةٌ ۖ فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ
الَّذِي اؤْتُمِنَ أَمَانَتَهُ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ ۗ وَلَا
تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۚ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آثِمٌ قَلْبُهُ ۗ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨٣﴾

२८३- और अगर तुम सफ़र में हो, और किसी लिखने वाले को न पा सको, तो रेहन (गिरवी) रखने की चीज़ें ही क़ब्ज़े में दे दिया करो, फिर अगर तुम एक-दूसरे पर भरोसा करो, तो जिस पर भरोसा किया जाए, उसे चाहिए कि वह यह सच कर दिखाए, कि वह भरोसेमन्द है; और अल्लाह से, जो उस का रब है, डरता रहे, और गवाही को न छिपाओ जो छिपायेगा उसका दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे खूब जानता है।

لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَإِنْ تُبْدُوا
مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللَّهُ ۖ

२८४- अल्लाह ही का है, जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है और जो कुछ तुम्हारे मन में है, अगर तुम उसे

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ
عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾

ज़ाहिर कर दो, या छिपाये रखो, तो अल्लाह तुम से उसका हिसाब (ज़रूर) लेगा, फिर 'वह' जिसे चाहे माफ़ कर दे और जिसे चाहे अ़ज़ाब़ दे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) रखने वाला है।

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۗ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۗ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ
رُّسُلِهٖ ۗ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۗ غُفْرَانَكَ
رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾

२८५- रसूल (मुहम्मद) उस (किताब) पर ईमान लाए जो उनके रब की ओर से उन पर उतारा गया और ईमान वाले भी, सब अल्लाह पर, और उसके फ़रिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर ईमान लाये। (और कहते हैं) 'हम' उसके रसूलों में से किसी में कुछ अन्तर नहीं करते,'' और उनका कहना है ''हमने सुना और माना, ऐ 'हमारे' रब! हम 'तुझ' ही से माफ़ी चाहते हैं और तेरी ही ओर (हम सब को) लौटकर जाना है।''

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۗ لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ
نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا
كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا
مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاغْفِرْ لَنَا ۗ
وَارْحَمْنَا ۗ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ
الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾

२८६- अल्लाह किसी व्यक्ति पर उसकी शक्ति से ज़्यादा बोझ नहीं डालता, उसे वही मिलेगा जो उसने कमाया है, और वह भुगतेगा (भी) वही जो उसने किया है- ''ऐ हमारे रब! अगर हमसे भूल चूक हो जाए तो हमारी पकड़ न कर, ऐ हमारे रब! हम पर ऐसा बोझ न डाल जैसा कि 'तूने' हमसे पहले के लोगों पर डाला था, ऐ हमारे रब! हमसे वह बोझ न उठवा जिस की हममें ताक़त नहीं, और हमें माफ़ कर, और हम को बख़्श दे, और हम पर रहृम कर, 'तूही' हमारा संरक्षक (काम बनाने वाला) है, अतः काफ़िरों (इन्कारियों) पर हमारी मदद (विजय) फरमा।''



अनुवाद-सूरतुआलि अि़म्रान

यह सूरः मदनी है, इसमें अ़रबी के १५३२६ अक्षर, ३५४२ शब्द, २०० आयतें, और २० रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- अलिफ़- लाम- मीम-।

الٓمّٓ ۝

२- अल्लाह (वह है कि) उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, 'वह' ज़िन्दा, हमेशा रहने वाला है;

اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۝

३- 'उसने' आप पर सच्ची किताब उतारी, जो अपने से पहले की (किताबों की) तस्दीक़ (पुष्टि) करती है, और उसी ने तौरात और इंजील उतारी;

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۝

४- इससे पहले लोगों की हिदायत (मार्ग दर्शन) के लिए फ़ुर्क़ान (ह़क़ व बातिल को अलग-अलग करने वाला) उतारा, जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है; और अल्लाह ज़बरदस्त, बदला लेने वाला है।

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝

५- अल्लाह से कोई चीज़, न ज़मीन में छिपी है, और न आसमान में।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۝

६- 'वही' तो है जो रह़म (गर्भाशय) में जैसा चाहता है तुम्हारी सूरतें बनाता है,'उस' ताक़त वाले (प्रभुत्वशाली) ह़िकमत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।

هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ ۗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

७- 'वही' है जिसने तुम पर किताब उतारी, जिसकी कुछ आयतें मुह़्कम (सुदृढ़) हैं, वही किताब तो असल (मूल) है- और दूसरी मुतशाबेह (मिलती-जुलती) हैं, तो वह लोग जिनके दिलों मे टेढ़ है, वे मुतशाबेह (संदिग्ध) की पैरवी करते हैं, ताकि फ़ित्ने

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ۗ فَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِيْلِهٖ ۚ وَمَا يَعْلَمُ

تَأْوِيلَهٗٓ إِلَّا اللّٰهُ ۘ وَالرّٰسِخُوْنَ فِى الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۝

फैलाएँ, (ग़लत) मतलब बयान कर के, जबकि असली मतलब अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, और जो लोग इल्म में पक्के होते हैं, वे कहते हैं, ''हम तो इस पर ईमान लाए ये सभी हमारे रब की ओर से है, और नसीह़त तो अक़्लमंद ही क़ुबूल करते हैं।''

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝

८- (ऐ) हमारे रब! जब 'तू' हमें सीधे रास्ते पर लगा चुका है तो इसके बाद हमारे दिलों में टेढ़ न पैदा कर, और हमें अपने पास से रह़मत (दयालुता) अ़ता कर, बेशक 'तू' ही' बड़ा दाता है।

رَبَّنَآ إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝

९- (ऐ) हमारे रब! 'तू' लोगों को एक दिन इकट्ठा करने वाला है, जिसमें कोई संदेह नहीं, बेशक अल्लाह अपने वादा के खिलाफ़ नहीं करता।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَآ أَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۖ وَأُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۝

१०- जिन लोगों ने कुफ़्र (इन्कार) किया न उनके माल अल्लाह (के अ़ज़ाब) से उनको बचा सकेंगे और न उनकी औलाद कुछ काम आएगी और यही लोग आग के ईंधन होंगे।

كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَأَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

११- इनका ह़ाल भी फिरऔ़न के लोगों और उनसे पहले के लोगों का सा होगा जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था, तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों की वजह से पकड़ लिया था, और अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ إِلٰى جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝

१२- (ऐ मुह़म्मद) काफ़िरों (इन्कारियों) से कह दीजिए, ''जल्द ही तुम पराजित किये जाओगे, और जहन्नम की ओर इकट्ठे किये जाओगे, और वह बुरा ठिकाना है,।''

قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَأُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ۚ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۗ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِى الْأَبْصَارِ ۝

१३- तुम्हारे लिए एक निशानी (उन) दो गिरोहों में है, जो (बद्र की लड़ाई में) एक दूसरे से भिड़ गये, एक गिरोह (उसमें मुसलमानों का था जो) अल्लाह की राह में लड़ रहा था, और दूसरा गिरोह (काफ़िरों का था वह) उनको अपनी आखों से देख रहा था कि वे उनसे दुगने हैं, और अल्लाह अपनी मदद से जिसे चाहता है शक्ति प्रदान करता है, जो बसारत (खुली आँखों) वाले हैं उनके लिए इसमें बड़ा सबक़ है।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ

१४- लोगों के लिए ज़ीनत (शोभायमान) कर दी गई है, उनके ख्वाहिशों की मुह़ब्बत, औ़रतों से हो या बेटों से, या ढ़ेर लगे

وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۗ ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَآبِ ۝

हुए सोने और चाँदी से या निशान लगे हुए घोड़ों से, या मवेशियों से, (यह सब भली मालूम होती है) या खेती बाड़ी से, यह सब दुनियावी ज़िन्दगी के सामान हैं, और अच्छा ठिकाना तो अल्लाह ही के पास है।

قُلْ أَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِنْ ذَٰلِكُمْ ۚ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝

१५- कह दीजिए, ''क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ की ख़बर दूँ, जो इनसे बेहतर हो, उन लोगों के लिए जो परहेज़गार हैं, उनके लिए रब के पास बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उसमें वे हमेशा रहेंगे, और पाक-साफ बीवियाँ (पत्नियाँ) होंगी, और अल्लाह की रज़ामन्दी (प्राप्त) होगी, और अल्लाह अपने बन्दों को देखने वाला है।''

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

१६- (यह वह लोग हैं) जो कहते रहते हैं कि (ऐ) हमारे रब! हम ईमान ले आए,सो हमारे गुनाह माफ़ कर दे, और हमें दोज़ख की आग से बचा;

الصَّابِرِينَ وَالصَّادِقِينَ وَالْقَانِتِينَ وَالْمُنْفِقِينَ وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ ۝

१७- यह लोग सब्र (धैर्य) से काम लेते हैं, और सच बोलते हैं, और इबादत में लगे रहते हैं, और (अल्लाह की राह में) खर्च करते हैं, और सहर (भोर) में गुनाहों की माफ़ी माँगा करते हैं।

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

१८- अल्लाह तो इसकी गवाही देता है कि उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, और फ़रिश्ते और इल्म वाले लोग जो इन्साफ़ पर क़ायम हैं, वह भी (गवाही देते हैं कि) उस प्रभुत्वशाली ह़िकमत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

१६- दीन (धर्म) तो अल्लाह के नज़दीक़ इस्लाम ही है, जिन्हें किताब दी गई थी,(अहले किताब) उन्होंने जो (उस दीन से) इख़्तिलाफ़ (विभेद) किया, तो इल्म हासिल होने के बाद आपस की ज़िद से किया, और जो व्यक्ति अल्लाह की आयतों का इन्कार करेगा, तो अल्लाह भी जल्द हिसाब लेने वाला है;

فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۗ وَقُلْ لِلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأُمِّيِّينَ أَأَسْلَمْتُمْ ۚ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۖ وَإِنْ

२०- फिर अगर यह लोग आप से हुज्जत (झगड़ा) करें, तो कह दीजिए, ''मैंने और मेरे जो पैरू (अनुयायी) हैं, अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया है।'' और अहले किताब

تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ
بِالْعِبَادِ ۝

(जिन्हें किताब मिली थी) और उम्मीयों (जिनके पास किताब नहीं) से कह दीजिए ''क्या तुम भी इस्लाम क़ुबूल करते हो?'' तो अगर यह इस्लाम क़ुबूल कर लें तो बेशक सीधा मार्ग पा लें, और अगर मुँह मोड़े रहें, तो आप के ज़िम्मे केवल (संदेश) पहुँचा देना है, और अल्लाह (अपने) बन्दों को खूब देख रहा है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ
النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ
بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝

२१- बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं, और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते हैं, और उन लोगों को भी क़त्ल कर देते हैं, जो न्याय का हुक्म देते हैं, तो उन्हें दुःख देने वाले अ़ज़ाब की खुशख़बरी सुना दीजिए।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝

२२- ये ऐसे लोग हैं जिनके आ़माल दुनिया और आख़िरत दोनों में बर्बाद हुए और उन का कोई मददगार न होगा।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ
اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ
مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝

२३- क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा! जिन्हें किताब (तौरेत) दी गई थी; उन्हें अल्लाह की किताब की ओर बुलाया जाता है, ताकि वह उनके बीच फ़ैसला करें; फिर भी उनका एक गिरोह बेरूख़ी करता हुआ मुँह फेर लेता है;

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا
مَّعْدُوْدٰتٍ ۖ وَّغَرَّهُمْ فِىْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ۝

२४- यह इसलिए कि वे कहते हैं: ''आग हमें नहीं छू सकती, हाँ, कुछ गिने-चुने दिनों की बात और है।'' और उनकी मन गढ़त बातों ने, जो वे गढ़ते रहे हैं, उन्हें धोखे में डाल रखा है;

فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۣ وَوُفِّيَتْ
كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝

२५- फिर क्या हाल होगा, जब 'हम' उन्हें उस दिन इकट्ठा करेंगे, जिसके आने में कोई संदेह नहीं और हर नफ़्स (इन्सान) को, जो कुछ उसने कमाया होगा, पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा, और उन पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएगा।

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ
وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۡ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ
وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ۭ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

२६- कह दीजिए, ''(ऐ अल्लाह) तमाम मुल्कों के मालिक! 'तू' जिसे चाहे हुकूमत दे, और 'तू' जिससे चाहे हुकूमत छीन ले, और 'तू' जिसे चाहे इज़्ज़त दे, और 'तू' जिसे चाहे ज़िल्लत दे, 'तेरे' ही हाथ में भलाई है, बेशक 'तू' ही हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।''

२७- 'तू' रात को दिन में पिरोता है, और दिन को रात में पिरोता है, और 'तू' बेजान से जानदार को निकालता है, और 'तू' जानदार से बेजान को निकालता है, और 'तू' जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है।

تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ز وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ز وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

२८- ईमान वालों को चाहिए, कि वे ईमान वालों के सिवा काफ़िरों (इन्कार करने वालों) को दोस्त (राज़दार) न बनाएँ; और जो ऐसा करेगा, उससे अल्लाह का कोई सम्बन्ध नहीं, हाँ, अगर इस तरीक़े से तुम उन (की बुराई) से बचाव की शक्ल निकालो, (तो हरज नहीं) और अल्लाह तुम को अपने से डराता है, और अल्लाह ही की ओर (तुम को) लौट कर जाना है।

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ج وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ط وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ط وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝

२९- कह दीजिए, ''जो कुछ तुम्हारे सीनों में है, तुम उसे छिपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह उसे जानता है; और अल्लाह उसे भी जानता है, जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) रखता है।''

قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ط وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ط وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

३०- जिस दिन हर व्यक्ति अपनी की हुई भलाई, और अपनी की हुई बुराई को सामने पाएगा, तो वह तमन्ना करेगा कि काश! उसके और इस दिन के बीच बहुत दूर का फ़ासला होता, और अल्लाह तुम को अपने (ग़ज़ब) से डराता है, और अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा शफ़क़त करने वाला (अर्थात करूणामय) है।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا ۢ بَعِيْدًا ط وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ط وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ ۢ بِالْعِبَادِ ۝

३१- कह दीजिए, ''अगर तुम अल्लाह से मुह़ब्बत रखते हो, तो तुम मेरी पैरवी (अनुसरण) करो, अल्लाह भी तुम को चाहने लगेगा, और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है''

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ط وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

३२- कह दीजिए, ''अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो,'' इस पर भी अगर वह मुँह मोड़ें, तो अल्लाह भी काफ़िरों (इन्कारियों) से मुह़ब्बत नहीं करता।

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ج فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝

३३- अल्लाह ने आदम और नूह और इब्राहीम की औलाद, और इमरान की औलाद को, पूरे आ़लम (संसार) के लोगों में चुन लिया था;

إِنَّ ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰٓ ءَادَمَ وَنُوحًا وَءَالَ إِبْرَٰهِيمَ وَءَالَ عِمْرَٰنَ عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٣٣﴾

३४- इनमें एक दूसरे की औलाद थे, और अल्लाह खूब सुनने वाला, जानने वाला है।

ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنۢ بَعْضٍ ۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾

३५- (और वह वक़्त याद करो) जब इमरान की बीवी (पत्नी) ने कहा, ''ऐ मेरे रब! जो (बच्चा) मेरे रह़म (गर्भ) में है, मैं उसको 'तेरे' लिए नज़र (भेंट) देती हूँ, उसे दुनिया के कामों से आज़ाद रखूँगी, 'तू' उसे मेरी ओर से क़ुबूल कर, 'तू' तो खूब सुनने, जानने वाला है;''

إِذْ قَالَتِ ٱمْرَأَتُ عِمْرَٰنَ رَبِّ إِنِّى نَذَرْتُ لَكَ مَا فِى بَطْنِى مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّىٓ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾

३६- फिर जब उनके यहाँ (बच्ची) पैदा हुई तो बोलीं, ''ऐ मेरे रब! मेरे तो लड़की पैदा हुई है।'' और अल्लाह तो खूब जानता था कि उसके क्या पैदा हुई है? और लड़का (उस) लड़की जैसा नहीं हो सकता ''और मैने उस लड़की का नाम मरयम रखा है, और मैं उसे और उसकी औलाद को शैतान मर्दूद से (सुरक्षित रखने के लिए) तेरी हिफ़ाज़त में देती हूँ।''

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّى وَضَعْتُهَآ أُنثَىٰ وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ وَلَيْسَ ٱلذَّكَرُ كَٱلْأُنثَىٰ ۖ وَإِنِّى سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّىٓ أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ ٱلرَّجِيمِ ﴿٣٦﴾

३७- फिर उनके रब ने उनको पसंदीदगी के साथ क़ुबूल किया, और उन्हें अच्छी तरह परवरिश किया, और उनका सरपरस्त (संरक्षक) ज़करिया को बना दिया, जब कभी ज़करिया उनके पास मेहराब (इबादतगाह) में जाते, तो उनके पास कुछ खाने (पीने) की चीज़ पाते, (एक बार) बोले मरयम यह (चीज़ें) कहाँ से तुझे मिल जाती हैं, वह बोलीं यह अल्लाह की ओर से आ जाती हैं, बेशक अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ देता है।

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۖ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا ٱلْمِحْرَابَ وَجَدَ عِندَهَا رِزْقًا ۖ قَالَ يَٰمَرْيَمُ أَنَّىٰ لَكِ هَٰذَا ۖ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ يَرْزُقُ مَن يَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾

३८- वहीं ज़करिया अपने रब से दुआ़ करने लगे, (और) कहा, ''ऐ मेरे रब! मुझे अपने पास से कोई नेक औलाद अ़ता कर, बेशक 'तू' दुआ़ का सुनने वाला है,''

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُۥ ۖ قَالَ رَبِّ هَبْ لِى مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۖ إِنَّكَ سَمِيعُ ٱلدُّعَآءِ ﴿٣٨﴾

३९- तो फ़रिश्तों ने उन्हें आवाज़ दी, जबकि वह मेहराब में खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे, कि अल्लाह आप को यह्या की खुशख़बरी देता है, जो अल्लाह के कलिमे (ईसा) की तस्दीक़ (पुष्टि) करेंगे; और सरदार होंगे; और बड़े मुत्तक़ी (संयमी), और अच्छे लोगों में से एक नबी होंगे;''

فَنَادَتْهُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُصَلِّى فِى ٱلْمِحْرَابِ أَنَّ ٱللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٣٩﴾

४०- (ज़करिया) बोले, '' मेरे रब! मेरे बेटा किस तरह़ होगा जबकि मुझे बुढ़ापा आ गया है, और मेरी बीवी बाँझ है? फ़रमाया, इसी तरह़ अल्लाह जो चाहता है करता है!

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِىَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِىْ عَاقِرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ۝

४१- (ज़करिया) बोले, ''मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी दे दीजिए, फ़रमाया, आप के लिए निशानी यह है कि आप लोगों से तीन दिन तक इशारों के सिवा कोई बात चीत न कर सकेगें, तो (उन दिनों में) अपने रब की ज़्यादा से ज़्यादा याद और सुबह़ व शाम उसकी तस्बीह़ (महिमा) करते रहिएगा।''

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّىْۤ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِىِّ وَالْاِبْكَارِ ۝

४२- और जब फ़रिश्तों ने कहा, ''ऐ मरयम! अल्लाह ने तुम को चुना है और पाक बनाया है, और पूरी दुनिया की औ़रतों में से चुन लिया है;''

وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰۤئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ۝

४३- ऐ मरयम! अपने रब की फरमाँबरदारी करती रहिए, और सज्दः करती रहिए, और रूकूअ़ करने वालों के साथ रूकूअ़ करती रहिए;

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِىْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِىْ وَارْكَعِىْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝

४४- ये बातें ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरों में से हैं जो हम आप के पास वह़्य (द्वारा) भेज रहे हैं। और आप न तो उस समय उनके पास थे, जब वे अपनी क़लमों को (कुरअ़ा, गुटिया के तौर पर) फेंक रहे थे, कि उनमें कौन मरयम का संरक्षक बने, और न उस समय आप उनके पास थे जब कि वे आपस में झगड़ रहे थे।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ۝

४५- (याद करो) जब फ़रिश्तों ने कहा, ''ऐ मरयम! अल्लाह आप को खुशख़बरी दे रहा है, अपनी ओर से एक कलिमा (बात) की जिसका नाम मसीह़, ईसा बिन मरयम होगा, दुनिया और आख़िरत में इज्ज़त वालों और मुक़र्रबों (निकटवर्ती) लोगों में से होंगे।''

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰۤئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝

४६- और वह लोगों से पालने (बचपने) में भी बात करेंगे, और बड़ी उम्र को पहुँच कर भी, और वह नेक लोगों में से होंगे।

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

४७- वह बोलीं, ''ऐ मेरे रब! मेरे लड़का किस तरह होगा जबकि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं, कहा, ''ऐसा ही

قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰى

होगा अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है, जब 'वह' किसी बात को पूरा करना चाहता है, तो बस उससे कहता है, हो जा, तो वह हो जाता है;''

أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ۝

४८- और (अल्लाह) उसे किताब और ह़िकमत, और तौरेत, और इंजील सिखा देगा,

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ ۝

४९- और उसे (बनीइस्राईल की संतान) की ओर रसूल बना कर भेजेगा (वह कहेगा), ''मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ, मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिन्दे की शक्ल बनाता हूँ, फिर उसमें फूँक मारता हूँ, तो वह अल्लाह के हुक्म से परिन्दा बन जाता है; और मैं अल्लाह के हुक्म से अन्धा और अब्रस (सफ़ेद दाग वाले) को अच्छा कर देता हूँ, और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दा को ज़िन्दा कर देता हूँ, और तुम जो कुछ खाते हो, और जो कुछ अपने घरों में इकट्ठा कर के रखते हो, वह तुम्हें बतला देता है; बेशक इसमें तुम्हारे लिए निशानी है, अगर तुम ईमान वाले हो।

وَرَسُولًا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ أَنِّي أَخْلُقُ لَكُم مِّنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِي الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُنَبِّئُكُم بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝

५०- और मैं तस्दीक़ (पुष्टि) करने वाला हूँ, अपने से आगे (अर्थात पहले) आने वाली तौरेत की, और इसलिए भी कि तुम्हारे लिए कुछ उन चीज़ों को ह़लाल कर दूँ, जो तुम्हारे लिए ह़राम थीं, और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ, तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त (आज्ञा पालन) करो;

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَلِأُحِلَّ لَكُم بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ ۚ وَجِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝

५१- बेशक अल्लाह मेरा भी रब है, और तुम्हारा भी रब है, तो 'उसी' की इबादत करो, यही सीधी राह है।''

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۗ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ۝

५२- फिर जब ईसा को उनकी ओर से इन्कार का एह़सास हुआ तो उन्होंने कहा, ''कौन अल्लाह की ओर (बढ़ने में) मेरा मदद्गार होगा,'' हवारी बोले, ''हम हैं अल्लाह के मदद्गार, हम अल्लाह पर ईमान लाए और गवाह रहिए कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं,

فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ آمَنَّا بِاللَّهِ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۝

५३- (ऐ) हमारे रब! हम ईमान ले आए उस पर जो कुछ 'तू' ने नाज़िल किया है, और हमने पैरवी (अनुसरण) कर ली रसूल की, तो हमें भी गवाहों के साथ लिख ले।

رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝

وَمَكَرُوا وَمَكَرَ اللّٰهُ ۖ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِينَ

५४- और उन्होंने खुफ़िया तद्‌बीर (गुप्त योजना) की, तो अल्लाह ने भी ख़ुफ़िया तद्‌बीर (गुप्त योजना) की; और अल्लाह सब खुफ़िया तद्‌बीर करने वालों से बेहतर (तद्‌बीर करने वाला) है।

إِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيسٰى إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۖ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ

५५- (वह वक्त याद करो) जब अल्लाह ने फ़रमाया, ''ऐ ईसा! मैं तुम को मौत देने वाला हूँ, और तुम को अपनी ओर उठा लेने वाला हूँ, और उन लोगों से जो काफ़िर हैं, तुम्हें पाक करने वाला हूँ, और जो तुम्हारे पैरू (अनुयाई) हैं उन्हें क़ियामत के दिन तक उन लोगों के ऊपर रखूँगा जिन्होंने इन्कार किया; फिर मेरी ओर तुम्हें लौटना है, फिर मैं तुम्हारे बीच उन चीज़ों का फ़ैसला कर दूँगा जिनके विषय में तुम विभेद करते रहते थे।''

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَمَا لَهُمْ مِنْ نٰصِرِينَ

५६- तो जिन लोगों ने इन्कार किया, उन्हें दुनिया और आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब दूँगा, और उनका कोई मदद्‌गार न होगा।

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِينَ

५७- और जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने नेक काम किये, तो अल्लाह उन्हें पूरा-पूरा बदला देगा, और अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता।

ذٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ

५८- (ऐ मुह़म्मद) यह आयतें, हम आप को ह़िकमत भरी नसीहतें पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं।

إِنَّ مَثَلَ عِيسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ آدَمَ ۖ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ

५९- ईसा का ह़ाल अल्लाह के नज़दीक आदम जैसा है, कि उसने उनको मिट्‌टी से बनाया, फिर उनसे कहा (इन्सान), ''हो जाओ,'' तो वह (इन्सान) हो गये;

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْمُمْتَرِينَ

६०- यह ह़क़ तुम्हारे रब की ओर से है, सो तुम सन्देह करने वालों में से न होना।

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِينَ

६१- फिर जो कोई आप से इस(ईसा के) बारे में हुज्जत करे, इस के बाद कि 'आप' के पास (हकी़क़त का) इल्म आ चुका है, तो कह दीजिए, अच्छा हम अपने बेटों को भी बुला लाएँ और तुम्हारे बेटों को भी, और अपनी अ़ौरतों को भी, और तुम्हारी औरतों को भी और हम भी आएँ और तुम खुद भी आओ, फिर हम सब मिल कर दुआ़ करें, और झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें,,

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا
اللَّهُ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾

६२- यही सच्चा बयान है और अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, और बेशक अल्लाह ज़बरदस्त (प्रभुत्वशाली), ह़िकमत वाला है;

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٦٣﴾

६३- तो अगर ये लोग मुँह मोड़ें तो अल्लाह फ़सादियों को खूब जानता है।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا
وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ
فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٦٤﴾

६४- कह दीजिए, "ऐ अह्‌ले किताब! ऐसी बात की ओर आ जाओ, जो बात हमारे और तुम्हारे बीच एक समान है वह यह कि हम सिवाय अल्लाह के और किसी की इबादत न करें और न उसका किसी को साझीदार ठहराएँ और न हममें से कोई किसी को अल्लाह के सिवा रब बनाए," फिर अगर यह लोग मुँह मोड़ें तो कह दीजिए "तो गवाह रहो, हम तो मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।"

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا
أُنْزِلَتِ التَّوْرَاةُ وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ ۚ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٥﴾

६५- "ऐ किताब वालो!, तुम इब्राहीम के विषय में क्यों झगड़ रहे हो, जबकि तौरेत और इन्जील तो उनके बाद उतारी गई हैं, तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?

هَا أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ
فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ ۚ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾

६६- हाँ, तुम लोग वही तो हो, जो इस विषय में झगड़ चुके हो, जिसका तुम्हें कुछ तो इल्म था; तो अब ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो, जिसका तुम्हें इल्म ही नहीं? और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।"

مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَٰكِنْ
كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٦٧﴾

६७- इब्राहीम न तो यहूदी थे और न नसरानी (ईसाई), बल्कि वे तो एक ओर के होकर रहने वाले मुस्लिम (आज्ञाकारी) थे, और वह मुश्रिकों में से न थे।

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ
وَهَٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا ۗ وَاللَّهُ وَلِيُّ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٨﴾

६८- इब्राहीम के सब से ज़्यादा क़रीबी लोग तो वे हैं जिन्होंने उनकी पैरवी (अनुसरण) की, और यह नबी हैं और (वे ऐसे लोग हैं) जो (उनपर) ईमान लाए, और अल्लाह ईमान लाने वालों का मददगार है।

وَدَّتْ طَائِفَةٌ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّو
نَكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا
يَشْعُرُونَ ﴿٦٩﴾

६९- अह्‌ले किताब में से एक गिरोह तो यही चाहता है कि तुम्हें गुमराह कर दे जबकि ये अपने सिवा किसी को भी गुमराह नहीं करते, और उन्हें (इसका भी) एह़सास नहीं।

७०- ऐ किताब वालो! तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार क्यों करते हो! और (उस पर) तुम खुद गवाह हो?

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ اَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ۝

७१- ऐ किताब वालो! ह़क़ को बातिल (सत्य को असत्य) के साथ क्यों गड्ड-मड्ड करते हो, और जानते बूझते ह़क़ को छिपाते हो?

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَ تَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ۠

७२- और किताब वालों में से एक गिरोह कहता हैं, ''ईमान वालों पर जो कुछ उतरा है, उस पर सुबह को ईमान लाओ, और दिन के आख़िर में उससे इन्कार कर बैठो ताकि वे (इस्लाम से) फिर जाएँ।''

وَقَالَتْ طَّآىِٕفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِیْۤ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْۤا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ۝

७३- और आप अपने दीन के मानने वालों (अनुयाइयों) के अ़लावा किसी पर यक़ीन न कीजिए, कह दीजिए, ''हिदायत (मार्गदर्शन) तो अल्लाह की हिदायत (मार्गदर्शन) हैं, यह सब उस गुस्सा की वजह से कर रहे है, कि किसी और को भी वह चीज़ मिल गई, जो तुम्हें मिली थी; या वह लोग तुम पर तुम्हारे रब के यहाँ ग़ालिब आ जाएँ।'' कह दीजिए, ''फ़ज़्ल अल्लाह ही के हाथ में हैं, 'वह' जिसे जो चाहे अता करता है, और अल्लाह बड़ी वुसअत (समाई) वाला, सब कुछ जानने वाला है।

وَلَا تُؤْمِنُوْۤا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِیْنَكُمْؕ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِۙ اَنْ یُّؤْتٰۤى اَحَدٌ مِّثْلَ مَاۤ اُوْتِیْتُمْ اَوْ یُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْؕ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِیَدِ اللّٰهِۚ یُؤْتِیْهِ مَنْ یَّشَآءُؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ۝ۚۙ

७४- 'वह' जिसे चाहता है अपनी रह़मत से ख़ास कर लेता है और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल (उदारता) वाला है।''

یَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ یَّشَآءُؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِیْمِ۝

७५- और किताब वालों में कुछ तो ऐसे हैं, कि अगर तुम उनके पास एक ढ़ेर अमानत रख दो, तो वह तुम्हें उसे लौटा देंगे, और उनमें कुछ ऐसे हैं कि अगर तुम एक दीनार भी उनकी अमानत में रखो, तो जब तक कि हर समय तुम उनके सिर पर सवार न रहो, वह उसे तुम्हें अदा नहीं करेंगे, यह इसलिए कि वे कहते हैं, '' उन उम्मियों के बारे में (जो किताब वाले नहीं हैं,) हमारी कोई पकड़ नहीं,'' और ये जानते बूझते अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं,''

وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ یُّؤَدِّهٖۤ اِلَیْكَۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِیْنَارٍ لَّا یُؤَدِّهٖۤ اِلَیْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَیْهِ قَآىِٕمًاؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَیْسَ عَلَیْنَا فِی الْاُمِّیّٖنَ سَبِیْلٌۚ وَیَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ یَعْلَمُوْنَ۝

७६- जो व्यक्ति भी अपने अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करे और (अल्लाह से) डरे, तो अल्लाह डरने वालों को दोस्त रखता है।

بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُتَّقِیْنَ۝

७७- जो लोग अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों को थोड़ी सी क़ीमत पर बेच डालते हैं, यह वही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं; और अल्लाह क़ियामत के दिन न उन से बात करेगा, और न उनकी ओर देखेगा और न उन्हें पाक करेगा, और उनके लिए तो दर्दनाक अ़ज़ाब है;

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا
قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا
يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا
يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

७८- और उन्हीं में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो किताब (तौरेत) पढ़ते हुए अपनी ज़बानों को इस तरह उलट फेर करते हैं, ताकि तुम समझो कि वह किताब ही में से है, जबकि वह किताब में से नहीं होता, और वे कहते हैं, '' यह अल्लाह की ओर से है, जबकि वह अल्लाह की ओर से नहीं होता, और वे जानते बूझते झूठ गढ़कर अल्लाह पर थोपते हैं।''

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوُونَ أَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتَابِ
لِتَحْسَبُوهُ مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ
وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝

७९- किसी आदमी से यह नहीं हो सकता कि अल्लाह तो उसे किताब और हिकमत और नबूव्वत अ़ता करे और वह लोगों से यह कहने लगे, ''तुम अल्लाह को छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ,'' बल्कि वह तो यही कहेगा, ''तुम रब वाले बन जाओ, इसलिए कि तुम किताब पढ़ाते हो, और खुद भी उसे पढ़ते हो,''

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ
وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِي مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ كُونُوا رَبَّانِيِّينَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ
الْكِتَابَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ۝

८०- और न वह तुम्हें इस बात का हुक्म देगा कि तुम फ़रिश्तों और नबियों को अपना रब बना लो, क्या वह तुम्हें कुफ्र (अधर्म) का हुक्म देगा, जबकि तुम इस्लाम ला चुके हो?

وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا
أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝

८१- और (याद करो) जब अल्लाह ने नबियों से अ़हद (वचन) लिया, ''जब मैं तुमको किताब और हिकमत अ़ता करूँ उसके बाद तुम्हारे पास कोई रसूल उस की तस्दीक़ करता हुआ आए, जो तुम्हारे पास मौजूद है, तो तुम ज़रूर उस पर ईमान लाओगे और ज़रूर उसकी मदद करोगे,'' (फिर) फ़रमाया, ''क्या तुमने इक़रार किया? और इस पर मेरी ओर से डाली हुई जिम्मेंदारी का बोझ उठाया?'' उन्होंने कहा, ''हमने इक़रार किया,'' फ़रमाया, ''तो गवाह रहना, और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ;''

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْتُكُمْ مِنْ
كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ لِمَا
مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ
وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِي قَالُوا أَقْرَرْنَا قَالَ
فَاشْهَدُوا وَأَنَا مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝

८२- फिर जो कोई इसके बाद भी फिरेगा तो ऐसे ही लोग नाफ़रमान होंगे।''

فَمَنْ تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝

८३- क्या यह लोग अल्लाह के दीन के सिवा (किसी और तरीक़े को) तलाश रहे हैं, हाँलाकि आसमान व ज़मीन में जो कुछ भी है, इच्छा से हो या मजबूरी से 'उसी' के फ़रमाँबरदार हैं, और 'उसी' की ओर सबको लौटना है।

أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ

८४- कह दीजिए, ''हम अल्लाह पर ईमान रखते हैं, और उस पर जो हमारे ऊपर उतारा गया है; और उस पर जो इब्राहीम (अलै०), और इस्माईल (अलै०), और इस्हाक़ (अलै०) और याक़ूब (अलै०), और (उनकी) औलाद पर उतारा गया है; और उस पर जो मूसा(अलै०), और ईसा (अलै०), और (दूसरे) नबियों को दिया गया; उनके रब की ओर से; हम उनमें से किसी में कुछ फ़र्क़ नहीं करते, और हम तो उसी (अल्लाह) के फ़रमाँबरदार (अनुयाई) हैं।''

قُلْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ عَلَىٰ إِبْرٰهِيمَ وَإِسْمٰعِيلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ

८५- और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करेगा, तो वह उससे हरगिज़ क़ुबूल नहीं किया जाएगा, और वह व्यक्ति आख़िरत में बड़ा घाटा उठाने वालों में से होगा।

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِينَ

८६- अल्लाह कैसे ऐसे लोगों को हिदायत देगा, जिन्होंने ईमान के बाद कुफ़्र किया, और (जबकि) शहादत दे चुके थे कि रसूल ह़क़ पर हैं, और (इसके बाद) उनके पास खुली हुई निशानियाँ भी आ चुकी थीं, और अल्लाह (ऐसे) ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देता;

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ

८७- उन लोगों की सज़ा यह है, कि उन पर अल्लाह की, और फ़रिश्तों की, और तमाम इन्सानों की लानत हो;

أُولٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللَّهِ وَالْمَلٰئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ

८८- वह इसमें हमेशा पड़े रहने वाले हैं, न उन पर से अ़ज़ाब हल्का किया जाएगा, और न उन्हें मुहलत दी जाएगी;

خٰلِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ

८९- हाँ, जो लोग उसके बाद तौबः कर लें, और (अपने को) ठीक कर लें, तो अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

९०- बेशक जिन्होंने ईमान लाने के बाद कुफ़्र (इन्कार) किया, फिर कुफ़्र में बढ़ते रहे, उनकी तौबः हरगिज़ क़ुबूल न की जाएगी, और यही लोग गुमराह हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ وَأُولٰئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ مِلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ افْتَدَىٰ بِهِ ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝

९१- जिन लोगों ने कुफ़्र किया और उसी कुफ़्र की ह़ालत में मर गये तो उनमें से किसी से ज़मीन भरकर भी सोना (जान छुड़ाने के लिए) बदले में कुबूल नहीं किया जाएगा, यही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है, और जिनका कोई भी मदद्गार न होगा।

पारा नं०-४

* لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّىٰ تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۝

९२- तुम नेकी के दर्जे को नहीं पहुँच सकते, जब तक कि उन चीज़ों को (अल्लाह के रास्ते में) खर्च न करो, जो तुम्हें मह़बूब हैं, और जो चीज़ भी तुम खर्च करते हो, अल्लाह उसको खूब जानता है।

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِبَنِي إِسْرَائِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسْرَائِيلُ عَلَىٰ نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرَاةُ ۗ قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَاةِ فَاتْلُوهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

९३- खाने की तमाम चीज़ें बनी इस्राईल के लिए ह़लाल थीं, सिवाय उन चीज़ों के जिन्हें तौरात के उतरने से पहले इस्राईल ने खुद अपने लिए ह़राम कर लिया था, कह दीजिए, ''तो तौरात लाओ फिर उसे पढ़ो अगर तुम सच्चे हो।''

فَمَنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

९४- तो जो व्यक्ति इसके बाद भी झूठी बात अल्लाह से जोड़े, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं।

قُلْ صَدَقَ اللَّهُ ۗ فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

९५- कह दीजिए, ''अल्लाह ने सच बात फ़रमा दी है, तो तुम सीधी राह वाले इब्राहीम के दीन की पैरवी (अनुसरण)करो, और वह मुश्रिकों में से न थे।''

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِلْعَالَمِينَ ۝

९६- पहला घर (कअ़्बः) जो लोगों (की इबादत) के लिए बनाया गया था वही है जो मक्का में है, बरकत वाला और सारी दुनिया के लिए हिदायत (रहनुमा) है;

فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مَقَامُ إِبْرَاهِيمَ ۖ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا ۗ وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ۝

९७- इसमें खुली हुई निशानियां हैं, मक़ामे इब्राहीम (इब्राहीम के खड़े होने की जगह), और जो व्यक्ति इसमें दाख़िल हुआ, वह अम्न में हो गया, और लोगों पर अल्लाह का ह़क़ (फ़र्ज़) है कि जो इस घर तक जाने की क़ुदरत रखे, वह इसका ह़ज करे, और जो कोई इन्कार करे, तो अल्लाह सारे संसार वालों से बेनियाज़ (निस्पृह) है।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ۝

९८- कह दीजिए, ''ऐ अह्ले किताब! तुम क्यों अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हो? और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह गवाह है।''

९९- कह दीजिए, "ऐ अह्ले किताब! जो ईमान ला चुके, उन्हें तुम क्यों अल्लाह की राह से हटा रहे हो? इस राह में ऐब निकाल कर, ऐसी हालत में कि तुम खु़द गवाह हो, और अल्लाह तुम्हारे करतूतों से बेख़बर नहीं!"

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّ اَنْتُمْ شُهَدَآءُ ۭ وَمَا
اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

१००- ऐ ईमान वालो ! अगर तुम ने इन में से किसी गिरोह का कहना माना जिन्हें किताब दी जा चुकी है, तो वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद तुम्हें काफ़िर बना देंगे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ
كٰفِرِيْنَ ۝

१०१- और तुम किस तरह कुफ़्र कर सकते हो ऐसी ह़ालत में कि तुम्हें अल्लाह की आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, और तुम्हारे बीच उसके रसूल मौजूद हैं और जो कोई अल्लाह को मज़बूत पकड़ता है, वह ज़रूर सीधी राह की ओर हिदायत किया जाता है।

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ
وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ۭ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

१०२- ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, जैसा कि उससे डरने का ह़क़ है, और न मरना सिवाय इस ह़ाल में कि तुम मुस्लिम हो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا
تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝

१०३- और अल्लाह की रस्सी (क़ुर्आन) को सब मिलकर मज़बूत थामे रहो, और आपसी विभेद में न पड़ो, और अल्लाह का यह इनआ़म अपने ऊपर याद करो, 'कि जब तुम आपस में दुश्मन थे, तो 'उसने' तुम्हारे दिलों में मुह़ब्बत डाल दी; तो तुम उसकी मेहरबानी से (आपस में) भाई-भाई बन गये; और तुम आग के गढ़े के किनारे तक पहुँच चुके थे, तो 'उसने' तुम्हें उससे बचा लिया, इसी तरह अल्लाह अपने हुक्मों को खोल-खोल कर सुनाता रहता है, ताकि तुम राह पा सको।

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠
وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ
بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ
عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ۭ كَذٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝

१०४- और तुममें एक ऐसी जमाअ़त (समूह) रहे, जो लोगों को नेकी की ओर बुलाए और भलाई का हुक्म दे, और बुराई से रोके और यही लोग कामियाब होने वाले हैं।

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَ
يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ
وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

१०५- और उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने बाद इसके कि उनके पास खुली हुई निशानियाँ आ चुकी थीं, आपस में ही विभेद कर लिया, और अलग-अलग हो गये, और यह वह लोग हैं जिनको बड़ा अ़ज़ाब होगा।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ
مَا جَاۗءَھُمُ الْبَيِّنٰتُ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ لَھُمْ عَذَابٌ
عَظِيْمٌ ۝

१०६- उस दिन कुछ चेहरे सफेद होंगे, और कुछ चेहरे स्याह होंगे, फिर जिनके चेहरे स्याह होंगे, (उनसे कहा जाएगा) क्या तुम ही काफ़िर हो गये थे, ईमान लाने के बाद? तो अ़ज़ाब चखो, अपने कुफ़्र के बदले में;

يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۣ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝

१०७- और जिनके चेहरे सफेद होंगे, वे अल्लाह की रह़मत में होंगे और उसी में हमेशा रहेंगे।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ۭ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

१०८- यह अल्लाह की अयातें है, जो हम तुमको ठीक-ठीक पढ़कर सुनाते हैं, और अल्लाह संसार वालों पर किसी तरह का ज़ुल्म नहीं करना चाहता।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۭ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

१०९- और अल्लाह ही का है जो कुछ ज़मीन व आसमान में है, और सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटाए जाते हैं।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝

११०- तुम बेहतरीन उम्मत (समुदाय) हो जो लोगों के लिए पैदा की गयी हो कि तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो, और अल्लाह पर ईमान रखते हो; और अह्ले किताब भी, अगर ईमान ले आते, तो उनके लिए बहुत अच्छा होता, उनमें से कुछ तो ईमान वाले हैं, और अक्सर उनमें से नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हैं;

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۭ وَلَوْ اٰمَنَ اَھْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّھُمْ ۭ مِنْھُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُھُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝

१११- वह आप को थोड़ी तकलीफ़ के अ़लावा कोई नुक़सान न पहुँचा सकेंगे, और अगर वह आपसे मुक़ाबला करेंगे तो पीठ दिखा कर भाग जाएँगे, फिर उन्हें कोई मदद भी न मिलेगी।

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ۭ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝

११२- उन पर थोप दी गई है ज़िल्लत (अपमान) जहाँ भी वे पाये जाएँ, सिवाय इसके कि वे अल्लाह और (मुसलमान) लोगों की पनाह में आ जाएँ। और अल्लाह के ग़ज़ब के ह़क़्दार हो गये हैं, और उन पर मस्किनत (भुखमरी या नादारी) थोप दी गयी है, यह सब इस वजह से हुआ है, कि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे, और नबियों को नाहक़ क़त्ल कर डालते थे, और यह इसलिए कि वह नाफ़रमानी करते, और सीमा से बाहर निकल जाते थे;

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَاۗءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّھُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَاۗءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۭ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝

११३- यह भी सब एक जैसे नहीं हैं, किताब वालों में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो सीधी राह पर हैं और रात के वक़्त अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और सज्दे करते हैं;

لَيْسُوْا سَوَاۗءً ۭ مِنْ اَھْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَاۗىِٕمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَاۗءَ الَّيْلِ وَھُمْ يَسْجُدُوْنَ ۝

يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَأُولَٰئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ

११४- यह अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते और भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते और अच्छी बातों की ओर दौड़ते हैं, और यही भले लोगों में से है;

وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَن يُكْفَرُوهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ

११५- और जो भी नेक काम यह करेंगे, उससे हरगिज़ महरूम न किये जाएँगे, और अल्लाह परहेज़गारों को खूब जानता है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

११६- रहे वे लोग जिन्होंने इन्कार किया,तो अल्लाह के मुक़ाबले में न उनके माल उनके कुछ काम आ सकेंगे, और न उनकी औलाद ही, और ये तो आग में जाने वाले लोग हैं उसी में वे हमेशा रहेंगे;

مَثَلُ مَا يُنفِقُونَ فِي هَٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

११७- यह जो कुछ इस दुनियावी ज़िन्दगी में खर्च करते हैं उसकी मिसाल तो ऐसी है, जैसे एक हवा है, जिसमें सख्त सर्दी हो, (और) वह ऐसे लोगों की खेती को लग जाए जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रखा है, फिर वह (हवा) उस (खेती) को बरबाद कर दे, और अल्लाह ने उस पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بِطَانَةً مِّن دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ

११८- ऐ ईमान वालो! अपनों के सिवा (किसी को) राज़दार (दोस्त) न बनाना! ये लोग तुम्हें नुक़्सान पहुँचाने में कोई कमी नहीं करते; और चाहते हैं कि तुम्हें तकलीफ़ पहुँचे, उनकी ज़बानों से तो दुश्मनी ज़ाहिर हो ही चुकी, और जो कुछ वे अपने सीनों में छिपाए हुए हैं वह तो इससे भी बढ़कर है, हम तो तुम्हारे लिए निशानियाँ खोलकर ज़ाहिर कर चुके हैं, अगर तुम अक़्ल (से काम लेने) वाले हो;

هَا أَنتُمْ أُولَاءِ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ وَإِذَا لَقُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ

११९- देखो, तुम ऐसे लोग हो, कि उन लोगों से मुहब्बत रखते हो; हालाँकि वे तुमसे ज़रा भी मुहब्बत नहीं रखते, और तुम (आसमानी) किताबों पर ईमान रखते हो, और जब तुमसे मिलते हैं तो कह देते हैं, ''हम ईमान ले आए,'' और जब वे

الصُّدُوْرِ ﴿١١٩﴾

अलग होते हैं, तो तुमपर गुस्से में दाँतों से उँगलियाँ काट-काट खाते हैं, कह दीजिए, ''तुम अपने गुस्से में मर जाओ, बेशक अल्लाह सीने की बातों को खूब जानता है,''

اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۡ وَاِنْ تُصِبْكُمْ
سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ۡ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا
لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ۡ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ
مُحِيْطٌ ﴿١٢٠﴾

१२०- अगर तुम्हें कोई अच्छी ह़ालत पेश आ जाती है, तो ये उन लोगों को बुरी लगती है; और अगर तुम पर कोई बुरी हालत आ पड़ती है, तो ये उससे खुश होते हैं; और अगर तुम सब्र से काम लेते रहो, तो तुमको इनकी चालें ज़रा भी नुक़सान न पहुँचा सकेंगी। बेशक जो कुछ वे कर रहे हैं, अल्लाह ने उसे अपने घेरे में ले रखा है।

وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ
مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۡ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢١﴾

१२१- और (याद कीजिए) जब आप सुब्ह़ को अपने घर वालों (के पास) से निकलकर, ईमान वालों को युद्ध के लिए मोर्चे पर लगा रहे थे- और अल्लाह बड़ा सुनने वाला, जानने वाला है।

اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ
وَلِيُّهُمَا ۡ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٢﴾

१२२- जब तुम्हारे दो गिरोहों ने हिम्मत छोड़ देनी चाही, जबकि अल्लाह उनका वली (संरक्षक) मौजूद था, और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ
فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

१२३- और बद्र में अल्लाह ने तुम्हारी मदद की थी, और उस वक्त तुम बहुत कमज़ोर हालत में थे, तो अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम शुक्र करो।

اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ
رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾

१२४- जब तुम ईमान वालों से कह रहे थे, ''क्या यह तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं है, कि तुम्हारा रब तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद करे।''

بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ
هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ
مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٥﴾

१२५- हाँ, क्यों नहीं, अगर तुम सब्र से काम लो और डर रखो, और दुश्मन तुम पर अचानक चढ़ आएँ, तो तुम्हारा रब तुम्हारी उसी वक्त पाँच हज़ार निशान किये हुए फ़रिश्तों से मदद करेगा;

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ
قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۡ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ
الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١٢٦﴾

१२६- और अल्लाह ने तो इसे तुम्हारे लिए खुशख़बरी बताया और इसलिए कि तुम्हारे दिल मुतमइन (सन्तुष्ट) हो जाएं, वरना मदद तो अल्लाह ही के यहां से आती है, जो ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाला है;

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ۝

१२७- ताकि कुफ़्र करने वालों के एक हिस्से को काट डाले, या उन्हें बुरी तरह नाकाम और बेइज़्ज़त कर दे, कि वे नाकाम हो कर लौट जाएँ।

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝

१२८- आप को इस मामले में कोई ह़क़ नहीं, चाहे 'वह' उनकी तौबः कुबूल करे या उन्हें अ़ज़ाब दे, इसलिए कि यह ज़ालिम लोग हैं;

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

१२९- और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है, 'वह' जिसे चाहे माफ़ करे और जिसे चाहे अ़ज़ाब दे, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰٓوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۠ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

१३०- ऐ ईमान वालो! सूद (ब्याज) कई गुना (दोगुना चौगुना) बढ़ा कर न खाओ, और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम कामियाब हो जाओ।

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۝

१३१- और उस आग से बचो, जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝

१३२- और अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म को मानो, ताकि तुम पर रह़म (दया) किया जाए।

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝

१३३- और अपने रब की माफ़ी और उस जन्नत की ओर दौड़ो, जिसका फैलाव सारे आसमान और ज़मीन जैसा है, जो डरने वालों के लिए तैयार की गई है,

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

१३४- जो खुशह़ाली और तंगी हर हाल में खर्च करते हैं, और गुस्से को रोकते हैं, और लोगों को माफ़ करते हैं, और अल्लाह नेक लोगों को पसंद करता है।

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۠ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ڝ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰي مَا فَعَلُوْا وَھُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝

१३५- और यह कि जब वे कोई खुला गुनाह या अपने आप पर ज़ुल्म कर लेते हैं तो अल्लाह को याद करते हैं और वे अपने गुनाहों की माफ़ी माँगते हैं, और अल्लाह के अ़लावा कौन है जो गुनाहों को माफ़ कर सके, और जानते बूझते वे अपने किये पर अड़े नहीं रहते;

أُولَٰٓئِكَ جَزَآؤُهُم مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّٰتٌ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۚ وَنِعْمَ أَجْرُ ٱلْعَٰمِلِينَ ﴿١٣٦﴾

१३६- उनका बदला उनके रब की ओर से मग़्फ़िरत (क्षमादान) है, और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे, और क्या ही अच्छा बदला है (अच्छे) अ़मल करने वालों का!

قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ فَٱنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٣٧﴾

१३७- तुम लोगों से पहले बहुत से किस्से गुज़र चुके हैं, तो तुम धरती पर चल फिर कर देखो, कि झुठलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ!

هَٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٨﴾

१३८- यह लोगों के लिए (खुला) बयान, और डरने वालों के लिए हिदायत और नसीहत है।

وَلَا تَهِنُوا۟ وَلَا تَحْزَنُوا۟ وَأَنتُمُ ٱلْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

१३९- और न हिम्मत हारो और न दुखी हो, तुम ही ग़ालिब (प्रभावी) रहोगे, अगर तुम ईमान वाले होगे।

إِن يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ ٱلْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُۥ ۚ وَتِلْكَ ٱلْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ ٱلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَيَتَّخِذَ مِنكُمْ شُهَدَآءَ ۗ وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١٤٠﴾

१४०- अगर तुम्हें कोई ज़ख़्म पहुँचा है, तो उन लागों को भी ऐसा ज़ख़्म पहुँच चुका है, और यह (युद्ध के) दिन हैं, कि हम लोगों में उलट फेर करते रहते हैं, ताकि ईमान वालों को जान लें! और तुम में से कुछ को गवाह बनाएँ और अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता;

وَلِيُمَحِّصَ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَيَمْحَقَ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿١٤١﴾

१४१- और ताकि अल्लाह ईमान वालों को निखार दे, और काफ़िरों (इन्कार करने वालों) को मिटा दे।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا۟ ٱلْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ جَٰهَدُوا۟ مِنكُمْ وَيَعْلَمَ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴿١٤٢﴾

१४२- क्या तुम यह समझते हो कि जन्नत में यूं ही जा दाख़िल होगे, हालाँकि अभी अल्लाह ने तुम में से जिहाद करने वालों को तो अच्छी तरह मालूम किया ही, नहीं और (यह कि) वह साबित क़दम रहने वालों को मालूम करे।

وَلَقَدْ كُنتُمْ تَمَنَّوْنَ ٱلْمَوْتَ مِن قَبْلِ أَن تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ﴿١٤٣﴾

१४३- और तुम मौत (शहादत) के आने से पहले उसकी तमन्ना किया करते थे, उसको तो अब तुमने खुली आँखों से देख लिया।

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ ٱلرُّسُلُ ۚ أَفَإِي۟ن مَّاتَ أَوْ قُتِلَ ٱنقَلَبْتُمْ عَلَىٰٓ أَعْقَٰبِكُمْ ۚ وَمَن يَنقَلِبْ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ فَلَن يَضُرَّ ٱللَّهَ شَيْـًٔا ۗ وَسَيَجْزِى ٱللَّهُ ٱلشَّٰكِرِينَ ﴿١٤٤﴾

१४४- और मुहम्मद तो बस एक रसूल हैं, इनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं; तो क्या अगर यह वफ़ात (मृत्यु) पा जाएँ, या क़त्ल कर दिये जाएँ, तो (क्या) तुम उल्टे पाँव वापस फिर जाओगे? और जो उल्टे पाँव फिर जाएगा, तो वह अल्लाह का कुछ भी नुक़सान नहीं कर सकेगा, और अल्लाह शुक्रगुज़ारों को जल्द बदला देगा।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ۝

१४५- और मुम्किन (सम्भव) नहीं किसी जानदार के लिए कि वह एक निश्चित समय पर अल्लाह के हुक्म के बिना मर जाए; और जो व्यक्ति दुनिया का फ़ायदा चाहता हो 'हम' उसको यहीं बदला दे देंगे, और जो आख़िरत का फ़ायदा चाहता हो तो उसे वहाँ हिस्सा देंगे, और 'हम' शुक्र करने वालों को बहुत जल्द बदला देंगे।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِىٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَاۤ اَصَابَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۝

१४६- और कितने ही नबी ऐसे गुज़रे हैं, जिनके साथ मिलकर बहुत से अल्लाह वाले लड़े हैं, तो जो कुछ उन्हें अल्लाह की राह में पेश आया, उससे न तो उन्होंने हिम्मत हारी, और न वह कमज़ोर पड़े, और न वह दबे; और अल्लाह सब्र करने वालों से मुहब्बत करता है।

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِىْۤ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

१४७- और उनका कहना तो बस इतना ही था, ''ऐ हमारे रब! हमारे गुनाहों को, और हमारे अपने मामले में जो ज़्यादती हमसे हुई हो, उसे माफ़ कर दे और हमारे क़दम जमाए रख, और काफ़िरों (इन्कारियों) के मुक़ाबले में हमारी मदद कर,''

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

१४८- तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया में भी बदला दिया, और आख़िरत में भी अच्छा बदला, और अल्लाह भलाई करने वालों से मुहब्बत रखता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝

१४९- ऐ ईमान वालो! अगर तुम उन लोगों का कहना मानोगे जो काफ़िर (इन्कार वाले) हैं, तो वे तुम्हें उल्टे पाँव वापस कर देंगे, और तुम घाटे में पड़ जाओगे;

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ۝

१५०- बल्कि तुम्हारा दोस्त तो अल्लाह ही है और वही सबसे अच्छा मददगार है।

سَنُلْقِىْ فِىْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۝

१५१- हम बहुत जल्द काफ़िरों (इन्कारियों) के दिलों में रोअ़ब (धाक) डाल देंगे, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह का शरीक ऐसी चीज़ को ठहराया, जिसके लिए 'उसने' कोई दलील (प्रमाण) नहीं उतारी; और उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह कैसी बुरी जगह है ज़ालिमों के लिए।

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا

१५२- और अल्लाह ने तो तुम्हें अपना वादा सच्चा कर दिखाया, उस समय जबकि तुम 'उसकी' इजाज़त से उन्हें क़त्ल कर रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम हिम्मत हार गये और आपस में झगड़ने लगे,

تُحِبُّوْنَ ۚ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۗ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

ह़क़ (रसूल) के मामले में, और नाफ़रमानी की, बाद उसके कि अल्लाह ने तुम्हें दिखा दिया था जो तुम चाहते थे; तुममें कुछ लोग वह थे, जो दुनिया चाहते थे; और तुम में कुछ ऐसे थे जो आख़िरत चाहते थे; फिर अल्लाह ने तुम्हें उनके मुकाबले से हटा दिया, ताकि वह तुम्हारी आज़माइश करे; और अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया, और अल्लाह ईमान वालों पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है।

اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰٓى اَحَدٍ وَّ الرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّاۢ بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَآ اَصَابَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝

१५३- जब तुम लोग दूर भागे जा रहे थे और मुड़कर भी किसी को न देखते थे, और रसूल तुम को पुकार रहे थे तुम्हारे पीछे से, तो (अल्लाह ने) तुम्हें ग़म पर ग़म पहुँचाया, ताकि तुम रंजीदा न हो उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से निकल जाए, और न उस मुसीबत से जो तुम पर पड़े, और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको खूब जानता है।

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۗ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۗ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ۗ يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ۗ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ۗ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

१५४- फिर 'उसने' उस ग़म के बाद तुम्हारे ऊपर राहत उतारी (अर्थात) नींद की जिसका तुम में से एक जमाअ़त पर क़ाबू हो रहा था, और एक जमाअ़त वह थी, कि उसे अपनी जानों की पड़ी हुई थी, यह अल्लाह के बारे में ह़क़ के ख़िलाफ़ जाहिलियत के ख़याल में पड़ रहे थे, कहते थे; ''इन मामलों में क्या हमारा भी कुछ अख़्तियार (अधिकार) है?'' कह दीजिए, ''बेशक मामले तो सब के सब अल्लाह के (हाथ में) हैं,'' ये लोग जो कुछ अपने दिलों में छिपाये रखते हैं, जो आप पर ज़ाहिर नहीं करते, कहते हैं, ''अगर इस मामले में हमारा भी कुछ अख़्तियार होता तो हम यहाँ मारे ही न जाते।'' कह दीजिए, ''अगर तुम अपने घरों में भी होते तो भी जिन लोगों का क़त्ल होना तय था, वह अपनी क़त्लगाहों की ओर निकल ही आते,'' और यह इसलिए भी था, कि जो कुछ तुम्हारे सीनों में है अल्लाह उसे परख ले, और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे साफ़ कर दे, और अल्लाह दिलों का ह़ाल खूब जानता है।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝

१५५- तुममें से जो लोग उस दिन फिर गये थे, जिस दिन कि दोनों गिरोह आपस में आमने-सामने थे (तो यह तो बस इस वजह से हुआ) कि शैतान ने उन्हें उनके कुछ करतूतों की वजह से फ़िसला (विचलित कर) दिया था, और अल्लाह तो उन्हें माफ़ कर चुका है, बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला,

बर्दाश्त करने वाला (सहनशील) है।

१५६- ऐ ईमान वालो! उन लोगों की तरह न हो जाना, जिन्होंने इन्कार किया और अपने भाइयों के बारे में कहते हैं जबकि वह ज़मीन पर सफ़र करते हैं या कहीं जंग करने जाते हैं (तो कहते हैं) "अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते, और न मारे जाते," इसकी वजह यह थी कि अल्लाह तआ़ला उनके दिलों में अफ़सोस पैदा कर दे, और अल्लाह ही जिलाता और मारता है, और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उसे खूब देख रहा है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِى الْاَرْضِ اَوْ
كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا
قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ
وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

१५७- और अगर तुम अल्लाह की राह में क़त्ल किये जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की मग़्फ़िरत (क्षमा) और उसकी रह़मत, उस से कहीं बेहतर है, जिसे यह लोग जमा कर रहे हैं;

وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ
اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝

१५८- और अगर तुम मर जाओ या मारे जाओ तो हर हाल में तुम अल्लाह ही के पास इकट्ठा किये जाओगे।

وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ۝

१५९- फिर यह अल्लाह की रह़मत से है कि आप उनके साथ नर्म हो रहे हैं, और अगर आप तेज़ मिज़ाज (क्रूर स्वभाव) सख़्त दिल होते, तो यह आपके पास से हट गये होते, तो आप उनको माफ़ कर दीजिए और उनके लिए इस्तिग़फ़ार करिए और अपने मामलों में सलाह लिया कीजिए, फिर जब आप पक्का इरादा कर लें, तो अल्लाह पर भरोसा रखिए, बेशक अल्लाह पसंद करता है (उस पर) भरोसा रखने वालों को।

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا
غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ
عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِى الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا
عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُتَوَكِّلِيْنَ ۝

१६०- अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर ग़ालिब (प्रभावी) नहीं हो सकता, और अगर 'वह' तम्हें छोड़ दे, तो फिर कौन है जो उसके बाद तुम्हारी मदद करे? और ईमान वालों को तो अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ
يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ بَعْدِهٖ ۗ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝

१६१- और किसी नबी की यह शान नहीं कि वह दिल में कीना-कपट रखे, और जो कोई कीना कपट रखेगा, तो वह क़ियामत के दिन अपने कीना-कपट के साथ हाज़िर होगा, फिर हर व्यक्ति को उसके किये हुए का पूरा -पूरा बदला मिलेगा, और उन पर बिल्कुल ज़ुल्म न होगा।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ۚ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ
بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا
كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝

१६२- क्या जो व्यक्ति अल्लाह की इच्छा पर चले, वह उस

اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَاۤءَ بِسَخَطٍ مِّنَ

اللهِ وَمَأْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾

व्यक्ति जैसा हो सकता है जो अल्लाह के ग़ज़ब (प्रकोप) का भागीदार हो चुका हो, और उसका ठिकाना जहन्नम है? और वह क्या ही बुरा ठिकाना है?

هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللهِ ۗ وَاللهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾

१६३- अल्लाह के यहाँ उन लोगों के (अलग- अलग) दर्जे हैं, और जो कुछ वे कर रहे हैं अल्लाह खूब जानता है।

لَقَدْ مَنَّ اللهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾

१६४- (बेशक) अल्लाह ने ईमान वालों पर बड़ा एहसान किया, जबकि उन्हीं में से एक रसूल उनमें भेजा, जो उनको 'उसकी' आयतें पढ़कर सुनाता, और उन्हें पाक करता है, और उन्हें किताब और हिकमत की तालीम देता है; और पहले तो यह लोग खुली हुई गुमराही में थे।

اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ۗ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ۗ اِنَّ اللهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾

१६५- क्या जब तुम्हें ऐसी मुसीबत उठानी पड़ी हाँलाकि इससे दोगुनी मुसीबत तुम (अपने विरोधी पर) डाल चुके थे, तो तुम कहने लगे, ''यह आफ़त कहाँ से आ गई?'' कह दीजिए, ''यह तो तुम्हारी अपनी ओर से है,'' बेशक अल्लाह को तो हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थ्य) है।

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾

१६६- और जो मुसीबत तुम पर उस रोज़ पड़ी,जबकि दोनों गिरोह आपस में आमने-सामने थे, तो वह अल्लाह के हुक्म से था, ताकि 'वह' जान लें कि ईमान वाले कौन हैं?

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ اَوِ ادْفَعُوْا ۗ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ۗ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ وَاللهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿١٦٧﴾

१६७- और उनको भी जान ले जिन्होंने मुनाफ़िक़त (कप्टाचारी) अख़्तियार की, जिनसे कहा गया, ''आओ अल्लाह की राह में लड़ो या दुश्मनों को हटाओ'' उन्होंने कहा, ''अगर हम जानते कि लड़ाई होगी, तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ हो लेते।'' यह लोग उस रोज़ ईमान से ज़्यादा कुफ़्र के क़रीब थे, यह अपने मुँह से ऐसी बात कहते हैं, जो उनके दिलों में नहीं, और जो कुछ ये छिपाते हैं अल्लाह उसे ख़ूब जानता है;

اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ۗ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٦٨﴾

१६८- ये खुद तो बैठे रहे, और अपने भाइयों के विषय में कहने लगे, ''अगर वह हमारी बात मान लेते, तो मारे न जाते,'' कह दीजिए, ''अगर तुम सच्चे हो तो अपने आप को मौत से बचा लेना।''

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ
بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ

१६९- और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये उन्हें मुर्दा न समझो, बल्कि वे अपने रब के पास ज़िन्दा हैं, और रिज़्क़ पाते रहते हैं;

فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ
بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

१७०- उन नेअमतों से खुश हैं, जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अता की हैं, और जो लोग उनके बाद वालों से अभी नहीं मिल सके हैं उनकी इस ह़ालत से खुश हैं कि उनको न कुछ डर होगा और न वे दुखी होंगे।

يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ وَأَنَّ
اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ

१७१- वे (लोग) खुश हो रहे हैं अल्लाह के इन्अ़ाम और मेहरबानी पर, और इस पर कि अल्लाह ईमान वालों का बदला बर्बाद नहीं करता।

الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا
أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ
وَاتَّقَوْا أَجْرٌ عَظِيمٌ

१७२- जिन्होंने अल्लाह और रसूल के कहने को मान लिया, बाद इसके कि उन्हें ज़ख़्म लग चुका था, जो लोग इनमें से नेक और परहेज़गार हैं, उनके लिए भारी बदला है

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا
لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا
اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ

१७३- (ये 'वही' लोग हैं) जिनसे लोगों ने कहा, ''तुम्हारे ख़िलाफ़ लोग इकट्ठा हो गये हैं, तो तुम उनसे डरो।'' तो (इस बात ने) उनके ईमान का जोश और बढ़ गया, और यह बोले, ''हमारे लिए तो बस अल्लाह काफ़ी है और वही बेहतरीन कारसाज़ (कार्य करने वाला) है,''

فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَمْ يَمْسَسْهُمْ
سُوءٌ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ

१७४- फिर वे अल्लाह के इन्अ़ाम व मेहरबानी (कृपा) के साथ वापस आए, कि उन्हें कोई तकलीफ़ नहीं हुई, और वे लोग अल्लाह की इच्छा पर चले, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला (उद्धार कृपालु) है।

إِنَّمَا ذَٰلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ فَلَا تَخَافُوهُمْ
وَخَافُونِ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

१७५- फिर यह तो शैतान ही है जो तुम्हें अपने दोस्तों के ज़रिये डराता है, सो तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझ ही से डरो; अगर ईमान वाले हो।

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ ۚ إِنَّهُمْ
لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۗ يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ
لَهُمْ حَظًّا فِي الْآخِرَةِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

१७६- और आप दुखी न हों (उनकी वजह से कि) जो लोग कुफ़्र में जल्दी करते हैं, ये लोग अल्लाह को कुछ भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकते, अल्लाह चाहता है कि उनके लिए आख़िरत

में कोई हिस्सा न रखे, और उनके लिए तो बड़ा अ़ज़ाब है

१७७- जिन लोगों ने ईमान की क़ीमत पर कुफ़्र को खरीद लिया, वे अल्लाह को कुछ भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकते, और उन्हीं को दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٧﴾

१७८- और जो लोग इन्कार कर रहे हैं, यह न ख़याल करें कि 'हम' जो उन्हें मुहलत दे रहे हैं, तो यह उनके हक़ में बेहतर है, 'हम' तो उन्हें बस इसलिए मुहलत दे रहे हैं, कि वह बुराई में और बढ़ जाएँ, और उन्हीं के लिए रूसवा करने वाला (अपमान जनक) अ़ज़ाब है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ خَيْرٌ لِأَنْفُسِهِمْ ۚ إِنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ لِيَزْدَادُوا إِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٧٨﴾

१७९- (लोगो) जब तक अल्लाह नापाक को पाक से अलग न कर देगा; मोमिनों को इस ह़ाल में, जिसमें तुम हो हरगिज़ नहीं रहने देगा, और अल्लाह तुम को ग़ैब (परोक्ष) की बातों की भी ख़बर नहीं करेगा; हाँ, अल्लाह अपने रसूलों में से जिसे चाहता है चुन लेता है; तो तुम अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाओ, और अगर ईमान लाओगे और परहेज़गारी करोगे, तो तुम को बड़ा बदला मिलेगा।

مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مِنْ رُسُلِهِ مَنْ يَشَاءُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٩﴾

१८०- और जो लोग उस माल में कंजूसी करते हैं, जिसे अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल (कृपा) से दे रखा है; वह हरगिज़ यह न समझें कि यह उनके लिए अच्छा है, बल्कि यह उनके लिए बुरा है जल्दी उनको क़ियामत के दिन तौंक (हँस्ली) पहनाया जाएगा उस माल का, जिसमें उन्होंने कंजूसी की, और अल्लाह ही वारिस है आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी खूब ख़बर रखता है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا لَهُمْ ۖ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَهُمْ ۖ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١٨٠﴾

१८१- अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन ली है, जिन्होंने कहा, ''अल्लाह फक़ीर है, और हम ग़नी (धनवान) हैं।'' 'हम' लिख रहे हैं उनकी इस बात को, और नबियों को जो यह नाह़क़ क़त्ल करते रहे हैं, और (क़ियामत के दिन) हम कहेंगे, आग के अ़ज़ाब का मज़ा चखो,''

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿١٨١﴾

१८२- यह उस (करतूत) की वजह से हुआ, जो तुम आगे भेज

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ

بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ

चुके हो, और अल्लाह अपने बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता है।

الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا أَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ ۗ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالَّذِي قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ

१८३- (यह वही लोग हैं) जो लोग कहते हैं, "अल्लाह ने हमें हुक्म दिया है, कि हम किसी पर ईमान न लाएँगे; जब तक कि वह हमारे सामने ऐसी कुर्बानी न पेश करें जिसे आग खा जाए।" कह दीजिए, "तुम्हारे पास पहले कितने ही रसूल खुली निशानियाँ लेकर आ चुके हैं, और वे (रसूल) वह (मोजज़ा) भी लाए थे जिसके लिए तुम कह रहे हो, फिर अगर तुम सच्चे हो तो तुमने उन्हें क़त्ल क्यों किया?"

فَإِن كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ جَاءُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ

१८४- फिर अगर यह लोग तुम को झुठलाते ही रहें, तो तुम से पहले भी कितने ही रसूल झुठलाए जा चुके हैं, जो खुली निशानियां, ज़बूर और रोशन (प्रकाशमान) किताब लेकर आए थे।

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ فَمَن زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۗ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ

१८५- हर जानदार को मौत का मजा़ चखना है, और तुमको तुम्हारी पूरी मज़दूरी तो क़ियामत ही के दिन मिलेगी; तो जो व्यक्ति दोज़ख़ से बचा लिया गया, और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया; तो वह कामियाब हुआ; और दुनिया की ज़िन्दगी तो धोखे के सिवा कुछ नहीं।

لَتُبْلَوُنَّ فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذًى كَثِيرًا ۚ وَإِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ

१८६- तुम्हारे माल और जान से तुम्हारी आज़माइश की जाएगी, और तुम बहुत सी तकलीफ़दे बातें उनसे सुनोगे जिन्हें तुमसे पहले किताब मिल चुकी है; और उनसे भी जो मुश्रिक हैं, और अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी (संयम) अपनाओ तो यह अज़्म (हिम्मत व हौसला) के कामों में से है।

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ فَنَبَذُوهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُونَ

१८७- और (याद करो) जब अल्लाह ने उन लोगों से, जिनको किताब दी गई वादा लिया "किताब को (जो कुछ लिखा है) साफ़-साफ़ बयान करते रहना, और उसे छिपाना नहीं," सो उन्होंने उस वादे को पीठ पीछे डाल दिया, और उसको एक मामूली क़ीमत के बदले बेच डाला; सो कैसी बुरी चीज़ है जिसे वे खरीद रहे हैं।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا أَتَوا وَّيُحِبُّونَ أَن يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُم بِمَفَازَةٍ

१८८- आप उन्हें हरगिज़ यह न समझएगा, कि जो लोग अपने करतूतों पर खुश होते हैं, और चाहते हैं, जो काम नहीं किये

مِّنَ الْعَذَابِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

हैं, उन पर भी उनकी तअ़रीफ़ की जाए; तो ऐसे लोगों के लिए कभी भी ख़याल न करो, कि वह अ़ज़ाब से बचे रहेंगे, और उनके लिए तो दर्दनाक अ़ज़ाब है।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ

१८९- और अल्लाह की हुकूमत है, आसमानों और ज़मीन में, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ
اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ

१९०- बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में और रात-दिन के अदल-बदल में; अक़्ल वालों के लिए (बड़ी) निशानियाँ हैं;

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ
جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَٰذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ
فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

१९१- जो खड़े, बैठे, और अपने पहलुओं पर लेटे (हर हाल में) अल्लाह को याद करते हैं, और आसमानों, और धरती की पैदाइश पर ग़ौर करते हैं, ऐ हमारे रब! 'तू' ने यह सब बेकार नहीं पैदा किया है, 'तू' पाक है; सो बचाए रखिए हमको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से।

رَبَّنَا إِنَّكَ مَن تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ ۖ
وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ

१९२- ऐ हमारे रब! 'तूने' जिसे आग (जहन्नम) में डाला उसे रूसवा किया, और ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

رَّبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ
آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا ۚ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا
وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ

१९३- ऐ हमारे रब! हमने एक पुकारने वाले को ईमान की ओर पुकारते हुए सुना है, ''अपने रब पर ईमान लाओ; तो हम ईमान ले आए; हमारे रब! अब तू हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे, और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर दे, और हमें नेक लोगों के साथ (अर्थात नेकों के तरीक़े पर) मौत दे।

رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدتَّنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ
الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ

१९४- ऐ हमारे रब! जिस चीज़ का वादा 'तूने' अपने रसूलों के ज़रिये किया, वह हमें अता कर, और क़ियामत के दिन हमें रूसवा न करना, बेशक 'तू' अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ
مِّنكُم مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ ۖ بَعْضُكُم مِّن
بَعْضٍ ۖ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِمْ
وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ

१९५- तो उनके रब ने उनकी पुकार सुन ली, 'मैं' तुम में से किसी अ़मल करने वाले के अ़मल को बेकार नहीं करूँगा, चाहे वह मर्द हो या औ़रत, तुम सब आपस में एक दूसरे (की जिन्स या अंश) में से हो; तो जिन लोगों ने हिजरत की और अपने

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ لَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ۝

घरों से निकाले गये, और मेरे रास्ते में सताए गये, और लड़े, और मारे गये; 'मैं' उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर दूगाँ, और उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, यह अल्लाह के पास से उनका बदला होगा, और सबसे अच्छा बदला अल्लाह ही के पास है।

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ۝

१९६- काफ़िरों का शहरों में चलना-फिरना, कहीं तुम्हें धोखे में न डाल दे;

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۟ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ۝

१९७- यह तो बहुत ही थोड़ा (फ़ायदा) है, फिर तो उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ وَ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ۝

१९८- लेकिन जो लोग अपने रब से डरते रहे, उनके लिए ऐसे बाग़ होंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उसमें हमेशा रहेंगे; यह अल्लाह की ओर से (पहली) मेहमानी होगी, और जो कुछ अल्लाह के पास है, वह नेक लोगों के लिए बहुत ही बेहतर है।

وَ اِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

१९९- और किताब वालों में से कुछ ऐसे भी हैं, जो अल्लाह पर और तुम पर जो कुछ उतारा गया है, और जो कुछ उन पर उतारा गया है उस पर ईमान रखते हैं, अल्लाह से डरने वाले हैं, अल्लाह की आयतों का मामूली क़ीमत पर सौदा नहीं करते, यही लोग हैं कि उनका बदला उनके रब के पास ज़रूर मिलेगा, कि अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَ صَابِرُوْا وَ رَابِطُوْا ۟ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

२००- ऐ ईमान वालो! सब्र करो और (मुक़ाबले में) बढ़-चढ़ कर सब्र दिखाओ और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम कामियाब हो जाओ।



अनुवाद-सूरतुन्निसाइ

यह सूरः मदनी है, इसमें अ़रबी के १६६६७ अक्षर, ३७२० शब्द, १७६ आयतें, और २४ रूकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ①

१- ऐ लोगो! अपने रब से डरो, जिसने तुम को एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया, और उन दोनों से कसरत से (भारी संख्या में) मर्द और औ़रत फैला दिये; और अल्लाह से जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे के सामने अपनी माँगे रखते हो 'डरो', और नाते-रिश्ते (काटने) से, बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है।

وَاٰتُوا الْيَتٰمٰۤى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَهُمْ اِلٰۤى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ②

२- और यतीमों को उनका माल पहुँचा दो और बुरी चीज़ को अच्छी चीज़ से न बदलो, और न उनके माल को अपने माल के साथ मिला कर खा जाओ; यह बहुत बड़ा गुनाह है।

وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِي الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَلَّا تَعُوْلُوْا ③

३- और अगर तुमको अन्देशा हो कि तुम यतीमों (लड़कियों) के मामले में इन्साफ़ न कर सकोगे, तो जो औ़रतें तुम्हें पसंद हों, उनमें से दो-दो या तीन-तीन या चार-चार से निकाह कर सकते हो, और अगर तुमको अन्देशा हो कि तुम (सब औरतों से) एक जैसा व्यवहार न कर सकोगे, तो एक (औ़रत) या लौंडी (बाँदी) जिसके तुम मालिक हो (काफ़ी है), इसमें तुम्हारे लिए इन्साफ़ से न हटने की ज़्यादा उम्मीद है।

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا ④

४- और तुम औ़रतों को उनके महर खुशी से अदा कर दिया करो; हाँ, अगर वे अपनी खुशी से उसमें से कुछ तुम्हारे लिए छोड़ दें, तो उसे तुम अच्छा और पाक समझ कर खालो।

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِيْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا

५- और बेअ़क़्लों (मूर्खो) को अपना माल न दो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़िन्दगी गुज़ारने का ज़रिया बनाया है। उन्हें

لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۝

उसमें से खिलाते और पहनाते रहो और उनसे भली बात कहो।

وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰىٓ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَإِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ
رُشْدًا فَادْفَعُوٓا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَأْكُلُوهَآ
إِسْرَافًا وَّبِدَارًا أَنْ يَّكْبَرُوا ۚ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا
فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ
بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ
فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيبًا ۝

६- और यतीमों की जांच करते रहो, यहाँ तक कि वह निकाह की उम्र को पहुँच जाएँ; फिर अगर तुम देखो कि उनमें सूझ-बूझ आ गयी है, तो उनके माल उन्हें सौंप दो, और इस डर से कि वे कहीं बड़े न हो जाएँ; तुम उनके माल फ़ुजूलख़र्ची करके जल्दी-जल्दी मत खा डालो; और जो व्यक्ति मालदार हो उसे तो बचना ही चाहिए, हाँ, जो ग़रीब हो, वह उचित तरीक़े से कुछ खा सकता है; फिर जब उनके माल उन्हें सौंपने लगो, तो उनकी मौजूदगी में गवाह बना लिया करो, और हिसाब लेने के लिए तो अल्लाह काफ़ी है।

لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ ۠
وَلِلنِّسَآءِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ
مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ۝

७- मर्दों के लिए भी उस चीज़ में हिस्सा है, जो माँ-बाप और नातेदारों ने छोड़ा हो; और औ़रतों का भी उस माल में हिस्सा है जो माल, माँ-बाप और नातेदारों ने छोड़ा हो, चाहे वह थोड़ा हो या बहुत मुक़र्रर (निश्चित) किया हुआ हिस्सा है।

وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى
وَالْمَسٰكِينُ فَارْزُقُوهُمْ مِّنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا
مَّعْرُوفًا ۝

८- और जब मीरास बाँटने के वक़्त, नातेदार और यतीम और मुहताज मौजूद हों, तो उन्हें भी उसमें से कुछ दे दिया करो, और उनसे भली बात करो।

وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا
خَافُوا عَلَيْهِمْ ۠ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝

९- और ऐसे लोगों को डरना चाहिए, कि अगर वे खुद अपने पीछे छोटे बच्चे छोड़ जाएँ, तो उन्हें उन बच्चों के बारे में कितनी चिन्ता होती; तो चाहिए कि अल्लाह से डरें और बात पक्की कहें।

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا إِنَّمَا
يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۚ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ۝

१०- जो लोग यतीमों का माल नाजायज़ तरीक़े से खाते हैं हक़ीक़त में वे अपने पेट में आग भरते हैं, और वह जल्द ही (भड़कती हुई) आग में जा पड़ेंगे।

يُوصِيكُمُ اللّٰهُ فِيٓ أَوْلَادِكُمْ ۚ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ
الْأُنْثَيَيْنِ ۚ فَإِنْ كُنَّ نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ
ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ
وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ
إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُ وَلَدٌ وَّوَرِثَهُ
أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ

११- अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है, मर्द (बेटा) का हिस्सा, दो औ़रतों (बेटियों) के बराबर है, और अगर दो से ज़्यादा औ़रतें (बेटियाँ) हों तो, उनके लिए दो तिहाई (हिस्सा) उस (माल) का है जो मूरिस (मरने वाला) छोड़ गया हो; और अगर एक ही लड़की हो तो उसके लिए आधा हिस्सा है; और मूरिस के माँ-बाप हों तो उन दोनों में से हर एक के लिए

السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ ؕ
آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ
نَفْعًا ؕ فَرِيضَةً مِنَ اللَّهِ ؕ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا
حَكِيمًا ۝

उस माल का छठवाँ हिस्सा है जो वह छोड़ गया हो बशर्त कि मूरिस के कोई औलाद हो; और अगर मूरिस के कोई औलाद न हो, और उसके माँ-बाप ही उसके वारिस हों, तो उसकी माँ का एक तिहाई हिस्सा है; लेकिन अगर मूरिस के भाई भी हों, तो उसकी माँ के लिए छठवाँ हिस्सा है, (लेकिन यह हिस्से) वसीयत के निकालने के बाद जो उसने किया हो, या क़र्ज़ अदा करने के बाद; तुम को मालूम नहीं कि तुम्हारे बाप-दादों, और बेटों-पोतों में से फ़ायदे के लिहाज़ से कौन तु से ज़्यादा क़रीब है यह सब अल्लाह का फ़र्ज (तय) किया हुआ हिस्सा है, बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है।

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ
لَهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ
مِمَّا تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِينَ بِهَا
أَوْ دَيْنٍ ۚ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ
لَكُمْ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا
تَرَكْتُمْ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ؕ
وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَالَةً أَوِ امْرَأَةٌ وَلَهُ أَخٌ
أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَإِنْ كَانُوا
أَكْثَرَ مِنْ ذَٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ
وَصِيَّةٍ يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَارٍّ ۚ وَصِيَّةً
مِنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝

१२- और तुम्हारे लिए (माल का) आधा हिस्सा है, जो तुम्हारी बीवियाँ छोड़ जाएँ, अगर उनके कोई औलाद न हो; और अगर उनके औलाद हो तो तुम्हारे लिए बीवियों के तरक़े (छोड़ा हुआ माल) का चौथाई है, वसीयत के बाद जिसकी वसीयत कर जाएँ, या क़र्ज़ अदा करने के बाद, और उन बीवियों के लिए तुम्हारे तर्के में चौथाई हिस्सा है, बशर्ते कि तुम्हारे कोई औलाद न हो; लेकिन अगर तुम्हारे कुछ औलाद हो, तो उन (बीबियों) को तुम्हारे तर्के का आठवाँ हिस्सा मिलेगा वसीयत (निकालने) के बाद,जिसको तुम वसीयत कर जाओ, या क़र्ज़ अदाइगी के बाद,अगर कोई मूरिस मर्द हो या औरत, जिसके न कोई औलाद हो, और न उसके माँ-बाप ही ज़िन्दा हों और उसके एक भाई या बहन हो, तो हर एक का छठवाँ हिस्सा होगा; लेकिन अगर वे इससे ज़्यादा हों तो फिर एक तिहाई में सब हिस्सेदार होंगे; इसके बाद जो वसीयत उसने की हो वह पूरी की जाए या जो क़र्ज़ हो वह चुका दिया जाए, बशर्त कि वह नुक़सानदे न हो, यह सब अल्लाह के हुक्म हैं, और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, बड़ा हलीम (सहनशील) है;

تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

१३- यह अल्लाह की तय की हुई हदें (सीमाएं) हैं, और जो आदमी अल्लाह और उसके रसूल के हुक्मों को पूरा करेगा, उसे अल्लाह ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे और यही सबसे बड़ी कामियाबी है।

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝

१४- और जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा और उसकी ह़दों को पार कर जाएगा, उसे 'वह' आग में दाख़िल करेगा, जिसमें वह हमेशा पड़ा रहेगा, और उसे ज़िल्लत का अ़ज़ाब होगा।

وَالّٰتِيْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ۝

१५- और तुम्हारी औ़रतों में से जो बेह़याई (व्यभिचार) कर बैठें, उन पर अपने में से चार आदमियों को गवाह कर लो, सो अगर वे गवाही दें तो उन (औ़रतों) को घरों में बन्द रखो, यहाँ तक कि मौत उनका खात्मा कर दे, या अल्लाह उनके लिए कोई रास्ता निकाल दे।

وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَ اَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ۚ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝

१६- और तुममें से जो दो मर्द यह काम (बदकारी) करें, उन्हें दंडित करो; फिर अगर वे तौबः कर लें, और अपने को सुधार लें, तो उन्हें छोड़ दो, बेशक अल्लाह तौबः कु़बूल करने वाला, बड़ा मेहरबान है।

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝

१७- उन्हीं लोगों की तौबः कु़बूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है, जो बुरी हरकत नादानी में कर बैठते हैं, और जल्द तौबः कर लेते हैं, ऐसे ही लोग हैं, जिनकी तौबः अल्लाह कु़बूल करता है, अल्लाह जानने वाला, ह़िकमत वाला है

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝

१८- और ऐसे लोगों की तौबः कु़बूल नहीं होती जो बुरे काम किये चले जाते हैं, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी के मौत का वक़्त आ जाता है, तो उस समय कहने लगता है, "अब मैं तौबः करता हूँ," और न उनकी (तौबः कु़बूल होती है) जो कुफ्ऱ की ह़ालत में मरें, ऐसे लोगों के लिए 'हमने' दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ۚ وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ۝

१९- ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए जायज़ नहीं कि तुम औ़रतों के माल के ज़बर्दस्ती वारिस बन जाओ, और न यह जायज़ है कि उन्हें इसलिए रोको और तंग करो कि जो कुछ तुमने उन्हें दिया है, उसमें से कुछ ले लो; हाँ अगर वे खुले तौर पर बदचलनी का काम करें! तो दूसरी बात है; और औ़रतों के साथ राज़ी खुशी के साथ गुज़र बसर करो; फिर अगर वे तुम्हें पसंद न हों, तो सम्भव है कि एक चीज़ तुम्हें पसंद न हो और अल्लाह उसमें बहुत कुछ भलाई पैदा कर दे।

وَإِنْ أَرَدتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ وَآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ قِنطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ شَيْئًا ۚ أَتَأْخُذُونَهُ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ۝

२०- और अगर तुम एक औ़रत (पत्नी) को छोड़कर दूसरी औ़रत (पत्नी) करना चाहो तो, चाहे तुमने उनमें से किसी (पहली औरत) को ढ़ेरों माल दे दिया हो, तो उसमें से कुछ मत लेना! क्या तुम उस पर आरोप लगाकर और खुला हुआ गुनाह कर के उसे (वापस) लोगे?-

وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ وَأَخَذْنَ مِنكُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ۝

२१- और तुम उसे कैसे वापस ले सकते हो, ऐसी ह़ालत में कि तुम एक-दूसरे से सम्भोग (सुह़बत) कर चुके हो, और वे तुमसे एक मज़बूत वादा भी ले चुकी हैं?

وَلَا تَنكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُم مِّنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا وَسَاءَ سَبِيلًا ۝

२२- और उन औ़रतों से निकाह न करो, जिनसे तुम्हारे बाप निकाह कर चुके हों लेकिन जो पहले हो चुका; यह बड़ी बेशर्मी और घृणा की बात थी, और बहुत बुरी रीति थी।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأُخْتِ وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَاتُكُم مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ اللَّاتِي فِي حُجُورِكُم مِّن نِّسَائِكُمُ اللَّاتِي دَخَلْتُم بِهِنَّ فَإِن لَّمْ تَكُونُوا دَخَلْتُم بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَن تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

२३- तुम्हारे लिए हराम हैं तुम्हारी माएं, और बेटियाँ, बहनें, और फूफियाँ, और ख़ालाएं, और भतीजियाँ, और भांजियाँ, और तुम्हारी वे माएँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो, और दूध के रिश्ते से तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी सासें, और तुम्हारी बीवियों की बेटियाँ, (जो दूसरे पति से हों,) और जो तुम्हारे गोद में पलीं, तुम्हारी उन बीवियों की बेटियां जिनसे तुम सोह़बत (सम्भोग) कर चुके हो, लेकिन अगर अभी तुमने (सम्भोग) नहीं किया है तो इसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं- और तुम्हारे उन बेटों की पत्नियां जो तुम से पैदा हों, और यह भी कि तुम दो बहनों को इकट्ठा करो, लेकिन पहले जो हो चुका सो हो चुका, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला बड़ा रह़ीम है।

* وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۖ كِتَابَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَأُحِلَّ لَكُم مَّا وَرَاءَ ذَٰلِكُمْ أَن تَبْتَغُوا بِأَمْوَالِكُم مُّحْصِنِينَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ ۚ فَمَا اسْتَمْتَعْتُم بِهِ مِنْهُنَّ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ فَرِيضَةً ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا تَرَاضَيْتُم بِهِ مِن بَعْدِ الْفَرِيضَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

२४- और वह शादी शुदा औ़रतें भी ह़राम हैं, सिवाय उनके जो तुम्हरी लौंडी हों, यह अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़रूरी कर दिया है; और जो इनके अ़लावा हैं वह तुम्हारे लिए ह़लाल कर दी गयी हैं कि तुम अपने माल के ज़रिये उन्हें ह़ासिल करो, बशर्ते कि (निकाह़ का) मक़्सद पाकदामनी हो, न कि शहवत पूरी करना हो, तो जिन औ़रतों से तुम फ़ायदा ह़सिल करो, उनका मह्र जो मुक़र्रर (निश्चित) किया हुआ हो अदा कर दो, और अगर मुक़र्रर करने के बाद आपस की रज़ामन्दी से मह्र

में कमी ज़्यादती कर लो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला, ह़िकमत वाला है।

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ۚ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِإِيْمَانِكُمْ ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِإِذْنِ أَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ أُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ أَخْدَانٍ ۚ فَإِذَآ أُحْصِنَّ فَإِنْ أَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ۚ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۚ وَأَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٢٥

२५- और जो व्यक्ति तुम में से मोमिन आज़ाद औ़रतों से निकाह करने की कुदरत न रखे, तो मोमिन लौंडियों में ही जो तुम्हारे क़ब्ज़े में आ गयी हों (निकाह कर लो), और अल्लाह तुम्हारे ईमान को अच्छी तरह जानता है; तुम आपस में एक ही हो, तो उन लौंडियों के साथ उनके मालिकों से इजाज़त लेकर निकाह कर लो, और कानून के मुताबिक़ उनका मह्र भी अदा कर दो, बशर्ते कि पाक दामन हों, न ऐसी कि खुल्लम-खुल्ला बद्कारी करें, और न पर्दे की आड़ में दोस्ती करें, फिर अगर निकाह में आकर बद्कारी कर बैठें, तो जो सज़ा आज़ाद औ़रतों के लिए है, उनकी आधी उसको दी जाए; यह (लौंडी के साथ निकाह करने की) इजाज़त उस व्यक्ति को है, जिसे गुनाह कर बैठने का डर हो, और अगर सब्र करो, तो यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है; और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٢٦

२६- अल्लाह चाहता है कि तुम पर (अपनी आयतें) खोल-खोल कर बयान फरमाए, और तुम्हें उन लोगों के तरीक़े पर चलाए जो तुमसे पहले हुए हैं और तुम पर मेहरबानी करे, और अल्लाह तो जानने वाला, ह़िकमत वाला है।

وَاللّٰهُ يُرِيْدُ أَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۖ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ أَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ۝٢٧

२७- और अल्लाह तो चाहता है कि तुम पर मेहरबानी करे; और जो लोग अपनी इच्छाओं के पीछे चलते हैं, वे चाहते हैं कि तुम सीधे रास्ते से भटक कर दूर जा पड़ो।

يُرِيْدُ اللّٰهُ أَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْإِنْسَانُ ضَعِيْفًا ۝٢٨

२८- अल्लाह चाहता है कि तुम पर से बोझ हल्का करे, क्योंकि इन्सान कमज़ोर पैदा हुआ है।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَأْكُلُوْٓا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّآ أَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا أَنْفُسَكُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ۝٢٩

२९- ऐ ईमान वालो! (आपस में) एक-दूसरे का माल ग़लत तरीक़े से न खाओ; यह और बात है कि तुम आपस की रज़ामन्दी से कोई सौदा कर लो, और अपने आप को क़त्ल मत करो, कि अल्लाह तुम पर बड़ा मेहरबान है;

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝

३०- और जो कोई ज़ुल्म और ज़्यादती से ऐसा करेगा, तो उसे 'हम' जल्द ही आग में झोंक देंगे, और यह अल्लाह के लिए आसान है।

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَاۗىِٕرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ۝

३१- अगर तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहे जिनसे तुम्हें रोका जा रहा है, तो 'हम' तुम्हारी बुराइयों को तुमसे दूर कर देंगे और तुम्हें इज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे।

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰي بَعْضٍ ۭ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ۭ وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۭ وَسْــَٔـلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝

३२- और उसकी आरज़ू (कामना) न करो, जिसमें अल्लाह ने तुममें बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है, मर्दों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है; और औ़रतों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है और अल्लाह से उसकी रह़मत (दया) माँगते रहो, कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۭ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْھُمْ نَصِيْبَھُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ۝

३३- और हर माल के लिए, जो माँ-बाप और नातेदार छोड़ जाएँ, तो हमने हर एक के ह़क़दार निश्चित कर दिये हैं, और जिन लोगों से अपनी क़समों के ज़रिये तुम्हारा पक्का मामला हुआ हो, तो उन्हें भी उनका हिस्सा दो, बेशक हर चीज़ पर अल्लाह गवाह (सामने) है।

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَي النِّسَاۗءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَھُمْ عَلٰي بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ۭ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ۭ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَھُنَّ فَعِظُوْھُنَّ وَاهْجُرُوْھُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْھُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ۝

३४- मर्द औ़रतों (पति, पत्नियों) के निगरां हैं क्योंकि अल्लाह ने कुछ को कुछ के मुकाबले में आगे रखा है, और इसलिए भी कि मर्दों ने अपने माल खर्च किये हैं; तो जो नेक औ़रतें फ़रमाँबरदारी करने वाली होती हैं और उनके पीठ पीछे अल्लाह के साये में (माल व आबरू की) हिफाज़त करती हैं; और तुमको जिन बीवियों से सरकशी का खटका हो तो उनको समझा दो फिर उनके साथ सोना छोड़ दो, फिर उन्हें मारो, (इस पर भी न मानें तो) अगर वह तुम्हारी बात मानने लगें, तो उन पर तोहमत न लगाओ, बेशक अल्लाह सबसे ऊँचा, सबसे बड़ा (सम्मान वाला) है।

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَھْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَھْلِھَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ۝

३५- और अगर तुम दोनों के बीच बिगाड़ का डर हो तो एक फ़ैसला करने वाला मर्द की ओर से और एक फ़ैसला करने वाली औ़रत की ओर से चुन लो, अगर वे दोनों सुधार करना चाहेंगे, तो अल्लाह उनके बीच मिलाप करा देगा, बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला, ख़बर रखने वाला है।

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۙ

३६- और अल्लाह ही की इबादत करो और उसके साथ किसी और को साझीदार न बनाओ, और अच्छा व्यवहार करो माँ-बाप के साथ, नातेदारों, यतीमों और मोहताजों के साथ, नातेदार पड़ोसियों के साथ, और दूर वाले पड़ोसियों के साथ, और साथ रहने वाले व्यक्तियों, और मुसाफ़िर के साथ, और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों अल्लाह ऐसों को पसंद नहीं करता, जो इतराता और बड़ाई जताते फिरता हो।

اِلَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۚ

३७- जो खुद भी कंजूसी करते हैं, और लोगों को भी कंजूसी पर उभारते हैं, और अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल (कृपा) से जो कुछ उन्हें दे रखा है उसे छिपाते हैं तो 'हमने' (ऐसे) काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है।

وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ۝

३८- और जो लोगों को दिखाने के लिए माल खर्च करते हैं, और अल्लाह पर ईमान नहीं रखते, न आख़िरत के दिन पर, और जिस किसी का साथी शैतान हो, तो वह बहुत ही बुरा साथी है।

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ۝

३९- और उनका क्या बिगड़ जाता, अगर वे अल्लाह और आख़िरत पर ईमान ले आते और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया था, उसमें से खर्च करते,? और अल्लाह तो उन्हें खूब जानता है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝

४०- बेशक अल्लाह ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता और अगर कोई एक नेकी हो तो वह उसे दो गुना बढ़ा देगा, और अपनी ओर से बड़ा बदला देगा।

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۢ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰۤؤُلَآءِ شَهِيْدًا ۝

४१- फिर क्या हाल होगा जब 'हम' हर उम्मत (समुदाय) में से एक गवाह लाएँगे और खुद तुम्हें उन लोगों के मुक़ाबले में गवाह बना कर पेश करेंगे?-

يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ۝

४२- उस दिन जिन्होंने इन्कार किया होगा और रसूल की नाफ़रमानी की होगी, वह (यही) चाहेंगे कि किसी तरह ज़मीन में समा जाते, और वह अल्लाह से कोई बात न छिपा सकेंगे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا

४३- ऐ ईमान वालो! नशे की हालत में नमाज़ के क़रीब मत जाओ, जब तक कि तुम यह न समझने लगो कि तुम क्या कर

عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا ۚ وَإِن كُنتُم
مَّرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنكُم مِّنَ
الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً
فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ
وَأَيْدِيكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٤٣﴾

रहे हो? और इसी तरह नापाकी की ह़ालत में भी, (नमाज़ के क़रीब न जाओ) जब तक कि तुम गुस्ल (स्नान) न कर लो, सिवाय इसके कि तुम सफ़र में हो, और अगर तुम सफ़र में हो, या तुममें से कोई इस्तिन्जा (शौच) करके आया हो, या तुमने औ़रतों को हाथ लगाया (सम्भोग किया) हो, और तुम्हें पानी न मिले, तो पाक मिट्टी से काम लो, और उस पर हाथ मार कर अपने चेहरे और हाथों पर मलो, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ
يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَن تَضِلُّوا السَّبِيلَ ﴿٤٤﴾

४४- क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जिन्हें किताब का कुछ हिस्सा दिया गया था? कि वे गुमराही को खरीदते रहे और चाहते हैं कि तुम भी राह से भटक जाओ।

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكَفَىٰ
بِاللَّهِ نَصِيرًا ﴿٤٥﴾

४५- और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानता है और अल्लाह का दोस्त (संरक्षक) होना, और अल्लाह का मददगार होना काफ़ी है।

مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ
وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ
مُسْمَعٍ وَرَاعِنَا لَيًّا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّينِ ۚ وَ
لَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاسْمَعْ
وَانظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ وَلَٰكِن لَّعَنَهُمُ
اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٤٦﴾

४६- (और) ये जो यहूदी हैं, उनमें कुछ ऐसे भी हैं जो शब्दों को उनकी जगह से दूसरी ओर फेर देते हैं और कहते हैं, ''समिअ़ना व अ़सैना ''(हमने सुना, लेकिन हम मानते नहीं); और इसमअ़ ग़ैरि मुस्मअ़िन' (सुनो हलाँकि तुम सुनने के लायक़ नहीं हो) और ''राअ़िना'' (हमारी ओर ध्यान दो) इसे वे अपनी ज़बानों को तोड़-मरोड़ कर और दीन पर चोटें करते हुए कहते हैं; और अगर वे कहते, ''समिअ़ना वअ़तअ़ना'' (हमने सुना और माना) और 'इसमअ़' (सुनो) और 'उन्ज़ुरना' (हमारी ओर निगाह करो) तो यह उनके लिए अच्छा और ज़्यादा बेहतर होता! लेकिन उन पर तो उनके इन्कार की वजह से अल्लाह की लानत है, तो उनमे से कुछ थोड़े ही ईमान लाते।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ آمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا
مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُم مِّن قَبْلِ أَن نَّطْمِسَ
وُجُوهًا فَنَرُدَّهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا
لَعَنَّا أَصْحَابَ السَّبْتِ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٤٧﴾

४७- ऐ लोगो! जिन्हें किताब दी गयी उस चीज़ को मानो जो 'हमने' उतारी है, जो उस की भी तस्दीक़ करती है, जो खुद तुम्हारे पास है, इससे पहले कि 'हम' लोगों के चेहरों को बिगाड़ डालें और उन्हें उनके पीछे की ओर फेर दें या उन पर लानत करें, जिस तरह 'हमने' सब्त वालों पर लानत की थी, और अल्लाह का हुक्म तो लागू होकर रहता है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ۝

४८- अल्लाह उसको माफ़ नहीं करेगा कि किसी को उसका साझी ठहराया जाए, लेकिन उससे नीचे के दर्जे के गुनाहों को जिसे चाहेगा माफ़ कर देगा, और जिसने अल्लाह का साझीदार बनाया, तो उसने एक बहुत बड़ा झूठ गढ़ लिया।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنْفُسَهُمْ ۚ بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝

४६- क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जो बड़े पाक-साफ़ बनते हैं? हालाँकि अल्लाह ही जिसको चाहता है पाक करता है, और ज़ुल्म तो किसी पर धागे बराबर भी न किया जाएगा।

انْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۖ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُبِينًا ۝

५०- देखो! (यह लोग) अल्लाह पर कैसा झूठ बाँध रहे हैं,और यही खुला गुनाह काफ़ी है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَٰؤُلَاءِ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا سَبِيلًا ۝

५१- क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया? और वह ज़िब्त (जादू- टोना, शगून, आदि बातें) और तागूत (शैतान) को मानते हैं। और काफ़िरों के बारे में कहते हैं, ''यह लोग ईमान वालों से बढ़ कर (सही) रास्ते पर हैं।''

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَمَنْ يَلْعَنِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا ۝

५२- यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की है और जिस पर अल्लाह लानत कर दे, तो तुम उसका कोई मदद्गार न पाओगे।

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِنَ الْمُلْكِ فَإِذًا لَا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا ۝

५३- क्या बादशाही में इनका कोई हिस्सा है? (अगर ऐसा होता) तो फिर यह लोगों को फूटी कौड़ी भी न देंगे।

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۖ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُمْ مُلْكًا عَظِيمًا ۝

५४- या इसलिए ह़सद (जलन) करते हैं कि अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से नेअ़मत दी है, 'हमने' तो इब्राहीम की औलाद को किताब और ह़िकमत दी और उन्हें बड़ा भारी राज्य दिया;

فَمِنْهُمْ مَنْ آمَنَ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ صَدَّ عَنْهُ ۚ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا ۝

५५- फिर उनमें से कुछ उन पर ईमान लाए और कुछ ने उससे मुँह मोड़ा, और(ऐसे लोगों के लिए) जहन्नम की भड़कती आग ही काफ़ी है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ بَدَّلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

५६- जिन लोगों ने 'हमारी' आयतों का इन्कार किया उन्हें 'हम' जल्द ही आग में झोंक देंगे, जब उनकी खालें पक जाएँगी, तो 'हम' उन्हें दूसरी खालों से बदल दिया करेंगे, ताकि

(हमेशा-हमेश) अ़ज़ाब का मज़ा चखते ही रहें! बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त (प्रभुत्वशाली), हि़कमत वाला है।

५७- और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये, उन्हें 'हम' ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे हमेशा रहेंगे, उनके लिए वहाँ पाक बीवियाँ होंगी और 'हम' उन्हें घने (बाग़ के) साए में दाख़िल करेंगे।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ ۖ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا ﴿٥٧﴾

५८- अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतों को उनके ह़क़दारों तक पहुँचा दिया करो, और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो, तो अ़दल (न्याय) से किया करो, अल्लाह तुम्हें कितनी अच्छी नसीह़त करता है, बेशक अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٥٨﴾

५९- ऐ ईमान वालो! अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो, और उनका भी कहना मानो जो तुममें से हाकिम (अधिकारी) हैं, फिर अगर किसी मामला में तुम्हारे बीच झगड़ा हो जाए, तो उसे तुम अल्लाह व रसूल की ओर लौटाओ, (अर्थात ले जाओ) अगर तुम अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखते हो, और यही बेहतर है और अंजाम भी अच्छा है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ ۖ فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٥٩﴾

६०- क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जो दावा तो करते हैं कि वे उस चीज पर ईमान रखते हैं, जो तुम्हारी ओर उतारी गयी है, और जो तुमसे पहले उतारी गयी, और चाहते हैं कि अपना मामला तागूत (सरकश) के पास ले जाकर फ़ैसला कराएँ, जबकि उन्हें हुक्म दिया गया था कि वे उसका इन्कार करें? लेकिन शैतान तो उन्हें भटका कर बहुत दूर डाल देना चाहता है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ ۖ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦٠﴾

६१- और जब उनसे कहा जाता है कि आओ उस चीज़ की ओर जिसे अल्लाह ने उतारा है, और आओ रसूल की ओर, तो तुम मुनाफ़िक़ों (कप्टाचारियों) को देखते हो कि तुम से कत्रा कर अलग हो जाते हैं;

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ﴿٦١﴾

६२- फिर कैसी गुज़रती है जब उन पर कोई मुसीबत आ पड़ती है अपने ही करतूतों की वजह से, तो वे तुम्हारे पास

فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ

अल्लाह की क़समें खाते हुए आते हैं कि हम तो केवल भलाई और बनाव चाहते थे।

أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا ۝

६३- उन लोगों के दिलों की बात अल्लाह खूब जानता है, तो आप उनकी ओर से एराज़ कर (रूख मोड़) लिया करें, और उन्हें नसीहत करते रहिए और उन्हें उनके बारे में प्रभावकारी (मुअ़स्सिर) बात कहते रहिए।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ۝

६४- और 'हमने' जो भी रसूल भेजे, वह इसलिए, ताकि उसकी इताअ़त (आज्ञापालन) अल्लाह के हुक्म से की जाए; और अगर यह उस वक़्त जबकि इन लोगों ने खुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया था, तुम्हारे पास आ जाते और अल्लाह से माफ़ी चाहते, और रसूल भी इनके लिए माफ़ी की दुआ़ करते, तो ज़रूर यह अल्लाह को माफ़ करने वाला, रह़म वाला पाते।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝

६५- तो आप के रब की क़सम! यह ईमान वाले नहीं हो सकते, जब तक कि यह लोग अपने आपस के झगड़ों में आप से फ़ैसला न कराएँ, फिर जो फ़ैसला आप कर दें, उस पर यह अपने दिल में कोई तंगी न पाएँ, और पूरी तरह मान लें।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝

६६- और अगर कहीं हमने उन्हें हुक्म दिया होता, "कि अपनों को क़त्ल करो या अपने घरों से निकल जाओ," तो उनमें से थोड़े ही लोग ऐसा करते; हालाँकि जो नसीहत उन्हें की जाती है, अगर वे उसे अ़मल में लाते तो यह बात उनके लिए अच्छी होती, और ज़्यादा साबित क़दम (पायेदार) होती;

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ أَوِ اخْرُجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِنْهُمْ ۖ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ۝

६७- और (उस वक़्त) 'हम' उन्हें अपनी ओर से ज़रूर बड़ा बदला देते,

وَإِذًا لَآتَيْنَاهُمْ مِنْ لَدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ۝

६८- और सीधे रास्ते पर भी लगा देते।

وَلَهَدَيْنَاهُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝

६९- और जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त (आज्ञा पालन) करते हैं, तो ऐसे ही लोग उन लोगों के साथ हैं, जिन पर अल्लाह का इनआ़म हुआ जैसे नबी और सिद्दीक़ (औलिया) और शहीद और अच्छे लोग हैं, और यह लोग कितने अच्छे साथी हैं।

وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ ۚ وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ۝

ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا

७०- यह फ़ज़्ल है अल्लाह की ओर से, और अल्लाह ही जानने वाला काफ़ी है,

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوا ثُبَاتٍ أَوِ انْفِرُوا جَمِيعًا

७१- ऐ ईमान वालो! अपने बचाव का सामान (हथियार) संभालो, फिर या तो अलग-अलग टुकड़ियों में निकलो, या इकट्ठे हो कर निकलो।

وَإِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَيُبَطِّئَنَّ فَإِنْ أَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَالَ قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيَّ إِذْ لَمْ أَكُنْ مَعَهُمْ شَهِيدًا

७२- और तुममें से कुछ ऐसे भी हैं जो ढ़ीले पड़ जाते हैं, फिर अगर तुम पर कोई मुसीबत आए तो कहते हैं, ''अल्लाह ने मुझ पर फ़ज़्ल किया, कि मैं उन के साथ न था''

وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ كَأَنْ لَمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَا لَيْتَنِي كُنْتُ مَعَهُمْ فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا

७३- और अगर अल्लाह की ओर से तुम पर कोई फ़ज़्ल हो तो वह इस तरह से कि जैसे तुम्हारे और उसके बीच मुहब्बत का कोई सम्बन्ध ही नहीं, कहता है, ''क्या ही अच्छा होता कि मैं भी उनके साथ होता, तो बड़ी कामियाबी हासिल करता''

فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۚ وَمَنْ يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا

७४- तो जो लोग आख़िरत के बदले दुनियावी ज़िन्दगी का सौदा करना चाहते हैं; उन्हें चाहिए कि अल्लाह के रास्ते में लड़ें, और जो व्यक्ति अल्लाह की राह में लड़ेगा, चाहे वह मारा जाए या ग़ालिब हो (जीत) जाए, उसे 'हम' जल्द ही बड़ा बदला देंगे।

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا

७५- और तुम्हें क्या हुआ है कि अल्लाह की राह में उन कमज़ोर मर्दों, और औ़रतों, और बच्चों के लिए जंग नहीं करते, जो दुआएँ किया करते हैं, ''ऐ हमारे रब! 'तू' हमें इस बस्ती से निकाल, जिसके रहने वाले ज़ालिम हैं, और हमारे लिए अपनी कुदरत से कोई दोस्त (समर्थक) पैदा कर दे, और हमारे लिए अपनी ओर से 'तू' कोई मददगार खड़ा कर दे।''

الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ ۖ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا

७६- जो ईमान वाले हैं वे तो अल्लाह की राह में लड़ते हैं, और जो काफ़िर हैं वे तागूत (शैतान) की राह में लड़ते हैं; तो तुम लड़ो शैतान के साथियों से, क्योंकि शैतान की चाल तो बहुत कमज़ोर होती है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ

७७- क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिनसे कहा गया था, कि अपने हाथ रोके रखो, और नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात देते रहो; फिर जब उन पर क़िताल (लड़ाई) फर्ज़ कर दिया गया, तो कुछ लोग उनमें लोगों से ऐसा डरने लगे जैसे

عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ قُلْ
مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ ۚ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقَىٰ
وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝

अल्लाह से डरना होता है, बल्कि उससे भी बढ़ कर, और कहने लगे, ''ऐ हमारे रब! 'तूने' हम पर जंग (जिहाद) क्यों फर्ज़ कर दिया? क्यों न थोड़ी मोहलत हमें और दी? कह दीजिए, ''दुनिया की पूँजी थोड़ी है, जब कि आख़िरत उसके लिए कहीं बेहतर है जो अल्लाह का डर रखता हो, और तुम्हारे साथ धागे के बराबर भी ज़ुल्म न किया जाएगा;

أَيْنَ مَا تَكُونُوا يُدْرِككُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنتُمْ فِي
بُرُوجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۗ وَإِن تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ
مِنْ عِندِ اللَّهِ ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ
مِنْ عِندِكَ ۚ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِندِ اللَّهِ ۖ فَمَالِ هَٰؤُلَاءِ
الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ۝

७८- तुम जहाँ कहीं भी होगे, मौत तो तुम्हें आकर रहेगी, चाहे तुम मज़बूत बुर्जों (क़िलों) में ही हो।'' और उन्हें कोई सुख पहुँच जाता है तो कहते हैं, ''यह अल्लाह की ओर से है,'' और अगर उन्हें कोई दुःख पहुँचता है तो कहते हैं, ''यह आप की वजह से हुआ।'' कह दीजिए, ''हर चीज़ अल्लाह ही की ओर से है।'' तो उन लोगों को क्या हुआ है कि गोया यह बात ही नहीं समझते?

مَّا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۖ وَمَا أَصَابَكَ
مِن سَيِّئَةٍ فَمِن نَّفْسِكَ ۚ وَأَرْسَلْنَاكَ لِلنَّاسِ
رَسُولًا ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝

७९- तुम्हें जो भलाई पहुँचती है वह अल्लाह की ओर से है, और जो बुरी हालत तुम्हें पेश आ जाती है वह तुम्हारे अपने नफ़्स की वजह से होती है, और 'हमने' तुम्हें लोगों के लिए रसूल बना कर भेजा है और (इस पर) अल्लाह की गवाही काफ़ी है।

مَّن يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۖ وَمَن تَوَلَّىٰ فَمَا
أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۝

८०- जिसने रसूल की इताअ़त (आज्ञा पालन) की, तो बेशक उसने अल्लाह की इताअ़त की, और जिसने मुँह मोड़ा, तो 'हमने' आप को उन पर रखवाला (संरक्षक) बना कर नहीं भेजा है।

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ عِندِكَ بَيَّتَ
طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ ۖ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا
يُبَيِّتُونَ ۖ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ
وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

८१- और ये लोग कहते हैं,(हम) फरमांबरदारी करते हैं,'' लेकिन जब आप के पास से हटते हैं, तो उनमें से एक गिरोह रात के वक़्त उसका उल्टा मश्विरा (षडयंत्र) करता है, और जो कुछ ये षडयंत्र करते हैं, अल्लाह उसे लिख रहा है, तो तुम उनसे रूख फेर लो और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह ही काफ़ी कारसाज़ (कार्य कारी) है।

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِندِ غَيْرِ اللَّهِ
لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ۝

८२- क्या ये लोग क़ुर्आन में सोच-विचार नहीं करते? अगर यह अल्लाह के अ़लावा किसी और की ओर से होता, तो उसमें (बहुत) इख़्तिलाफ़ (विरोधाभास) पाते।

وَإِذَا جَآءَهُمْ أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا
بِهِ ۖ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَىٰ أُولِي الْأَمْرِ
مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنبِطُونَهُ مِنْهُمْ ۗ وَلَوْلَا
فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطَانَ
إِلَّا قَلِيلًا ۝

८३- और जब उनके पास कोई बात अम्न की या खौफ़ की पहुँचती है, तो उसे फैला देते हैं, और अगर यह उसे रसूल या अपने में के सरदारों (अधिकारी) के पास पहुँचते हैं, तो उनमें से जो लोग जाँचने की योग्यता रखते हैं उसकी असलियत जान लेते हैं; और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी मेहरबानी न होती, तो कुछ लोगों के सिवा सब शैतान की ही पैरवी करने वाले होते।

فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ وَ
حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ عَسَى اللَّهُ أَن يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ
كَفَرُوا ۚ وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنكِيلًا ۝

८४- तो अल्लाह की राह में जंग कीजिए, आप पर ज़िम्मेदारी नहीं डाली जाती, सिवाय आप की अपनी ज़ात के; और ईमान वालों को (जंग के लिए) उभारते रहिए; और उम्मीद है कि अल्लाह काफ़िरों का ज़ोर रोक ले, और अल्लाह बड़ा ज़ोर वाला, सख्त सज़ा देने वाला है।

مَّن يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُن لَّهُ نَصِيبٌ
مِّنْهَا ۖ وَمَن يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُن لَّهُ كِفْلٌ
مِّنْهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيتًا ۝

८५- जो व्यक्ति अच्छी सिफ़ारिश करेगा, उसको उसमें से हिस्सा मिलेगा, और जो कोई बुरी सिफ़ारिश करेगा, तो उसकी वजह से उसका बोझ उस पर पड़ कर रहेगा,और अल्लाह को तो हर चीज़ पर कुदरत है।

وَإِذَا حُيِّيتُم بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا ۗ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ۝

८६- और जब तुम्हें सलाम किया जाए, तो तुम उससे बेहतर तरीक़े से सलाम करो, या उसी को लौटा दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का ह़िसाब लेने वाला है।

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا
رَيْبَ فِيهِ ۗ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ۝

८७- अल्लाह वह है कि कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं सिवाय उसके, 'वह' ज़रूर तुम सब को क़ियामत के दिन इकट्ठा करेगा, जिसके आने में कोई शक नहीं, और अल्लाह से बढ़ कर सच्ची बात किसकी हो सकती है!

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِئَتَيْنِ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُم
بِمَا كَسَبُوا ۚ أَتُرِيدُونَ أَن تَهْدُوا مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ ۖ
وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ۝

८८- फिर तुम्हें क्या हो गया है कि मुनाफ़िक़ों (कप्टाचारियों) के बारे में तुम दो गिरोह हो गये, ऐसी ह़ालत में कि अल्लाह ने उनके करतूतों की वजह से उन्हें उल्टा फेर दिया? क्या तुम चाहते हो कि उन्हें राह दिखाओ, जिसे अल्लाह ने गुमराह कर रखा है? और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे, उसके लिए तुम हरगिज़ रास्ता नहीं पा सकते;

وَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً ۖ
فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا فِي

८९- ये लोग तो चाहते हैं, कि जिस तरह वे खुद काफ़िर (इन्कारी) हैं, तुम भी काफ़िर हो कर बराबर हो जाओ, तो

سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ
حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا
وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٨٩﴾

जब तक वे अल्लाह की राह में घर बार (वतन) न छोड़ें, उनमें से किसी को दोस्त (राज़दार) न बनाना; फिर अगर वह (सच्चाई से) मुँह मोड़ें और ज़ुल्म करते रहें तो उन्हें पकड़ो, और जहाँ कहीं उन्हें पाओ (अर्थात चाहे कअ़बः के पास ही क्यों न हों) क़त्ल कर दो, और उनमें से तुम किसी को साथी और मदद्गार न बनाओ;

اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ
يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ
يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ
لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿٩٠﴾

६०- सिवाय उन लोगों के जो ऐसे लोगों से जा मिले हों, जिनसे तुम्हारे और उनके बीच कोई समझौता हो, या वह तुम्हारे पास इस हालत में आएँ कि उनके दिल तुम्हारे साथ या अपनी क़ौम के साथ लड़ने से रूक गये हों और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर क़ाबू दे देता, तो वे तुम से ज़रूर लड़ते; फिर अगर वे तुमसे अलग रहें और तुमसे न लड़ें और सुलह़ के लिए तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाएँ तो उनके ख़िलाफ़ अल्लाह ने तुम्हारे लिए कोई (ज़बर्दस्ती का) रास्ता नहीं रखा है।

سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ
وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْۤا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا
فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْۤا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ
وَيَكُفُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ
ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا
مُّبِيْنًا ﴿٩١﴾

६१- तुम कुछ और ऐसे लोग भी पाओगे, जो यह चाहते हैं कि तुमसे भी अम्न में रहें और अपनी क़ौम से भी अम्न में रहें, लेकिन जब फ़ित्ना फ़साद पैदा करने को बुलाए जाएँ तो उसमें औंधे मुँह गिर जाएँ, तो ऐसे लोग अगर तुमसे (लड़ने से) न किनारा पकड़ें और न तुम्हारी ओर सुलह़ (का पैग़ाम) भेजें, और न अपने हाथों को रोकें, तो उनको पकड़ लो, और जहां पाओ क़त्ल कर दो, उन लोगों के ख़िलाफ़ 'हमने' तुम्हें खुला अधिकार दे रखा है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَ
مَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ
وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰۤى اَهْلِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ؕ
فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَاِنْ كَانَ مِنْ
قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ
مُّسَلَّمَةٌ اِلٰۤى اَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ
فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۫ تَوْبَةً
مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٩٢﴾

६२- और यह किसी ईमान वाले का काम नहीं कि वह किसी ईमान वाले को क़त्ल कर दे, मगर भूल- चूक की बात और है; और कोई व्यक्ति अगर ग़लती से किसी ईमान वाले को क़त्ल कर दे, तो एक ईमान वाले ग़ुलाम को आज़ाद करना होगा और ख़ूँ-बहा (अर्थदण्ड) उस (मारे गये व्यक्ति) के घर वालों को सौंपना होगा। हाँ अगर वे अपनी ख़ुशी से छोड़ दें; और अगर वह उन लोगों में से हो, जो तुम्हारा दुश्मन हो, और वह (मारा जाने वाला) ख़ुद मोमिन रहा हो, तो एक मोमिन को ग़ुलामी से आज़ाद करना होगा; और अगर वह (मरने वाला) उन लोगों में से हो कि तुम्हारे और उनके बीच कोई लिखित समझौता हो, तो ख़ूँ-बहा (अर्थदण्ड) उसके घर

वालों को सौंपना होगा, और एक मोमिन गुलाम आज़ाद
करना होगा, लेकिन जो (गुलाम) न पाए तो वह लगातार दो
महीने के रोज़े रखे, यह (तौबः) अल्लाह की ओर से है, और
अल्लाह बड़ा जानने वाला, हिकमत (तत्वदर्शी) वाला है;

९३- और जो व्यक्ति जान बूझ कर किसी ईमान वाले को
क़त्ल करे, तो उसका बदला जहन्नम है, जिसमें वह हमेशा
रहेगा; और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब और उसकी लानत है,
और उसके लिए अल्लाह ने बड़ा अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ
خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ
عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿٩٣﴾

९४- ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में निकलो तो
खूब जाँच लिया करो, और जो व्यक्ति तुम्हें सलाम करे, उससे
यह न कहो कि तुम मोमिन नहीं; तुम दुनियावी ज़िन्दगी का
सामान तालाश करते हो, तो अल्लाह के पास तो बहुत
मालेग़नीमत है, ऐसे ही तुम भी तो पहले थे, फिर अल्लाह ने
तुम पर इनआ़म किया; तो खूब जाँच लिया करो, बेशक तुम
जो कुछ करते हो, अल्लाह उसकी खूब ख़बर रखता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰۤى اِلَيْكُمُ
السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۫ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ
مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٩٤﴾

९५- ईमान वालों में से वे लोग जो बिना किसी वजह के बैठे
रहते हैं (और लड़ने से जी चुराते हैं), और जो अल्लाह की
राह में अपनी जान और माल से जिहाद (जान तोड़ कोशिश)
करते हैं, दोनों बराबर नहीं हो सकते, अल्लाह ने (घरों में) बैठे
रहने वालों के मुक़ाबले में अपनी जान और माल से जिहाद
(जान तोड़ कोशिश) करने वालों का दर्जा बढ़ा रखा है, और
भलाई का वादा तो अल्लाह ने सभी से कर रखा है; (लेकिन)
अल्लाह ने बैठे रहने वालों के मुकाबले में जिहाद करने वालों
का बड़ा बदला रखा है।

لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي
الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ
وَاَنْفُسِهِمْ ؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَ
اَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا
وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى
الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٩٥﴾

९६- अल्लाह की ओर से दर्जे हैं, मग़्फ़िरत व रह़मत
(दयालुता) है, और अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾

९७- जो लोग अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं, जब फ़रिश्ते
उनकी जान निकालते हैं, तो कहते हैं, ''तुम किस ह़ालत में
पड़े रहे?'' वे कहते हैं, ''हम धरती में कमज़ोर और बेबस
थे।'' फ़रिश्ते कहते हैं, ''क्या अल्लाह की धरती वसीअ़
(विस्तृत) न थी कि तुम हिजरत करके (घर बार छोड़कर)

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْۤ اَنْفُسِهِمْ
قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي
الْاَرْضِ ؕ قَالُوْۤا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً
فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ
وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾

कहीं चले जाते?'' तो ये वही लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है;

إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ۝

९८- सिवाय उन कमज़ोर मर्दो, औरतों और बच्चों के, जिनके बस में न कोई उपाय है और न कोई राह पाते हैं;

فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْفُوَ عَنْهُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ۝

९९- तो यह लोग ऐसे हैं जिन्हें उम्मीद है कि अल्लाह माफ़ कर देगा, और अल्लाह है ही बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ा बख्शने वाला (क्षमाशील)।

وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرَاغَمًا كَثِيرًا وَسَعَةً ۚ وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

१००- और जो व्यक्ति अल्लाह की राह में हिजरत करेगा, वह ज़मीन पर बहुत जगह और गुन्जाइश पाएगा, और जो व्यक्ति अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल के लिए हिजरत करता हुआ निकले, उसे फिर मौत आ जाए, तो उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे हो गया, और अल्लाह तो है ही बड़ा बख्शने वाला, मेहरबान ।

وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُبِينًا ۝

१०१- और जब तुम धरती पर सफ़र करो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, कि नमाज़ को कम करके पढो; अगर तुम्हें डर हो कि काफ़िर लोग तुम्हें सताएँगे, बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले हुए दुश्मन हैं।

وَإِذَا كُنْتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنْ وَرَائِكُمْ وَلْتَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ ۗ وَدَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُمْ مَيْلَةً وَاحِدَةً ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى مِنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ ۖ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ۝

१०२- और जब आप उनके बीच में हों और उसी (लड़ाई की) हालत में नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हों, तो चाहिए कि उनमें से एक गिरोह के लोग आप के साथ खड़े हो जाएँ और अपने हथियार से लैस रहें, फिर जब वे सज्दः कर लें, तो उन्हें चाहिए कि वे हटकर तुम्हारे पीछे हो जाएँ; और दूसरे गिरोह के लोग, जिन्होंने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी, आएँ और तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ें, और उन्हें भी चाहिए कि वे भी अपने बचाव के सामान और हथियार लिए रहें; काफ़िर चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों और सामान से ग़ाफ़िल (असावधान) हो जाओ, तो यह लोग तुम्हारे ऊपर एक साथ टूट पड़ें; अगर बारिश की वजह से तुम्हें तकलीफ़ होती हो या तुम बीमार हो, तो तुम्हारे लिए कोई गुनाह नहीं कि अपने हथियार रख दो, फिर भी अपने बचाव का सामान लिए रहो, अल्लाह ने काफ़िरों (इन्कारियों) के लिए रूसवा करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ
قُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَإِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا
مَّوْقُوْتًا ﴿١٠٣﴾

१०३- फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको, तो खड़े, बैठे और लेटे अल्लाह को याद करते रहो, फिर जब तुम्हें इत्मिनान हो जाए तो नमाज़ को क़ायम करो, बेशक नमाज़ तो ईमान वालों पर वक़्त की पाबंदी के साथ फर्ज़ (अनिवार्य) है।

وَلَا تَهِنُوْا فِى ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ۗ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ
فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ
مَا لَا يَرْجُوْنَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٠٤﴾

१०४- और उन लोगों का पीछा करने में सुस्ती न दिखाओ, अगर तुम्हें दुःख पहुँचता है; तो उन्हें भी तो दुःख पहुँचता है जिस तरह तुमको दुःख पहुँचता है; और अल्लाह से तुम उस चीज़ की उम्मीद करते हो, जिस चीज़ की वह उम्मीद नहीं करते; अल्लाह तो सब कुछ जानने वाला, ह़िकमत वाला है।

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ
النَّاسِ بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ۗ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ
خَصِيْمًا ﴿١٠٥﴾

१०५- 'हमने' आप पर किताब ह़क़ के साथ उतारी, ताकि आप लोगों के बीच फ़ैसला उसके अनुसार करें; और आप ख़ियानत करने वालों (विश्वास घातों) की हिमायत में कभी बातें न करें।

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٦﴾

१०६- और अल्लाह से माफ़ी की दुआ़ करें, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, मेहरबान है।

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۗ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ﴿١٠٧﴾

१०७- और आप उन लोगों की ओर से बहस न कीजिए जो लोग ख़ुद अपनों के साथ ख़ियानत करते हैं, और अल्लाह ख़ियानत करने वालें मुजरिमों को पसंद नहीं करता;

يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ
وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ
الْقَوْلِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿١٠٨﴾

१०८- ये लोगों से तो छिपते हैं और अल्लाह से नहीं छिपते हालांकि 'वह' उनके साथ होता है; जब वे रातों को ऐसी बातों के मश्विरे किया करते हैं जिसको 'वह' पसंद नहीं करता, और अल्लाह उनके तमाम कामों (ज्ञान के) को घेरे में लिए हुए है।

هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ جَادَلْتُمْ عَنْهُمْ فِى الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۗ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿١٠٩﴾

१०९- भला तुम लोग दुनिया की ज़िन्दगी में तो उनकी ओर से बहस कर लेते हो, क़ियामत के दिन उनकी ओर से अल्लाह के साथ कौन बहस करेगा, और कौन उनका वकील होगा।

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ
اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١١٠﴾

११०- और जो व्यक्ति बुरा काम कर बैठे? या अपने आप पर ज़ुल्म कर ले, फिर अल्लाह से माफ़ी की दुआ़ करे, तो अल्लाह को बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला पाएगा।

وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى

१११-और जो व्यक्ति गुनाह करता है, तो वह उसका वबाल

نَفْسِهٖ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١١﴾

उसी पर है, और अल्लाह तो खूब जानने वाला, हिकमत वाला है।

وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓـَٔةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿١١٢﴾

११२- और जो व्यक्ति कोई ग़लती या गुनाह करे, फिर उसे किसी बेगुनाह पर थोप दे, तो उसने बोहतान(आरोप)और खुले गुनाह का बोझ अपने ऊपर ले लिया।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ۚ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۚ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٣﴾

११३- और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और मेहरबानी न होती, तो उनमें से एक गिरोह ने तुम को तो बहकाने का इरादा कर ही लिया था, और ये अपने सिवा किसी को बहका नहीं सकते, और न तुम्हारा कुछ बिगाड़ सकते हैं; और अल्लाह ने तुम पर किताब और हिकमत (दानाई) उतारी और उसने तुम्हें वे बातें सिखाई हैं जो तुम जानते न थे, और अल्लाह का तुम पर बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।

لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾

११४- उन लोगों की बहुत सी काना फूसियाँ अच्छी नहीं होतीं, हाँ, जो व्यक्ति सदक़ा देने या भलाई करने या लोगों के बीच सुधार करने के लिए कुछ कहे, तो उसकी बात और है; और जो कोई यह काम अल्लाह की खुशी के लिए करेगा, उसे हम ज़रूर बड़ा बदला अ़ता करेंगे।

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ۚ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾

११५- और जो व्यक्ति इसके बाद भी, कि सीधा रास्ता खुलकर उसके सामने आ गया है रसूल की मुखालिफत (विरोध) करेगा और ईमान वालों के रास्ते के सिवा और रास्ते पर चलेगा तो 'हम' उसे उसी पर चलने देंगे, जिसको उसने अपनाया होगा और उसे जहन्नम में झोंक देंगे, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا بَعِيْدًا ﴿١١٦﴾

११६- अल्लाह उस चीज़ को माफ़ नहीं करेगा कि उसके साथ किसी को साझीदार बनाया जाए, हाँ इससे कम दर्जे के गुनाह को, जिसके लिए चाहेगा, माफ़ कर देगा; और जिसने अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराया, तो वह भटक कर बहुत दूर जा पड़ा।

اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اِنٰثًا ۚ وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٧﴾

११७- यह जो अल्लाह के सिवा पुकारते हैं तो बस औ़रतों (देवियों) को, और वे तो बस सरकश शैतान को ही पुकारते हैं;

لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿١١٨﴾

११८- जिस पर अल्लाह की लानत है, उसने कहा था, ''मैं तेरे बन्दों से एक मुक़र्रर (निश्चित) हिस्सा ले कर रहूँगा,

وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُبِينًا ﴿١١٩﴾

११९- और मैं उन्हें गुमराह करके रहूँगा और उनको तमन्नाओं में उलझाऊँगा, और उन्हें हुक्म दूँगा तो वे चौपायों के कान फाड़ेंगे, और उन्हें हुक्म दूँगा, तो वे अल्लाह की बनावट में तब्दीली (परिवर्तन) करेंगे,'' और जिसने अल्लाह को छोड़ कर शैतान को दोस्त बनाया, वह खुले हुए घाटे में पड़ गया।

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾

१२०- वह उनसे वादा करता है और उन्हें तमन्नाओं में उलझाए रखता है, और शैतान उनसे जो कुछ वादा करता है वह एक धोखे के सिवा कुछ भी नहीं होता।

أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا ﴿١٢١﴾

१२१- यही वे लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और उससे बचने का कोई ठिकाना न पा सकेंगे।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ﴿١٢٢﴾

१२२- और जो लोग ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उन्हें 'हम' जल्द ही जन्नत (बाग़ों) में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे हमेशा-हमेश रहेंगे, अल्लाह का वादा सच्चा है, और अल्लाह से बढ़ कर कौन बात का सच्चा हो सकता है?

لَيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَا أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتَابِ ۗ مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ وَلَا يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٢٣﴾

१२३- बात न तुम्हारे इच्छाओं की है न अह्ले किताब के तमन्नाओं की है, जो व्यक्ति बुरे अ़मल करेगा उसे उसका बदला दिया जाएगा, और वह अल्लाह के सिवा न कोई हिमायती पाएगा और न मददगार।

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا ﴿١٢٤﴾

१२४- और जो कोई नेक काम करेगा, मर्द हो या औ़रत, और वह ईमान वाला भी हो तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, और उन को रत्ती बराबर भी ज़ुल्म न होगा।

وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۗ وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا ﴿١٢٥﴾

१२५- और दीन में उससे बेहतर कौन हो सकता है! जो अपने आप को अल्लाह के सामने झुका दे और वह मोह्सिन (निःस्वार्थ) भी हो और इब्राहीम के दीन की पैरवी करने वाला भी हो जो सब से कट कर 'सीधे रास्ते' पर हो गया था? और अल्लाह ने तो इब्राहीम को अपना दोस्त बना लिया था।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُحِيطًا ﴿١٢٦﴾

१२६- और जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है, सब अल्लाह ही का है और अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है।

وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ ۖ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِي يَتَامَى

१२७- लोग आप से औ़रतों के बारे में फ़त्वा माँगते हैं, कह दीजिए, ''अल्लाह तुम्हें उनके बारे में (निकाह का) फ़त्वा देता

النِّسَاءِ الَّتِي لَا تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْوِلْدَانِ وَأَنْ تَقُومُوا لِلْيَتَامَىٰ بِالْقِسْطِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا ﴿١٢٧﴾

है, और जो आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं यह उन यतीम औ़रतों के बारे में है, जिनके हक़ तुम अदा नहीं करते, और चाहते हो कि तुम उनके साथ निकाह कर लो; और कमज़ोर यतीम बच्चों के बारे में (भी यही हुक्म है,) और यह भी, कि तुम यतीमों के बारे में भी इन्साफ़ पर क़ायम रहो, जो भलाई भी तुम करोगे, तो अल्लाह उसे खूब जानता है।''

وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۚ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۗ وَأُحْضِرَتِ الْأَنْفُسُ الشُّحَّ ۚ وَإِنْ تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١٢٨﴾

१२८- और अगर किसी औ़रत को अपने पति की ओर से ज़्यादती या बेरूख़ी का डर हो, तो इसमें उसके लिए कोई हर्ज नहीं कि वे दोनों आपस में मेल-मिलाप की कोई राह निकाल लें, और मेल -मिलाप अच्छी चीज़ है; और तबीअ़तों (स्वभाव) में कंजूसी तो होती है, और अगर तुम अच्छा व्यवहार रखो और डरते रहो, तो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है;

وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ ۖ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ۚ وَإِنْ تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٢٩﴾

१२९- और तुमसे तो यह हो ही नहीं सकता कि औ़रतों के बीच (पूरी तरह) इन्साफ़ करो, चाहे तुम उसकी जितनी इच्छा रखते हो; तो ऐसा भी न करो, कि एक ही ओर लुढ़क जाओ और दूसरी को छोड़ दो कि गोया अधर में लटक रही हो (जैसे कि उसका पति खो गया हो,) लेकिन अगर तुम अपना व्यवहार ठीक रखो और (अल्लाह से) डरते रहो, तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है;

وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلًّا مِنْ سَعَتِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا ﴿١٣٠﴾

१३०- और अगर दोनों अलग हो जाएँ, तो अल्लाह हर एक को अपने फ़ज़्ल से बेपरवाह कर देगा, और अल्लाह बड़े फैलाव वाला, ह़िकमत वाला है।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ اتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَمِيدًا ﴿١٣١﴾

१३१- और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब अल्लाह ही का है; और तुम से पहले जिन्हें किताब दी गयी थी, उन्हें और तुम्हें भी, 'हम' ने ताकीद की है कि ''अल्लाह का डर रखो,'' अगर तुम इन्कार करते हो, तो उससे क्या होगा? आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है, सब अल्लाह ही का रहेगा, अल्लाह तो बेपरवाह तअ़रीफ़ के लायक़ है।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿١٣٢﴾

१३२- और आसमानों में जो कुछ है और ज़मीन में जो कुछ है, सब अल्लाह ही का है और काम बनाने के लिए अल्लाह काफ़ी है।

إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِآخَرِينَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ قَدِيرًا

१३३- ऐ लोगो! अगर 'वह' चाहे तो तुम्हें हटा दे, और (तुम्हारी जगह) दूसरे लोगों को ले आए, और अल्लाह को इस पर पूरी क़ुदरत है।

مَّن كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِندَ اللَّهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا بَصِيرًا

१३४- जो व्यक्ति दुनिया (में अ़मलों) का बदला चाहता है, तो अल्लाह के पास दुनिया, और आख़िरत (दोनों) के लिए बदला है और अल्लाह बड़ा सुनने वाला, देखने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ ۚ إِن يَكُنْ غَنِيًّا أَوْ فَقِيرًا فَاللَّهُ أَوْلَىٰ بِهِمَا ۖ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَن تَعْدِلُوا ۚ وَإِن تَلْوُوا أَوْ تُعْرِضُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا

१३५- ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए गवाही देते हुए इन्साफ़ पर मज़बूती से जमे रहो, चाहे वह खुद तुम्हारे अपने, या माँ-बाप और नातेदारों के ख़िलाफ़ क्यों न हो; अगर कोई ग़नी हो, या फ़क़ीर, अल्लाह (हर हाल में) दोनों से ज़्यादा ह़क़दार है, तो तुम अपनी इच्छा पूरी करने के लिए इन्साफ़ से न हटना, क्योंकि अगर तुम ग़लत चलोगे या जी चुराओगे, तो जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उसकी खूब ख़बर रखता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي أَنزَلَ مِن قَبْلُ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا

१३६- ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल और किताब पर ईमान लाओ जो उसने अपने रसूल पर उतारी है, और उस किताब पर भी, जो वह इससे पहले उतार चुका है; और जो अल्लाह और उसके फ़रिश्ते और उसकी किताबों, और उसके रसूलों, और क़ियामत के दिन का इन्कार करता है, वह गुमराही में बहुत दूर जा पड़ा।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا

१३७- जो लोग ईमान लाए, फिर इन्कार किया, फिर ईमान लाए, फिर इन्कार किया, फिर कुफ्र में बढ़ते चले गये; तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ माफ़ न करेगा और न उन्हें सीधी राह दिखाएगा।

بَشِّرِ الْمُنَافِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا

१३८- मुनाफ़िक़ों (कप्टाचारियों) को खुशख़बरी सुना दीजिए ''कि उनके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है''

الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَيَبْتَغُونَ عِندَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا

१३९- जो ईमान वालों को छोड़ कर काफ़िरों को अपना दोस्त (राज़दार) बनाते हैं, क्या यह उनके पास इज़्ज़त तलाश रहे हैं? इज़्ज़त तो सारी की सारी अल्लाह ही के लिए है।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا

१४०- और 'वह' तो तुम्हारे ऊपर इस किताब में हुक्म उतार ही चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इन्कार किया

مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهٖٓ ۖ إِنَّكُمْ إِذًا مِّثْلُهُمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِينَ وَالْكٰفِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ۙ

जा रहा है और उनका मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है, तो जब तक वे किसी दूसरी बात में न लग जाएँ, उनके पास न बैठो, वरना तुम उन्हीं जैसे हो जाओगे; बेशक अल्लाह मुनाफ़िक़ों (कप्टाचारियों) और काफ़िरों को जहन्नम में इकट्ठा करने वाला है;

الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوٓا أَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَإِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِينَ نَصِيبٌ ۙ قَالُوٓا أَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ۝

१४१- (यह वे लोग हैं) जो तुम्हारे लिए मुसीबत के पड़ने का इन्तिज़ार करते रहते हैं, तो अगर तुम्हें अल्लाह की ओर से फ़त्ह (विजय) हुई, तो कहते हैं, ''क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और अगर काफ़िरों को हिस्सा मिल जाए तो कहने लगते हैं, ''क्या हमने तुम्हें घेर नहीं लिया था?'' और हमने तुम्हें ईमान वालों से बचा नहीं लिया था, तो अल्लाह ही तुम लोगों के बीच क़ियामत के दिन फ़ैसला करेगा, और अल्लाह काफ़िरों को हरगिज़ मोमिनों पर क़ाबू न पाने देगा।

إِنَّ الْمُنٰفِقِينَ يُخٰدِعُونَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَإِذَا قَامُوٓا إِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوا كُسَالٰى ۙ يُرَآءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللّٰهَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

१४२- मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) अल्लाह के साथ धोखेबाज़ी कर रहे हैं, हालांकि अल्लाह उन की चालों को उन्हीं पर उलट रहा है; और ये लोग जब नमाज़ के लिए खड़े होते हैं, तो बहुत ही काहिली से खड़े होते हैं, लोगों को दिखाते हैं, और अल्लाह को बहुत कम याद करते हैं;

مُّذَبْذَبِينَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ إِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ إِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيلًا ۝

१४३-बीच में ही अटके हुए हैं, न इधर (ईमान वालों) के हैं, न उधर (इन्कारियों) के, और जिसे अल्लाह गुमराह रखे, उसके लिए तो तुम कोई राह नहीं पा सकते।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَتُرِيدُونَ أَنْ تَجْعَلُوا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِينًا ۝

१४४- ऐ ईमान वालो! मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों (इन्कारियों) को दोस्त मत बनाओ; क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह की खुली दलील (स्पष्ट तर्क) जुटाओ?

إِنَّ الْمُنٰفِقِينَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ۝

१४५- बेशक मुनाफिक़ आग (जहन्नम) के सबसे निचले दर्जे में होंगे और तुम उनका कोई मददगार न पाओगे;

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللّٰهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلّٰهِ فَأُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

१४६- सिवाय उन लोगों के जो तौबः कर लें, और अपने आप को सुधार लें, और अल्लाह को मज़बूती से पकड़ लें, और अपने दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस (शुद्ध) कर लें, तो ऐसे लोग मोमिनों के साथ होंगे और अल्लाह मोमिनों को जल्द ही बड़ा बदला देगा।

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ وَ

१४७- अल्लाह को तुम्हें अ़ज़ाब देकर क्या होगा, अगर तुम शुक्र

اٰمَنْتُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ۝

गुज़ारी करो और ईमान ले आओ तो अल्लाह बड़ा क़द्रदान, इल्म वाला है।

* لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ۝

१४८- अल्लाह पसंद नहीं करता खुल्लम-खुल्ला बुरी बात (किसी को) कहने को, मगर वह जो मज़लूम हो और अल्लाह खूब सुनता, जानता है।

اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ۝

१४९- अगर तुम लोग भलाई खुल्लम-खुल्ला या छिपा कर करोगे, या किसी बुराई को माफ़ कर दोगे तो अल्लाह भी माफ़ करने वाला, कुदरत वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝

१५०- जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इन्कार करते हैं, और अल्लाह और उसके रसूलों में फ़र्क़ (विभेद) करना चाहते हैं और कहते हैं, ''हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते'' और ईमान और कुफ़्र के बीच एक राह निकालना चाहते हैं;

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝

१५१- वे पक्के काफ़िर हैं और 'हमने' काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

१५२- और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी में फ़र्क़ (विभेद) न किया(यानी सब को माना), ऐसे लोगों को अल्लाह बहुत जल्द बदला अ़ता करेगा; और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, मेहरबान है।

يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝

१५३- अह्ले किताब तुमसे माँग करते हैं, कि तुम उन पर एक किताब आसमान से उतार लाओ, तो यह मूसा से इससे भी बड़ी माँग कर चुके हैं। उन्होंने कहा था, ''हमें अल्लाह को खुले तौर पर दिखा दो,'' तो उनके इस गुनाह की वजह से बिजली की कड़क ने उन्हें आ दबोचा; फिर वे बछड़े को अपना मअ़बूद बना बैठे, हालाँकि उनके पास खुली हुई निशानियाँ आ चुकी थीं, फिर 'हमने' उसे भी माफ़ कर दिया और मूसा को खुला हुआ ग़लबा (विजय) दिया।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝

१५४- और उनसे वादा (अ़हद) लेने के बाद तूर (पहाड़) को उन पर उठा दिया और उनसे कहा, ''दरवाज़े से सज्दः करते हुए दाख़िल हो,'' और उनसे कहा, ''सब्त (हफ़्ते के दिन) के बारे

में ज़्यादती न करना,'' और 'हमने' उनसे बहुत मज़बूत अ़हद (प्रतिज्ञा) लिया;

१५५- फिर उनके अ़हद (प्रतिज्ञा) तोड़ देने और अल्लाह की आयतों का इन्कार करने, और नबियों को नाहक़ क़त्ल करने, और उनके यह कहने की वजह से कि ''हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हैं'' बल्कि उनके कुफ़्र (इन्कार) की वजह से अल्लाह ने उन पर मुहर लगा दी, तो यह बहुत ही कम ईमान लाते हैं,

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥٥﴾

१५६- और उनके इन्कार की वजह से और मरयम के ख़िलाफ़ एक बड़ा बोहतान (आरोप) लगाने की वहज से-

وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿١٥٦﴾

१५७- और उनके इस कहने की वजह से कि ''हमने मरयम के बेटे ईसा मसीह, (जो) अल्लाह के रसूल (हैं), को क़त्ल कर डाला,'' हालाँकि न तो उन्होंने क़त्ल किया, और न उन्हें सूली पर चढ़ाया, बल्कि उनको उनकी सी सूरत मालूम हुई; और जो लोग उनकी मुख़ालिफ़त करते हैं वे उनके बारे में शक में पड़े हैं, और अटकल पर चलने के अ़लावा उनके पास कोई इल्म न था, और निश्चय ही उन्होंने उन (ईसा) को क़त्ल नहीं किया;

وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ﴿١٥٧﴾

१५८- बल्कि अल्लाह ने उनको अपनी ओर उठा लिया, और अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) ह़िकमत वाला है;

بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٥٨﴾

१५९- और अह्‌ले किताब में से कोई ऐसा न होगा, मगर उनकी मौत से पहले उन पर ईमान न लाया हो, और वह क़ियामत के दिन उन पर गवाह होगा।

وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ﴿١٥٩﴾

१६०- तो 'हमने' यहूदियों के ज़ुल्म की वजह से (बहुत-सी) अच्छी पाक चीज़ों को उन पर ह़राम कर दिया, जो उनके लिए ह़लाल थीं और इस वजह से भी कि वह अल्लाह के रास्ते से रोकते थे;

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ﴿١٦٠﴾

१६१- और इस वजह से भी कि मना करने के बाद भी सूद (ब्याज) लेते थे, और इस वजह से भी कि लोगों के माल नाहक़ खाते थे, और उनमें से जो काफ़िर हैं, उनके लिए 'हमने' दुःख देने वाला अ़ज़ाब तैयार कर रखा है;

وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦١﴾

१६२- मगर जो लोग उनमें से इल्म में पक्के हैं और ईमान वाले हैं, वे उस पर ईमान रखते हैं जो तुम्हारी ओर उतारा गया, और जो तुमसे पहले उतारा गया था; और नमाज़ क़ायम

لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِى الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ

الْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٦٢﴾

करते हैं, ज़कात देते है, और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं; यही लोग हैं जिन्हें 'हम' बहुत जल्द बड़ा बदला देंगे।

اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿١٦٣﴾

१६३- 'हमने' आपकी ओर उसी तरह वह्य की है जिस तरह नूह और उसके बाद के नबियों की ओर वह्य की थी और 'हमने' इब्राहीम, और इस्माईल, और इस्हाक़, और याकूब, और उसकी औलाद; और ईसा, और अय्यूब, और यूनुस, और हारून, और सुलेमान की ओर वह्य की और हमने दाऊद को ज़बूर भी अ़ता किया।

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ﴿١٦٤﴾

१६४-और बहुत से रसूल हुए जिनके ह़ालात 'हम' आप से पहले बयान कर चुके हैं, और कितने ही रसूल हैं जिनके ह़ालात आपसे बयान नहीं किये; और मूसा से तो अल्लाह ने बातें कीं, जिस तरह बात-चीत की जाती है।

رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌ ۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٦٥﴾

१६५- रसूल ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले (बना कर भेजे गये हैं,) ताकि रसूलों के आने के बाद लोगों को अल्लाह पर इल्ज़ाम का मौक़ा न रहे, और अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), ह़िकमत वाला है;

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿١٦٦﴾

१६६- लेकिन अल्लाह गवाही देता है कि उसके ज़रिये जो तुम्हारी ओर नाज़िल किया है कि उसे 'उसने' अपने इल्म के साथ उतारा है और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं, और अल्लाह का गवाह होना ही काफ़ी है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿١٦٧﴾

१६७- जिन लोगों ने इन्कार किया और अल्लाह की राह से रोका, वे भटक कर बहुत दूर जा पड़े।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ﴿١٦٨﴾

१६८- जिन लोगों ने इन्कार किया और ज़ुल्म करते रहे, उन्हें अल्लाह हरगिज़ माफ़ नहीं करेगा और न उन्हें राह ही दिखाएगा;

اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٦٩﴾

१६९- सिवाय जहन्नम के रास्ते के, जिसमें वे हमेशा पड़े रहेंगे, और यह अल्लाह के लिए बहुत ही आसान है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ

१७०- ऐ लोगो! अल्लाह के रसूल तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से ह़क़ बात लेकर आए हैं, तो तुम ईमान लाओ (यही)

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيمًا
حَكِيمًا ۝

तुम्हारे लिए बेहतर है; और अगर इन्कार करोगे तो (जान लो कि) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब अल्लाह ही का है, और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है।

يٰأَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا
عَلَى اللّٰهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ
مَرْيَمَ رَسُولُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهُ ۚ أَلْقٰهَا إِلٰى مَرْيَمَ وَرُوحٌ
مِنْهُ ۖ فَآمِنُوا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ ۖ وَلَا تَقُولُوا ثَلٰثَةٌ ۚ
انْتَهُوا خَيْرًا لَكُمْ ۚ إِنَّمَا اللّٰهُ إِلٰهٌ وَاحِدٌ ۖ سُبْحٰنَهُ أَنْ
يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ ۘ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيلًا ۝

१७१- ऐ अह्ले किताब! अपने दीन में ह़द से न बढ़ो और अल्लाह के बारे में ह़क़ के सिवा कुछ न कहो; मसीह़ मरयम के बेटे, अल्लाह के रसूल और उसका 'कलिमा' थे, जो उसने मरयम की ओर भेजा था; और उसकी ओर से एक रूह थे, तो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ, और न कहो (कि अल्लाह) ''तीन'' है- (इस से) बाज़ आ जाओ! यह तुम्हारे लिए ही बेहतर है- अल्लाह ही अकेला मअ़बूद है, और इससे पाक है कि उसके कोई औलाद हो, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब 'उसी' का है; और अल्लाह ही काम बनाने वाला काफ़ी है।

لَنْ يَسْتَنْكِفَ الْمَسِيحُ أَنْ يَكُونَ عَبْدًا لِلّٰهِ وَلَا
الْمَلٰئِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ ۚ وَمَنْ يَسْتَنْكِفْ عَنْ
عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ إِلَيْهِ جَمِيعًا ۝

१७२- मसीह़ कभी अपने लिए बुरा नहीं समझते थे कि वे अल्लाह के बन्दे हों और न मुक़र्रब फ़रिश्ते, (बुरा समझते है) और जो व्यक्ति अल्लाह की बन्दगी को अपने लिए बुरा समझेगा और घमंड करेगा, तो अल्लाह उन सबको अपने पास इकट्ठा करके रहेगा।

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيهِمْ
أُجُورَهُمْ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۖ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنْكَفُوا
وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۙ وَلَا يَجِدُونَ
لَهُمْ مِنْ دُونِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

१७३- तो जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे काम किये, तो अल्लाह उन्हें उनका पूरा-पूरा बदला देगा और अपने फ़ज़्ल से कुछ ज़्यादा ही देगा और जिन लोगों ने बन्दगी को बुरा समझा, और घमण्ड किया, उनको वह दुःख देने वाला अ़ज़ाब देगा, और वे अल्लाह से बच पाने के लिए न कोई हामी (समर्थक) पाएँगे और न मदद्गार।

يٰأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهٰنٌ مِنْ رَبِّكُمْ
وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُبِينًا ۝

१७४- ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुली दलील आ चुकी है और 'हमने' तुम्हारी ओर खुला हुआ नूर भेज दिया है।

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي
رَحْمَةٍ مِنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرٰطًا
مُسْتَقِيمًا ۝

१७५- तो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाएं और उसको मज़बूत पकड़े रहें, उनको वह अपनी रह़मत और फ़ज़्ल में दाख़िल करेगा और अपनी ओर का सीधा रास्ता दिखा देगा।

يَسْتَفْتُونَكَ ۚ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ ۚ إِنِ
امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ
مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَا إِن لَّمْ يَكُن لَّهَا وَلَدٌ ۚ فَإِن
كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِن
كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ
الْأُنثَيَيْنِ ۗ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَن تَضِلُّوا ۗ وَاللَّهُ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧٦﴾

१७६- लोग आप से (कलाला के बारे में) फ़त्वा पूछते हैं, कह दीजिए, ''अल्लाह कलाला (जिसका कोई वारिस न हो) के बारे में यह हुक्म देता है, ''कि अगर कोई ऐसा मर्द मर जाए जिसके औलाद न हो, और उसकी एक बहन हो, तो जो कुछ उसने छोड़ा है उसका आधा हिस्सा उस बहन का होगा, और भाई बहन का वारिस होगा, अगर उस (बहन) की कोई औलाद न हो; और अगर (वारिस) दो बहनें हों, तो जो कुछ उसने छोड़ा है, उसमें से उनके लिए दो तिहाई हिस्सा होगा, और अगर कई भाई बहन (वारिस) हों तो एक मर्द का हिस्सा दो औ़रतों के बराबर होगा।'' अल्लाह तुम्हारे लिए हुक्मों को बयान करता है, ताकि तुम भटकते न फिरो, और अल्लाह हर चीज़ को जानता है।



अनुवाद-सूरतुल्माइदति

यह सूरः मदनी है, इसमें अ़रबी के १३४६४ अक्षर,२८४२ शब्द १२० आयतें और १६ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- ऐ ईमान वालो! अपने इक़रारों (प्रतिज्ञाओं) को पूरा करो, तुम्हारे लिए चौपायों की जाति के जानवर ह़लाल कर दिये गये हैं सिवाय उनके, जो तुम्हें पढ़ कर सुनाये जाते हैं; मगर जब तुम एह़राम की ह़ालत में हो तो शिकार को ह़लाल न समझना, अल्लाह जो चाहता है हुक्म देता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۬ اُحِلَّتْ لَكُمْ
بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى
الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ۝

२- ऐ ईमान वालो! अल्लाह की निशानियों की बेहुर्मती (अनादर) न करना; न अदब वाले महीने (अर्थात रजब, ज़ीकअ़दः, ज़िल्हिज्जः, और मुहर्रम) की न क़ुर्बानी के जानवरों की, और न उन जानवरों की जिनकी गर्दनों में पट्टे पड़े हों, और न उन लोगों की जो अपने रब के फ़ज़्ल और उसकी खुशनूदी की चाह में इज़्ज़त वाले घर (कअ़बः) को जा रहे हों, और जब एह़राम की ह़ालत से बाहर हो जाओ तो शिकार करो, और ऐसा न हो कि एक गिरोह की दुश्मनी, जिसने तुम्हारे लिए इज़्ज़त वाले घर का रास्ता बन्द कर दिया था, तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम उन पर ज़्यादती करने लगो; और नेकी और परहेज़गारी के कामों में एक-दूसरे की मदद किया करो; और गुनाह और ज़ुल्म की बातों में मदद न किया करो, और अल्लाह से डरते रहो, कुछ शक नहीं कि अल्लाह का अ़ज़ाब बहुत सख़्त है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا
الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَآ
آٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ
وَرِضْوَانًا ۭ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ۭ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ
شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ
تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۠ وَلَا تَعَاوَنُوْا
عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ
الْعِقَابِ ۝

३- तुम्हारे लिए ह़राम किया गया मुर्दार, (मरे हुए जानवर) और (बहता हुआ) खून, और सुअर का गोश्त, और वह

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ
وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ

وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ
السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ
وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْلَامِ ذَٰلِكُمْ فِسْقٌ الْيَوْمَ يَئِسَ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ
الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ
نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا فَمَنِ اضْطُرَّ
فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِإِثْمٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۝

जानवर जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो, और वह जानवर जो गला घुंट कर मर जाए, और जो चोट खाकर मर जाए, और जो गिर कर मर जाए, और जो सींग लगने से मरा हो या जिसे किसी दरिन्दे (हिन्सक पशु) ने फाड़ खाया हो- सिवाय उसके जिसे तुमने (मरने से पहले) ज़ब्ह़ कर लिया हो- और वह जो किसी थान (स्थाने) पर ज़ब्ह़ किया गया हो; और यह भी (ह़राम है) कि तीरों के ज़रिये क़िस्मत मालूम करो, यह सब गुनाह हैं। आज काफ़िर तुम्हारे दीन से नाउम्मीद हो गये हैं, तो तुम उनसे मत डरो, बल्कि मुझ ही से डरते रहो। आज 'हमने' तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दीं, और तुम्हारे लिए 'हमने' धर्म के रूप में इस्लाम को पसंद किया- तो जो व्यक्ति भूख से लाचार हो जाए- लेकिन गुनाह की ओर उसका झुकाव न हो, तो अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ
وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ
اللَّهُ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ
عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

४- आप से पूछते हैं, ''उनके लिए कौन-कौन सी चीज़ें ह़लाल हैं?'' कह दीजिए, ''सब पाकीज़ा (स्वच्छ) चीज़ें ह़लाल हैं, और जिन शिकारी जानवरों को तुमने सधे हुए शिकारी जानवरों के रूप में साध रखा हो- और जिस तरह अल्लाह ने तुम्हें (शिकार करना) सिखाया है (उस तरीक़े से) तुमने उनको सिखाया हो- तो जो शिकार तुम्हारे लिए पकड़ लाएँ उसको खाओ और उस पर अल्लाह का नाम लो, और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह जल्द ह़िसाब लेने वाला है।''

الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ حِلٌّ لَكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَهُمْ وَالْمُحْصَنَاتُ
مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ مُحْصِنِينَ
غَيْرَ مُسَافِحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ وَمَنْ يَكْفُرْ
بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ
الْخَاسِرِينَ ۝

५- आज तुम्हारे लिए सब पाक चीज़ें ह़लाल कर दी गयीं और अह्ले किताब का खाना भी तुमको ह़लाल है, और तुम्हारा खाना उनको ह़लाल है, और पाक दामन आज़ाद मोमिन औ़रतें, और वे शरीफ़ आज़ाद औ़रतें भी, जो तुमसे पहले अह्ले किताब वालों में से हों, जबकि तुम उनका ह़क़ (महर) देकर उन्हें निकाह में ले आओ, न तो यह काम खुली बदकारी के लिए हों और न चोरी-छिपे दोस्ती करने को, और जिस

व्यक्ति ने ईमान से इन्कार किया, उसका सारा किया-धरा बेकार हो गया और वह आख़िरत में भी घाटे में रहेगा।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوٓا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَوٰةِ
فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا
بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۚ وَإِن كُنتُمْ جُنُبًا
فَاطَّهَّرُوا ۚ وَإِن كُنتُم مَّرْضَىٰٓ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَآءَ
أَحَدٌ مِّنكُم مِّنَ الْغَآئِطِ أَوْ لَٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ
تَجِدُوا مَآءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا
بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُم مِّنْهُ ۚ مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ
عَلَيْكُم مِّنْ حَرَجٍ وَلَٰكِن يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ
نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

६- ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो, (इरादा करो) तो अपने चेहरों को, और हाथों को कोहिनों तक धो लिया करो, और अपने सरों पर हाथ फेर लिया करो, और अपने पैरों को भी टख़नों तक धो लिया करो; और अगर नहाने की ज़रूरत हो तो पाक हो जाया करो- और अगर बीमार हो, या सफ़र में हो, या तुम में से कोई बैतुलख़ला (शौच) करके आया हो, या तुमने औरतों को हाथ लगाया (सम्भोग) हो, फिर पानी न मिले तो पाक मिट्टी से काम लो, (उस पर हाथ मार कर) अपने मुँह और हाथों पर फेर लिया करो- अल्लाह तुम्हें किसी तंगी में नहीं डालना चाहता, बल्कि 'वह' चाहता है कि तुम्हें पाक करे और अपनी नेअ़मतें तुम पर पूरी कर दे, ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो।

وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي
وَاثَقَكُم بِهِ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ وَاتَّقُوا
اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

७- और अल्लाह ने तुम पर जो एहसान किये हैं उसको याद करो और उस अ़हद (प्रतिज्ञा) को भी जो 'उसने' तुमसे किया था, जबकि तुमने कहा था हमने सुना और माना," और अल्लाह का डर रखो, बेशक अल्लाह सीनों की बातों को जानता है।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ
شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَىٰٓ
أَلَّا تَعْدِلُوا ۚ اعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۖ وَاتَّقُوا
اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

८- ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए इन्साफ़ की गवाही देने के लिए खड़े हो जाया करो और लोगों की दुश्मनी तुमको इस बात पर तैयार न करे कि इन्साफ़ छोड़ दो; इन्साफ़ किया करो, यही परहेज़गारी की बात है; और अल्लाह से डरते रहो, बेशक जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसकी ख़ूब ख़बर रखता है।

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۙ لَهُم
مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

९- और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये, उनसे अल्लाह का वादा है, 'कि उनके लिए मग्फ़िरत (माफ़ी) और बड़ा अज्र (बदला) है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰٓئِكَ أَصْحَابُ

१०- और जिन्होंने इन्कार किया और हमारी आयतों को

الْجَحِيمِ ﴿١٠﴾

झुठलाया, वे भड़कती हुई आग में पड़ने वाले हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هَمَّ قَوْمٌ أَنْ يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

११- ऐ ईमान वालो! अल्लाह के इनआ़म को याद करो जो उसने तुम पर किया है, जब कि एक जमाअ़त ने इरादा किया था कि तुम पर हाथ उठाएँ, तो उसने उनके हाथ तुमसे रोक दिये; और अल्लाह से डरते रहो, और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا ۖ وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ ۖ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿١٢﴾

१२- और अल्लाह ने बनीइस्राईल से वादा लिया था, और 'हमने' उनमें बारह सरदार मुक़र्रर किये थे; फिर अल्लाह ने कहा था, मैं तुम्हारे साथ हूँ, अगर तुमने नमाज़ क़ायम रखी, और ज़कात देते रहे, और मेरे रसूलों पर ईमान लाए, और उनकी मदद की और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया, तो 'मैं' ज़रूर तुम्हारी बुराइयाँ तुमसे दूर कर दूँगा, और ज़रूर तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी; फिर इसके बाद तुम में से जिसने इन्कार किया हो, तो वह सही़ रास्ते से भटक गया।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً ۖ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ ۙ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَىٰ خَائِنَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣﴾

१३- फिर उन लोगों के अ़हद (प्रतिज्ञा) तोड़ने की वजह से 'हमने' उन पर लानत की, और उनके दिल सख़्त कर दिये; यह लोग शब्दों को उसकी जगह से फेर कर कुछ का कुछ कर देते हैं; और जिन बातों की उनको नसीह़त की गयी थी, उसका भी एक हिस्सा भुला बैठे, और थोड़े लोगों के सिवा हमेशा उनकी खियानत की खबर पाते रहते हो। तो तुम उन्हें माफ़ कर दो और उन्हें छोड़ दो, अल्लाह एह़सान करने वालों को पसंद करता है।

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَارَىٰ أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١٤﴾

१४- और जो लोग कहते हैं कि हम नसारा हैं 'हमने' उन लोगों से भी अहद लिया था, लेकिन उन्होंने भी उस नसीह़त का, जो उनको की गयी थी एक हिस्सा भुला दिया; तो 'हमने' उनके आपस में क़ियामत तक के लिए दुश्मनी और कीना (ईर्ष्या) डाल दिया, और जो कुछ वे करते रहे, अल्लाह बहुत जल्द उन्हें बता देगा।

يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ قَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمۡ كَثِيرٗا مِّمَّا كُنتُمۡ تُخۡفُونَ مِنَ ٱلۡكِتَٰبِ وَيَعۡفُواْ عَن كَثِيرٖۚ قَدۡ جَآءَكُم مِّنَ ٱللَّهِ نُورٞ وَكِتَٰبٞ مُّبِينٞ ۝١٥

१५- ऐ अह्ले किताब! तुम्हारे पास हमारा रसूल आ गया है, जो कुछ तुम किताब में छिपाते थे, उसमें से बहुत सी बातें वह खोल-खोल कर बता देता है और बहुत-सी बातों को माफ़ कर देता है, बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से नूर और खुली किताब आ चुकी है,

يَهۡدِي بِهِ ٱللَّهُ مَنِ ٱتَّبَعَ رِضۡوَٰنَهُۥ سُبُلَ ٱلسَّلَٰمِ وَيُخۡرِجُهُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِ بِإِذۡنِهِۦ وَيَهۡدِيهِمۡ إِلَىٰ صِرَٰطٖ مُّسۡتَقِيمٖ ۝١٦

१६- जिसके ज़रिये अल्लाह उस व्यक्ति को जो 'उसकी' रज़ा ह़ासिल करना चाहता हो, सलामती की राहें दिखाता है, और 'अपने' हुक्म से लोगों को अन्धेरों से निकाल कर उजाले की ओर ले आता है और उन्हें सीधे रास्ते पर चलाता है।

لَّقَدۡ كَفَرَ ٱلَّذِينَ قَالُوٓاْ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلۡمَسِيحُ ٱبۡنُ مَرۡيَمَۚ قُلۡ فَمَن يَمۡلِكُ مِنَ ٱللَّهِ شَيۡـًٔا إِنۡ أَرَادَ أَن يُهۡلِكَ ٱلۡمَسِيحَ ٱبۡنَ مَرۡيَمَ وَأُمَّهُۥ وَمَن فِي ٱلۡأَرۡضِ جَمِيعٗاۗ وَلِلَّهِ مُلۡكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَاۚ يَخۡلُقُ مَا يَشَآءُۚ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ ۝١٧

१७- बेशक उन लोगों ने इन्कार किया, जिन्होंने कहा, ''अल्लाह तो वही मरयम का बेटा 'मसीह़' है।'' कह दीजिए ''कि अगर अल्लाह मरयम के बेटे, मसीह़ को और उनकी माँ (मरयम) को और जितने लोग ज़मीन में हैं सब को हलाक (विनष्ट) करना चाहे तो उसके आगे किस का बस चल सकता है? और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और ज़मीन की, और जो कुछ इन दोनों में है उसकी भी, 'वह' जो चाहता है पैदा करता है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।''

وَقَالَتِ ٱلۡيَهُودُ وَٱلنَّصَٰرَىٰ نَحۡنُ أَبۡنَٰٓؤُاْ ٱللَّهِ وَأَحِبَّٰٓؤُهُۥۚ قُلۡ فَلِمَ يُعَذِّبُكُم بِذُنُوبِكُمۖ بَلۡ أَنتُم بَشَرٞ مِّمَّنۡ خَلَقَۚ يَغۡفِرُ لِمَن يَشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَآءُۚ وَلِلَّهِ مُلۡكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَاۖ وَإِلَيۡهِ ٱلۡمَصِيرُ ۝١٨

१८- और यहूदी और ईसाई कहते हैं, ''हम तो अल्लाह के बेटे और उसके चहीते हैं।'' कह दीजिए, ''फिर 'वह' तुम्हारे गुनाहों पर अ़ज़ाब क्यों देता है? (बात यह नहीं) बल्कि तुम भी उसकी मख़्लूक़ात में से (दूसरों की तरह) इन्सान हो; 'वह' जिसे चाहे माफ़ करे जिसे चाहे अ़ज़ाब दे और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके बीच है, और (सब को) 'उसी' की ओर लौट कर जाना है।

يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ قَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمۡ عَلَىٰ فَتۡرَةٖ مِّنَ ٱلرُّسُلِ أَن تَقُولُواْ مَا جَآءَنَا مِنۢ بَشِيرٖ وَلَا نَذِيرٖۖ فَقَدۡ جَآءَكُم بَشِيرٞ وَنَذِيرٞۗ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ ۝١٩

१९- ऐ अह्ले किताब! अब तुम्हारे पास 'हमारे' रसूल आ गये हैं जो तुमसे ('हमारे' हुक्म) बयान करते हैं, (जबकि) रसूलों का सिल्सिला (बड़ी मुद्दत से) बन्द था, ताकि तुम यह न कह सको कि ''हमारे पास कोई खुशख़बरी देने वाला, या सचेत

करने वाला नहीं आया।'' तो देखो! अब तुम्हारे पास ख़ुशख़बरी देने वाले, और सचेत करने वाले आ गये हैं, और अल्लाह तो हर चीज़ पर क़ादिर है।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنبِيَاءَ وَجَعَلَكُم مُّلُوكًا
وَآتَاكُم مَّا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ﴿٢٠﴾

२०- और (याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की उस नेअ़मत को याद करो जो उसने तुम पर की हैं, 'उसने' तुममें नबी पैदा किये और तुम्हें बादशाह बनाया और तुमको इतना कुछ दिया कि दुनिया वालों में से किसी को नहीं दिया;

يَا قَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ
اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِكُمْ فَتَنقَلِبُوا
خَاسِرِينَ ﴿٢١﴾

२१- ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम इस पाक ज़मीन में दाख़िल हो, जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है, और पीछे न हटो, वरना नुक़सान में पड़ जाओगे।''

قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ وَإِنَّا لَن
نَّدْخُلَهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِن يَخْرُجُوا مِنْهَا
فَإِنَّا دَاخِلُونَ ﴿٢٢﴾

२२- वे कहने लगे, ऐ मूसा! वहाँ तो बड़े ज़बर्दस्त लोग (रहते) हैं, और हम वहाँ हरगिज़ दाख़िल नहीं हो सकते, जब तक कि वह वहाँ से निकल न जाएँ; हाँ, अगर वे (ज़ालिम) वहाँ से निकल जाएँ, तो हम जा दाख़िल होंगे।''

قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمَا
ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ
غَالِبُونَ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِن كُنتُم
مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾

२३- उन डरने वालों में दो व्यक्ति ऐसे भी थे जिन पर अल्लाह की ओर से इनआ़म था, उन्होंने कहा, ''उन लोगों के मुक़ाबले में दरवाज़े से दाख़िल हो जाओ, जब तुम उसमें दाख़िल हो जाओगे, तो तुम ही ग़ालिब (विजयी) होगे;, अल्लाह पर भरोसा रखो अगर तुम ईमान वाले हो,''

قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا أَبَدًا مَّا دَامُوا
فِيهَا فَاذْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا
قَاعِدُونَ ﴿٢٤﴾

२४- (उन्होंने) कहा, ''मूसा! जब तक वे लोग वहाँ हैं, हम तो वहाँ कभी नहीं जा सकते, तो जाओ तुम और तुम्हारा रब दोनों लड़ो, हम तो यहीं बैठे रहेंगे,''

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي فَافْرُقْ بَيْنَنَا
وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٥﴾

२५- (मूसा ने) कहा, ''मेरे रब! मैं ख़ुद अपने, और अपने भाई के अ़लावा किसी पर अख़्तियार (भरोसा) नहीं रखता, तो हममें और इन नाफ़रमान लोगों के बीच जुदाई कर दे,''

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً

२६- फ़रमाया, ''अच्छा तो अब यह (भूमि) चालीस साल तक

इनके लिए ह़राम है; ये ज़मीन में मारे-मारे फिरते रहेंगे, तो तुम इन नाफ़रमान लोगों के ह़ाल पर अफ़सोस न करो।''

يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِينَ ۝

२७- और इन्हें आदम के दो बेटों (हाबील और क़ाबील) के ह़ालात पढ़ कर सुना दीजिए, कि जब उन दोनों ने क़ुर्बानी की, तो उन में से एक की क़ुर्बानी क़ुबूल हुई और दूसरे की क़ुबूल न हुई, उसने कहा, ''मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर डालूँगा,'' कहा, ''अल्लाह तो उन्हीं को (क़ुर्बानी) क़ुबूल करता है, जो परहेज़गार हैं।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ۭ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ۭ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝

२८- अगर तू मुझे क़त्ल करने के लिए हाथ बढ़ाएगा, तो मैं तुझको क़त्ल करने के लिए हाथ नहीं बढ़ाऊँगा, मैं तो अल्लाह से डरता हूँ, जो सारे संसार का रब है;

لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِيْ مَآ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

२९- मैं तो चाहता हूँ कि मेरा गुनाह और अपना गुनाह, तू ही अपने सर ले ले, फिर आग (जहन्नम) में पड़ने वालों में से हो जाए, और यही ज़ालिमों का बदला है।''

اِنِّيْٓ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْۗاَ بِاِثْمِيْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰۗؤُا الظّٰلِمِيْنَ ۝

३०- मगर उसके जी ने उसे उसके भाई के क़त्ल पर उभारा, तो उसने उसे क़त्ल कर दिया और घाटे में पड़ गया;

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝

३१- फिर अल्लाह ने एक कौआ भेजा जो ज़मीन कुरेदने लगा; ताकि उसको दिखा दे कि वह अपने भाई की लाश को कैसे छिपाये, कहने लगा, अफ़सोस मुझ पर! क्या मैं कौए जैसा भी न हो सका कि अपने भाई की लाश छिपा देता? वह शर्मिन्दा हुआ;

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِي الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِيْ سَوْءَةَ اَخِيْهِ ۭ قَالَ يٰوَيْلَتٰٓى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِيَ سَوْءَةَ اَخِيْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ۝

३२- इसी वजह से हमने बनी इस्राईल के लिए लिख दिया था कि जिसने किसी व्यक्ति को, किसी के खून का बदला लेने या धरती में फ़साद फैलाने के अ़लावा किसी और वजह से क़त्ल कर डाला, तो मानों उसने सारे ही इन्सानों को क़त्ल कर दिया और जिसने उसे ज़िन्दगी दिया, 'उसने मानो सारे इन्सानों को ही ज़िन्दगी दिया, और उन लोगों के पास 'हमारे' रसूल खुली दलीलें ला चुके हैं, फिर भी उनमें बहुत से लोग ज़मीन में ज़्यादती करने वाले ही हैं।

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚ كَتَبْنَا عَلٰي بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ۭ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ۭ وَلَقَدْ جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ۡ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ۝

إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِنْ خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ۚ ذَٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٣﴾

३३- जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और धरती में बिगाड़ पैदा करने के लिए दौड़-धूप करते हैं, उनकी सज़ा तो बस यही है कि बुरी तरह क़त्ल किये जाएँ, या सूली पर चढ़ा दिये जाएँ, या उनके एक ओर के हाथ और दूसरी ओर के पाँव काट दिये जाएँ, या उन्हें देश से निकाल दिया जाए, यह तो दुनिया में उनकी रूसवाई है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब है;

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۖ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣٤﴾

३४- हाँ जो लोग, इससे पहले कि तुम्हें उन पर अधिकार मिले, तौबः कर लें तो जान लो कि अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, मेहरबान है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾

३५- ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और उसका क़ुर्ब (निकटता) ह़ासिल करते रहो, और उसके रास्ते में जिहाद करते रहो, ताकि तुम कामियाब हो जाओ।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٦﴾

३६- जिन लोगों ने इन्कार किया अगर उन के पास वह सब कुछ हो जो सारी धरती में है और उतना ही उनके साथ और भी हो, कि वह उसे देकर क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से बच जाएँ, तो उसे क़ुबूल नहीं किया जाएगा, और उनके लिए तो दर्द देने वाला अ़ज़ाब होगा;

يُرِيدُونَ أَنْ يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنْهَا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُقِيمٌ ﴿٣٧﴾

३७- वे चाहेंगे कि आग से निकल जाएँ, मगर उससे नहीं निकल सकेंगे, और उनके लिए हमेशा का अ़ज़ाब है।

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٣٨﴾

३८- और जो चोरी करे, मर्द हो या औ़रत, उनके हाथ काट दो, यह उनके करतूतों का बदला है और अल्लाह की ओर से सीख है; और अल्लाह ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाला है।

فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣٩﴾

३९- फिर जो व्यक्ति गुनाह के बाद तौबः करे और भला बन जाए, तो अल्लाह उसको माफ़ कर देगा, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ
يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾

४०- क्या तुम नहीं जानते कि आसमानों और ज़मीन में अल्लाह ही की बादशाही है, 'वह' जिसे चाहे अ़ज़ाब दे और जिसे चाहे माफ़ कर दे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

يٰٓأَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي
الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ
تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ
سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ
لَمْ يَأْتُوْكَ ۖ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ
مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ إِنْ أُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ
وَإِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ۚ وَمَنْ يُّرِدِ
اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا ۚ
أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ أَنْ يُّطَهِّرَ
قُلُوْبَهُمْ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖ وَّلَهُمْ فِي
الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٤١﴾

४१- ऐ रसूल! जो लोग कुफ़्र में जल्दी करते हैं, उनकी वजह से आप दुखी न हों; वे जो अपने मुँह से कहते हैं कि ''हम ईमान ले आए'' लेकिन उनके दिल ईमान नहीं लाए; और वे जो यहूदी हैं, वे झूठ के लिए कान लगाते हैं, वह दूसरे लोगों की सुनते हैं, जो अभी आपके पास नहीं आए, बातों को उनकी जगहों के बाद बदल देते हैं, और कहते हैं, ''अगर तुमको यही (हुक्म) मिले, तो इसे क़ुबूल कर लेना अगर यह न मिले तो उससे बचना'' और अगर किसी को अल्लाह गुमराह करना ही चाहे तो उसके लिए आप कुछ भी अल्लाह से अख़्तियार नहीं रखते, ये वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने पाक करना नहीं चाहा, उनके लिए दुनिया में भी ज़िल्लत है और आख़िरत में भी बड़ा अ़ज़ाब है;

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ أَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ۚ فَإِنْ جَآءُوْكَ
فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَإِنْ تُعْرِضْ
عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْئًا ۚ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ
بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٢﴾

४२- वे झूठी बातें बनाने के लिए कान लगाने वाले और ह़राम माल खाने वाले हैं, तो अगर वे आप के पास आएँ, तो आप उनके बीच फ़ैसला कर दीजिए या उन्हें टाल जाइए, अगर आप उन्हें टाल दें तो वे आप का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, लेकिन अगर फ़ैसला कीजिए तो उनके बीच इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कीजिए, अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसंद करता है।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا
حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ وَمَآ أُولٰٓئِكَ
بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٣﴾

४३- और कैसे वे आप से फ़ैसला कराएँगे जबकि खुद उनके पास तौरात है, जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है! फिर उसके बाद भी वे मुँह मोड़ते हैं, और यह लोग ईमान ही नहीं रखते।

إِنَّآ أَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ
بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ أَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا
وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ

४४- बेशक 'हमने' तौरात उतारी, जिसमें हिदायत (मार्ग-दर्शन) और रोशनी थी उसी के मुताबिक़ नबी, जो (अल्लाह के) फ़रमाँबरदार थे, यहूदियों को हुक्म देते रहे हैं, और अल्लाह

كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۴﴾

वाले और उलमा भी, क्योंकि वे अल्लाह की किताब के निगहबान (संरक्षक) मुक़र्रर किये गये थे, और इस पर गवाह थे; तो आप लोगों से न डरिए, बल्कि 'मुझ' ही से डरिए, और मेरी आयतों के बदले थोड़ी सी भी क़ीमत न लीजिएगा! और जो अल्लाह के नाज़िल किये हुए हुक्मों के मुताबिक़ हुक्म न दे, तो ऐसे ही लोग काफ़िर हैं।

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۵﴾

४५- और 'हमने' उन लोगों के लिए तौरात में यह हुक्म लिख दिया था कि जान के बदले जान, और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक, और कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत और हर (क़िस्म के सब) ज़ख़्मों का इसी तरह का बदला है, लेकिन जो व्यक्ति बदला माफ़ कर दे वह उसके लिए कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) होगा; और जो लोग अल्लाह के नाज़िल किये हुए हुक्मों के मुताबिक़ हुक्म न दे, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं।

وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۪ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۶﴾

४६- और उनके पीछे उन्हीं के क़दमों (पदचिन्हों) पर 'हमने' मरयम के बेटे, ईसा, को भेजा, जो पहले से उनके सामने मौजूद किताब, 'तौरात' की तस्दीक़ करने वाले थे; और 'हमने' उन्हें इन्जील दी, जिसमें हिदायत (मार्ग-दर्शन) और नूर है, और तौरात की, जो इससे पहले की है, तस्दीक़ करने वाली, और परहेज़गारों को राह बताने वाली और नसीहत करने वाली है।

وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۴۷﴾

४७- और इन्जील वालों को चाहिए कि जो हुक्म अल्लाह ने उसमें नाज़िल किये हैं उसके मुताबिक़ हुक्म दिया करें और जो अल्लाह के नाज़िल किये हुए हुक्मों के मुताबिक़ हुक्म न देंगे, तो ऐसे ही लोग नाफ़रमान हैं।

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۚ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

४८- और 'हमने' आप की ओर यह किताब हक़ के साथ उतारी है, जो उस किताब की तस्दीक़ करती है जो इसके पहले से मौजूद है और जो उसकी मुहाफ़िज़ (संरक्षक) है; और उनके बीच मामलों में आप वही फ़ैसला कीजिए जो अल्लाह ने उतारा है; और जो हक़ तुम्हारे पास आ चुका है

لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ
اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۭ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ

उसे छोड़ कर उनकी इच्छाओं के पीछे न चलिएगा, 'हमने' तुममें से हर एक के लिए एक दस्तूर और एक तरीक़ा मुक़र्रर किया है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत (समुदाय) बना देता; लेकिन जो कुछ 'उसने' तुम्हें (हुक्म) दिया है उसमें वह तुम्हारा इम्तिहान लेना चाहता है, तो तुम भलाई के कामों में एक-दूसरे से आगे बढ़ो; तुम सब को अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है, फिर 'वह' तुम्हें बता देगा, जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ करते थे;

وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ
اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ
بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ
اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ۭ
وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ

४९- और यह कि तुम उनके बीच वही फ़ैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है, और उनकी इच्छाओं के पीछे न चलो और उनसे बचते रहो कि 'कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें धोखे में डाल कर, जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारी ओर उतारा है, उसके किसी हिस्से से तुम्हें हटा दे; फिर अगर वे मुँह मोड़ें तो जान लो कि अल्लाह उनके कुछ गुनाहों की वजह से उन पर मुसीबत डालना चाहता है; और अकसर लोग तो नाफ़रमान हैं;

اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ۭ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ
اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ

५०- क्या वे जाहिलियत (अज्ञानता) का फ़ैसला चाहते हैं? और यक़ीन करने वाले लोगों के लिए, अल्लाह से अच्छा फ़ैसला करने वाला कौन हो सकता है?

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى
اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ
مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ

५१- ऐ ईमान वालो! तुम यहूद और नसारा (ईसाइयों) को अपना दोस्त न बनाओ, ये आपस में एक-दूसरे के दोस्त हैं, और जो व्यक्ति उन्हें अपना दोस्त बनाएगा, वह उन्हीं लोगों में से होगा, बेशक अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता;

فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ
فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى اَنْ تُصِيْبَنَا دَاۗىِٕرَةٌ ۭ
فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ
فَيُصْبِحُوْا عَلٰي مَآ اَسَرُّوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ

५२- तो तुम देखते हो कि जिन लोगों के दिलों में रोग है, वह उनमें दौड़-दौड़ कर मिल जाते हैं; कहते हैं, ''हमें डर है कि हम कहीं किसी मुसीबत में न पड़ जाएँ,'' तो उम्मीद है कि अल्लाह जल्द ही फ़त्ह़ (विजय) दे या अपनी ओर से कोई हुक्म दे, तो यह लोग जो कुछ अपने जी में छिपाये हुए हैं, उस पर शर्मिन्दा होंगे;

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَاۗءِ الَّذِيْنَ

५३- और ईमान वाले कहेंगे, क्या ये वही लोग हैं जो अल्लाह

की बड़ी-बड़ी क़समें खाकर यक़ीन दिलाते थे, कि 'हम' तुम्हारे साथ हैं?" इनका किया धरा सब बेकार हुआ और यह सब घाटे में पड़ गये।

أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خَاسِرِينَ

५४- ऐ ईमान वालो! तुममें से जो कोई अपने दीन से फिरेगा, तो अल्लाह जल्द ही ऐसे लोगों को लाएगा, जिनसे उसे मुहब्बत होगी और जो उससे मुहब्बत करेंगे, वे ईमान वालों के लिए नर्म और काफ़िरों के लिए सख़्त होंगे, अल्लाह की राह में जिहाद (जी तोड़ कोशिश) करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरेंगे; यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, 'वह' जिसे चाहता है देता है, और अल्लाह बड़ा वसीअ़ (व्यापक) जानने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ

५५- तुम्हारे दोस्त तो अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वाले ही हैं; जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते। और (अल्लाह के आगे) झुकते हैं।

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ

५६- और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों से दोस्ती करेगा, तो (वह अल्लाह की जमाअ़त में शामिल होगा और) अल्लह का गिरोह ही ग़ालिब (प्रभावी) होने वाला है।

وَمَنْ يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ

५७- ऐ ईमान वालो! तुमसे पहले जिन लोगों को किताबें दी गयी थीं, और जिन्हों ने तुम्हारे दीन को हँसी खेल बना लिया है उन्हें, और काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाओ; और अल्लाह का डर रखो, अगर तुम ईमान वाले हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُوًا وَلَعِبًا مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَاءَ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

५८- और जब तुम लोग नमाज़ के लिए पुकारते (अज़ान देते) हो, तो यह उसे भी हँसी और खेल बना लेते हैं, यह इस वजह से है कि ना समझ हैं।

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا هُزُوًا وَلَعِبًا ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ

५९- कह दीजिए, "ऐ अह्ले किताब क्या इसके सिवा, हमारी कोई और बात तुम्हें बुरी लगती है, कि हम अल्लाह और उस चीज़ पर ईमान लाएं, जो हमारी ओर उतारी गयी; और जो

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنْقِمُونَ مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فَاسِقُونَ

पहले उतारी जा चुकी है? और यह कि तुम में अक्सर लोग नाफ़रमान हैं।''

६०- कह दीजिए, ''क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह के यहां इससे भी बुरा बदला पाने वाले कौन हैं? वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की और जिन पर 'उसका' ग़ज़ब हुआ और जिसमें से 'उसने' बन्दर और सुअर बनाए और जिसने शैतान की बन्दगी की, ऐसे लोगों का बुरा ठिकाना है और वे सीधे रास्ते से भटके हुए हैं।''

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۚ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ۚ أُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ۝

६१- और जब यह लोग तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं, ''हम ईमान ले आए'' हालांकि इन्कार के साथ आए थे और उसी के साथ चले जाते हैं और अल्लाह अच्छी तरह जानता है जो कुछ वे छिपाते हैं।

وَإِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ۚ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ۝

६२- और तुम देखते हो कि उनमें से बहुत से लोग हक़ मारने, ज़्यादती करने, और हरामख़ोरी में बड़ी तेज़ी दिखाते हैं; बेशक ये जो कुछ करते हैं, बुरा करते हैं।

وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

६३- भला उनके अल्लाह वाले और उलमा, उन्हें गुनाह की बातों और हराम खाने से मना क्यों नहीं करते? क्या ही बुरा काम है, जो वे कर रहे हैं।

لَوْلَا يَنْهٰىهُمُ الرَّبَّانِيُّوْنَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝

६४- और यहूद कहते हैं, ''अल्लाह का हाथ बंधा हुआ है,'' उन्हीं के हाथ बंधे हैं, और लानत हो उन पर, जो वे कहते हैं, बल्कि 'उसके' दोनों हाथ खुले हुए हैं; वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है, जो कुछ 'तुम्हारे' रब की ओर से 'तुम्हारी' ओर उतारा गया है, इससे उनमें अक्सर की शरारत और इन्कार बढ़ेगा; और 'हमने' उनकी आपसी दुश्मनी और कपट को क़ियामत तक के लिए डाल दिया है; यह जब भी जंग की आग भड़काते हैं, अल्लाह उसे बुझा देता है; और यह मुल्क (संसार) में फ़साद फैलाने की कोशिश करते हैं, और अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ۚ غُلَّتْ أَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ ۚ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ وَأَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ كُلَّمَآ أَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝

६५- और अगर अह्ले किताब, ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो 'हम' उनसे उनके गुनाह मिटा देते, और उनको नेअ़मत के बाग़ों में दाख़िल कर देते;

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝

६६- और अगर वे तौरात और इन्जील को, और जो कुछ उनके रब की ओर से उतारा गया है, उसे क़ायम रखते, तो उन्हें अपने ऊपर से भी मिलता और अपने पाँवों के नीचे से भी; इनमें से कुछ लोग दर्मियानी रास्ता अपनाने वाले भी हैं; और बहुत से ऐसे हैं जिनके अ़मल बुरे हैं।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ۭ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ۭ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَاۗءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ۝

६७- ऐ रसूल! आपके रब की ओर से आप पर जो कुछ उतारा गया है, उसे पहुँचा दीजिए, और अगर ऐसा न किया तो आपने उसका पैग़ाम नहीं पहुँचाया, और अल्लाह आप को लोगों (की बुराइयों) से बचाए रखेगा, बेशक अल्लाह इन्कार करने वालों को राह नहीं दिखाता।

يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۭ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ۭ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝

६८- कह दीजिए, "ऐ किताब वालो! जब तक तुम तौरात और इन्जील को और जो तुम्हारे रब की ओर से उतारा गया है, उसे क़ायम न रखोगे कुछ भी राह नहीं पा सकते, और जो तुम्हारे रब की ओर से तुम पर उतारा गया है, इससे उनमें अक्सर की सरकशी और इन्कार में बढ़ौतरी होगी, तो आप इन्कार करने वाली क़ौम पर अफ़सोस न कीजिए।

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰي شَيْءٍ حَتّٰي تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَي الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

६९- जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी और साबई और ईसाई हैं, उनमें से जो कोई भी अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए, और अच्छा काम करता रहे, तो ऐसे लोगों को न (क़ियामत के दिन) कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

७०- 'हमने' बनी इस्राईल से अ़हद लिया और उनकी ओर रसूल भेजे; उनके पास जब भी कोई रसूल वह कुछ लेकर आता जो उन्हें पसंद न होता तो, कितनों को उन्होंने झुठला दिया और कितनों को तो क़त्ल ही कर डाला;

لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ۭ كُلَّمَا جَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ۝

७१- और उन्होंने समझा कि कोई आफ़त न आएगी, तो वे अन्धे और बहरे बन गये; फिर अल्लाह ने उन पर मेहरबानी

وَحَسِبُوْٓا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ

مِّنْهُمْ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝

की, फिर उनमें बहुत से लोग अन्धे और बहरे हो गये, और अल्लाह देख रहा है, जो कुछ वे करते हैं।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ الْمَسِيحُ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ۝

७२- वे लोग काफ़िर हैं जो कहते हैं, ''अल्लाह मरयम का बेटा, मसीह ही है जबकि मसीह ने कहा था, ''ऐ बनी इस्राईल अल्लाह की इबादत करो, जो तुम्हारा भी रब है और मेरा भी रब है, जो व्यक्ति अल्लाह के साथ साझी ठहराएगा, उस पर अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना आग (जहन्नम) है, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।''

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ وَإِن لَّمْ يَنتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

७३ वे लोग काफ़िर हैं, जो यह कहते हैं, ''अल्लाह तीन में का एक है,'' हालाँकि उस एक मअ़बूद के अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, अगर यह लोग ऐसी बात से बाज़ नहीं आएँगे तो उनमें से जिन्होंने इन्कार किया है, वे दुःख देने वाला अ़ज़ाब पाएँगे।

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

७४- तो क्या यह लोग अल्लाह के आगे तौबः नहीं करते और 'उससे' गुनाहों की माफ़ी नहीं माँगते, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

مَّا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۖ كَانَا يَأْكُلَانِ الطَّعَامَ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ انظُرْ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝

७५- मरयम का बेटा मसीह़ एक रसूल के अ़लावा कुछ भी नहीं; उससे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं, और उसकी माँ सच्ची फ़रमाँबरदार थी, दोनों ही खाना खाते थे, देखो! ''हम इन लोगों के लिए किस तरह निशानियाँ बयान करते हैं; फिर देखो! यह किधर उल्टे जा रहे हैं।''

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

७६- कह दीजिए, ''क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ की इबादत करते हो जो न तुम्हें फायदा पहुँचाने की मालिक है और न नुक़सान? और अल्लाह ही खूब सुनने, जानने वाला है।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِن قَبْلُ وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝

७७- कह दीजिए,''ऐ अह्ले-किताब! अपने दीन में नाहक़ ह़द से आगे न बढ़ो, और उन लोगों की इच्छाओं के पीछे न चलो जो इससे पहले ख़ुद भटके, और बहुतों को भटकाया; और सीधे रास्ते से भटक गये।''

७८- बनी इस्राईल से जिन लोगों ने इन्कार किया, उन पर दाऊद और मरयम के बेटे ईसा की ज़बान से लानत की गयी, क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे और हद से आगे बढ़ जाते थे;

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝

७९- जो बुरा काम वे करते थे, उससे वे एक-दूसरे को रोकते न थे, यह बहुत ही बुरा था, जो वे कर रहे थे;

كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝

८०- तुम उनमें से बहुतों को देखोगे कि काफ़िरों (इन्कारियों) से दोस्ती रखते हैं, उन्होंने जो कुछ अपने आगे भेजा है बहुत ही बुरा है अल्लाह का उन पर ग़ज़ब हुआ, और वे हमेशा अज़ाब में रहेंगे;

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝

८१- और अगर वे अल्लाह और नबी पर और उस चीज़ पर ईमान लाते, जो उनकी ओर नाज़िल हुई, तो वे उनको दोस्त न बनाते, लेकिन उनमें अक्सर लोग नाफ़रमान हैं।

وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝

८२- तुम ईमान वालों का दुश्मन तमाम लोगों से बढ़कर यहूदियों और मुश्रिकों (बहुदेववादियों) को पाओगे; और ईमान वालों के लिए दोस्ती में सबसे क़रीब उन लोगों को पाओगे, जो कहते हैं ''हम नसारा हैं।'' यह इस वजह से कि उनमें आ़लिम (धर्म ज्ञाता) भी हैं और अल्लाह वाले (संन्यासी) भी, और इस वजह से कि वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते;

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝

पारा नं०-७

८३- और जब वे इस (किताब) को सुनते हैं जो रसूल पर नाज़िल हुआ, तो तुम देखते हो कि उनकी आँखें आँसुओं से छलकने लगती हैं, इसलिए कि उन्होंने हक़ बात पहचान ली, और वे कहते हैं, ''ऐ रब! हम ईमान लाए, तो हम को गवाही देने वालों में लिख ले;

* وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ۝

८४- और हमें क्या हुआ कि अल्लाह पर और हक़ बात पर, जो हमारे पास आयी, ईमान न लाएँ; और हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमें अच्छे लोगों के साथ (जन्नत में) दाख़िल करेगा-''

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۙ وَنَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ۝

فَأَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٥﴾

८५- तो अल्लाह ने उनके इस कहने की वजह से उन्हें ऐसे बाग़ अता फरमाए, जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे हमेशा रहेंगे, और यही भले लोगों का बदला है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٨٦﴾

८६- और जिन्होंने इन्कार किया और 'हमारी' आयतों को झुठलाया, वे जहन्नमी हैं।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ أَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٨٧﴾

८७- ऐ ईमान वालो! जो अच्छी पाक चीज़ें अल्लाह ने तुम्हारे लिए ह़लाल की हैं, उन्हें ह़राम न कर लो और ह़द से आगे न बढ़ो, अल्लाह नहीं पसंद करता ह़द (सीमा) से बढ़ने वालों को।

وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ أَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

८८- और जो कुछ अल्लाह ने ह़लाल और पाक रोज़ी तुम्हें दी है, उसे खाओ और अल्लाह से डरते रहो, जिस पर तुम ईमान लाए हो।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ أَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْأَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ إِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ أَهْلِيْكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۖ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ أَيَّامٍ ۚ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ ۚ وَاحْفَظُوْٓا أَيْمَانَكُمْ ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٨٩﴾

८९- अल्लाह नहीं पकड़ करेगा तुम्हारी बे इरादा क़समों पर जो यूँ ही ज़बान से निकल जाती हैं, लेकिन जो तुमने पक्की क़समें खाई हों, उन पर 'वह' तुम्हें पकड़ेगा, तो उसका कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित या बदला) दस मोहताजों को औसत दर्जे का खाना खिलाना है जो तुम अपने बाल बच्चों को खिलाते हो, या फिर उन्हें कपड़े पहनाना, या एक ग़ुलाम आज़ाद करना होगा, और जिसको यह न मिले, वह तीन रोज़े रखे; यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जबकि तुम क़सम खा बैठो, तुम अपनी क़समों की हिफ़ाज़त किया करो, इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करता है, ताकि तुम शुक्र करो।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾

९०- ऐ ईमान वालो! शराब और जुऑ, और देवस्थान (बुत), और पाँसे गन्दे शैतानी काम हैं, तो तुम इनसे बचते रहो, ताकि तुम कामियाब हो;

إِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ أَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾

९१- शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुएँ के ज़रिये तुम्हारे बीच आपस में दुश्मनी और बुग्ज़ (ईर्ष्या) पैदा कर दे और तुम्हें अल्लाह की याद से और नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम बाज़ न आओगे?

وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ احْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝

९२- और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी और रसूल की पैरवी करते रहो और डरते रहो, फिर अगर तुमने मुँह मोड़ा तो जान लो ‘हमारे’ रसूल के ज़िम्मे तो केवल पैग़ाम को खोल कर पहुँचा देना है।

لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ اَحْسَنُوْا ؕ وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

९३- जो लोग ईमान लाए और अच्छे अ़मल किये, उन पर उन चीज़ों का कोई गुनाह नहीं, जो वे खा चुके; जबकि उन्होंने परहेज़ किया और ईमान पर क़ायम रहे, और अच्छे काम किये फिर परहेज़ किया और ईमान लाए; फिर परहेज़ किया और अच्छे से अच्छा काम किया, और अल्लाह भले काम करने वालों को पसंद करता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَ رِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

९४- ऐ ईमान वालो! अल्लाह उस शिकार के ज़रिये तुम्हारी ज़रूर आज़माइश करेगा जहाँ तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुँचें, ताकि अल्लाह यह जान ले कि ‘उससे’ बिन देखे कौन डरता है? तो जो उसके बाद ज़्यादती करे, उसके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब होगा।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَ اَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَ مَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًۢا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَ مَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَ اللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝

९५- ऐ ईमान वालो! एह़राम की ह़ालत में तुम शिकार न करो और तुममें जो कोई जान-बूझ कर उसे मारे- तो उसने जो (जानवर) मारा हो- चौपायों में से उसी जैसा एक (जानवर) जिसका फ़ैसला तुम्हारे दो इन्साफ़ वाले आदमी तय कर दें, कअ़बः पहुँचा कर क़ुर्बान किया जाए, या कफ़्फ़ारे के रूप में मोहताजों को खाना खिलाया जाए, या उसके बराबर रोज़े रखे जाएँ, ताकि वह अपने किये का मज़ा चख ले, जो पहले हो चुका उसे अल्लाह ने माफ़ कर दिया; लेकिन किसी ने फिर किया तो उससे अल्लाह बदला लेगा, अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), बदला लेने वाला है।

اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَ طَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَ لِلسَّيَّارَةِ ۚ وَ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝

९६- तुम्हारे लिए समुद्र का शिकार और उसका खाना ह़लाल है कि तुम उससे फ़ायदा उठाओ और मुसाफ़िर भी, और ह़राम है तुम पर ख़ुश्की (थलीय) के शिकार जबकि तुम एह़राम की ह़ालत में हो; और अल्लाह से डरते रहो, जिसके पास तुम इकट्ठा किये जाओगे।

९७- अल्लाह ने इज़्ज़त वाले घर, कअ़बः को लोगों के लिए क़ायम रहने का ज़रिया बनाया और इज़्ज़त वाले महीने को, और क़ुर्बानी को और उन जानवरों को जिनके गले में पट्टे बंधे हों; यह इसलिए कि तुम जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और यह कि अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखता है।

جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَآئِدَ ۚ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

९८- जान लो! कि अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है और यह कि अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

९९- रसूल के ज़िम्मे तो केवल (संदेश) पहुँचा देना है, और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो, अल्लाह को सब मालूम है।

مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ۝

१००- कह दीजिए, ''बुरी चीज़ और अच्छी चीज़ बराबर नहीं होती, चाहे बुरी चीज़ों की ज़्यादती तुम्हें कितनी ही अच्छी क्यों न लगे?'' तो अक़्ल वालो! अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम कामियाब हो सको।

قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

१०१- ऐ ईमान वालो! ऐसी चीज़ों के बारे में सवाल न करो कि अगर (उनकी हक़ीक़त) तुम पर ज़ाहिर कर दी जाए तो तुम्हें बुरी लगे; और अगर क़ुर्आन के नाज़िल होने के वक़्त ऐसी बातें पूछोगे, तो तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएँगी, अल्लाह ने ऐसी बातों को माफ़ कर दिया है। और अल्लाह बख़्शने वाला 'ह़लीम' (सहनशील) है;

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ۚ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝

१०२- तुमसे पहले कुछ लोग इस तरह के सवाल कर चुके हैं, फिर वे उससे इन्कार करने वाले हो गये।

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ۝

१०३- अल्लाह ने न कोई बहीरा ठहराया है, और न 'साइबा' और न 'वसीलः' और न 'ह़ाम', लेकिन काफ़िर अल्लाह पर झूठ का आरोप लगाते हैं, और उनमें अक्सर लोग अक़्ल नहीं रखते;

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ۝

१०४- और जब उनसे कहा जाता है, ''उस चीज़ की ओर आओ, जो अल्लाह ने नाज़िल की है और रसूल की ओर,'' तो वे कहते हैं, ''हमारे लिए तो वही काफ़ी है, जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है,'' क्या अगर उनके बाप-दादा न कुछ जानते रहे हों और न सीधी राह पर रहे हों?

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ ۖ لَا يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

१०५- ऐ ईमान वालो! अपनी जानों की हिफ़ाज़त करो, जब तुम हिदायत पर हो, तो कोई गुमराह करने वाला तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता; तुम सब को अल्लाह की ओर लौट कर जाना है फिर 'वह' तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे होगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُم مُّصِيبَةُ الْمَوْتِ ۚ تَحْبِسُونَهُمَا مِن بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الْآثِمِينَ ۝

१०६- ऐ ईमान वालो! जब तुममें से किसी की मौत का वक़्त आ जाए तो वसीयत के वक़्त इन्साफ़ करने वाले दो व्यक्ति गवाह हों, या अगर तुम सफ़र कर रहे हो और मौत आ जाए तो किसी दूसरे (मज़हब) में के (दो व्यक्तियों को) गवाह (कर लो,) अगर तुमको उन गवाहों के बारे में कुछ शक हो तो नमाज़ के बाद उन दोनों को रोक लो, फिर वे दोनों अल्लाह की क़समें खाएँ कि ''हम इसके बदले में कोई क़ीमत क़ुबूल करने वाले नहीं; चाहे कोई नातेदार ही क्यों न हो? और न हम अल्लाह की गवाही छिपाएंगे, अगर ऐसा करेंगे तो गुनहगार होंगे;''

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلَيَانِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِن شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ ۝

१०७- फिर अगर मालूम हो जाए कि इन दोनों ने हक़ मार कर अपने को गुनाह में डाल लिया है, तो उनकी जगह दूसरे दो व्यक्ति उन लोगों में से खड़े हो जाएँ, जिनका हक़ पिछले दोनों ने मारना चाहा था, फिर वे दोनों अल्लाह की क़सम खाएँ कि 'हम दोनों की गवाही ज़्यादा सच्ची है और हमने कोई ज़्यादती नहीं की, हमने ऐसा किया हो तो हम ज़ालिमों में से होंगे;''

ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَن يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَىٰ وَجْهِهَا أَوْ يَخَافُوا أَن تُرَدَّ أَيْمَانٌ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

१०८- इसमें इसकी ज़्यादा उम्मीद है कि यह लोग सही-सही गवाही दें, या इस बात से डरें कि क़समें उनकी क़समों के बाद रद्द कर दी जाएँगी, और अल्लाह से डरो और (सुनो!) अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता।

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝

१०६- जिस दिन अल्लाह रसूलों को इकट्ठा करेगा, फिर कहेगा, ''आप लोगों को क्या जवाब मिला था?'' वे कहेंगे, ''हमें कुछ नहीं मालूम, बेशक 'तू' ही छिपी बातों को जानता है।''

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۟ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

११० -जब अल्लाह कहेगा, ''ऐ मरयम के बेटे, ईसा! 'मेरी' उन नेअ़मतों को याद कीजिए जो 'मैने' आप पर और आप की माँ पर की थीं, जब 'मैंने' रूहुल-क़ुदुस (जिब्राईल) से आपकी मदद की; आप झूले में भी लोगों से बात करते थे और बड़ी उम्र को पहुँच कर भी; और (याद करो)! जबकि मैंने' आपको किताब और हिक़मत और तौरात और इन्जील की तालीम दी थी; और जब आप मेरे हुक्म से मिट्टी का परिन्दा बनाकर उसमें फूँक मार देते थे; तो वह 'मेरे' हुक्म से उड़ने लगता था; और आप मेरे हुक्म से पैदाइशी अन्धे और सफ़ेद दाग़ वालों को अच्छा कर देते थे, और जबकि आप 'मेरे' हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा निकाल कर खड़ा कर देते थे; और जबकि 'मैंने' आप में से बनी-इस्राईल को रोके रखा, जबकि आप उनके पास खुली निशानियाँ लेकर पहुँचे थे; तो उनमें से जो इन्कार करने वाले थे उन्होंने कहा, ''यह तो बस खुला हुआ जादू है।

وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ۝

१११- और जब 'मैंने' 'ह़वारियों' (साथियों) की ओर हुक्म भेजा कि मुझ पर और 'मेरे' रसूल पर ईमान लाओ,'' वे कहने लगे, ''हम ईमान लाए और तुम गवाह रहना कि हम फ़रमाँबरदार (मुस्लिम) हैं।

اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ؕ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

११२- (याद करो) जब ह़वारियों ने कहा, ''मरयम के बेटे ईसा! क्या तुम्हारा रब आसमान से खाने से भरा दस्तरख़्वान (थाल) उतार सकता है? उन्होंने कहा, ''अल्लाह से डरो, अगर तुम ईमान वाले हो;''

قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝

११३- वे बोले, ''हम चाहते हैं कि उसमें से खाएं और हमारे दिल को इत्मिनान (सन्तुष्टि) हो, और हम जान लें कि तुमने हमसे सच कहा है और हम उस पर गवाह रहें।''

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنزِلْ عَلَيْنَا
مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِّأَوَّلِنَا وَ
آخِرِنَا وَآيَةً مِّنكَ ۖ وَارْزُقْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ

११४- मरयम के बेटे ईसा ने कहा, ''ऐ हमारे रब! हम पर आसमान से खाने से भरा दस्तरख़्वान उतार, जो हमारे लिए और हमारे अगलों और हमारे पिछलों के लिए ख़ुशी का ज़रिया बने और तेरी ओर से एक निशानी हो, और हमें रिज़्क़ (आहार) दे, तू सबसे अच्छा रिज़्क़ देने वाला है,''

قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۖ فَمَن يَكْفُرْ بَعْدُ
مِنكُمْ فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا لَّا أُعَذِّبُهُ أَحَدًا
مِّنَ الْعَالَمِينَ

११५- अल्लाह ने कहा, 'मैं' तुम पर ज़रूर उसको उतारूँगा, फिर इसके बाद तुममें से जो कोई इन्कार करेगा तो 'मैं' ज़रूर उसे ऐसी सज़ा दूँगा जैसी कि पूरी दुनियाँ में किसी को न दूँगा।''

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلْتَ
لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ
قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي
بِحَقٍّ ۚ إِن كُنتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۚ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي
وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ
الْغُيُوبِ

११६- और जब अल्लाह कहेगा, ''ऐ मरयम के बेटे ईसा! क्या आपने लोगों से कहा था कि 'अल्लाह के अ़लावा दो और मअ़बूद, (उपास्य) मुझे और मेरी माँ को बना लो?'' वह कहेंगे, 'तू' पाक (महिमावान) है! मुझ से यह नहीं हो सकता कि मैं वह बात कहूँ, जिसका मुझे कोई ह़क़ नहीं; अगर मैंने ऐसा कहा होता तो तुझे मालूम ही होता, 'तू' जानता है, जो कुछ मेरे मन में है, और मैं नहीं जानता जो कुछ तेरे मन में है, बेशक 'तू' छिपी बातों का ख़ूब जानने वाला है;

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ
رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ
فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ
وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ

११७- मैंने उनसे इसके सिवा कुछ नहीं कहा, जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था, वह यह कि अल्लाह की इबादत करें, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी; और जब तक मैं उनमें रहा उनकी ख़बर रखता था, फिर जब 'तूने' मुझे उठा लिया, तो 'तू' ही उनका निगहबान (निरीक्षक) था, और 'तू' हर चीज़ पर गवाह (साक्षी) है।

إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ
أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

११८- अगर 'तू' उनको अ़ज़ाब दे, तो वे तेरे बन्दे हैं, और अगर 'तू' उन्हें माफ़ कर दे, तो बेशक 'तू' ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), ह़िकमत वाला है।''

قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ۭ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

११६- (उस दिन) अल्लाह कहेगा, 'आज वह दिन है कि सच्चों को उनकी सच्चाई का फ़ायदा मिलेगा, उनके लिए ऐसे बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए; यही सबसे बड़ी कामियाबी है।''

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ۭ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

१२०-आसमानों और ज़मीन में और जो कुछ उनके बीच है, सब पर अल्लाह ही की बादशाही है और 'वह' हर चीज़ पर कुदरत रखता है।



अनुवाद-सूरतुल् अन्‌आ़मि

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के १२६३५ अक्षर, ३१०० शब्द, १६५ आयतें और २० रूकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ؕ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ۝

१- हर तरह की तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और अन्धेरा और रोशनी बनायी; फिर भी काफ़िर दूसरों को अपने रब के बराबर ठहराते हैं;

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰۤى اَجَلًا ؕ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ۝

२- 'वही है' जिसने तुम्हें मिट्‌टी से पैदा किया, फिर (मरने का) एक वक़्त निश्चित कर दिया और उसके यहाँ एक मुद्‌दत और है; फिर भी तुम सन्देह करते हो!

وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ۝

३- और 'वही' अल्लाह आसमानों और ज़मीन में है, (जो) तुम्हारी छिपी और खुली सब बातों को जानता है, और जो कुछ तुम करते हो, (वह सब) उसके इल्म में है।

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝

४- और अल्लाह की निशानियों में से कोई निशानी भी ऐसी नहीं है जो उनके पास न आई हो, मगर ये उससे मुंह फेर लेते हैं;

فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

५- जब उनके पास ह़क़ आया, तो उसको भी झुठला दिया, तो उन चीज़ों का जिनका यह मज़ाक़ उड़ाते हैं, बहुत जल्द अंजाम मालूम हो जाएगा।

اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝

६- क्या उन्होंने नहीं देखा! कि 'हमने' उनसे पहले कितने गिरोहों (उम्मतों) को हलाक (विनष्ट) कर दिया, जिनके पैर धरती पर ऐसे जमा दिये थे कि तुम्हारे पैर भी ऐसे नहीं जमाए और उन पर आसमान से लगातार बारिश बरसायी और नहरें बना दीं, जो उनके नीचे बह रही थीं; फिर 'हमने' उन्हें उनके गुनाहों की वजह से हलाक कर दिया और उनके बाद दूसरे गिरोहों को उठाया।

ولو نزلنا عليك كتابا في قرطاس فلمسوه بأيديهم لقال الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين ۝

७- और अगर 'हम' आप के ऊपर काग़ज़ में लिखी-लिखाई किताब भी उतार देते और यह उसे अपने हाथों से छू भी लेते, तब भी, जिन्होंने इन्कार किया, वे यही कहते, ''यह तो बस एक खुला जादू है।''

وقالوا لولا أنزل عليه ملك ۖ ولو أنزلنا ملكا لقضي الأمر ثم لا ينظرون ۝

८- और कहते हैं, ''इस (नबी) पर फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया?'' हालाँकि अगर 'हम' फ़रिश्ता उतारते तो फ़ैसला हो चुका होता, फिर उन्हें मोहलत न दी जाती।

ولو جعلناه ملكا لجعلناه رجلا وللبسنا عليهم ما يلبسون ۝

९- और अगर 'हम' उस (नबी) को फ़रिश्ता बनाते, तो उसे आदमी ही (के रूप का) बनाते, इस तरह 'हम' उन्हें उसी सन्देह में डाल देते, जिस तरह सन्देह में वे पड़े हुए हैं।

ولقد استهزئ برسل من قبلك فحاق بالذين سخروا منهم ما كانوا به يستهزءون ۝

१०- और आप से पहले कितने ही रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया जा चुका है, तो जिन लोगों ने उनका मज़ाक़ उड़ाया था, उन्हें उसी ने आ घेरा जिस बात पर वे हँसी उड़ाते थे।

قل سيروا في الأرض ثم انظروا كيف كان عاقبة المكذبين ۝

११- कह दीजिए, ''धरती में चल फिर कर देखो कि झुठलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ!''

قل لمن ما في السماوات والأرض ۖ قل لله ۚ كتب على نفسه الرحمة ۚ ليجمعنكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه ۚ الذين خسروا أنفسهم فهم لا يؤمنون ۝

१२- कह दीजिए, ''आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है किसका है?'' (फिर) कह दीजिए, ''अल्लाह ही का है, उसी ने अपने ऊपर रह्मत को लाज़िम कर लिया है, 'वही' तुम सब को क़ियामत के दिन जिसमें कुछ भी शक नहीं, ज़रूर जमा करेगा।'' जिन लोगों ने अपने आप को नुक़सान में डाल रखा है, तो वे ईमान नहीं लाते।

وله ما سكن في الليل والنهار ۚ وهو السميع العليم ۝

१३- और 'उसी' का है जो कुछ रात में ठहरता है और दिन में, और 'वह' सब कुछ सुनता, जानता है।

قل أغير الله أتخذ وليا فاطر السماوات والأرض وهو يطعم ولا يطعم ۗ قل إني أمرت أن أكون أول من أسلم ۖ ولا تكونن من المشركين ۝

१४- कह दीजिए, ''क्या मैं आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले अल्लाह के सिवा किसी और को वली (संरक्षक) बना लूँ? और 'वही' खिलाता है और खुद नहीं खाता।'' कह दीजिए, ''मुझे'' हुक्म हुआ है कि सबसे पहले मैं उसके आगे झुक जाऊँ (यानी इस्लाम लाऊँ), और यह कि तुम मुश्रिकों (अल्लाह के साथ साझीदारों) में हरगिज़ शामिल न होना।''

قُلْ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيمٍ ۝

१५- कह दीजिए, ''अगर मैं अपने 'रब' की नाफ़रमानी करूँ, तो (उस हालत में) मुझे एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है।''

مَنْ يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۚ وَذَٰلِكَ
الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝

१६- जिस व्यक्ति से उस दिन अज़ाब टाल दिया गया, उस पर अल्लाह ने मेहरबानी फ़रमायी, और यह खुली हुई कामियाबी है।

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ
وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

१७- और अगर अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचाए, तो उसके सिवा कोई दूर करने वाला नहीं; और अगर 'वह' तुम्हें कोई भलाई पहुँचाए तो उसे हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थ्य) है।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝

१८- और उसे अपने बन्दों पर पूरा अधिकार है, और 'वह' हिकमत वाला, ख़बर रखने वाला है।

قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ شَهِيدٌ
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ
بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ۚ أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ
اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ ۚ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ
وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ۝

१९- कह दीजिए, ''किस चीज़ की गवाही सबसे बड़ी है?'' कह दीजिए, ''मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह है, और यह कुर्आन मेरी ओर उतारा गया है, ताकि मैं इसके ज़रिये तुम्हें सचेत कर दूँ; और जिस व्यक्ति को यह पहुँचे वह भी ऐसा ही करे; क्या तुम हकीक़त में गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ कोई दूसरा भी मअ्बूद है?'' कह दीजिए,''मैं तो इसकी गवाही नहीं देता। कह दीजिए, 'वह' तो केवल अकेला ही मअ्बूद है, और जिसको तुम लोग साझी ठहराते हो, उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं।''

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ
أَبْنَاءَهُمُ ۘ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ۝

२०- जिन लोगों को 'हमने' किताब दी है, वे उसे इस तरह पहचानते हैं, जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं; जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला है, वे ईमान नहीं लाते।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ
بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝

२१- और उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा? जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या उसकी आयतों को झुठलाए, बेशक ज़ालिम लोग कभी कामियाब नहीं हो सकते।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا أَيْنَ
شُرَكَاؤُكُمُ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝

२२- और जिस दिन 'हम' सब लोगों को जमा करेंगे, फिर मुश्रिकों से पूछेंगे, कि वे तुम्हारे साझीदार कहाँ हैं जिनका तुम दावा किया करते थे?''

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا
كُنَّا مُشْرِكِينَ ۝

२३- फिर उनका कोई फित्ना (बहाना) बाक़ी न रहेगा, सिवाय इसके, कि वे कहेंगे, ''अल्लाह की क़सम! हमारे रब हम मुश्रिक (बहुदेववादी) नहीं थे।''

२४- देखो! कैसा वे अपने बारे में झूठ बोले, और वह सब गुम हो कर रह गया, जो कुछ वे गढ़ा करते थे;

انْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ ۚ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

२५- और उनमें कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाए रखते हैं, और 'हमने' तो उनके दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं, कि वे उसको समझ न सकें, और उनके कानों में बोझ पैदा कर दिया, और वे चाहे हर तरह की निशानियाँ देख लें, मानेंगे नहीं; यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास आकर तुमसे झगड़ते हैं, तो जो काफ़िर हैं, कहते हैं, "यह तो बस पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।"

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۖ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِنْ يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ لَا يُؤْمِنُوا بِهَا ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

२६- और वे उससे रोकते हैं और ख़ुद भी उससे दूर रहते हैं, और वे तो बस अपने आप को ही हलाक करते हैं, और उन्हें एहसास भी नहीं।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْأَوْنَ عَنْهُ ۖ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝

२७- और अगर तुम उस वक़्त देख सकते, जब यह आग के पास खड़े किये जाएँगे और कहेंगे, "क्या ही अच्छा होता! कि हम फिर लौटा दिये जाएँ, ताकि अपने रब की आयतों को न झुठलाएँ, और मानने वालों में हो जाएँ।"

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا يَا لَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِآيَاتِ رَبِّنَا وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

२८- हाँ! बल्कि यह जो कुछ पहले छिपाया करते थे, वह उनके सामने आ गया, और अगर यह (दुनिया में) लौटा भी दिये जाएँ, तो फिर वही कुछ करने लगेंगे, जिससे उनको मना किया गया था, बेशक यह झूठे हैं।

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَا كَانُوا يُخْفُونَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

२६- और कहते हैं, "जो कुछ है बस यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है और हम फिर ज़िन्दा नहीं किये जाएँगे।"

وَقَالُوا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۝

३०- और अगर तुम देख सकते! जब यह अपने रब के सामने खड़े किये जाएँगे, 'वह' (अल्लाह) कहेगा, "क्या यह (दोबारा ज़िन्दा होना) हक़ नहीं?" तो वे कहेंगे, "क्यों नहीं, हमारे रब की क़सम!" 'वह' कहेगा, "अच्छा तो उस इन्कार के बदले अज़ाब का मज़ा चखो।"

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

३१- वे घाटे में पड़े, जिन लोगों ने अल्लाह से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि जब अचानक उन पर वह घड़ी आ जाएगी, तो वे कहेंगे, "हाय! अफ़सोस, उस कोताही पर जो इस (क़ियामत) के

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يَا حَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۚ أَلَا سَاءَ

مَا يَزِرُوْنَ ۝

बारे में हमसे हुई'' और हाल यह होगा कि अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे, देखो! कितना बुरा बोझ है जो यह उठाए हुए हैं।

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ
الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝

३२- और दुनिया की ज़िन्दगी एक खेल और तमाशों के अ़लावा कुछ भी नहीं है, और आख़िरत का घर उनके लिए बहुत अच्छा है, जो डर रखते हैं; तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते!

قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ
لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝

३३- 'हमें' मालूम है, जो कुछ वे कहते हैं उससे आप को दुःख पहुँचता है; तो यह हक़ीक़त में आप को नहीं झुठलाते, बल्कि, वे ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं;

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا
كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ
لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِی الْمُرْسَلِيْنَ ۝

३४- और आप से पहले भी बहुत-से रसूल झुठलाए जा चुके हैं, तो वे अपने झुठलाए जाने और तकलीफ़ दिये जाने पर सब्र करते रहे, यहाँ तक कि उनके पास हमारी मदद पहुँच गयी, और कोई नहीं, जो अल्लाह की बातों को बदल सके, और आप के पास तो कुछ रसूलों की भी ख़बरें पहुँच चुकी हैं;

وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ
اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِى الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِى السَّمَآءِ
فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى
الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝

३५- और अगर उनका मुँह मोड़ना तुम पर बोझ होता है, तो अगर तुमसे हो सके! तो ज़मीन में कोई सुरंग या आसमानों में कोई सीढ़ी ढूँढ़ निकालो, और उनके पास कोई निशानी ले आओ; और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको सीधे रास्ते पर इकट्ठा कर देता, इसलिए तुम जाहिलों में (या नादान) न होना।

اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؔؕ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ
اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ۝

३६- बात यह है, कि क़ुबूल वही करते हैं जो सुनते भी हैं; रहे मुर्दे, तो अल्लाह उन्हें (क़ियामत के दिन) उठा खड़ा करेगा, फिर उसी की ओर पलटेंगे;

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ
قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُوْنَ ۝

३७- और वे कहते हैं, ''उस (नबी) पर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई?'' कह दीजिए, ''अल्लाह तो इस पर क़ादिर है कि कोई निशानी उतारे, लेकिन उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते।''

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ
اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِى الْكِتٰبِ مِنْ شَیْءٍ ثُمَّ اِلٰى
رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ۝

३८- धरती पर चलने वाला, या दो परों से उड़ने वाला, कोई परिन्दा हो; यह सब तुम्हारी ही तरह के गिरोह हैं; 'हमने' किताब में कोई भी चीज़ नहीं छोड़ी है; फिर (जान लो कि) वे अपने रब की ओर इकट्ठा किये जाएँगे।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ ۗ مَن يَشَإِ اللَّهُ يُضْلِلْهُ وَمَن يَشَأْ يَجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ

३९- और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया; वे बहरे और गूँगे हैं, अन्धेरों में पड़े हुए हैं; अल्लाह जिसे चाहे भटका दे और जिसे चाहे सीधी राह पर लगा दे।

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ

४०- कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा कि अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आ जाए, या वह घड़ी तुम्हारे सामने आ जाए, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे? अगर तुम सच्चे हो (तो बताओ),

بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَاءَ وَتَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ

४१- (नहीं) बल्कि तुम 'उसी' को पुकारते हो, तो जिस (दुःख) के लिए तुम 'उसे' पुकारते हो, 'वह' अगर चाहता है तो उसको दूर कर देता है, और जिनको तुम शरीक बनाते हो, (उस वक़्त) उन्हें भूल जाते हो।''

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَاهُم بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ

४२- और 'हमने' तुमसे पहले कितनी उम्मतों(समुदायों) की ओर रसूल भेजे, फिर 'हमने' उन्हें तंगियों और मुसीबतों में डाला, ताकि वे अजिज़ी (विनम्रता) करें;

فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُم بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَٰكِن قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

४३- जब 'हमारी' ओर से उन पर सख़्ती आयी तो फिर क्यों नहीं आजिज़ी (विनम्रता) करते? लेकिन उनके दिल तो कठोर हो गये थे और जो कुछ वे करते थे, शैतान ने उसे उनके लिए मुज़य्यन (मनमोहक़) बना दिया था;

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُم بَغْتَةً فَإِذَا هُم مُّبْلِسُونَ

४४- फिर जब उसे उन्होंने भुला दिया जो उन्हें नसीहत की गयी थी, तो 'हमने' उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये; यहाँ तक कि जो कुछ उन्हें मिला था, जब वे उसमें मग्न हो गये तो अचानक 'हमने' उन्हें पकड़ लिया, तो वे उस वक़्त नाउम्मीद हो कर रह गये;

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

४५- इस तरह ज़ालिम लोगों की जड़ काट दी गयी, और तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जो सारे संसार का रब है।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُم مَّنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِهِ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ

४६- कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा, कि अगर अल्लाह तुम्हारे सुनने की, देखने की ताक़त छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अल्लाह के सिवा मअ़बूद (उपास्य) कौन है, जो तुम्हें यह लाकर दे?'' देखो! किस तरह 'हम' तरह-तरह की निशानियाँ बयान करते हैं, फिर भी यह लोग मुँह फेरे रहते हैं।

४७- कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा! कि तुम पर अचानक बेख़बरी में या ख़बर आने के बाद अल्लाह का अ़ज़ाब आ जाए, तो क्या ज़ालिम लोगों के अ़लावा कोई और भी हलाक होगा?''

قل ارءيتكم ان اتىكم عذاب الله بغتة او جهرة هل يهلك الا القوم الظلمون ۝

४८- और हमने रसूलों को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा'' तो जो व्यक्ति ईमान लाए और सुधर जाए, तो ऐसे लोगों के लिए न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे।

وما نرسل المرسلين الا مبشرين ومنذرين ۚ فمن امن واصلح فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝

४९- और जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया, उन्हें तो अ़ज़ाब होकर ही रहेगा, क्योंकि वे नाफ़रमानी किया करते थे।

والذين كذبوا بايتنا يمسهم العذاب بما كانوا يفسقون ۝

५०- कह दीजिए,''मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, और न मैं ग़ैब (परोक्ष) का इल्म रखता हूँ; और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि 'मैं कोई फ़रिश्ता हूँ, मैं तो बस उसी के हुक्म पर चलता हूँ जो मेरी ओर वह्य की जाती है,'' कह दीजिए, ''क्या अन्धा और आँखों वाला दोनों बराबर होते हैं? तो फिर तुम सोच-विचार क्यों नहीं करते?''

قل لا اقول لكم عندي خزائن الله ولا اعلم الغيب ولا اقول لكم اني ملك ۚ ان اتبع الا ما يوحى الي ۚ قل هل يستوي الاعمى والبصير ۚ افلا تتفكرون ۝

५१- और उनको इस (क़ुर्आन) के ज़रिये सचेत कर दीजिए! जिन्हें इस बात का डर है कि उनको अपने रब के पास इस ह़ाल में इकट्ठा किया जाएगा, कि 'उसके' सिवा न तो उनका कोई ह़मदर्द होगा और न कोई सिफ़ारिशी,'' ताकि वे परहेज़गार बनें।

وانذر به الذين يخافون ان يحشروا الى ربهم ليس لهم من دونه ولي ولا شفيع لعلهم يتقون ۝

५२- और जो लोग अपने 'रब' को राज़ी करने के लिए सुबह और शाम पुकारते रहते हैं, ऐसे लोगों को (अपने से) दूर न करना, उनके हिसाब की तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं, और न तुम्हारे ह़िसाब की उन पर कोई ज़िम्मेदारी है, कि 'तुम उन्हें दूर कर दो तो ज़ालिमों में से हो जाओगे,

ولا تطرد الذين يدعون ربهم بالغدوة والعشي يريدون وجهه ۖ ما عليك من حسابهم من شيء وما من حسابك عليهم من شيء فتطردهم فتكون من الظلمين ۝

५३- और इसी तरह 'हमने' कुछ लोगों को दूसरे के ज़रिये आज़माइश में डाला, ताकि वे कहें, ''क्या यह वही लोग हैं, जिन पर अल्लाह ने हममें से इनआ़म किया?''-क्या अल्लाह शुक्र करने वालों को नहीं जानता?!

وكذلك فتنا بعضهم ببعض ليقولوا اهؤلاء من الله عليهم من بيننا ۗ اليس الله باعلم بالشكرين ۝

وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ
عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ أَنَّهُ مَنْ
عَمِلَ مِنكُمْ سُوءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِن بَعْدِهِ
وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

५४- और जब आप के पास ऐसे लोग आएँ, जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं, तो कह दीजिए, ''सलाम हो तुम पर! तुम्हारे रब ने रहमत को अपने ऊपर ज़रूरी कर लिया है कि तुममें से जो कोई नासमझी से कोई बुराई कर बैठे, फिर उसके बाद तौबः कर ले और अपनी इस्लाह़ (सुधार) कर ले, तो वह बख़्शने वाला, मेहरबान है;

وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ سَبِيلُ
الْمُجْرِمِينَ

५५- और इसी तरह 'हम' अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं और इस लिए कि गुनहगारों का रास्ता ज़ाहिर हो जाए।

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ
اللَّهِ قُل لَّا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا
وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ

५६- कह दीजिए, ''तुम लोग अल्लाह के सिवा जिन्हें पुकारते हो उनकी इबादत करने से मुझे रोका गया है, कह दीजिए ''मैं तुम्हारी इच्छाओं की पैरवी नहीं करूँगा, क्योंकि तब तो मैं भी गुमराह हो जाऊँगा और तब तो मैं हिदायत पाने वाले लोगों में न रहूँगा।''

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُم بِهِ
مَا عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ
يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ

५७- कह दीजिए, ''मैं अपने 'रब' की ओर से खुली हुई दलील पर क़ायम हूँ, और तुमने उसे झुठला दिया है; और जिस चीज़ के लिए तुम जल्दी मचा रहे हो, वह मेरे पास तो है नहीं, हुक्म तो अल्लाह ही का है, 'वही' सच्ची बात बयान करता है, और 'वही' सब से अच्छा फ़ैसला करने वाला है।''

قُل لَّوْ أَنَّ عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ
الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ

५८- कह दीजिए, ''जिस चीज़ की तुम्हें जल्दी पड़ी हुई है, अगर कहीं वह चीज़ मेरे पास होती, तो मेरे और तुम्हारे बीच अब तक फ़ैसला हो चुका होता; और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है।''

وَعِندَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِن
وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ
وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ

५९- और 'उसी' के पास ग़ैब (परोक्ष) की कुन्जियां हैं, जिन्हें 'उसके' सिवा कोई नहीं जानता; जल और थल में जो कुछ है, उसे 'वह' जानता है, और जो पत्ता भी गिरता है, उसे 'वह' ज़रूर जानता है; और ज़मीन के अन्धेरों में कोई दाना हो, और कोई हरी, या सूखी चीज़ हो, मगर वह सब रौशन किताब में मौजूद है;

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم
بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ

६०- और 'वही' है जो रात को तुम्हें मौत देता है; और जो कुछ तुम दिन में करते हो, उसकी ख़बर रखता है; फिर 'वह'

مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾

तुम्हें दिन में इसलिए उठा देता है, ताकि तय की हुई मुद्दत पूरी हो जाए। फिर 'उसी' की ओर तुम्हें लौटना है, फिर 'वह' तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे हो;

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ﴿٦١﴾

६१- और 'वह' अपने बन्दों पर पूरा क़ाबू रखने वाला है; और 'वह' तुम पर निगरानी करने वाले को मुक़र्रर किये रखता है, यहाँ तक कि तुममें से जब किसी की मौत आती है तो हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उसे कब्ज़े में कर लेते हैं, और वे किसी तरह की कोताही नहीं करते।

ثُمَّ رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۚ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ﴿٦٢﴾

६२- फिर लोग अपने मालिक अल्लाह के पास बुलाए जाएँगे, जान लो! हुक्म 'उसी' का है और 'वह' बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।

قُلْ مَن يُنَجِّيكُم مِّن ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لَّئِنْ أَنجَانَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٦٣﴾

६३- कह दीजिए, ''कौन है? जो ख़ुश्की और तरी (जल, थल) के अन्धेरों से तुम्हें छुटकारा देता है, 'जिसे' तुम गिड़गिड़ाते हुए और चुपके- चुपके पुकारने लगते हो कि हमें अगर इससे बचा लिया तो हम उसके ज़रूर शुक्रगुज़ार हो जाएँगे।''

قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيكُم مِّنْهَا وَمِن كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٦٤﴾

६४- कह दीजिए, ''अल्लाह तुम्हें इस (तंगी) से, और हर बेचैनी से नजात देता है? फिर भी तुम उसका साझीदार ठहराने लगते हो!''

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَن يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّن فَوْقِكُمْ أَوْ مِن تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُم بَأْسَ بَعْضٍ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾

६५- कह दीजिए, ''वह'' इसकी कुदरत रखता है कि तुम पर, तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से, कोई अज़ाब भेज दे; या तुम्हें टोलियों में बाँट कर आपस में भिड़ा दे और एक को दूसरे से लड़ाई का मज़ा चखाए।'' देखो! 'हम' कैसे आयतों को तरह-तरह से बयान करते हैं, ताकि ये समझें;

وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۚ قُل لَّسْتُ عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ ﴿٦٦﴾

६६- और इस (कुर्आन) को आप की क़ौम ने झुठला दिया, हालाँकि वह हक़ है, कह दीजिए, ''मैं तुम पर कोई निगराँ (संरक्षक) नहीं हूँ,

لِّكُلِّ نَبَإٍ مُّسْتَقَرٌّ ۚ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٦٧﴾

६७- हर ख़बर के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है, और जल्द ही तुम्हें मालूम हो जाएगा।''

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ وَإِمَّا

६८- और जब आप ऐसे लोगों को देखें जो हमारी आयतों पर नुक़ता-चीनी करने में लगे हैं, तो उनसे मुँह फेर लें यहाँ तक

يُنسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

कि वे दूसरी बातों में लग जाएँ; और अगर शैतान आप को भुला दे, तो याद आने पर उन ज़ालिमों के पास न बैठें

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِم مِّن شَيْءٍ وَلَٰكِن ذِكْرَىٰ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝

६९- और उनके हिसाब के बारे में तो उन लोगों पर कुछ भी ज़िम्मेदारी नहीं, जो डर रखते हैं; और अगर है तो बस नसीहत ताकि वे डरें।

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ وَذَكِّرْ بِهِ أَن تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِن دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ وَإِن تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا ۖ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝

७०- और जिन लोगों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना रखा है, और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोखे में डाल रखा है, छोड़ो उन लोगों को; हाँ, इसके ज़रिये से नसीहत करते रहिए, ताकि कोई अपने आ़माल की वजह से हलाकत में न डाला जाए; अल्लाह के सिवा न तो कोई उसका दोस्त होगा, और न कोई सिफ़ारिश करने वाला; और अगर वह छुटकारा पाने के लिए बदले में कोई चीज़ भी देना चाहे तो भी, वह उससे न लिया जाएगा; यही लोग हैं, जो अपने आ़माल के वबाल में तबाही में पड़ गये, उनके पीने के लिए खौलता हुआ पानी है और दुःख देने वाला अ़ज़ाब भी, इसलिए कि वे इन्कार करते थे।

قُلْ أَنَدْعُو مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۖ وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

७१- कह दीजिए, ''क्या हम अल्लाह को छोड़ कर उसे पुकारने लग जाएँ जो हमें न फ़ायदा पहुँचा सकें, और न नुक़्सान; और हम उल्टे पाँव फिर जाएँ बाद इसके कि अल्लाह ने हमें राह दिखा दिया हो, उस व्यक्ति की तरह़ जिसे शैतानों ने ज़मीन में भटका दिया हो, और वह हैरान होकर रह गया हो; उसके कुछ साथी हों जो सीधी राह की ओर बुला रहे हों, कि 'हमारे पास चले आओ,'' कह दीजिए, ''रास्ता तो वही है जो अल्लाह ने बताया है, और हमें तो यह हुक्म मिला है कि हम अल्लाह रब्बुलआ़लमीन के फ़रमांबरदार हों।

وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَاتَّقُوهُ ۚ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝

७२- और यह कि नमाज़ क़ायम करो और उसका डर रखो, और 'वही' तो है, जिसके पास तुम इकट्ठे किये जाओगे;

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ وَيَوْمَ يَقُولُ كُن فَيَكُونُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۚ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ ۚ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝

७३- और 'वही' तो है जिसने आसमानों और ज़मीन को ह़क़ के साथ पैदा किया और जिस दिन वह किसी चीज़ को कहता है 'हो जा,' तो उसी वक़्त वह हो जाती है; उसका इर्शाद ह़क़ है; और जिस दिन 'सूर' (नरसिंघा) फूँका जाएगा, (उस दिन) उसी की बादशाहत होगी, 'वही' छिपे और ज़ाहिर का जानने वाला है, और 'वही'

ह़िकमत वाला, ख़बर रखने वाला है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ آزَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا
آلِهَةً ۖ إِنِّي أَرَاكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٧٤﴾

७४- और (याद करो,) जब इब्राहीम ने अपने बाप 'आज़र' से कहा, ''क्या मूर्तियों को मअ़बूद बनाते हो?, मैं तो तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पड़ा देख रहा हूँ,''

وَكَذَٰلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ ﴿٧٥﴾

७५- और इस तरह 'हम' इब्राहीम को आसमानों और ज़मीन के अ़जाइबात (विचित्र चीज़ें) दिखाने लगे, ताकि वह ख़ूब यक़ीन करने वालों में हो जाएँ;

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَىٰ كَوْكَبًا ۖ قَالَ هَٰذَا رَبِّي ۖ
فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْآفِلِينَ ﴿٧٦﴾

७६- जब रात ने उनको ढांप लिया, तो (उन्होंने) एक सितारा देखा; कहने लगे, ''यह मेरा रब है!'' जब वह ग़ायब हो गया तो कहने लगे, ''मुझे ग़ायब हो जाने वाले पसंद नहीं।

فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هَٰذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا
أَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ
مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ﴿٧٧﴾

७७- फिर जब उन्होंने चाँद को चमकता हुआ देखा तो कहा, यह मेरा रब है,'' फिर जब वह भी छिप गया तो कहा, ''अगर मेरा रब मुझे राह न दिखाता तो मैं उन लोगों में हो जाता जो भटक रहे हैं।''

فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَٰذَا رَبِّي هَٰذَا
أَكْبَرُ ۖ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ
مِمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٧٨﴾

७८- फिर जब सूरज को देखा चमकता हुआ, तो कहने लगे, ''मेरा रब यह है! यह बहुत बड़ा है, ''फिर जब वह भी डूब गया, तो कहने लगे, 'ऐ मेरी क़ौम के लोगो! जिन चीज़ों को तुम साझीदार बनाते हो मैं उनसे बेज़ार (विरक्त) हूँ,

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ حَنِيفًا ۖ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٧٩﴾

७६- मैंने सबसे यक्सू (एकाग्र) होकर अपना चेहरा उसकी ओर कर लिया है, जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और मैं साझी ठहराने वालों में से नहीं।''

وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ ۚ قَالَ أَتُحَاجُّونِّي فِي اللَّهِ وَقَدْ
هَدَانِ ۚ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ
رَبِّي شَيْئًا ۗ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ أَفَلَا
تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨٠﴾

८०- और उनकी क़ौम उनसे झगड़ने लगी, तो उन्होंने कहा, ''क्या तुम मुझसे अल्लाह के बारे में झगड़ते हो? जबकि उसने मुझको सीधा रास्ता दिखा दिया; मैं उनसे नहीं डरता, और जिन चीज़ों को तुम उसका साझीदार ठहराते हो, बल्कि मेरा रब जो कुछ चाहता है वह पूरा हो कर रहता है, और हर चीज़ पर मेरे रब के इल्म का अहाता (ज्ञान परिधि) है, फिर क्या तुम याद नहीं करते;

وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ
أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ

८१- और मैं तुम्हारे ठहराए हुए साझीदार से कैसे डरूँ! जबकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह का साझीदार उस

سُلْطٰنًا ۭ فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ	चीज़ को बनाया है, जिसकी उसने कोई सनद (प्रमाण) नाज़िल नहीं की? अब दोनों फ़रीक़ों में से कौन सा फ़रीक़ अम्न का हक़दार है? अगर तुम जानते हो (तो बाताओ)।''
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ	८२- जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान में किसी ज़ुल्म की मिलावट नहीं की, उनके लिए अम्न है और वही हिदायत पाने वाले हैं।
وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰي قَوْمِهٖ ۭ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَاۗءُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ	८३- और यह हमारी वह दलील है जिसे 'हमने' इब्राहीम को उनकी अपनी क़ौम के मुक़ाबले में दिया था; हम जिसे चाहते हैं दर्जे में ऊँचा कर देते हैं, बेशक तुम्हारा रब ह़िकमत वाला, इल्म वाला है।
وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰي وَهٰرُوْنَ ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ	८४- और 'हमने' उन्हें (इब्राहीम को) इस्हाक़ और याक़ूब दिये, हर एक को राह दिखाई; और नूह को 'हमने' इससे पहले राह दिखाई थी और उसकी औलाद में दाऊद, और सुलेमान, और अय्यूब, यूसुफ़, और मूसा, और हारून को भी; और इसी तरह 'हम' नेक लोगों को बदला दिया करते हैं।
وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰي وَاِلْيَاسَ ۭ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ	८५- और ज़करिया और यह़्या और ईसा और इल्यास को भी (राह दिखायी), यह सब नेक लोग थे।
وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ۭ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَي الْعٰلَمِيْنَ	८६- और इस्माईल, अल्‌-यसअ़, और यूनुस और लूत को भी, और इन सबको तमाम दुनिया के लोगों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी थी।
وَمِنْ اٰبَاۗىِٕهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ	८७- और उनके बाप-दादा और औलाद, और उनके भाइयों में से कितने लोगों को (राह दिखाई) और 'हमने' उन्हें चुन लिया था और उन्हें सीधे राह की ओर चलाया था।
ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ	८८- यह अल्लाह की हिदायत है, जिसके ज़रिये 'वह' अपने बन्दों में से जिसको चाहता है राह दिखाता है, और अगर उन लोगों ने कहीं अल्लाह का साझीदार ठहराया होता! तो उनका सब किया धरा बरबाद हो जाता।
اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَاۗءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ	८९- ये ऐसे लोग थे जिनको 'हमने' किताब और हुक्म (शरीअ़त), और नुबूवत दी थी; फिर अगर ये लोग इसे मानने से इन्कार करें, तो 'हमने' इन पर ऐसे लोगों को मुक़र्रर कर दिये हैं कि वे उनसे कभी इन्कार करने वाले नहीं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۖ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ ۗ قُل لَّا أَسْأَلُكُمْ
عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْعَالَمِينَ ﴿٩٠﴾

९०- ये ऐसे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने राह दिखाई थी, तो तुम उन्हीं की पैरवी करो; कह दीजिए,''मैं तुमसे इसका कोई बदला नहीं माँगता, यह (क़ुर्आन) तो सारी दुनिया के लोगों के लिए एक नसीहत है।''

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ
عَلَىٰ بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ ۗ قُلْ مَنْ أَنزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ
بِهِ مُوسَىٰ نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ ۖ تَجْعَلُونَهُ قَرَاطِيسَ
تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا ۖ وَعُلِّمْتُم مَّا لَمْ تَعْلَمُوا أَنتُمْ
وَلَا آبَاؤُكُمْ ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩١﴾

९१- और उन लोगों ने अल्लाह की क़द्र जैसी करनी चाहिए थी न की, जबकि उन्होंने कहा, ''अल्लाह ने किसी इन्सान पर कुछ भी नाज़िल नहीं किया।'' कह दीजिए, ''फिर वह किताब किसने नाज़िल की थी जो किताब मूसा लोगों के लिए नूर और हिदायत लेकर आए थे, और जिसे तुम ने अलग-अलग पन्नों पर लिख रखा है, उनको तो दिखाते हो, लेकिन बहुत-सा छिपा ले जाते हो; और तुम्हें वह इल्म दिया गया है जिसे न तुम जानते थे, और न तुम्हारे बाप-दादा।'' कह दीजिए, ''अल्लाह ही ने,'' (इस किताब को नाज़िल किया) फिर उन्हें छोड़ दीजिए कि वे अपनी बेहूदा बकवास में खेलते रहें।

وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ
وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا ۚ وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَهُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ
يُحَافِظُونَ ﴿٩٢﴾

९२- और यह किताब, जिसे 'हमने' नाज़िल किया है, बरकत वाली है जो अपने से पहले की तस्दीक़ करती है, और इसलिए कि आप उम्मुल क़ुरा (केन्द्रीय बस्ती, मक्का) और उसके आस-पास के लोगों को आगाह कर दें; और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं, वे उस (किताब) पर भी ईमान रखते हैं, और वे अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त (रक्षा) करते हैं।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ
إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَن قَالَ سَأُنزِلُ مِثْلَ مَا أَنزَلَ
اللَّهُ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ
وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنفُسَكُمُ ۖ
الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٩٣﴾

९३- और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा! जो अल्लाह पर झूठ गढ़े, और यह कहे ''मुझ पर वह्य (प्रकाशना) आती है,'' जबकि उस पर कोई वह्य न आई हो, और जो यह कहे, ''जिस तरह की किताब अल्लाह ने नाज़िल की है, उस तरह की तो मैं भी बना लेता हूँ,'' और अगर तुम उन ज़ालिम लोगों को उस वक़्त देखो! जब वह मौत की सख़्तियों में हों; और फ़रिश्ते हाथ बढ़ा रहे हों कि निकालो अपनी जानें! आज तुमको ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब दिया जाएगा, इसलिए कि तुम अल्लाह पर झूठ बोला करते थे और उसकी आयतों के मुक़ाबले में अकड़ते थे।

وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَ

९४- और तुम उसी तरह एक-एक करके 'हमारे' पास आ गये

تَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ۚ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾

हो, जिस तरह 'हमने' तुम को पहली बार पैदा किया था; और जो कुछ 'हमने' तुमको दे रखा था उसे अपने पीछे छोड़ आए, और 'हम' तुम्हारे साथ, तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को भी नहीं देख रहे, जिनके बारे में तुम दावे से कहते थे, ''वे तुम्हारे मामले में (अल्लाह के) शरीक हैं,'' तुम्हारे आपसी सम्बन्ध टूट चुके हैं, और जो दावे तुम किया करते थे वे सब जाते रहे।

اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ۚ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٩٥﴾

९५- बेशक अल्लाह ही दाने और गुठली को फाड़ (कर) उगाता है, 'वही' जानदार को बेजान से निकालता है; और वही बेजान से जानदार को निकालने वाला है'यही' तो अल्लाह है, फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो?-

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾

९६- 'वही' सुबह की रोशनी फाड़ निकालता है, और 'उसी' ने रात को आराम के लिए बनाया, और सूरज और चाँद को हिसाब (का ज़रिया बनाया) यह बड़े ताक़त वाले, जानने वाले का ठहराया हुआ अन्दाज़ा है;

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾

९७- और 'वही' तो है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाए, ताकि तुम उनके ज़रिये ख़ुश्की (थल) और समुद्र के अंधेरों में राह पा सको; जो लोग जानना चाहें उनके लिए हमने निशानियाँ खोल-खोल कर बयान कर दी हैं;

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ۚ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾

९८- और 'वही' तो है जिसने तुम्हें अकेली जान से पैदा किया, फिर एक ठहरने की जगह है, और एक (अल्लाह के) सुपुर्द होने की; उन लोगों के लिए जो समझें, 'हमने' निशानियाँ खोल-खोल कर बयान कर दीं हैं;

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾

९९- और 'वही' तो है जिसने आसमान से पानी बरसाया, फिर 'हमने' उसके ज़रिये हर तरह की हरियाली (वनस्पति) उगाई; फिर उससे हमने हरी-भरी कोंपलें निकालीं, और तने बढ़ाए जिससे 'हम' नीचे ऊपर चढ़े हुए दाने निकालते हैं, और ख़जूर के गाभे से झुके हुए गुच्छे भी, और अंगूर, ज़ैतून और अनार के बाग़ लगाए, जो एक-दूसरे से मेल खाते हैं, और नहीं भी, यह चीज़ें जब फलती हैं, तो उनके फलों पर और उनके पकने पर नज़र करो! इनमें उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं, बड़ी निशानियाँ हैं।

१००- और उन लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझी ठहरा रखा है, हालाँकि उनको 'उसी' ने पैदा किया; और बे समझे-बूझे 'उसके' लिए बेटे और बेटियाँ गढ़ लीं, 'वह' इन बातों से, जो वे उसके बारे में बयान करते हैं, पाक है, और उसकी शान उनसे ऊँची है।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنَاتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يَصِفُونَ ۝

१०१- (वही) आसमान और ज़मीन को पैदा करने वाला है, 'उसके' कोई औलाद कैसे हो सकती है, जबकि उसके पत्नी ही नहीं,! और 'उसी' ने हर चीज़ को पैदा किया है और 'वही' हर चीज़ का जानने वाला है;

بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ صَاحِبَةٌ ۖ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

१०२- 'वही' अल्लाह, तुम्हारा रब है; उसके सिवा कोई मअ़बूद (उयास्य) नहीं; हर चीज़ का पैदा करने वाला है; तो तुम उसी की इबादत करो, और 'वही' हर चीज़ का निगराँ (संरक्षक) है;

ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوهُ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝

१०३- निगाहें उसे नहीं पा सकतीं, और 'वह' निगाहों को पा लेता है, और 'वह' बड़ा बारीक (गूढ़) ख़बर रखने वाला है।

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ ۖ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝

१०४- (ऐ मुह़म्मद) आप के रब की ओर से (आँख खोल देने वाले) प्रमाण (दलीलें) आ चुके हैं; तो जिसने देखा, उसने अपना भला ही किया; और जो अन्धा बना रहा, उसने अपने ह़क़ में बुरा किया; और मैं तुम्हारा निगहबान नहीं हूँ।

قَدْ جَاءَكُمْ بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ۝

१०५- और इसी तरह 'हम' अपनी आयतें फेर-फेर कर बयान करते हैं, ताकि काफ़िर यह न कहें, ''तुम'' (यह बातें अह्ले किताब से) सीखे हुए हो,'' और ताकि समझने वाले लोगों के लिए बयान कर दें।

وَكَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ وَلِيَقُولُوا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهُ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

१०६- और जो हुक्म आप के 'रब' की ओर से आप के पास आता है, उसी की पैरवी कीजिए; 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद नहीं, और मुश्रिकों पर ध्यान न दीजिए;

اتَّبِعْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۝

१०७- और अगर अल्लाह चाहता, तो यह लोग शिर्क न करते; और 'हमने' आपको उन पर निगहबान (संरक्षक) मुक़र्रर नहीं किया और न आप उनके कोई ज़िम्मेदार ही हैं;

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا ۗ وَمَا جَعَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ
عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ كَذَٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ
إِلَىٰ رَبِّهِم مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

१०८- और जिन लोगों को यह मुश्रिक अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, उनको बुरा न कहना! यह भी कहीं अल्लाह को बेअदबी से बिना समझे-बूझे बुरा न कह बैठें; इस तरह 'हमने' हर फ़िर्क़े (गिरोह) के आमाल (उनकी नज़रों में) अच्छे कर दिखाए हैं, फिर उनको अपने रब की ओर लौट कर जाना है, तब 'वह' उनको बताएगा कि वे क्या-क्या किया करते थे?

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَتْهُمْ آيَةٌ
لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ وَمَا
يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

१०९- और यह लोग तो अल्लाह की सख़्त-सख़्त क़समें खाते हैं कि अगर उनके पास कोई निशानी आ जाए, तो उस पर वे ज़रूर ईमान लाएँ; कह दीजिए, ''निशानियाँ तो अल्लाह ही के पास हैं।'' और तुम्हें क्या पता! जब वे आ जाएँगी; तब भी वे ईमान नहीं लाएँगे;

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ
مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

११०- और 'हम' उनके दिलों को और उनकी निगाहों को फेर देंगे, जिस तरह वे पहली बार ईमान नहीं लाए थे; और 'हम' उन्हें छोड़ देंगे कि वे अपनी सरकशी में भटकते रहें;

पारा नं०-८

* وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَىٰ
وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا
إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ۝

१११- और अगर 'हम' उनकी ओर फ़रिश्ते भी उतार देते, और मुर्दे भी उनसे बातें करने लगते, और 'हम' हर चीज़ उनके सामने लाकर इकट्ठा कर देते, तो भी वे ईमान न लाते; सिवाय इसके कि अल्लाह ही की मर्ज़ी हो, लेकिन उनमें अक्सर लोग समझ नहीं रखते;

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيَاطِينَ الْإِنسِ
وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ
غُرُورًا وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ۝

११२- और इसी तरह 'हमने' इन्सानों और जिन्नों में से शैतानों को हर नबी का दुश्मन बनाया, जो चिकनी-चुपड़ी बात एक-दूसरे के मन में डाल कर धोखा देते थे और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वह ऐसा काम न करते, तो अब उनको छोड़ दो, जो कुछ वे गढ़ते हैं।

وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُم مُّقْتَرِفُونَ ۝

११३- और ताकि जो लोग आख़िरत को नहीं मानते, उनके दिल उसकी ओर झुकें, और ताकि वह उसे पसंद कर लें, और ताकि जो कमाई उन्हें करनी है कर लें।

أَفَغَيْرَ اللَّهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ
إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ
الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِّن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ

११४- क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को फ़ैसला करने वाला बनाऊँ हांलाकि 'वही' है जिसने तुम्हारी ओर किताब नाज़िल की है, जिसमें (हर तरह की) बातें खोल-खोल कर बता

فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝

दी गई हैं; और जिन लोगों को 'हमने' किताब दी थी, वह भी जानते हैं कि यह तुम्हारे 'रब' की ओर से ह़क़ के साथ नाज़िल हुई है, तो तुम हरगिज़ शक में न पड़ना।

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

११५- और तुम्हारे 'रब' की बात बिल्कुल सच्ची और इन्साफ़ की है, कोई 'उसके' कलाम को बदल नहीं सकता, और 'वह' सुनता, जानता है।

وَإِنْ تُطِعْ أَكْثَرَ مَنْ فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝

११६- और ज़मीन में अक्सर लोग ऐसे हैं कि अगर तुम उनके कहने पर चलो, तो वह तुमको अल्लाह के रास्ते से भटका दें; वे तो केवल अटकल ही के पीछे चलते हैं और बस अटकलें ही लगाते रहते हैं।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

११७- आप का 'रब' उन्हें अच्छी तरह जानता है जो उसके रास्ते से भटकता है और वह उन्हें भी जानता है जो सीधी राह पर हैं।

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ۝

११८- तो जिस चीज़ पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, उसको खाओ; अगर तुम उसकी आयतों को मानते हो।

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ۝

११९- और क्या बात है! कि तुम उसमें से न खाओ, जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो; और जो चीज़ें अल्लाह ने तुम पर ह़राम की हैं, वह पूरी तरह तुम से बयान कर दी हैं; यह और बात है कि उसके लिए कभी तुम्हें मजबूर होना पड़े; और बहुत से लोग तो बिना इल्म के, मनमाने तरीक़े पर (लोगों को) बहकाते रहते हैं, बेशक तुम्हारा 'रब' ह़द से बाहर जाने वालों को खूब जानता है।

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ۝

१२०- और छोड़ दो खुले गुनाह और छिपे गुनाह को भी, बेशक गुनाह करने वालों को उसका बदला दिया जाएगा, जिस कमाई में वे लगे रहे।

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ۝

१२१- और उसे न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, और उसमें से खाना गुनाह है; और शैतान तो अपने दोस्तों के दिलों में यह बात डालता है, कि तुमसे झगड़ें; और अगर तुम लोगों ने उसकी बात मान ली तो बेशक तुम भी मुश्रिक हो जाओगे।

أَوَمَن كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَٰهُ وَجَعَلْنَا لَهُۥ نُورًا
يَمْشِى بِهِۦ فِى ٱلنَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُۥ فِى ٱلظُّلُمَٰتِ
لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَٰفِرِينَ مَا
كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ

१२२- क्या वह व्यकित जो पहले मुर्दा था, फिर 'हमने' उसमें जान डाली, और उसके लिए रोशनी कर दी, जिसको लिए हुए वह लोगों के बीच चलता-फिरता है; कहीं उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो अन्धेरों में पड़ा हुआ हो, वहाँ से निकल नहीं सकता? इसी तरह काफ़िरों को जो भी वह कर रहे हैं भला दिखाई देता है;

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِى كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَٰبِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا۟
فِيهَا ۖ وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ

१२३- और इसी तरह 'हमने' हर बस्ती में उसके बड़े-बड़े अपराधियों को लगा दिया है ताकि वह चालें (षड़यंत्र) चलें; और जो चालें वे चलते हैं, अपनी ही जानों के लिए चलते हैं, और (जबकि) उन्हें इसका भी एहसास नहीं होता;

وَإِذَا جَآءَتْهُمْ ءَايَةٌ قَالُوا۟ لَن نُّؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ
مَآ أُوتِىَ رُسُلُ ٱللَّهِ ۘ ٱللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُۥ ۗ
سَيُصِيبُ ٱلَّذِينَ أَجْرَمُوا۟ صَغَارٌ عِندَ ٱللَّهِ وَعَذَابٌ
شَدِيدٌۢ بِمَا كَانُوا۟ يَمْكُرُونَ

१२४- और जब उनके पास कोई आयत आती है, तो कहते हैं, ''हम हरगिज़ नहीं मानेंगे, जब तक कि वैसी ही चीज़ हमें न दी जाए जो अल्लाह के रसूलों को दी गईं,'' अल्लाह खूब जानता है, जिस पर अपना पैग़ाम भेजता है; जो लोग गुनाहगार हैं, उनको अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत होगी और बड़ा अज़ाब होगा, इसलिए कि चालें चलते थे।

فَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ أَن يَهْدِيَهُۥ يَشْرَحْ صَدْرَهُۥ
لِلْإِسْلَٰمِ ۖ وَمَن يُرِدْ أَن يُضِلَّهُۥ يَجْعَلْ صَدْرَهُۥ
ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى ٱلسَّمَآءِ ۚ كَذَٰلِكَ
يَجْعَلُ ٱللَّهُ ٱلرِّجْسَ عَلَى ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ

१२५- तो जिस व्यक्ति को अल्लाह सीधी राह दिखाना चाहता है, उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है; और जिसे गुमराह करना चाहता है, उसके सीने को तंग (संकुचित) कर देता है, और (इस्लाम के ख़्याल से) दम घुटने लगता है, मानो (उनकी रूह) आसमान पर चढ़ रहा हो, इस तरह अल्लाह उन लोगों को गंदगी में डाले रखता है, जो ईमान नहीं लाते।

وَهَٰذَا صِرَٰطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۗ قَدْ فَصَّلْنَا ٱلْءَايَٰتِ
لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ

१२६- और यह तुम्हारे 'रब' का सीधा रास्ता है, 'हमने' निशानियाँ ध्यान देने वालों के लिए, खोल-खोल कर बयान कर दी हैं।

لَهُمْ دَارُ ٱلسَّلَٰمِ عِندَ رَبِّهِمْ ۖ وَهُوَ وَلِيُّهُم بِمَا كَانُوا۟
يَعْمَلُونَ

१२७- उनके लिए उनके 'रब' के पास सलामती का घर है, और 'वही' उनका वली (संरक्षक) है, उन कामों की वजह से जो वे करते हैं।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا يَٰمَعْشَرَ ٱلْجِنِّ قَدِ
ٱسْتَكْثَرْتُم مِّنَ ٱلْإِنسِ ۖ وَقَالَ أَوْلِيَآؤُهُم مِّنَ

१२८- और जिस दिन 'वह' सबको जमा करेगा, (और कहेगा), ''ऐ जिन्नों के गिरोह! तुम ने तो इन्सानों से खूब फ़ायदा

उठाया,'' और इन्सानों में से जो उनके साथी होंगे, वे कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! हम आपस में एक- दूसरे से फ़ायदा उठाते रहे और इस वक़्त को पहुँच गये जो 'आप' ने हमारे लिए निश्चित किया था।'' 'वह' कहेगा, ''आग (जहन्नम) तुम्हारा ठिकाना है,'' उसमें तुम्हें हमेशा रहना है,'' मगर अल्लाह जितना चाहे, बेशक तुम्हारा रब हि़कमत वाला, जानने वाला है;

الْإِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَغْنَا أَجَلَنَا الَّذِي أَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَالِدِينَ فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝

१२९- और इसी तरह 'हम' ज़ालिमों को, एक-दूसरे (को जहन्नम) का साथी बना देंगे, उस कमाई की वजह से जो वे करते थे;

وَكَذَٰلِكَ نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

१३०- ''ऐ जिन्नों और इन्सानों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे, जो तुम्हें 'मेरी' आयतें सुनाते और इस दिन के पेश आने से तुम्हें डराते?'' वे कहेंगे, ''क्यों नहीं!! (रसूल तो आए थे) हम ख़ुद ही अपने ख़िलाफ़ गवाह हैं।'' इन लोगों को दुनियावी ज़िन्दगी ने धोखे में डाल रखा था, मगर अब वे ख़ुद अपने ही ख़िलाफ़ गवाही देने लगे कि वे इन्कार करने वाले थे;

يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي وَيُنْذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا شَهِدْنَا عَلَىٰ أَنْفُسِنَا ۖ وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ۝

१३१- यह जान लो कि तुम्हारा 'रब' ऐसा नहीं कि बस्तियों को ज़ुल्म से हलाक कर दे और वहाँ के रहने वालों को ख़बर न हो।

ذَٰلِكَ أَنْ لَمْ يَكُنْ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا غَافِلُونَ ۝

१३२- और सभी के दर्जे उनके आ़माल के हि़साब से हैं, और जो काम यह लोग करते हैं, उससे तुम्हारा 'रब' बेख़बर नहीं;

وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِمَّا عَمِلُوا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ۝

१३३- और आप का 'रब' बेनियाज़ (निस्पृह) रह़मत वाला है, अगर 'वह' चाहे तो तुम्हें ख़त्म कर दे और तुम्हारे बाद जिन लोगों को चाहे ले आए, जिस तरह उसने तुम्हें भी दूसरे लोगों की नस्ल से पैदा किया है;

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۚ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْ بَعْدِكُمْ مَا يَشَاءُ كَمَا أَنْشَأَكُمْ مِنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ آخَرِينَ ۝

१३४- बेशक जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है, उसे ज़रूर आना है; और तुम में उसे मात देने (हराने) की क़ुदरत नहीं है;

إِنَّ مَا تُوعَدُونَ لَآتٍ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ۝

१३५- कह दीजिए, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम अपनी जगह काम करते रहो, मैं अपनी जगह काम कर रहा हूँ; बहुत जल्द तुमको मालूम हो जाएगा कि आख़िरत (जन्नत) में किसका घर

قُلْ يَا قَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝

होगा,'' बेशक ज़ालिम लोग कामियाब होने वाले नहीं!

१३६- और अल्लाह ही की पैदा की हुई खेती और चौपायों में से अल्लाह का भी एक हिस्सा मुक़र्रर कर लेते हैं, और अपने ख़याल से कहते हैं, ''यह तो अल्लाह का है और यह हमारे ठहराए हुए साझीदारों का है,'' फिर जो उनके साझीदारों का (हिस्सा) है, वह अल्लाह को नहीं पहुँचता; और जो अल्लाह का है, वह उनके साझीदारों को पहुँच जाता है, कितना बुरा है! जो वे फ़ैसला करते हैं;

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ۗ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝

१३७- इसी तरह बहुत-से मुशिरकों को उनके साझीदारों ने उनकी औलादों को जान से मार डालना अच्छा कर दिखाया, ताकि उन्हें हलाकत में डाल दें और उनके लिए उनके दीन में संदेह पैदा कर दें, और अगर अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते; तो उनको छोड़ दीजिए कि वह जानें! और उनका झूठ।

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ۝

१३८- और वे कहते हैं, ''यह चौपाए और खेती मना है, इसे तो केवल वही खा सकता है; जिसे हम चाहें।'' ऐसा वे खुद अपने ख़याल से कहते हैं और कुछ चौपाए ऐसे हैं, जिनके पीठ पर चढ़ना हराम कर लिया है, और कुछ जानवर ऐसे हैं जिन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते; यह सब उन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है, जल्द ही वह उनके झूठ गढ़ने का बदला देगा;

وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝

१३९- और वे कहते हैं, ''जो कुछ इन जानवरों के पेट में है वह ख़ास हमारे मर्दों के लिए है और वह हमारी औरतों के लिए हराम है। लेकिन अगर वह मुर्दा हो तो वे सब उसमें शरीक हैं।'' बहुत जल्द ही 'वह' उन्हें उनके ऐसा कहने का बदला देगा, बेशक 'वह' बड़ा हिकमत वाला, ख़ूब जानने वाला है।

وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ۚ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝

१४०- वे लोग घाटे में रहे जिन्होंने जानबूझ कर अपनी औलाद को क़त्ल किया, और अल्लाह पर झूठ गढ़ कर, उसकी दी हुई रोज़ी को हराम ठहराया, हक़ीक़त में वे भटक गये, और वे सीध ी राह पाने वाले नहीं।

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ۚ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝

१४१- और 'वही' है जिसने बाग़ पैदा किये (उसमें से), कुछ सहारे से चढ़ाए जाते हैं और कुछ नहीं चढ़ाए जाते और खजूर और खेती भी, जिनकी पैदावार तरह-तरह की होती है, और

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ

كُلُوا مِن ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ ۖ وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ

ज़ैतून और अनार, जो एक- दूसरे से मिलते जुलते हैं और नहीं भी; जब यह फलें तो उनका फल खाओ, और जब उनको काटो तो अल्लाह का हक़ भी अदा करो जो उसकी कटाई के दिन (वाजिब) होता है; और हद से आगे न बढ़ो, क्योंकि 'वह' हद से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता।

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا ۚ كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ

१४२- और चौपायों में से कुछ बोझ उठाने वाले और कुछ धरती से लगे हुए जानवर पैदा किये, अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से खाओ और शैतान के क़दमों पर न चलो, वही तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है।

ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۖ مِنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ ۖ نَبِّئُونِي بِعِلْمٍ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ

१४३- आठ नर-मादा पैदा किये- दो भेड़ की जाति से और दो बकरी की जाति से- कह दीजिए, ''क्या 'उसने' दोनों नर हराम किये हैं या दोनों मादा या उसको जो इन दोनों मादा के पेट में लिपट रहा हो? अगर सच्चे हो तो मुझे इल्म (ज्ञान) के आधार पर बताओ,''

وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ ۖ أَمْ كُنتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ وَصَّاكُمُ اللَّهُ بِهَٰذَا ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

१४४- और दो ऊँटों की (जाति से) और दो गायों की (जाति से) कह दीजिए, ''क्या उसने दोनों नर हराम किये हैं या दोनों मादा को, या उसको, जो इन दोनों मादा के पेट में हो? या तुम मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया था? फिर उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा! जो लोगों को बहकाने के लिए, बिना इल्म के अल्लाह पर झूठ गढ़े? बेशक अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता।''

قُل لَّا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَىٰ طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَن يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَّسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

१४५- कह दीजिए, ''जो हुक्म मुझ पर नाज़िल हुआ है, मैं उनमें कोई चीज़ नहीं पाता कि किसी खाने वाले पर उसका कोई खाना हराम किया गया हो, सिवाय इसके कि वह मुर्दार हो, या बहता हुआ खून हो, या सुअर का गोश्त हो, कि यह सब नापाक हैं; या कोई गुनाह की चीज़ हो या उस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो; और अगर कोई मजबूर हो जाए, लेकिन न तो नाफ़रमानी करे और न हद से बाहर निकल जाए, तो तुम्हारा रब माफ़ करने वाला, रहम वाला है।''

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ ۖ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا

१४६- और यहूदियों पर 'हमने' सब नाखून वाले जानवर हराम कर दिये थे, और गायों और बकरियों में से उनकी

حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ
ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُم بِبَغْيِهِمْ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ

चरबी ह़राम कर दी थी, सिवाय उस (चर्बी) के जो उनकी पीठ पर लगी हो, या ओझड़ी में हो या हड्डी में मिली हो; यह सज़ा 'हमने' उनको उनकी शरारत की वजह से दी थी, और 'हम' तो सच कहने वाले हैं।

فَإِن كَذَّبُوكَ فَقُل رَّبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ
وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ

१४७- और अगर यह लोग आप को झुठलाएँ तो कह दीजिए कि तुम्हारा रब वसीअ़(व्यापक) रह़मत वाला है, मगर उसका अ़ज़ाब गुनहगार लोगों से नहीं टलेगा।''

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا
وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ
الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ قُلْ هَلْ
عِندَكُم مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا
الظَّنَّ وَإِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ

१४८- मुश्रिक (बहुदेववादी) कहेंगे, ''अगर अल्लाह चाहता तो न हम साझीदार ठहराते और न हमारे बाप-दादा ही; और न हम किसी चीज़ को ह़राम ठहराते,'' ऐसे ही उनसे पहले के लोगों ने झुठलाया था, यहाँ तक कि हमारे अ़ज़ाब का मज़ा चख रहे हैं; कह दीजिए, ''क्या तुम्हारे पास कोई इल्म (सनद) है कि उसे हमारे सामने पेश करो?''तुम लोग गुमान पर चलते हो और अटकल से काम लेते हो;

قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ
أَجْمَعِينَ

१४६- कह दीजिए, ''पूरी हुज्जत (तर्क) तो अल्लाह ही की है, अगर 'वह' चाहता तो तुम सब को सीधा रास्ता दिखा देता।''

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ
هَٰذَا ۖ فَإِن شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ
أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ وَهُم بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ

१५०- कह दीजिए, ''अपने उन गवाहों को लाओ, जो इसकी गवाही दें कि अल्लाह ने इसे ह़राम किया है।'' फिर अगर वे गवाही दें तो तुम उनके साथ गवाही न देना, और उन लोगों की इच्छाओं के पीछे न चलना जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और जो आख़िरत को नहीं मानते और (वे दूसरों को) अपने रब के बराबर ठहराते हैं।

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ ۖ أَلَّا تُشْرِكُوا
بِهِ شَيْئًا ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ وَلَا تَقْتُلُوا
أَوْلَادَكُم مِّنْ إِمْلَاقٍ ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۖ
وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۖ
وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ
ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

१५१- कह दीजिए, ''आओ, हम तुम्हें वह बातें पढ़ कर सुनाएँ जो चीज़ तुम्हारे रब ने तुम पर ह़राम कर दी हैं यह कि किसी चीज़ को अल्लाह का साझीदार न बनाना और माँ-बाप से (अच्छा) सुलूक करते रहना, और भुखमरी के डर से अपनी औलाद को क़त्ल न करना क्योंकि तुमको और उनको 'हम' ही रोज़ी देते हैं, और बेहयाई के कामों के पास भी न जाना चाहे वह खुली हुई हों या छिपी हुई हो, और किसी जानदार को जिसके क़त्ल को अल्लाह ने ह़राम कर दिया हो, क़त्ल न करना, मगर ह़क़ के लिए जिसे शरीअ़त हुक्म दे; इन बातों की 'वह' तुम्हें ताकीद

करता है, ताकि तुम समझो;

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۖ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ

१५२- और यतीम के माल के पास भी न जाना! मगर ऐसे तरीक़े से जो बेहतर हो, यहाँ तक कि वह जवानी को पहुँच जाए; और नाप और तौल इन्साफ़ के साथ पूरा-पूरा किया करो; 'हम' किसी को तकलीफ़ नहीं देते मगर उसकी ताक़त के मुताबिक़; और जब बात कहो तो इन्साफ़ की कहो चाहे मामला अपने नातेदार का ही क्यों न हो; और अल्लाह के अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करो; यह बातें हैं, (जिसकी उसने) तुम्हें ताकीद की, ताकि तुम ध्यान रखो;

وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

१५३- और यह कि मेरा सीधा रास्ता यही है, तो तुम इसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वे तुम्हें 'उसकी' राह से हटा कर इधर-उधर कर देंगे; यह वही बात है जिसकी उसने तुम्हें ताकीद की! ताकि तुम परहेज़गार बनो।''

ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ

१५४- फिर 'हमने' मूसा को किताब दी थी, ताकि उन लोगों पर जो भले हैं नेअ़मत पूरी कर दें, और हर चीज़ का बयान और हिदायत और रह़मत है, ताकि वे लोग अपने रब से मिलने पर ईमान लाएँ।

وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

१५५- और यह किताब 'हमने' ही उतारी है, जो बरकत वाली है; तो तुम उसकी पैरवी करो और डरो, ताकि तुम पर मेहरबानी की जाए;

أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ الْكِتَابُ عَلَىٰ طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَافِلِينَ

१५६- कि ऐसा न हो! कि तुम कहने लगो, ''किताब तो केवल हमसे पहले दो गिरोहों पर उतारी गयी थी, और हम उनके पढ़ने-पढ़ाने से ग़ाफ़िल थे,''

أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِينَ يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ

१५७- या यह कहने लगो, ''अगर हम पर किताब उतारी गयी होती! तो हम उन लोगों से बढ़ कर सीधी राह पर होते!'' तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से दलील और रह़मत आ गई है; तो उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा! जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और उनसे (लोगों को) फेरे?-जो लोग हमारी आयतों से रोकते हैं, उन्हें 'हम' इस रोकने की वजह से

जल्द ही बुरी सज़ा देंगे।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمُ الْمَلَٰٓئِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ
رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ ءَايَٰتِ رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ
ءَايَٰتِ رَبِّكَ لَا يَنفَعُ نَفْسًا إِيمَٰنُهَا لَمْ تَكُنْ ءَامَنَتْ
مِن قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِىٓ إِيمَٰنِهَا خَيْرًا ۗ قُلِ
انتَظِرُوٓا۟ إِنَّا مُنتَظِرُونَ ﴿١٥٨﴾

१५८- क्या यह लोग इसी का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि इनके पास फ़रिश्ते आ जाएँ या ख़ुद तुम्हारा रब आ जाए, या तुम्हारे रब की कोई निशानी आ जाए? जिस दिन तुम्हारे रब की कोई निशानी आ जाएगी, फिर किसी व्यक्ति को उसका ईमान कुछ फ़ायदा न पहुँचाएगा जो व्यक्ति पहले ईमान न लाया हो या जिसने अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई हो, कह दीजिए, ''तुम भी इन्तिज़ार करो, हम भी इन्तिज़ार करते हैं।''

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا۟ دِينَهُمْ وَكَانُوا۟ شِيَعًا لَّسْتَ
مِنْهُمْ فِى شَىْءٍ ۚ إِنَّمَآ أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا
كَانُوا۟ يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾

१५९- जिन लोगों ने अपने धर्म के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और खुद गिरोहों में बँट गये, आपका उनसे कोई सम्बन्ध नहीं; उनका मामला तो बस अल्लाह के हवाले है, फिर 'वह' उन्हें बता देगा जो कुछ वे किया करते थे।

مَن جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُۥ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۖ وَمَن
جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰٓ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦٠﴾

१६०- जो कोई नेकी के साथ आएगा उसे उसका दस गुना बदला मिलेगा, और जो बुराई के साथ आएगा उसे वैसी ही सज़ा मिलेगी, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

قُلْ إِنَّنِى هَدَىٰنِى رَبِّىٓ إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ
دِينًا قِيَمًا مِّلَّةَ إِبْرَٰهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦١﴾

१६१- कह दीजिए,''मेरे 'रब' ने मुझे सीधा रास्ता दिखा दिया, बिल्कुल ठीक धर्म इब्राहीम की मिल्लत का, जो सबसे कट कर एक (अल्लाह) का हो गया था और वह मुश्रिकों में से न था।''

قُلْ إِنَّ صَلَاتِى وَنُسُكِى وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِى لِلَّهِ
رَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿١٦٢﴾

१६२- कह दीजिए, ''मेरी नमाज़ और मेरी कुर्बानी, मेरा जीना और मरना सब अल्लाह के लिए है, जो सारी दुनिया का रब है;

لَا شَرِيكَ لَهُۥ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا۠ أَوَّلُ
الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾

१६३- जिसका कोई साझीदार नहीं, और मुझे तो इसी का हुक्म मिला है, और मैं सबसे पहला मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ।''

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِى رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَىْءٍ ۚ
وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ
وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم

१६४- कह दीजिए, ''क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब ढूँढू, जबकि हर चीज़ का रब 'वही' है'' और यह कि हर एक व्यक्ति जो कुछ (बुराई) कमाता है, उसका फल वही भोगेगा;

بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝

और कोई व्यक्ति किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, फिर तुम लोगों को अपने रब की ओर लौट कर जाना है, उस समय 'वह' तुम्हें बता देगा, जिसमें तुम्हारा आपस में इख़्तिलाफ़ था।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ۗ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

१६५- और 'वही' तो है जिसने ज़मीन में तुमको अपना ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया और एक-दूसरे पर दर्जे बुलन्द किये ताकि जो कुछ उसने तुमको दिया है उसमें 'वह' तुम्हारा इम्तिहान ले, बेशक तुम्हारा रब जल्द ही सज़ा देने वाला और 'वह' बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।



अनुवाद- सूरतुल् अअ़राफ़ि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के १४६३५ अक्षर, ३३८७ शब्द, २०६ आयतें, और २५ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

१- अलिफ़्- लाम्- मीम्- साद्,

الٓمّٓصٓ ۝١

२- (ऐ मुह़म्मद) किताब जो आप की ओर उतारी गयी, इससे आपके सीने में कोई तंगी न हो, ताकि आप इसके ज़रिये सचेत करें, और यह ईमान वालों के लिए नसीह़त है;

كِتَٰبٌ أُنزِلَ إِلَيْكَ فَلَا يَكُن فِى صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنذِرَ بِهِۦ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝٢

३- जो (किताब) आप के रब की ओर से आपकी ओर नाज़िल हुई है, उसकी पैरवी करें और उसे छोड़ कर दूसरे साथियों की पैरवी न करें, (मगर) तुम लोग कम ही नसीह़त क़ुबूल करते हो।

ٱتَّبِعُوا۟ مَآ أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا۟ مِن دُونِهِۦٓ أَوْلِيَآءَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝٣

४- और कितनी ही बस्तियाँ थीं, जिन्हें 'हमने' हलाक कर दिया, उन पर 'हमारा' अ़ज़ाब रात को आता था, जबकि वे सो रहे होते, या (दिन को) वे क़ैलूला (दोपहर को आराम) कर रहे होते;

وَكَم مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَٰهَا فَجَآءَهَا بَأْسُنَا بَيَٰتًا أَوْ هُمْ قَآئِلُونَ ۝٤

५- तो जिस वक़्त उन पर अ़ज़ाब आता था तो उनके मुहँ से यही निकलता था, ''हक़ीक़त में हम ही ज़ालिम थे''

فَمَا كَانَ دَعْوَىٰهُمْ إِذْ جَآءَهُم بَأْسُنَآ إِلَّآ أَن قَالُوٓا۟ إِنَّا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ۝٥

६- तो 'हम' उन लोगों से ज़रूर पूछेंगे, जिनके पास रसूल भेजे गये थे, और 'हम' रसूलों से भी ज़रूर पूछेंगे।

فَلَنَسْـَٔلَنَّ ٱلَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ ٱلْمُرْسَلِينَ ۝٦

७- फिर 'हम' पूरे इल्म के साथ उनके सामने सब बयान कर देंगे, कि 'हम' कहीं ग़ायब तो नहीं थे।

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِم بِعِلْمٍ ۖ وَمَا كُنَّا غَآئِبِينَ ۝٧

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

८- और उस दिन बिल्कुल पक्का सच्चा वज़न होगा, तो जिनके अ़मल वज़न में भारी होंगे, वही कामियाब होंगे।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ۝

९- और वे लोग जिनके अ़मल वज़न में हल्के होंगे, तो वही वे लोग होंगे, जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला, क्योंकि वह 'हमारी' आयतों का इन्कार और अपने ऊपर जुल्म करते रहे।

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ ۗ قَلِيلًا مَا تَشْكُرُونَ ۝

१०- और 'हम' ही ने ज़मीन में तुम्हारा ठिकाना बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रोज़ी के सामान पैदा किये, (मगर) तुम बहुत कम शुक्र करते हो।

وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ لَمْ يَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ۝

११- और 'हम' ही ने तुमको पैदा किया, फिर तुम्हारी सूरत व शक्ल बनाई, फिर फ़रिश्तों को हुक्म दिया, ''आदम को सज्दः करो'' तो उन्होंने सज्दः किया सिवाय इब्लीस के, वह सज्दः करने वालों में से न हुआ;

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ۖ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ خَلَقْتَنِي مِنْ نَارٍ وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ۝

१२- फ़रमाया, ''तुझे किसने सज्दः करने से रोका, जबकि 'मैंने तुझे हुक्म दिया?'' 'बोला; ''मैं इससे अच्छा हूँ 'तूने' मुझे आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से पैदा किया।''

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ۝

१३- फ़रमाया, ''उतर जा यहाँ से! तुझे कोई ह़क़ नहीं है कि यहाँ घमंड करे, बस निकल जा; बेशक तू ज़लील है।''

قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝

१४- (उसने) कहा, ''मुझे उस दिन तक मोहलत दीजिए, जिस दिन लोग उठाए जाएँगे।'

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۝

१५- फ़रमाया,''तुझे मोहलत है।''

قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ۝

१६- कहा, ''अच्छा, इस वजह से कि 'तूने' मुझे गुमराही में डाला है, मैं भी 'तेरी' सीधी राह पर उनके लिए घात लगा कर ज़रूर बैठूँगा;

ثُمَّ لَآتِيَنَّهُمْ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ ۖ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ۝

१७- फिर उनके आगे, और उनके पीछे, और उनके दाएँ, और उनके बाएँ से, उनके पास आऊँगा; और 'तू' उनमें से अक्सर लोगों को शुक्रगुज़ार न पाएगा।''

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَدْحُورًا ۖ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

१८- फ़रमाया, ''निकल जा यहाँ से! ज़लील व ख़्वार होकर, उनमें से जो तेरी पैरवी करेंगे, 'मैं' ज़रूर तुम सबसे जहन्नम को भर दूँगा।''

وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾

१९- और ''ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी दोनों जन्नत में रहो बसो, फिर जहाँ से चाहो खाओ, और इस पेड़ के पास न जाना' वरना ज़ालिमों में से हो जाओगे।''

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢٠﴾

२०- तो शैतान ने दोनों को बहकाया, ताकि उनकी शर्मगाहों को, जो उन दोनों से छिपी थीं, उन दोनों के सामने खोल दे; और उस (इब्लीस) ने कहा, ''तुम्हारे 'रब' ने तुम दोनों को जो इस पेड़ से रोका है, तो केवल इसलिए कि कहीं ऐसा न हो कि तुम फ़रिश्ते हो जाओ, या कहीं ऐसा न हो कि तुम हमेशा अमर (जीते) रहो''

وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢١﴾

२१- और उसने उन दोनों के आगे क़समें खाईं, ''मैं ही तुम दोनों का भला चाहने वाला हूँ;''

فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۗ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٢﴾

२२- इस तरह धोखा देकर उसने उन दोनों को झुका लिया, जब उन्होंने उस पेड़ (के फल) को चखा, तो उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खुल गयीं और वह अपने ऊपर बाग़ के पत्ते जोड़-जोड़ कर रखने लगे, तब उनके रब ने उनको पुकारा, ''क्या 'मैंने' तुम दोनों को इस पेड़ से रोका न था और तुमसे कहा न था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है?''

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۫ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

२३- दोनों बोले, ''हमारे रब! 'हमने' अपने आप पर ज़ुल्म किया, अब अगर 'तूने' हमें माफ़ न किया और हम पर रह़म न किया, तो फिर हम घाटा उठाने वालों में से होंगे।''

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾

२४- फ़रमाया, ''उतर जाओ! तुम आपस में एक-दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिए एक वक़्त तक ज़मीन पर ठिकाना और (ज़िन्दगी का) सामान है।''

قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾

२५- फ़रमाया, ''उसी में तुम्हें जीना और उसी में तुम्हें मरना है और उसी में से तुमको निकाला जाएगा।''

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۗ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ۗ ذٰلِكَ مِنْ

२६- ऐ आदम की औलाद! 'हमने' तुम्हारे लिए पोशाक (वस्त्र) उतारा है कि तुम्हारी शर्मगाहों को छिपाये और हिफाज़त व

اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ۝

ज़ीनत का ज़रिया हो; और परहेज़गारी का लिबास, वह सबसे अच्छा है, यह अल्लाह की निशानियों में से है, ताकि वे ध्यान दें।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ
الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۭ
اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۭ
اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ۝

२७- ऐ आदम की औलाद! (कहीं) शैतान तुम्हें बहकावे में न डाल दे, जिस तरह 'उसने' तुम्हारे माँ-बाप को जन्नत से निकलवा दिया; उनके कपड़े उन पर से उतरवा दिये, ताकि उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खोल दे, वह और उनका गिरोह वहाँ से तुम्हें देखता है, जहाँ से तुम उनको नहीं देख सकते 'हमने' तो शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया है, जो ईमान नहीं रखते।

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَاۗءَنَا
وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ
بِالْفَحْشَاۗءِ ۭ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَي اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ۝

२८- और जब कोई बेहयाई का काम करते हैं तो कहते हैं, 'हमने' अपने बाप-दादा (पूर्वजों) को इसी तरीक़े पर पाया है, और अल्लाह ही ने हमें इसका हुक्म दिया है कह दीजिए, ''अल्लाह कभी बेहयाई की बातों का हुक्म नहीं दिया करता; भला तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बात क्यों कहते हो, जिसका तुम्हें इल्म नहीं?''

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۣ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ
مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ڛ كَمَا بَدَاَكُمْ
تَعُوْدُوْنَ۝

२९- कह दीजिए, ''मेरे 'रब' ने तो न्याय का हुक्म दिया है और यह कि इबादत के हर मौक़े (अवसर) पर अपना रूख ठीक रखो और केवल 'उसी' के बन्दे एवं फ़रमाँबरदार बनकर 'उसे' पुकारो; जैसे 'उसने' तुम्हें पहली बार पैदा किया था वैसे ही तुम फिर पैदा होगे।''

فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۭ
اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ۝

३०- एक गिरोह को 'उसने' राह दिखाई; परन्तु दूसरा गिरोह ऐसा है, जिसके ऊपर गुमराही चिपक कर रह गई; इन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपना दोस्त बना लिया, और समझते हैं कि सीधी राह पर हैं।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّ
كُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ
الْمُسْرِفِيْنَ۝

३१- ऐ आदम की औलाद! इबादत के हर मौक़े (अवसर) पर अपनी ज़ीनत (शोभा धारण) करो; और खाओ और पियो, परन्तु हृद से आगे न बढ़ो; 'वह' हृद से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता।

قل من حرم زينة الله التي أخرج لعباده والطيبت من الرزق قل هي للذين ءامنوا في الحيوة الدنيا خالصة يوم القيمة كذلك نفصل الأيت لقوم يعلمون ﴿٣٢﴾

३२- कह दीजिए, ''किसने ह़राम कर रखा है अल्लाह की उस ज़ीनत (शोभा) को, जिन्हें उसने अपने बन्दों के लिए पैदा किया और पाक चीज़ों को? कह दीजिए, ''यह दुनिया की ज़िन्दगी में भी ईमान वालों के लिए है; (और) क़ियामत के दिन तो यह केवल उन्हीं के लिए होगी, इसी प्रकार 'हम' आयतों को उन लोगों के लिए विस्तार से बयान करते हैं, जो जानना चाहें।''

قل إنما حرم ربي الفوحش ما ظهر منها وما بطن والإثم والبغي بغير الحق وأن تشركوا بالله ما لم ينزل به سلطنا وأن تقولوا على الله ما لا تعلمون ﴿٣٣﴾

३३- कह दीजिए,''मेरे 'रब' ने केवल फ़ुह़्श (बेहयाई के) कामों को ह़राम किया है जो उनमें से ज़ाहिर हों उन्हें भी और जो छिपे हों उन्हें भी- और नाह़क़ ज़्यादती से ह़क़ मारना, और इस बात को कि तुम अल्लाह का साझीदार ठहराओ, जिसके लिए उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा और इस बात को भी कि तुम अल्लाह पर थोपकर ऐसी बात कहो जिसका तुम्हें इल्म न हो।''

ولكل أمة أجل فإذا جاء أجلهم لا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون ﴿٣٤﴾

३४- और हर उम्मत (समुदाय) के लिए एक निश्चित मुद्दत है, फिर जब उनका निश्चित समय आ जाता है, तो एक घड़ी भर न पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं।

يبني ءادم إما يأتينكم رسل منكم يقصون عليكم ءايتي فمن اتقى وأصلح فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون ﴿٣٥﴾

३५- ऐ आदम की औलाद! अगर तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आएँ; तुम्हें 'मेरी' आयतें सुनाएँ, तो जिस व्यक्ति ने डर रखा और सुधार कर लिया, तो ऐसे लोगों के लिए न कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे।

والذين كذبوا بأيتنا واستكبروا عنها أولئك أصحب النار هم فيها خلدون ﴿٣٦﴾

३६- और जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया और उनके मुक़ाबले में अकड़ दिखाई; वही आग (जहन्नम) वाले हैं, जिसमें वे हमेशा (जलते) रहेंगे।

فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بأيته أولئك ينالهم نصيبهم من الكتب حتى إذا جاءتهم رسلنا يتوفونهم قالوا أين ما كنتم تدعون من دون الله قالوا ضلوا عنا وشهدوا على أنفسهم أنهم كانوا كفرين ﴿٣٧﴾

३७- तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है, जिसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा (मिथ्यारोपण किया) या उसकी आयतों को झुठलाया? ऐसे लोगों को उनके लिए लिखा हुआ हिस्सा पहुँचता रहेगा, यहाँ तक कि जब 'हमारे' भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनकी जान (प्राण) निकालने के लिए उनके पास आएँगे तो कहेंगे: ''कहाँ हैं, वे जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते थे?'' वे कहेंगे,''वे तो हमसे गायब

हो गये,'' और वे खुद अपने ख़िलाफ़ गवाही देंगे, कि वास्तव में हम इन्कार करने वाले थे।

३८- 'वह' कहेगा, ''जिन्नों और इन्सानों के जो गिरोह तुमसे पहले गुज़रे हैं,उन्हीं के साथ तुम भी आग में दाख़िल हो जाओ।'' जब भी कोई गिरोह दाख़िल होगा, तो वह अपनी बहन (अर्थात अपने जैसा दूसरे गिरोह) पर लानत करेगी, यहाँ तक कि जब सब उसमें जमा हो जाएँगे तो उनमें से बाद में आने वाले अपने से पहले वालों के बारे में कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! हमें इन्हीं लोगों ने गुमराह किया था; तो 'तू' इन्हें आग का दोगुना अ़ज़ाब दे।'' वह कहेगा, ''हर एक के लिए दोगुना ही है, लेकिन तुम नहीं जानते,''

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ فِي النَّارِ ۖ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ ۝

३६- और उनमें से पहले आने वाले अपने से बाद में आने वालों से कहेंगे, ''फिर हमारे मुक़ाबले में तुम्हें कोई फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) नहीं, तो जो (अ़मल) तुम करते रहे हो, उसके बदले में तुम अ़ज़ाब का मज़ा चखो!''

وَقَالَتْ أُولَاهُمْ لِأُخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ۝

४०- जिन लोगों ने 'हमारी' आयतों को झुठलाया, और उनके मुक़ाबले में अकड़ दिखाई, उनके लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाएँगे और न वे जन्नत में दाख़िल होंगे, यहां तक कि ऊँट सुई के नाके में से न गुज़र जाए, और हम मुजरिमों को ऐसा ही बदला देते हैं;

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ۝

४१- उनके लिए बिछौना जहन्नम का होगा और ओढ़ना भी उसी का, और ज़ालिमों को 'हम' ऐसा ही बदला देते हैं।

لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝

४२- और (इसके विपरीत) जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे काम किये- 'हम' किसी पर उसकी ताक़त (सामर्थ्य) से ज़्यादा तकलीफ़ देते ही नहीं, ऐसे ही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे-

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

४३- और उनके सीनों में एक-दूसरे के प्रति जो रंजिश होगी, उसे 'हम' दूर कर देंगे- उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और वे

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۖ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا

لِهٰذَا ۟ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ
لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۭ وَنُوْدُوْٓا اَنْ
تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٤٣

कहेंगे, ''सभी तअ़रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, 'जिसने' इसकी ओर हमें राह दिखाई, और अगर अल्लाह हमें राह न दिखाता तो हम हरगिज़ राह न पा सकते थे, बेशक 'हमारे' रब के रसूल हक़ (सत्य) लेकर आए थे।'' और उन्हें आवाज़ दी जाएगी, ''यह जन्नत है जिसके तुम वारिस बनाए गये उन कामों के बदले में जो तुम (दुनिया में) किया करते थे।''

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ
وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا
وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۭ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ
بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٤

४४- और जन्नतवाले आग वालों को पुकारेंगे, ''हमसे हमारे रब ने जो वादा किया था, उसे हमने सच पा लिया, तो क्या तुमसे तुम्हारे रब ने जो वादा कर रखा था, तुमने भी उसे सच पाया?'' वे कहेंगे, '' हाँ'' इतने में एक पुकारने वाला उनके बीच पुकारेगा, ''अल्लाह की फिट्कार हो ज़ालिमों पर-''

الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا
عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ۝٤٥

४५- जो अल्लाह की राह से रोकते और उस में टेढ़ (कमी) निकालना चाहते और आख़िरत का इन्कार करते थे,

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ
يَّعْرِفُوْنَ كُلًّاۢ بِسِيْمٰهُمْ ۚ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ
اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۣ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ
يَطْمَعُوْنَ ۝٤٦

४६- और इन दोनों (जन्नत व जहन्नम) के बीच एक ओट (दीवार) होगी, और अअ़राफ़ (दीवार) पर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उनके मस्तक (लक्षणों) से पहचान लेंगे, और वे जन्नत वालों से पुकार कर कहेंगे, ''तुम पर सलाम हो'' यह लोग (अभी) जन्नत में दाख़िल न हुए होंगे, और वे आस लगाए होंगे;

وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٧

४७- और जब उनकी निगाहें आगवालों की ओर फिरेंगी तो कहेंगे, ''ऐ हमारे रब हमें ज़ालिम लोगों में शामिल न कीजिए।''

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ
بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا
كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝٤٨

४८- और ये अअ़राफ़ (एक दीवार) वाले कुछ ऐसे लोगों से- जिन्हें ये उनके लक्षणों से पहचानते होंगे, कहेंगे, ''तुम्हारे जत्थे तो तुम्हारे कुछ काम न आए और न तुम्हारा अकड़ते रहना ही,''

اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ۭ
اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ

४९- क्या ये वही लोग हैं, जिनके विषय में तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह उन पर अपनी रह़मत न करेगा, ''तुम जन्नत

تَحْزَنُوْنَ ۝

में दाख़िल हो जाओ, तुम्हारे लिए न कोई डर है और न तुम्हें कोई ग़म होगा।''

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۭ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝

५०- और आग वाले जन्नत वालों को (रोते हुए) पुकारेंगे कि ''थोड़ा पानी हम पर बहा दो, या उन चीज़ों में से कुछ दे दो जो अल्लाह ने तुम्हें दी है, वे कहेंगे, अल्लाह ने तो यह दोनों चीज़ें इन्कार करने वालों के लिए ह़राम कर दी हैं-''

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝

५१- जिन्होंने अपना दीन खेल-तमाशा बना रखा था और जिन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखे में डाल रखा था; तो आज 'हम' भी उन्हें भुला देंगे, जिस तरह यह लोग अपने इस दिन की मुलाक़ात को भूले रहे और 'हमारी' आयतों का इन्कार करते रहे;

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰي عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

५२- और 'हम' उनके पास एक ऐसी किताब ले आए हैं, जिसको इल्म व हिदायत के साथ खोल-खोल कर बयान किया गया है, वह ईमान वालों के लिए हिदायत और रह़मत है।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ۭ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝

५३- क्या ये लोग केवल उसी के इन्तिज़ार में हैं कि उसकी ह़क़ीक़त सामने आ जाए? जिस दिन उसकी ह़क़ीक़त सामने आ जाएगी, तो जो लोग उसको पहले से भूले हुए थे, वे बोल उठेंगे, ''बेशक हमारे रब के रसूल ह़क़ लेकर आए थे, तो क्या हमारे कोई सिफ़ारिशी हैं, जो हमारी सिफ़ारिश करें, या हम (दुनिया में) फिर लौटा दिये जाएँ कि जो अ़मल हम करते थे उनके सिवा और (अच्छे) अ़मल करें?'' बेशक उन लोगों ने अपना नुक़सान किया और जो कुछ वे झूठ गढ़ा करते थे, सब उनसे गुम (ग़ायब) हो गये।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَي الْعَرْشِ ۣ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۢ بِاَمْرِهٖ ۭ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ۭ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

५४- बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया- फिर अर्श पर (राज सिंहासन पर विराजमान हुआ) जा ठहरा, 'वही' रात को दिन पर ढ़ाँपता है, जो तेज़ी से उसका पीछा करती है- और सूरज, चाँद, और तारे भी बनाए, इस तरह कि वे 'उसके' हुक्म से काम में लगे हुए हैं; देखो! सब मख़्लूक़ भी (सृष्टि) 'उसी' की है, और 'उसी'

का हुक्म है; अल्लाह सारे संसार का रब, बड़ी बरकत वाला है।

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝

५५- अपने रब को गिड़गिड़ा कर और चुपके-चुपके पुकारो, बेशक 'वह' ह़द से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता;

وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۚ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

५६- और धरती में 'उसके' सुधार के बाद बिगाड़ न पैदा करो, ख़ौफ़ और उम्मीद के साथ 'उसको' पुकारो, बेशक अल्लाह की रह़मत नेकी करने वालों से क़रीब है।

وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۚ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝

५७- और 'वही' तो है जो अपनी रह़मत से पहले हवाओं को ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है,यहाँ तक कि जब वह भारी-भारी बादलों को उठा लाती हैं तो 'हम' उसको एक मरी हुई बस्ती की ओर हाँक देते हैं, फिर उससे पानी बरसाते हैं, फिर उससे हर तरह के फल निकालते हैं; इसी तरह 'हम' मुर्दों को ज़िन्दा करके बाहर निकालेंगे-ताकि तुम्हें ध्यान रहे;

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِيْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ۚ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ۝

५८- और अच्छी ज़मीन में पेड़ पौधे 'उसके' रब के हुक्म से निकलते हैं; और जो ज़मीन ख़राब हो गयी, तो उससे खराब पैदावार के सिवा कुछ नहीं निकलता; इसी तरह 'हम' निशानियों को उन लोगों के लिए तरह-तरह से बयान करते हैं, जो शुक्र गुज़ार हैं।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝

५९- 'हमने' नूह़ को उनकी क़ौम की ओर भेजा, तो उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं; मुझे तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है;

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

६०- उनकी क़ौम के सरदारों ने कहा, ''हम तो तुम्हें खुली गुमराही में पड़ा देख रहे हैं।''

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

६१- उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मुझ में किसी तरह की गुमराही नहीं, बल्कि मैं सारी दुनिया के रब का एक रसूल हूँ।''

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

६२- तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाता हूँ, और तुम्हारा भला चाहता हूँ, और मुझको अल्लाह की ओर से ऐसी बातें मालूम

हैं, जो तुम नहीं जानते।''

أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

६३- क्या तुमको इस बात से तअ़ज्जुब हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक व्यक्ति के ज़रिये, तुम्हारे 'रब' की नसीहत आई? ताकि 'वह' तुम्हें सचेत कर दे, और ताकि तुम परहेज़गार बनो और तुम पर रह़म किया जाए?

فَكَذَّبُوهُ فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ۝

६४- मगर उन लोगों ने उनको झुठला दिया, तो 'हमने' नूह़ को और जो उनके साथ कश्ती (नौका) में सवार थे, उनको तो बचा लिया; और जिन लोगों ने 'हमारी' आयतों को झुठलाया था, उन्हें डुबो दिया, बेशक वे अन्धे लोग थे।

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝

६५- और आ़द (क़ौम) की ओर उनके भाई 'हूद' को भेजा, उन्होंने कहा, 'ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं?''

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝

६६- तो उनकी क़ौम के सरदार, जो काफ़िर थे कहने लगे, हम तो देखते हैं कि तुम तो बेवक़ूफ़ हो और हम तो तुम्हें झूठा समझते हैं।''

قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝

६७- उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम मुझ में बेवक़ूफ़ी की कोई बात नहीं है, बल्कि मैं सारे संसार के 'रब' का रसूल हूँ;

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ۝

६८- मैं तुम्हें अपने 'रब' का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारा अमानतदार, नसीह़त करने वाला हूँ।

أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَسْطَةً ۖ فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

६९- क्या तुमको इस बात से तअ़ज्जुब हुआ है, कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक व्यक्ति के ज़रिये तुम्हारे रब की नसीहत आयी, ताकि 'वह' तुम्हें सचेत करे? और याद करो,'' जब 'उसने' नूह़ की क़ौम के बाद तुम्हें उसका नायब बनाया और (जिसमानी तौर पर भी) तुम्हें बढ़ाया, तो अल्लाह की नेअ़मतों को याद करो, ताकि तुम्हें कामियाबी मिले।''

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا ۖ فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝

७०- वे बोले, ''क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि अकेले अल्लाह की हम इबादत करें और जिनकी हमारे बाप-दादा इबादत करते चले आए हैं उनको हम छोड़ दें? फिर

अगर तुम सच्चे हो तो जिस चीज़ से हमें डराते हो, उसे ले आओ।''

७१- उन्होंने कहा, ''तुम पर तो तुम्हारे रब की ओर से अ़ज़ाब और ग़ज़ब निश्चित हो चुका है क्या तुम मुझसे ऐसे नामों के बारे में झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं, जिनके लिए अल्लाह ने कोई सनद नाज़िल नहीं की? अच्छा, तो तुम भी इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।''

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّ غَضَبٌ ۖ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝

७२- फिर 'हमने' अपनी रह़मत से उन्हें और जो उनके साथ थे बचा लिया, और उन लोगों की जड़ काट दी, जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया था और वे ईमान लाने वाले ही न थे।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝

७३- और 'समूद' की ओर उनके भाई 'स़ालेह़' को भेजा, उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक खुली दलील आ चुकी है; यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की धरती पर चरती फिरे, और तुम उसे बुरी नियत से हाथ भी न लगाना, वरना दर्दनाक अ़ज़ाब तुम्हें पकड़ लेगा।

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۖ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۖ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

७४- और याद करो जब अल्लाह ने अ़ाद के बाद तुम्हें उसका नायब बनाया, और धरती में तुम्हें ठिकाना दिया, तुम उसके समतल मैदानों में महल बनाते हो, और पहाड़ों को काट-छाँट कर घर बनाते हो, तो अल्लाह की नेअ़मतों को याद करो और ज़मीन में फ़साद न करते फिरो।''

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝

७५- तो उनकी क़ौम के सरदार लोग, जो बड़े बने हुए थे उन कमज़ोर लोगों से जो उनमें ईमान लाए थे कहने लगे, ''क्या तुम जानते हो कि 'सालेह़' अपने रब का भेजा हुआ है?'' उन्होंने कहा, ''जिस चीज़ के साथ वह भेजा गया है, हम उस पर ईमान रखते हैं।''

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝

७६- उन घमंड करने वालों ने कहा, ''जिस चीज़ पर तुम ईमान लाए हो, हम तो उसको नहीं मानते;

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنتُم بِهِ كَافِرُونَ ۝

७७- फिर उन्होंने उस ऊँटनी की कूँचें- काट दीं, और अपने रब के हुक्म को तोड़ दिया और बोले, ''ऐ सालेह़! हमें तू जिस चीज़ की धमकी देता है, उसे हम पर ले आ, अगर तू ह़क़ीक़त में, रसूलों में से है।''

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يَا صَالِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

७८- तो उनको एक भूँचाल ने आ पकड़ा और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝

७९- फिर वह (सालेह़) उनके यहाँ से लौटे और कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! मैं तो तुम्हें अपने रब का पैग़ाम (सन्देश) पहुँचा चुका और मैंने तुम्हारा भला चाहा, लेकिन तुम्हें अपने ख़ैर ख़्वाह पसंद ही नहीं आते!''

فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُحِبُّونَ النَّاصِحِينَ ۝

८०- और 'हमने' लूत को भेजा! जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम ऐसे बेह़याई के काम करते हो, जिसे संसार में तुमसे पहले किसी ने नहीं किये?-

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُم بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ ۝

८१- तुम औ़रतों को छोड़कर मर्दों से ख़्वाहिशे- नफ़्स (कामेच्छा) पूरी करते हो, बल्कि तुम लोग ह़द से निकल जाने वाले हो।''

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّن دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝

८२- और उनकी क़ौम का जवाब इसके सिवा और कुछ न था, कि वे बोले ''निकालो इन लोगों को अपनी बस्ती से; यह लोग बड़े पाक बनना चाहते हैं!''

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا أَخْرِجُوهُم مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ۝

८३- फिर 'हमने' उन्हें और उनके घर वालों को छुट्कारा दिया, सिवाय उनकी बीवी के कि वह पीछे रह जाने वालों में से थी।

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۝

८४- और 'हमने' उन पर एक बरसात (पत्थरों की) बरसाई, तो देख लो! कि गुनहगारों का कैसा अंजाम हुआ?

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝

८५- और 'मद्‌यन' की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा, (तो) उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से निशानी आ चुकी है, तो तुम नाप और तौल पूरी-पूरी किया करो, और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم

مُّؤْمِنِينَ ۝

करो, और ज़मीन में सुधार के बाद ख़राबी न करो; अगर तुम ईमान वाले हो, तो समझ लो कि यह बात तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है।

وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝

८६– और हर रास्ते पर न बैठो कि धमकियाँ दिया करो और उस व्यक्ति को अल्लाह की राह से रोकने लगो जो उस पर ईमान रखता हो, और न उस रास्ते को टेढ़ा करने में लग जाओ; और याद करो वह वक़्त। जब कि तुम थोड़े थे, फिर 'उसने' तुम्हें ज़्यादा कर दिया! और देखो, बिगाड़ पैदा करने वालों का अंजाम कैसा हुआ!

وَإِن كَانَ طَائِفَةٌ مِّنكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝

८७– और अगर तुममें एक गिरोह ऐसा हो, जो उस पर ईमान लाया हो, जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह ईमान न लाया, तो सब्र से काम लो, यहाँ तक कि अल्लाह 'हमारे' बीच फ़ैसला कर दे, और 'वह' सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है।''

पारा नं०-९

* قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِن قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ۝

८८– उनकी क़ौम के सरदार जो घमंड में पड़े हुए थे कहा, ''ऐ शुऐब! हम तुझे और तेरे साथ उन लोगों को, जो ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल कर रहेंगे, या (फिर) तुम हमारे मज़हब में लौट आओ'' उन्होंने कहा, हमें नागवार हो तब भी?

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُم بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَن نَّعُودَ فِيهَا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۝

८९– हम इसके बाद, कि अल्लाह ने हमें इससे छुटकारा दे दिया है, तुम्हारे मज़हब में लौट आएँ, तो बेशक हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे, यह हमसे तो होने वालानहीं कि हम उसमें पलट कर आ जाएँ, मगर अल्लाह ही चाहे तो, जो हमारा 'रब' है, इल्म के हिसाब से हमारा 'रब' हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है; हमारा अल्लाह ही पर भरोसा है, ऐ हमारे रब! हमारे और हमारी क़ौम के बीच ह़क़ का फ़ैसला कर दे, और 'तू' सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है।''

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَاسِرُونَ ۝

९०– और उनकी क़ौम के सरदार, जो काफ़िर थे, कहने लगे, ''अगर तुमने 'शुऐब' की पैरवी की, तो बेशक तुम घाटे में पड़ जाओगे।''

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝

९१– तो उनको एक दहला देने वाले भूँचाल ने आ पकड़ा, और

फिर वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये;

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ ۝

९२- जिन्होंने शुऐब को झुठलाया था, ऐसे बरबाद हुए मानो वहाँ बसे ही न थे, शुऐब को झुठलाने वाले ही घाटे में पड़ गये।

فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ آسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ ۝

९३- तो शुऐब उनमें से निकल आए और कहा! ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैंने तुमको अपने रब का पैग़ाम पहुँचा दिया और मैंने तुम्हारा भला चाहा, तो मैं इन्कार करने वालों पर कैसे अफ़सोस करूँ!''

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُونَ ۝

९४- और 'हमने' किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा, मगर वहाँ के रहने वालों को (जो ईमान न लाए) दुखों और मुसीबतों में डाल दिया, ताकि वे गिड़गिड़ाएँ।

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوا وَّقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

९५- फिर 'हमने' बदहाली को खुशहाली में बदल दिया, यहाँ तक कि वे खूब फले-फूले और कहने लगे, ''इसी तरह दुःख और सुख हमारे बाप-दादा को भी पहुँचता रहा।'' तो 'हमने' उनको अचानक पकड़ लिया, और वे बेख़बर थे;

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِن كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

९६- और अगर उन बस्तियों के लोग ईमान ले आते और परहेज़गार हो जाते, तो 'हम' उन पर आसमान और ज़मीन की बरकतें खोल देते; मगर उन्होंने झुठलाया, तो जो कुछ वे करते थे, उसके बदले में 'हमने' उन्हें पकड़ लिया।

أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ۝

९७- क्या बस्तियों के रहने वाले इससे बे ख़ौफ़ हैं कि उनको 'हमारा' अ़ज़ाब रात को आए, जबकि वे सो रहे हों?

أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ يَلْعَبُونَ ۝

९८- या क्या बस्तियों के लोग इस ओर से निडर हैं कि उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आ जाए, और वे खेल रहे हों?

أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ۝

९९- क्या यह लोग अल्लाह के उपाय (चाल) से बेफ़िक्र हो गये थे? तो अल्लाह की उपाय से तो वही बेफ़िक्र होते हैं, जो घाटे में पड़ने वाले हैं।

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ أَهْلِهَا أَن لَّوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝

१००- क्या जो धरती के, उसके पहले रहने वाले लोगों के (मरने के) बाद वारिस (उत्तराधिकारी) हुए हैं, उन्हें यह बात हिदायत की वजह नहीं बनी, कि अगर 'हम' चाहें तो उनके गुनाहों की वजह से उन पर मुसीबत डाल दें? और उनके दिलों पर मुहर लगा दें, तो वे सुन ही न सकें।

تلك القرى نقص عليك من أنبائها ۚ ولقد جاءتهم رسلهم بالبينات فما كانوا ليؤمنوا بما كذبوا من قبل ۚ كذلك يطبع الله على قلوب الكافرين ﴿١٠١﴾

१०१- ये कुछ बस्तियाँ हैं जिनके कुछ ह़ालात 'हम' आप को सुनाते हैं, और उनके पास उनके रसूल खुली-खुली निशानियाँ लेकर आए, लेकिन वे ऐसे न हुए कि ईमान लाते, इसकी वजह यह थी कि वे पहले से झुठलाते रहे; काफ़िरों के दिलों पर अल्लाह इसी तरह मुहर लगा दिया करता है।

وما وجدنا لأكثرهم من عهد ۖ وإن وجدنا أكثرهم لفاسقين ﴿١٠٢﴾

१०२- और 'हमने' तो उनमें से अक्सर लोगों को अहद (प्रतिज्ञा) का पक्का न पाया, और 'हमने' उनमें से अक्सर लोगों को नाफ़रमान ही पाया।

ثم بعثنا من بعدهم موسى بآياتنا إلى فرعون وملئه فظلموا بها ۖ فانظر كيف كان عاقبة المفسدين ﴿١٠٣﴾

१०३- फिर 'हमने' उनके बाद मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔ़न और उसके सरदारों के पास भेजा, तो उन लोगों ने उनके साथ ज़ुल्म (ह़क़ अदा न) किया, तो देखो! फ़साद फैलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ?

وقال موسى يا فرعون إني رسول من رب العالمين ﴿١٠٤﴾

१०४- और मूसा ने कहा, ''ऐ फ़िरऔ़न! मैं सारी दुनिया के रब की ओर से रसूल हूँ;

حقيق على أن لا أقول على الله إلا الحق ۚ قد جئتكم ببينة من ربكم فأرسل معي بني إسرائيل ﴿١٠٥﴾

१०५- मुझ पर यह ह़क़ है कि मैं कोई बात अल्लाह पर गढ़ कर न कहूँ, मगर ह़क़ (बात ही) तुम्हारे 'रब' की ओर से खुली निशानी लेकर आया हूँ, तो बनी इस्राईल को मेरे साथ जाने (की इजाज़त दे) दो।

قال إن كنت جئت بآية فأت بها إن كنت من الصادقين ﴿١٠٦﴾

१०६- (फ़िरऔ़न ने) कहा, ''अगर तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो उसे पेश करो, अगर तुम सच्चे हो;''

فألقى عصاه فإذا هي ثعبان مبين ﴿١٠٧﴾

१०७- फिर उसने अपनी लाठी (अ़सा) डाल दी, तो वह एक खुला अज़दहा (साँप) बन गया;

ونزع يده فإذا هي بيضاء للناظرين ﴿١٠٨﴾

१०८- और उन्होंने अपना हाथ बाहर निकाला, तो वह देखने वालों के सामने चमक रहा था।

قال الملأ من قوم فرعون إن هذا لساحر عليم ﴿١٠٩﴾

१०६- फ़िरऔ़न की क़ौम के सरदारों ने कहा, ''बेशक, यह तो बड़ा माहिर जादूगर है!-

يريد أن يخرجكم من أرضكم ۖ فماذا تأمرون ﴿١١٠﴾

११०- यह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी धरती से निकाल दे, तो बताओ क्या कहते हो?''

قالوا أرجه وأخاه وأرسل في المدائن حاشرين ﴿١١١﴾

१११- उन्होंने कहा, ''इसे और इसके भाई को मोहलत दीजिए, और (अपने) कार्यकर्ताओं को शहरों में भेज दीजिए;

يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝

११२- कि वे (साँप के) तमाम माहिर जादूगरों को ले आएँ।''

وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ۝

११३- और जादूगर आए फ़िरऔ़न के पास कहने लगे, ''अगर हम जीत गये तो ज़रूर हमें बड़ा बदला दिया जाए''।

قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝

११४- कहा, ''हाँ, और तुम क़रीबी लोगों में हो जाओगे।''

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ۝

११५- वह (जादूगर) बोले, ''ऐ मूसा ! या तुम डालो और या हम डालते हैं?''

قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ۝

११६- (मूसा ने) कहा, '' तुम ही डालो,'' फिर जब उन्होंने (जादू की चीज़ों को) डाला तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें भयभीत कर दिया, और बहुत बड़ा जादू दिखाया।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ۝

११७- और 'हमने' मूसा की ओर वह्य (प्रकाशना) की कि ''आप अपनी लाठी डाल दें।'' फिर क्या देखते हैं कि वह उनके गढ़े हुए जादू की चीज़ों को निगलती जा रही है।

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

११८- इस तरह ह़क़ ज़ाहिर हो गया, और जो कुछ वे कर रहे थे, सब बातिल (बेकार) हो गया।

فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ۝

११६- तो वे लोग वहीं मग्लूब (हार गये) और ज़लील होकर रह गये;

وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۝

१२०- और जादूगर सज्दे में गिर पड़े;

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

१२१- बोले, ''हम तो ईमान ले आए सारी दुनिया के रब पर;

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝

१२२- मूसा और हारून के रब पर।''

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝

१२३- फिरऔ़न बोला, ''इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, तुम उस पर ईमान लाए! बेशक यह तो एक चाल है, जो तुम लोगों ने मिल कर शहर में किया है, ताकि उनमें के रहने वालों को वहाँ से निकाल दो। अच्छा, तो अब तुम्हें जल्द ही मालूम हुआ जाता है;

لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

१२४- मैं तुम्हारे एक ओर के हाथ और दूसरी ओर के पाँव कटवा दूँगा; फिर तुम सबको सूली पर चढ़वा कर रहूँगा।''

१२५- उन्होंने कहा, "हम तो अपने रब ही की ओर लौटेंगे;

قَالُوٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنۡقَلِبُوۡنَ ۚ‏

१२६- और 'उसके' सिवा तुझको हमारी कौन सी बात बुरी लगी है? जब हमारे 'रब' की निशानियाँ हमारे पास आ गयीं, तो हम उन पर ईमान ले आए, ऐ रब! हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें इस ह़ाल में उठा कि हम मुस्लिम हों।"

وَمَا تَنۡقِمُ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنۡ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَـمَّا جَآءَتۡنَا ؕ رَبَّنَاۤ اَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرًا وَّتَوَفَّنَا مُسۡلِمِيۡنَ ‏

१२७- और फ़िरऔ़न की क़ौम के सरदार कहने लगे, "क्या आप मूसा और उसकी क़ौम को ऐसे ही छोड़ देंगे कि वह ज़मीन में बिगाड़ पैदा करें और आप को और आप के मअ़बूदों को छोड़ बैठें?" उसने कहा, हम उनके बेटों को बुरी तरह क़त्ल करेंगे और उनकी बीवियों को ज़िन्दा रखेंगे, और बेशक हम उन पर पूरा अधिकार रखते हैं।"

وَقَالَ الۡمَلَاُ مِنۡ قَوۡمِ فِرۡعَوۡنَ اَتَذَرُ مُوۡسٰى وَقَوۡمَهٗ لِيُفۡسِدُوۡا فِى الۡاَرۡضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ‌ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبۡنَآءَهُمۡ وَنَسۡتَحۡىٖ نِسَآءَهُمۡ‌ۚ وَاِنَّا فَوۡقَهُمۡ قٰهِرُوۡنَ‏

१२८- मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, "अल्लाह से मदद माँगो और साबित क़दम रहो, ज़मीन तो अल्लाह की है! और 'वह' अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उसका मालिक बनाता है; और आखिरी नतीजा तो डर रखने वालों का ही है।"

قَالَ مُوۡسٰى لِقَوۡمِهِ اسۡتَعِيۡنُوۡا بِاللّٰهِ وَاصۡبِرُوۡا‌ ۚ اِنَّ الۡاَرۡضَ لِلّٰهِ ۙ يُوۡرِثُهَا مَنۡ يَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِهٖ‌ ؕ وَالۡعَاقِبَةُ لِلۡمُتَّقِيۡنَ‏

१२९- उन्होंने कहा, "तुम्हारे आने से पहले भी हम को तकलीफ़ें पहुँचती रही और आने के बाद भी, मूसा ने कहा, "क़रीब है तुम्हारा 'रब' कि तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे, और उसकी जगह तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाए, फिर देखे कि तुम कैसे अ़मल करते हो।"

قَالُوۡۤا اُوۡذِيۡنَا مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ تَاۡتِيَنَا وَمِنۡۢ بَعۡدِ مَا جِئۡتَنَا‌ ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمۡ اَنۡ يُّهۡلِكَ عَدُوَّكُمۡ وَيَسۡتَخۡلِفَكُمۡ فِى الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرَ كَيۡفَ تَعۡمَلُوۡنَ ‏

१३०- और 'हमने' फिरऔ़नियों को कई साल तक अकाल और पैदावार की कमी में डाले रखा, ताकि नसीह़त हासिल करें।

وَلَـقَدۡ اَخَذۡنَاۤ اٰلَ فِرۡعَوۡنَ بِالسِّنِيۡنَ وَنَقۡصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمۡ يَذَّكَّرُوۡنَ‏

१३१- फिर जब उन्हें अच्छी ह़ालत पेश आती है तो कहते है, "यह तो है ही हमारे लिए," और जब उन्हें बुरी ह़ालत पेश आती तो उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत (अपशगुन) बताते, जान लो! कि उनकी नहूसत तो अल्लाह ही के हाथ में है, लेकिन उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते।

فَاِذَا جَآءَتۡهُمُ الۡحَسَنَةُ قَالُوۡا لَـنَا هٰذِهٖ‌ ۚ وَاِنۡ تُصِبۡهُمۡ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوۡا بِمُوۡسٰى وَمَنۡ مَّعَهٗ‌ ؕ اَلَاۤ اِنَّمَا طٰٓـئِرُهُمۡ عِنۡدَ اللّٰهِ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ‏

१३२- और बोले, "तुम हम पर जादू करने के लिए चाहे जो निशानी ले आओ, मगर हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं।"

وَقَالُوۡا مَهۡمَا تَاۡتِنَا بِهٖ مِنۡ اٰيَةٍ لِّـتَسۡحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحۡنُ لَـكَ بِمُؤۡمِنِيۡنَ‏

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ فَاسْتَكْبَرُوْا وَ كَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ

१३३- तो 'हमने' उन पर तूफ़ान, और टिड्डियाँ और छोटे कीड़े (जुएँ), और मेढ़क, और खून- कितनी ही खुली हुई निशानियाँ भेजीं- मगर वे घमंड ही करते रहे; और वे लोग थे ही मुजरिम।

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ

१३४- और जब कभी उन पर अ़ज़ाब आता तो कहते, ''ऐ मूसा हमारे लिए अपने 'रब' से दुआ़ करो, जैसा उसने तुमसे अह्द कर रखा है, अगर तुम हमसे अ़ज़ाब को टाल दोगे तो हम तुम पर ईमान ले आएँगे और बनी इस्राईल को भी तुम्हारे साथ जाने देंगे।''

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ

१३५- फिर जब 'हम' एक मुद्दत के लिए अ़ज़ाब को दूर कर देते, जिस तक उनको पहुँचना था तो वह अह्द को तोड़ डालते।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ

१३६- तो 'हमने' उनसे बदला ले लिया और उन्हें गहरे पानी में डुबो दिया, क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठला दिया और उनसे ग़ाफ़िल हो गये।

وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ بِمَا صَبَرُوْا وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ

१३७- और जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे उनको ज़मीन के पूरब और पश्चिम का, जिसमें हमने बरकत दी थी वारिस बना दिया; और बनी इस्राईल के बारे में, उनके सब्र की वजह से, तुम्हारे 'रब' का नेक वादा पूरा हुआ, फ़िरऔन और उसकी क़ौम का वह सब कुछ 'हमने' बरबाद कर दिया, जिसे वह बनाते और ऊँचा उठाते थे।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ

१३८- और 'हमने' बनी इस्राईल को समुद्र से पार उतार दिया, फिर वे ऐसे लोगों के पास पहँचे जो अपनी कुछ मूर्तियों से लगे बैठे थे, कहने लगे ऐ मूसा! हमारे लिए भी कोई मअ़बूद (उपास्य) ठहरा दे; जैसे उनके मअ़बूद हैं, उन्होंने कहा हक़ीक़त में तुम बड़े नादान लोग हो।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ

१३९- यह लोग जिसमें लगे हुए हैं वह सब कुछ बरबाद होने वाला है, और जो काम यह करते हैं सब बेकार हैं।''

قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ

१४०- कहा, ''क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई तुम्हारे लिए और

عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝

मअ़बूद ढूँ ढूँ, हालाँकि उसी ने सारी दुनिया वालों पर तुम्हें फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी?''

وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ
سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ
نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
عَظِيْمٌ ۝

१४१- और जब 'हमने' तुम्हें फ़िरऔ़न के लोगों से छुट्कारा दिया जो तुम्हें बुरी सज़ाएँ दिया करते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी बीवियों को ज़िन्दा रहने देते और यह तुम्हारे रब की ओर से बड़ी आज़माइश (परीक्षा) थी।

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ
فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى
لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا
تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝

१४२- और 'हमने' मूसा से तीस रातों का वादा लिया, फिर 'हमने' दस और बढ़ाकर उसे पूरा किया; इस तरह उनके रब की ठहराई हुई अवधि (मीआ़द) चालीस रातों में पूरी हुई, और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, ''मेरे (पहाड़ पर जाने के) बाद तुम मेरी क़ौम में मेरी जानशीनी (प्रतिनिधित्व) करना, और सुधार करते रहना और फ़साद करने वालों के रास्ते पर न चलना।''

وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ
رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ۚ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ
انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ
تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ
مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ
اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

१४३- और जब मूसा 'हमारे' मुक़र्रर किये हुए वक़्त पर पहुँचे और उनके 'रब' ने उनसे बातें कीं, तो वह कहने लगे ''ऐ रब! 'तू' मुझे देखने की ताक़त दे ताकि मैं तुझे देख सकूँ।'' फ़रमाया, ''तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा, हाँ, पहाड़ की ओर देखते रहो, अगर यह अपनी जगह क़ायम रहा तो तुम मुझ को देख सकोगे।'' जब उनका 'रब' पहाड़ पर ज़ाहिर हुआ, तो उसको चूर-चूर कर दिया और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े, जब होश में आए तो कहने लगे, ''तेरी ज़ात पाक है! और मैं तेरे सामने तौबः करता हूँ और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूँ।''

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ
بِرِسٰلٰتِيْ وَبِكَلَامِيْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ
الشّٰكِرِيْنَ ۝

१४४- 'फ़रमाया' ''ऐ मूसा! मैंने दूसरे लोगों के मुक़ाबिले में आप को चुनकर अपने पैग़ाम और अपने कलाम (वाणी) से आप को मुम्ताज़ (श्रेष्ठ) किया, तो जो कुछ मैं आप को दूँ उसे ले लीजिए; और शुक्र अदा करने वालों में हो जाइए।''

وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً
وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ
قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۚ سَاُورِيْكُمْ دَارَ
الْفٰسِقِيْنَ ۝

१४५- और 'हमने' तख़्तियों में उनके लिए हर क़िस्म की नसीहत और हर चीज़ की तफ़्सील लिख दी, तो उनको मज़बूती से पकड़े रहिए और अपनी क़ौम से कह दीजिए कि इन बातों को अपनाएँ, जो बहुत बेहतर है; 'मैं' बहुत जल्द आप को नाफ़रमान लोगों का घर दिखाऊँगा।

سَاَصۡرِفُ عَنۡ اٰيٰتِىَ الَّذِيۡنَ يَتَكَبَّرُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ بِغَيۡرِ الۡحَـقِّ ؕ وَاِنۡ يَّرَوۡا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤۡمِنُوۡا بِهَا ۚ وَاِنۡ يَّرَوۡا سَبِيۡلَ الرُّشۡدِ لَا يَتَّخِذُوۡهُ سَبِيۡلًا ۚ وَاِنۡ يَّرَوۡا سَبِيۡلَ الۡغَىِّ يَتَّخِذُوۡهُ سَبِيۡلًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوۡا عَنۡهَا غٰفِلِيۡنَ ۞

१४६- जो लोग धरती पर नाहक़ घमंड करते हैं, 'मैं' अपने निशानियों की ओर से उन्हें फेर दूँगा, अगर हर निशानी भी देख लें तब भी वे उस पर ईमान न लाएँगे; अगर वे सीधा रास्ता देख लें तब भी उसे अपना रास्ता नहीं बनाएँगे; और अगर वे भटके हुओं की राह देख लें तो उसे अपनी राह मान लेंगे, यह इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे ग़ाफिल रहे।

وَالَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الۡاٰخِرَةِ حَبِطَتۡ اَعۡمَالُهُمۡ ؕ هَلۡ يُجۡزَوۡنَ اِلَّا مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ۞

१४७- और जिन लोगों ने हमारी आयतों को और आख़िरत के मिलने को झूठा समझा, उनका तो सारा किया-धरा बरबाद हो जाएगा; जो कुछ ये करते हैं, क्या उसके सिवा वे किसी और (चीज़) का बदला पाएँगे?

وَاتَّخَذَ قَوۡمُ مُوۡسٰى مِنۡۢ بَعۡدِهٖ مِنۡ حُلِيِّهِمۡ عِجۡلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمۡ يَرَوۡا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمۡ وَلَا يَهۡدِيۡهِمۡ سَبِيۡلًا ۘ اِتَّخَذُوۡهُ وَكَانُوۡا ظٰلِمِيۡنَ ۞

१४८- और मूसा की क़ौम ने उनके बाद अपने ज़ेवर का एक बछड़ा बना लिया, जिसमें से बैल की सी आवाज़ निकलती थी, क्या उन्होंने देखा नहीं, कि वह न तो उनसे बातें करता है और न राह दिखाता है? उन्होंने उसे अपना (मअ़बूद बना) लिया और वे बड़े ज़ालिम थे।

وَلَمَّا سُقِطَ فِىۡۤ اَيۡدِيۡهِمۡ وَرَاَوۡا اَنَّهُمۡ قَدۡ ضَلُّوۡا ۙ قَالُوۡا لَئِنۡ لَّمۡ يَرۡحَمۡنَا رَبُّنَا وَيَغۡفِرۡ لَنَا لَنَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ۞

१४६- और जब (चेतावनी से) वे शर्मिन्दा हुए और देखा कि हक़ीक़त में वे भटक गये हैं तो कहने लगे, ''अगर हमारे 'रब' ने हम पर रह़म न किया और हमको माफ़ न किया तो हम घाटे में पड़ जाएँगे।''

وَلَمَّا رَجَعَ مُوۡسٰۤى اِلٰى قَوۡمِهٖ غَضۡبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئۡسَمَا خَلَفۡتُمُوۡنِىۡ مِنۡۢ بَعۡدِىۡ ۚ اَعَجِلۡتُمۡ اَمۡرَ رَبِّكُمۡ ۚ وَاَلۡقَى الۡاَلۡوَاحَ وَاَخَذَ بِرَاۡسِ اَخِيۡهِ يَجُرُّهٗۤ اِلَيۡهِ ؕ قَالَ ابۡنَ اُمَّ اِنَّ الۡقَوۡمَ اسۡتَضۡعَفُوۡنِىۡ وَكَادُوۡا يَقۡتُلُوۡنَنِىۡ ۖ فَلَا تُشۡمِتۡ بِىَ الۡاَعۡدَآءَ وَلَا تَجۡعَلۡنِىۡ مَعَ الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِيۡنَ ۞

१५०- और जब मूसा अपनी क़ौम में बड़े गुस्से और अफ़्सोस की ह़ालत में वापस हुए तो कहने लगे, ''तुमने मेरे बाद बहुत ही बुरा काम किया है, क्या तुम अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर बैठे?'' फिर उन्होंने तख्तियाँ डाल दीं और अपने भाई का सर पकड़ कर उसे अपनी ओर खींचने लगे; उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी माँ के बेटे! लोगों ने मुझे कमजोर समझ लिया और क़रीब था कि मुझे क़त्ल कर देते, तो ऐसा काम न कीजिए कि दुश्मन मुझ पर हँसें और मुझे ज़ालिम लोगों में मत शामिल कीजिए।''

قَالَ رَبِّ اغۡفِرۡ لِىۡ وَلِاَخِىۡ وَاَدۡخِلۡنَا فِىۡ رَحۡمَتِكَ ۖ وَاَنۡتَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِيۡنَ ۞

१५१- उन्होंने कहा, ''मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को माफ़ कर दे और मुझे अपनी रह़मत में दाख़िल कर दे, 'तू' सबसे बढ़ कर रह़म करने वाला है।''

१५२- जिन लोगों ने बछड़े को अपना मअ़बूद बनाया, वे अपने रब की ओर से ग़ज़ब और दुनियावी ज़िन्दगी में ज़िल्लत में फंस कर रहेंगे; और झूठ गढ़ने वालों को 'हम' ऐसा ही बदला दिया करते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن
رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي
الْمُفْتَرِينَ ۝

१५३- और जिन्होंने बुरे काम किये, फिर उसके बाद तौबः कर ली और ईमान ले आए, तो इसके बाद तुम्हारा 'रब' तो बड़ा ही माफ़ करने वाला, मेहरबान है।

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا وَاٰمَنُوٓا ۚ
إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

१५४- और जब मूसा का ग़ुस्सा दूर हुआ तो तख़्तियाँ उठा लीं, और जो कुछ उसमें लिखा था वह उन लोगों के लिए, जो अपने रब से डरते हैं, हिदायत और रह़मत थी।

وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ
وَفِي نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ
يَرْهَبُونَ ۝

१५५- और मूसा ने अपनी क़ौम के सत्तर आदमियों को 'हमारे' मुक़र्रर वक़्त पर चुना, फिर जब उन लोगों को एक ज़लज़ले ने आ पकड़ा, तो उन्होंने कहा, ''मेरे रब! अगर 'तू' चाहता तो पहले ही उनको और मुझको हलाक कर देता, जो कुछ हमारे कमअक़्लों ने किया है, क्या उसकी वजह से 'तू' हमें हलाक करेगा? यह तो बस 'तेरी' ओर से एक आज़माइश (परीक्षा) है, इसके ज़रिये 'तू' जिसको चाहे भटका दे, और जिसे चाहे राह दिखा दे, 'तू' ही हमारा वली (संरक्षक) है। इस लिए 'तू' हमें माफ़ कर दे और हम पर रह़म कर, और 'तू' ही सबसे बढ़कर माफ़ करने वाला है;

وَاخْتَارَ مُوسٰى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّمِيقَاتِنَا ۚ
فَلَمَّآ أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ
أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ وَإِيَّايَ ۖ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
السُّفَهَآءُ مِنَّا ۖ إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ ۖ تُضِلُّ بِهَا مَن
تَشَآءُ وَتَهْدِي مَن تَشَآءُ ۖ أَنتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا
وَارْحَمْنَا ۖ وَأَنتَ خَيْرُ الْغٰفِرِينَ ۝

१५६- और हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे और आख़िरत में भी, हम तेरी ओर रूजूअ़ हो चुके'' फ़रमाया, ''अपने अ़ज़ाब में 'मैं' तो उसी को डालता हूँ, जिसे चाहता हूँ, लेकिन मेरी रह़मत हर चीज़ को शामिल है, 'मैं' इसे उन लोगों के लिए लिख दूँगा जो परहेज़गारी करते और ज़कात देते और हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं;

وَاكْتُبْ لَنَا فِي هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ
إِنَّا هُدْنَآ إِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِيٓ أُصِيبُ بِهِ مَنْ
أَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا
لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِينَ هُم
بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُونَ ۝

१५७- जो उस रसूल, उम्मी नबी, की पैरवी करते हैं, जिसे वे अपने यहाँ तौरात और इंजील में लिखा पाते हैं, और जो उन्हें भलाई का हुक्म देते और बुराई से रोकते हैं, उनके लिए अच्छी पाक चीज़ों को ह़लाल और बुरी नापाक चीज़ों को ह़राम ठहराते हैं और उन पर से उनके वह बोझ उतारते हैं जो अब तक उन

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي
يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِندَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَ
الْإِنجِيلِ ۡ يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنكَرِ
وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَ
يَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلٰلَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ

पर लदे हुए थे, और वह उन बन्धनों को खोलता है जिनमें वे जकड़े हुए थे; तो जो लोग उस पर ईमान लाए, उसकी इज़्ज़त की; और उसकी मदद की और जो नूर उनके साथ नाज़िल हुआ उसकी पैरवी की, वही कामियाब होने वाले हैं।''

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

१५८- कह दीजिए, ''ऐ लोगो ! मैं तुम सब की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ, जो आसमानों और ज़मीन का मालिक है, उसके सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, 'वही' ज़िन्दगी देता है 'वही' मौत देता है; तो अल्लाह और उसके रसूल, उम्मी नबी पर ईमान लाओ जो खुद अल्लाह पर और उसके कलिमे (वाणी) पर ईमान रखता है, उसकी पैरवी करो, ताकि तुम राह पा सको।''

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا ا۟لَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝

१५९- और मूसा की क़ौम में एक गिरोह ऐसे लोगों का भी हुआ जो हक़ के अनुसार राह दिखाता और उसी के अनुसार इन्साफ़ करता है।

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ۝

१६०- और 'हमने' उन्हें, बारह ख़ानदानों (टुकड़ियों) में बाँट दिया, और 'हमने' मूसा को जबकि उनकी क़ौम ने उनसे पानी माँगा तो 'हमने' मूसा की ओर वह्य की, ''अपना अ़सा (लाठी) पत्थर पर मारो।'' तो उससे बारह चश्में (स्रोत) फूट निकले और सब लोगों ने अपना-अपना घाट मालूम कर लिया, और 'हमने' उन पर बादल की छाया की और उन पर 'मन्न' और 'सल्वा' उतारा, 'हमने' तुम्हें जो अच्छी चीज़ें दी हैं उन्हें खाओ।'' और उन्होंने हम पर कोई ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि हक़ीक़त में वह अपने ऊपर ही ज़ुल्म करते रहे।

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ۭ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۭ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۭ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۭ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ۭ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝

१६१- और जब उनसे कहा गया, ''इस बस्ती में रहो-बसो और इसमें जहाँ से चाहो खाओ और कहो 'हित्ततुन' (तौबः), और दरवाज़े में सज्दः (झुके) करते हुए दाख़िल हो; और 'हम' तुम्हारी ख़ताओं को माफ़ कर देंगे और 'हम' नेकी करने वालों को और भी ज़्यादा देंगे।''

وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ۭ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

१६२- लेकिन उनमें से जो ज़ालिम थे, उन्हें जो कुछ कहा गया था, उसको बदल डाला; तो 'हमने' भी उन पर आसमान से एक आफ़त भेजी, इसलिए कि वे ज़ुल्म कर रहे थे।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاۗءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝

१६३- और आप उनसे उस बस्ती के बारे में पूछिए जो समुद्र के किनारे थी, जबकि वे लोग 'सब्त' (शनिवार) के मामले में

وَسْـَٔـلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ

حِيتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَيَوْمَ لَا
يَسْبِتُونَ ۙ لَا تَأْتِيهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ نَبْلُوهُم بِمَا
كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٣﴾

ह़द से आगे बढ़ गये थे, जबकि उनके ‘सब्त’ के दिन उनकी मछलियां खुले तौर पर पानी के ऊपर आ जाती थीं, और जो दिन उनके ‘सब्त’ का न होता तो वे उनके पास न आतीं इस तरह ‘हमने’ उनकी आज़माइश की, इसलिए कि वे नाफ़रमानी कर रहे थे।

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۙ اللَّهُ
مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا
مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٦٤﴾

१६४- और जब उनके एक गिरोह ने कहा, ‘‘तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीह़त किये जा रहे हो, जिन्हें अल्लाह तआ़ला हलाक करने वाला या उन्हें सख्त अज़ाब में गिरफ़्तार करने वाला है?’’ वे बोले, ‘‘अपने रब के सामने उज़्र (निरापराध) साबित कर सकें और ताकि वे परहेज़गार बन जाएँ।’’

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ
عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ
بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٥﴾

१६५- फिर जब वे उसे भूल गये, जो नसीह़त उनको की गयी थी, तो ‘हमने’ उन लोगों को बचा लिया, जो लोग बुराई से रोकते थे; और ज़ालिमों को उनके नाफ़रमानी की वजह से सख़्त अ़ज़ाब में पकड़ लिया।

فَلَمَّا عَتَوْا عَن مَّا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا
قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿١٦٦﴾

१६६- फिर जब वे सरकशी के साथ वही सब करते रहे, जिससे उनको रोका गया था, तो ‘हमने’ उनसे कहा कि ‘‘ज़लील बन्दर बन जाओ।’’

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيَامَةِ مَن يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۗ إِنَّ رَبَّكَ
لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۖ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٦٧﴾

१६७- और जब आप के रब ने ख़बर कर दी थी कि वह क़ियामत के दिन तक उनके ख़िलाफ़ ऐसे लोगों को उठाता रहेगा, जो उन्हें बुरा अ़ज़ाब देंगे; बेशक, आप का ‘रब’ जल्द सज़ा देने वाला है, और ‘वह’ बड़ा माफ़ करने वाला रह़म वाला है।

وَقَطَّعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَمًا ۖ مِّنْهُمُ الصَّالِحُونَ
وَمِنْهُمْ دُونَ ذَٰلِكَ ۖ وَبَلَوْنَاهُم بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٦٨﴾

१६८- और ‘हमने’ उन्हें टुकड़े-टुकड़े करके अनेक गिरोहों में बिखेर दिया, कुछ उनमें से नेक हैं, और कुछ उनमें इससे अलग हैं, और ‘हम’ उन्हें अच्छी और बुरी ह़ालत में डालकर आज़माते रहे, ताकि वे बाज़ आ जाएँ।

فَخَلَفَ مِن بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَرِثُوا الْكِتَابَ
يَأْخُذُونَ عَرَضَ هَٰذَا الْأَدْنَىٰ وَيَقُولُونَ
سَيُغْفَرُ لَنَا وَإِن يَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهُ يَأْخُذُوهُ ۚ
أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِم مِّيثَاقُ الْكِتَابِ أَن لَّا
يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ

१६९- फिर उनके बाद ऐसे नालायक़ (अयोग्य) हुए जो किताब के वारिस होकर इसी दुनिया का (लोगों से) सामान समेटते हैं और कहते हैं, ‘‘हमें तो ज़रूर माफ़ कर दिया जाएगा और अगर इस जैसा और सामान भी उनके पास आ जाए तो वे उसे भी ले लेंगे, क्या उनसे किताब में इसका अ़हद नहीं लिया

وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ

जा चुका है? कि अल्लाह पर कोई बात न गढ़ें सिवाय हक़ के, और जो इसमें है उसे वे खुद पढ़ भी चुके हैं, और आख़िरत का घर तो उन लोगों के लिए बेहतर है, ''जो डर रखते हैं'' तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?

وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۭ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ

१७०- और जो लोग किताब को मज़बूती से पकड़ते हैं और जिन्होंने नमाज़ क़ायम कर रखी है, 'हम' भले लोगों का अज्र (बदला) बरबाद नहीं करते।

وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

१७१- और जब हमने पहाड़ को हिलाया, जो उनके ऊपर था मानों वह कोई सायबान (छत्र) हो और वे समझे कि वह उन पर गिरना ही चाहता है-तो जो 'हमने' तुम्हें दिया है ''उसे मज़बूती से पकड़े रहो, और जो कुछ इसमें है उसे याद रखो, ताकि बच सको।''

وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰي ۚ شَهِدْنَا ۚ اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ

१७२- जब तुम्हारे 'रब' ने आदम की औलाद से (यानी उनकी पीठों से) उनकी औलाद निकाली तो उनसे खुद उनके मुक़ाबिले में इक़रार करा लिया, ''क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?'' वे कहने लगे, ''क्यों नहीं!! हम गवाह हैं।'' कि क़ियामत के दिन कहीं यह न कहने लगें कि ''हमें तो इसकी ख़बर ही न थी''

اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ

१७३- या यह कहो कि ''(अल्लाह के साथ) साझी तो पहले हमारे बाप-दादा ने किया, हम तो उनके बाद उनकी औलाद में से हुए हैं, 'तो' क्या तू हमें उस पर हलाक करेगा जो कुछ अह्ले बातिल (ग़लत लोगों) ने किया है?''

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ

१७४- और इसी तरह 'हम' खोल-खोल कर आयतें बयान करतें है, ताकि वे पलट आएँ।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ

१७५- और उनको उस व्यक्ति का ह़ाल सुनाओ जिसे 'हमने' अपनी आयतें दीं, तो वह उनसे निकल भागा, फिर शैतान उसके पीछे लगा, तो वह गुमराहों में हो गया।

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ

१७६- और अगर 'हम' चाहते तो इन ख़बरों से उसको बुलन्द कर देते, मगर वह तो पस्ती की ओर मायल हो गया और अपनी इच्छा के पीछे चलने लगा, तो उसकी मिसाल उस कुत्ते जैसी हो गई, कि अगर तुम उस पर सख़्ती करो तो ज़बान

لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ۝

लटकाए या उसे छोड़ दो तो भी ज़बान लटकाए ही रहे; यही मिसाल उन लोगों की है, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया; तो यह क़िस्सा बयान कर दो, ताकि वे सोच-विचार करें;

سَآءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ اَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ۝

१७७- बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और वे खुद अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते रहे।

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ۝

१७८- जिसे अल्लाह सीधी राह दिखाए वही सीधी राह पाने वाला है, और जिसे 'वह' गुमराह करे तो ऐसे ही लोग नुक़सान उठाने वाले हैं।

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۡ وَ لَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ۗ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ۗ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ۝

१७९- और 'हमने' बहुत-से जिन्नों और इन्सानों को जहन्नम ही के लिए फैला रखा है, उनके पास दिल हैं लेकिन उस से समझते नहीं, और उनकी आँखें हैं मगर उससे देखते नहीं और उनके कान हैं मगर उनसे सुनते नहीं, वे लोग चौपायों की तरह हैं, बल्कि उनसे भी (ज्यादा) भटके हुए हैं; यही वे लोग हैं जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَ ذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ۗ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ۝

१८०- और अल्लाह के सब ही नाम अच्छे हैं, तो उसको 'उसके' नामों से पुकारा करो और जो लोग उसके नामों में टेढ़ (कुटिलता) करते हैं उनको छोड़ दो, जो कुछ वे कर रहे हैं बहुत जल्द उसकी सज़ा पाएँगे।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَ بِهٖ يَعْدِلُوْنَ۝

१८१- और हमारी मख़्लूक़ (प्राणी) में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो ह़क़ का रास्ता दिखाते और उसके साथ इन्साफ़ करते हैं।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ۝

१८२- और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, हम उन्हें दर्जा-बदर्जा तबाही की ओर ले जाएँगे, ऐसे तरीक़े से जिसे वे जानते भी नहीं;

وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۗ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ۝

१८३- और 'मैं' उन्हें ढ़ील दिये जा रहा हूँ, मेरी तद्‌बीर (उपाय) बहुत मज़बूत है।

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۗ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۗ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ۝

१८४- क्या उन लोगों ने ग़ौर नहीं किया? कि उनके साथी को कोई जुनून नहीं है, वह तो बस एक साफ़-साफ़ आगाह (सचेत) करने वाले हैं।

اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا

१८५- क्या उन्होंने आसमान व ज़मीन की बादशाही में, और

خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ

जो चीज़ें अल्लाह ने पैदा की हैं उन पर नज़र नहीं की; और इस बात पर कि अजब नहीं कि उनका वक़्त क़रीब आ गया हो? फिर आख़िर इसके बाद कौन-सी बात हो सकती है जिस पर वह ईमान लाएँगे?

مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ

१८६- जिस व्यक्ति को अल्लाह गुमराह करे उसको कोई राह दिखाने वाला नहीं और 'वह' उनको छोड़े रखता है कि वे अपनी सरकशी में बहकते रहें।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۚ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ۘ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ۚ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۚ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ

१८७- आप से उस घड़ी (क़ियामत) के बारे में पूछते हैं कि ''वह कब आएगी?'' कह दीजिए ''इसका इल्म तो मेरे रब ही के पास है। 'वही' उसे उसके वक़्त पर ज़ाहिर कर देगा; 'वह' आसमानों और ज़मीन में एक भारी बात होगी जो अचानक ही तुम पर आ जाएगी।'' यह आप से इस तरह पूछते हैं जैसे आप इसके बारे में अच्छी तरह जानते हैं, कह दीजिए, ''इसका इल्म तो बस अल्लाह ही के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।''

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَاۤءَ اللّٰهُ ۚ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْۤءُ ۛ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ

१८८- कह दीजिए, ''मैं अपने फ़ायदे और नुक़्सान का कुछ भी अख़्तियार नहीं रखता, मगर जो अल्लाह चाहे; और अगर मैं ग़ैब की बातें जानता होता तो बहुत से फ़ायदे जमा कर लेता और मुझको कोई तकलीफ़ न पहुँचती; मैं तो बस सचेत करने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ, जो ईमान लाए।''

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ

१८९- 'वही' है जिसने तुम्हें एक जान (व्यक्ति) से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया, ताकि उससे राहत ह़ासिल करे, जब वह उसके पास जाता है तो हल्का सा ह़मल रूक जाता है सो वह उसे लिए हुए चलती-फिरती है जब वह बोझल हो जाती, तो दोनों अपने रब अल्लाह को पुकारते हैं कि ''अगर 'तूने' सही सालिम (बच्चा) दिया, तो ज़रूर हम तेरे शुक्रगुज़ार होंगे।''

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَاۤءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ

१९०- 'उसने' जब उन्हें सही सालिम (बच्चा) दिया, तो जो उन्हें दिया उसमें वे दोनों उस (अल्लाह) का साझी ठहराने लगे, तो अल्लाह तो इससे बुलन्द है, जो वे साझी ठहराते हैं;

اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ

१९१- क्या वे उसको साझी ठहराते हैं, जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते और वे खुद पैदा किये जाते हैं;

१९२- और वे न तो उनकी मदद करने की ताक़त रखते हैं, और न खुद अपनी ही मदद कर सकते हैं?

وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَآ أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ ۝

१९३- और अगर तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ, तो वे तुम्हारी पैरवी न करेंगे; तुम्हारे लिए बराबर है कि तुम उन्हें पुकारो या खामोश रहो।

وَإِن تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَتَّبِعُوكُمْ ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنتُمْ صَامِتُونَ ۝

१९४- तुम अल्लाह को छोड़ कर जिसे पुकारते हो वे तो तुम्हारे ही जैसे बन्दे हैं; तो पुकार लो उनको, ''अगर तुम सच्चे हो'' तो उन्हें चाहिए कि तुम्हें जवाब भी दें!

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ ۖ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝

१९५- क्या उनके पैर हैं जिनसे वे चलते हों या उनके हाथ हैं जिनसे वे पकड़ते हों या उनके पास आँखें हैं जिनसे वे देखते हों या उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हों? कह दीजिए, ''तुम अपने ठहराए हुए साझीदारों को बुला लो, फिर मेरे ख़िलाफ़ चाल बाज़ी करो, इस तरह कि मुझे मोहलत न दो।

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَآ ۖ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَآ ۖ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَآ ۖ أَمْ لَهُمْ ءَاذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۗ قُلِ ادْعُوا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنظِرُونِ ۝

१९६- मेरा वली (संरक्षक) अल्लाह है, जिसने यह किताब उतारी और 'वह' अच्छे लोगों का वली (संरक्षक) है।

إِنَّ وَلِـِّۧىَ اللَّهُ الَّذِى نَزَّلَ الْكِتَـٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّـٰلِحِينَ ۝

१९७- और जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वे न तो तुम्हारी मदद करने की ताक़त रखते हैं और न खुद अपनी ही मदद कर सकते हैं।

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَآ أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ ۝

१९८- और अगर तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो वे न सुनेंगे, वे तुम्हें ऐसे दिखाई देते हैं कि जैसे वे तुम्हारी ओर ताक रहे हों, हालाँकि वे कुछ भी नहीं देखते।

وَإِن تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا ۖ وَتَرَىٰهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝

१९९- माफ़ करने को अपनाइए और भलाई का हुक्म देते रहिए और नादानों से किनारा कर लीजिए।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَـٰهِلِينَ ۝

२००- और अगर शैतान की ओर से तुम्हारे दिल में किसी तरह़ का कोई वस्वसा पैदा हो तो अल्लाह की पनाह माँगो। बेशक वह सब कुछ सुनता, जानता है।

وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَـٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُۥ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

२०१- जो लोग परहेज़गार हैं, जब उनको शैतान की ओर से कोई वस्वसा (ख़याल) पैदा होता है, तो चौंक पड़ते हैं फिर वे (मन में) देखने लगते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَـٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطَـٰنِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ ۝

२०२- और उन (शैतानों) के भाई उन्हें गुमराही में खींचे लिए जाते हैं फिर वे कोई कमी नहीं करते।	وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ﴿٢٠٢﴾
२०३- और जब आप उनके सामने कोई निशानी नहीं लाते तो कहते हैं, ''तुम क्यों नहीं बना लाए?'' कह दीजिए, ''मैं तो केवल उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरे रब की ओर से वह्‌य की जाती है, यह मेरे रब की ओर से दानिश व बसीरत (अन्तर्दृष्टियों का प्रकाश) है, और ईमान लाने वालों के लिए हिदायत और रह़मत है''	وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِم بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ مِن رَّبِّي ۚ هَٰذَا بَصَائِرُ مِن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠٣﴾
२०४- और जब क़ुर्आन पढ़ा जाए तो उसे ध्यान से सुनो और खामोश रहो, ताकि तुम पर रह़म किया जाए;	وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٢٠٤﴾
२०५- और अपने 'रब' को अपने मन में सुबह् और शाम आ़जिज़ी (विनम्रता पूर्वक) और ख़ौफ से, और हल्की आवाज़ के साथ याद किया करो; और उन में से न होना जो ग़फ़ूलत में पड़े हुए हैं।	وَاذْكُر رَّبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ ﴿٢٠٥﴾
२०६- जो लोग आप के रब के पास हैं वे उसकी इबादत के मुक़ाबले में नाशुक्री नहीं करते; और उसकी तस्बीह़ (महिमागान) करते हैं और उसको सज्दः करते रहते हैं।	إِنَّ الَّذِينَ عِندَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ۩ ﴿٢٠٦﴾ सज्दः



अनुवाद-सूरतुल्अन्फ़ालि

यह मदनी सूरः है, इस में अरबी के ५५२२ अक्षर,१२५३ शब्द, ७५ आयतें और१० रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ۭ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۠ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ①

१- आप से ग़नीमतों (के माल) के बारे में पूछते हैं। आप कह दीजिए कि ग़नीमतें अल्लाह और रसूल की हैं। इस लिए अल्लाह का डर रखो और आपस के संबन्धों को ठीक रखो। और अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म की पैरवी करो, अगर तुम ईमान वाले हो।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ②

२- ईमान वाले तो बस वह होते हैं, कि जब (उनके सामने) अल्लाह का जिक्र किया जाता है। तो उनके दिल दहल जाते हैं, और जब उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो वह उन का ईमान बढ़ा देती हैं और वह अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ③

३- (ये वे लोग हैं) जो नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने दिया है उसमें से खर्च करते रहते हैं।

اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۭ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ④

४- यही लोग तो सच्चे ईमान वाले हैं। बड़े-बड़े दर्जे हैं। उनके लिए उनके रब के पास और माफ़ी और इज़्ज़त की रोज़ी।

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۠ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ⑤

५- जैसे आप के रब ने आप को ह़क के साथ आप के घर से बाहर निकाला, और ईमान वालों में से एक गिरोह को यह नापसंद था।

يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَمَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ⑥

६- वे आप से इस ह़क़ीक़त के बारे में उसके ज़ाहिर (स्पष्ट) हो जाने के बाद झगड़ रहे थे, मानों वे आँखों देखी मौत की ओर हाँके जा रहे हों।

وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۝

७- और जब अल्लाह तुम से वादा कर रहा था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारे हाथ आएगा; और तुम चाहते थे कि तुम्हें वह हाथ आए जो ग़ैर मुसल्लह (निः शस्त्र) था, हालाँकि अल्लाह चाहता था, कि हक़ का हक़ होना साबित कर दे 'अपने' हुक्म से, और काफिरों की जड़ काट दे;

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝

८- ताकि हक़ को हक़ होना और बातिल (ग़लत) को बातिल होना साबित कर दे, चाहे मुजरिमों को कितना ही नागवार हो।

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ۝

९- (याद करो) जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रह थे, तो उसने तुम्हारी पुकार सुन ली,। (फ़रमाया) 'मैं' एक हज़ार फरिश्तों से तुम्हारी मद्‌द करूँगा जो तुम्हारे साथ होंगे।''

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

१०- और अल्लाह ने यह केवल इस लिए किया कि यह एक बशारत (शुभ-सूचना) हो और ताकि तुम्हारे दिलों में उससे इत्मिनान हो जाए,। और मदद तो बस अल्लाह ही के यहाँ से होती है, बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त, हिकमत वाला है।।

اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ۝

११- जब कि वह अपनी ओर से राहत दे कर तुम्हें ऊँघ से ढ़ाँक रहा था, और वह आसमान से तुम पर पानी बरसा रहा था ताकि उसके ज़रिये तुम्हें अच्छी तरह पाक कर दे और तुम से शैतानी वस्वसे (ख़याल) को दूर कर दे और ताकि मज़बूत कर दे तुम्हारे दिलों को, और उसकी वजह से (तुम्हारे) क़दमों को जमा दे।।

اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝

१२- जब तुम्हारा 'रब' फ़रिश्तों की ओर वह्य कर रहा था, कि 'मैं' तुम्हारे साथ हूँ, तो तुम ईमान वालों को तसल्ली दो कि जमे रहें; 'मैं' काफ़िरों (इन्कारियों) के दिलों में अभी रोअ़ब डाले देता हूँ। तो तुम उनकी गर्दनें मारो और उनके पोर-पोर पर चोट लगाओ।''

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

१३- यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की, और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की मुखालिफ़त (विरोध) करता है तो अल्लाह भी सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है;

ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ

१४- यह तो तुम लोग चखो! और यह (जाने रहो) कि काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का अ़ज़ाब है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ

१५- ऐ ईमान वालो! जब लड़ाई के मैदान में काफ़िरों (इन्कारियों) से तुम्हारा मुक़ाबला हो, तो पीठ न फेरो;

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ

१६- और जिस व्यक्ति ने भी उस दिन उनसे अपनी पीठ फेरी- यह और बात है कि लड़ाई की चाल चलने के रूप में या दूसरी टुकड़ी से मिलने के लिए ऐसा करें- तो वह अल्लाह के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हुआ और उसका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत ही बुरी जगह है।

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ

१७- तुम लोगों ने उनको क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ही ने उनको क़त्ल किया, और जब आप ने कंकरियाँ फेंकीं थीं, तो वह आप ने नहीं फेंकीं थीं, बल्कि अल्लाह ने फेंकीं थीं; और ताकि 'वह' अपनी ओर से ईमान वालों को आज़मा ले, बेशक अल्लाह सुनता, जानता हैं;

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ

१८- यह तो हुआ, और बेशक अल्लाह काफ़िरों (इन्कारियों) की चाल को कमज़ोर कर देने वाला है।

اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ

१६- अगर तुम फ़तेह़ (कामियाबी) चाहते हो तो फ़तेह़ तुम्हारे सामने आ चुकी अगर तुम (अपने काम से) रूक जाओ, तो तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है अगर तुम ने पलट कर फिर वही हरकत की, तो 'हम' भी पलटेंगे, और तुम्हारा जत्था चाहे कितना ज़्यादह हो, तुम्हारे कुछ काम न आ सकेगा और यह कि अल्लाह मोमिनों के साथ होता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ

२०- ऐ ईमान वालो। अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलो और उससे मुँह न फेरो, और तुम सुनते हो;

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ

२१- और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने कहा था "हम ने सुना" हालाँकि वे सुनते नहीं।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ

२२- बेशक अल्लाह की नज़र में तो तमाम जानदारों से बद्तर वे बहरे गूँगे लोग हैं, जो अक़्ल से काम नहीं लेते।

२३- और अगर अल्लाह जानता कि उनमें कुछ भलाई है, तो वह ज़रूर सुनने की तौफ़ीक़ देता; और अगर 'वह' उन्हें सुना देता, तो भी वे कतराते हुए मुँह फेर लेते।

وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۭ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٢٣

२४- ऐ ईमान वालो! अल्लाह और रसूल की बात मानो जब कि 'वह' तुम्हें उस चीज़ की ओर बुलाएँ जो तुम्हें ज़िन्दगी देने वाली है, और जान लो कि अल्लाह, आदमी और उसके दिल के बीच आड़े आ जाता है, और यह कि 'वही' है जिसकी ओर तुम इकट्ठा किये जाओगे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٢٤

२५- और उन फ़ित्नों से बचो जो अपनी लपेट में खास तौर से केवल ज़ालिमों को ही नहीं मिलेगा और जान लो कि अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है।

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَاۗصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٢٥

२६- और जब तुम ज़मीन (मक्का) में थोड़े, और कमज़ोर समझे जाते थे, और डरे सहमे रहते थे कि लोग तुम्हें कहीं उचक न लें जाएँ, तो 'उसने' तुम्हें ठिकाना दिया और अपनी मदद से तुम्हें ताक़त दी और पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं, ताकि तुम शुक्र करो और तुम जानते हो।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٢٦

२७- ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और उसके रसूल के साथ ख़ियानत न करो और न अपनी अमानतों में ख़ियानत करो और तुम जानते हो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٢٧

२८- और जान लो कि तुम्हारा माल और औलाद बड़ी आज़माइश हैं और यह कि अल्लाह के पास बड़ा सवाब है।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝٢٨

२९- ऐ ईमान वालो। अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए फ़र्क़ (अन्तर) पैदा कर देगा, और तुम्हारे गुनाह और तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देगा, और तुम्हें माफ़ कर देगा। और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٢٩

३०- और जब काफ़िर तुम्हारे साथ चालें चल रहे थे, ताकि तुम्हें क़ैद रखें या तुम्हें क़त्ल कर दें या तुम्हें निकाल बाहर करें वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह भी अपनी तद्‌बीर (उपाय) कर रहा था और अल्लाह सबसे अच्छी चाल चलने वाला है।

وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ۭ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ۝٣٠

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا ۙ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣١﴾

३१- और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो कहते हैं, ''हम सुन चुके अगर हम चाहें तो ऐसी बातें हम भी बना लें; यह तो बस पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।''

وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٢﴾

३२- और जब उन्होंने कहा कि, ''ऐ अल्लाह! अगर यही तेरे यहाँ से हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे, या कोई और तकलीफ़ देने वाला अ़ज़ाब भेज दे।''

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٣﴾

३३- और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम उनके बीच मौजूद हो और वह उन्हें अ़ज़ाब देता और न अल्लाह ऐसा था कि वे माफ़ी माँगें और 'वह' उन्हें अ़ज़ाब दे।

وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

३४- और उनके लिए कौन सी वजह है कि अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब न दे, जबकि वे ''मस्जिदे ह़राम'' (कअ़बः) से रोकते हैं, हालाँकि वे उसके कोई मुतवल्ली (व्यवस्थापक) भी नहीं, उसके मुतवल्ली तो केवल परहेज़गार ही हैं, लेकिन उनमें के अक्सर लोग जानते नहीं।

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً ۚ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٥﴾

३५- और उन लोगों की नमाज़ उस घर (कअ़बः) के पास, सीटियाँ बजाने और तालियाँ पीटने के सिवा कुछ भी न थीं, तो अब अ़ज़ाब का मज़ा चखो, उस इन्कार के बदले में जो तुम करते थे।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنْفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ﴿٣٦﴾

३६- जो लोग काफ़िर अपना माल खर्च करते हैं, कि (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोकें, वे तो खर्च करते रहेंगे, मगर आख़िर में उनके लिए अफ़सोस होगा, और वे मग़लूब (पराजित) हो जाएँगे, और काफ़िर दोज़ख की ओर समेट लिए जाएँगे,

لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٣٧﴾

३७- ताकि अल्लाह नापाक को पाक से छाँट कर अलग करे, और नापाकों को आपस में एक दूसरे पर रख कर ढ़ेर बना दे, फिर उसे जहन्नम में डाल दे, यही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं।

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾

३८- उन काफ़िरों से कह दीजिए, अगर वे अपने (बुरे) कामों से बाज़ आ जाएँ, तो जो कुछ हो चुका, उसे माफ़ कर दिया जायेगा; और अगर वे फिर वही करेंगे, तो गुज़रे हुए लोगों के बारे में (जो) तरीक़ा जारी हो चुका है (वही उनके ह़क़ में होगा।)

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٣٩﴾

३९- और उन लोगों से लड़ते रहें, यहाँ तक कि फ़ित्ना (जुल्म) बाक़ी न रहे और दीन पूरा का पूरा अल्लाह ही के लिए हो जाए। फिर अगर वे बाज़ आ जाएँ, तो अल्लाह उनके कामों को देख रहा है।

وَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ ۚ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٤٠﴾

४०- और अगर वे मुँह मोड़ें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला (संरक्षक) है। क्या ही अच्छा हिमायती है 'वह' और क्या ही अच्छा मदद्गार!

पारा नं०-१०

* وَاعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُم مِّن شَيْءٍ فَأَنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ إِن كُنتُمْ آمَنتُم بِاللَّهِ وَمَا أَنزَلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤١﴾

४१- और जान लो कि जो कुछ तुम्हें ग़नीमत के रूप में माल मिले, उसका पाँचवा भाग अल्लाह का, और उसके रसूल का, और नातेदारों का, और यतीमों का, मुहताजों और मुसाफिरों का है। अगर तुम अल्लाह पर और उस चीज़ पर ईमान रखते हो, जो 'हमने' अपने बन्दे पर फैसले के दिन उतारी, जिस दिन दोनों सेनाओं में मुठभेड़ हुई, और अल्लाह को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत (सामर्थ्य) है।

إِذْ أَنتُم بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُم بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوَىٰ وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنكُمْ ۚ وَلَوْ تَوَاعَدتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيعَادِ ۙ وَلَٰكِن لِّيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَن بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ حَيَّ عَن بَيِّنَةٍ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٤٢﴾

४२- (याद करो) जब तुम घाटी के क़रीब किनारे पर थे; और वे घाटी से दूर किनारे पर थे, और क़ाफ़िला तुम से नीचे की ओर था। अगर तुम वक्त मुक़र्रर (निश्चित) करते तो ज़रूर तुम वक़्त मुकर्रर पर न पहुँचते; लेकिन जो कुछ हुआ वह इस लिए कि अल्लाह उस बात का फ़ैसला कर दे, जिसका पूरा होना यक़ीनी था, ताकि जिसे मरना हो वह खुले प्रमाण देख कर(ह़क़ पहचान कर) ही मरे और जिसे ज़िन्दा रहना हो, वह खुले प्रमाण देख कर ज़िन्दा रहे। बेशक अल्लाह खूब जानता, सुनता है।

إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا ۖ وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤٣﴾

४३- जब अल्लाह उनको, तुम्हारे सपने में थोड़ा करके तुम्हें दिखा रहा था; और अगर 'वह' उन्हें ज़्यादह करके तुम्हें दिखा देता, तो ज़रुर तुम लोग हिम्मत हार जाते, और अस्ल मामले में झगड़ने लग जाते; लेकिन अल्लाह ने (तुम को) इससे बचा लिया। बेशक 'वह' तो जो कुछ दिलों में होता है उसे भी जानता है।

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٤﴾

४४- और जब तुम्हारी आपस में मुठ भेड़ हुई, तो वह तुम्हारी निगाहों में उन्हें कम करके, और तुम्हें उनकी निगाहों में कम करके दिखा रहा था, ताकि अल्लाह उस बात का फ़ैसला कर दे जिसका होना तय था, और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

४५- ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारा किसी गिरोह से मुक़ाबला हो जाए तो जमे रहो और अल्लाह को खूब याद करो, ताकि तुम्हें कामियाबी मिल जाये।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

४६- और अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलो और आपस में झगड़ा न करो, वरना हिम्मत हार बैठोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी; और सब्र से काम लो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है;

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَاۗءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝

४७- और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से इतराते, और लोगों को दिखाते हुऐ निकले थे, और लोगों को अल्लाह की राह से रोकते हैं, हालाँकि जो कुछ ये करते हैं, अल्लाह उसे अपने घेरे में लिए हुए है।

وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَاۗءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰي عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّنْكُمْ اِنِّىْٓ اَرٰي مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّىْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ۭ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

४८- और जब शैतान ने उनके आमाल उनके लिए सुन्दर बना कर दिखाए और कहा, ''आज के दिन लोगों में से कोई तुम पर गालिब (प्रभावी) नहीं हो सकता, और मैं तुम्हारे साथ हूँ।'' लेकिन जब दोनों गिरोह आमने-सामने हुए तो वह उल्टे पाँव फिर गया और कहने लगा, ''मेरा तुम से कोई सम्बन्ध नहीं, मैं तो ऐसी चीज़ें देख रहा हूँ, जो तुम नहीं देख सकते, मैं तो अल्लाह से डरता हूँ, और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है।''

اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَاۗءِ دِيْنُهُمْ ۭ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَي اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

४९- जब मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है कह रहे थे, ''उन लोगों को तो उनके धर्म ने धोखे में डाल रखा है।'' और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा रखता है, तो बेशक अल्लाह ग़ालिब, (प्रभुत्वशाली,) हिकमत वाला है।

وَلَوْ تَرٰٓي اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمَلٰۗىِٕكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝

५०- और काश तुम उस वक़्त देखो, जबकि फ़रिश्ते काफ़िरों की जाने निकालते हैं, उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते जाते हैं, कि ''लो आग के अज़ाब का मज़ा चखो;''

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝

५१- यह उसी का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा, और यह कि अल्लाह अपने बन्दों पर थोड़ा सा भी ज़ुल्म नहीं करता;

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

५२- (उनके साथ वैसा ही मामला पेश आया) जैसा फ़िरऔ़न के लोगों और उनसे पहले के लोगों के साथ पेश आया; उन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, तो अल्लाह ने उनके गुनाहों की वजह से उन्हें पकड़ लिया। बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त, (शक्तिशाली), सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنفُسِهِمْ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٣﴾

५३- यह इस लिए कि जो नेअ़मत अल्लाह किसी क़ौम को दिया करता है, जब तक वे खुद अपने (दिलों की) ह़ालत न बदल डालें, अल्लाह उसे नहीं बदला करता, और यह इस लिए कि अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٥٤﴾

५४- जैसे फ़िरऔ़नियों और उनसे पहले के लोगों का ह़ाल हुआ, उन्होंने अपने रब की आयतों को झुठलाया, तो 'हमने' उन्हें उनके गुनाहों के बदले में तबाह कर दिया। और फ़िरऔ़नियों को डुबो दिया, और यह सभी ज़ालिम थे।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِندَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٥﴾

५५- सबसे बुरे जानदारों में अल्लाह के नज़दीक, वे लोग हैं जिन्होंने इन्कार किया, फिर वे ईमान नहीं लाते।

الَّذِينَ عَاهَدتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ﴿٥٦﴾

५६- जिन लोगों से तुमने अ़हद (सन्धि) लिया, वे फिर हर बार अपने अ़हद को तोड़ देते हैं और डरते नहीं;

فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِم مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

५७- अगर तुम उनको लड़ाई में पाओ, तो उन्हें ऐसी सज़ा दो कि जो लोग उनके पीछे हों, वे उनको देख कर भाग जाएँ, ताकि उनको सबक़ मिले।

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِن قَوْمٍ خِيَانَةً فَانبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ﴿٥٨﴾

५८- और अगर तुम को किसी क़ौम से ख़ियानत (विश्वासघात) करने का डर हो, तो तुम भी उसी तरह (ऐसे लोगों के साथ किये हुए अ़हद को खुल्लम-खुल्ला) उन्हीं के आगे फेंक दो। बेशक अल्लाह ख़ियानत करने वालों को पसंद नहीं करता।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ﴿٥٩﴾

५९- और काफ़िर यह न समझें कि वे भाग निकले हैं, वे आजिज़ करके बाहर नहीं जा सकते,

وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم مِّن قُوَّةٍ وَمِن رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَآخَرِينَ مِن دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ

६०- और जहाँ तक हो सके उनके लिए कूव्वत (बल) और बँधे घोड़े (लड़ाई के लिए) तैयार रखो, ताकि उसके ज़रिए अल्लाह के दुश्मनों, और अपने दुश्मनों, और इनके सिवा, उन दूसरे लोगों

يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُوا مِن شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ۝

को भी भयभीत कर दो जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह उनको जानता है; और अल्लाह की राह में जो कुछ तुम खर्च करोगे, वह पूरा चुका दिया जायेगा, और तुम्हारे साथ हरगिज़ नाइन्साफ़ी न होगी।

وَإِن جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى
اللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

६१- और अगर यह लोग सुलह की ओर मायल हों, तो तुम भी उनकी ओर मायल हो जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो। बेशक 'वह' सब कुछ सुनता, जानता है।

وَإِن يُرِيدُوا أَن يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ۚ
هُوَ الَّذِي أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِ وَبِالْمُؤْمِنِينَ ۝

६२- और अगर यह चाहें कि तुम्हें धोखा दें, तो तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है, 'वही' तो है 'जिसने' तुम्हें अपनी मदद से और मोमिनो के ज़रिए ताक़त पहुँचाई;

وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا مَّا أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ
أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

६३- और उनके दिल आपस में एक-दूसरे के साथ जोड़ दिये; अगर तुम धरती में जो कुछ है सब खर्च कर डालते तो भी उनके दिलों को आपस में जोड़ न सकते, लेकिन अल्लाह ही ने उन्हें आपस में जोड़ दिया; बेशक 'वह' ज़बर्दस्त (प्रभुत्वशाली), हिकमत वाला है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ۝

६४- ऐ नबी ! अल्लाह आप के लिए और ईमान वालों के लिए, जो आपके अनुयायी काफी हैं।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ ۚ
إِن يَكُن مِّنكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا
مِائَتَيْنِ ۚ وَإِن يَكُن مِّنكُم مِّائَةٌ يَغْلِبُوا
أَلْفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا
يَفْقَهُونَ ۝

६५- ऐ नबी ! मोमिनों को क़िताल (युद्ध) पर उभारिए । अगर आप में के बीस आदमी भी जमे रहें, तो वे दो सौ पर ग़ालिब (प्रभावी) होंगे; और अगर आप में से ऐसे सौ होंगे, तो वे एक हज़ार काफ़िरों पर ग़ालिब (प्रभावी) होंगे, क्योंकि यह ऐसे लोग हैं जो कुछ भी नहीं समझते।

الْآنَ خَفَّفَ اللَّهُ عَنكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۚ
فَإِن يَكُن مِّنكُم مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ
وَإِن يَكُن مِّنكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ
اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝

६६- अब अल्लाह ने तुम्हारे बोझ को हल्का कर दिया और 'उसे' मालूम हुआ कि तुममें कुछ कमज़ोरी है, तो अगर तुम्हारे सौ आदमी जमे रहने वाले होंगे, तो वे दो सौ पर ग़ालिब (प्रभावी) रहेंगे; और अगर तुममें ऐसे हज़ार होंगे, तो अल्लाह के हुक्म से वे दो हज़ार पर ग़ालिब (प्रभावी) रहेंगे, और अल्लाह तो उन्हीं के साथ है जो सब्र करते हैं।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ ۚ تُرِيدُونَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

६७- किसी नबी के लिए यह उचित नहीं कि उनके पास क़ैदी हों, यहाँ तक कि वह धरती में खून खराबा करे; तुम लोग दुनिया का सामान चाहते हो, जबकि अल्लाह आख़िरत चाहता है, और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त (प्रभुत्वशाली), हिकमत वाला है।

لَوْلَا كِتَابٌ مِنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

६८- अगर अल्लाह का लिखा पहले से मौजूद न होता, तो जो कुछ नीति तुमने अपनाई है उस पर तुम्हें कोई बड़ा अज़ाब आ जाता।

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

६९- तो जो कुछ ग़नीमत का माल तुमने हासिल किया है, उसे हलाल पाक समझकर खाओ और अल्लाह से डरते रहो; बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَنْ فِي أَيْدِيكُمْ مِنَ الْأَسْرَىٰ إِنْ يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِمَّا أُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

७०- ऐ नबी! कह दीजिए, उन क़ैदियों से जो आप के हाथ में हैं, ''कि अगर अल्लाह ने यह जान लिया कि तुम्हारे दिलों में कुछ भलाई है, तो 'वह' उससे कहीं बेहतर तुम्हें देगा, जो तुम से छिन गया है, और तुम्हें माफ़ कर देगा, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है।''

وَإِنْ يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

७१- और अगर यह आप से ख़ियानत (विश्वासघात) करना चाहेंगे, तो इससे पहले भी वे अल्लाह के साथ ख़ियानत कर चुके हैं तो उसने तुम्हें उन पर अधिकार दे दिया, अल्लाह जानने वाला, बड़ा हिकमत वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُمْ مِنْ وَلَايَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ اسْتَنْصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

७२- जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की, और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद किया, वे और जिन लोगों ने उन्हें पनाह दी, और मदद की, वही लोग आपस में एक-दूसरे के वली (संरक्षक) हो रहे हैं; और जो लोग ईमान तो लाए, लेकिन उन्होंने हिजरत नहीं की, तुम्हारी उनसे कोई दोस्ती (संरक्षण) नहीं, जब तक कि वे हिजरत न करें और अगर वह तुम से मदद माँगे दीन के काम में तो तुम पर वाजिब है कि मदद करो, सिवाए इसके, कि (यह मदद) किसी ऐसी क़ौम के मुक़ाबले में हो जिससे तुम्हारे दर्मियान मुआहिदा (संधि) हो, और अल्लाह खूब देख

रहा है जो कुछ तुम करते हो।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِى الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ۞

७३- और जो लोग काफ़िर हैं, वह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं; अगर तुम ऐसा न करोगे तो धरती में फ़ित्ना और बड़ा फ़साद फैल जाएगा।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۚ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۞

७४- और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया, और जिन लोगों ने उन्हें पनाह दी और मदद की, वही सच्चे मोमिन हैं। उनके लिए माफ़ी और इज़्ज़त वाली रोज़ी है।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ۚ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ۞

७५- और जो लोग बाद में ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया तो ऐसे लोग भी तुममें ही से हैं। और क़रीबी रिश्तेदार एक दूसरे के ज़्यादह हक़दार हैं अल्लाह की किताब में, बेशक अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखने वाला है।



अनुवाद-सूरतुत्तौबति

यह सूरः मदनी है, इसमें अ़रबी के ११३६० अक्षर २५३७ शब्द,१२६ आयतें और १६ रूकूअ़ हैं

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١

१- बरी (विरक्ति) होने का एलान है अल्लाह और उसके रसूल की ओर से, जिन मुश्रिकों (बहुदेववादियों) से तुमने अ़हद (समझौते) किये थे;

فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِى الْكٰفِرِيْنَ ۝٢

२- ''अब तुम ज़मीन में चार महीने चल फिर लो, और जान लो! कि तुम अल्लाह को आजिज़ न कर सकोगे, और यह भी कि अल्लाह काफ़िरों को अपमानित करने वाला है।''

وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِىْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ۗ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۗ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٣

३- और आम एलान किया जाता है, अल्लाह और उसके रसूल की ओर से लोगों के लिए बड़े हज के दिन, ''अल्लाह (ज़िम्मेदारी से) बरी है मुश्रिकों से और उसका रसूल भी; अगर अब भी तुम तौबः कर लो, तो यह तुम्हारे लिए अच्छा है; और अगर तुम मुँह मोड़ते हो तो तुम अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते;'' और शुभ सूचना (ख़बर) सुना दीजिए! काफ़िरों को दुख देने वाले अ़ज़ाब की;

اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٤

४- सिवाय उन मुश्रिकों के जिनसे तुमने अ़हद (सन्धि) किया, फिर उन्होंने उसको निभाने में कोई कमी नहीं की, और न तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद की, तो ऐसे समझौते को उनके निर्धारित समय तक पूरा करो, (कि) अल्लाह मुत्तिक़यों (परहेज़गारों) को पसंद करता है।

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا

५- फिर जब ह़राम (आदर वाले) महीने गुज़र जाएँ तो (इन लड़ने वाले) मुश्रिकों को जहाँ कहीं पाओ (अर्थात कअ़बः के पास ही क्यों न हों) क़त्ल करो, उन्हें पकड़ो, और घेरो और

وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

हर घात की जगह उनकी ताक़ में बैठो, फिर अगर वे तौबः कर लें और नमाज़ क़ायम करें, और ज़कात दें, तो उनका रास्ता छोड़ दो; बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝

९- और अगर मुश्रिकों में से कोई तुम से पनाह माँगे तो तुम उसे पनाह (शरण) दे दो, यहाँ तक कि अल्लाह का कलाम (वाणी) सुन लें, फिर उन्हें उनके सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दो, यह इसलिए कि ये लोग जानते नहीं;

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖۤ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝

७- इन मुश्रिकों का कोई अ़हद (सन्धि) अल्लाह और उसके रसूल के नज़दीक़ किस तरह क़ायम रह सकता है- सिवाय उन लोगों के जिन लोगों से तुमसे मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) के पास मुअ़ाहिदा हुआ था (सन्धि), अगर वे क़ायम रहें, तो तुम भी अपने वचन पर क़ायम रहो, बेशक अल्लाह तक़वा (परहेज़गारी) अपनाने वालों को पसंद करता है।

كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝

८- (उनसे अ़हद) किस तरह बाक़ी रह सकता है, (जबकि उनका ह़ाल यह है,) कि अगर वे तुम पर क़ाबू पा लें, तो तुम्हारे बारे में न नाते का ख़याल रखें और न अ़हद (वचन) का; यह मुँह से तो तुम्हें खुश कर देते हैं मगर उनके दिल क़ुबूल नहीं करते, और उनमें अक्सर फ़ासिक़ (नाफ़रमान) हैं।

اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

९- यह आयतों के बदले मामूली क़ीमत ह़ासिल करते और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, बेशक बहुत बुरा है जो कुछ यह कर रहे हैं।

لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ۝

१०- यह लोग किसी मोमिन के बारे में न तो नाते-रिश्ते का ख़याल रखते हैं, और न अ़हद (वचन) का, और यही लोग हैं जो ह़द (सीमा) से आगे बढ़ जाने वाले हैं।

فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ؕ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝

११- फिर अगर यह तौबः कर लें, और नमाज़ क़ायम करें, और ज़कात दें; तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं, और 'हम' अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें।

وَاِنۡ نَّكَثُوۡۤا اَيۡمَانَهُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ عَهۡدِهِمۡ وَطَعَنُوۡا فِىۡ دِيۡـنِكُمۡ فَقَاتِلُوۡۤا اَـئِمَّةَ الۡـكُفۡرِ‌ ۙ اِنَّهُمۡ لَاۤ اَيۡمَانَ لَهُمۡ لَعَلَّهُمۡ يَنۡتَهُوۡنَ‏ ﴿۱۲﴾

१२- और अगर अ़हद (वचन) करने के बाद अपनी क़समों को तोड़ डालें; और तुम्हारे दीन में ताने (तिरस्कार) करने लगें, तो फिर काफ़िरों (इन्कारियों) के सरदारों से युद्ध करो, इनकी क़समों का कोई भरोसा नहीं, यहाँ तक कि वे बाज़ (रूक) आ जाएँ।

اَلَا تُقَاتِلُوۡنَ قَوۡمًا نَّكَثُوۡۤا اَيۡمَانَهُمۡ وَهَمُّوۡا بِاِخۡرَاجِ الرَّسُوۡلِ وَهُمۡ بَدَءُوۡكُمۡ اَوَّلَ مَرَّةٍ‌ ؕ اَتَخۡشَوۡنَهُمۡ‌ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنۡ تَخۡشَوۡهُ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ‏ ﴿۱۳﴾

१३- क्या तुम ऐसे लोगों से क़िताल (जंग) नहीं करोगे, जिन्होंने अपनी क़समें तोड़ डालीं और रसूल को (उसके वतन से) निकालने का पक्का इरादा किया, और तुम्हारे विरूद्ध जंग करने में पहल की? क्या तुम ऐसे लोगों से डरते हो? तो (जान लो कि) अल्लाह इसका ज़्यादा हक़दार है कि तुम उससे डरो, अगर तुम ईमान वाले हो;

قَاتِلُوۡهُمۡ يُعَذِّبۡهُمُ اللّٰهُ بِاَيۡدِيۡكُمۡ وَيُخۡزِهِمۡ وَيَنۡصُرۡكُمۡ عَلَيۡهِمۡ وَيَشۡفِ صُدُوۡرَ قَوۡمٍ مُّؤۡمِنِيۡنَۙ‏ ﴿۱۴﴾

१४- उनसे क़िताल (जंग) करो, अल्लाह तुम्हारे हाथों से उनको अ़ज़ाब में डालेगा, और अपमानित करेगा, और तुम को उन पर ग़ालिब (विजयी) करेगा; और ईमान रखने वालों के दिलों को ठंडा करेगा;

وَيُذۡهِبۡ غَيۡظَ قُلُوۡبِهِمۡ‌ ؕ وَيَتُوۡبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنۡ يَّشَآءُ‌ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ‏ ﴿۱۵﴾

१५- और उनके दिलों का क्रोध मिटाएगा, और अल्लाह जिसको चाहेगा, तौबः की तौफ़ीक़ देगा और अल्लाह बड़ा इल्म वाला, ह़िकमत वाला है।

اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تُتۡرَكُوۡا وَلَمَّا يَعۡلَمِ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ جٰهَدُوۡا مِنۡكُمۡ وَلَمۡ يَتَّخِذُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوۡلِهٖ وَلَا الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَلِيۡجَةً‌ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ‏ ﴿۱۶﴾

१६- क्या तुम लोगों ने यह समझ रखा है कि यूँ ही छोड़ दिये जाओगे; हालाँकि अल्लाह ने अभी उन लोगों को अलग ही नहीं किया, जिन्होंने तुममें से जिहाद किये, और अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों के सिवा किसी को दिली दोस्त नहीं बनाया? और अल्लाह उसकी ख़बर रखता है जो कुछ तुम करते हो।

مَا كَانَ لِلۡمُشۡرِكِيۡنَ اَنۡ يَّعۡمُرُوۡا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيۡنَ عَلٰٓى اَنۡفُسِهِمۡ بِالۡكُفۡرِ‌ ؕ اُولٰٓـئِكَ حَبِطَتۡ اَعۡمَالُهُمۡ ۖۚ وَفِى النَّارِ هُمۡ خٰلِدُوۡنَ‏ ﴿۱۷﴾

१७- यह मुशिरकों का काम नहीं है कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जबकि वे खुद अपने ख़िलाफ़ कुफ्र की गवाही दे रहे हैं, यही वे लोग हैं कि इनके आ़माल अकारथ हो चुके, और यह आग में ही हमेशा पड़े रहेंगे।

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَٰجِدَ ٱللَّهِ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَأَقَامَ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَى ٱلزَّكَوٰةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا ٱللَّهَ فَعَسَىٰٓ أُو۟لَٰٓئِكَ أَن يَكُونُوا۟ مِنَ ٱلْمُهْتَدِينَ ۝

१८- अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करना तो उन लोगों का काम है, जो ईमान रखते हों अल्लाह और अन्तिम दिन पर, और पाबन्दी करते हों नमाज़ की और ज़कात देते रहते हों और अल्लाह के सिवा किसी से न डरते हों, तो ऐसे ही लोगों के लिए उम्मीद है कि हिदायत (सीधा मार्ग) पाने वाले हैं।

أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ ٱلْحَآجِّ وَعِمَارَةَ ٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ كَمَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَجَٰهَدَ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ۚ لَا يَسْتَوُۥنَ عِندَ ٱللَّهِ ۗ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ۝

१९- क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने के काम, और मस्जिदे हराम (कअ्बः) के इन्तिज़ाम को, उस व्यक्ति के काम के बराबर ठहरा लिया है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया, और उसने अल्लाह की राह में जिहाद (संघर्ष) किया? यह अल्लाह के नज़दीक़ दोनों बराबर नहीं, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता।

ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَهَاجَرُوا۟ وَجَٰهَدُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ أَعْظَمُ دَرَجَةً عِندَ ٱللَّهِ ۚ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَآئِزُونَ ۝

२०- जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की, और अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों से जिहाद किया, उनका दर्जा अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा है, और वही कामियाब होने वाले हैं;

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُم بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَٰنٍ وَجَنَّٰتٍ لَّهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ مُّقِيمٌ ۝

२१- उनका 'रब' उन्हें ख़ुशख़बरी देता है, (अपनी) दया और प्रसन्नता की, और ऐसे बाग़ों की जहाँ उनके लिए हमेशा-हमेश की नेअ्मतें हैं;

خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عِندَهُۥٓ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

२२- उनमें वे हमेशा-हमेश रहेंगे, बेशक अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र (बदला) है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوٓا۟ ءَابَآءَكُمْ وَإِخْوَٰنَكُمْ أَوْلِيَآءَ إِنِ ٱسْتَحَبُّوا۟ ٱلْكُفْرَ عَلَى ٱلْإِيمَٰنِ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ۝

२३- ऐ ईमान वालो! अगर तुम्हारे (माँ) बाप और (बहन) भाई ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को पसंद करें, तो उनसे दोस्ती (राज़दार) न रखो, और तुममें से जो उन से दोस्ती रखेगा तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं।

قُلْ إِن كَانَ ءَابَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَٰنُكُمْ وَأَزْوَٰجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَٰلٌ ٱقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَٰرَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَجِهَادٍ فِى سَبِيلِهِۦ فَتَرَبَّصُوا۟ حَتَّىٰ يَأْتِىَ ٱللَّهُ بِأَمْرِهِۦ ۗ

२४- कह दीजिएः अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, और तुम्हारी पत्नियाँ, और तुम्हारे रिश्तेदार, और माल जो तुमने कमाए हैं, और तिजारत जिसके बन्द होने का ख़ौफ है, और घर जिन्हें तुम पसंद करते हो, तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद करने से ज़्यादा प्यारी

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ

हैं, तो इन्तिज़ार करो! यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला ले आए, और अल्लाह नाफ़रमानों को राह नहीं दिखाता।''

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِىْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ

२५- अल्लाह बहुत से मौक़ों पर तुम्हारी मदद कर चुका है और 'हुनैन' (की लड़ाई) के दिन जबकि तुम्हें अपनी अधिकता पर गर्व था; तो वह तुम्हारे कुछ काम न आया, और धरती अपनी विशालता के बावजूद तुम पर तंग हो गई, फिर तुम पीठ फेरकर भाग खड़े हुए;

ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ

२६- फिर अल्लाह ने अपने रसूल पर और मोमिनों पर अपनी सकीनत (प्रशान्ति) उतारी, और ऐसी सेनाएँ उतारीं जिनको तुमने नहीं देखा, और काफ़िरों को सज़ा दी! और यही बदला है काफ़िरों का।

ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

२७- फिर इसके बाद अल्लाह जिसको चाहता है उसे तौबः की तौफ़ीक़ देता है, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَآءَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ

२८- ऐ ईमान वालो! मुशिरक तो नजिस (अपवित्र) ही हैं, अतः इस वर्ष के बाद वे 'मस्जिदे ह़राम' के पास न जाने पाएँ और अगर तुम्हें ग़रीबी का डर हो, तो अल्लाह चाहेगा तो तुम को अपने फ़ज़्ल (अनुग्रह) से सम्पन्न कर देगा, बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला, ह़िकमत वाला है।

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ

२९- वे किताब वाले जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं, और न आख़िरत के दिन पर, और न अल्लाह और उसके रसूल ने जिन चीज़ों को हराम ठहराया है उसे ह़राम ठहराते हैं, और न दीने ह़क़ को क़ुबूल करते हैं- उनसे जंग करो, यहाँ तक कि ज़लील हो कर अपने हाथ से जिज़्या (कर) दें।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ٬ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۗ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ

३०- और यहूदी कहते हैं ''उज़ैर अल्लाह का बेटा है।'' और ईसाई कहते हैं, ''मसीह़ अल्लाह का बेटा है,'' यह उनके अपने मुँह की बातें हैं, यह भी उन्हीं की सी बातें कर रहे हैं जो इससे पहले इन्कार कर चुके हैं, अल्लाह इनको हलाक (नाश) करे! यह कहाँ से औंधे हुए जा रहे हैं!

३१- इन्होंने अल्लाह को छोड़कर अपने धर्म ज्ञाताओं (उलमा) और सन्तों (बुजुर्गों) को रब बना लिया है और मसीह इब्ने मरयम को भी- हालाँकि उन्हें इसके सिवा कोई हुक्म नहीं दिया गया था कि वह 'केवल एक मअ़बूद' (उपास्य) की इबादत करें (जिसके) सिवा कोई उपास्य नहीं, पाक है 'वह' उस शिर्क से जो यह करते हैं।

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

३२- 'यह' लोग अल्लाह के नूर (प्रकाश) को अपने मुँह से बुझा देना चाहते हैं, हालाँकि अल्लाह अपने (प्रकाश) को पूरा किये बिना नहीं रहेगा, चाहे काफ़िरों को नागवार (अप्रिय) ही लगे।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝

३३- 'वही' है जिसने अपने रसूल को हिदायत (मार्गदर्शन) और सच्चे दीन के साथ भेजा ताकि उसे तमाम दीन (धर्म) पर ग़ालिब (प्रभावी) कर दे चाहे मुश्रिकों को (कितना ही) बुरा ही लगे।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝

३४-ऐ ईमान वालो! (अह्ले किताब के) बहुत से धर्म ज्ञाता (उलमा) और सन्त, लोगों के माल नाहक़ खाते हैं, और (उनको) अल्लाह की राह से रोकते हैं; और जो लोग सोना और चाँदी इकट्ठा कर के रखते हैं, और उन्हें अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते, आप उन्हें एक दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दीजिए;

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝

३५- जिस दिन उस (माल) को जहन्नम की आग में तपाया जाएगा, फिर उससे उनकी पेशानियों (मस्तक) को और उनके पहलुओं, और उनकी पीठों को दाग़ा जाएगा (और कहा जाएगा) ''यही है, वह (ख़ज़ाना) जिसे तुमने अपने लिए जमा किया था, तो अब अपने जमा करने का मज़ा चखो!''

يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۗ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ۝

३६- महीनों की संख्या-अल्लाह के नज़दीक उस दिन से (जब) कि 'उसने' आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, अल्लाह की किताब में बारह महीने (लिखे) हैं जिनमें चार महीने (ज़ीक़अ़दा, ज़िलहिज्ज, मुहर्रम, रजब) हुरमत वाले (प्रतिष्ठित) हैं, यही सीधा दीन है, अतः तुम इन महीनों में अपने ऊपर जुल्म न करो; और

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۗ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ۗ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ

الْمُتَّقِيْنَ ۞

मुश्रिकों से तुम सब के सब मिल कर लड़ो, जिस तरह वे सब मिल कर तुम से लड़ते हैं, और जान लो! कि अल्लाह मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) के साथ है।

إِنَّمَا النَّسِيٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّيُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ۚ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ أَعْمَالِهِمْ ۚ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۞

३७- (अम्न के किसी महीने) का हटा देना कुफ़्र में ज़्यादती करना है, इससे इन्कार करने वाले गुमराही में पड़ते हैं, वह किसी साल ह़राम महीनों को ह़लाल कर लेते हैं और किसी साल उसे ह़राम समझते हैं ताकि उन (महीनों) को जिन्हें अल्लाह ने ह़राम कर दिया है गिनती पूरी कर लें; फिर अल्लाह के ह़राम किये हुए महीने को ह़लाल कर लेते हैं, उनके बुरे करतूत उन्हें अच्छे मालूम होते हैं और अल्लाह इन्कार करने वालों को सीधी राह नहीं दिखाता।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ إِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ ۚ أَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ إِلَّا قَلِيْلٌ ۞

३८- ऐ ईमान वालो! तुम्हें क्या हो गया है, कि जब तुमसे कहा जाता है कि ''अल्लाह की राह में निकलो,'' तो तुम ज़मीन से चिमट जाते हो? क्या तुमने दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत के मुक़ाबले में पसंद कर लिया है? दुनिया की ज़िन्दगी का सामान आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत थोड़ा है!-

إِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۞

३९- अगर तुम न निकलोगे तो अल्लाह तुम्हें एक दर्दनाक अ़ज़ाब देगा, और तुम्हारे बदले एक दूसरी क़ौम पैदा कर देगा, और तुम उसे कुछ भी नुक़्सान न पहुँचा सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

إِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَأَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ۗ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۞

४०- अगर तुम (रसूल की) मदद न करोगे, तो उनकी मदद (ख़ुद) अल्लाह कर चुका है, जबकि उनको काफ़िरों ने (वतन से) निकाल दिया था (ऐसी स्थिति में) जबकि वह केवल दो में के दूसरे (अर्थात अबूबक्र और रसूल) थे। जब वे दोनों गुफ़ा में थे; उस वक्त वह अपने साथी से कह रहे थे, ''ग़म (शोक) न करो, अल्लाह हमारे साथ है; फिर अल्लाह ने उन पर अपनी ओर से सकीनत (प्रशान्ति) उतारी, और उनकी मदद ऐसी सेनाओं से की जिन्हें तुम देख न सके; और उन्होंने काफ़िरों की बात नीची कर दी, और अल्लाह ही की बात ऊँची रही, और अल्लाह ज़बरदस्त (प्रभुत्वशाली), ह़िकमत वाला है।

انْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

४१- निकल पड़ो-हल्के हो या बोझल- और जिहाद करो अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह की राह में, यही बेहतर है तुम्हारे लिए, अगर तुम (कुछ) इल्म रखते हो।

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَاتَّبَعُوكَ وَلَٰكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۚ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٤٢﴾

४२- अगर कुछ माल लगे हाथ मिल जाने वाला होता, और सफ़र भी हल्का होता तो यह लोग ज़रूर आप के साथ हो लेते; और सफ़र की दूरी उन्हें कठिन मालूम हुई, अब वे अल्लाह की क़समें खाएँगे कि ''अगर हम से हो सकता तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते,'' ये लोग अपने आपको तबाही में डाल रहे हैं, और अल्लाह जानता है कि ये झूठे हैं।

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ أَذِنْتَ لَهُمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ الْكَاذِبِينَ ﴿٤٣﴾

४३- अल्लाह ने आप को माफ़ कर दिया! (लेकिन) आपने उनको इजाज़त क्यों दे दी यहाँ तक कि आप पर जो लोग सच्चे हैं ज़ाहिर हो जाते, और आप झूठों को भी जान लेते?

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ﴿٤٤﴾

४४- जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, वे आपसे इजाज़त नहीं माँगते (चाहते हैं) कि अपने माल और जान से जिहाद करें,और अल्लाह परहेज़गारों को भली-भाँति जानता है।

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ﴿٤٥﴾

४५- इजाज़त तो वही लोग माँगते हैं, जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिनके दिल सन्देह में पड़े हुए हैं, तो वे अपने सन्देह के तरद्दुद (डाँवाडोल) में हैं।

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَٰكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انْبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ ﴿٤٦﴾

४६- और अगर वे निकलने का इरादा करते, तो उसके लिए सामान जुटाते, किन्तु अल्लाह ने उनके उठने को नापसंद किया तो 'उसने' उन्हें रोक दिया, और उनसे कह दिया गया, ''बैठने वालों के साथ बैठे रहो;''

لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا وَلَأَوْضَعُوا خِلَالَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ وَفِيكُمْ سَمَّاعُونَ لَهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٤٧﴾

४७- अगर तुम्हारे साथ निकलते भी तो, तुम्हारे अन्दर ख़राबी के सिवा किसी और चीज़ को बढ़ावा न देते; और वे तुम्हारे बीच फ़ित्ना (उपद्रव) मचाने के लिए दौड़ धूप करते,

और तुम्हारे बीच उनके जासूस भी मौजूद हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है;

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتَّىٰ جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَارِهُونَ ﴿٤٨﴾

४८- इन्होंने तो इससे पहले भी फ़ित्ना (उपद्रव) माचाना चाहा था और वे तुम्हारे ख़िलाफ़ घटनाओं और मामलों के उलटने-पलटने में लगे रहे, यहाँ तक कि हक़ आ गया और अल्लाह का हुक्म ग़ालिब हो कर रहा, और उन्हें नागवार (अप्रिय) ही लगता रहा।

وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ ائْذَنْ لِي وَلَا تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٤٩﴾

४६- और उनमें कोई ऐसा भी है, जो कहता है, ''मुझे तो इजाज़त दे ही दीजिए, और मुझे फ़ित्ना में न डालिए।'' जान लो कि ये फ़ित्ने में तो पड़ ही चुके हैं, और जहन्नम इन्कार करने वालों को घेर रही है।

إِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِنْ تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَهُمْ فَرِحُونَ ﴿٥٠﴾

५०- अगर आप को कोई अच्छी हालत पेश आती है, तो उन्हें बुरा लगता है; और अगर आप पर कोई मुसीबत आ जाती है तो कहते हैं, '' हमने तो अपना काम पहले ही संभाल लिया था।'' और खुश होते हुए लौटते हैं।

قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾

५१- कह दीजिए, ''हम पर कोई मुसीबत नहीं आ सकती मगर वही जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया; 'वह' हमारा मालिक है, और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।''

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۖ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِنْ عِنْدِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا ۖ فَتَرَبَّصُوا إِنَّا مَعَكُمْ مُتَرَبِّصُونَ ﴿٥٢﴾

५२- कह दीजिए, ''तुम हमारे लिए दो भलाइयों (शहादत या विजय) में से एक के इन्तिज़ार में हो और 'हम' तुम्हारे लिए इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि अल्लाह अपनी ओर से तुम्हें कोई अ़ज़ाब (यातना) दे या हमारे हाथों दिलाए; अच्छा तो तुम भी इन्तिज़ार करो, हम भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहे हैं।''

قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَنْ يُتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ۖ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٣﴾

५३- कह दीजिए, ''तुम खुशी से खर्च करो या नाखुशी से, तुमसे कुछ भी कुबूल न किया जाएगा।'' क्योंकि तुम नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) लोग हो।''

وَمَا مَنَعَهُمْ أَن تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَاتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَىٰ وَلَا يُنفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَارِهُونَ ۝٥٤

५४- और उनके खर्च के कुबूल होने में इसके अ़लावा और कोई चीज़ रूकावट नहीं कि उन्होंने अल्लाह और 'उसके' रसूल के साथ कुफ्र किया, और नमाज़ को आते हैं तो बस सुस्ती के साथ और ख़र्च करते हैं तो नागवारी (अनिच्छापूर्वक) से;

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُم بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝٥٥

५५- तो तुम को उनके माल और उनकी औलाद हैरत में न डालें, अल्लाह तो बस यह चाहता है कि उनके ही (नेअ़मतों के) ज़रिये से उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में अ़ज़ाब देता रहे, और उनकी जानें ऐसी ह़ालत में निकाली जाएँ कि वे इन्कार करने वाले (काफ़िर) ही रहें;

وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنكُمْ وَمَا هُم مِّنكُمْ وَلَٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ۝٥٦

५६- और अल्लाह की क़समें खाते हैं कि 'वे' तुम में से हैं; हालाँकि वे तुम में से नहीं हैं, बल्कि वे ऐसे लोग हैं जो डरपोक हैं;

لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغَارَاتٍ أَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ۝٥٧

५७- अगर यह कोई पनाह की जगह पाते, या कोई गुफ़ा या कोई जगह घुस बैठने की, तो यह ज़रूर मुँह उठा कर उधर चल पड़ते;

وَمِنْهُم مَّن يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِن لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ۝٥٨

५८- और उनमें से कुछ ऐसे भी हैं, जो आप को सदक़े के बारे में ताना देते हैं, तो अगर उन्हें उसमें से मिल जाए तो राज़ी हो जाते हैं, और अगर उन्हें उनमें से नहीं मिलता तो बस नाराज़ हो जाते हैं;

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ۝٥٩

५९- और अगर अल्लाह और उसके रसूल ने जो कुछ उन्हें दिया था, उस पर वे राज़ी रहते और कहते "हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है, और अल्लाह हमें जल्द ही अपने फ़ज़्ल से देगा और उसका रसूल भी, हम तो अल्लाह ही की ओर लौ लगाते हैं।"

إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِينِ وَالْعَامِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي

६०- सदक़े तो बस गरीबों, मोहताजों और उन लोगों के लिए हैं, जो इस काम पर नियुक्त हों, और उन लोगों के लिए

الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

जिनके दिलों में (इस्लाम का) लगाव पैदा करना हो, और गर्दनों को छुड़ाने, और क़र्ज़दारों और तावान (जुर्माना)भरने वालों की मदद करने में, और अल्लाह की राह में मुसाफ़िरों की मदद करने के लिए हैं; यह अल्लाह की ओर से ठहराया हुआ हुक्म है, और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है।

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

६१- और इनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो नबी को दुःख देते हैं और कहते हैं, 'यह व्यक्ति तो केवल कान हैं'' (अर्थात कान का कच्चा) कह दीजिए, ''वह तुम्हारे लिए कान का भला है, वह अल्लाह पर ईमान रखता है, और मोमिनों (की बात) पर यक़ीन करता है, और जो लोग तुम में से ईमान रखते हैं, उनके लिए सरापा रहमत है; और जो लोग अल्लाह के रसूल को दुःख देते हैं, उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।''

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝

६२- यह लोग तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं, ताकि तुम को ख़ुश कर लें, हालाँकि अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा हक़दार हैं, कि उनको राज़ी करें अगर ये ईमान वाले होते।

اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ۝

६३- क्या इन लोगों को मालूम नहीं! कि जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करता है, तो उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा, यह बड़ी रूसवाई की बात है।

يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ۝

६४- मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) डरते रहते हैं कि कहीं उनके बारे में कोई ऐसी सूरः नाज़िल न हो जाए जो वह सब कुछ उन पर खोल दे, जो उन (मुनाफ़िक़ों) के दिलों में है, कह दीजिए, ''मज़ाक़ उड़ा लो, अल्लाह तो उसे ज़ाहिर (प्रकट) कर के रहेगा, जिसका तुम्हें डर है।''

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

६५- और अगर तुम उनसे पूछो तो कह देंगे ''हम तो केवल बातें और हँसी-खेल कर रहे थे।'' कह दीजिए, ''क्या अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ तुम हँसी-मज़ाक़ करते थे?-

६६- बहाने न बनाओ, तुमने अपने ईमान लाने के बाद इन्कार किया, अगर हम तुम्हारे एक गिरोह को माफ़ भी कर दें तो भी एक गिरोह को तो सज़ा देकर ही रहेंगे, इस लिए कि वे मुजरिम हैं।"

لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۚ إِنْ نَعْفُ
عَنْ طَائِفَةٍ مِنْكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةً بِأَنَّهُمْ
كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝٦٦

६७- मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें सब एक ही तरह के (हमजिन्स) हैं: बुरी बात का हुक्म देते रहते हैं, और अच्छी बात से रोकते रहते हैं, और अपने हाथों को बन्द रखते हैं, उन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो 'उसने' उन्हें भुला दिया, बेशक मुनाफ़िक़ीन बड़े नाफ़रमान हैं;

الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ ۚ
يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ
وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا اللَّهَ فَنَسِيَهُمْ ۗ إِنَّ
الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝٦٧

६८- और अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों से जहन्नम की आग का वादा कर रखा है, जिसमें वे हमेशा रहेंगे, वही उनके लिए काफ़ी है और अल्लाह ने उन पर लानत कर दी, और उनके लिए हमेशा का अज़ाब है।

وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ
نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ
اللَّهُ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُقِيمٌ ۝٦٨

६९- तुम्हारा हाल भी वही हुआ जैसा तुम्हारे पूर्वजों का हुआ था, वह तुमसे कहीं ज़्यादा शक्तिशाली थे और माल और औलाद में भी बढ़-चढ़ कर थे, फिर उन्होंने अपने हिस्से का लाभ उठा लिया, और तुमने भी अपने हिस्से का लाभ उठा लिया, जिस तरह तुम से पहले लोगों ने उठाया था; और तुम भी उसी तरह उलझते रहे, जिस तरह वे उलझते रहे, यही वे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया और आख़िरत में बरबाद हो गये, और यही लोग घाटा उठाने वाले हैं।

كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَ
أَكْثَرَ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا ۚ فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَاقِهِمْ
فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِي
خَاضُوا ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝٦٩

७०- क्या इन्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं- (जैसे) क़ौमे 'नूह' और 'आद' और 'समूद' की, और क़ौमे इब्राहीम व मद्यन वालों की, और उल्टी हुई बस्तियों की- उनके पास उनके रसूल खुली हुई निशानियां ले कर आए थे, फिर अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, और वे खुद ही अपने आप पर ज़ुल्म करते थे।

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ وَ
عَادٍ وَثَمُودَ ۙ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ
مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَاتِ ۚ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ
فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ۝٧٠

७१- और ईमान वाले मर्द, और ईमान वाली औरतें एक-दूसरे के रफ़ीक़ (साथी) हैं: भली बातों का हुक्म देते हैं, और बुरी बातों से रोकते रहते हैं, और नमाज़ क़ायम करते हैं, और ज़कात देते रहते

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ
بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ

الزَّكٰوةَ وَيُطِيعُونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ ؕ أُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ إِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

हैं और अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी (आज्ञा पालन) करते हैं, यही लोग हैं कि अल्लाह उन पर ज़रूर रह्म करेगा, बेशक अल्लाह जबर्दस्त (प्रभुत्वशाली), हिकमत वाला है।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ أَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

७२- अल्लाह ने ईमान वालों और ईमान वाली ओ़रतों से वादा कर रखा हैं जन्नत का, कि उनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिसमें वे हमेशा रहेंगे, और उस हमेशा रहने वाली जन्नत में पाकीज़ा मकान होंगे, और उन्हें अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल होगी, जो सबसे बढ़ कर है, यही सबसे बड़ी कामियाबी है।

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ جٰهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

७३- ऐ नबी! काफ़िरों (इन्कार करने वालों) और मुनाफ़िक़ों से जिहाद कीजिए और उनके साथ सख़्ती के साथ पेश आइए, और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरी जगह है!

يَحْلِفُونَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوا ؕ وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلٰمِهِمْ وَهَمُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا ۚ وَمَا نَقَمُوٓا إِلَّآ أَنْ أَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُولُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَإِنْ يَتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا أَلِيمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْأٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيرٍ ۝

७४- यह लोग अल्लाह की क़सम खा जाते हैं कि उन्होंने (फलाँ बात) नहीं कही, हालाँकि उन्होंने अवश्य ही कुफ्र की बात कही थी, और अपने इस्लाम क़ुबूल करने के बाद इन्कार किया और ऐसी बात का इरादा किया जो हासिल न हो सकी; और उन्होंने बदला केवल इस बात का दिया कि अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से मालदार कर दिया; अब अगर ये लोग तौबः कर लें तो उनके ह़क़ में बेहतर है और अगर उन्होंने मुँह मोड़ा तो अल्लाह उन्हें दर्दनाक सज़ा दुनिया और आख़िरत में देगा और उनका ज़मीन में न कोई दोस्त होगा और न मददगार।

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصّٰلِحِينَ ۝

७५- और उनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने अल्लाह को वचन दिया था कि ''अगर उसने हमें अपने फ़ज़्ल से दिया, तो हम ज़रूर दान करेंगे और नेक लोगों में हो कर रहेंगे;''

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝

७६- फिर जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से (माल) दिया तो वे उसमें कंजूसी करने लगे और मुँह फेर गये;

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ إِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ أَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝

७७- फिर अंजाम यह हुआ कि 'उसने' उनके दिलों में उस दिन तक के लिए निफ़ाक़ (कप्टाचार) डाल दिया, जब वे उससे मिलेंगे; इसलिए कि उन्होंने अल्लाह से जो वादा किया था तोड़ दिया और इसलिए भी कि वे झूठ बोलते रहे।

७८- क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह उनके भेदों और उनकी कानाफूसियों को अच्छी तरह जानता है और यह कि अल्लाह छिपी बातों को खूब जानता है?

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ
وَأَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ

७९- जो (मुनाफ़िक़) खुशी-खुशी खर्च करने वाले मोमिनों पर सद्क़ात के बारे में एतिराज़ किया करते हैं और उन लोगों का मज़ाक़ उड़ाते हैं जो अपनी मेहनत मज़दूरी के सिवा ख़र्च के लिए कुछ नहीं पाते; अल्लाह उनका मज़ाक़ उन्हीं पर उलट रहा है और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي
الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ
فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ

८०- आप उनके लिए इस्तिग़फ़ार (क्षमा की प्रार्थना) करें, या उनके लिए इस्तिग़फ़ार न करें, अगर आप उनके लिए सत्तर बार इस्तिग़फ़ार करेंगे तो भी अल्लाह माफ़ नहीं करेगा, यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ्र किया, और अल्लाह फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) लोगों को सीधी राह नहीं दिखाता।

اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ
لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ

८१- यह पीछे रह जाने वाले, अल्लाह के रसूल के पीछे, अपने बैठे रहने पर प्रसन्न हुए, उन्हें यह नापसंद हुआ कि अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों के साथ (तबूक में) जिहाद करें और उन्होंने कहा,''इस गर्मी में न निकलो।'' कह दीजिए, ''जहन्नम की आग इससे कहीं ज़्यादा गर्म है'' अगर यह समझते होते;

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلَافَ رَسُولِ اللَّهِ
وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ
أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ

८२- तो हँस लें थोड़ा और फिर रोते रहें बहुत, उन कामों के बदले में जो कुछ वे करते रहे।

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا جَزَاءً بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ

८३- फिर अगर अल्लाह आप को वापस लाए उनके किसी गिरोह की ओर, और यह लोग आप के साथ चलने की इजाज़त माँगें तो कह दीजिए, ''तुम कभी भी मेरे साथ न चल सकोगे, और न मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ सकते हो, तुम पहली बार बैठे रहने पर राज़ी हुए, तो अब भी पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो;''

فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَىٰ طَائِفَةٍ مِنْهُمْ
فَاسْتَأْذَنُوكَ لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ
أَبَدًا وَلَنْ تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ
بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَالِفِينَ

وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ
عَلٰى قَبْرِهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَ
مَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ

८४- और इनमें से जो कोई मर जाए उस पर कभी भी नमाज़ (जनाज़ा) न पढ़िए और न उसकी क़ब्र पर खड़े होइए, (क्योंकि) उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया, और मरे भी तो फ़ासिक़ (नाफ़रमान)।

وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ
يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ
كٰفِرُوْنَ

८५- और उनके माल और उनकी औलाद आप को आश्चर्य में न डाले, अल्लाह तो बस यह चाहता है कि उन्हीं के ज़रिये से दुनिया में भी अ़ज़ाब देता रहे, और उनकी जान इस हाल में निकले कि वे काफ़िर हों।

وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ
رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا
ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ

८६- और जब कोई सूरः उतरती है कि ''अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ मिल कर जिहाद करो,'' तो जो लोग इनमें क़ुदरत (सामर्थ्य) वाले हैं वही आप से इजाज़त माँगने लगते हैं, और कहते हैं ''हमें छोड़ दीजिए कि हम लोग बैठने वालों के साथ रहें;''

رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ
لَا يَفْقَهُوْنَ

८७- ये इस पर राज़ी हो गये कि पीछे रह जाने वालों के साथ रह जाएँ और उनके दिलों पर मुहर लगा दी गयी, इसलिए ये कुछ नहीं समझते।

لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۡ
وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

८८- लेकिन रसूल, और जो लोग उनके साथ ईमान ला चुके हैं, उन्होंने अपने माल और जान से जिहाद किया, यही लोग हैं जिनके लिए भलाइयाँ हैं, और यही लोग कामियाब होने वाले हैं;

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ

८९- अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, वे उनमें हमेशा रहेंगे, यही बड़ी कामियाबी है।

وَجَاۗءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَ
قَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ سَيُصِيْبُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ

९०- और बहाना करने वाले बद्दू भी आए कि उन्हें (बैठने रहने की) इजाज़त मिल जाए, और जो अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोले वे भी बैठे रहे, उनमें से जिन्होंने इन्कार किया उन्हें जल्द ही अ़ज़ाब पहुँच कर रहेगा,

لَيْسَ عَلَي الضُّعَفَاۗءِ وَلَا عَلَي الْمَرْضٰى وَلَا عَلَي الَّذِيْنَ
لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَ

९१- न तो कमज़ोरों के लिए कोई गुनाह की बात है, और न बीमारों के लिए और न उन लोगों के लिए जिन्हें खर्च करने

رَسُولِهِ ۚ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِن سَبِيلٍ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ٩١

के लिए (माल) प्राप्त नहीं, जबकि वे अल्लाह और उसके रसूल के प्रति वफ़ादार हों, नेक लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है;

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوا وَّأَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يُنفِقُونَ ٩٢

९२- और न उन लोगों पर कोई आरोप है जो आप के पास आए, कि आप उनके लिए सवारी का इन्तिज़ाम कर दें और जब आप ने कहा, ''मैं तुम्हारे लिए सवारी का इन्तिज़ाम नहीं कर सकता'' तो वह इस ह़ाल में वापस होते हैं, कि उनकी आँखों से आँसू जारी होता है इस ग़म से कि वे अपने पास खर्च करने को कुछ नहीं पाते।

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ ۚ رَضُوا بِأَن يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ٩٣

९३- आरोप तो बस उन लोगों पर है जो दौलतमंद होते हुए भी आप से इजाज़त माँगते हैं, वे इस पर राज़ी हुए कि पीछे लोगों के साथ रह जाएँ और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है तो वे कुछ नहीं जानते।

पारा नं०-११

* يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ ۚ قُل لَّا تَعْتَذِرُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّأَنَا اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ ۚ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ٩٤

९४- यह लोग तुम्हारे सामने बहाने करेंगे जब तुम उनके पास वापस जाओगे, कह दीजिए, ''बहाने न बनाओ, हम हरगिज़ तुम्हरी बात न मानेंगे, अल्लाह ने हमको तुम्हारी बातों की ख़बर दे दी है; अभी अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारे काम को देखेगा, फिर तुम उसकी ओर लौटोगे, जो छिपे और खुले का इल्म रखता है; तो जो कुछ तुम करते रहे हो 'वह' सब तुम्हें बता देगा।''

سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ إِنَّهُمْ رِجْسٌ ۖ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ٩٥

९५- जब तुम पलटकर उनके पास जाओगे तो वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएँगे, ताकि तुम उन्हें उनकी ह़ालत पर छोड़ दो, तो तुम उन्हें छोड़ ही दो, यह गन्दे हैं और इनका ठिकाना जहन्नम है, जो कुछ ये करते रहे हैं यह तो उसी का बदला है;

يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۖ فَإِن تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ٩٦

९६- यह तुम्हारे सामने क़समें खाएँगे ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ, अगर तुम उनसे राज़ी भी हो जाओगे तो (भी) अल्लाह हरगिज़ राज़ी न होगा, फ़ासिक़ो (अवज्ञाकारी) से।

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ٩٧

९७- यह बद्दू लोग इन्कार और निफ़ाक़ (कप्टाचार) में बहुत बढ़े हुए हैं; और यह इसी लायक़ हैं कि उसकी सीमाओं से नावाक़िफ़ (अनभिज्ञ) रहें, जिसे अल्लाह ने अपने रसूल पर

नाज़िल किया है, और अल्लाह बड़ा इल्म वाला, हिकमत वाला है;

९८- और कुछ बद्दू ऐसे हैं कि जो कुछ खर्च करते हैं, उसे तावान (जुर्माना) समझते हैं और तुम्हारे हक़ में मुसीबतों (बुरे दिन) का इन्तिज़ार करते रहते हैं; बुरी मुसीबतों में तो वही हैं, अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّ
يَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ۚ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۗ
وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾

९९- और बद्दुओं में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह और आख़िरत (परलोक) को मानते हैं और जो कुछ खर्च करते हैं उसे अल्लाह की कुर्बत (निकटता) और रसूल की दुआओं का ज़रिया समझते है। हाँ! बेशक वह उनके हक़ में निकटता है, अल्लाह उन्हें जल्द ही अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ (क्षमाशील) करने वाला, रहम वाला है।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ
يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ۚ
اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۚ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۚ
اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾

१००- सबसे पहले आगे बढ़ने वाले मुहाजिर और अन्सार, और जिन्होंने भली प्रकार उनकी पैरवी की, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ, और वे उससे राज़ी हुए और 'उसने' उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उनमें हमेशा-हमेश रहेंगे, यही बड़ी कामियाबी है।

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ
وَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ
وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٠٠﴾

१०१- और तुम्हारे आस-पास के बद्दुओं में और मदीना वालों में कुछ ऐसे मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) हैं जो निफ़ाक़ (कपटा नीती) पर जमे हुए हैं, उनको तुम नहीं जानते, 'हम' उन्हें भली -भाँति जानते हैं जल्द ही 'हम' उन्हें दोहरी सज़ा देंगे, फिर वे एक बड़े अ़ज़ाब की ओर लौटाए जाएँगे।

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛ وَمِنْ اَهْلِ
الْمَدِيْنَةِ ۛ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۫ لَا تَعْلَمُهُمْ ۚ نَحْنُ
نَعْلَمُهُمْ ۚ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى
عَذَابٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠١﴾

१०२- और दूसरे कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का इक़रार किया, उन्होंने मिले-जुले काम किये- कुछ अच्छे और कुछ बुरे- उम्मीद है कि अल्लाह की मेहरबानी (कृपा दृष्टि) उन पर हो, बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है।

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا
وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ۚ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾

१०३- आप उनके मालों में से सदक़ः (दान) लेकर उन्हें पाक-साफ़ (शुद्ध) करें, और उसके ज़रिये उन (की आत्मा) को

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا
وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۚ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۚ وَاللّٰهُ

سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ

विकसित करें, और उनके लिए दुआ़ करें। कि आपकी दुआ़ उनके लिए तस्कीन (परितोष) है, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है।

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

१०४- क्या यह लोग नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबः कुबूल करता, और सद्क़ात लेता है? और बेशक अल्लाह ही तौबः कुबूल करने वाला बड़ा रह़म वाला है।

وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

१०५- और उनसे कह दीजिए, ''अ़मल (कर्म) किये जाओ, अल्लाह और उसका रसूल और ईमान वाले तुम्हारे अ़मल को देखेंगे, और तुम उसकी ओर पलटोगे, जो छिपे और खुले को जानता है, और जो कुछ तुम करते रहे हो 'वह' सब तुम्हें बता देगा।''

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ

१०६- और कुछ दूसरे लोग भी हैं, जिनका मामला अल्लाह के हुक्म आने तक रूका हुआ है चाहे वह उन्हें सज़ा दे या उनकी तौबः कुबूल करे, और अल्लाह बड़ा इल्म वाला, ह़िकमत वाला है।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ

१०७- और जिन्होंने इसलिए मस्जिद बनाई है कि नुक़सान पहुँचाएं और कुफ्र करें और ईमान वालों में फूट डालेंऔर जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से पहले जंग कर चुके हैं उन के लिए घात की जगह बनाएँ और वे कसमें खाएंगे कि ''हमने तो बस अच्छा ही चाहा था,'' मगर अल्लाह गवाही देता है कि वे बिल्कुल झूठे हैं;

لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ

१०८- आप उसमें कभी भी खड़े न होइएगा; वह मस्जिद जिसकी बुनियाद तक़वा (परहेज़गारी) पर पहले दिन ही से पड़ी है, वह इसकी ज्यादा ह़क़दार है कि आप उसमें खड़े हों, उसमें ऐसे लोग पाये जाते हैं, जो अच्छी तरह पाक रहते हैं, और अल्लाह पाक-साफ़ रहने वालों को पसंद करता है।

اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِىْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى

१०९- फिर क्या वह व्यक्ति अच्छा है! जिसने अपनी इमारत की बुनियाद (आधारशिला) अल्लाह के डर और उसकी खुशी पर रखी है या वह, जिसने अपनी इमारत की बुनियाद किसी

الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

खाईं के खोखले कगार पर रखी- जो गिरने को है फिर वह (इमारत) उसको लेकर जहन्नम की आग में गिर पड़ी? और अल्लाह ज़ालिम लोगों को (सीधी) राह नहीं दिखाता;

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا رِيْبَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ
اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

११०- हमेशा उनकी यह इमारत जो उन्होंने बनाई हैं, उनके दिलों में खटकती रहेगी सिवाय इसके कि उनके दिल ही टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ और अल्लाह तो बड़ा इल्म वाला, हिकमत वाला है।

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰي مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَ
اَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۭ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
فَيَقْتُلُوْنَ وَيُقْتَلُوْنَ ۣ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرٰىةِ
وَالْاِنْجِيْلِ وَالْقُرْاٰنِ ۭ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ
فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ بِهٖ ۭ وَذٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

१११- अल्लाह ने ईमान वालों से उनके जान (प्राण) और उनके माल, इसके बदले में ख़रीद लिया है कि उनके लिए जन्नत है; यह लोग अल्लाह की राह में लड़ते हैं, तो मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं इसी पर सच्चा वादा है तौरेत और इंजील और कुर्आन में; और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को कौन पूरा कर सकता है? अतः अपने इस सौदे पर खुशियाँ मनाओ, जो सौदा तुमने 'उससे' किया है और यही बड़ी कामियाबी है;

اَلتَّاۗىِٕبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّاۗىِٕحُوْنَ
الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ۭ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

११२- वे (मुजाहिद) तौबः करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द (स्तुति) करने वाले, रोज़ः रखने वाले, रूकूअ़ करने वाले, सज्दः करने वाले, भलाई का हुक्म करने वाले, और बुराई से रोकने वाले, और अल्लाह की सीमाओं का ख़याल रखने वाले हैं, और ईमान वालों को (जन्नत की) खुशख़बरी सुना दीजिए।

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا
لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ
لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝

११३- नबी और ईमान वालों के लिए उचित नहीं कि वे मुश्रिकों के लिए माफ़ी की दुआ़ करें चाहे वे उनके नातेदार ही क्यों न हों, जबकि उन पर यह बात खुल चुकी है कि वे भड़कती हुई आग वाले हैं।

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ
وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ
مِنْهُ ۭ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ۝

११४- और इब्राहीम ने अपने बाप के लिए जो माफ़ी की दुआ़ की थी, वह तो केवल एक वादे की वजह से थी, जो वादा वह उससे कर चुके थे, फिर जब उन पर यह बात खुल गई कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उससे अलग हो गये; बेशक इब्राहीम बड़े ही नर्म दिल, सहनशील थे।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًۢا بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى

११५- और अल्लाह ऐसा नहीं कि क़ौम को गुमराह (पथभ्रष्ट)

يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

कर दे जबकि वह उनको राह पर ला चुका हो, जब तक कि उन्हें साफ़-साफ़ वे बातें न बता दे जिनसे उन्हें बचना है; बेशक अल्लाह हर चीज़ को भली-भाँति जानता है।

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ
وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ

११६- बेशक अल्लाह ही तो है 'जिसका' राज्य आसमानों और ज़मीन में है, 'वही' जिलाता और मारता है, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न कोई मित्र है और न मदद्गार।

لَّقَد تَّابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنصَارِ
الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِن بَعْدِ مَا كَادَ
يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّهُ بِهِمْ
رَءُوفٌ رَّحِيمٌ

११७- बेशक अल्लाह नबी पर मेहरबान हो गया और मुहाजिरों और अन्सार पर भी, जिन्होंने तंगी की घड़ी में उसका साथ दिया, उसके बाद कि उनमें से एक गिरोह के दिल फिर जाने को थे (अर्थात कुटिलता की ओर झुक गये थे) फिर उसने उन पर रहमत की नज़र डाली। बेशक वह (उनके हक़ में) बड़ा शफ़ीक़, (करूणामय), रहम वाला है।

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا حَتَّىٰ إِذَا ضَاقَتْ
عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ
أَنفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَن لَّا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ
ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيمُ

११८- और उन तीनों पर भी, जो पीछे छोड़ दिये गये थे, यहाँ तक कि जब धरती विशाल होते हुए भी, उन पर तंग हो गई और उनकी जान उन पर भारी हो गई और उन्होंने समझा कि अल्लाह से बचने के लिए कोई पनाह (शरण) नहीं मिल सकती- मिल सकती है तो उसी के यहाँ, फिर 'उसने' उन पर रहम किया ताकि वे पलट आएँ, बेशक अल्लाह ही तौबः कुबूल करने वाला, रहम वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ
الصَّادِقِينَ

११९- ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और सच्चों के साथ रहो।

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُم مِّنَ
الْأَعْرَابِ أَن يَتَخَلَّفُوا عَن رَّسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا
بِأَنفُسِهِمْ عَن نَّفْسِهِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ
ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا
يَطَئُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ
نَّيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُم بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ
لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ

१२०- मदीना वालों और उनके आस-पास के बद्दुओं को ऐसा नहीं चाहिए था कि अल्लाह के रसूल को छोड़कर पीछे रह जाएँ, और न यह कि उसकी जान के मुक़ाबले में उन्हें अपनी जान ज़्यादा प्रिय हो- क्योंकि वह अल्लाह की राह में प्यास, या थकान, या भूख की कोई भी तकलीफ़ उठाएँ; या वे ऐसी जगह क़दम रखें, जिससे काफ़िरों का क्रोध भड़के; या जो चाल भी वे दुश्मन के लिए चलें, उस पर उनके हक़ में (एक-एक) नेक अ़मल लिख लिया जाता है, बेशक अल्लाह

नेकों का अज्र अकारथ नहीं करता;

وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾

१२१- और जो कुछ छोटा या बड़ा (थोड़ा बहुत) खर्च उन्होंने किया, और जो घाटी उन्होंने तय की, यह सब उनके नाम लिख लिया जाता है ताकि अल्लाह उन्हें उनके कामों का अच्छे से अच्छा बदला दे।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾

१२२- और यह तो हो नहीं सकता कि ईमान वाले सब के सब निकल खड़े हों, फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ कि उनके हर गिरोह में से कुछ लोग निकलते, ताकि वे धर्म में समझ हासिल करते और (फिर) वे अपनी क़ौम को सचेत करते, जब वे उनकी ओर लौटते, ताकि वे (बुरे कामों से) बचें।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُم مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

१२३- ऐ ईमान वालो! उन काफ़िरों (इन्कार करने वालों) से जंग करो जो तुम्हारे आस- पास हैं, और चाहिए कि वे तुम में सख़्ती पाएँ, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُم مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

१२४- और जब भी कोई सूरः उतरती है तो उनमें से कुछ लोग कहते हैं, ''इसने तुममें से किसके ईमान को बढाया?'' तो जो लोग ईमान वाले हैं उसने उनके ईमान को बढ़ा दिया, और वे खुश होते हैं;

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿١٢٥﴾

१२५- और जिन लोगों के दिलों में रोग है, उनकी गन्दगी पर उसने एक और गन्दगी को बढ़ा दिया, और वे इस हालत में मरे कि काफ़िर थे।

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾

१२६- क्या यह देखते नहीं, कि हर साल यह एक या दो बार आज़माइश में डाले जाते हैं? फिर भी यह न तो तौबः करते हैं और न नसीहत हासिल करते हैं?

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرَاكُم مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ انصَرَفُوا ۚ صَرَفَ اللَّهُ

१२७- और जब कोई सूरः नाज़िल होती है तो एक-दूसरे की ओर देखने लगते हैं कि ''तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा है,''

قُلُوبَهُم بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ۝

फिर पलट जाते हैं; अल्लाह ने उनका दिल ही फेर दिया है, इस वजह से कि यह समझ से काम न लेने वाले लोग हैं।

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝

१२८- तुम्हारे पास एक रसूल तुम्हीं में से आ गये हैं; तुम्हारा दुखों में पड़ना उनके लिए नागवार गुज़रता है, वह तुम्हारे लिए (भलाई के) लालायित है; वह ईमान वालों के प्रति बड़े शफ़ीक़ (करूणामय), मेहरबान हैं।

فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

१२९- फिर अगर यह लोग मुँह मोड़ें तो कह दीजिए, ''मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं! उसी पर मैंने भरोसा किया और 'वही' अर्शेअ़ज़ीम (महान राज सिंहासन) का मालिक है।''



अनुवाद-सूरतु यूनुस

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के ७७३३ अक्षर,१८६१ शब्द, १०६ आयतें और ११ रूकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

१- अलिफ़्- लाम्- रा, यह ह़िकमत भरी (ज्ञान से परिपूर्ण) किताब की आयातें हैं।

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ①

२- क्या लोगों को इस बात पर आश्चर्य है कि 'हमने' उन्हीं में से एक आदमी के पास वह़्य (सन्देश) भेजी कि लोगों को सचेत कर दें और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दें कि उनके लिए उनके रब के पास सच्चा दर्जा है, काफ़िर कहते हैं, ''यह तो खुला हुआ जादूगर है।''

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ②

३- तुम्हारा रब 'वही' अल्लाह है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श (राज सिंहासन) पर विराजमान होकर व्यवस्था चला रहा है, उसकी इजाज़त के बिना कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं है, 'यही' अल्लाह तुम्हारा रब है तो उसी की इबादत करो, क्या तुम फिर भी नहीं समझते?

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ۗ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْ بَعْدِ اِذْنِهٖ ۗ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۗ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ③

४- 'उसी' की ओर तुम सब को लौटना है, यह अल्लाह का सच्चा वादा है; 'वही' तो ख़ल्क़त (सृष्टि) को पहली बार पैदा करता है; फिर वही उसको दोबारा पैदा करेगा, ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म (आ़माल) किये उन्हें इन्साफ़ के साथ बदला दे; और जिन्होंने इन्कार किया उनके लिए खौलता हुआ पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब है, उस इन्कार के बदले में जो वे करते थे।

اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ۗ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۗ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ④

هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّ قَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَ الْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝

५- 'वही' तो है जिसने सूरज को चमकता हुआ बनाया और चाँद को रोशन बनाया, और उसकी (घटने बढ़ने की) मंज़िलें तय कर दीं, ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम कर सको; अल्लाह ने यह सब कुछ बिना किसी उद्देश्य के नहीं पैदा किया, 'वह' अपनी निशानियों को उनके के लिए खोल-खोल कर बयान करता है, जो (कुछ) इल्म रखते हैं,

اِنَّ فِى اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝

६- रात और दिन के उलट-फेर में, और जो कुछ अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है उसमें डर रखने वालों के लिए निशानियाँ हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝

७- जिन लोगों को 'हम' से मुलाक़ात की उम्मीद ही नहीं, और वह दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी और उसी पर संतुष्ट हो गये, और जो 'हमारी' निशानियों से ग़ाफ़िल हैं;

اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝

८- यही लोग हैं जिनका ठिकाना आग है, उसके बदले में जो वे करते हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِىْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝

९- जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये, उनका रब उनके ईमान की वजह से उनको कामियाबी की मंज़िलों तक पहुँचाएगा, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी नेअ़मत के बाग़ों में,

دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

१०- वहाँ उनकी पुकार यह होगी कि पाक है 'तू' ऐ अल्लाह'' और वहाँ उनकी आपसी दुआ़ का शब्द 'सलाम' होगा, और उनकी पुकार का अन्त इस पर होगा कि ''प्रशन्सा अल्लाह ही के लिए है जो सारे संसार का रब है।''

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِىَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِىْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝

११- और अगर अल्लाह लोगों को अ़ज़ाब देने में जल्दी करता, जिस तरह भलाई के मामले में 'वह' जल्दी करता है, तो उनकी अवधि पूरी हो चुकी होती, 'हम' उन लोगों को, जो 'हम' से मिलने की उम्मीद नहीं रखते, छोड़ देते हैं कि अपनी सरकशी में भटकते रहें।

१२- और जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो 'हम' को पुकारता है लेटे भी, और बैठे भी और खड़े भी; फिर जब 'हम' उससे उसकी तकलीफ़ को दूर कर देते हैं तो वह ऐसा हो जाता है कि जैसे जो तकलीफ़ उसको पहुँची थी उसके लिए हमें पुकारा ही न था; इसी तरह हद से गुज़रने वालों को उनके आमाल सजा कर (शोभाएमान) दिखाए गये हैं।

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْبِهِ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَنْ لَمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرٍّ مَسَّهُ ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

१३- और तुमसे पहले हम कितनी ही नस्लों को हलाक कर चुके हैं, जबकि उन्होंने ज़ुल्म किया, और उनके रसूल उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए थे, और वे ऐसे थे ही नहीं कि ईमान ले आते, 'हम' इसी तरह बदला दिया करते हैं मुजरिमों को।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۙ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝

१४- फिर 'हमने' उनके बाद तुम्हें ज़मीन में ख़लीफा (उत्तराधिकारी) बनाया, ताकि 'हम' देखें कि तुम कैसे अ़मल करते हो?

ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۝

१५- और जब उनके सामने हमारी स्पष्ट आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो वे लोग जो 'हम से' मिलने की उम्मीद नहीं रखते वे कहते हैं, ''इसके सिवा कोई और कुर्आन ले आओ या इसमें कुछ परिवर्तन करो'' कह दीजिए, ''मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं अपनी ओर से इसमें कोई परिवर्तन करूँ, मैं तो बस उसका अनुयायी हूँ, जो वह्य (अर्थात अल्लाह का आदेश) मेरी ओर उतारी जाती है, अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मुझे एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है।''

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۙ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا ائْتِ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَٰذَا أَوْ بَدِّلْهُ ۚ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَاءِ نَفْسِي ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۖ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

१६- कह दीजिए, ''अगर अल्लाह चाहता तो मैं तुम्हें यह पढ़ कर न सुनाता, और न 'वह' तुम्हें इसके बारे में बताता फिर मैं तो तुम्हारे बीच इसके पहले भी एक उम्र गुज़ार चुका हूँ, क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?''

قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُمْ بِهِ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِنْ قَبْلِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

१७- फिर उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा! जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या उसकी आयतों को झुठलाए? बेशक मुजरिम कभी

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ ۝

कामियाब नहीं होंगे;

१८- और यह अल्लाह के सिवा (ऐसी चीज़ों की) इबादत करते हैं जो उनको न कुछ नुक़सान पहुँचा सकें और न उनका कुछ भला कर सकें और वे कहते हैं ''यह अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारिशी हैं।'' कह दीजिए, ''क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ों की ख़बर देते हो, जिसे वह नहीं जानता न आसमानों में और न ज़मीन में?'' पाक और बुलन्द है 'वह' इस शिर्क से, जो यह करते हैं।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا
يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۚ
قُلْ أَتُنَبِّئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي
الْأَرْضِ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾

१९- और इन्सान तो एक ही उम्मत (तरीक़े पर) थे, फिर उन्होंने मतभेद किया; और अगर तुम्हारे रब की ओर से पहले ही एक बात तय न हो गयी होती, तो उनके बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर दिया जाता, जिसमें वे मतभेद कर रहे हैं,

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا ۚ وَلَوْلَا
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ
يَخْتَلِفُونَ ﴿١٩﴾

२०- और कहते हैं, ''इस पर उनके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी, तो कह दीजिए, ''ग़ैब (परोक्ष की ख़बर) तो बस अल्लाह ही को है, तो इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।''

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ۖ
فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ
الْمُنْتَظِرِينَ ﴿٢٠﴾

२१- और जब 'हम' लोगों को तकलीफ़ के बाद रह़मत (दयालुता) का मज़ा चखाते हैं तो वे हमारी निशानियों के बारे में चाल बाज़ियाँ करने लगते हैं; कह दीजिए, ''अल्लाह अपनी चाल (तद्‌बीर या उपाय) में ज़्यादा तेज़ है'' हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनको लिख रहे हैं, जो चालबाज़ियाँ तुम कर रहे हो।

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ
إِذَا لَهُمْ مَكْرٌ فِي آيَاتِنَا ۚ قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ
إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ﴿٢١﴾

२२- 'वही' तो है जो तुम्हें जल और थल में चलाता है, यहाँ तक कि जब तुम नौका में (सवार) होते हो, और वह लोगों को अच्छी अनुकूल हवा के सहारे लेकर चलती हैं और वे उससे खुश होते हैं तो अचानक! तेज़ हवा का झोंका आता है, और हर ओर से मौजें उठती हैं और वे समझ लेते हैं कि लहरों में घिर गये, तो उस वक़्त वे अल्लाह ही पर केवल आस्था रख कर पुकारने लगते हैं, ''अगर 'तू' ने इस (मुसीबत) से हमें बचा लिया, तो हम ज़रूर तेरे शुक्रगुज़ार (आभारी) होंगे''

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا
كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَ
فَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ
الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا
اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ
لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٢٢﴾

२३- फिर जब वह उनको बचा लेता है, तो क्या देखते हैं कि वे नाहक़ ज़मीन में सरकशी करने लगते हैं; लोगो! तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अपने ही ख़िलाफ़ है, तुम दुनिया की ज़िन्दगी का फ़ायदा उठा लो; फिर तुमको 'हमारी' ही ओर वापस आना है, तो तुम्हें 'हम' बता देंगे, जो कुछ तुम किया करते थे।

فَلَمَّآ أَنْجٰىهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ
يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

२४- दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल तो बस ऐसी है, जैसे 'हमने' आसमान से पानी बरसाया, तो उससे ज़मीन पर उगने वाली चीज़ें, (वनस्पति आदि) जिनको इन्सान और चौपाए खाते हैं- मिल कर निकाला यहाँ तक कि जब ज़मीन ने अपना श्रंगार कर लिया और बन संवर गयी, और उसके मालिक समझने लगे कि उन्हें उस पर पूरा कब्ज़ा हो गया है; तो अचानक रात या दिन के समय 'हमारा' हुक्म आ गया, फिर 'हमने' उसे कटी फ़सल की तरह कर दिया, जैसे कल वहाँ कुछ था ही नहीं; इसी तरह 'हम' अपनी निशानियाँ खोल-खोल कर बयान करते हैं (उन लोगों के लिए) जो सोच-विचार से काम लेने वाले हैं।

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ
السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ
النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ۭ حَتّٰۤى إِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ
زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ
عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا
حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

२५- और अल्लाह सलामती के घर की ओर बुलाता है, और जिसको चाहता है सीधी राह पर चलाता है;

وَاللّٰهُ يَدْعُوْۤا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ۭ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

२६- जो लोग नेकी करते रहे उनके लिए अच्छा बदला है, और उसके अलावा और भी। और उनके चेहरों पर न तो कलौंस (स्याही) छाएगी और न ज़िल्लत, यही जन्नत वाले हैं कि वे उसमें हमेशा रहेंगे।

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ۭ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ
قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ۭ اُولٰۤئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ۝

२७- और जिन लोगों ने बुराइयाँ कमाईं, तो बुराई का बदला वैसा ही मिलेगा, जैसी बुराई की होगी, और उन पर रूस्वाई छाई हुई होगी, उनको अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा उनके चेहरों पर ऐसा अन्धकार छाया होगा, जैसे अंधेरी रात के टुकड़ों से उन्हें ढाँक दिया गया हो; यही आग वाले हैं, कि उसमें उन्हें हमेशा रहना है।

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ ۢ بِمِثْلِهَا ۙ وَ
تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ
اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ۭ اُولٰۤئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

२८- और जिस दिन 'हम' उन सब को इकट्ठा करेंगे, फिर

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ

أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنتُمْ وَشُرَكَاؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ ۖ وَقَالَ شُرَكَاؤُهُم مَّا كُنتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ﴿٢٨﴾

उन लोगों से, जिन्होंने शिर्क किया होगा, कहेंगे, ''अपनी जगह ठहरे रहो, तुम भी और तुम्हारे साझीदार भी।'' फिर 'हम' उनके बीच अलगाव पैदा कर देंगे, और उनके ज़रिए ठहराए गये साझीदार कहेंगे, ''तुम हमारी तो इबादत करते नहीं थे।''

فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ ﴿٢٩﴾

२९- अल्लाह हमारे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है, कि हम तुम्हारी इबादत से बिल्कुल बेख़बर थे।

هُنَالِكَ تَبْلُو كُلُّ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ ۚ وَرُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۖ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٣٠﴾

३०- वहाँ हर व्यक्ति अपने पहले के किये हुए कर्मों को जाँच लेगा, और वे अपने सच्चे मालिक के सामने लौटाए जाएँगे, और जो कुछ उन्होंने गढ़ रखा था, सब गुम हो जाएगा।

قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَن يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَن يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ ۚ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣١﴾

३१- कह दीजिए, ''तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी कौन देता है? या यह कान और आखें किसके अधिकार में हैं और कौन जानदार को निकालता है बेजान से, और बेजान को निकालता है जानदार से, और कौन यह सारा इन्तिज़ाम चला रहा है?'' इस पर वे बोल पड़ेंगे ''अल्लाह!'' तो कहिए फिर तुम क्यों नहीं डरते?''

فَذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۖ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ ۖ فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ﴿٣٢﴾

३२- तो 'यही' अल्लाह तो है तुम्हारा हक़ीक़ी (वास्तविक) रब, फिर सच्चाई के खुल जाने के बाद (दूसरी राह चलना) गुमराही के सिवा और क्या रह जाता है? तो तुम किधर (बहके) फिरे जाते हो।

كَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾

३३- इसी तरह आप के रब की बात सरकशी करने वालों के हक़ में पूरी हो चुकी है कि यह ईमान न लाएँगे।

قُلْ هَلْ مِن شُرَكَائِكُم مَّن يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ قُلِ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٣٤﴾

३४- कह दीजिए ''क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में कोई ऐसा भी है जो पहली बार मख़्लूक़ (सृष्टि) को पैदा करेगा, फिर वह दोबारा भी पैदा करे?'' कह दीजिए, ''अल्लाह ही पहली बार पैदा करता है, फिर 'वही' दोबारा भी पैदा करेगा; तो तुम कहाँ भटके चले जा रहे हो?''

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿۳۵﴾

३५- कह दीजिए, ''क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में कोई ऐसा है जो सच्ची राह दिखा सके?'' कह दीजिए, ''अल्लाह ही ह़क़ का रास्ता दिखाता है तो फिर जो ह़क़ का रास्ता दिखाए, वह इस लायक़ है कि उसकी पैरवी (अनुसरण) की जाए या वह जो खुद ही राह नहीं पा सकता जब तक दूसरा उसको राह न दिखलाए? तो तुम को क्या हो गया है तुम कैसे फ़ैसला कर रहे हो?''

وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۳۶﴾

३६- और उनमें से अक्सर तो बस अटकल पर चलते हैं, बेशक ह़क़ के सामने कुछ भी काम नहीं आ सकता, बेशक वे जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उसको भली- भाँति जानता है।

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۷﴾

३७- और यह क़ुर्आन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा और कोई अपनी ओर से बना लाए, बल्कि यह तो तस्दीक़ करने वाला है उस (कलाम) की जो इसके पहले से है और उन्हीं किताबों का विस्तार है, जिसमें कोई सन्देह नहीं, यह सारे संसार के 'रब' की ओर से है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۸﴾

३८- क्या ये लोग कहते हैं ''उस (रसूल) ने इसको अपनी ओर से गढ़ लिया है?'' कह दीजिए, ''अगर सच्चे हो तो, तुम एक ही सूरः ऐसी बना लाओ और अल्लाह के सिवा बुला लो, जिसे बुला सकते हो। अगर तुम सच्चे हो।''

بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۹﴾

३९- बल्कि बात यह है कि उस चीज़ को झुठलाने लगे जिसके इल्म पर ये हावी न हो सके, और अभी इन पर सच्चाई खुलने का मौक़ा ही नहीं आया; इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था, जो इनसे पहले थे, फिर देख लो! उन ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿۴۰﴾

४०- और इनमें से कुछ तो ऐसे हैं कि इस (किताब) पर ईमान ले आते हैं, और इनमें कुछ ऐसे भी हैं, कि ईमान नहीं लाते, और आप का 'रब' फ़सादियों को खूब जानता है।

وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ
بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

४१- और अगर यह आप को झुठलाएँ, तो कह दीजिए, ''मेरा किया मेरे लिए और तुम्हारा किया तुम्हारे लिए; तुम मेरे काम के ज़िम्मेदार नहीं और मैं तुम्हारे काम का ज़िम्मेदार नहीं हूँ।''

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ۗ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ
وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ۝

४२- और इनमें कुछ ऐसे हैं जो आप की ओर कान लगाते हैं, तो क्या आप बहरों को सुना देंगे, जबकि वह कुछ न समझते हों?

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ۗ اَفَاَنْتَ تَهْدِى الْعُمْيَ
وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ۝

४३- और उनमें से कुछ ऐसे हैं, जो आप की ओर देख रहे हैं, तो क्या आप अन्धों को रास्ता दिखा सकेंगे, चाहे वे कुछ भी न देखते हों?

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝

४४- अल्लाह तो लोगों पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता, लेकिन लोग खुद ही अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ
النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ۗ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِلِقَاۤءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝

४५- और जिस दिन 'वह' उनको इकट्ठा करेगा तो ऐसा लगेगा जैसे वे (दुनिया में) दिन की एक घड़ी से ज़्यादा भर ठहरे ही नहीं थे, आपस में एक-दूसरे को पहचानेंगे, वे लोग घाटे में पड़ गये, जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और रास्ता न पा सके।

وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ
فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا
يَفْعَلُوْنَ ۝

४६- और अगर 'हम' आप को कुछ दिखा भी दें जिसका 'हम' उनसे वादा कर रहे हैं, या हम आप को वफ़ात (मौत) दे दें, उन्हें तो हमारी ही ओर लौटकर आना है, फिर जो कुछ वे कर रहे हैं उस पर अल्लाह गवाह है।

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَاۤءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ
بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝

४७- और हर उम्मत (समुदाय) के लिए एक रसूल (भेजा) है, फिर जब उनके पास उनका रसूल आ जाता है तो उनके बीच इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है, और उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया जाता।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝

४८- और ये कहते हैं, ''अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा (अज़ाब का) कब पूरा होगा?''

४९- कह दीजिए, ‘‘मेरा अपना फ़ायदा व नुक़सान भी मेरे हाथ में नहीं सिवाय इसके कि जो अल्लाह चाहता है, हर उम्मत (समुदाय) के लिए एक समय (निर्धारित) है जब उनका समय आ जाता है तो वे एक घड़ी भी देर नहीं कर सकते और न जल्दी कर सकते हैं।

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ
اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا
يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝

५०- कह दीजिए, ‘‘यह तो बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब रात को या दिन को आ जाए, तो फिर मुजरिम किस बात की जल्दी करेंगे;

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا مَّا
ذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝

५१- क्या फिर जब वह आ पड़ेगी, तब ही उसका यक़ीन करोगे? क्या अब! इसी के लिए तो जल्दी मचाया करते थे।

اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ
بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝

५२- फिर जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, उनसे कहा जाएगा, ‘‘हमेशा-हमेश के लिए अ़ज़ाब का मज़ा चखो जो कुछ तुम किया करते थे तुम उन्हीं (आमाल) का बदला पाओगे।

ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ
تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۝

५३- और आपसे पूछते हैं, ‘‘क्या यह (अ़ज़ाब) सच है?’’ कह दीजिए, ‘‘मेरे रब की क़सम! वह बिल्कुल सच है और तुम क़ाबू से बाहर निकल जाने वाले नहीं।’’

وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِيْ وَرَبِّيْٓ اِنَّهٗ
لَحَقٌّ ؕ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝

५४- और अगर हर (नाफ़रमान) व्यक्ति के पास वह सब कुछ हो, जो धरती में है, तो वह फ़िदया (अर्थदण्ड) के रूप में उसे दे डाले, (लेकिन उससे छुटकारा नहीं) जब वे अ़ज़ाब को देखेंगे नदामत को छिपाएँगे, और उनके बीच इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म न होगा।

وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ
بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَ
قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝

५५- याद रखो जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब अल्लाह ही का है, और याद रखो कि अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन अकसर लोग नहीं जानते;

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ وَعْدَ
اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

५६- ‘वही’ जिलाता और मारता है और ‘उसी’ की ओर तुम ‘सब’ को लौट कर जाना है।

هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

५७- ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे ‘रब’ की ओर से नसीहत (उपदेश), और दिलों के बीमारियों की शिफ़ा और ईमान वालों के लिए हिदायत और रह्मत आ चुकी है।

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ۗ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝

५८- कह दीजिए, ‘‘यह (क़ुर्आन) अल्लाह की मेहरबानी और उसकी रह्मत से नाज़िल हुआ है, और लोगों को चाहिए कि इसको पाकर खुश हों, यह उस से कहीं बेहतर है जिसको यह जमा करने में लगे हैं,’’

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ۗ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝

५६- कह दीजिए ‘‘ क्या तुम लोगों ने यह भी देखा है कि जो रोज़ी अल्लाह ने तुम्हारे लिए उतारी है उसमें से तुमने खुद ही (कुछ को) ह़राम और (कुछ को) ह़लाल ठहरा लिया है?’’ कह दीजिए, ‘‘क्या अल्लाह ने तुम्हें इसकी इजाज़त दी है या तुम अल्लाह पर झूठ गढ़ कर थोप रहे हो?’’

وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝

६०- और जो लोग झूठ गढ़ कर उसे अल्लाह पर थोपते हैं वे क़ियामत के दिन के विषय में क्या समझ रखे हैं? बेशक अल्लाह तो लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है लेकिन उनमें अक्सर लोग नाशुक्रे हैं।

وَمَا تَكُوْنُ فِىْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ۗ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝

६१- और तुम जिस ह़ाल में भी होते हो, और क़ुर्आन में से जो कुछ भी पढ़ते हो, और तुम लोग जो काम भी करते हो, ‘हम’ तुम्हें देख रहे होते हैं, जब तुम उसमें लगे रहते हो, और तुम्हारे रब से ज़र्रा (कण) भर भी कोई चीज़ छिपी नहीं है, न धरती में, और न आसमान में; और न उससे छोटी और न बड़ी कोई चीज़ ऐसी है, जो एक स्पष्ट किताब में मौजूद न हो।

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

६२- सुनो, अल्लाह के दोस्तों को न तो कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे;

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝

६३- जो लोग ईमान लाए और परहेज़गारी अपनाते रहे।;

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ۗ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

६४- उनके लिए दुनिया की ज़िन्दगी में खुशख़बरी है, और आख़िरत में भी, अल्लाह की बातें बदला नहीं करतीं- यही बड़ी कामियाबी है।

وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ
هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

६५- और उन लोगों (काफ़िरों) की बातें आप को दुखी न करें, इज़्ज़त (प्रभुत्व) सब अल्लाह ही के लिए है, 'वह' सुनता, जानता है।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ
وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
شُرَكَاءَ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا
يَخْرُصُونَ ۝

६६- जान लो! कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब अल्लाह ही का है और जो अल्लाह को छोड़ कर दूसरे साझीदारों को पुकारते हैं, वे किसी के पीछे नहीं चलते वे तो केवल ज़न्न (अटकल) पर चलते हैं और केवल अटकलें दौड़ाते हैं।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَ
النَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ۝

६७- 'वही' तो है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो, और दिन को प्रकाशमान बनाया? बेशक इनमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं।

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَانَهُ ۖ هُوَ الْغَنِيُّ ۖ لَهُ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ
سُلْطَانٍ بِهَٰذَا ۚ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا
تَعْلَمُونَ ۝

६८- कहते हैं, ''अल्लाह ने बेटा बना रखा है'' उसकी ज़ात पाक और बेनियाज़ (निस्पृह) है, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब 'उसी' का है तुम्हारे पास इसकी कोई दलील नहीं, क्या तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बातें कहते हो, जिसकी तुम्हें जानकारी नहीं?

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا
يُفْلِحُونَ ۝

६९- कह दीजिए, ''जो लोग अल्लाह पर झूठी बातें गढ़ते हैं वे कामियाब नहीं होते।''

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ
الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝

७०- यह तो दुनिया का सुख है फिर 'हमारी' ही ओर उन्हें लौट कर आना है, फिर जो इन्कार वे किया करते थे उसके बदले में 'हम' उन्हें सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखाएँगे।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ ۘ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِنْ كَانَ
كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذْكِيرِي بِآيَاتِ
اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَ
شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ
اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُونِ ۝

७१- और उनको 'नूह़' का ह़ाल पढ़ कर सुनाइए, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा था, ऐ मेरी क़ौम! अगर तुमको मेरा रहना और अल्लाह की आयतें पढ़कर समझाना नागवार गुज़रता हो तो मेरा भरोसा तो अल्लाह पर है; तुम अपने साझीदारों के साथ मिलकर एक काम तय कर लो और वह तुम्हारी तमाम जमाअ़त से भी छिपा न रहे फिर मेरे साथ जो कुछ करना है कर डालो और मुझे मोह़लत न दो।''

فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

७२- तो अगर तुम मुँह फेरोगे, तो मैंने तुमसे कोई बदला नहीं मांगा, मेरा बदला तो बस अल्लाह ही के ज़िम्मे है, और मुझे हुक्म हुआ है, कि मैं मुस्लिम (फरमाँबरदार) रहूँ।

فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلَائِفَ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ ۝

७३- तो उन लोगों ने उसे झुठला दिया, फिर 'हमने' उन्हें और उन लोगों को, जो उनके साथ नौका में थे, सब को बचा लिया और उन्हें ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया; और उन लोगों को डुबो दिया जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया था, तो (देख लो!) जिन्हें सचेत किया गया था उनका क्या अंजाम हुआ?

ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِن قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ۝

७४- फिर उसके बाद कितने ही रसूल उनकी क़ौम की ओर भेजे, और वे उनके पास स्पष्ट निशानियाँ लेकर आए; मगर वे लोग ऐसे न थे कि जिसको पहले झुठला चुके हों उसे मानते, इसी तरह 'हम' ज़्यादती करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِم مُّوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۝

७५-फिर उनके बाद 'हमने' मूसा और हारून को अपनी निशानियाँ दे कर फिरऔन और उसके सरदारों की ओर भेजा तो उन्होंने घमंड किया और वे थे ही मुजरिम लोग,

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا إِنَّ هَٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ۝

७६- फिर जब उनके पास हमारी ओर से सच बात पहुँची, तो वह कहने लगे कि यह तो खुला जादू है।

قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ ۖ أَسِحْرٌ هَٰذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُونَ ۝

७७- मूसा ने कहा, ''क्या तुम ह़क़ के बारे में ऐसा कहते हो जबकि यह तुम्हारे सामने आ गया है, क्या यह कोई जादू है? और जादूगर तो कामियाब नहीं हुआ करते।''

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَتَكُونَ لَكُمَا الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِينَ ۝

७८- उन्होंने कहा, ''क्या 'तू' हमारे पास इसलिए आया है कि हमें उस चीज़ से हटा दे, जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है, और धरती में तुम दोनों की बड़ाई स्थापित हो जाए, और हम तो तुम पर ईमान लाने वाले नहीं।''

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ ۝

७९- और फ़िरऔन ने कहा, ''लाओ मेरे पास हर माहिर जादूगर को।''

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ
مُّلْقُوْنَ ۝

८०- तो जब जादूगर आ गये, तो मूसा ने कहा, ''जो कुछ तुम्हें डालना है डालो।''

فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ
السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ
عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝

८१- जब उन्होंने (रस्सियाँ) डाल दिया, तो मूसा बोले, ''तुम जो कुछ लाए हो जादू है, अल्लाह अभी उसे मलया मेट किये देता है, अल्लाह बिगाड़ पैदा करने वालों के काम को नहीं बनाता;

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝

८२- और अल्लाह अपने हुक्म से सच को सच ही कर देगा, और चाहे गुनहगार बुरा ही मानें।''

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ
مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ
لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝

८३- तो 'मूसा' की बात उसकी क़ौम के लोगों में से बस कुछ ही लोगों ने मानी 'फ़िरऔ़न' और उनके अपने सरदारों के भय से कि कहीं उन्हें किसी फ़ित्नों में न डाल दे; और फ़िरऔ़न था भी धरती पर बहुत सर उठाए हुए, और वह ह़द से आगे बढ़ गया था।

وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ
تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ۝

८४- और मूसा ने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो, तो 'उस' पर भरोसा करो अगर तुम फ़रमाँबरदार हो।''

فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً
لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

८५- तो बोले, 'हमने अल्लाह पर भरोसा किया, हमारे रब 'तू' हमें ज़ालिमों के हाथों आज़माइश में न डाल;

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

८६- और अपनी रह़मत से हमें काफ़िरों की क़ौम से छुटकारा दिला।''

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ
لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ
قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

८७- और 'हमने' मूसा और उसके भाई की ओर वह़्य की कि ''तुम दोनों अपने लोगों के लिए मिस्र में घर बनाओ, और अपने घरों को क़िब्ला ठहराओ, और नमाज़ क़ायम करो, और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दो।''

وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ
زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا
لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى
اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا
حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝

८८- और मूसा ने कहा, ''हमारे रब 'तूने' फ़िरऔ़न और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िन्दगी में साज़ व सामान (वैभव प्रतिष्ठा) एवं धन-दौलत प्रदान किया, ऐ हमारे रब! यह इसलिए कि तेरी राह से भटकाएँ, ऐ हमारे रब! इनके माल को नष्ट कर दे और इनके दिलों को कठोर कर कि वे ईमान न लाएँ, यहां तक कि दर्दनाक अ़ज़ाब देख लें।''

قال قد اجيبت دعوتكما فاستقيما ولا تتبعان سبيل الذين لا يعلمون ﴿٨٩﴾

८९- फ़रमाया, ''तुम दोनों की दुआ़ क़ुबूल हो गयी, तो तुम दोनों जमे रहना और उन की राह पर हरगिज़ न चलना, जो बे अक़्ल है।''

وجاوزنا ببني اسراءيل البحر فاتبعهم فرعون وجنوده بغيا وعدوا حتى اذا ادركه الغرق قال امنت انه لا اله الا الذي امنت به بنوا اسراءيل وانا من المسلمين ﴿٩٠﴾

९०- और 'हमने' बनी इस्राईल को समुद्र पार करा दिया, तो फ़िरऔ़न और उसकी सेनाओं ने सरकशी और ज़्यादती के साथ उनका पीछा किया, यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा तो पुकार उठा, ''मैं ईमान लाता हूँ, कि उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं'' जिस पर बनी इस्राईल ईमान ले आए हैं और मैं मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) में हूँ।

آلئن وقد عصيت قبل وكنت من المفسدين ﴿٩١﴾

९१- ''क्या अब? हालाँकि इससे पहले तू तो सरकशी ही करता रहा और फ़सादियों में शामिल रहा,

فاليوم ننجيك ببدنك لتكون لمن خلفك اية وان كثيرا من الناس عن ايتنا لغفلون ﴿٩٢﴾

९२- तो आज हम तेरे शरीर को बचा लेंगे, ताकि तू बाद वालों के लिए निशानी हो जाए, और बहुत से लोग तो 'हमारी' निशानियों से ग़ाफ़िल हैं।''

ولقد بوانا بني اسراءيل مبوا صدق ورزقنهم من الطيبت فما اختلفوا حتى جاءهم العلم ان ربك يقضي بينهم يوم القيمة فيما كانوا فيه يختلفون ﴿٩٣﴾

९३- और 'हमने' बनी इस्राईल को बहुत अच्छा ठिकाना दिया और पाक चीज़ों का रिज़्क़ अ़ता किया, फिर उन्होंने मतभेद किया यहाँ तक कि उनके पास इल्म आ चुका; बेशक आप का रब क़ियामत के दिन उनके बीच, उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे मतभेद करते रहे।

فان كنت في شك مما انزلنا اليك فسل الذين يقرءون الكتب من قبلك لقد جاءك الحق من ربك فلا تكونن من الممترين ﴿٩٤﴾

९४- तो अगर तुम्हें उस चीज़ के बारे में कोई सन्देह हो, जो 'हमने' तुम्हारी ओर नाज़िल की हैं, तो उनसे पूछ लो, जो तुमसे पहले से किताबें पढ़ते हैं, तुम्हारे पास तो तुम्हारे रब की ओर से हक़ (सत्य) आ चुका है, तो तुम हरगिज़ सन्देह करने वालों में न होना।

ولا تكونن من الذين كذبوا بايت الله فتكون من الخسرين ﴿٩٥﴾

९५- और न उन लोगों में शामिल होना जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, वरना तुम घाटे में पड़ कर रहोगे।

ان الذين حقت عليهم كلمت ربك لا يؤمنون ﴿٩٦﴾

९६- जिन लोगों के बारे में तुम्हारे रब की बात सच्ची होकर रही, वे ईमान नहीं लाएँगे;

وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ
الْاَلِيْمَ ۝

९७- और चाहे सारी निशानियाँ उनके पास आ जाएँ (ईमान न लाएँगे); यहाँ तक कि वे दर्दनाक अ़ज़ाब देख लें।

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا
قَوْمَ يُوْنُسَ ۭ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ
الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۝

९८- तो ऐसी कोई बस्ती क्यों न हुई, कि ईमान लाती तो उसका ईमान लाना उसके लिए फ़ायदा पहुँचाता? सिवाय यूनुस की क़ौम के; जब ईमान लाई तो 'हमने' उन पर से रूसवाई के अ़ज़ाब को दुनियावी ज़िन्दगी में दूर कर दिया, और एक मुद्दत (अवधि) तक फ़ायदा उठाने का मौक़ा दिया।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ
جَمِيْعًا ۭ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا
مُؤْمِنِيْنَ ۝

९९- और अगर तुम्हारा रब चाहता तो धरती के ऊपर जितने लोग हैं सब के सब ईमान ले आते, तो क्या तुम लोगों पर ज़बर्दस्ती करना चाहते हो कि वे ईमान वाले हो जाएँ?

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ
وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝

१००- और किसी व्यक्ति के लिए यह सम्भव नहीं, कि अल्लाह की इजाज़त के बिना ईमान ले आए, और उन लोगों पर गन्दगी डाल देता है जो अक़्ल से काम नहीं लेते।

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَا
تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝

१०१- कह दीजिए, '' देखो! क्या-क्या चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं? और निशानियाँ, और चेतावनियाँ उनके कुछ काम नहीं आतीं, जो ईमान न लाना चाहें।

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ
الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝

१०२- तो क्या वैसे ही दिनों के इन्तिज़ार में हैं, जैसे कि इनसे पहले के लोगों पर आ चुके हैं, कह दीजिए, ''तुम भी इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।''

ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

१०३- फिर 'हम' अपने रसूलों को बचा लेते हैं, और जो ईमान ले आए; इसी तरह 'हम पर यह हक़ है कि ईमान वालों को बचा लें।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ
فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ښ وَاُمِرْتُ
اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

१०४- कह दीजिए, ''ऐ लोगो, ''अगर तुम मेरे धर्म के सम्बन्ध में किसी सन्देह में हो तो (जान लो कि) मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, बल्कि मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ, जो तुम्हें मौत देता है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं ईमान लाने वालों में से हो जाऊँ;

وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝

१०५- और यह कि हर ओर से यकसू (एकाग्र) हो कर, अपना रूख इस धर्म की ओर कर लो, और हरगिज़ मुश्रिकों में न होना;

وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۖ فَإِن فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٦﴾

१०६- और अल्लाह के सिवा किसी और को न पुकारना जो न तुम्हें फायदा पहुँचा सकते हैं और न नुक़सान, अगर तुम ऐसा करोगे तो ज़ालिमों में से हो जाओगे;

وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ ۚ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٧﴾

१०७- और अगर अल्लाह तुम्हें किसी मुसीबत में डाल दे, तो उसके सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं, और अगर 'वह' तुम्हारे लिए किसी भलाई का इरादा कर ले तो कोई 'उसके' फज़्ल को रोकने वाला नहीं, वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है (फ़ायदा) पहुँचाता है, और 'वह' माफ़ करने वाला, रहम वाला है।"

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ ﴿١٠٨﴾

१०८- कह दीजिए, "ऐ लोगो! तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे पास हक़ आ गया है, तो अब जो कोई राह पर आएगा, तो वह अपने लिए ही आएगा, और जो कोई गुमराह (पथभ्रष्ट) होगा तो वह अपने ही लिए गुमराह होगा, और मैं तुम्हारा वकील (ज़िम्मेदार) नहीं हूँ।"

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿١٠٩﴾

१०९- और जो कुछ तुम पर वह्य (सन्देश) की जा रही है उसकी पैरवी करो और सब्र से काम लो! यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे और 'वह' सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है।



अनुवाद-सूरतुहूदिन

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के ७६२४ अक्षर,१६३६ शब्द,१११ आयतें और १२ रूकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

१- अलिफ़्- लाम्- रा, यह वह किताब है जिसकी आयतें सुदृढ़ (पक्की) हैं, फिर विस्तार पूर्वक बयान हुई हैं,ह़कीम व ख़बीर अल्लाह की ओर से,

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۙ

२- यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, मैं तो उसकी ओर से तुम्हें सचेत करने वाला और खुश-ख़बरी देने वाला हूँ।

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۙ

३- और यह कि ''अपने रब से तौबः करो और 'उसकी' ओर पलट आओ, 'वह' तुम को एक निश्चित अवधि तक अच्छी जीवन सामग्री देगा, और बढ़-चढ़ कर अ़मल करने वालों पर अपना अधिक फ़ज़्ल (अनुग्रह) करेगा; किन्तु अगर तुम मुंह फेरते हो, तो मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है।

وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ

४- तुम्हें अल्लाह ही की ओर पलटना है, और 'उसे' हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) है।''

اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

५- सुनो! ये अपने सीनों को दोहरा करते हैं, ताकि उससे छिपें, याद रखो! जब यह अपने कपड़े से स्वयं को ढ़ाँप लेते हैं, 'वह' जानता है, वह भी जो वे छिपाते हैं और उसको भी जो वे ज़ाहिर करते हैं, बेशक 'वह' तो सीनों के भेदों को भी खूब जानता है।

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ

पारा नं०-१२

६- और ज़मीन पर कोई चलने-फिरने वाला (जानदार) ऐसा नहीं, जिसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो, 'वह' उसके

* وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ

ठहरने की जगह को भी जानता है और उस जगह को भी जहाँ वह सौंप दिया जाता है, यह सब कुछ एक स्पष्ट किताब में (लिखा) है।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ
اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ
اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ
بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ
اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

७- और 'वही' तो है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया, और उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था; ताकि तुम्हें आज़माए; कि कौन कर्म में बेहतर है? और अगर तुम कहते हो कि ''मरने के बाद तुम लोग उठाए जाओगे,'' तो काफ़िर बोल उठते हैं, ''यह तो खुली जादूगरी है।''

وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ
لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ
مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

८- और अगर 'हम' एक निश्चित अवधि तक अ़ज़ाब को पीछे कर देते हैं, तो वे कहने लगते हैं, ''आख़िर क्या चीज़ है जो इसे रोक रही है?'' सुन लो! जिस दिन वह उन पर आ पड़ेगा तो फिर टाला न जा सकेगा, और जिस अ़ज़ाब का वे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं वही उनको आ घेरेगा।

وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ
اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ ۝

९- और अगर 'हम' इन्सान को अपनी रह़मत का मज़ा चखा कर फिर उससे उसको छीन लेते हैं, तो वह निराश, नाशुक्रा हो जाता है।

وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ
ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۝

१०- और अगर 'हम' इसके बाद कि उसे तकलीफ़ पहुँची हो, उसे राहत का मज़ा चखाते हैं; तो कहता है, ''मेरे सब दुःख दूर हो गये,'' बेशक वह फूला नहीं समाता डींगे मारने लगता है।

اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ
لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝

११- मगर जिन्होंने सब्र से काम लिया, और अच्छे अ़मल किये 'वही' हैं; जिनके लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) है और बहुत बड़ा बदला।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ
صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ
مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝

१२- तो शायद तुम उसमें से कुछ छोड़ बैठोगे! जो तुम्हारी ओर वह़्य के रूप में भेजी जा रही है, और तुम इस बात पर तंग दिल हो रहे हो कि वे कहते हैं, ''उस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतरा, या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया?'' आप तो केवल सचेत करने वाले हैं, और हर चीज़ अल्लाह ही के ह़वाले है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرَيَاتٍ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٣﴾

१३- क्या यह कहते हैं, उन्होंने इसको खुद गढ़ लिया है? कह दीजिए, ''अच्छा, अगर तुम सच्चे हो तो इस (क़ुर्आन) जैसी गढ़ी हुई दस सूरतें ले आओ और अल्लाह के अ़लावा जिस किसी को बुला सकते हो बुला लो।''

فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا أُنزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَن لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٤﴾

१४- तो अगर वे तुम्हारी बात न मानें, तो जान लो! यह अल्लाह के इल्म ही के साथ उतारा गया है और यह कि 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद नहीं, तो क्या अब तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) होते हो?

مَن كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١٥﴾

१५- जो (व्यक्ति) दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी शोभा का इच्छुक हो, तो उनके अ़मलों (कर्मों) का पूरा-पूरा बदला 'हम' यहीं दे देते हैं, और इसमें उनका कोई ह़क़ नहीं मारा जाता;

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

१६- यही वे लोग हैं जिनके लिए आग के सिवा और कुछ भी नहीं, उनका किया कराया सब बेकार हो जाएगा और जो कुछ अ़मल वे करते रहे सब बातिल (व्यर्थ) ठहरेंगे।

أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٧﴾

१७- क्या वह व्यक्ति जो अपने रब की ओर से रौशन दलील रखता हो और फिर एक गवाह भी उसकी ओर से हो-और इससे पहले मूसा की किताब भी एक मार्ग-दर्शक और रह़मत के रूप में मौजूद हो-ऐसे ही लोग तो उस पर ईमान लाते हैं और जो कोई और गिरोहों में से इसका इन्कार करेगा, तो उसका ठिकाना आग है; अतः तुम्हें इसके बारे में सन्देह न हो, यह तुम्हारे रब की ओर से ह़क़ है मगर अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٨﴾

१८- और उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा! जो अल्लाह पर थोप कर झूठ गढ़े, ऐसे लोग अपने रब के पास पेश होंगे, और गवाही देने वाले कहेंगे, ''यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ गढ़ा था,'' सुन लो! ऐसे ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है।

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿١٩﴾

१९- जो अल्लाह की राह से रोकते और उसमें टेढ़ पैदा करना चाहते हैं, और वह आख़िरत का भी इन्कार करते हैं,

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ۘ يُضَاعَفُ

२०- ये लोग धरती में क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते, और न अल्लाह के सिवा उनका कोई हिमायती है! उनको दोगुना

لَهُمُ الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ۝

अ़ज़ाब दिया जाएगा, क्योंकि ये न तो सुनना गवारा कर सकते थे और न ही देखना;

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

२१- यही हैं जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला और जो कुछ वे गढ़ा करते थे, उनसे ग़ायब हो गया।

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ۝

२२- बेशक वही आख़िरत में सबसे बढ़कर घाटे में रहेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

२३- रहे वे लोग जो ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे काम किये, और अपने रब की ओर झुके, वही जन्नत वाले हैं, उसमें वे हमेशा रहेंगे।

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝

२४- दोनों फ़िर्क़ों (पक्षों) की मिसाल ऐसी है जैसे एक अन्धा, एक बहरा हो, और एक देखने और सुनने वाला; क्या दोनों का ह़ाल एक जैसा हो सकता है, फिर तुम लोग समझते क्यों नहीं?

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

२५- और 'हमने' 'नूह' को उनकी क़ौम की ओर भेजा (उन्होंने कहा), ''मैं तुम्हें साफ़-साफ़ चेतावनी देने वाला हूँ;

أَن لَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ۝

२६- यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, मुझे तुम्हारे बारे में एक दर्दनाक अ़ज़ाब के दिन का डर है।''

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ۝

२७- तो उनकी क़ौम के सरदारों ने, जो काफ़िर थे, कहा, ''तुम हमारे ही जैसे एक आदमी हो और यह भी देखते हैं कि बस कुछ ऐसे लोग ही तुम्हारे अनुयायी हैं जो हमारे यहां के नीच हैं, वह भी ज़ाहिर राय से, और हम अपने मुक़ाबले में तुम्हारे अन्दर कोई विशेषता नहीं पाते, बल्कि हम तो समझते हैं कि तुम झूठे हो।''

قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَانِي رَحْمَةً مِّنْ عِندِهِ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا وَأَنتُمْ لَهَا كَارِهُونَ ۝

२८- उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम यह तो बताओ, कि अगर मैं अपने रब की ओर से एक (रौशन) दलील पर हूँ, और 'उसने' अपनी खास रह़मत से मुझे नवाज़ा हो, मगर वह तुम्हें दिखाई न दे रही हो, तो क्या हम ज़बर्दस्ती तुम्हारे सर चिपका दें और जबकि वह तुम्हें अप्रिय है?-

وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۖ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ

२९- और, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुम से इस काम पर कोई माल तो नहीं मांगता! मेरा अज्र (बदला) अल्लाह ही के ज़िम्मे है, और मैं उन लोगों को जो ईमान ले आए हैं दूर करने वाला नहीं उन्हें तो अपने रब से मिलना है मगर मैं तुम्हें देख रहा हूँ कि तुम जिहालत किये जा रहे हो;

وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ۚ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ

३०- और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर मैं उन्हें दूर कर दूँ तो अल्लाह के मुक़ाबले में कौन मेरी मदद कर सकता है? भला तुम ध्यान क्यों नहीं देते।

وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ۚ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۚ اِنِّيْٓ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ

३१- और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, और न ही मुझे ग़ैब (परोक्ष) का इल्म है; और न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, और न मैं यह कह सकता हूँ, कि जिनको तुम नीची नज़र से देखते हो, उनको अल्लाह भलाई नहीं देगा, जो उनके जी में है अल्लाह उसे खूब जानता है, मैं अगर ऐसी बात कहूँ तब तो ज़ालिमों में हूँगा।''

قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ

३२- उन्होंने कहा, ''ऐ नूह! तुम हम से झगड़ चुके और बहुत बहस कर चुके, अगर तुम सच्चे हो, तो जिसकी तुम हमें धमकी देते हो उसे हम पर ले ही आओ।''

قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ

३३- कहा, ''वह तो अल्लाह ही अगर चाहेगा तो तुम पर लाएगा, और तुम हरा नहीं सकते;

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ۚ هُوَ رَبُّكُمْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ

३४- और अगर मैं तुम्हारा भला भी चाहूँ (और) अल्लाह यह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, तो मेरा भला चाहना तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकता, 'वही' तुम्हारा रब है और 'उसी' की ओर तुम्हें लौटना भी है।''

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ

३५- क्या यह कहते हैं कि, ''इन्होंने इस (क़ुर्आन) को गढ़ लिया है, कह दीजिए, ''अगर मैंने गढ़ लिया है तो मेरे ही ऊपर मेरा यह जुर्म होगा, और तुम जो जुर्म कर रहे हो मैं उससे बरी (मुक्त) हूँ।''

وَاُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ

३६- और 'नूह' के पास वह्य भेजी गई कि ''तुम्हारी क़ौम में से(और कोई) ईमान नहीं लाएँगे सिवाय उनके, जो लोग ईमान ला चुके; तो जो कुछ ये कर रहे हैं उनकी वजह से दुःखी न हो।

३७- और नाव 'हमारे' सामने हमारे हुक्म के अनुसार तैयार करो, और 'मुझसे' उन लोगों के विषय में बात न करना जिन्होंने ज़ुल्म किया है, इसलिए कि वे ज़रूर डुबो दिये जाएँगे।

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي
فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٣٧﴾

३८- और (नूह़) नाव बनाने लगे, और उनकी क़ौम के सरदार जब भी उनके पास से गुज़रते तो उसका मज़ाक़ उड़ाते, उन्होंने कहा, ''अगर तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो तो हम भी तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाएँगे जैसे तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो;

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِّن قَوْمِهِ
سَخِرُوا مِنْهُ ۚ قَالَ إِن تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا
نَسْخَرُ مِنكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٨﴾

३९- तो जल्द ही तुम को मालूम हो जाएगा कि किस पर अ़ज़ाब आने वाला है जो उसे रूसवा कर देगा, और किस पर हमेशा का अ़ज़ाब नाज़िल होगा?''

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَ
يَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٩﴾

४०- यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ गया, और तंदूर उबल पड़ा, तो 'हमने' कहा; 'हर नस्ल में से दो (नर और मादा) के जोड़े उसमें ले लो और अपने घर वालों को भी-सिवाय ऐसे व्यक्ति के जिसके बारे में बात तय हो चुकी हो और जो ईमान लाया हो उसे भी;'' मगर उनके साथ जो ईमान लाए थे, वे बहुत थोड़े ही लोग थे।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ قُلْنَا احْمِلْ
فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن
سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ ۚ وَمَا آمَنَ مَعَهُ
إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٤٠﴾

४१- और कहा कि अल्लाह का नाम लेकर (उसी के हाथ में है) इस का चलना और ठहरना, इसमें सवार हो जाओ बेशक मेरा 'रब' बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।''

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرَاهَا وَمُرْسَاهَا ۚ
إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٤١﴾

४२- और वह (नाव) उन्हें लेकर लहरों के बीच चलने लगी; पहाड़ जैसी मौजों में, और नूह़ ने अपने बेटे को पुकारा- और वह किनारे पर था- कि ''ऐ मेरे बेटे! सवार हो हमारे साथ, और काफ़िरों के साथ मत हो।''

وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادَىٰ نُوحٌ
ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يَا بُنَيَّ ارْكَب مَّعَنَا وَلَا
تَكُن مَّعَ الْكَافِرِينَ ﴿٤٢﴾

४३- वह बोला, '' मैं अभी किसी पहाड़ की पनाह लिए लेता हूँ जो मुझे पानी से बचा लेगा,'' कहा, ''आज अल्लाह के हुक्म से कोई बचाने वाला नहीं सिवाय उसके जिस पर 'वह' रह़म करे।'' इतने में दोनों के बीच मौज आ पड़ी और डूबने वालों के साथ वह भी डूब गया।

قَالَ سَآوِي إِلَىٰ جَبَلٍ يَعْصِمُنِي مِنَ الْمَاءِ ۚ قَالَ
لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَن رَّحِمَ ۚ وَحَالَ
بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ﴿٤٣﴾

४४- और कहा गया, '' ऐ धरती! अपना पानी निगल जा और

وَقِيلَ يَا أَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكِ وَيَا سَمَاءُ أَقْلِعِي وَغِيضَ

الْمَآءُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ
بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ﴿٤٤﴾

ऐ आसमान तू थम जा'' इतने में पानी तह में बैठ गया, और फ़ैसला पूरा हो गया और वह (नाव) जूदी (पहाड़) पर टिक गई, और कह दिया गया कि ज़ुल्म करने वाले लोग दूर हो गये।''

وَنَادٰى نُوحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي
وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحٰكِمِينَ ﴿٤٥﴾

४५- और नूह़ ने अपने रब को पुकारा, और कहा, ''ऐ मेरे रब! मेरा बेटा तो मेरे घर वालों ही में है और तेरा वादा सच्चा है और 'तू' सबसे बेहतर ह़ाकिम है।''

قَالَ يٰنُوحُ إِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ ۚ إِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ
صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۖ إِنِّيٓ
أَعِظُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْجٰهِلِينَ ﴿٤٦﴾

४६- (अल्लाह ने) कहा, '' ऐ नूह! वह तुम्हारे घर वालों में से नहीं, क्योंकि उस के कर्म (आ़माल)बुरे थे, तो मुझसे ऐसी चीज़ों का सवाल न करो जिसकी तुम्हें ख़बर न हो; 'मैं' तुम्हें नसीह़त करता हूँ कि तुम नादानों में से न हो।''

قَالَ رَبِّ إِنِّيٓ أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِي
بِهٖ عِلْمٌ ۖ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِيٓ أَكُنْ مِّنَ
الْخٰسِرِينَ ﴿٤٧﴾

४७- (नूह) बोले, ''ऐ मेरे रब! मैं 'तुझ' से तेरी पनाह माँगता हूँ कि 'तुझसे' उस चीज़ का सवाल करूँ जिसका मुझे कोई इल्म न हो, अब अगर 'तू' ने मुझे माफ़ न किया और मुझ पर दया न की, तो मैं घाटे में पड़ कर रहूँगा।''

قِيلَ يٰنُوحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ
وَعَلٰٓى أُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ۚ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ
يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٨﴾

४८- कहा गया, '' ऐ नूह! 'हमारी' ओर से सलामती और उन बरकतों के साथ, (जो) तुम पर और उन गिरोहों पर होगी जो तुम्हारे साथ हैं; उतर आओ कुछ गिरोह ऐसे भी होंगे जिन्हें हम थोड़े दिनों का सुख देंगे, फिर उन्हें हमारी ओर से दुःख देने वाला अ़ज़ाब आ पहुँचेगा।''

تِلْكَ مِنْ أَنْبَآءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَآ إِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ
تَعْلَمُهَآ أَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۚ فَاصْبِرْ ۚ
إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٩﴾

४९- यह ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें हैं जिनकी 'हम' आप की ओर वह्य कर रहे हैं इससे पहले न तो आप को उनकी ख़बर थी और न आप की क़ौम को, अतः सब्र से काम लो, बेशक (भला) अंजाम तो परहेज़गारों ही का है।

وَإِلٰى عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ
مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۚ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾

५०- और 'आ़द' की ओर उनके भाई 'हूद' को (भेजा), उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं, तुम तो केवल झूठ गढ़ते हो;

يٰقَوْمِ لَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۚ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى

५१- ऐ मेरी क़ौम! मैं इस पर तुम से बदले में कुछ मज़दूरी नहीं

الَّذِي فَطَرَنِي ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

माँगता, मेरी मज़दूरी तो बस उसी के ज़िम्मे है 'जिसने' मुझे पैदा किया है, फिर क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?-

وَيَا قَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِينَ ۝

५२- और ऐ मेरी क़ौम! अपने रब से अपने गुनाह माफ़ कराओ, फिर 'उसी से' तौबः करो, 'वह' तुम पर खूब बारिशें बरसाएगा और दिन पर दिन तुम्हारी शक्ति बढ़ाएगा, और मुजरिम बनकर मुँह न फेरो।''

قَالُوا يَا هُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَن قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۝

५३- वे बोले, ''ऐ हूद! तुम हमारे सामने कोई स्पष्ट प्रमाण लेकर नहीं आए, और हम तुम्हारे कहने से अपने मअ़बूदों को नहीं छोड़ सकते, और न तुम पर ईमान लाने वाले हैं;

إِن نَّقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ ۗ قَالَ إِنِّي أُشْهِدُ اللَّهَ وَاشْهَدُوا أَنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ۝

५४- हम तो यही समझते हैं कि हमारे मअ़बूदों में से किसी की मार तुम पर पड़ गई है, उन्होंने कहा, ''मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ, और तुम भी गवाह रहो कि उनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं, जिनको तुमने साझीदार ठहरा रखा है;

مِن دُونِهِ ۖ فَكِيدُونِي جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنظِرُونِ ۝

५५- अल्लाह के सिवा तुम सब मेरे साथ दाँव घात लगा कर देखो, और मुझे मोहलत न दो;

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُم ۚ مَّا مِن دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝

५६- मैं तो अल्लाह ही पर भरोसा रखता हूँ 'वही' मेरा 'रब' है, और तुम्हारा भी, जितने भी जानदार हैं सबकी पेशानी (मस्तक) तो 'उसी' के हाथ में है, बेशक मेरा रब सीधी राह पर है;

فَإِن تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُم مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ۝

५७- तो अगर तुम मुँह फेरोगे, तो जो पैग़ाम देकर मैं भेजा गया था, वह मैं तुम्हें पहुँचा चुका, और मेरा रब तुम्हारी जगह दूसरी किसी क़ौम को लाएगा, और तुम 'उसका' कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, मेरा रब हर चीज़ पर निगराँ (संरक्षक) है।''

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَنَجَّيْنَاهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝

५८- और जब 'हमारा' हुक्म (अ़ज़ाब का) आ पहुँचा, तो 'हमने' अपनी दया से हूद को, और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाए थे अपनी मेहरबानी से बचा लिया, और 'हमने' उन्हें भारी अ़ज़ाब से बचा लिया।

وَتِلْكَ عَادٌ ۖ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝

५९- और ये आ़द हैं, जिन्होंने अपने 'रब' की आयतों से इन्कार किया, और रसूलों की नाफ़रमानी की और हर सरकश विरोधी के पीछे चलते रहे;

وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ۝

६०- तो और इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगी रही और क़ियामत के दिन भी, ''सुन लो! कि 'आ़द' ने अपने 'रब' के साथ कुफ़्र किया, (और) सुन लो! कि 'हूद' की क़ौम, 'आ़द' पर फिटकार हो।

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ هُوَ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُجِيبٌ ۝

६१- और 'समूद' की ओर उनके भाई 'सालेह़' को (भेजा) तो उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह ही की इबादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, 'उसी' ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और उस में आबाद कर दिया, तो तुम 'उसी से गुनाह माफ़ कराओ और 'उसी' से तौबः करो, बेशक मेरा 'रब' निकट है और दुआ़ओं का क़ुबूल करने वाला है।''

قَالُوا يَا صَالِحُ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَٰذَا ۖ أَتَنْهَانَا أَنْ نَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّنَا لَفِي شَكٍّ مِمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝

६२- उन्होंने कहा, ''ऐ सालेह़! इससे पहले हम तुम से उम्मीदें रखते थे, क्या तुम हमें उनकी इबादत से रोकते हो जिनकी इबादत हमारे बाप-दादा करते रहे हैं? और जिसकी ओर तुम हमें बुला रहे हो इसमें हमें बड़ा सन्देह है?''

قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَآتَانِي مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُ ۖ فَمَا تَزِيدُونَنِي غَيْرَ تَخْسِيرٍ ۝

६३- (सालेह़ ने) कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! क्या तुमने सोचा, अगर मैं अपने रब की ओर से प्रमाण पर हूँ और 'उसने' मुझे अपनी रह़मत से नवाज़ा हो, तो कौन है, जो अल्लाह की पकड़ से मुझे बचाएगा, अगर मैं 'उसकी' नाफ़रमानी करूँ; तो तुम इसके सिवा और क्या कर सकते हो कि मेरी तबाही में ज़्यादती कर दो?''

وَيَا قَوْمِ هَٰذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ ۖ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ۝

६४- और ''ऐ क़ौम! यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की धरती में खाए, (चरती रहे), और इसे तक्लीफ़ न देना, वरना! जल्द ही तुम्हें अ़ज़ाब आ पकड़ेगा।''

فَعَقَرُوهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوا فِي دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ أَيَّامٍ ۖ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوبٍ ۝

६५- फिर उन्होंने उसकी कूँचे काट डालीं (अर्थात मार डाला), तब (सालेह़ ने) कहा, ''तुम अपने घरों में तीन दिन फ़ायदा उठा लो यह ऐसा वादा है जो झूठा न होगा।''

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝

६६- फिर जब 'हमारा' हुक्म (अ़ज़ाब का) आ पहुँचा, तो 'हमने' अपनी रह़मत से सालेह़ को, और उनके साथ जो ईमान लाए थे उनको, अपनी मेहरबानी से (उस अ़ज़ाब से भी) बचा लिया, और उस दिन की रूसवाई से भी, (बचाए रखा) बेशक तुम्हारा 'रब' ज़बर्दस्त, ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली) है।

وَأَخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جٰثِمِينَ ۝

६७- और जो ज़ालिम थे उन्हें एक भयंकर चीख ने आ पकड़ा, तो वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये;

كَأَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۗ أَلَا إِنَّ ثَمُودَا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِّثَمُودَ ۝

६८- मानों वे कभी वहाँ बसे ही न थे, सुन लो! कि 'समूद' ने अपने रब से कुफ्ऱ किया, खूब सुन लो! कि 'समूद' (रह़मत से) दूर हो गये।

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرٰهِيمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوا سَلٰمًا ۖ قَالَ سَلٰمٌ ۖ فَمَا لَبِثَ أَنْ جَاءَ بِعِجْلٍ حَنِيذٍ ۝

६९- और 'हमारे' भेजे हुए (फ़रिश्ते) 'इब्राहीम' के पास खुशख़बरी लेकर आए उन्होंने कहा, ''सलाम हो,'' उन्होंने भी कहा, ''सलाम हो,'' फिर उन्होंने कुछ देर न की, कि एक भुना हुआ बछड़ा ले आए।

فَلَمَّا رَآ أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۚ قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلٰى قَوْمِ لُوطٍ ۝

७०- तो जब देखा कि उनके हाथ उसकी ओर नहीं बढ़ रहे, तो उन्हें अजनबी समझा और दिल में उनसे डरे, वे बोले, ''डरो नहीं! हम तो लूत की क़ौम की ओर भेजे गये हैं।''

وَامْرَأَتُهُ قَائِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِإِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَاءِ إِسْحٰقَ يَعْقُوبَ ۝

७१- और उनकी पत्नी भी खड़ी थीं, वह उस पर हँस पड़ीं, फिर 'हमने' उनको बशारत दी इस्ह़ाक़ और इस्ह़ाक़ के बाद याकूब की।

قَالَتْ يٰوَيْلَتٰى ءَأَلِدُ وَأَنَا عَجُوزٌ وَّهٰذَا بَعْلِي شَيْخًا ۖ إِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ۝

७२- वह बोलीं, ''अरे! मेरे सन्तान होगी? जबकि मैं तो बूढ़ी हो चुकी हूँ, और यह मेरे पति भी बूढ़े हो चुके हैं, यह तो बड़ी अ़जीब बात है।''

قَالُوا أَتَعْجَبِينَ مِنْ أَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ ۚ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ۝

७३- उन्होंने कहा, ''क्या तुम अल्लाह के हुक्म पर तअ़ज्जुब करती हो? अल्लाह की रह़मत और बरकतें हों तुम पर, ऐ अह्ले बैत! बेशक 'वही' तअ़रीफ़ के लायक़ और बड़ी शान वाला है।''

फ़लम्मा ज़हबा अन् इब्राहीमर्-रौउ व जाअत्हुल्-बुश्रा युजादिलुना फ़ी क़ौमि लूत

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَىٰ يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ

७४-तो जब इब्राहीम की घबराहट दूर हो गई और उन्हें खुशख़बरी भी मिल गयी तो लूत की क़ौम के बारे में 'हमसे' हुज्जत करने लगे;

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ

७५- बेशक इब्राहीम बड़े सहनशील, नर्म दिल, 'हमारी' ओर रूजूअ़ होने वाले थे।

يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۖ إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَإِنَّهُمْ آتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ

७६- ''ऐ इब्राहीम! इन्हें छोड़ दो, तुम्हारे रब का हुक्म आ चुका है, और इन लोगों पर ऐसा अ़ज़ाब आने वाला है जो किसी तरह टल नहीं सकता;''

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ هَٰذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ

७७- और जब 'हमारे' भेजे हुए दूत (फ़रिश्ते) लूत के पास पहुँचे, तो वह (उनके आने से) घबराए और उनकी वजह से बहुत तंग दिल हुए और बोले ''आज तो बड़ी मुसीबत का दिन है;

وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۚ قَالَ يَا قَوْمِ هَٰؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ لَكُمْ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ فِي ضَيْفِي ۖ أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ

७८- और उनकी क़ौम के लोग दौड़ते हुए उनके पास आए, और पहले ही से कुकर्म किया करते थे, उन्होंने कहा, ऐ क़ौम! यह मेरी बेटियाँ हैं, यह तुम्हारे लिए पवित्र हैं, तो अल्लाह से डरो, मेरे मेहमानों के मामले में मुझे रूसवा न करो, क्या तुम में कोई भी भला आदमी नहीं?''

قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ

७९- उन लोगों ने कहा, ''तुम्हें तो मालूम है कि तेरे बेटियों की हमें कोई ज़रूरत नहीं, और तुम वह भी खूब जानते हो जो कुछ हम इरादा रखते हैं।''

قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةً أَوْ آوِي إِلَىٰ رُكْنٍ شَدِيدٍ

८०- उन्होंने कहा, ''क्या ही अच्छा होता कि मुझमें तुमसे मुक़ाबले की शक्ति होती, या कोई मज़बूत सहारा होता, जिसकी मैं पनाह लेता।''

قَالُوا يَا لُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَصِلُوا إِلَيْكَ ۖ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا امْرَأَتَكَ ۖ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ ۚ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۚ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ

८१- उन्होंने कहा, ''ऐ लूत! हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं, ये लोग तुम तक हरगिज़ नहीं पहुँच सकते; अतः तुम रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर निकल जाओ, और तुममें से पीछे कोई व्यक्ति पलट कर न देखे, मगर तुम्हारी पत्नी, कि उस पर भी वही आफ़त आएगी जो उन पर आएगी, उन के अ़ज़ाब का वक़्त सुबह के लिए निश्चित है, तो क्या सुबह़ क़रीब नहीं?''

८२- फिर जब 'हमारा' हुक्म आ पहुँचा तो 'हमने' उसको (उलट कर) नीचे ऊपर कर दिया, और 'हमने' कंकरीले पत्थर ताबड़ तोड़ बरसाए;

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا
عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ۝

८३- जिन पर तुम्हारे रब के यहाँ से निशान किये हुए थे और यह ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं।

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ
بِبَعِيْدٍ ۝

८४- और मदयन की ओर उनके भाई शुऐब को (भेजा) तो उन्होंने कहा, ''ऐ क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं, और नाप तौल में कमी न करो, मैं तो तुम्हें अच्छी ह़ालत में देख रहा हूँ, मगर मुझे तुम्हारे बारे में एक ऐसे दिन के अ़ज़ाब का डर है, जो तुम को घेर कर रहेगा;

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ وَلَا
تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ
وَّاِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ۝

८५- ऐ मेरी क़ौम ! इन्साफ़ के साथ नाप और तौल को पूरा किया करो, और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो, और ज़मीन में फ़साद न फैलाते फिरो;

وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا
تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ
مُفْسِدِيْنَ ۝

८६- अगर तुम को यक़ीन हो तो अल्लाह का दिया हुआ नफ़ा तुम्हारे लिए है, अगर तुम ईमान वाले हो, और मैं तुम पर रखवाला नहीं हूँ!''

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ
وَمَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝

८७- उन्होंने कहा, ''ऐ शुऐब! क्या तेरी नमाज़ तुझे यही सिखाती है कि उन्हें हम छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप-दादा पूजते आए हैं, या हमें इस बात का अधिकार नहीं कि अपने माल जिस तरह चाहें इस्तेमाल (प्रयोग) करें? तुम बड़े नर्म दिल और समझदार हो।''

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ
اٰبَآؤُنَاۤ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْۤ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ
لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ۝

८८- (शुऐब ने) कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! तुमने यह भी सोचा कि अगर मैं अपने रब की ओर से रौशन दलील पर हूँ और 'उसने' अपनी ओर से मुझे अच्छी रोज़ी भी प्रदान की हो, और मैं यह नहीं चाहता कि जिन बातों से मैं तुम्हें रोकता हूँ खुद उस को करूँ, मैं तो अपने बस भर केवल सुधार चाहता हूँ, और मुझे तौफ़ीक़ का मिलना अल्लाह ही से है 'उसी' पर मेरा भरोसा है, और 'उसी' की ओर मैं रूजूअ़ होता (पलटता) हूँ;

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ
وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ
اِلٰى مَاۤ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا
اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِيْۤ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ
وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝

८९- और ऐ मेरी क़ौम! मेरे ख़िलाफ़ तुम्हारा विरोध कोई ऐसा काम न करा दे कि तुम पर भी वही कुछ बीते जो 'नूह़'

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْۤ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَاۤ
اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا

قَوْمُ لُوطٍ مِّنكُم بِبَعِيدٍ ۝

की क़ौम, या 'हूद' की क़ौम, या 'सालेह़' की क़ौम पर बीत चुका है, और लूत की क़ौम तो तुम से कुछ दूर नहीं;

وَاسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ۝

९०- और अपने रब से अपने गुनाह माफ़ कराओ फिर 'उसके' आगे तौबः करो, बेशक मेरा रब बड़ी रह़मत वाला, मुह़ब्बत वाला है।''

قَالُوا يَا شُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيرًا مِّمَّا تَقُولُ وَإِنَّا لَنَرَاكَ فِينَا ضَعِيفًا ۖ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ ۖ وَمَا أَنتَ عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ ۝

९१- उन्होंने कहा, ''ऐ शुऐब! तुम्हारी बहुत सी बातें तो हमारी समझ में नहीं आतीं, और हम तो तुम को अपने बीच कमज़ोर ही देखते हैं, और अगर तुम हमारी बिरादरी के आदमी न होते, तो हम तुमको संगसार(पत्थर मार-मार कर ख़त्म) कर देते और तुम हम पर ग़ालिब (प्रभावी) नहीं हो।''

قَالَ يَا قَوْمِ أَرَهْطِي أَعَزُّ عَلَيْكُم مِّنَ اللَّهِ وَاتَّخَذْتُمُوهُ وَرَاءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۖ إِنَّ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝

९२- उनहों ने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरी बिरादरी', तुम पर अल्लाह से भी ज़्यादा है, कि अल्लाह को तुम ने पीछे डाल दिया! तुम जो कुछ भी कर रहे हो मेरा 'रब' सब अहाता किये हुए है;

وَيَا قَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۖ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ ۝

९३- और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो मैं भी कर रहा हूँ, जल्द ही तुम को मालूम हो जाएगा कि किस पर अ़ज़ाब आएगा, जो उसे ज़लील कर के रहेगा और कौन है जो झूठा है? और तुम भी इन्तिज़ार करो, तुम्हारे साथ मैं भी इन्तिज़ार करता हूँ।''

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝

९४- और जब 'हमारा' हुक्म (अ़ज़ाब का) आया, तो 'हमने' शुऐब को और उन लोगों को जो उन पर ईमान लाए थे, अपनी रह़मत से बचा लिया; और जो ज़ालिम थे उनको चिंघाड़ ने आ पकड़ा, तो सुबह को औंधे पड़े रह गये;

كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۗ أَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُودُ ۝

९५- मानो वह वहाँ कभी बसे ही न थे, सुन लो! मदयन वालों को (रह़मत से) दूरी हुई जैसी दूरी समूद को हो चुकी थी।''

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝

९६- और 'हमने' मूसा को अपनी निशानियों और खुली दलील के साथ भेजा,

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيْهِ فَاتَّبَعُوٓا أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۖ وَمَآ أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ۝

९७- फ़िरऔन और उसके सरदारों की ओर तो वह लोग फ़िरऔन ही के हुक्म पर चलते रहे और फ़िरऔन का हुक्म ठीक न था;

يَقْدُمُ قَوْمَهُۥ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۖ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُودُ ۝

९८- वह क़ियामत के दिन अपनी क़ौम के आगे-आगे होगा और उनको आग में जा उतारेगा, और बहुत ही बुरा घाट है वह उतरने का;

وَأُتْبِعُوا فِى هَٰذِهِۦ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَٰمَةِ ۚ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ ۝

९९- और यहाँ (दुनिया में) भी लानत उनके पीछे लगी रही, और क़ियामत के दिन भी, बुरा बदला है जो उनको मिलेगा।

ذَٰلِكَ مِنْ أَنۢبَآءِ الْقُرَىٰ نَقُصُّهُۥ عَلَيْكَ ۖ مِنْهَا قَآئِمٌ وَحَصِيدٌ ۝

१००- यह उन बस्तियों की कुछ ख़बरें हैं जो 'हम' आप से बयान करते हैं उनमें से कुछ क़ायम हैं और कुछ उजड़ गयीं।

وَمَا ظَلَمْنَٰهُمْ وَلَٰكِن ظَلَمُوٓا أَنفُسَهُمْ ۖ فَمَآ أَغْنَتْ عَنْهُمْ ءَالِهَتُهُمُ الَّتِى يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مِن شَىْءٍ لَّمَّا جَآءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ۝

१०१- और 'हमने' उन लोगों पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने खुद अपने आप पर ज़ुल्म किया, फिर जब आप के 'रब' का हुक्म आ गया; तो उनके वे मअ़बूद जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारा करते थे उनके कुछ भी काम न आ सके, और उन्होंने विनाश के अ़लावा उनके लिए किसी और चीज़ में ज़्यादती नहीं की।

وَكَذَٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَآ أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِىَ ظَٰلِمَةٌ ۚ إِنَّ أَخْذَهُۥٓ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ۝

१०२- और आपके रब की पकड़ ऐसी ही होती है, जब 'वह' किसी ज़ालिम बस्ती को पकड़ता है, बेशक 'उसकी' पकड़ बड़ी दर्दनाक, बड़ी सख़्त होती है।

إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْءَاخِرَةِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ لَّهُ النَّاسُ وَذَٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُودٌ ۝

१०३- बेशक इसमें उस व्यक्ति के लिए निशानी है, जो आख़िरत के अ़ज़ाब से डरे यह ऐसा दिन होगा जिसमें सारे लोग इकट्ठा किये जाएँगे; और यही वह दिन होगा, जिसमें सब (अल्लाह के सामने) हाज़िर किये जाएँगे।

وَمَا نُؤَخِّرُهُۥٓ إِلَّا لِأَجَلٍ مَّعْدُودٍ ۝

१०४- और 'हमने' उसको एक निश्चित समय तक के लिए ही रोक रखा है;

يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِۦ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِىٌّ وَسَعِيدٌ ۝

१०५- जिस दिन वह आएगा तो उसकी इजाज़त के बिना कोई व्यक्ति बात भी न कर सकेगा, फिर उनमें भी कुछ बदबख्त (अभागे) होंगे, और कुछ भग्यशाली।

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ ۝

१०६- तो जो बदबख्त होंगे वह आग में होंगे उसमें वे चीख़ और पुकार करेंगे।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ

१०७- हमेशा उसी में पड़े रहेंगे जब तक कि आसमान और ज़मीन क़ायम है, मगर सिवाय उतना जितना तुम्हारा रब चाहे, बेशक तुम्हारा रब जो चाहता है कर डालता है;

وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِى الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ

१०८- और जो नेक लोग होंगे तो वे जन्नत में (जाएँगे) जहाँ वे हमेशा रहेंगे, जब तक कि आसमान और ज़मीन क़ायम है, मगर जितना तुम्हारा रब चाहे, यह एक ऐसा उपहार है जो कभी न टूटेगा।

فَلَا تَكُ فِىْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ

१०९- तो यह लोग जिनकी इबादत करते हैं उनके सम्बन्ध में तुम किसी तरह के धोखे में न पड़ना, जैसी पूजा पहले उनके बाप-दादा करते आए हैं, वैसी ही यह भी करते हैं; 'हम' तो इनका हिस्सा बिना किसी कमी के उनको पूरा -पूरा देने वाले हैं।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِىْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ

११०- और 'हम' मूसा को भी किताब दे चुके हैं फिर वे लोग उसमें भेद डालने लगे, अगर तुम्हारे रब की ओर से एक बात पहले ही निश्चित न कर दी गयी होती, तो उनके बीच कभी का फ़ैसला कर दिया गया होता, यह 'उसकी' ओर से शक में पड़े हुए डाँवाडोल हैं।

وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ

१११- और (बेशक समय आने पर) हर- एक को, तुम्हारा 'रब' उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला ज़रूर देगा बेशक जो कुछ वे कर रहे हैं, 'उसे' उसकी पूरी ख़बर है।

فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ

११२- सो जैसा तुम को हुक्म हुआ है जमे रहो और वह लोग भी जिन्होंने तुम्हारे साथ तौबः की, और हृद से आगे न बढ़ना, जो कुछ भी तुम करते हो 'वह' उसे देख रहा है।

وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ

११३- और उनकी ओर मत झुकना, जिन्होंने ज़ुल्म किया, वरना आग तुम्हें आ लिपटेगी, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई न दोस्त होगा और न तुम्हारी मदद ही की जाएगी;

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَىِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ

११४- और नमाज़ क़ायम करो, दिन के दोनों सिरों पर, और रात के कुछ हिस्से में; बेशक नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं; उनके हक़ में यह चेतावनी है, जो चेतावनी को याद रखने वाले हैं;

११५- और सब्र से काम लो क्योंकि अल्लाह अच्छे कामों का अज्र (बदला) बेकार नहीं करता।

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾

११६- तो तुम से पहले जो नस्लें गुज़र चुकी हैं, उनमें ऐसे भले समझदार क्यों न हुए, जो धरती में बिगाड़ से रोकते? उन थोड़े से लोगों के सिवा जिनको उनमें से 'हमने' बचा लिया, और जो ज़ालिम थे वह तो उसी ऐश के सामानों के पीछे पड़े रहे जो उन्हें दिया गया था, और वे तो थे ही अपराधी।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۗ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١١٦﴾

११७- और आप का रब तो ऐसा नहीं है कि बस्तियों को नाहक़ तबाह कर दे, जबकि वहाँ के लोग नेकोंकार हों।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ﴿١١٧﴾

११८- और अगर आपका रब चाहता तो 'वह' सारे लोगों को एक ही राह पर कर देता, मगर वे हमेशा विभेद करते ही रहेंगे;

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ وَلَا يَزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٨﴾

११६- सिवाय उनके कि जिन पर तुम्हारा रब रहमत करे, और इसीलिए 'उसने' उन्हें पैदा किया, और तुम्हारे रब की यह बात पूरी होकर रही कि 'मैं' जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों दोनों से भर दूंगा।''

إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذَٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۗ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾

१२०- (ऐ मुहम्मद) और रसूलों के जितने क़िस्से 'हम' आप को सुनाते हैं, उसके ज़रिये 'हम' आप के दिल को मज़बूत करते हैं, इसमें आपके पास हक़ पहुँच गया, और ईमान वालों के लिए नसीहत और इब्रत (सबक़) है।

وَكُلًّا نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاءَكَ فِي هَٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٠﴾

१२१-और जो लोग ईमान नहीं लाते उनसे कह दीजिए, ''कि तुम अपनी जगह काम किये जाओ हम भी काम कर रहे हैं;

وَقُلْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَامِلُونَ ﴿١٢١﴾

१२२- और तुम भी इन्तिज़ार करो और हम भी इन्तिज़ार करते हैं।''

وَانْتَظِرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ﴿١٢٢﴾

१२३- और अल्लाह ही का है, जो कुछ आसमानों और ज़मीन में छिपा है, और हर मामले का पलटना उसी की ओर है, तो 'उसी' की इबादत करो और 'उसी' पर भरोसा रखो, और जो कुछ तुम करते हो, उससे तुम्हारा 'रब' बेख़बर नहीं है।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ الْأَمْرُ كُلُّهُ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٢٣﴾



अनुवाद-सूरतु यूसुफ़

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के ७४११ अक्षर, १८०८ शब्द, १११ आयतें और १२ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝

१- अलिफ़्- लाम्- रा। यह स्पष्ट किताब की आयतें हैं।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝

२- 'हमने' इस क़ुर्आन को अ़रबी में उतारा है ताकि तुम समझो।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝

३- 'हमने' जो यह क़ुर्आन आपके पास वह्य के ज़रिये भेजा है उसके ज़रिये आप को एक बहुत ही अच्छा क़िस्सा सुनाते हैं, और आप उससे पहले बेख़बर थे।

اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝

४- जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा, ''ऐ मेरे अब्बा जान! मैंने (सपने में) ग्यारह सितारे देखे, और सूर्य और चाँद; मैंने उन्हें देखा कि वे मुझे सज्दः कर रहे हैं।''

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝

५- उन्होंने कहा, ''ऐ बेटे! अपना सपना अपने भाइयों को मत बताना, नहीं तो वे तेरे ख़िलाफ चाल चलेंगे, कि शैतान तो इन्सान का खुला दुश्मन है।''

وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

६- और इसी तरह तुम्हारा 'रब' तुम्हें चुन लेगा, और तुम्हें अस्ल बातों की ह़क़ीक़त मालूम करना सिखाएगा और 'वह' अपनी नेअ़मत तुम पर और याक़ूब की सन्तान पर, उसी तरह पूरी कर देगा जिस तरह इससे पहले वह तुम्हारे बाप-दादा इब्राहीम और इस्ह़ाक़ पर पूरी कर चुका है, बेशक तुम्हारा रब इल्म वाला, ह़िकमत वाला है।

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ۝

७- हाँ, यूसुफ़ और उसके भाइयों में सवाल करने वालों के लिए निशानियाँ हैं;

إِذْ قَالُوا لَيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَىٰ أَبِينَا مِنَّا
وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ۚ إِنَّ أَبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝

८- जब उन्होंने कहा, ''यूसुफ़ और उसका भाई, हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्रिय है, हालाँकि हम एक पूरा जत्था (एक गिरोह) हैं, बेशक हमारे बाप खुली ग़लती पर हैं,

اقْتُلُوا يُوسُفَ أَوِ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ
أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ۝

९- तो यूसुफ़ को क़त्ल करो, या उसको किसी जगह फेंक आओ ताकि तुम्हारे बाप का ध्यान तुम्हारी ही ओर हो जाए, उसके बाद तुम अच्छी हालत में हो जाओगे।

قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي
غَيَابَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِنْ
كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ۝

१०- उनमें से एक कहने वाला बोल उठा, ''यूसुफ़ को जान से न मारो, (अगर तुम्हें कुछ करना ही है) और उसको किसी अंधेरे कुएँ में डाल दो कि कोई राह चलता मुसाफ़िर उसे निकाल ले जाए, अगर तुम को करना है।''

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا
لَهُ لَنَاصِحُونَ ۝

११- (भाईयो ने) कहा, ''ऐ हमारे अब्बा जान! आप को क्या हो गया है?!! कि यूसुफ़ के मामले में आप हम पर भरोसा नहीं करते हालाँकि हम तो उसके ख़ैरख़्वाह (हितैषी) हैं;

أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَإِنَّا لَهُ
لَحَافِظُونَ ۝

१२- हमारे साथ कल उसे भेज दीजिए कि वह खाये-पिये और खेले-कूदे, और उसकी रक्षा के लिए हम तो हैं ही।''

قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَنْ
يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ۝

१३- (याक़ूब ने) कहा, ''यह बात कि तुम उसे ले जाओ मुझे दुःखी कर देती है, कि कहीं ऐसा न हो कि तुम उसका ध्यान न रख सको और भेड़िया उसे खा जाए।''

قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا
لَخَاسِرُونَ ۝

१४- वे बोले, ''अगर उसको भेड़िया खा जाए हमारे पूरे जत्थे के होते हुए, तो हम बिल्कुल नाकारा होंगे।''

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَأَجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ ۚ
وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَهُمْ لَا
يَشْعُرُونَ ۝

१५- फिर जब वे उनको ले गये और तय कर लिया कि उन्हें अंधेरे कुएँ में डाल दें, और 'हमने' यूसुफ की ओर वह्य भेजी, कि ''तुम इनको इनके इस व्यवहार को (एक वक्त) जतलाओगे और वह (तुमको) जान भी न पाएँगे।''

وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ۝

१६- और वे अपने बाप के पास अ़िशा के वक़्त (शुरू रात में) रोते हुए आए,

قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ
مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ ۖ وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَنَا وَلَوْ كُنَّا

१७- बोले, ''अब्बा जान! हम सब आपस में दौड़ने और एक-दूसरे से आगे निकलने में लग गये, और हम ने यूसुफ़ को

صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾

अपने सामान के पास छोड़ दिया था, तो भेड़िया खा गया और आप तो हम पर भरोसा करेंगे नहीं! चाहे हम (कितने ही) सच्चे हों।''

وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

१८- और उनके कुर्ते पर झूठ-मूठ का खून लगा लाए, बोले, ''हाँ तुम ने अपने आप से एक बात बना ली है, तो अब सब्र ही करना अच्छा है, जो बात तुम बता रहे हो उसमें अल्लाह ही से मदद चाहिए।''

وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾

१६- और एक क़ाफ़िला आया तो उन लोगों ने अपने एक पानी लाने वाले को भेजा, उसने अपना डोल डाला, तो पुकार उठा, ''अरे वाह! कितनी खुशी की बात है, यह तो एक लड़का निकल आया,'' और उसको उसे व्यापार का माल समझ कर छिपा लिया, और जो वे कर रहे थे अल्लाह उसे जान रहा था।

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾

२०- और (व्यापारियों ने) उसे सस्ते दाम, गिनती के चन्द दिरहम, में बेच दिया और वे उसके मामले में बेपरवाह थे।

وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ؗ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾

२१- और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे ख़रीदा था, उसने अपनी पत्नी से कहा, ''इसको अच्छी तरह इज़्ज़त से रखना बहुत सम्भव है कि यह हमारे काम आए, या हम इसे बेटा बना लें।'' इस तरह 'हमने' यूसुफ़ को (मिस्र की) धरती पर जगह दी ताकि 'हम' उसे बातों की हक़ीक़त मालूम करना सिखाएं; और अल्लाह अपना हुक्म लागू कर के रहता है लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

२२- और जब वह (यूसुफ़) अपनी जवानी को पहुँचा तो 'हमने' उसको हिकमत और इल्म दिया; और 'हम' नेक बन्दों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّىْۤ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾

२३- और जिस औ़रत के घर में वह रहते थे, उसने उनको अपनी ओर मायल करना चाहा और, उसने दरवाज़े बन्द कर दिये, और बोली, ''जल्दी आओ'' उन्होंने कहा, ''अल्लाह की पनाह! वह (अर्थात तुम्हारे पति) तो मेरे आक़ा हैं उन्होंने मुझे अच्छा स्थान दिया है, बेशक ज़ालिम लोग कामियाब नहीं होंगे''।

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ

२४- और उस औ़रत ने उसका इरादा किया, और उन्होंने

رَبِّهٖ ۭ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْۗءَ وَالْفَحْشَاۗءَ ۭ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ۝

उसका इरादा किया, अगर वह अपने रब का स्पष्ट प्रमाण न देख लेते- (तो जो होता, वह होता) ऐसा इसलिए हुआ ताकि 'हम' उनसे बुराई और बेहयाई को दूर रखें- बेशक वह हमारे चुने हुए बन्दों में से थे।

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ۭ قَالَتْ مَا جَزَاۗءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْۗءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

२५- और दोनों दरवाज़े की ओर दौड़े और औ़रत ने उनका कुर्ता पीछे से फाड़ डाला, और दरवाज़े पर दोनों ने औ़रत के पति को मौजूद पाया, तो औ़रत बोल उठी, ''क्या सज़ा है उस व्यक्ति की जो तुम्हारे घर वाली के साथ बुराई का इरादा करे, उसका बदला इसके सिवा क्या होगा कि उसे क़ैद किया जाए, या दर्दनाक सज़ा दी जाए?''

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝

२६- (यूसुफ़ ने) कहा, ''यही तो मुझे अपनी ओर मायल करना चाही थी, और उसी (औ़रत) के ख़ानदान से एक फ़ैसला करने वाले ने गवाही दी कि अगर उसका कुर्ता आगे से फटा है तो यह सच्ची है और वह झूठा है;

وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝

२७- और अगर उसका कुर्ता पीछे से फटा है तो यह झूठी है, और वह सच्चा है।''

فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۭ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ۝

२८- तो जब देखा कि उसका कुर्ता पीछे से फटा था, (तो कहा,) ''यह तुम औ़रतों की चाल है, और तुम्हारी चालें बड़ी (ख़तरनाक) होती हैं;

يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ښ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ۝

२९- यूसुफ़! इस मामले को जाने दीजिए, और ऐ औ़रत! तू अपने गुनाह की माफ़ी माँग, बेशक तू ही ख़ताकार है।''

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۭ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

३०- और शहर की कुछ औ़रतें कहने लगीं, ''अ़ज़ीज़ की पत्नी अपने ग़ुलाम को, अपनी ओर मायल करना चाहती है और उसकी मुहब्बत उसके दिल में घर कर गयी है, हम तो उसे खुली गुमराही में देख रहे हैं।''

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗٓ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ۭ اِنْ هٰذَآ

३१- तो जब (जुलैखा ने) इन औ़रतों की बातें सुनीं तो (ज़ुलेख़ा ने) उन्हें बुला भेजा, और उनके लिए तकिया वाली मजलिस सजाई, और हर एक को एक-एक छुरी दे दी, और (यूसुफ़ से) कहा, ''इनके सामने से निकल जाओ,'' जब उन

إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ۝

औ़रतों ने उनको देखा तो उनका रोअ़ब ऐसा छा गया कि उन्होंने अपने ही हाथ घायल कर लिये, और पुकार उठीं! ''अल्लाह की पनाह! यह इन्सान नहीं; यह तो कोई बुज़ुर्ग फरिश्ता है।''

قَالَتْ فَذَٰلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ ۖ وَلَقَدْ رَاوَدتُّهُ عَن نَّفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ ۖ وَلَئِن لَّمْ يَفْعَلْ مَا آمُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِّنَ الصَّاغِرِينَ ۝

३२- (औ़रत) बोली, ''यह वही है जिसके बारे में तुम मुझ को मलामत कर रही थीं, निश्चय ही मैंने इसे रिझाना चाहा था किन्तु यह बचा रहा, और अगर यह वह न किया जो मैं इससे कहती हूँ, तो यह ज़रूर क़ैद किया जाएगा और ज़लील होगा।''

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ ۝

३३- (यूसुफ़ ने) कहा, ''मेरे रब! जिसकी ओर यह मुझे बुला रही है उससे तो क़ैद में रहना ही मुझ को ज़्यादा पसंद है, और अगर 'तू' इनकी चालों से मुझ को न बचाएगा, तो मैं इनकी ओर मायल हो जाऊँगा और जाहिलों में से हो जाऊँगा।''

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

३४- तो उनके 'रब' ने उनकी सुन ली और उनसे औ़रतों की चालों को ख़त्म कर दिया बेशक 'वह' सुनने वाला, जानने वाला है।

ثُمَّ بَدَا لَهُم مِّن بَعْدِ مَا رَأَوُا الْآيَاتِ لَيَسْجُنُنَّهُ حَتَّىٰ حِينٍ ۝

३५- फिर उन्हें, इसके बाद कि निशानियाँ देख चुके थे उनकी राय यही हुई कि इसे कुछ अवधि के लिए क़ैद ही कर दें।

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيَانِ ۖ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَانِي أَعْصِرُ خَمْرًا ۖ وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرَانِي أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْزًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۖ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ ۖ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝

३६- और उनके साथ दो और नौजवान भी जेल खाने में दाख़िल हुए, उनमें से एक ने कहा, ''मैंने (सपना) देखा है कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ'' दूसरे ने कहा, ''मैंने देखा है कि मैं अपने सर पर रोटियाँ उठाए हुए हूँ जिनको परिन्दे खा रहे हैं, हमें इसकी तअ़बीर (स्वप्न फल) बता दीजिए कि हमें तो आप भले मालूम होते हैं।''

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقَانِهِ إِلَّا نَبَّأْتُكُمَا بِتَأْوِيلِهِ قَبْلَ أَن يَأْتِيَكُمَا ۚ ذَٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي ۚ إِنِّي تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ

३७- (यूसुफ़ ने) कहा, ''जो खाना तुम्हें मिलता है उसके आने से पहले ही मैं तुम्हें इसकी तअ़बीर (स्वप्नफल) बता दूँगा, यह उस इल्म में से है, जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है,

كٰفِرُوْنَ ۝

मैंने उन लोगों के धर्मों को छोड़ दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते, और आख़िरत का भी इन्कार करते हैं;

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۭ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝

३८- और मैंने अपने बाप-दादा इब्राहीम, और इस्हाक़, और याकूब के दीन को अपनाया, हम से यह नहीं हो सकता कि हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक करें; यह अल्लाह की मेहरबानी है हम पर और लोगों पर, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

३९- ऐ जेल के साथियो! क्या अलग- अलग बहुत से रब अच्छे हैं, या अकेला अल्लाह ज़बर्दस्त (प्रभुत्वशाली);

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۭ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

४०- तुम 'उसके' सिवा जिसकी भी इबादत करते हो, वे तो बस नाम हैं, जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिये हैं, उनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा, सत्ता और अधिकार तो बस अल्लाह का है, 'उसने' हुक्म दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो; यही सीधा (सच्चा) धर्म है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते;

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ۭ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ۝

४१- ऐ जेल के साथियो! तुम में से एक तो अपने मालिक को शराब पिलाएगा, और दूसरा सूली पर चढ़ाया जाएगा और परिन्दे उसका सर नोंच कर खाएँगे, इस बात का फ़ैसला हो चुका है जिसको तुम पूछ रहे हो।''

وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۡ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ۝

४२- और (दोनों से) जिसके बारे में उसने समझा था कि रिहा हो जाने वाला है उससे कहा, ''अपने मालिक के पास मेरी चर्चा करना।'' मगर शैतान ने अपने मालिक के पास चर्चा करना भुलवा दिया, और (यूसुफ) कई साल जेल ही में पड़े रहे।

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّىْٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۭ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ۝

४३- और बादशाह ने कहा, ''मैंने (सपने में) देखा है कि 'सात मोटी गायों को सात पतली गायें खा रही हैं; और सात (अनाज की) बालियाँ हरी हैं और दूसरी (सात) सूखी, ऐ मेरे (दरबार के) सरदारो! मेरे सपने का अर्थ बताओ अगर तुम तअ़बीर स्वप्नार्थ बताना जानते हो।''

४४- (दरबारियों ने) कहा, ''यह परेशान सपने हैं, और हम ऐसे सपनों का अर्थ नहीं जानते।''

قَالُوٓا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ ۖ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعَالِمِينَ ﴿٤٤﴾

४५- और उन दोनों में से जो रिहा हो गया था, उसे एक मुद्दत के बाद बात याद आ गई तो वह बोल उठा, ''मैं आप को इसका अर्थ बताता हूँ, ज़रा मुझे (यूसुफ के पास) भेज दीजिए।''

وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُم بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ ﴿٤٥﴾

४६- 'यूसुफ़' ऐ बड़े सच्चे! हमें (इस का अर्थ) बताइए, ''कि सात मोटी गायों को सात दुबली गाएँ खा रही हैं, और सात बालियाँ हरी हैं और सात बालियाँ सूखी, ताकि मैं लोगों के पास जाऊँ ताकि वे (इस का अर्थ) जान लें।''

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ لَّعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾

४७- (यूसुफ़ ने) कहा, ''सात वर्ष तक तुम लगातार खेती करते रहोगे, तो जो (फसलें) काटो, उन्हें उनकी बाली में ही रहने देना सिवाय उस थोड़ी सी के, जो तुम्हारे खाने के काम आए,

قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا فَمَا حَصَدتُّمْ فَذَرُوهُ فِي سُنبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٤٧﴾

४८- फिर इसके बाद सात कठिन (वर्ष) आएँगे जो इस (पूँजी) को खा जाएँगे, जो तुम ने उन (वर्षो) के लिए पहले से इकट्ठा कर रखा होगा, सिवाय उस थोड़े-से हिस्से के जो तुम सुरक्षित कर लोगे;

ثُمَّ يَأْتِي مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تُحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾

४६- फिर इसके बाद एक वर्ष ऐसा आएगा, जिसमें रह़मत की वर्षा भेजी जाएगी और उसमें वे लोग रस निचोड़ेंगे।

ثُمَّ يَأْتِي مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾

५०- और बादशाह ने हुक्म दिया कि (यूसुफ को) ''मेरे पास ले आओ! तो जब दूत उसके पास पहुँचा, तो उन्होंने कहा, तुम अपने मालिक के पास वापस जाओ और उनसे पूछो कि 'उन ऑ़रतों का क्या हाल है, जिन्होंने अपने हाथ घायल कर लिये, बेशक मेरा रब उनकी मक्कारी को भली-भाँति जानता है।''

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ اللَّاتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾

५१- बादशाह ने उन औ़रतों से पूछा, ''तुम्हारा क्या मामला है, जब तुम ने यूसुफ को रिझाना चाहा था?'' उन्होंने कहा, ''पाक है अल्लाह! हम ने उसमें बुराई की कोई बात नहीं

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدتُّنَّ يُوسُفَ عَن نَّفْسِهِ ۚ قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِن سُوءٍ ۚ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ الْآنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ أَنَا رَاوَدتُّهُ عَن

نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ۝

पायी'' अज़ीज़ की पत्नी बोल उठी, ''अब तो सच्ची बात ज़ाहिर ही हो चुकी है, मैंने ही अपनी ओर रिझाना चाहा था, बेशक वह तो सच्चा है।''

ذَٰلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ ۝

५२- (यूसुफ़ ने कहा) ''यह इसलिए कि उसे (अज़ीज़ को) मालूम हो जाए कि मैं ने गुप्त रूप से विश्वासघात नहीं किया, और यह कि अल्लाह विश्वासघातियों को राह नहीं दिखाता।

पारा नं०-१३

* وَمَا أُبَرِّئُ نَفْسِي ۚ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي ۚ إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

५३- और मैं अपने आप को पाक-साफ़ नहीं कहता क्यों कि नफ्स अम्मारा (जी) तो बुराई ही सिखाता है मगर यह कि मेरा रब जिस पर रह़म करे, बेशक मेरा रब माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।''

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي ۖ فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ۝

५४- और बादशाह ने हुक्म दिया, ''उनको मेरे पास ले आओ! मैं उनको अपने लिए खास कर लूँगा,'' जब उसने उनसे बात चीत की तो कहा, ''आज से तुम हमारे यहाँ दर्जे वाले और एतिबार वाले हो।''

قَالَ اجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَائِنِ الْأَرْضِ ۖ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ ۝

५५- (यूसुफ़ ने) कहा, ''देश के ख़ज़ानों पर मुझे नियुक्त कर दीजिए, इसलिए कि मैं रक्षक और इल्म वाला भी हूँ,''

وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَاءُ ۚ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ ۖ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝

५६- इस तरह हमने यूसुफ को उस ज़मीन (मिस्र) में सत्ता दे दिया, और उसमें जहाँ चाहें रहें, हम जिस पर चाहते हैं अपनी मेहरबानी भेजते हैं, और अच्छे काम करने वालों का अज्र बेकार नहीं होने देते।

وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝

५७- और आख़िरत का बदला कहीं बेहतर है, जो लोग ईमान लाए और परहेज़गारी अपनाए।

وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكِرُونَ ۝

५८- और यूसुफ़ के भाई आए (और) उनके पास हाज़िर हुए, तो उन्हों ने उन्हें पहचान लिया, और वे उन्हें न पहचान सके।

وَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخٍ لَّكُم مِّنْ أَبِيكُمْ ۚ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أُوفِي الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ۝

५९- और जब उनके लिए उनका सामान तैयार करा दिया तो कहा, ''तुम्हारे बाप की ओर से जो तुम्हारा एक (सौतेला) भाई (बिनयामीन) है, उसे भी मेरे पास लाओ क्या तुम देखते नहीं, ''मैं पूरी नाप देता हूँ और मैं मेहमानदारी भी खूब करता हूँ?-

فَإِن لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِندِي وَلَا تَقْرَبُونِ ۝

६०- फिर अगर तुम उसको मेरे पास न लाए, तो मेरे पास तुम्हारे लिए कोई माँप (ग़ल्ला) नहीं है, और न तुम मेरे पास आना।

قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ۝

६१- उन्होंने कहा, ''हम उसके बारे में उसके बाप से चर्चा करेंगे और यह (काम) हम ज़रूर करेंगे।''

وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

६२- और (यूसुफ़ ने) अपने नौकरों से कहा, ''इनका दिया हुआ माल इनके सामान में रख दो, ताकि जब यह लोग अपने घर वालों में जाएं तो उसे पहचान लें, (और) शायद कि यह वापस आएँ।''

فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا أَخَانَا نَكْتَلْ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝

६३- फिर जब वे अपने बाप के पास वापस गये तो कहा, ''ऐ अब्बा जान! हम को ग़ल्ला देने से रोक दिया गया है, तो हमारे साथ हमारे भाई को भेज दीजिए, ताकि हम ग़ल्ला लाएँ और हम ज़रूर इसकी रक्षा करेंगे।''

قَالَ هَلْ آمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا أَمِنتُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِن قَبْلُ ۖ فَاللَّهُ خَيْرٌ حَافِظًا ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝

६४- (याकूब ने) कहा, ''क्या मैं इसके मामले में तुम पर वैसा ही भरोसा करूँ जैसा इससे पहले इसके भाई के मामले में तुम पर कर चुका हूँ? अतः अल्लाह ही सबसे अच्छा रक्षक है और 'वह' सबसे बढ़कर मेहरबान है।''

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ ۖ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي ۖ هَٰذِهِ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا ۖ وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ ۖ ذَٰلِكَ كَيْلٌ يَسِيرٌ ۝

६५- और जब उन्होंने अपना सामान खोला, तो उन्होंने अपना माल अपनी ओर वापस किया हुआ पाया, वे बोले, ''ऐ हमारे बाप! हमें (और) क्या चाहिए, यह हमारा माल लौटा दिया गया है, अब हम अपने घर वालों के लिए फिर ग़ल्ला लाएँगे, और अपने भाई की रक्षा भी करेंगे, और एक ऊँट भर और अधिक लाएंगे यह अनाज थोड़ा है।

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَنْ يُحَاطَ بِكُمْ ۖ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ۝

६६- (याकूब ने) कहा, ''मैं उसे तो तुम्हारे साथ हरगिज़ नहीं भेज सकता, जब तक तुम अल्लाह के नाम पर मुझ को पक्का वचन न दे दो कि तुम उसे मेरे पास ज़रूर लाओगे, सिवाए इसके कि तुम किसी घेरे में आ जाओ,'' जब उन्होंने उनसे वचन ले लिया तो याकूब ने कहा, ''हमारे इस वचन पर अल्लाह निगहबान है।''

وَقَالَ يَا بَنِيَّ لَا تَدْخُلُوا مِنْ بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُتَفَرِّقَةٍ ۖ وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۖ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝

६७- और (याकूब ने) कहा, 'ऐ मेरे बेटो! एक ही दरवाज़े से दाख़िल न होना, बल्कि विभिन्न दरवाज़ों से दाख़िल होना और मैं अल्लाह के मामले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकता, हुक्म तो बस अल्लाह ही का चलता है 'उसी' पर मैं ने भरोसा किया, और भरोसा करने वालों को 'उसी' पर भरोसा करना चाहिए।''

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا ۚ وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

६८- और जब वे लोग दाख़िल हुए, जिस तरह उनके बाप ने उनको हुक्म दिया था- अल्लाह की ओर से होने वाली किसी चीज़ को वह उन्हें टाल नहीं सकता था, बस याकूब के जी की एक इच्छा थी जो उसने पूरी कर ली, और बेशक वह 'हमारी' दी हुई शिक्षा के आधार पर इल्म वाला था, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते;

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَخَاهُ ۖ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

६९- और जब वे लोग यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने सगे भाई को अपने पास जगह दी और बताया''मैं तुम्हारा भाई हूँ, तो यह लोग जो व्यवहार करते रहे, उस पर तुम ग़म न करो।''

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسَارِقُونَ ۝

७०- तो जब उनका सामान तैयार कर दिया, तो अपने भाई के सामान में पानी पीने का प्याला रख दिया, फिर एक पुकारने वाले ने पुकार कर कहा, ''ऐ क़ाफिले वालो! तुम तो चोर हो;

قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقِدُونَ ۝

७१- (भाइयों ने) उनकी ओर पलट कर देखा, और कहा ''तुम्हारी कौन सी चीज़ खो गई है?''

قَالُوا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ۝

७२- (दरबारियों ने) कहा, ''हमें शाही पैमाना (गिलास) नहीं मिल रहा है जो व्यक्ति उसे लाएगा एक ऊँट के बोझ भर

ग़ल्ला (इनआ़म) मिलेगा, मैं उसकी ज़िम्मेदारी लेता हूँ।''

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُم مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سَارِقِينَ

७३- (भाइयों ने) कहा, ''अल्लाह की क़सम! तुम लोग जानते ही हो कि हम इस ज़मीन पर न फ़साद करने वाले हैं और न हम चोर हैं।''

قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِن كُنتُمْ كَاذِبِينَ

७४- (दरबारियों ने) कहा, ''अगर तुम झूठे सिद्ध हुए तो फिर उसकी सज़ा क्या होगी?''

قَالُوا جَزَاؤُهُ مَن وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ

७५- (भाइयों ने) कहा, ''उसकी सज़ा यह है कि जिसके सामान में वह मिले वही उसका बदला ठहराया जाए हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं।''

فَبَدَأَ بِأَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِن وِعَاءِ أَخِيهِ ۚ كَذَٰلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ ۖ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّن نَّشَاءُ ۗ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ

७६- फिर (यूसुफ़ ने) अपने भाई की बोरी से पहले उनके थैलियों की तलाशी शुरू की; फिर अपने भाई की थैलियों से उस (प्याले) को बरामद कर लिया; इस तरह 'हमने' यूसुफ़ के लिए उपाय की, वह शाही क़ानून के अनुसार अपने पास नहीं रख सकता था, मगर यह कि अल्लाह चाहे, 'हम' जिसको चाहते हैं दर्जे बुलन्द करते हैं, और हर इल्म वाले से दूसरा इल्म वाला बढ़ कर है

قَالُوا إِن يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَّهُ مِن قَبْلُ ۚ فَأَسَرَّهَا يُوسُفُ فِي نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ أَنتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ

७७- (भाइयों ने) कहा, ''अगर इसने चोरी की है तो इसका एक भाई भी चोरी कर चुका है, मगर यूसुफ ने इसे अपने जी ही में रखा, और उन पर ज़ाहिर नहीं किया।'' उन्होंने कहा, ''तुम बहुत बुरे हो! जो कुछ तुम कह रहे हो, अल्लाह उसकी हक़ीक़त खूब जानता है।''

قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا مَكَانَهُ ۖ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ

७८- (भाइयों ने) कहा, ''ऐ अ़ज़ीज़! इसका बाप बहुत ही बूढ़ा है इसलिए इसकी जगह पर हममें से किसी को रख लीजिए, हमारी नज़र में तो आप एहसान करने वाले हैं।''

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَن نَّأْخُذَ إِلَّا مَن وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عِندَهُ إِنَّا إِذًا لَّظَالِمُونَ

७६- (यूसुफ़ ने) कहा, ''इस बात से अल्लाह पनाह में रखे कि, जिसके पास हमारी चीज़ निकली है, उसके सिवा किसी और को पकड़ लें, अगर हम ऐसा करेंगे तो हम ज़ालिम होंगे।''

८०- फिर जब नाउम्मीद हो गये, तो अलग होकर सलाह़ करने लगे, उसमें से जो बड़ा था, उसने कहा, ''क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता तुमसे अल्लाह के नाम पर वचन ले चुके हैं, और इससे पहले भी यूसुफ़ के मामले में जो तुमसे ग़लती हो चुकी है? मैं तो अब इस ज़मीन से हरगिज़ हिलने वाला नहीं हूँ, जब तक कि मेरे पिता मुझे हुक्म न दें, या अल्लाह कोई फ़ैसला न कर दे, और 'वह' सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है।''

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِیْ یُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى یَاْذَنَ لِیْۤ اَبِیْۤ اَوْ یَحْكُمَ اللّٰهُ لِیْ ۚ وَهُوَ خَیْرُ الْحٰكِمِیْنَ ۝

८१- तुम सब अपने बाप के पास लौट कर जाओ और कहो, ''ऐ अब्बा जान! आप के बेटे ने चोरी की है, और हमने वही बात बयान की जो हम जानते थे और ग़ैब (परोक्ष) हमारी नज़र में था नहीं;

اِرْجِعُوْۤا اِلٰۤى اَبِیْكُمْ فَقُوْلُوْا یٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَیْبِ حٰفِظِیْنَ ۝

८२- और आप उस बस्ती (के लोगों) से पूछ लीजिए, जहाँ हम ठहरे थे और उन क़ाफिले वालों से, जिसके साथ हम आए थे, और हम बिल्कुल सच्चे हैं।''

وَسْـَٔلِ الْقَرْیَةَ الَّتِیْ كُنَّا فِیْهَا وَالْعِیْرَ الَّتِیْۤ اَقْبَلْنَا فِیْهَا ؕ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝

८३- (याकूब ने) कहा, ''नहीं बल्कि तुम्हारे जी ही ने (तुम्हें पट्टी पढ़ा कर) एक बात बना दी है, तो अब सब्र से ही काम लेना बेहतर है, अ़जब नहीं कि अल्लाह उन सब को मेरे पास ले आए, बेशक 'वह' तो सब कुछ जानने वाला, ह़िकमत वाला है।''

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِیْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ یَّاْتِیَنِیْ بِهِمْ جَمِیْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ۝

८४- और (याकूब ने) उनकी ओर से मुँह फेर लिया और पुकार उठे, ''हाय अफ़सोस, यूसुफ़ पर और ग़म से उनकी आँखे सफेद पड़ गयीं (और) उनका दिल ग़म से भर रहा था।

وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ یٰۤاَسَفٰى عَلٰى یُوْسُفَ وَابْیَضَّتْ عَیْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِیْمٌ ۝

८५- वे कहने लगे, ''अल्लाह की क़सम! आप तो यूसुफ़ ही की याद में लगे रहेंगे, यहाँ तक कि अपने आप को घुला देंगे या हलाक हो जाएँगे।''

قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ یُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِیْنَ ۝

८६- (याकूब ने) कहा, ''मैं तो अपनी परेशानी और अपने ग़म की शिकायत अल्लाह ही से करता हूँ, और अल्लाह की ओर

قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّیْ وَحُزْنِیْۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

से मैं वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते;

८७- बेटो! जाओ यूसुफ और उसके भाई को खोजो और अल्लाह की रह़मत से मायूस न हो 'उसकी' रह़मत से तो काफ़िर ही मायूस होते हैं।''

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ

८८- तो जब वे उनके पास पहुँचे तो कहा, ''ऐ अज़ीज! हमें और हमारे घर वालों को बहुत तकलीफ़ पहुँची है, और हम थोड़ी सी पूँजी लाए हैं; तो आप हमें ग़ल्ला पूरा दीजिए, और हमें सद्क़ा दीजिए कि अल्लाह सदक़ा करने वालों को बदला देता है।''

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ

८९- (यूसुफ़ ने) कहा, ''क्या तुम्हें मालूम है कि तुमने यूसुफ़ और उनके भाई के साथ क्या किया था जब कि तुम जिहालत में फंसे हुए थे?''

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ

९०- (भाईयों ने) कहा, ''क्या वास्तव में आप ही यूसुफ़ हैं?'' उन्होंने कहा, ''हाँ मैं ही यूसुफ हूँ। और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने हम पर एहसान फ़रमाया है, और जो व्यक्ति अल्लाह से डरता और सब्र से काम लेता है, तो अल्लाह ऐसे नेक लोगों का बदला अकारथ नहीं करता।''

قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ۭ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ ۡ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ۭ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ

९१- वे बोले, ''अल्लाह की क़सम! आप को अल्लाह ने हम पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी और बेशक हम ही ख़ताकार थे।

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِــِٕيْنَ

९२- (यूसुफ़ ने) कहा, ''आज के दिन तुमसे कोई पूछ-गछ नहीं अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, और 'वह' सबसे बढ़ कर रह़म करने वाला है।''

قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۭ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۡ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ

९३- मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसे मेरे अब्बा के चेहरे पर डाल दो, उनकी आँखों की रोशनी लौट आएगी, और अपने तमाम घर वालों को लेकर मेरे पास आओ।''

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰي وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ

९४- और जब क़ाफ़िला रवाना हुआ तो उनके अब्बा कहने लगे, ''अगर तुम लोग यह न कहो कि मैं बहक गया हूँ तो मुझे

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّىْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ

यूसुफ की खुशबू आ रही है।''

९५- (भाइयों ने) कहा, ''अल्लाह की क़सम! आप अभी तक अपनी उसी पुरानी गुमराही (भ्राँति) में पड़े हुए हैं।''

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ۝

९६- तो जब खुशख़बरी देने वाला आया तो उसने कुर्ता उनके चेहरे पर डाल दिया और उनकी (आँखों की) रोशनी लौट आई, उन्होंने कहा, ''क्या मैंने तुमसे कहा न था कि मैं अल्लाह की ओर से वह बातें जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते।''

فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۙ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

९७- (बेटों ने) कहा, ''ऐ अब्बा जान! हमारे गुनाहों के माफ़ी के लिए दुआ़ कीजिए, बेशक हम ख़ताकार थे।''

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ۝

९८- उन्होंने कहा, ''मैं अपने रब से तुम्हारे लिए माफ़ी की दुआ़ करूँगा बेशक 'वह' बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है।''

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ۗ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

९९- जब यूसुफ़ के पास पहुँचे, तो उसने अपने माँ-बाप को अपने पास जगह दी और कहा, ''मिस्र (शहर) में दाख़िल हो जाओ, 'इन्शाअल्लाह' अमन और चैन के साथ (रहोगे)।''

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۝

१००- और अपने माँ-बाप को अ़र्श (सिंहासना) पर ऊँचा बिठाया, और सब उसके आगे सज्दे में गिर पड़े; उन्होंने कहा, ''अब्बा जान! यह है मतलब मेरे उस सपने का, जो मैंने पहले देखा था, मेरे रब ने इसे सच्चा कर दिखाया। और उसने मुझ पर एह्सान किये हैं कि मुझे उसने जेलख़ाने से निकाला इसके बाद कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के बीच फ़साद डलवा दिया था; आप को गाँव से यहाँ ले आया, बेशक, मेरा रब जो चाहता है तद्बीर (सूक्ष्म उपाय से) करता है, 'वही' इल्म वाला, हि़कमत वाला है।

وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ۗ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ۗ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ۗ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝

१०१- ऐ मेरे रब! 'तूने' मुझे हुकूमत दी और सपनों की तअ़बीर (स्वप्नार्थ) का इल्म दिया, ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, दुनिया और आख़िरत में 'तू' ही मेरा संरक्षक है, मुझे इस हालत में मौत दे कि मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी)

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۫ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝

हूँ, और मुझे भले बन्दों मे शामिल कीजिए।

ذٰلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُونَ ۝

१०२- यह ग़ैब (परोक्ष) की खबरों में से है जिसकी हम तुम पर 'वह्य' कर रहे हैं, वरना तुम उस समय उनके पास मौजूद न थे, जब उन्होंने आपस में एक बात तय कर के साज़िश की थी;

وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ۝

१०३- और बहुत से लागों (का हाल यह है कि) चाहे आप (जितना) चाहें, ईमान लाने वाले नहीं।

وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

१०४- और आप इस पर उनसे कोई अज्र (बदला) भी तो नहीं माँगते हैं, यह तो एक नसीहत है तमाम दुनिया वालों के लिए।

وَكَأَيِّنْ مِنْ آيَةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ۝

१०५- और कितनी ही निशानियाँ हैं आसमानों और ज़मीन में, जिन पर से यह लोग गुज़रते हैं, मगर उनकी ओर ध्यान ही नहीं देते;

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ ۝

१०६- उनमें अक्सर लोग अल्लाह को मानते भी हैं तो इस तरह कि वे साझीदार भी ठहराते हैं;

أَفَأَمِنُوا أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِنْ عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

१०७- क्या ये इस बात से बेख़बर हैं कि अल्लाह का अज़ाब उन्हें ढाँक ले, या अचानक वह घड़ी (क़ियामत) ही उन पर आ जाए, और उन्हें ख़बर भी न हो।

قُلْ هَٰذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ ۚ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي ۖ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

१०८- कह दीजिए, ''यह है मेरा रास्ता, मैं अल्लाह की ओर बुलाता हूँ; मैं खुद भी समझबूझ कर (बुलाता हूँ) और मेरे मानने वाले भी- और अल्लाह ही के लिए पाकी है- और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ।''

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ ۗ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

१०६- और आप से पहले भी 'हमने' जिनको रसूल बनाकर भेजा था, वे सब बस्तियों के ही रहने वाले मर्द थे, 'हम' उनकी ओर ''वह्य'' (प्रकाशना) करते थे तो, क्या (यह) ज़मीन पर चले फिरे नहीं! कि देख लेते कि जो लोग इनसे पहले गुज़र चुके हैं उनका कैसा अंजाम हुआ? और परहेज़गारों के लिए आख़िरत का घर ज़्यादा बेहतर है; तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते।

حَتّٰٓى اِذَا اسْتَيْــَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ ۭ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۱۰﴾

११०- यहाँ तक कि जब रसूल नाउम्मीद हो गये, और वे समझने लगे कि मदद के बारे में जो बात उन्होंने कही थी उसमें वे सच्चे न निकले तो अचानक हमारी मदद उनके पास आ पहुँची, और वे लोग बचा लिए गये जिनको 'हमने' बचाना चाहा, और मुजरिमों से तो हमारा अ़ज़ाब टलता ही नहीं।

لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ۭ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱۱﴾

१११- उनके किस्सों में बुद्धि और समझ रखने वालों के लिए एक नसीह़त है, यह कोई ऐसी बात नहीं है, जो बना ली गयी हो, बल्कि यह अपने से पहले की पुष्टि में है, और हर चीज़ का विस्तार और ईमान वालों के लिए हिदायत (मार्ग दर्शन) और रह़मत है।



अनुवाद-सूरतुर्रअ़दि

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के, ३६१४ अक्षर, ८६३ शब्द, ४३ आयतें और ६ रूकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

الٓمّٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ۗ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ①

१- अलिफ़्- लाम्- मीम्- रा, यह किताब की आयतें हैं और जो कुछ आप के 'रब' की ओर से आप पर नाज़िल किया गया है वह ह़क़ है, मगर अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۗ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ②

२- अल्लाह 'वह' है जिसने आसमानों को बिना सुतून (सहारे) के ऊँचा खड़ा कर दिया, (जैसा) कि तुम उन्हें देखते हो, फिर अर्श (सिंहासन) पर क़ायम हुआ; और सूरज और चांद को काम में लगा दिया, हर एक निश्चित समय तक के लिए चले जा रहे हैं, 'वही' सारे कामों का इन्तिज़ाम करता है वह अपनी आयतें साफ़-साफ़ बयान करता है, ताकि तुम अपने 'रब' से मिलने का यक़ीन कर लो।

وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا ۗ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ③

३- और वह 'वही' है 'जिसने' ज़मीन को फैलाया और उसमें पहाड़ और नदियाँ पैदा कीं, और उसमें हर तरह के फलों की दो-दो क़िस्में बनाईं। 'वही' रात से दिन को ढ़ांप देता है, इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं।

وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَاۗءٍ وَّاحِدٍ ۣ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰي بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ④

४- और ज़मीन में एक-दूसरे से मिले हुए भू-भाग और अंगूर के बाग़ और खेतियाँ और ऐसी खजूरें हैं जिनमें कुछ की बहुत सी शाखें होती हैं और कुछ की इतनी नहीं होतीं, सबको पानी एक ही दिया जाता है, फिर भी 'हम' पैदावार और स्वाद में किसी को किसी के मुक़ाबले में

बढ़ा देते हैं; इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं।

५- और अगर तुम्हें तअ़ज्जुब ही करना है तो तअ़ज्जुब की बात तो उनका यह कहना है कि ''क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे'' तो क्या हम नए सिरे से पैदा किये जाएंगे? यही हैं जिन्होंने अपने 'रब' के साथ इन्कार की नीति अपनाई, और यही हैं जिनकी गर्दनों में तौंक़ डाले जाएंगे और यही दोज़ख़ वाले हैं कि उसी में हमेशा रहेंगे।

وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

६- और ये लोग भलाई से पहले बुराई के लिए तुमसे जल्दी मचा रहे हैं, हालाँकि उनसे पहले कितनी ही इबरतनाक (शिक्षाप्रद) मिसालें गुज़र चुकी हैं; और तुम्हारा 'रब' लोगों को उनके ज़ुल्म के बावजूद माफ़ कर देता है, बेशक तुम्हारा 'रब' सज़ा देने में बड़ा सख़्त है।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

७- और जिन्होंने इन्कार किया वे कहते हैं, ''इस पर उसके 'रब' की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी?'' आप तो केवल चेतावनी देने वाले हैं और हर क़ौम के लिए, हिदायत करने (रास्ता बतलाने) वाले होते चले आए हैं।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝

८- अल्लाह जानता है जिसको हर माँ अपने रह़िम (गर्भाश्य) में रखती है और जो रह़िम (गर्भाश्य) में कमी-बेशी होती है, और 'उसके' यहाँ हर एक चीज़ का निश्चित अन्दाज़ा है;

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝

९- वह छिपी और ज़ाहिर तमाम बातों का जानने वाला, और बड़ाई में बहुत ऊँची शान वाला हैं।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝

१०- तुम में से जो व्यक्ति चुपके से बात कहे और जो पुकार कर कहे, और जो कोई रात में छिपता हो, और जो दिन में चलता-फिरता हो ('उसके' लिए) सब बराबर हैं।

سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ۝

११- उसके आगे और पीछे (अल्लाह के) रक्षक होते हैं, जो अल्लाह के हुक्म से उसकी ह़िफ़ाज़त करते हैं; अल्लाह किसी क़ौम की ह़ालत को (जो नेअ़मत उसे मिली है) नहीं बदलता,

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ

بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ
مِنْ وَّالٍ ۝

जब तक कि वह अपनी ह़ालत को नहीं बदलते; और जब अल्लाह किसी क़ौम पर बुराई का इरादा करता है तो फिर ‘वह’ उससे हटती नहीं, और फिर ‘उसके’ सिवा कोई मदद्‌गार नहीं रहता।

هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّیُنْشِئُ السَّحَابَ
الثِّقَالَ ۝

१२- ‘वही’ तो है जो तुम को डराने और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखलाता है और भारी बादलों को उठाता है।

وَیُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِیْفَتِهٖ ۚ
وَیُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَیُصِیْبُ بِهَا مَنْ یَّشَآءُ وَهُمْ
یُجَادِلُوْنَ فِی اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِیْدُ الْمِحَالِ ۝

१३- और (गरजने वाला) बादल अल्लाह की तअ़रीफ़ के साथ पाकी बयान करता है और फ़रिश्ते भी ‘उसके’ डर से, और ‘वही’ कड़कती बिजलियाँ भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा देता है, और वे अल्लाह के विषय में झगड़ रहे होते हैं, और ‘उसकी’ तद्‌बीर (उपाय) बड़ी सख़्त है।

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۚ وَالَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا
یَسْتَجِیْبُوْنَ لَهُمْ بِشَیْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّیْهِ اِلَى الْمَآءِ
لِیَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ۚ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِیْنَ
اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ ۝

१४- ‘उसी’ के लिए सच्ची पुकार है; उसके अ़लावा जिनको ये पुकारते हैं, वे उनकी पुकार का कुछ भी जवाब नहीं देते- बस यह तो ऐसा ही है, जैसे कोई अपने दोनों हाथ पानी की ओर इसलिए फैलाए कि वह उसके मुँह में पहुँच जाए, हालाँकि वह उस तक पहुँचने वाला नहीं- कुफ़्र करने वालों की पुकार तो बस भटकने ही के लिए होती है।

وَلِلّٰهِ یَسْجُدُ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا
وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۩ ۝ सज्दः

१५- और अल्लाह ही को सज्दः करते हैं, (जो) आसमानों में हैं और (जो) ज़मीन में हैं खुशी से या मजबूरी से, और उनके साए (परछाइयाँ) भी सुबह़ और शाम (सज्दः करते हैं)।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ قُلِ اللّٰهُ ۚ قُلْ
اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِیَآءَ لَا یَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ
نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۚ قُلْ هَلْ یَسْتَوِی الْاَعْمٰی وَالْبَصِیْرُ ۚ اَمْ
هَلْ تَسْتَوِی الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ
شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَیْهِمْ ۚ
قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

१६- कह दीजिए “ आसमानों और ज़मीन का ‘रब’ कौन है?” कह दीजिए, “अल्लाह” (फिर) कह दीजिए, “तो क्या तुमने उससे हटकर दूसरों को अपना संरक्षक बना रखा है, जिन्हें खुद न अधिकार है अपने किसी लाभ का और न किसी नुक़्सान का?” कह दीजिए, “क्या अन्धा और आँखों वाला बराबर होते हैं? या अंधेरा और उजाला बराबर हो सकते हैं?” या उन लोगों ने जिनको अल्लाह का साझीदार ठहराया है, उन्होंने भी कुछ पैदा किया है, जैसा कि उस (अल्लाह) ने पैदा किया है, जिसकी वजह से सृष्टि की रचना में भ्रम पैदा हो गया है।” कह दीजिए, “हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह है, और ‘वह’ अकेला ज़बर्दस्त है”

أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ۚ وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ۝

१७- 'उसने' आसमान से पानी उतारा तो नदी-नाले अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार बह निकले, फिर पानी के बहाव ने उभरे हुए झाग को उठा लिया और उसमें से भी, जिसे ज़ेवर और सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं, वैसा ही झाग उठता है- इस तरह़ अल्लाह ह़क़ और नाह़क़ की मिसाल बयान करता है- फिर जो झाग है वह तो सूखकर नष्ट हो जाता है और जो लोगों को लाभ पहुँचाने वाला होता है, वह ज़मीन में बाक़ी रहता है; इस तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है।

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝

१८- जिन्होंने अपने 'रब' की बात को क़ुबूल कर लिया, उनके लिए भलाई है; और जिन्होंने 'उसका' हुक्म न माना, अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो धरती में है, बल्कि उसके साथ उतना और भी हो तो वे सब दे डालें, (अपने छुटकारे के) बदले में, वही हैं जिनका बुरा हिसाब होगा, और उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बुरी जगह है।

أَفَمَن يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

१९- भला! जो व्यक्ति जानता हो कि जो कुछ आप पर उतरा है आप के रब की ओर से वह ह़क़ है, क्या ऐसा व्यक्ति उस जैसा हो सकता है जो अन्धा है? समझते तो वही हैं जिनको बुद्धि है-

الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنقُضُونَ الْمِيثَاقَ ۝

२०- जो अल्लाह के साथ किये हुए अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करते हैं और अपने वचन को तोड़ते नहीं;

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۝

२१- और जो ऐसे हैं कि जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है, उसे जोड़ते हैं और अपने रब से डरते रहते हैं और बुरे हिसाब का उन्हें डर लगा रहता है।

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۝

२२- और जिन लोगों ने अपने रब की ख़ुशी ह़ासिल करने के लिए सब्र से काम लिया, और नमाज़ें क़ायम रखीं, और 'हमारे' दिये हुए में से खुले और छिपे खर्च किया, और बुराई के बदले में भलाई की; यही लोग हैं जिनका आख़िरत में अच्छा बदला है-

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَن صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِم

२३- रहने के बाग़ हैं जिनमें वे दाख़िल होंगे, और उनके बाप-दादा, और उनकी पत्नियाँ और औलाद में से जो नेक

مِّنْ كُلِّ بَابٍ ۝٢٣

होंगे वे भी, और हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास आएँगे।

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝٢٤

२४- (फ़रिश्ते कहेंगे) ''तुम पर सलामती हो इसके बदले में कि तुमने सब्र किया, और आख़िरत का घर खूब (घर) है।

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَ يَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ۝٢٥

२५- और जो लोग अल्लाह के साथ पक्का अ़हद करने के बाद तोड़ते हैं, और अल्लाह ने जिनको जोड़े रहने का हुक्म दिया है उसे तोड़ते हैं, और ज़मीन पर फ़साद फैलाते हैं, यही लोग हैं जिन पर लानत है और उनके लिए (आख़िरत में) बहुत बुरा घर है।

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۗ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ۝٢٦

२६- अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है; और जिसकी चाहता है कम कर देता है, और वे दुनिया की ज़िन्दगी पर रीझते हैं, हालाँकि दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं सिवाय थोड़े से लाभ के।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۗ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ۝٢٧

२७- और जिन लोगों ने इन्कार किया वे कहते हैं, ''इस पर इसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी?'' कह दीजिए, ''अल्लाह जिसे चाहता है उसे बेराह (पथभ्रष्ट) कर देता है, और 'अपनी' ओर की राह उसी को दिखाता है जो 'उसकी' ओर रूजू (आकृष्टि) होता है।''

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ۗ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ۝٢٨

२८- जो लोग ईमान लाए और उनके दिलों में अल्लाह की याद से चैन मिलता है, जान लो! कि अल्लाह की याद से दिलों को चैन मिलता है।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ۝٢٩

२९- जो लोग ईमान लाए; और भले काम किये, उनके लिए भलाई है और अच्छा ठिकाना है।

كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا۟ عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ۗ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ۝٣٠

३०- उसी तरह 'हमने' आप को ऐसी उम्मत (समुदाय) में रसूल बना कर भेजा है कि उससे पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, ताकि जो 'वह्य' 'हमने' भेजी है, पढ़ कर उनको सुना दें; और ये लोग रह्मान का इन्कार करते हैं। कह दीजिए, 'वही' मेरा रब है 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, 'उसी' पर मेरा भरोसा है, और 'उसी' की

ओर रूजूअ़ करता हूँ।

३१- और अगर ऐसा कुर्आन होता जिसके ज़रिये पहाड़ चला दिये जाते, या उससे धरती के टुकड़े-टुकड़े हो जाते, या उससे मुर्दों के साथ किसी की बातें करा दी जातीं (तब भी यह लोग ईमान न लाते) बल्कि यह सब काम अल्लाह ही के अधिकार में हैं; तो क्या ईमान वालों को फिर भी इस बात को जान कर मायूसी (निराशा) नहीं हुई, अगर अल्लाह चाहता तो सारे ही लोगों को सीधी राह पर ले आता; और इन्कार करने वालों पर उनके करतूतों की वजह से हमेशा कोई न कोई आफ़त आती रहेगी, या उनके मकानों के क़रीब उतरती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ पहुँचेगा, बेशक अल्लाह कभी वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता।''

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِّعَتْ بِهِ
الْأَرْضُ أَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتَىٰ ۗ بَل لِّلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۗ
أَفَلَمْ يَيْأَسِ الَّذِينَ آمَنُوا أَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ
لَهَدَى النَّاسَ جَمِيعًا ۗ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا
تُصِيبُهُم بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِّن
دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ
الْمِيعَادَ ۝

३२- और आप से पहले कितने ही रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया जा चुका है, (किन्तु)'मैंने' इन्कार करने वालों को मोहलत दी, फिर 'मैंने' उनको पकड़ लिया, तो कैसी रही 'मेरी' सज़ा!

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَمْلَيْتُ
لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ
عِقَابِ ۝

३३- भला 'वह' (अल्लाह) जो हर नफ़्स (इन्सान) के काम की ख़बर रखता है, और उन लोगों ने अल्लाह का साझीदार ठहरा दिया; कह दीजिए, ''उन लोगों के नाम तो लो! क्या तुम उसे ऐसी बात की ख़बर दे रहे हो, जिसे 'वह' नहीं जानता या ऊपर-ऊपर ही बातें करते हो।'' सच्चाई यह है कि काफ़िरों के लिए उनकी मक्कारियाँ खूबसूरत मालूम होती हैं, और वे सीधे रास्ते से रोक दिये गये हैं, और जिसको अल्लाह ही गुमराही में छोड़ दे, उसे कोई रास्ता बताने वाला नहीं;

أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۗ وَجَعَلُوا
لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ ۚ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ
فِي الْأَرْضِ أَم بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۗ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِينَ
كَفَرُوا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا عَنِ السَّبِيلِ ۗ وَمَن يُضْلِلِ
اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

३४- उनके लिए दुनिया की ज़िन्दगी में भी अ़ज़ाब है, और आख़िरत का अ़ज़ाब तो और भी सख़्त है, और कोई नहीं जो उन्हें अल्लाह (के अ़ज़ाब) से बचा सके।

لَّهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ ۖ
وَمَا لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَاقٍ ۝

३५- जिस जन्नत (बाग़) का वादा परहेज़गारों से किया गया है, उसकी हालत यह है कि उसके नीचे नहरें बहती होंगी, उसका फल हमेशा रहेगा और साया भी, यह बदला है

مَّثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ تَجْرِي مِن
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ أُكُلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا ۚ تِلْكَ عُقْبَى
الَّذِينَ اتَّقَوا ۖ وَّعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ۝

परहेज़गारों के लिए; और इन्कारियों (काफ़िरों) का बदला आग है।

وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُنْكِرُ بَعْضَهُ ۚ قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ ۚ إِلَيْهِ أَدْعُو وَإِلَيْهِ مَآبِ (٣٦)

३६- और जिन लोगों को 'हमने' किताब दी है वे उससे, जो आप की ओर उतारा है खुश होते हैं; और उन्हीं में के कुछ फ़िर्के ऐसे भी हैं जो उसकी कुछ बातों का इन्कार करते हैं, कह दीजिए, ''मुझे तो बस यह हुक्म हुआ है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करूँ और 'उसका' साझीदार न ठहराऊँ, मैं उसी की ओर बुलाता हूँ और उसी की ओर मुझे लौट कर जाना है।''

وَكَذَٰلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۚ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَمَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا وَاقٍ (٣٧)

३७- और इसी तरह 'हमने' इस (क़ुर्आन) को उतारा कि वह एक विशेष हुक्म है अ़रबी भाषा में; और अगर आप उन की इच्छाओं पर चलें, उस इल्म के आ जाने के बाद, जो आप तक पहुँच चुका है, तो अल्लाह के मुक़ाबले में न तो आप का कोई मदद्गार होगा और न कोई बचाने वाला।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۚ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ (٣٨)

३८- और 'हम' आप से पहले बहुत से रसूल भेज चुके हैं, और 'हमने' उनको पत्नियाँ और सन्तान भी दी थीं, और किसी रसूल के अधिकार में न था कि वह अल्लाह की इजाज़त के बिना कोई निशानी लाए, हर चीज़ के लिए एक समय है जो लिखित है।

يَمْحُو اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثْبِتُ ۖ وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ (٣٩)

३९- अल्लाह जिसे चाहता है मिटा देता है, और (जिसे चाहता) बाक़ी रखता है, और 'उसी' के पास अस्ल किताब है।

وَإِنْ مَا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ (٤٠)

४०- और अगर 'हम' आप को कोई वादा दिखला दें, जो उनसे किया है या हम आप को वफ़ात (मौत) दे दें; तो आप का काम तो केवल (सन्देश) पहुँचा देना है, और हिसाब लेना तो 'हमारे' ज़िम्मे है।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ (٤١)

४१- क्या उन्होंने देखा नहीं! कि 'हम' इस ज़मीन के चारों ओर की सीमाओं को घटाते हुए बढ़ रहे हैं? और अल्लाह ही हुक्म करता है; कोई नहीं जो 'उसके' हुक्म को रद्द कर सके, और 'वह' जल्द हिसाब लेने वाला है।

४२- और इनसे पहले जो लोग गुज़रे हैं, वे भी योजनाएँ बना चुके (चालें चलते रहे) लेकिन हक़ीक़ी योजना बनाना तो पूरा अल्लाह ही के हाथ में है, हर नफ़्स (इन्सान) जो कुछ वह करता है वह उसे जानता है, इन्कार करने वालों को जल्द ही मालूम हो जाएगा कि आख़िरत के घर (जन्नत) का कौन हक़दार है।	وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفَّارُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾
४३- और काफ़िर कहते हैं, आप उसके भेजे हुए (रसूल) नहीं हैं, कह दीजिए, ''तुम्हारे और मेरे बीच में अल्लाह गवाही के लिए काफ़ी है, और वह व्यक्ति जिसके पास (अल्लाह की) किताब का इल्म है।	وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِندَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ ﴿٤٣﴾



अनुवाद-सूरतु इब्राहीम

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के ३६०१ अक्षर, ८४५ शब्द, ५२ आयतें और ७ रूकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ

१- अलिफ़्- लाम्- रा-, यह एक किताब जिसे 'हमने' आप पर उतारा है, ताकि आप लोगों को अन्धेरों से उजाले की ओर उनके रब के हुक्म से ले आएँ, शक्तिशाली, ख़ूबियों वाले अल्लाह के रास्ते की ओर।

اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ۙ

२- 'वह' अल्लाह (ऐसा है) कि 'उसी' का है, जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, और इन्कार करने वालों के लिए बड़े सख़्त अ़ज़ाब की ख़राबी है।

الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۗ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ ۢ بَعِيْدٍ

३- जो आख़िरत के मुक़ाबले दुनिया को पसंद करते, और अल्लाह के रास्ते से रोकते, और उसमें टेढ़ पैदा करना चाहते हैं, ये लोग रास्ता भूल कर दूर जा पड़े।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۗ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

४- और 'हमने' जो भी रसूल भेजे, उनकी अपनी क़ौम की भाषा के साथ भेजा, ताकि उन्हें स्पष्ट तरीक़े से बयान करे, तो अल्लाह जिसे चाहता है बेराह करता है और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है, और 'वह' ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाला है।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ

५- और 'हमने' मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा था कि, "अपनी क़ौम को अन्धेरों से उजाले की ओर निकालें, और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिलाएँ, बेशक इसमें हर उस व्यक्ति के लिए निशानियाँ हैं जो सब्र और शुक्र करने वाला हो।"

६- और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ''तुम अपने ऊपर अल्लाह की उन नेअ़मतों को याद करो, जब कि तुम को फ़िरऔ़न की क़ौम से छुड़ा दिया था, वे लोग तुम्हें बुरी सज़ा देते थे, और तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह़ (कत्ल) कर डालते थे, और तुम्हारी औ़रतों को ज़िन्दा रखते थे, इसमें तुम्हारे रब की ओर से बड़ी आज़माइश थी।''

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ
إِذْ أَنْجَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ
الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۚ
وَفِي ذَٰلِكُمْ بَلَاءٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٦﴾

७- और जब तुम्हारे रब ने सचेत कर दिया, ''अगर तुम शुक्र करोगे तो 'मैं' तुम्हें और ज़्यादा दूँगा, और अगर नाशुक्री (अकृतज्ञता) करोगे तो मेरी सज़ा बड़ी सख़्त है।''

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ ۖ وَ
لَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ﴿٧﴾

८- और मूसा ने कहा, ''अगर तुम और वे लोग जो ज़मीन में हैं सारे के सारे (अल्लाह की) नाशुक्री करने लगें, तो अल्लाह बेनियाज़, (बेपरवाह) ख़ूबियों वाला है।''

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنْ تَكْفُرُوا أَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿٨﴾

९- क्या तुम को उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं? क़ौमे नूह़, और आ़द और समूद और जो उनके बाद हुए उन्हें और कोई नहीं जानता सिवाय अल्लाह के, उनके पास उनके रसूल खुली हुई निशानियाँ लेकर आए, तो उन्होंने उनके मुँह पर अपने हाथ रख दिये और कहने लगे, ''जो कुछ देकर तुम्हें भेजा गया है, हम उसका इन्कार करते हैं और जिसकी ओर तुम हमें बुला रहे हो, हम को तो उसमें शंका है जो हम को तरद्दुद (असमन्जस) में डाले हुए है''

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ
وَعَادٍ وَثَمُودَ ۛ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۛ لَا
يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ
فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا
بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِمَّا تَدْعُونَنَا
إِلَيْهِ مُرِيبٍ ﴿٩﴾

१०- उनके रसूलों ने कहा, ''क्या आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, अल्लाह के विषय में सन्देह है? 'वह' तो तुमको इसलिए बुला रहा है, ताकि तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर दे और तुम्हें एक निश्चित समय तक मोहलत दे।'' वे लोग कहने लगे, तुम तो केवल हमारे ही जैसे एक आदमी हो, चाहते हो कि हमें उनसे रोक दो जिनकी पूजा हमारे बाप-दादा करते आए हैं, (अच्छा) तो कोई स्पष्ट प्रमाण (चमत्कार) ले आओ।''

قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۖ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَ
يُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى ۚ قَالُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا
بَشَرٌ مِثْلُنَا تُرِيدُونَ أَنْ تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ
يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿١٠﴾

११- रसूलों ने उनसे कहा, ''हम तो वास्तव में तुम्हारे ही जैसे मनुष्य हैं, लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ
اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ

لَنَآ أَنْ نَّأْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾

चाहता है एहसान करता है और यह बात हमारे अधिकार में नहीं कि तुम्हें कोई चमत्कार ला दिखाएँ, हाँ, अल्लाह के हुक्म से यह बात हो सकती है; और अल्लाह ही पर ईमान वालों को भरोसा रखना चाहिए''

وَمَا لَنَآ أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿١٢﴾

१२- और हम को क्या हुआ कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, हालाँकि 'उसने' हमको हमारे रास्ते दिखा दिये, और जो तुम हमको तक्लीफ़ देते हो, हम उस पर सब्र से काम लेंगे; और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।''

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ أَرْضِنَآ أَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ۖ فَأَوْحٰٓى إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٣﴾

१३- और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा, ''हम तुम को अपनी ज़मीन से बाहर निकाल देंगे, या यह कि तुम हमारे मज़हब (धर्म) में लौट आओ।'' तो उनके रब ने उन पर वह्य भेजी कि, 'हम' इन ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे;

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾

१४- और उनके बाद तुम को इस धरती में आबाद कर देंगे, यह उस व्यक्ति के लिए है, जो मेरे सामने खड़े होने का डर रखता हो और मेरी चेतावनी से डरता हो।''

وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿١٥﴾

१५- और उन्होंने फ़त्ह़ (विजय) चाही तो हर सरकश और हर हठधर्मी असफल हो गया।

مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ﴿١٦﴾

१६- इसके पीछे (बाद) उसके लिए दोज़ख़ है और उसको पीप (Pus) का पानी पिलाया जाएगा,

يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَأْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۖ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾

१७- वह उसे कठिनाई से घूँट-घूँट कर पिएगा और ऐसा नहीं लगेगा कि आसानी से उसे उतार सकता है, और मौत उस पर हर ओर से चली आती होगी, फिर भी वह मरेगा नहीं; और उसके पीछे एक सख़्त अ़ज़ाब होगा।

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ۨاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ۖ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾

१८- जिन लोगों ने अपने रब का इन्कार किया उनके कार्मों की मिसाल राख की सी है कि आँधी के दिन, उस पर ज़ोर की हवा चले (और) उसे उड़ा ले जाए जो कुछ उन्होंने कमाया उससे कुछ भी उनको ह़ासिल न हो सकेगा, यही तो है निचले

दर्जे की गुमराही।

१९- क्या तुम ने देखा नहीं! कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को ठीक-ठीक पैदा किया? अगर 'वह' चाहे तो तुम सब को ले जाए और नई मख़्लूक़ (सृष्टि) ले आए;

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٩﴾

२०-और ऐसा करना अल्लाह के लिए कुछ भी कठिन नहीं है।

وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿٢٠﴾

२१- और सबके सब अल्लाह के सामने इकट्ठा होंगे, तो कमज़ोर लोग उन लोगों से, जो बड़े बने हुए थे, कहेंगे, ''हम तो तुम्हारे पीछे चलते थे, तो क्या तुम हम को अल्लाह के अ़ज़ाब से बचा सकोगे?'' वे कहेंगेः ''अगर अल्लाह हम को रास्ता बतलाता, तो हम तुम को भी रास्ता बतलाते, अब हमारे लिए बराबर है, चाहे चीख़ पुकार करें या सब्र से काम लें, हमारे लिए बचने का कोई उपाय नहीं।''

وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوٓا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ قَالُوا لَوْ هَدٰىنَا اللَّهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ۖ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ أَجَزِعْنَآ أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَحِيصٍ ﴿٢١﴾

२२- जब (सब कामों का) फ़ैसला हो चुकेगा तो शैतान कहेगा, ''अल्लाह ने तो तुम से सच्चे वादे किये थे, और मैं ने भी तुम से वादे किये थे, तो मैं ने वे वादे झूठे किये थे, और मेरा तुम पर कुछ ज़ोर नहीं था, सिवाय इसके कि मैंने तुम को बुलाया तो तुमने मेरी बात को मान लिया; तो अब मुझको मलामत न करो, बल्कि अपने आप को ही मलामत करो; न मैं तुम्हारी फ़रियाद सुन सकता हूँ और न तुम मेरी फ़रियाद सुन सकते हो। इससे पहले जो तुमने मुझे साझीदार ठहराया था, तो मैं उससे बेज़ारी (विरक्त) ज़ाहिर करता हूँ।'' बेशक ज़ालिमों के लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है।

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ ۖ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ إِلَّآ أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي ۖ فَلَا تَلُومُونِي وَلُومُوٓا أَنْفُسَكُمْ ۖ مَآ أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ أَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ۖ إِنِّي كَفَرْتُ بِمَآ أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ ۗ إِنَّ الظّٰلِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٢﴾

२३- और जो ईमान लाए और भले काम किये, वे ऐसे बाग़ों में दाख़िल होंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे अपने रब की इजाज़त से हमेंशा रहेंगे, वहाँ उनकी मुलाक़ात की दुआ़ 'सलाम' होगी।

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۖ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾

२४- क्या आप ने नहीं देखा! कि अल्लाह ने कैसी मिसाल 'कलिम-ए-तय्यिबः' की दी? (उसकी मिसाल ऐसी है) जैसे एक

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا

فِي السَّمَآءِ ۙ

अच्छा वृक्ष जिसकी जड़ जमी हुई, और शाखाएँ आसमान में फैली हुई हों;

تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۭ بِاِذْنِ رَبِّهَا ۗ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ
الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝

२५- अपने रब की इजाज़त से वह अपना फल दे रहा हो; और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, ताकि वह खूब समझ लें।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ِۨاجْتُثَّتْ
مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝

२६- और 'कलिम-ए-खबीसा' (अशुभ एवं अशुद्ध) की मिसाल, एक गन्दे वृक्ष की सी है, जिसे ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ लिया जाए, और उसे कुछ भी स्थिरता प्राप्त न हो।

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙۗ وَ
يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۝

२७- ईमान वालों को अल्लाह पक्की बात के ज़रिये दुनिया की ज़िन्दगी में भी मज़बूत करता है और अख़िरत में भी, और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराही में डाल देता है; और अल्लाह जो चाहता है, करता है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا
وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ۙ

२८- क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जिन्होंने अल्लाह की नेअ़मतों को कुफ़्र से बदल डाला, और अपनी क़ौम को तबाही के घर में जा उतारा?-

جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۗ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝

२९- जहन्नम है उसमें, वे झोंके जाएँगे और वह बहुत बुरा ठिकाना है!

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوْا
فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ۝

३०- और उन्होंने अल्लाह के मुक़ाबले में दूसरे मअ़बूद ठहरा लिए, ताकि उस (अल्लाह) की राह से भटकाएँ, कह दीजिए, ("थोड़े दिन) मज़े ले लो, क्योंकि तुम्हें अन्त में आग ही में जाना है।"

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ
يُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ
يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ۝

३१- कह दीजिए, "मेरे जो बन्दे ईमान लाए वे नमाज़ क़ायम करें, और 'हमारी' दी हुई रोज़ी में से छिपे और खुले खर्च करें, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई सौदा (क्रय-विक्रय) होगा और न दोस्ती।"

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِیَ فِی الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ۟

३२- अल्लाह 'ही तो' है 'जिसने' आसमानों और ज़मीन को बनाया, और आसमान से पानी बरसाया फिर उससे फलों की क़िस्म से तुम्हारे लिए रोज़ी निकाली; और नाव को तुम्हारे लिए काम में लगाया, ताकि उसके हुक्म से समुद्र में चलें; और नहरों को भी तुम्हें लाभ पहुँचाने के लिए लगा दिया;

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآىِٕبَیْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ ۟

३३- और सूरज और चाँद को तुम्हारी सेवा में लगा दिया, जो 'बराबर' चलते रहते हैं, और रात और दिन को तुम्हारी सेवा में लगा दिया;

وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ۟

३४- और हर उस चीज़ में से तुम्हें दिया जो तुमने माँगा, और अगर तुम अल्लाह की नेअ़मतों को गिनने लगो तो गिन नहीं सकते। बेशक इन्सान बड़ा ही अन्यायी और नाशुक्रा है,

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِیْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِیْ وَبَنِیَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ۟

३५- और जिस समय इब्राहीम ने कहा, ''मेरे रब! इस भू-भाग (शहर) को अम्न वाला बना दीजिए, और मुझ को और मेरी सन्तान को, इससे बचा लीजिए कि हम मूर्तियों को पूजने लग जाएँ;

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِیْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِیْ فَاِنَّهٗ مِنِّیْ ۚ وَمَنْ عَصَانِیْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۟

३६- मेरे रब! उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह (पथभ्रष्ट) कर दिया, तो जो कोई मेरे रास्ते पर चलेगा वह तो मेरा है ही; और जिसने मेरा कहना न माना तो 'तू' उसे बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।''

رَبَّنَاۤ اِنِّیْۤ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ بِوَادٍ غَیْرِ ذِیْ زَرْعٍ عِنْدَ بَیْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِیُقِیْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْىِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِیْۤ اِلَیْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ یَشْكُرُوْنَ ۟

३७- ऐ हमारे रब! मैंने अपनी औलाद को (एक ऐसी) घाटी में, जहाँ खेती नहीं होती, 'तेरे' सम्मानित घर (कअ़बः) के पास बसाया है, ऐ हमारे रब! ताकि ये नमाज़ क़ायम करें; अतः लोगों के दिलों को झुका दीजिए, और उन्हें फल खाने को दीजिए, ताकि वे शुक्र करें;

رَبَّنَاۤ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِیْ وَمَا نُعْلِنُ ؕ وَمَا یَخْفٰی عَلَی اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ ۟

३८- हमारे रब! आप तो जानते हैं जो कुछ हम छिपा कर करते हैं, और जो कुछ दिखा कर करते हैं; और अल्लाह से कोई भी चीज़ छिपी हुई नहीं है न ज़मीन में। और न आसमान में।

३९- अल्लाह का शुक्र है, 'जिसने' इतनी बड़ी उम्र में इस्माईल और इस्हाक़ दिये, बेशक मेरा 'रब' दुआ ज़रूर सुनता है;

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ وَهَبَ لِیْ عَلَی الْكِبَرِ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَسَمِیْعُ الدُّعَآءِ

४०- ऐ रब! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ क़ायम करने वाला बना दीजिए, ऐ रब! और हमारी दुआ को कुबूल कर लीजिए।

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ۖۗ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ

४१- ऐ रब! ''मुझे और मेरे माँ-बाप को और ईमान वालों को उस दिन माफ़ कर दीजिएगा, जिस दिन हिसाब का मामला पेश आएगा।''

رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ

४२- और (आप) ऐसा न समझें कि अल्लाह इन ज़ालिमों के करतूतों से बेख़बर है, 'वह' तो केवल उनको उस दिन तक की मोहलत दे रहा है जबकि आँखें फटी की फटी रह जाएंगी;

وَ لَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا یَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ؕ اِنَّمَا یُؤَخِّرُهُمْ لِیَوْمٍ تَشْخَصُ فِیْهِ الْاَبْصَارُ

४३- अपने सिर उठाए दौड़ते होंगे; उनकी निगाहें खुद उनकी अपनी ओर भी न फिरेंगी और उनके दिल उड़ रहे होंगे।

مُهْطِعِیْنَ مُقْنِعِیْ رُءُوْسِهِمْ لَا یَرْتَدُّ اِلَیْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَ اَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ

४४- और लोगों को उस दिन से डराइए, जबकि उन पर सज़ा उतरेगी; तब ज़ालिम लोग कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! हम को थोड़ी-सी देर की मोहलत दे दीजिए, ताकि हम तेरे बुलाने पर उठ खड़े हों और रसूलों की पैरवी करें'' (जवाब मिलेगा) ''क्या तुम पहले क़समें नहीं खाया करते थे, हमारा तो ज़वाल (पतन) ही न होगा?-

وَ اَنْذِرِ النَّاسَ یَوْمَ یَاْتِیْهِمُ الْعَذَابُ فَیَقُوْلُ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَاۤ اَخِّرْنَاۤ اِلٰۤی اَجَلٍ قَرِیْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَ نَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَ لَمْ تَكُوْنُوْۤا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ

४५- और उन्हीं की बस्तियों में तुम भी बसे थे, जिन्होंने अपने ऊपर जुल्म किया था और तुम जान चुके थे कि 'हमने' उन लोगों के साथ कैसा मामला किया था? और 'हमने' तुम्हारे लिए मिसालें भी बतला दी थीं।''

وَّ سَكَنْتُمْ فِیْ مَسٰكِنِ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ تَبَیَّنَ لَكُمْ كَیْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَ ضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ

४६- और वह अपनी चाल चल चुके हैं, और उनकी चालें अल्लाह की नज़र में हैं, और उनकी चालें ऐसी थीं कि पहाड़ों को भी (अपनी) जगह से टाल दें।

وَ قَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَ عِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ وَ اِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ

४७- तो ऐसा न समझना कि अल्लाह जो अपने रसूलों से अ़हद कर चुका है उसके खिलाफ़ करेगा, बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ ذُو انْتِقَامٍ

बदला लेने वाला है।

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَ
بَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾

४८- जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी, और आसमान भी, और वे सब के सब एक ज़बर्दस्त अल्लाह के सामने निकल खड़े होंगे।

وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي
الْأَصْفَادِ ﴿٤٩﴾

४९- और उस दिन तुम मुजरिमों को देखोगे कि ज़ंजीरों में जकड़े हुए हैं,

سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ
النَّارُ ﴿٥٠﴾

५०- उनके कुर्ते गन्धक के होंगे और उनके चेहरों को आग ढाँक लेती होगी,

لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ
سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾

५१- ताकि अल्लाह हर एक जीव को उस की कमाई का बदला दे। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْا أَنَّمَا
هُوَ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

५२- यह लोगों के लिए सन्देश है ताकि उन्हें इसके ज़रिये डराया जाए और ताकि वे जान लें कि 'वही' अकेला 'इलाह' (उपास्य) है, और ताकि अक़्ल वाले नसीहत हासिल करें।



अनुवाद-सूरतुल्हिज्र

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के २६०७ अक्षर, ६६३ शब्द,६६ आयतें और ६ रूकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- अलिफ़्- लाम्- रा, यह 'किताब' और स्पष्ट कुर्आन की आयतें हैं।	الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ۞
	पारा नं०-१४
२- एक ऐसा वक्त आ जाएगा कि काफ़िर तमन्ना (इच्छा) करेंगे कि क्या ही अच्छा होता कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) होते?	* رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۞
३- (ऐ मुह़म्मद) इनको रहने दीजिए, कि (दुनिया में) खा उड़ा लें; और उम्मीद उन्हें भुलावे में डाले रहे, बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा,	ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۞
४- और 'हमने' कोई बस्ती नहीं उजाड़ी सिवाय, उसके जिसका फ़ैसला निश्चित था।	وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ۞
५- कोई गिरोह (जमाअ़त) न अपनी मुद्दत (अवधि) से आगे निकल सकता है, और न पीछे रह सकता है,	مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۞
६- और वे कहते हैं ''ऐ वह व्यक्ति जिस पर नसीह़त उतरी है, तुम तो दीवाने हो!	وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ۞
७- अगर तुम सच्चे हो तो हमारे सामने फ़रिश्तों को क्यों नहीं लाते?''	لَوْمَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۞
८- फ़रिश्तों को हम केवल सत्य के साथ ही उतारते हैं और (फ़ैसले के बाद) तब उन्हें मोहलत नहीं मिलेगी।	مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ۞

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝

९- बेशक 'हम' ही ने नसीहत-नामा उतारा है और 'हम' ही इसके निगहबान (संरक्षक) हैं।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي شِيَعِ الْأَوَّلِينَ ۝

१०- और 'हम' आपसे पहले लोगों में भी रसूल भेज चुके हैं,

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

११- और कोई रसूल उनके पास ऐसा नहीं आया जिसका उन्होंने मज़ाक़ न उड़ाया हो।

كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝

१२- इसी तरह 'हम' मुजरिमों के दिलों में उतार देते हैं;

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ۝

१३- यह इस (कुर्आन) पर ईमान नहीं लाते, और यह तरीक़ा पहले से चला आया है।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ۝

१४- अगर 'हम' उन पर आसमान से कोई दरवाज़ा खोल दें और वे उसमें चढ़ने भी लगें,

لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ۝

१५- फिर भी वे यही कहेंगेः '' हमारी नज़रें बाँध दी गई हैं बल्कि हम पर किसी ने जादू कर दिया है।''

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ۝

१६- और 'हमने' आसमान में बुर्ज (तारों का समूह) बनाए, और उसको देखने वालों के लिए सुसज्जित भी किया;

وَحَفِظْنَاهَا مِن كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ۝

१७- और हर फिटकारे हुए शैतान से उसकी रक्षा की;

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُّبِينٌ ۝

१८- हाँ अगर कोई चोरी-छिपे कुछ सुन ले, तो चमकता हुआ अंगारा उसका पीछा करता है।

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ۝

१९- और 'हमने' धरती को फैलाया और उसमें पहाड़ डाल दिये, और उसमें हर चीज़ नपे-तुले अन्दाज़ में उगाई।

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَن لَّسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ۝

२०- और उसमें 'हमने' तुम्हारे गुज़र- बसर के सामान बनाए, और उनके लिये भी जिनको रोज़ी देने वाले तुम नहीं हो।

وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا عِندَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝

२१- और हर चीज़ के 'हमारे' पास ख़ज़ाने हैं, और 'हम' उसको एक निश्चित अन्दाज़े से उतारते रहते हैं।

وَأَرْسَلْنَا الرِّيَاحَ لَوَاقِحَ فَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ۝

२२- और 'हम' ही बादल को बोझल करने वाली हवाएँ भेजते हैं फिर 'हम' ही आसमान से पानी उतारते हैं; फिर

वह पानी तुम को पिलाते हैं, और तुम तो उसका खज़ाना नहीं रखते?

وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿٢٣﴾

२३- और 'हम' ही जिलाने वाले और मारने वाले हैं, और 'हम' ही सबके वारिस हैं।

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٤﴾

२४- और 'हम' तुम से पहले के लोगों को भी जानते हैं, और बाद के लोगों को भी जानते हैं।

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

२५- और तुम्हारा 'रब' उन सब को इकट्ठा करेगा; 'वह' बड़ा इल्म वाला, हि़कमत वाला है।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٦﴾

२६- और 'हमने' इन्सानों को सड़े हुए गारे की खनकती हुई मिट्टी से बनाया है;

وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ مِن نَّارِ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾

२७- और जिन्नों को इससे पहले लू रूपी आग से पैदा कर चुके थे।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٨﴾

२८- और जब आप के 'रब' ने फरिश्तों से कहा कि, 'मैं' एक बशर (इन्सान) को खनकती हुई मिट्टी से, जो सड़े हुए गारे की बनी होगी पैदा, करने वाला हूँ।''

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٢٩﴾

२९- तो जब 'मैं' उसे पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी 'रूह' फूँक दूँ, तो तुम उसके आगे सज्दे में गिर जाना।''

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾

३०- तो सब के सब फ़रिश्तों ने मिलकर सज्दः किया,

إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ أَن يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣١﴾

३१- सिवाय इब्लीस के, उसने सज्दः करने वालों के साथ शामिल होने से इन्कार कर दिया।

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣٢﴾

३२- (अल्लाह ने) फ़रमाया, ''ऐ इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि तू सज्दः करने वालों में शामिल न हुआ?''

قَالَ لَمْ أَكُن لِّأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٣٣﴾

३३- (शैतान ने) कहा, ''मैं ऐसा नहीं हूँ कि ऐसे बशर (इन्सान) को सज्दः करूँ, जिसको 'तू' ने सड़े हुए गारे की खनकती हुई मिट्टी से बनाया।''

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾

३४- (अल्लाह ने) फ़रमाया, ''अच्छा 'तू' दूर हो जा यहाँ से, तू मर्दूद (दुष्ट) है!

३५- और तुझ पर बदले के दिन (क़ियामत के दिन) तक धिक्कार है।''	وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ۝
३६- (शैतान ने) कहा, ''ऐ मेरे 'रब' मुझको उस दिन तक के लिए मोहलत दीजिए, जबकि लोग उठाए जाएँगे।''	قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝
३७- (अल्लाह ने) फ़रमाया, ''अच्छा, तुझे मोहलत दी जाती है,	قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ۝
३८- उस दिन तक के लिए, जिसका समय निर्धारित है।''	إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ۝
३९- कहा, ''ऐ मेरे 'रब' चूँकि 'आपने' मुझे सीधे मार्ग से विचलित (गुमराह) कर दिया है, इसलिए मैं ज़मीन में (आदम और उसकी औलाद को) उन को (गुनाह) सजा कर दिखाऊँगा, और उन सब को सीधे रास्ते से बहका दूँगा;	قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝
४०- सिवाय उनके जो तेरे चुने हुए मुख़्लिस बन्दे होंगे।	إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ۝
४१- फ़रमाया, 'मुझ' तक पहुँचने का यही सीधा रास्ता है।''	قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ۝
४२- 'मेरे' बन्दे पर तो तेरा कुछ ज़ोर न चलेगा, सिवाय उन बहके हुए लोगों के जो तेरे पीछे चल पड़ें।	إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ۝
४३- और ऐसे तमाम लोगों के लिए, जहन्नम का वादा है।	وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝
४४- उस (दोज़ख) के सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए, उनमें से जमाअतें तक़सीम कर दी गयी हैं।	لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ۝
४५- बेशक, परहेज़गार बाग़ों और चश्मों (स्रोतों) में होंगे;	إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝
४६- (उनसे कहा जाएगा) दाख़िल हो जाओ, 'सलामती (और) अमन' के साथ;	ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ۝
४७- और उनके दिलों में जो कुदूरत (ईर्ष्या) होगी उसे ''हम'' दूर कर देंगे (तो) वे भाई-भाई बनकर एक-दूसरे के आमने-सामने तख़्तों पर बैठे होंगे;	وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ۝
४८- न उनको वहाँ किसी तरह का दुःख होगा, और न वे वहाँ	لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُم مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ۝

से निकाले जाएंगे।

४६- मेरे बन्दों को बता दीजिए! कि मैं बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला हूँ;
نَبِّئْ عِبَادِيٓ أَنِّيٓ أَنَا ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾

५०- और यह कि मेरा अ़ज़ाब बड़ा दर्दनाक अ़ज़ाब है।''
وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ ٱلْعَذَابُ ٱلْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾

५१- और उन्हें इब्राहीम के मेहमानों की ख़बर (सुना) दीजिए;
وَنَبِّئْهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَٰهِيمَ ﴿٥١﴾

५२- जबकि वह उनके पास आए और कहा, ''सलाम हो,'' (तो) बोले ''हमें तो तुमसे डर लग रहा है।''
إِذْ دَخَلُوا۟ عَلَيْهِ فَقَالُوا۟ سَلَٰمًا قَالَ إِنَّا مِنكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾

५३- (फ़रिश्ते) बोले, ''आप डरिए नहीं, हम आप को एक ज्ञानी लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं।''
قَالُوا۟ لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَٰمٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾

५४- कहा, ''क्या आप मुझे इस उम्र में बशारत देते हैं, कि मुझ पर बुढ़ापा आ चुका है, तो यह किस बात की ख़ुशख़बरी है?''
قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَىٰٓ أَن مَّسَّنِيَ ٱلْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾

५५- (फ़रिश्तों ने) कहा, ''हम आपको सच्ची ख़ुशख़बरी दे रहे हैं, तो आप नाउम्मीद न हों।''
قَالُوا۟ بَشَّرْنَٰكَ بِٱلْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ ٱلْقَٰنِطِينَ ﴿٥٥﴾

५६- (इब्राहीम ने) कहा, ''अपने 'रब' की रह़मत से नाउम्मीद होता ही कौन है? सिवाय गुमराहों के;
قَالَ وَمَن يَقْنَطُ مِن رَّحْمَةِ رَبِّهِۦٓ إِلَّا ٱلضَّآلُّونَ ﴿٥٦﴾

५७- (इब्राहीम ने) कहा, ''ऐ फ़रिश्तों (दूतों) आप किस मुहिम (अभियान) पर आए हैं।''
قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا ٱلْمُرْسَلُونَ ﴿٥٧﴾

५८- (फ़रिश्तों ने) कहा, ''हम एक मुजरिम क़ौम की ओर भेजे गये हैं,
قَالُوٓا۟ إِنَّآ أُرْسِلْنَآ إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٥٨﴾

५६- सिवाय लूत के घर वालों के, उन सब को तो हम बचा लेंगे,
إِلَّآ ءَالَ لُوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٩﴾

६०- सिवाय उनकी पत्नी के, 'हमने' निश्चित कर दिया है कि वह पीछे रह जाने वालों में रहेगी।''
إِلَّا ٱمْرَأَتَهُۥ قَدَّرْنَآ إِنَّهَا لَمِنَ ٱلْغَٰبِرِينَ ﴿٦٠﴾

६१- फिर जब यह दूत, (फ़रिश्ते) लूत के यहाँ पहुँचे,
فَلَمَّا جَآءَ ءَالَ لُوطٍ ٱلْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾

६२- तो (लूत ने) कहा, ''आप लोग अजनबी मालूम होते हैं।''
قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ ﴿٦٢﴾

६३- (फ़रिश्तों ने) कहा, ''नहीं, बल्कि हम लोग आप के पास
قَالُوا۟ بَلْ جِئْنَٰكَ بِمَا كَانُوا۟ فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٦٣﴾

वही चीज़ लेकर आए हैं, जिसके बारे में यह लोग सन्देह में थे।''

وَ اَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَ اِنَّا لَصٰدِقُوْنَ

६४- और हम आप के पास यक़ीनी चीज़ ले कर आए हैं, और हम बिल्कुल सच्चे हैं।

فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّ امْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ

६५- अतः अब आप अपने घर वालों को लेकर रात के किसी हिस्से में निकल जाइए, और आप उनके पीछे- पीछे चलिए और आप में से कोई व्यक्ति पीछे मुड़ कर न देखे, और जहाँ का हुक्म आप को मिला है, उसी ओर चले जाइए।''

وَقَضَيْنَاۤ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰۤؤُلَاۤءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ

६६- और 'हमने' लूत के पास यह फ़ैसला भेज दिया है, सुबह होते-होते उन लोगों की जड़ ही कट जाएगी।

وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ

६७- और इतने में शहर के लोग खुशियाँ मनाते हुए आ पहुँचे।

قَالَ اِنَّ هٰۤؤُلَاۤءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ

६८- (लूत ने) कहा, ''यह मेरे मेहमान हैं तुम लोग मेरी रूसवाई (बेइज़्ज़ती) न करो,

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ

६९- अल्लाह से डरो, और मुझे रूसवा न करो;

قَالُوْۤا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ

७०- (फ़रिश्तों ने) कहा, ''क्या हमने तुम्हें दुनिया भर के लोगों का ज़िम्मा लेने से मना नहीं किया?''

قَالَ هٰۤؤُلَاۤءِ بَنٰتِيْۤ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ

७१- (लूत ने) कहा, ''अगर तुम्हें कुछ करना ही है, तो यह मेरी (क़ौम की) बेटियाँ मौजूद हैं।''

لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ

७२- आप के जान की क़सम, वे अपनी बद्‌मस्तियों में अन्धे हो गये थे,

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ

७३- बस सूरज के निकलते-निकलते एक भयंकर आवाज़ ने आ पकड़ा।

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ

७४- और 'हमने' उस बस्ती को उलट- -पलट कर दिया, और उन पर कंकरीले पत्थर बरसाए।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ

७५- बेशक इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं;

وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ۝

७६- और वह (बस्ती) तो एक आबाद रास्ते पर है।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

७७- बेशक इसमें ईमान लाने वालों के लिए बड़ी निशानी है।

وَإِن كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ۝

७८- और 'ऐका' वाले (शुऐब की क़ौम के लोग) भी ज़ालिम थे।

فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ۝

७९- तो 'हमने' उनसे भी बदला लिया, और यह दोनों खुले मार्ग पर (स्थित) हैं।

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ۝

८०- और हिज्र वाले भी रसूलों को झुठला चुके हैं।

وَآتَيْنَاهُمْ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝

८१- और 'हम' ने तो उन्हें अपनी निशानियाँ दीं, मगर वे मुँह फेरते ही रहे;

وَكَانُوا يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ۝

८२- और वे लोग पहाड़ों को तराश कर घर बनाते ताकि अमन चैन से रहेंगे।

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ۝

८३- तो एक भयानक आवाज़ ने सुबह होते-होते उन्हें आ पकड़ा;

فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

८४- और जो कुछ वे करते थे, वह उनके कुछ भी काम न आया।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ ۖ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيلَ ۝

८५- और 'हमने' तो आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है, बिना किसी मक़सद के नहीं पैदा किया, और क़ियामत ज़रूर आने वाली है, अतः आप खूबसूरती के साथ दरगुज़र कीजिए।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۝

८६- बेशक, आप का 'रब' बड़ा ही पैदा करने वाला, इल्म वाला है।

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ۝

८७- और 'हमने' आप को सात दोहराई जाने वाली आयतें, और महान क़ुर्आन प्रदान किया है।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

८८- आप अपनी आँख उठा कर भी उन चीज़ों को न देखिए, जो 'हमने' (काफ़िरों के लिए) कुछ सुख सामग्री विभिन्न गिरोहों को दे रखी है, और न उनकी हालत पर ग़म कीजिए, और अपनी भुजाएँ ईमान वालों के लिए झुकाए रखिए,(अर्थात मोमिनों से भले तरीक़े से पेश आइए)

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ۝

८९- और कह दीजिए, ''मैं तो साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ।''

९०- जिस तरह 'हमने' उतारा था तक़्सीम (भेद) पैदा करने वालों पर,

كَمَآ أَنزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ۝

९१- जिन्होंने कुर्आन के टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ۝

९२- तो आप के रब की क़सम! हम उन सबसे ज़रूर सवाल करेंगे।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝

९३- उन कामों के बारे में जो वे करते रहे हैं;

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

९४- अतः आप को जिस काम का हुक्म दिया गया है उसे साफ़ सुना दीजिए; और मुश्रिकों की परवाह न कीजिए।

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۝

९५- हम आप के लिए मज़ाक़ उड़ाने वालों के मुक़ाबिले में काफ़ी हैं।

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ۝

९६- जिन्होंने अल्लाह के साथ किसी दूसरे को मअ़बूद बना लिया है, तो बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा!

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

९७- 'हमें' मालूम है कि वे जो कुछ कहते हैं, उससे तुम्हारा दिल तंग होता है।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۝

९८- और आप अपने 'रब' की ह़म्द व तस्बीह़ (गुणगान) करते रहिए और सज्दः करने वालों में शामिल रहिए।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ السَّاجِدِينَ ۝

९९- और आप, अपने 'रब' की इबादत में लगे रहिए, यहाँ तक कि आप की मौत आ जाए।

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۝



अनुवाद-सूरतुन्नह्लि

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के ७६७४ अक्षर, १८७६ शब्द,१२८ आयतें और १६ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- अल्लाह का हुक्म, (समझो) आ ही पहुँचा तो उसके लिए जल्दी न मचाओ; 'वह' पाक और बुलन्द है उस शिर्क से जो ये कर रहे हैं।

أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝١

२- 'वह' फ़रिश्तों को रूह़ के साथ अपने हुक्म से जिस बन्दे पर चाहता है उतारता है, ''लोगों को सचेत कर दो कि मेरे सिवा कोई 'इलाह' (उपास्य) नहीं, तो मुझ से ही डरो।''

يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوا أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ۝٢

३- 'उसने' आसमान और ज़मीन को सत्य के आधार पर पैदा किया, 'वह' बुलन्द है, 'उससे' जिसको यह साझीदार ठहराते हैं।

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝٣

४-'उसने' मनुष्य को एक बूँद से पैदा किया, फिर क्या देखते हैं कि 'वह' खुला झगड़ालू बन गया?

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ۝٤

५- और 'उसने' तुम्हारे लिए चौपाए पैदा किये, जिनमें तुम्हारे लिए जाड़े का सामान और (बहुत से) फ़ायदे हैं, और कुछ को तुम खाते भी हो,

وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا ۗ لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝٥

६- और उनकी वजह से तुम्हारी रौनक़ (शोभा) है, जबकि शाम को उन्हें वापस लाते हो और जब (सुबह़ को) चरने के लिए छोड़ देते हो;

وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ ۝٦

७- और तुम्हारे बोझ ऐसी जगहों तक ले जाते हैं, जहाँ तुम सख़्त मेहनत (कठोर परिश्रम) के बिना नहीं पहुँच सकते थे;

وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَمْ تَكُونُوا بَالِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ ۚ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝٧

बेशक तुम्हारा रब बड़ा रह़मदिल, बेहद मेहरबान है।

८- और (उसीने) घोड़े, और खच्चर, और गधे भी पैदा किये, ताकि तुम उन पर सवार हो और तुम्हारी शोभा हो, और उसे भी पैदा करता है जिसे तुम नहीं जानते।

وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ؕ
وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

९- और सीधा रास्ता अल्लाह तक पहुँचता है और कुछ रास्ते टेढ़े हैं, और अगर 'वह' चाहता तो तुम सबको सीधी राह दिखा देता।

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ؕ
وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

१०- 'वही' तो है 'जिसने' आसमान से तुम्हारे लिए पानी उतारा, जिसे तुम पीते हो और जिससे वनस्पतियाँ भी (उगती) हैं, जिनमें तुम अपने जानवरों को चराते हो;

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ
وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝

११- उसी (पानी) से 'वह' तुम्हारे लिए खेती, और ज़ैतून, और खजूरें, और अंगूर, और हर प्रकार के फल पैदा करता है, जो लोग सोच-विचार करते हैं उनके लिए इसमें निशानी है।

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ
وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً
لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

१२- और 'उसी ने' रात और दिन को, और सूरज और चाँद को तुम्हारे काम में लगा दिया है; और सितारे भी 'उसके' हुक्म से काम में लगे हैं, इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं;

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ
وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌ ۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَّعْقِلُوْنَ ۝

१३- और ज़मीन में जो भी रंग-बिरंग की चीज़ें पैदा की हैं, इसमें भी (उन लोगों के लिए बड़ी) निशानी हैं, जो नसीह़त ह़ासिल करने वाले हैं।

وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝

१४- और 'वही' तो है जिसने समुद्र को तुम्हारे काम में लगा दिया ताकि तुम उसमें से ताज़ा गोश्त खाओ, और उसमें से ज़ेवर निकालो, जिनको तुम पहनते हो; तुम देखते हो कि कश्तियाँ (नौकाएं) उसको चीरती हुई चली जाती हैं ताकि तुम 'उसका' फज़्ल (रोज़ी) तलाश करो और 'उसके' शुक्रगुज़ार बनो।

وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا
طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ
وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

१५- और 'उसी' ने ज़मीन में पहाड़ रख दिये, ताकि वह तुमको लेकर डगमगाने न लगे, और नहरें और रास्ते बना दिये, ताकि एक जगह से दूसरी जगह जा सको;

وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّ
سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝

१६- और चिन्ह (मार्ग) भी रखे, और सितारों से भी लोग रास्ते मालूम कर लेते हैं।	وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝
१७- अच्छा, तो क्या 'वह' जो पैदा करता है उस जैसा हो जाएगा, जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकता? तो क्या तुम इतनी भी बात नहीं समझते?	اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝
१८- और अगर तुम अल्लाह की नेअ़मतों को गिनना चाहो तो नहीं गिन सकते; बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।	وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
१६- और अल्लाह जानता है उसको भी, जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो।	وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝
२०- और जिन लोगों को ये अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वे किसी को पैदा नहीं कर सकते, बल्कि वे खुद पैदा किये जाते हैं,	وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝
२१- मुर्दा हैं न कि ज़िन्दा, और उनको इतनी भी ख़बर नहीं कि कब उठाए जाएंगे?	اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝
२२- तुम्हारा 'मअ़बूद' (उपास्य) एक ही अल्लाह है, तो जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल इन्कार कर रहे हैं। और वे अपने आप को बड़ा समझ रहे हैं।	اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝
२३- अल्लाह ज़रूर जानता है, उसको जो कुछ ये छिपाते हैं, और जो ज़ाहिर करते हैं; 'वह' (अल्लाह) पसंद नहीं करता अपने आप को बड़ा समझने वाले को।	لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ۝
२४- और जब इनसे कहा जाता है, ''तुम्हारे 'रब' ने क्या उतारा है?'' तो कहते हैं, ''यह तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं।''	وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝
२५- ये क़ियामत के दिन अपने बोझ भी पूरे-पूरे उठाएँगे और उन लोगों के बोझ भी, जिन्हें यह इल्म के बग़ैर गुमराह कर रहे हैं सुन लो! कि बहुत ही बुरा है वह बोझ जो उठा रहे हैं।	لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ۝

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ بُنْيَانَهُم مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِن فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۝

२६- जो इनसे पहले गुज़रे हैं वह भी मक्कारियाँ कर चुके हैं, फिर अल्लाह उन की इमारत पर नीवों (फाउन्डेशन) की ओर से आ पहुँचा, और छत उन पर उनके ऊपर से गिर पड़ी और अ़ज़ाब उस राह से आया जिधर से उन्हें एहसास भी न था।

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تُشَاقُّونَ فِيهِمْ ۚ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

२७- फिर 'वह' उनको क़ियामत के दिन भी ज़लील करेगा और कहेगा, '' कहाँ हैं मेरे वे साझीदार, जिनके लिए तुम झगड़ते थे?'' जिन लोगों को इल्म दिया गया था, वे कहेंगे, ''आज रूसवाई और ख़राबी है, इन्कार करने वालों के लिए।''

الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنفُسِهِمْ ۖ فَأَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِن سُوءٍ ۚ بَلَىٰ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

२८- उनके लिए जिन्हें फ़रिश्ते इस हा़ल में मौत देते हैं कि वे अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे होते हैं, उस समय (विवश होकर) फ़रमाँबरदारी दिखाने लगते हैं; 'हम' तो कुछ बुरा काम नहीं करते थे; (नहीं,) बल्कि अल्लाह खूब जानता है जो कुछ तुम किया करते थे।''

فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ۝

२९- तो दोज़ख के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ; उसी में तुम्हें हमेशा रहना है, तो घमंड करने वालों का कैसा बुरा ठिकाना है?

وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنزَلَ رَبُّكُمْ ۚ قَالُوا خَيْرًا ۗ لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۚ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ ۚ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ۝

३०- और जो लोग परहेज़गार हैं उनसे पूछा जाता हैं, ''तुम्हारे 'रब' ने क्या चीज़ उतारी है?'' तो कहते हैं, ''सबसे भली (चीज़);'' जिन लोगों ने भलाई की उनकी इस दुनिया में भी अच्छी हा़लत है और आख़िरत का घर तो है ही अच्छा। और क्या ही अच्छा घर है परहेज़गारों का;

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ۝

३१- हमेशा-हमेश रहने की जन्नत जिनमें वे दाख़िल होंगे, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वहाँ उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे, अल्लाह परहेज़गारों को ऐसा ही बदला देता है।

الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ ۙ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمُ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

३२- जब फ़रिश्ते उनकी जानें निकालने लगते हैं (इसहा़ल में) कि वे पाक होते हैं, तो वे कहते हैं, ''तुमपर 'सलाम' हो, दाख़िल हो जाओ जन्नत में अपने उन कामों के बदले जो तुम किया करते थे।''

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾

३३- क्या यह इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि फ़रिश्ते इनके पास आएँ या तुम्हारे रब का हुक्म आ पहुँचे; ऐसा ही उन लोगों ने भी किया था, जो इनसे पहले गुज़र चुके, और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया था, बल्कि वे खुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे;

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٤﴾

३४- तो उनके करतूतों की सज़ा उन्हें मिलकर रही, और जिसका मज़ाक़ वे उड़ाते थे उसी ने उन्हें आ घेरा।

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٣٥﴾

३५- और मुश्रिक कहते हैं, ''अगर अल्लाह चाहता तो न हम ही 'उसके' सिवा किसी चीज़ को पूजते और न हमारे बाप-दादा ही और न हम 'उसके' सिवा किसी चीज़ को ह़राम ठहराते; इनसे पहले के लोगों ने भी ऐसा ही किया, तो क्या साफ़-साफ़ सन्देश पहुँचा देने के सिवा रसूलों पर कोई और भी ज़िम्मेदारी है''

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۖ فَمِنْهُم مَّنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُم مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ ۚ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٦﴾

३६- और 'हमने' हर उम्मत (समुदाय) में रसूल भेजे कि, ''एक अल्लाह की इबादत (उपासना) करो, और शैतान (बुतों) से बचते रहो, तो उनमें से किसी को अल्लाह ने सीधी राह सुझाई और किसी पर गुमराही (पथभ्रष्टता) सिद्ध हो कर रही, फिर ज़रा धरती पर चल फिर कर देखो! कि झुठलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ?

إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٣٧﴾

३७- अगर आप इनको सीधे रास्ते पर लाने की लालसा भी करें, तो अल्लाह जिसको भटका देता है, उसको हिदायत नहीं दिया करता, और ऐसे लोगों का कोई मददगार भी नहीं होता;

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَن يَمُوتُ ۚ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

३८- और यह लोग बड़ा ज़ोर लगा- लगा कर अल्लाह की क़समें खाते हैं, ''कि जो मर जाता है (फिर) उसे अल्लाह नहीं उठाएगा।'' क्यों नहीं? यह तो एक वादा है, जिसे पूरा करना अल्लाह ने अपने ऊपर अनिवार्य कर रखा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ﴿٣٩﴾

३९- ताकि उसको उनपर स्पष्ट कर दे जिसके बारे में ये मतभेद कर रहे हैं, और इसलिए भी ताकि काफ़िरों को मालूम हो जाए कि वे झूठे हैं।

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن نَّقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

४०- हम जब किसी चीज़ का इरादा कर लेते हैं, तो बस उससे हमारा इतना ही कहना होता है, "हो जा!" बस वह हो जाती है।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

४१- और जिन लोगों ने इसके बाद कि उन पर जुल्म हो चुका था, अल्लाह के लिए हिजरत (घरबार छोड़ना) की उन्हें 'हम' दुनिया में भी अच्छा ठिकाना देंगे, और आख़िरत का बदला तो बहुत बड़ा है; क्या ही अच्छा होता कि वे जानते?

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

४२- वे लोग जो सब्र करते हैं और अपने 'रब' पर भरोसा रखते हैं।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ ۚ فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

४३- और 'हमने' आप से पहले भी मर्दों (पुरूषों) ही को रसूल बना कर भेजा था जिन पर 'हम' वह्य (अल्लाह का पैग़ाम) भेजते रहे हैं, तो अगर तुम लोगों को नहीं मालूम तो इल्म वालों से पूछ लो।

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۗ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾

४४- और 'हमने' आप पर भी यह नसीहतनामा उतारा है, ताकि आप लोगों पर ज़ाहिर कर दें, जो कुछ उनके पास भेजा गया है; और ताकि वह सोच-विचार से काम लें।

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَن يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾

४५- क्या वे लोग जो ऐसी बुरी- बुरी चालें चल रहे हैं, इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं कि अल्लाह उन्हें धरती में धँसा दे या ऐसी हालत में उन पर अज़ाब आ जाए जिसका उन्हें एहसास तक न हो;

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٦﴾

४६- या ऐसे समय उन्हें पकड़ ले कि वे चल-फिर रहे हों, वे (उसकी पकड़ से) हरगिज़ नहीं बच सकते;

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٤٧﴾

४७- या ऐसे समय उन्हें पकड़ ले, कि वे डर की हालत में हों, बेशक आप का 'रब' बड़ा ही नर्म दिल, मेहरबान है।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾

४८- क्या यह लोग देखते नहीं, कि अल्लाह ने जो चीज़ें भी पैदा की हैं? उनकी परछाइयाँ दाएँ से और बाएँ से लौटती रहती हैं, अल्लाह के आगे आजिज़ (नम्र) होकर सज्दः करती हैं।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ

४९- और आसमानों और ज़मीन में जितने भी जानदार हैं वे सब अल्लाह ही को सज्दः करते हैं, और फ़रिश्ते भी, और ये घमंड बिल्कुल नहीं करते;

يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۩

सज्दः

५०- अपने रब से जो उनके ऊपर है डरते हैं, और वह वही करते हैं, जिसका उन्हें हुक्म मिलता रहता है।

وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ

५१- और अल्लाह ने हुक्म दिया है कि ''दो मअ़बूद (उपास्य) न बनाओ, अल्लाह तो बस एक ही है, अतः 'मुझ' ही से डरो।''

وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ۚ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ

५२- और 'उसी' का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, वह दिन स्थायी और अनिवार्य है, तो क्या अल्लाह के सिवा तुम किसी और से डरते हो?

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْئَرُوْنَ

५३- और तुम्हारे पास जो भी नेअ़मत है, वह अल्लाह ही की ओर से हैं, फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो तुम 'उसी' के आगे गिड़गिड़ाने लगते हो;

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ

५४- फिर जब 'वह' तुमसे तकलीफ़ को हटा देता है, तो तुममें का एक गिरोह अपने 'रब' के साथ शिर्क करने लगता है;

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوْا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ

५५- ताकि 'हमारी' दी हुई (नअ़मतों) की नाशुक्री करें, तो (दुनिया में) मज़े उड़ा लो बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा!

وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ۚ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ

५६- और 'हमने' जो इन्हें रोज़ी दी है उसमें से यह लोग एक हिस्सा ऐसे लोगों के लिए ठहराते हैं जिन्हें जानते भी नहीं, अल्लाह की क़सम, तुमसे इन मनगढ़त बातों की ज़रूर पूछ-ताछ होगी;

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ

५७- और यह लोग अल्लाह के लिए बेटियाँ ठहराते हैं; 'वह' उनसे पाक है और अपने लिए जो चाहे सो ठहराते हैं।

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ

५८- और जब उनमें से किसी को बेटी की ख़बर सुनाई जाती है तो उनका चेहरा स्याह (काला) पड़ जाता है, और जी में घुट कर रह जाता है।

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝

५९- इस बुरी ख़बर की वजह से लोगों से छिपा-छिपा फिरता है, कि अपमान के साथ रख ले या मिट्टी में उसे दबा दे, देखो! कैसा बुरा फ़ैसला है जो ये करते हैं।

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

६०- जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनकी बुरी मिसाल है, और अल्लाह की मिसाल सबसे ऊपर है, और 'वही' बड़ा ज़बर्दस्त, हिकमत वाला है।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝

६१- और अगर अल्लाह लोगों को उनके ज़ुल्म की वजह से पकड़ता तो ज़मीन पर कोई चलने वाला न होता, लेकिन 'वह' उनको एक निश्चित समय तक ढ़ील दे रहा है; फिर जब उनका वह निश्चित समय आ पहुँचेगा तो वे न एक घड़ी पीछे रह सकेंगे न एक घड़ी आगे बढ़ सकेंगे।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ۝

६२- और अल्लाह के लिए ऐसी चीज़ ठहरा देते हैं, जिन्हें खुद नापसन्द करते हैं, और उनकी ज़बानें झूठ कहती जाती हैं और उनके लिए भलाई है, बेशक उनके लिए आग है, और यह लोग सबसे पहले भेजे जाएंगे।

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

६३- अल्लाह की क़सम! 'हमने' आप से पहली उम्मतों की ओर रसूल भेजे, तो शैतान ने उनके (बुरे) अ़मल उनको सजा कर दिखाए; तो वह आज भी उनका दोस्त है, और उन्हीं के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

६४- और 'हमने' आप पर किताब बस इसलिए नाज़िल की है, कि जिस मामले में यह लोग विवाद कर रहे हैं आप उनको फ़ैसला कर दें, और यह हिदायत और रह़मत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ۝

६५- और अल्लाह ही ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उसके ज़रिये ज़मीन जो मुर्दा हो चुकी थी उसे ज़िन्दा कर दिया, बेशक इसमें सुनने वालों के लिए निशानी है।

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ۝

६६- और तुम्हारे लिए चौपायों में भी सबक़ है, 'हम' उनके पेट से गोबर और खून के बीच से ख़ालिस दूध तुम्हें पिलाते हैं, जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट होता है।

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝

६७- और खजूर और अंगूर के फलों से तुम नशे की चीज़ भी बना लेते हो, और अच्छी रोज़ी भी, इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो अ़क्ल से काम लेते हैं।

وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ۝

६८- और आप के रब ने मधुमक्खी के जी में यह बात डाल दी, कि पहाड़ों में और वृक्षों में और छतों में जिनको लोग बनाते हैं घर (छत्ता) बना लें।

ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۗ يَخْرُجُ مِنْ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

६९- फिर हर तरह के फल-फूलों को चूसे और अपने 'रब' के तरीक़े पर चले जो आसान है, उनके पेट से पीने की एक चीज़ निकलती है जिसकी रंगतें कई तरह की होती हैं; उससे लोगों के रोग अच्छे होते हैं बेशक सोच-विचार से काम लेने वालों के लिए उसमें भी निशानी है।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ۙ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝

७०- और अल्लाह ही ने तुमको पैदा किया फिर 'वही' तुमको मौत देता है, और तुम में कुछ ऐसे होते हैं कि निहायत ख़राब उम्र को पहुँच जाते हैं और जानने के बाद हर चीज़ से बे इल्म हो जाते हैं, बेशक अल्लाह बड़ा इल्म वाला, क़ुदरत (सामर्थ्य) वाला है।

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِى الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ۗ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝

७१- और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर रोज़ी में बढ़ौतरी दी है; तो जिन को ज़्यादा रोज़ी दी गई है, वे ऐसे नहीं हैं कि लोगों को अपनी रोज़ी दे डालें जो उनके क़ब्ज़े में हैं कि वे सब इसमें बराबर हो जाएं, तो क्या यह लोग अल्लाह की नेअ़मत का इन्कार करते हैं?

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۗ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ۝

७२- और अल्लाह ने तुम्हीं में से तुम्हारे लिए औ़रतें पैदा कीं और औ़रतों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किये, और खाने की तुम्हें पाक चीज़ें दीं, तो क्या यह बातिल (असत्य) पर विश्वास रखते हैं, और अल्लाह की नेअ़मतों का इन्कार करते हैं।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝

७३- और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं; जिन्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देने का कुछ भी अधिकार नहीं, और न वे क़ुदरत ही रखते हैं।

७४- तो अल्लाह के लिए मिसालें न गढ़ो, अल्लाह ही जानता है, और तुम नहीं जानते।

فَلَا تَضْرِبُوا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

७५- अल्लाह एक और मिसाल देता है कि एक गुलाम है जिसपर दूसरे का अधिकार है, उसे किसी चीज़ पर अधिकार नहीं; इस के विपरीत एक वह व्यक्ति है, जिसे 'हमने' अपनी ओर से अच्छी रोज़ी दी, फिर उसमें से वह छिप कर और खुले रूप में खर्च करता रहता है, तो क्या यह दोनों व्यक्ति एक जैसे हैं? सारी तअ़रीफें अल्लाह ही के लिए हैं मगर इनमें से अक्सर लोग नहीं जानते।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ۭ هَلْ يَسْتَوٗنَ ۭ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

७६- और अल्लाह मिसाल देता है कि दो आदमी हैं जिनमें से एक गूँगा है, (जो) किसी चीज़ की क़ुदरत नहीं रखता, और अपने मालिक पर वह एक बोझ है, उसे वह जहाँ कहीं भेजता है कुछ भला कर के नहीं आता; क्या वह और वह व्यक्ति जो लोगों को इन्साफ़ का हुक्म देता है? और खुद भी सीधी राह पर है वह, (दोनों) बराबर हो सकते हैं?

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ۭ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

७७- और आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों का इल्म अल्लाह ही को है और क़ियामत का मामला उसी तरह पेश आएगा जिस तरह कि आँख का झपकना, या वह इससे भी ज़्यादा क़रीब है बेशक अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) है।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

७८- और अल्लाह ही ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट से इस ह़ाल में निकाला कि तुम कुछ भी नहीं जानते थे; और 'उसने' तुम को कान आँखें और दिल दिये, ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो।

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـــًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْــِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

७९- क्या ये लोग परिन्दों को नहीं देखते कि आसमान (और) हवा में घिरे हुए (उड़ते) हैं, उनको अल्लाह ही थामे रखता है, इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَاۗءِ ۭ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

८०- और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए घरों को रहने की जगह बनाया और उसी में चौपाए की खालों से भी घर बनाया, जिन्हें तुम अपनी यात्रा के दिन, और अपने ठहरने के दिन, हल्का-फुल्का पाते हो; और उनके ऊन के, लोम चर्म और उनके बालों से कितने ही सामान बनाए और प्रयोग की जो एक मुद्दत तक चलती है।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝

८१- और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों से साया बनाया, और पहाड़ों में तुम्हारे लिए पनाहगाहें बनाई और तुम्हें लिबास दिये- जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं, और कुछ अन्य वस्त्र दिये जो तुम्हारी लड़ाई में तुम्हारे बचाओ का काम करते हैं- इसी तरह 'वह' तुम पर अपनी नेअ़मतें पूरी करता है, ताकि तुम फरमाँबरदार (आज्ञाकारी) बनो।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ۝

८२- फिर अगर ये लोग मुँह मोड़ें तो आप पर केवल साफ़ पैग़ाम पहुँचा देना है।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝

८३- यह अल्लाह की नेअ़मतों को पहचानते हैं फिर भी उन का इन्कार करते हैं और इनमें अक्सर तो काफ़िर हैं।

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝

८४- और जिस दिन 'हम' उठाएंगे हर उम्मत में से एक गवाह, फिर काफ़िरों को न इजाज़त दी जाएगी और न उनको तौबः के लिए मौक़ा ही दिया जाएगा;

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝

८५- और ज़ालिम लोग जब अ़ज़ाब को देख लेंगे, तो फिर न उनका अ़ज़ाब हल्का किया जाएगा और न उनको मोहलत ही दी जाएगी।

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝

८६- और जब वे लोग, जिन्होंने शिर्क किया, अपने ठहराए हुए साझीदारों को देखेंगे तो कहेंगे, ''हमारे 'रब' यही हमारे वे साझीदार हैं जिनको हम 'तुझे' छोड़ कर पुकारा करते थे; इस पर वे उनकी बात उन्हीं पर लौटा देंगे कि ''तुम तो झूठे हो''

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَاۗءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ شُرَكَاۗؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝

८७- और उस दिन वे अल्लाह के सामने (अपने को) झुका (आत्मसमर्पण कर) देंगे और जो कुछ वे गढ़ा करते थे सब ग़ायब हो जाएंगे।

وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَىِٕذِ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝

८८- जिन लोगों ने इन्कार किया और अल्लाह की राह से रोकते रहे; 'हम' उनको अ़ज़ाब पर अज़ाब बढ़ाते रहेंगे उस फ़साद के बदले जो वे करते रहे।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ۝

८९- और जिस दिन 'हम' हर उम्मत में एक गवाह उन्हीं में से उनके मुक़ाबले में उठा खड़ा करेंगे, और आप को उन लोगों पर गवाही देने के लिए लाएंगे, और 'हम' ने आप पर किताब

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰي هٰٓؤُلَاۗءِ ۭ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّ

هُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٨٩﴾

उतारी है जो हर चीज़ को साफ़-साफ़ बयान करने वाली है, और हिदायत व रह़मत और खुशख़बरी है, मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) के लिए।

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِى الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾

९०- अल्लाह हुक्म देता है न्याय का, और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक़) देने का और बेहयाई, बुराई और सरकशी से रोकता है, 'वह' तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम ध्यान दो।

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٩١﴾

९१- और अल्लाह से किये अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करो, और जब तुम आपस में अ़हद करो तो क़समों को पक्का करने के बाद मत तोड़ो, और जबकि तुम अल्लाह को गवाह बना चुके हो, बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ۗ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ۗ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ۗ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾

९२- और तुम उस (औ़रत) की तरह न हो जाना जिसने अपना सूत मेहनत से कातने के बाद टुकड़े-टुकड़े कर के रख दिया, कि तुम भी अपनी क़समों को आपसी फ़साद का ज़रिया बनाने लगो; इस तरह कहीं ऐसा न हो कि एक गिरोह दूसरे से बढ़ जाए। अल्लाह इसके ज़रिये तुम्हें आज़माता है, और जिन बातों में तुम विभेद करते हो, 'वह' क़ियामत के दिन तुम्हारे मतभेदों की ह़क़ीक़त तुम पर ज़रूर खोल देगा।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

९३- और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत (समुदाय) बना देता, लेकिन 'वह' जिसे चाहता है गुमराह करता है, और जिसे चाहता है राह दिखाता है, और जो कुछ तुम कर रहे हो उसके बारे में तुम से सवाल हो कर रहेगा।

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾

९४- और अपनी क़समों को आपसी फ़साद का ज़रिया न बनाओ, कहीं कोई क़दम उस के जमने के बाद फिसल न जाए और अल्लाह की राह से तुम्हारे रोकने के बदले तुम्हें तकलीफ़ का मज़ा चखना पड़े, और तुम्हें सख़्त अ़ज़ाब मिले।

وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾

९५- और अल्लाह से जो तुमने अ़हद किया है, उसके बदले थोड़ी से भी क़ीमत न लो, अल्लाह के पास जो कुछ निश्चित

है वह तुम्हारे लिए कहीं ज़्यादा बेहतर है अगर तुम जानो।

९६- जो कुछ तुम्हारे पास है ख़त्म हो जाएगा, और जो अल्लाह के पास है बाक़ी रहने वाला है; और जिन लोगों ने सब्र किया 'हम' उनको ज़रूर बदला देंगे, जो कुछ वे अच्छा काम करते रहे।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

९७- भले काम जो व्यक्ति भी करेगा मर्द हो या औ़रत- और (शर्त यह है कि) वह ईमान वाला हो- तो हम उसे ज़रूर एक पाक ज़िन्दगी देंगे, और हम उन्हें उनके अच्छे कामों का ज़रूर बदला देंगे, जो वे करते रहे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

९८- तो जब आप कु़र्आन पढ़ने लगें, तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँग लिया करें;

فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

९९- उसका कुछ भी ज़ोर उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान ले आएँ, और अपने 'रब' पर भरोसा रखें।

اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝

१००- उसका ज़ोर तो बस उन्हीं लोगों पर चलता है, जो उसे दोस्त बनाए रखते हैं, और जो अल्लाह के साथ साझीदार ठहराते रहते हैं।

اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ۝

१०१- और जब 'हम' किसी आयत की जगह दूसरी आयत बदल कर लाते हैं; और अल्लाह ही बेहतर जानता है जो कुछ 'वह' उतारता है; तो कहते हैं, ''तुम खुद ही गढ़ लेते हो'' (नहीं) बल्कि उनमें से अक्सर जानते नहीं।

وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

१०२- कह दीजिए, ''इसको रूहुल कु़दुस (पवित्र आत्मा) ने आप के 'रब' के पास से हक़ के साथ उतारा है, ताकि ईमान वालों के क़दम जमा दे और मुसलमानों (आज्ञाकारी) के लिए हिदायत और खुशख़बरी है।

قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۝

१०३- और 'हम' खूब जानते हैं कि यह लोग कहते हैं, ''इन्हें तो एक व्यक्ति सिखा जाता है, हालाँकि जिसकी ओर वे संकेत करते हैं 'अ़जमी' हैं (उस की भाषा विदेशी है) और यह स्पष्ट अ़रबी भाषा में है।''

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ۭ لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ۝

اِنَّ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهۡدِيۡهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ

१०४- जो लोग अल्लाह की आयतों को नहीं मानते अल्लाह उनको राह नहीं दिखाता, और उनके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है।

اِنَّمَا يَفۡتَرِى الۡـكَذِبَ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ‌ ۚ وَاُولٰۤـئِكَ هُمُ الۡـكٰذِبُوۡنَ

१०५- झूठ तो बस वही लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों को मानते नहीं, और वही हैं जो झूठे हैं,

مَنۡ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنۡۢ بَعۡدِ اِيۡمَانِهٖۤ اِلَّا مَنۡ اُكۡرِهَ وَقَلۡبُهٗ مُطۡمَـئِنٌّ ۢ بِالۡاِيۡمَانِ وَلٰـكِنۡ مَّنۡ شَرَحَ بِالۡـكُفۡرِ صَدۡرًا فَعَلَيۡهِمۡ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ‌ ۚ وَلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ

१०६- जिस व्यक्ति ने अल्लाह पर ईमान लाने के बाद 'उससे' कुफ़्र किया- सिवाय उसके, जो इसके लिए मजबूर कर दिया गया हो- और उसका दिल ईमान पर संतुष्ट हो, बल्कि वह जिसने कुफ़्र के लिए सीना खोल दिया हो तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उनके लिए बहुत बड़ा अ़ज़ाब है;

ذٰ لِكَ بِاَنَّهُمُ اسۡتَحَبُّوا الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا عَلَى الۡاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡـكٰفِرِيۡنَ

१०७- यह इसलिए कि उन्होंने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसंद कर लिया, और अल्लाह कुफ़्र करने वालों को हिदायत नहीं दिया करता।

اُولٰۤـئِكَ الَّذِيۡنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ وَسَمۡعِهِمۡ وَاَبۡصَارِهِمۡ‌ ۚ وَاُولٰۤـئِكَ هُمُ الۡغٰفِلُوۡنَ

१०८- यही लोग हैं जिनके दिलों पर, और कानों पर, और उनकी आँखों पर, अल्लाह ने मुहर लगा दी है और यही लोग ग़फ़लत में पड़े हुए हैं,

لَا جَرَمَ اَنَّهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ

१०९- बेशक आख़िरत में वे ही घाटे में रहेंगे।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيۡنَ هَاجَرُوۡا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا فُتِنُوۡا ثُمَّ جٰهَدُوۡا وَصَبَرُوۡۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنۡۢ بَعۡدِهَا لَـغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ

११०- फिर आप का रब उन लोगों के लिए जिन्होंने इसके बाद कि वे आज़माइश में पड़ चुके थे घर बार छोड़ा, फिर जिहाद किया और सब्र से काम लिया तो इसके बाद बेशक आप का रब उन को माफ़ करने वाला, बड़ा रह़म वाला है।

يَوۡمَ تَاۡتِىۡ كُلُّ نَفۡسٍ تُجَادِلُ عَنۡ نَّـفۡسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفۡسٍ مَّا عَمِلَتۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ

१११- और उस दिन जबकि हर जानदार अपनी जान बचाने के लिए बहस करने में लगा होगा, और हर व्यक्ति को उस के करतूतों का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और किसी पर जुल्म न होगा।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرۡيَةً كَانَتۡ اٰمِنَةً مُّطۡمَـئِنَّةً يَّاۡتِيۡهَا رِزۡقُهَا رَغَدًا مِّنۡ كُلِّ

११२- और अल्लाह ने एक बस्ती की मिसाल बयान की है; एक बस्ती थी जो निश्चिन्त संतुष्ट थी, हर ओर से

مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ
الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ۝

रोज़ी उनके पास बहुतायत के साथ पहुँच रही थी, फिर उन लोगों ने अल्लाह की नेअ़मतों की नाशुक्री की, तो अल्लाह ने उनके करतूतों की वजह से उनको भूख और भय के छा जाने का मज़ा चखाया।

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ
الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۝

११३- और उनके पास एक रसूल उन्हीं में से आया, तो उन्होंने उसको झुठला दिया, तो उन्हें अ़ज़ाब ने आ पकड़ा, और वे ज़ालिम थे।

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاشْكُرُوا
نِعْمَتَ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝

११४- तो जो चीज़ें तुम्हें अल्लाह ने, ह़लाल पाक रोज़ी दी हैं, उनमें से खाओ और अल्लाह की नेअ़मतों का शुक्र अदा करो, अगर तुम केवल 'उसी' की इबादत करते हो।

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ
الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنِ اضْطُرَّ
غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

११५- 'उसने' तो तुम पर केवल मुर्दार (मरे हुए) और खून, और सुअ़र का गोश्त, और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया, ह़राम ठहराया- फिर अगर कोई मजबूर हो जाए, और न तो वह इसकी इक्षा रखता हो, और न हद से आगे बढ़ने वाला हो- तो अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ
هَٰذَا حَلَالٌ وَهَٰذَا حَرَامٌ لِتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ
الْكَذِبَ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ
الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۝

११६- और अपनी ज़बानों के बयान किये हुए झूठ के आधार पर यह न कहा करो, कि "यह ह़लाल है और यह ह़राम" इस तरह अल्लाह पर झूठा आरोप लगाने लगो, जो लोग अल्लाह पर झूठा आरोप लगाते हैं, वह कामियाब नहीं होते।

مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

११७- यह थोड़ा सा ऐ़श है, फिर दुखदायी अ़ज़ाब होगा।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا
عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا
أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

११८- और यहूदियों पर हमने वे चीज़ें ह़राम कर दी थीं, जिनका बयान 'हमने' तुमसे किया, और 'हमने' उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया था बल्कि वे खुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ
ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ
مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

११९- फिर तुम्हारा 'रब' उनके लिए जिन्हों ने जिहालत की वजह से बुरे कर्म किये फिर तौबः कर के सुधार कर लिया, तो आप का 'रब' इसके बाद बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

إِنَّ إِبْرٰهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيفًا ۗ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

१२०- बेशक इब्राहीम (एक मिसाली व्यक्ति थे) अल्लाह के फ़रमाँबरदार, और 'उसी' के होकर रहने वाले, और मुश्रिकों में से न थे।

شَاكِرًا لِّأَنْعُمِهِ ۗ اجْتَبٰهُ وَهَدٰهُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝

१२१- 'उसकी' रह़मत के शुक्रगुज़ार थे अल्लाह ने उनको चुन लिया, और सीधी राह की ओर उनकी रह़नुमाई की।

وَآتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۗ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِينَ ۝

१२२- और 'हमने' उन्हें दुनिया में भी भलाई दी और आख़िरत में भी वह भले लोगों में से होंगे।

ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرٰهِيمَ حَنِيفًا ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

१२३- फिर 'हमने' आप की ओर वह़्य भेजी कि ''इब्राहीम के तरीक़े पर चलें जो बिल्कुल एक ओर के हो गये थे और मुश्रिकों में से न थे।''

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۗ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

१२४- 'सब्त' (सामूहिक इबादत का दिन) की पाबन्दी उन्हीं लोगों पर लागू की गयी थी जिन्होंने उसके बारे में विभेद किया था, और आप का 'रब' क़ियामत के दिन इनके बीच उन बातों का फ़ैसला कर देगा, जिन में यह विभेद करते रहे।

ادْعُ إِلٰى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۗ إِنَّ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

१२५- लोगों को अपने 'रब' की राह की ओर बुलाइए, ह़िकमत से और अच्छी नसीह़त से, और उनके साथ नसीह़त कीजिए तो अच्छे तरीक़े से, और आप का 'रब' उसे भली भाँति जानता है जो 'उसकी' राह से भटक गया, और 'वह' उन्हें भी भली भाँति जानता है जो राह पर हैं।

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ ۗ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِينَ ۝

१२६- और अगर तुम बदला लो तो उतना ही जितना तुम्हारे साथ किया गया है, और अगर सब्र करो तो यह सब्र करने वालों के लिए ज़्यादा बेहतर है।

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝

१२७- और आप सब्र करते रहिए और आप का सब्र करना अल्लाह ही की तौफ़ीक़ पर है, और आप उन लोगों के ह़ाल पर ग़म न कीजिए, न उनकी चालों से तंगदिल होइए।

إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَّالَّذِينَ هُمْ مُّحْسِنُونَ ۝

१२८- बेशक, अल्लाह उनके साथ है जो परहेज़गार और नेक हैं,



अनुवाद-सूरतु बनी इस्राईल

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के ६७१० अक्षर, १५८२ शब्द,१११ आयतें और १२ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

पारा नं०-१५

* سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝

१- पाक है, 'वह' जो अपने बन्दे (मुह़म्मद) को रातों-रात मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) से मस्जिदे-अक़्सा तक ले गया- जिसके चारों ओर 'हमने'' बरकतें रखी हैं- ताकि उनको 'हम'' अपनी कुछ निशानियाँ दिखाएं, बेशक 'वही' सुनने वाला, देखने वाला है।

وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ۝

२- और 'हमने'' मूसा को किताब दी थी, और 'हमने'' उसको बनी इस्राईल के लिए हिदायत का ज़रिया बनाया था, ''कि मेरे सिवा किसी और को काम बनाने वाला न ठहरा लेना।''

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ۝

३- ऐ उन लोगों की औलाद! जिन्हें 'हमने' नूह़ के साथ (नाव में) सवार कर लिया था, बेशक वह 'हमारे' शुक्रगुज़ार बन्दे थे।

وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ فِي الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝

४- और 'हमने'' बनी इस्राईल को किताब में बता दिया था, ''तुम ज़मीन पर दो बार फ़साद मचाओगे और बड़ी सरकशी करोगे।''

فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ۭ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝

५-जब उन दोनों में से पहले वादे का मौक़ा आ गया, तो 'हमने' तुम्हारे मुक़ाबले में अपने ऐसे बन्दों को उठाया जो बड़े जंगजू थे, तो वे बस्तियों में घुस कर हर ओर फैल गये और यह वादा पूरा होना ही था।

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ۝

६- फिर 'हमने'' तुम्हारी बारी उन पर लौटाई कि उन पर ग़ालिब (प्रभावी) हो सको, और माल और औलाद से तुम्हारी मदद की और तुम्हें बहुसंख्यक लोगों का एक जत्था बनाया।

७- ''अगर तुमने भलाई की तो अपने ही लिए की और अगर तुमने बुराई की तो अपने ही लिए की, फिर जब दूसरे (वादे) का वक्त आएगा, तो वह तुम्हारे चेहरे बिगाड़ देंगे और मस्जिद (बैतुल मक़दिस) में दाख़िल हो जाएंगे जैसे पहली बार वह उसमें दाख़िल हो गये थे, और ताकि जिस चीज़ पर उनका ज़ोर हो उसे तबाह कर डालें,

إِنْ أَحْسَنتُمْ أَحْسَنتُمْ لِأَنفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ۝

८- उम्मीद है कि तुम्हारा रब' तुम पर मेहरबानी करे और अगर तुम फिर उसी पुरानी नीति की ओर पलटे तो 'हम'' भी पलटेंगे, और दोज़ख को 'हमने'' काफ़िरों के लिए जेलख़ाना बना रखा है।''

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يَرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنْ عُدتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ۝

९- यह कुर्आन वह रास्ता दिखाता है, जो सब से सीधा है, और ईमान वालों को जो भले काम करते हैं खुशख़बरी देता है, कि उनके लिए बड़ा बदला है।

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ۝

१०- और यह भी कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उनके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

११- और इन्सान उसी तरह बुराई माँगता है, जिस तरह भलाई की दुआ माँगता है, और इन्सान है ही बड़ा जल्द बाज़।

وَيَدْعُ الْإِنسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنسَانُ عَجُولًا ۝

१२- और 'हमने' रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया है, रात की निशानी को 'हमने' मद्धिम बनाया, और दिन की निशानी को 'हमने' रौशन कर दिया- ताकि तुम अपने रब' का फ़ज़्ल (रोज़ी) ढूँढों और ताकि तुम वर्षो की गिनती और हिसाब मालूम कर सको, और हर चीज़ को 'हमने' अलग-अलग स्पष्ट करके बयान कर दिया है।

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ ۖ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ۝

१३- और 'हमने' हर इन्सान का शकुन- -अपशकुन उसकी अपनी गर्दन से बाँध दिया है, और क़ियामत के दिन 'हम' उसका 'नाम-ए-आ़माल' (लेख) निकाल कर सामने कर देंगे, जिसे वह खुला हुआ देख लेगा।

وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ۝

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا

१४- (कहा जाएगा) ''पढ़ अपनी किताब (कर्म पत्र) आज तू खुद ही अपना हिसाब लेने के लिए काफ़ी है।''

مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ
فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ
وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا

१५- और जो व्यक्ति हिदायत (सीधी राह) अपनाता है तो अपने ही लिए अपनाता है, और जो गुमराह होता है तो उसका वबाल भी उसी पर होता है और कोई व्यक्ति किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा। और 'हम' अ़ज़ाब नहीं दिया करते जब तक कि उसमें कोई रसूल न भेज दें।

وَاِذَاۤ اَرَدْنَاۤ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا
فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا
تَدْمِيْرًا

१६- और जब 'हम' इरादा कर लेते हैं किसी बस्ती के हलाक करने का, तो उसके खुशहाल लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वे नफ़रमानी करने लग जाते हैं, तब उन पर बात पूरी हो जाती है, तो 'हम' उन्हें बिल्कुल बरबाद कर देते हैं।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ؕ وَكَفٰى
بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا

१७- और 'हम' नूह के बाद कितनी ही क़ौमों को हलाक कर चुके हैं, और आप का 'रब' ही अपने बन्दों के गुनाहों को जानने, देखने के लिए काफ़ी है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا
نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا
مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا

१८- जो व्यक्ति जल्द मिलने वाली (दुनिया) का इच्छुक हो तो 'हम' उसमें से जिसे चाहते हैं और जितना चाहते हैं जल्द दे देते हैं, फिर 'हमने' उसके लिए दोज़ख़ को निश्चित कर रखा है जिसमें वह (दाख़िल होगा इस ह़ाल में कि तिरस्कृत) ठुकराया हुआ होगा;

وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا

१६- और जो व्यक्ति आख़िरत का इच्छुक होगा, और उसके लिए कोशिश करेगा जैसी कोशिश करना चाहिए, और वह ईमान वाला भी हो, तो ऐसे ही लोग हैं जिनकी कोशिश कुबूल की जाएगी।

كُلًّا نُّمِدُّ هٰۤؤُلَآءِ وَهٰۤؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ وَمَا كَانَ
عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا

२०- 'हम' इनको भी और उनको भी, हर एक को तुम्हारे 'रब' की देन में से मदद करते जा रहे हैं, और तुम्हारे 'रब' की देन बन्द नहीं है।

اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ وَلَلْاٰخِرَةُ
اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا

२१- देखो, कैसे 'हमने' कुछ लोगों को कुछ लोगों पर फ़ज़ीलत (बढ़ौतरी) दे रखी है, और आख़िरत में तो बड़े दर्जे हैं और बड़ी फ़ज़ीलत है।

२२- अल्लाह के साथ कोई दूसरा मअ़बूद (उपास्य) न बनाओ, वरना तुम ज़लील और लाचार हो कर रह जाओगे।

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ۝

२३- और तुम्हारे 'रब' ने फ़ैसला कर दिया है, कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो, और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो, अगर उनमें से कोई एक या दोनों ही तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ, तो उन्हें 'उफ़' तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे अदब (आदर) के साथ बात करो;

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۭ
اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ
لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝

२४- और प्यार से विनम्रता के साथ उनके सामने भुजाएँ झुकाए रखो और उनके लिए दुआ़ करते रहो, 'ऐ मेरे रब'! जिस तरह उन्होंने मुझे बचपन में पाला है, उसी तरह 'तू' भी उन पर रह़म कर।''

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ
ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝

२५- तुम्हारा रब' खूब अच्छी तरह जानता है कि 'तुम्हारे' दिलों में क्या है?'' अगर तुम भले बन जाओ, तो वह तौबः करने वालों को माफ़ कर देने वाला है।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ
فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ۝

२६- और रिश्तेदारों, मुह़ताजों और मुसाफ़िरों को उनका ह़क़ अदा करते रहो और फ़ुज़ूल खर्ची न करो।

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا
تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ۝

२७- कि फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले शैतान के भाई हैं; और शैतान अपने 'रब' का बड़ा नाशुक्रा है।

اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ۭ وَكَانَ
الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ۝

२८- और अगर तुम अपने 'रब' की रह़मत के इन्तिज़ार में, जिसकी तुम्हें उम्मीद हो, उन (ह़क़दारों) की ओर न ध्यान दे सको, तो उनसे नर्मी से बात कह दिया करो।

وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاۗءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا
فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ۝

२९- और अपने हाथ को न तो अपनी गर्दन से बंधा हुआ (तंग) रखो, और न बिल्कुल खोल ही दो कि (सब दे कर) फिटकारे हुए लाचार होकर बैठ जाओ।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا
كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ۝

३०- बेशक तुम्हारा 'रब' जिसकी रोज़ी चाहता है फैला देता है,और (जिसकी चाहता है) तंग कर देता है, 'वह' अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला, खूब देखने वाला है।

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ
بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ۝

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ۭ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ۝

३१- और अपनी औलाद को मुफ्लिसी (निर्धनता) के डर से क़त्ल न करो, 'हम' उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी; बेशक इन का क़त्ल बहुत बड़े गुनाह की बात है।

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ۭ وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ۝

३२- और ज़िना (व्यभिचार) के क़रीब भी न जाना कि वह बेहयाई और बुरी राह है।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ۝

३३- और किसी जीव को क़त्ल न करो, जिसे (मारना) अल्लाह ने हराम ठहराया है, मगर हक़ के आधार पर; और जिस व्यक्ति को मज़लूमी की हालत में क़त्ल किया गया हो, तो 'हमने' उसके वारिस को अधिकार दे दिया है, (बदले का) तो उसको चाहिए कि क़त्ल में ज़्यादती न करे, कि वह मदद किया हुआ (कामियाब) है।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۠ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ۝

३४- और यतीम के माल के क़रीब भी न जाओ, मगर उससे जो बेहतर हो, यहाँ तक कि वह जवानी को पहुँच जाए, और अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करो कि अ़हद (प्रतिज्ञा) के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा।

وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝

३५- और जब नाप कर देने लगो, तो नाप पूरी रखा करो, और ठीक तराजू से तौला करो, यह बुहत अच्छी बात है और परिणाम के एतिबार से भी बहुत बेहतर है।

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ۝

३६- और जिस बात का तुम्हें इल्म न हो, उसके पीछे न लगो-बेशक कान और आँख, और दिल इनमें से हर एक के विषय में ज़रूर पूछा जाएगा।

وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ۝

३७- और धरती पर अकड़ कर न चलो, न तो तुम धरती को फाड़ सकते हो, और न लम्बे होकर पहाड़ों को पहुँच सकते हो।

كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ۝

३८- इन तमाम चीज़ों की बुराई तुम्हारे 'रब' के नज़दीक बहुत नापसंद है।

ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۭ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝

३९- यह हिकमत की उन बातों में से है, जो तुम्हारे 'रब' ने तुम पर 'वह्य' (आदेश) की है, और अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद (उपास्य) न ठहराना, वरना दोज़ख में डाल दिये जाओगे मलामत किये हुए और धुत्कारे हुए।

أَفَأَصْفٰكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ
إِنَاثًا ۚ إِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ۝

४०- क्या तुम्हारे 'रब' ने तुम्हारे लिए तो बेटे खास कर दिये और अपने लिए फ़रिश्तों को बेटियाँ बना लिया? बड़ी सख्त बात है जो तुम कहते हो।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ وَمَا يَزِيْدُهُمْ
إِلَّا نُفُوْرًا ۝

४१- और 'हमने' इस क़ुर्आन में तरह- -तरह की बातें स्पष्ट कर दीं, ताकि लोग नसीहत हासिल करें, मगर इससे उनकी दूरी और बढ़ती ही जा रही है।

قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ إِذًا لَّابْتَغَوْا
إِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا ۝

४२- कह दीजिए, ''अगर अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद होता- जैसा कि यह कहते हैं- तो वे अर्श (सिंहासन) तक पहुँचने की कोई राह ज़रूर निकाल लेते।''

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝

४३- 'वह' पाक है! और जो कुछ ये बकवास करते हैं उससे बहुत ऊँचा है;

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ۚ
وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ
تَسْبِيْحَهُمْ ۗ إِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۝

४४- सातों आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनमें हैं, सब 'उसी' की तस्बीह़ बयान करते हैं; और कोई चीज़ ऐसी नहीं, जो 'उसकी' प्रशंसा के साथ 'उसकी' तस्बीह़ न करती हो, लेकिन तुम उनकी तस्बीह़ को समझते नहीं, बेशक 'वह' बड़ा सहनशील, माफ़ करने वाला है।

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ۝

४५- और जब आप क़ुर्आन पढ़ते हैं, तो 'हम' आप के और उन लोगों के बीच, जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, एक पर्दा की आड़ कर देते हैं;

وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ
وَقْرًا ۚ وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِى الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓى
أَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ۝

४६- और उनके दिलों पर पर्दा डाल देते हैं कि उसे समझ न सकें; और उनके कानों में बोझ पैदा कर देते हैं, और जब आप क़ुर्आन में अपने 'एक रब' का ज़िक्र करते हैं, तो वे पीठ फेर कर भाग खड़े होते हैं।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ إِذْ يَسْتَمِعُوْنَ إِلَيْكَ
وَإِذْ هُمْ نَجْوٰٓى إِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ إِنْ تَتَّبِعُوْنَ إِلَّا
رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝

४७- 'हम' जानते हैं, जब यह आप की ओर कान लगाते हैं, कि यह किस नियत से सुनते हैं; और जब यह काना फूसी करते हैं, (अर्थात) जब ज़ालिम कहते हैं, ''तुम तो एक ऐसे व्यक्ति के पीछे चल रहे हो जिस पर जादू किया गया है।''

انْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا

४८- देखो! यह कैसी मिसालें तुम्हारे बारे में देते हैं, ये तो भटक गये हैं, अब कोई राह नहीं पा सकते।

وَقَالُوا أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا

४९- और कहते हैं, ''जब हम' हड्डियाँ और चूर-चूर हो जाएंगे, तो क्या नए सिरे से पैदा हो कर उठेंगे?''

قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا

५०- कह दीजिए, ''तुम पत्थर या लोहा हो जाओ;''

أَوْ خَلْقًا مِمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ ۚ فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا ۖ قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هُوَ ۖ قُلْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا

५१- या कोई और चीज़, जो तुम्हारे नज़दीक इससे भी ज़्यादा (कठोर) हो,'' वे कहेंगे, ''कौन हमें दोबारा ज़िन्दा करेगा?'' कह दीजिए, 'वही' जिसने पहली बार हमें पैदा किया,'' फिर वे तुम्हारे आगे सर हिला कर पूछेंगे, ''अच्छा तो वह कब होगा; कह दीजिए, '' उम्मीद है कि जल्द ही होगा।''

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا

५२- जिस दिन 'वह' तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उसकी तअ़रीफ़ के साथ जवाब दोगे, और यह ख़याल करोगे कि बस थोड़ी ही देर (दुनिया में) रहे।

وَقُلْ لِعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُبِينًا

५३- और मेरे बन्दों से कह दीजिए, (लोगों से) ''ऐसी बातें कहा करें जो बहुत पसंदीदा हों, क्योंकि शैतान लोगों के बीच फ़साद डलवा देता है, बेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है''

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۖ إِنْ يَشَأْ يَرْحَمْكُمْ أَوْ إِنْ يَشَأْ يُعَذِّبْكُمْ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا

५४- तुम्हारा 'रब' तुम को खूब जानता है, 'वह' अगर चाहे तो तुम पर रह़म करे, और 'वही' अगर चाहे तो तुमको अ़ज़ाब देने लगे,- और 'हमने' तुमको उनका ज़िम्मेदार बना कर नहीं भेजा।

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَىٰ بَعْضٍ ۖ وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا

५५- और तुम्हारा 'रब' उनको खूब जानता है, जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और 'हमने' कुछ नबियों को कुछ पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी थी, और दाऊद को ज़बूर दी थी।

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا

५६- कह दीजिए, ''पुकार कर देखो! उनको जिनको तुमने 'उसके' सिवा (मअ़बूद) बना रखे हैं, न तुम्हारी कोई तकलीफ़ दूर कर सकते हैं, और न तुम्हारी ह़ालत बदल सकते हैं।''

أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ
الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ
عَذَابَهُ ۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۝

५७- यह लोग जिनको पुकारते हैं वे ख़ुद अपने रब' के यहाँ ज़रिया ढूँढते हैं, कि कौन उनमें (अल्लाह का) ज़्यादा से ज़्यादा क़रीबी हो जाए; और 'उसके' रह़मत की उम्मीद लगाते हैं और उसके अ़ज़ाब से डरते हैं; बेशक तुम्हारे 'रब' का अ़ज़ाब है ही डरने की चीज़।

وَإِن مِّن قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ
مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ
مَسْطُورًا ۝

५८- और कोई बस्ती ऐसी नहीं जिसको 'हम' क़ियामत से पहले हलाक न कर दें, या सख़्त अ़ज़ाब न दें; यह बात किताब में लिखी जा चुकी है।

وَمَا مَنَعَنَا أَن نُّرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَن كَذَّبَ بِهَا
الْأَوَّلُونَ ۚ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۚ
وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ۝

५९- और 'हमें' निशानियाँ भेजने से इसके सिवा किसी चीज़ ने नहीं रोका, कि पहले के लोग उनको झुठला चुके हैं। और 'हमने' 'समूद' को स्पष्ट प्रमाण के रूप में ऊँटनी दी; मगर उन्हों ने उसके साथ ज़ुल्म किया; और निशानियाँ तो 'हम' इसी लिए भेजते हैं कि उनके ज़रिये डराएँ।

وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۚ وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا
الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ
فِي الْقُرْآنِ ۚ وَنُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ۝

६०- और जब 'हमने' तुमसे कहा था, तुम्हारे 'रब' ने लोगों को अपने घेरे में ले रखा है, और जो नुमाइश हमने तुम्हें दिखायी, उसे तो हमने' लोगों के लिए केवल एक आज़माइश बना दिया; और उस पेड़ (वृक्ष) को भी जिसको क़ुर्आन में लानत वाला कहा गया है; और हम' उन्हें डराते हैं, लेकिन इससे उनकी बढ़ी हुई सरकशी और बढ़ रही है।''

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا
إِبْلِيسَ قَالَ أَأَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ۝

६१- और जब 'हमने' फ़रिश्तों से कहा, ''आदम को सज्दः करो, तो सब ने सज्दः किया मगर इब्लीस ने नहीं किया, उसने कहा, ''क्या, मैं ऐसे व्यक्ति को सज्दः करूँ, जिसे 'तूने' मिट्टी से पैदा किया।

قَالَ أَرَأَيْتَكَ هَٰذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ
إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا قَلِيلًا ۝

६२- कहने लगा, ''देख तो सही! उसे जिसको 'तूने' मेरे मुक़ाबले में श्रेष्ठता दी है, अगर 'तूने' मुझे क़ियामत के दिन तक मोहलत दे दी तो मैं इसकी पूरी नस्ल को जड़ से उखाड़ डालूँगा सिवाय थोड़े से लोगों के।''

قَالَ اذْهَبْ فَمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاؤُكُمْ
جَزَاءً مَّوْفُورًا ۝

६३- फ़रमाया, ''दूर हो जा! इनमें से जो व्यक्ति तेरे पीछे चलेगा, तो तुम सब का भरपूर बदला दोज़ख़ है;

وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِمْ
بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ
وَعِدْهُمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ۝

६४- और तू उनमें से जिस-जिस को अपनी आवाज़ से बहका सकता है बहका ले, फिर अपने सवारों और अपने प्यादों (पैदल सेना) से हमला कर, माल और औलाद में उनका साझीदार बन जा, और उनसे वादे कर, किन्तु शैतान उनसे जो वादे करता है, वह एक धोखे के सिवा और कुछ भी नहीं होता।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ ۚ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ
وَكِيلًا ۝

६५- बेशक 'वह' जो मेरे (खास) बन्दे हैं उन पर तेरा कुछ भी ज़ोर नहीं चल सकता, और तुम्हारा 'रब' इसके लिए काफ़ी है''

رَبُّكُمُ الَّذِي يُزْجِي لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ
فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۝

६६- तुम्हारा 'रब' तो 'वही' है जो तुम्हारे लिए समुद्र में कश्ती (नाव) चलाता है ताकि तुम उसके फ़ज़्ल (रोज़ी) को तलाश करो, बेशक 'वह' तुम पर बहुत मेहरबान है।

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ ۖ
فَلَمَّا نَجَّاكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ
كَفُورًا ۝

६७- और जब तुमको समुद्र में तकलीफ़ पहुँचती है, तो 'उसके' सिवा सब ग़ायब हो जाते हैं, फिर जब 'वह' तुम को बचाकर खुश्की (शुष्क-भूमि) में पहुंचा देता है तो तुम उससे मुहँ मोड़ जाते हो, और इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है।

أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ
حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ۝

६८- क्या तुम इस बात से निश्चिन्त हो गये हो, कि 'वह' खुश्क ज़मीन के किसी हिस्से में तुमको धंसा दे, या तुम पर पत्थर बरसाने वाली आँधी भेज दे, फिर तुम अपने लिए कोई संरक्षक न पाओगे।

أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ
عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِنَ الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا
تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ۝

६६- या इस बात से तुम निश्चिन्त हो गये हो, कि तुमको दूसरी बार समुद्र में ले जाए, फिर तुम पर तेज़ हवा चलाए और तुम्हारे कुफ्र की वजह से तुमको डुबो दे; फिर तुम किसी को ऐसा न पाओ जो तुम्हारे लिए इस पर 'हमारा' पीछा करने वाला हो?

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ
وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ
مِمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ۝

७०- और 'हमने' आदम की औलाद को इज़्ज़त दी, और उनको थल और जल में सवारी दी, और अच्छी पाक चीज़ों की उन्हें रोज़ी दी, और अपनी पैदा की हुई मख्लूक़ (प्राणियों) पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी।

يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ ۖ فَمَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝

७१- (उस दिन से डरो) जिस दिन हम' हर इन्सानी गिरोह को उनके रहनुमाओं के साथ बुलाएंगे, तो जिनको उनका आ़मालनामा, दाहिने हाथ में दिया जाएगा, वह अपना आ़मालनामा पढ़ेंगे, और उन पर धागे बराबर भी ज़ुल्म न होगा,

وَمَنْ كَانَ فِي هَٰذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝

७२- और जो व्यक्ति यहाँ अन्धा हो कर रहा , वह आख़िरत में भी अन्धा रहेगा, और वह राह से बहुत दूर जा पड़ा होगा।

وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهُ ۖ وَإِذًا لَاتَّخَذُوكَ خَلِيلًا ۝

७३- और जो 'हमने' वह्य तुम्हारी ओर भेजी है, क़रीब था कि ये (काफ़िर) लोग तुम को इससे बिचला दें ताकि इस (क़ुर्आन) को छोड़ कर तुम कुछ और झूठ 'हमारे' नाम पर गढ़ लो, और तब तुमको वह दोस्त बना लेते।

وَلَوْلَا أَنْ ثَبَّتْنَاكَ لَقَدْ كِدْتَ تَرْكَنُ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا ۝

७४- और अगर 'हमने' आप को जमाए न रखा होता, तो आप उनकी ओर थोड़ा झुकने के क़रीब हो गये थे;

إِذًا لَأَذَقْنَاكَ ضِعْفَ الْحَيَاةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ۝

७५- उस समय 'हम' आप को दुगना अ़ज़ाब चखाते- ज़िन्दगी में भी और मौत के बाद भी, फिर आप 'हमारे' मुक़ाबले में किसी को भी मददगार न पाते।

وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّونَكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ مِنْهَا ۖ وَإِذًا لَا يَلْبَثُونَ خِلَافَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

७६- और क़रीब था कि यह लोग (काफ़िर) इस ज़मीन (मक्का) से आप के क़दम उखाड़ दें, ताकि आप को वहाँ से निकाल दें, और इस ह़ालत में यह भी आप के बाद बहुत ही कम ठहरने पाते।

سُنَّةَ مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُسُلِنَا ۖ وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ۝

७७- यही तरीक़ा 'हमारे' उन रसूलों के विषय में रहा है, जिन्हें 'हमने' तुम से पहले भेजा था और तुम 'हमारे' नियम में कोई अन्तर न पाओगे।

أَقِمِ الصَّلَاةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَىٰ غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ ۖ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ۝

७८- नमाज़ क़ायम करो, सूरज के ढ़लने से लेकर रात के छा जाने तक और फज्र (सुबह़) में क़ुर्आन पढ़ने की पाबन्दी करो, बेशक फज्र का क़ुर्आन पढ़ना हुज़ूरी (साक्षात) की चीज़ है।

७९- और रात के कुछ हिस्से में भी, (तहज्जुद की नमाज़ पढ़ लिया करो,) यह आप के हक़ में (फर्ज़ से) ज़्यादा चीज़ (नफ्ल) है, उम्मीद है कि आप का 'रब' आप को मक़ामे महमूद (प्रशंसा योग्य स्थान) दे।

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ۝

८०- और कहिए, ''ऐ मेरे रब'! मुझको दाख़िल कीजिए, तो सच्चाई के साथ दाख़िल कीजिए, और मुझे निकालिए तो सच्चाई के साथ निकालिए, और 'अपनी' ओर से मुझे ग़लूबा (शक्ति) प्रदान कीजिए।''

وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِیْرًا ۝

८१- और कह दीजिए, ''हक़ (सत्य) आ गया और बातिल (असत्य) मिट गया, बेशक बातिल तो था ही मिटने के लिए।''

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝

८२- और 'हम' क़ुर्आन के ज़रिये ऐसी बातें उतारते हैं, जो ईमान वालों के लिए शिफ़ा (इलाज) और रहमत है; और ज़ुल्म करने वालों का तो इससे नुक़सान ही बढ़ता है।

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ۙ وَلَا یَزِیْدُ الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝

८३- और जब 'हम' इन्सान को कोई नेअ़मत आता करते हैं, तो वह मुँह मोड़ लेता है, और पहलू बचा कर चलता है; और जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो नाउम्मीद हो जाता है।

وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ یَئُوْسًا ۝

८४- कह दीजिए, ''हर व्यक्ति अपने-अपने तरीक़े पर काम करता है, तुम्हारा 'रब' ही खूब जानता है कि कौन ज़्यादा सही रास्ते पर है?''

قُلْ كُلٌّ یَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِیْلًا ۝

८५- और आप से रूह़ के विषय में पूछते हैं, कह दीजिए, ''रूह मेरे रब' के हुक्म में से है, और तुम्हें जो इल्म दिया गया है वह बहुत थोड़ा ही है।''

وَیَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّیْ وَمَآ اُوْتِیْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِیْلًا ۝

८६- और अगर 'हम' चाहें तो जो वह्य 'हमने' आप की ओर की है, वह छीन लें फिर तुम उसके लिए 'हमारे' मुक़ाबले में अपना कोई हिमायती न पाओगे।

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِیْٓ اَوْحَیْنَآ اِلَیْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَیْنَا وَكِیْلًا ۝

८७- यह तो बस तुम्हारे रब' की रहमत है, हक़ीक़त में 'उसका' तुम पर बड़ा फज़्ल है।

اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَیْكَ كَبِیْرًا ۝

८८- कह दीजिए, ''अगर इन्सान और जिन्न इस के लिए इकट्ठे हो जाएं कि इस क़ुर्आन जैसी कोई चीज़ बना लाएँ, तो इस जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे, चाहे वे आपस में एक-दूसरे के मददगार हों।

८९- और 'हमने' इस क़ुर्आन में लोगों के लिए सब बातें तरह-तरह से बयान कर दी हैं, फिर भी अक्सर लोगों ने इन्कार करने के सिवा क़ुबूल न किया।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا

९०- और कहने लगे, ''हम' तुम पर हरगिज़ ईमान न लाएंगे, जब तक तुम हमारे लिए ज़मीन से एक चश्मा (स्रोत) न जारी कर दो;

وَقَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنْبُوعًا

९१- या खुद तुम्हारे लिए एक बाग़ खजूरों या अंगूरों का हो और तुम उसके बीच बहती नहरें निकाल दो;

أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِنْ نَخِيلٍ وَعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْأَنْهَارَ خِلَالَهَا تَفْجِيرًا

९२- या तुम 'हम' पर आसमान से टुकड़े गिरा दो जैसा कि तुम दावा करते हो, या तुम अल्लाह या फ़रिश्तों को सामने ले आओ;

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا أَوْ تَأْتِيَ بِاللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ قَبِيلًا

९३- या फिर तुम्हारे लिए कोई घर ही सोने का हो, या तुम आसमान पर चढ़ जाओ; हम तो तुम्हारे चढ़ने पर भी ईमान नहीं लाएंगे, जब तक कि तुम हम पर कोई किताब न लाओ, जिसे हम पढ़ सकें'' कह दीजिए, ''पाक है मेरा रब! क्या मैं एक इन्सानी रसूल के सिवा कुछ और हूँ?''

أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِنْ زُخْرُفٍ أَوْ تَرْقَىٰ فِي السَّمَاءِ وَلَنْ نُؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتَّىٰ تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَقْرَؤُهُ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا

९४- और लोगों को ईमान लाने से, जबकि हिदायत उनके पास आ गयी, इसके सिवा कोई चीज़ रूकावट नहीं हुई, कि कहने लगे, ''क्या अल्लाह ने आदमी को रसूल बना कर भेजा है?''

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا

९५- कह दीजिए कि ''अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते आबाद हो कर चलते- फिरते तो 'हम' उनके लिए ज़रूर आसमान से किसी फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेजते।''

قُلْ لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَسُولًا

९६- कह दीजिए, ''मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह ही गवाह काफ़ी है 'वह' अपने बन्दों की पूरी ख़बर रखने वाला, देखने वाला है।''

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

वَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ۚ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ۚ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ۝

९७- और जिस व्यक्ति को अल्लाह राह दिखाता है, वही राह पाया हुआ है; और 'वह' जिसे गुमराह (पथभ्रष्ट) करे तो तुम अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार नहीं पाओगे, और क़ियामत के दिन 'हम' उन लोगों को औंधे मुँह अन्धे, गूँगे, और बहरे उठाएँगे, और उनका ठिकाना जहन्नम है, जब आग बुझने को होगी तो 'हम' और भड़का देंगे;

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ۝

९८- यह सज़ा है उनकी, इस वजह से कि वे 'हमारी' आयतों का इन्कार किया करते थे; और कहते थे, ''जब हम हड्डियाँ और बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाएँगे तो क्या हमें नये सिरे से पैदा करके उठा खड़ा किया जाएगा?''

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۚ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ۝

९९- क्या वह यह नहीं देखते! कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, 'उसे' उन जैसों को भी पैदा करने की क़ुदरत है? और 'उसने' तो उनके लिए एक समय निश्चित कर रखा है, जिसमें कोई सन्देह नहीं, इस पर भी ज़ालिमों ने इन्कार करने के सिवा कुछ नहीं माना।

قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْٓ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۚ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ۝

१००- कह दीजिए, ''अगर तुम मेरे रब की रह़मत के ख़ज़ाने के मालिक होते, तो ज़रूर तुम खर्च हो जाने के डर से रोके रहते, और इन्सान तो है ही बड़ा तंगदिल।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ۝

१०१- और 'हमने' मूसा को नौ खुली निशनियाँ दी थीं, जबकि वह बनी इस्राईल के पास आए थे, तो आप उनसे पूछिये; तो फ़िरऔन ने उनसे कहा, ''ऐ मूसा! मेरी समझ में तुम पर जादू किया गया है।''

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ۝

१०२- उन्होंने कहा; ''तू खूब जानता है कि आसमानों और ज़मीन के 'रब' के सिवा किसी और ने इन निशानियों को नहीं भेजा; और मैं समझता हूँ कि, ऐ फ़िरऔन तुमने अपने को हलाकत में डाल दिया।''

فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ۝

१०३- फिर उसने चाहा कि उनके क़दम ज़मीन (मिस्र) से उखाड़ दे, तो 'हमने' उसको और उसके साथियों को डुबो दिया।

وَقُلْنَا مِنْ بَعْدِهِ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا

१०४- और उसके बाद 'हमने' बनी इस्राईल से कहा, ''तुम इस ज़मीन में रहो-बसो फिर जब आख़िरत का वादा आएगा, तो 'हम' तुम सब को इकट्ठा कर देंगे।''

وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا

१०५- और 'हमने' इस (क़ुर्आन) को हक़ ही के साथ नाज़िल किया है, और यह हक़ ही के साथ नाज़िल हुआ है, और 'हमने' तो तुमको बस खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है।

وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَىٰ مُكْثٍ وَنَزَّلْنَاهُ تَنْزِيلًا

१०६- और क़ुर्आन को 'हमने' थोड़ा-थोड़ा कर के इसलिए उतारा, ताकि तुम ठहर-ठहर कर लोगों को इसे पढ़ कर सुनाते रहो, और 'हमने' इसे धीरे-धीरे उतारा है।

قُلْ آمِنُوا بِهِ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا ۚ إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا

१०७- कह दीजिए, ''तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ, जिन लोगों को इससे पहले इल्म दिया जा चुका है, जब यह उनको पढ़ कर सुनाया जाता है, तो वे ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं।''

وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا

१०८- और कहते हैं, ''पाक है हमारा रब! बेशक हमारे 'रब' का वादा तो पूरा होकर ही रहता है।''

وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۩

सज्दः

१०९- और वे रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर जाते हैं और इससे उनका खुशूअ़ (विनम्रता) और बढ़ जाता है।

قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَٰنَ ۖ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا

११०- कह दीजिए, ''तुम अल्लाह को पुकारो या रह़मान को पुकारो, या जिस नाम से भी पुकारो, उसके सब अच्छे ही नाम हैं।'' और अपनी नमाज़ न बहुत ऊँची आवाज़ से पढ़िए और न उसे बहुत चुपके से पढ़िए बल्कि इन दोनों के बीच का रास्ता अपनाइए।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ ۖ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا

१११- और कह दीजिए, ''हर तरह की तअ़रीफें अल्लाह ही के लिए हैं, 'जिसने' न तो अपना कोई बेटा बनाया और न बादशाही में 'उसका' कोई साझीदार है, और न ऐसा ही है कि 'वह' बेबस कि कोई 'उसका' मददगार हो, और उसको बड़ा समझ कर उसकी खूब बड़ाइयाँ बयान कीजिए।''



अनुवाद-सूरतुल् कहफ़ि

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के ६६२० अक्षर, १२०१ शब्द,११० आयतें और १२ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- सब तअ़रीफें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने अपने बन्दे पर (यह) किताब नाज़िल की और इस में कोई टेढ़ नहीं रखी,

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَىٰ عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ۜ

२- ठीक और दुरूस्त (किताब) ताकि वह सख़्त अ़ज़ाब से डराए जो 'उसकी' ओर से आ पड़ेगा, और ईमान लाने वालों को जो भले काम करते रहते हैं, खुशख़बरी सुना दें कि उनके लिए अच्छा बदला है;

قَيِّمًا لِيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِنْ لَدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا

३- जिस में वे हमेशा-हमेश रहेंगे।

مَاكِثِينَ فِيهِ أَبَدًا

४- और उन लोगों को भी डराए, जो कहते हैं ''अल्लाह ने (किसी के) बेटा बना लिया है।

وَيُنْذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا

५- उनको इस बात का कुछ भी इल्म नहीं और न उनके बाप-दादा ही को था, बड़ी सख़्त बात है, जो उनके मुहँ से निकलती है, यह केवल झूठ बकते हैं।

مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ ۚ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۚ إِنْ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا

६- तो शायद, आप उनके पीछे अगर वह ईमान न लाएँ, तो अफ़सोस के मारे (क्या) अपनी जान दे देंगे।

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسَكَ عَلَىٰ آثَارِهِمْ إِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا بِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا

७- जो चीज़ ज़मीन पर है उसको 'हमने' उसके लिए ज़ीनत (शोभा) बनाया ताकि लोगों को आज़माएं, कि उनमें बेहतर अ़मल करने वाला कौन है?

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا

८- और जो कुछ उस (धरती) पर है उसे तो 'हम' एक चटियल मैदान बना देने वाले हैं।

وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا

९- क्या आप समझते हैं कि कहफ़ (गुफ़ा) और रक़ीम वाले हमारी अद्‌भुत निशानियों में से थे?-

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۝

१०- जब उन नौजवानों ने गुफ़ा में जाकर पनाह ली, तो कहा, ''हमारे रब! हमें अपने यहाँ से रह़मत उतार, और इस मामले में हमारी रहनुमाई का सामान कर दे।''

فَضَرَبْنَا عَلَىٰ آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۝

११- फिर 'हमने' उस गुफ़ा में सालों-साल तक उनके कानों पर पर्दा डाल दिया।

ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوا أَمَدًا ۝

१२- फिर 'हमने' उन्हें उठाया ताकि 'हम' मालूम करें कि कौन दोनों गिरोहों में से जानने वाला है, कि कितनी अवधि तक वे रहे।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُمْ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۝

१३- 'हम' उनका क़िस्सा ठीक-ठीक बयान करते हैं, वे कुछ नौजवान थे जो अपने 'रब' पर ईमान लाए थे, और 'हमने' उन्हें हिदायत में तरक़्क़ी दी थी।

وَرَبَطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَنْ نَدْعُوَ مِنْ دُونِهِ إِلَٰهًا ۖ لَقَدْ قُلْنَا إِذًا شَطَطًا ۝

१४- और 'हमने' उनके दिलों को मज़बूत कर दिया, जब वे उठे तो उन्होंने कहा, ''हमारा 'रब' वही है जो आसमानों और ज़मीन का 'रब' है, हम तो उसके अ़लावा किसी मअ़बूद (उपास्य) को न पुकारेंगे, (अगर हम ने ऐसा किया) तो उस समय हमने अ़क़्ल से दूर की बात कही।

هَٰؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ آلِهَةً ۖ لَوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ ۖ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝

१५- यह हमारी क़ौम के लोग हैं, जिन्होंने उसके सिवा दूसरों को मअ़बूद बना लिए हैं, भला यह उन पर कोई खुली दलील क्यों नहीं लाते। तो उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा, जो अल्लाह पर झूठ गढ़े?

وَإِذِ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأْوُوا إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ مِرْفَقًا ۝

१६- और जब तुम लोग इनसे, और जिन की यह अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं उनसे अलग हो गये हो; तो गुफ़ा में पनाह लो, तुम्हारा 'रब' तुम पर रह़मत फैला देगा, और तुम्हारे लिए तुम्हें कामियाबी का सामान पैदा कर देगा।

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَزَاوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِنْهُ ۚ ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ ۗ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُرْشِدًا ۝

१७- और तुम सूरज को देखते हो कि जब वह निकलता, तो उनकी गुफ़ा से दाहिनी ओर हटा रहता, और जब डूबता तो उनके बाईं ओर कतरा कर निकलता है। और वे उसके अन्दर एक कुशादा (विस्तृत) जगह में है; यह अल्लाह की निशानियों में से है, जिसको अल्लाह हिदायत दे, वही राह पाने वाला है, और जिसे 'वह' गुमराह करें (अर्थात भटकताछोड़ दे,) उसका आप कोई मददगार, रहनुमाई करने वाला न पाएंगे।

وَتَحْسَبُهُمْ أَيْقَاظًا وَهُمْ رُقُودٌ ۚ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ وَكَلْبُهُم بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ ۚ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

१८- और तुम उनको जागता हुआ ख़याल करते हो हाँलाकि वह सोए हुए थे, हम ही उन्हें करवट दिलाते रहते हैं दाईं ओर भी और बाईं ओर भी-और उनका कुत्ता ड़योढ़ी पर अपने दोनों भुजाएँ फैलाए हुए था; अगर तुम उनको झाँक कर देखते तो तुम उनसे पीठ फेर कर भाग खड़े होते और तुम्हारे अन्दर उनकी दहशत बैठ जाती।

وَكَذَٰلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ ۚ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۖ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۚ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوا أَحَدَكُم بِوَرِقِكُمْ هَٰذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنظُرْ أَيُّهَا أَزْكَىٰ طَعَامًا فَلْيَأْتِكُم بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ﴿١٩﴾

१९- और इसी तरह 'हमने' उन्हें उठा खड़ा किया ताकि आपस में पूछ-ताछ करें, उनमें से एक कहने वाले ने कहा, ''भला तुम कितनी देर ठहरे होगे? बोले, कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम,'' उन्होंने कहा, खूब ''तुम्हारा 'रब' ही अच्छी तरह जानता है, जितनी देर तुम ठहरे, अब अपने में से किसी को यह (चाँदी का) सिक्का देकर शहर की ओर भेजो, फिर वह देख ले कि उसमें सबसे अच्छा खाना कौन सा मिलता है? तो उसमें से वह तुम्हारे लिए कुछ खाने को ले आए, और चाहिए कि वह नर्मी और होशियारी से काम ले, और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे।

إِنَّهُمْ إِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَن تُفْلِحُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٢٠﴾

२०- अगर वह तुम्हारी ख़बर पा जाएँगे तो पत्थरों से मार-मार कर तुम्हें ख़त्म कर डालेंगे, या तुम्हें अपने दीन (धर्म) में लौटा लेंगे, और तुमको उस वक़्त कामियाबी न मिल सकेगी।

وَكَذَٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ ۖ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِم بُنْيَانًا ۖ رَّبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ ۚ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِم مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾

२१- और इस तरह 'हमने' (लोगों को) उनकी सूचना देदी, ताकि वे जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि क़ियामत की घड़ी में कोई सन्देह नहीं है; उस वक़्त लोग उनके बारे में आपस में झगड़ने लगे, तो उन्होंने कहा, ''उन पर एक इमारत बनाओ, और उनके मामले को तो उनका 'रब' ही अच्छी तरह जानता है'' उनके बारे में और उनके मामले में जिन की राय ग़ालिब रही उन्होंने कहा, ''हम उन पर ज़रूर एक मस्जिद बनाएंगे।''

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۖ وَ

२२- (कुछ लोग) अब कहेंगे, ''वे तीन थे, और उनमें चौथा उनका कुत्ता था।'' और कहेंगे, ''वे पाँच थे, और उनमें छटा

يَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۭ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ڛ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَاۗءً ظَاهِرًا ۠ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ۝

उन का कुत्ता था''- यह बिना निशाने के पत्थर चलाना है। और यह भी कहेंगे, ''वे सात थे और उनमें आठवॉं उन का कुत्ता था।'' कह दीजिए, ''मेरा 'रब' ही उनकी संख्या को खूब जानता है।'' उनको जानते भी हैं तो थोड़े ही लोग, तो आप उन (के मामले) में बहस न कीजिए सिवाय सरसरी बहस के, और न उनके बारे में किसी से कुछ पूछिए।

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّىْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ۝

२३- और आप किसी चीज़ के बारे में यह न कहा कीजिए: ''मैं इसे कल कर दूँगा,''

اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ اللّٰهُ ۡ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ۝

२४- बल्कि (कहा कीजिए) ''इन्शाअल्लाह, (अल्लाह चाहे तो) जब आप भूल जाएं तो अपने रब को याद कर लिया कीजिए, और कहा कीजिए, ''उम्मीद है कि मेरा 'रब' इससे भी ज़्यादा सही बात की ओर रहनुमाई कर दे।''

وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ۝

२५- और वे अपनी गुफ़ा में तीन सौ साल और नौ साल ज़्यादा रहे।

قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ۭ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۡ وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ۝

२६- कह दीजिए, ''अल्लाह ही भली-भाँति जानता है जितना वे ठहरे, और आसमानों और ज़मीन की छिपी बात का सम्बन्ध 'उसी' से है, 'वह' क्या ही देखने वाला और सुनने वाला है! 'उस' के सिवा न कोई संरक्षक है? और न 'वह' अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है।

وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ڤ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ڟ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۝

२७- और आप पढ़ दिया कीजिए, जो कुछ वह्य आप पर, आप के 'रब' की किताब के ज़रिये भेजी गई है; कोई बदल उसकी बातों का नहीं हो सकता, और 'उसके' सिवा आप को कहीं पनाह नहीं मिल सकती।

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ۝

२८- और अपने आप को उन लोगों के साथ थामें रखा कीजिए, जो अपने रब को पुकारते रहते हैं, सुबह और शाम, और 'उसी' की रज़ामन्दी चाहते हैं; और आप की दोनों आँखें उन पर से न हटने पाएँ जो दुनिया की ज़िन्दगी के साज़ व सामान की चाह में लग जाएँ; और ऐसे व्यक्ति का कहना न मानिएगा, जिसके दिल को 'हमने' अपनी याद से ग़ाफ़िल कर रखा है, और जो अपनी वासना (इच्छा) के पीछे लगा है और उसका मामला हद से आगे बढ़ चुका है।

२६- और कह दीजिए, ''यह (क़ुर्आन) ह़क़ है, तुम्हारे रब की ओर से, तो जिसका जी चाहे ईमान लाए और जिस का जी चाहे इन्कार करे,'' 'हमने' ज़ालिमों के लिए आग तैयार कर रखी है, जिसकी क़नातें उन को घेरे होंगी, और अगर वह फ़रियाद करेंगे, तो ऐसे पानी से उनकी फ़रियाद पूरी की जाएगी जो तेल की तलछट की तरह होगा, और चेहरों को भूँन डालेगा; कितना बुरा होगा वह पानी! और कैसी बुरी होगी वह जगह!

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ
شَآءَ فَلْيَكْفُرْ إِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا أَحَاطَ
بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَإِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ
يَشْوِي الْوُجُوْهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَآءَتْ
مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

३०- बेशक जो लोग ईमान लाए, और भले काम किये, तो 'हम' भले काम करने वालों का बदला कभी बरबाद नहीं करते।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ إِنَّا لَا نُضِيْعُ أَجْرَ
مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾

३१- ऐसे ही लोगों के लिए हमेशा-हमेश के लिए बाग़ हैं, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनको उसमें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और वह हरे रंग के महीन और मोटे रेशमी कपड़े पहनेंगे, और ऊँचे तख़्तों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। क्या ही अच्छा बदला है! और क्या ही ख़ूब आराम की जगह है?

أُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ
الْأَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ
ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِئِيْنَ
فِيْهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ
مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾

३२- और उनसे दो व्यक्तियों की मिसाल बयान कीजिए: जिनमें से एक को 'हमने' दो बाग़ अंगूर के दे रखे थे, और उनको 'हमने' खजूरों से घेर रखा था, और उन दोनों के बीच 'हमने' खेती उगा रखी थी;

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا
جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا
بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾

३३- दोनों बाग़ अपना पूरा फल देते थे, और किसी की पैदावार में कोई कमी न रहती थी; और 'हमने' उन दोनों के बीच एक नहर जारी कर रखी थी;

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْئًا
وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾

३४- और उस (व्यक्ति) को ख़ूब पैदावार मिलती थी; तो उसने अपने साथी से बातें करते-करते बोल उठा, ''मैं तुझ से माल में और आदमियों में बढ़ कर इ़ज़्ज़त में हूँ।''

وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصٰحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ أَنَا
أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾

३५- और वह अपने बाग़ में इस ह़ाल में दाख़िल हुआ, कि अपने आप पर ज़ुल्म कर रहा था, उसने कहा! मैं नहीं समझता कि यह बाग़ कभी तबाह होगा;

وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ قَالَ مَآ أَظُنُّ
أَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ أَبَدًا ﴿٣٥﴾

३६- और न मैं यह समझता हूँ कि क़ियामत आने वाली है, और अगर मैं अपने रब की ओर लौटाया भी जाऊँ, तो ज़रूर उसमें अच्छी जगह पाऊँगा।''	وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنۡ رُّدِدۡتُّ اِلٰى رَبِّىۡ لَاَجِدَنَّ خَيۡرًا مِّنۡهَا مُنۡقَلَبًا ۞
३७- उसका दोस्त जो उससे बातें कर रहा था बोल उठा, ''क्या तू 'उसका' इन्कार करता है, 'जिसने' तुझको मिट्टी से, फिर नुत्फ़े (वीर्य) से पैदा किया, फिर तुझे एक पूरा आदमी बना दिया;	قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرۡتَ بِالَّذِىۡ خَلَقَكَ مِنۡ تُرَابٍ ثُمَّ مِنۡ نُّطۡفَةٍ ثُمَّ سَوّٰٮكَ رَجُلًا ۞
३८- लेकिन मेरा 'रब' 'वही' अल्लाह है, और मैं किसी को अपने रब के साथ साझीदार नहीं बनाता;	لّٰـكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّىۡ وَلَاۤ اُشۡرِكُ بِرَبِّىۡۤ اَحَدًا ۞
३९- और जब तुम अपने बाग़ में दाख़िल हुए तो तुमने 'माशाअल्लाह ला हौ़ला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि' (जो अल्लाह चाहे होता वही है अल्लाह के अ़लावा कोई शक्ति नहीं है।) क्यों न कहा (चाहे) तू भले ही देख रहा हो कि मैं माल और औलाद में तुझ से कम हूँ।	وَلَوۡلَاۤ اِذۡ دَخَلۡتَ جَنَّتَكَ قُلۡتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنۡ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنۡكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۞
४०- तो उम्मीद है, कि मेरा 'रब' मुझे तेरे बाग़ से अच्छा दे दे और तेरे इस बाग़ पर आसमान से कोई ऐसी आफ़त भेज दे, कि वह चटयल मैदान हो कर रह जाए;	فَعَسٰى رَبِّىۡۤ اَنۡ يُّؤۡتِيَنِ خَيۡرًا مِّنۡ جَنَّتِكَ وَ يُرۡسِلَ عَلَيۡهَا حُسۡبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصۡبِحَ صَعِيۡدًا زَلَقًا ۞
४१- या उसका पानी नीचे उतर जाए फिर तू उसको हासिल न कर सके।''	اَوۡ يُصۡبِحَ مَآؤُهَا غَوۡرًا فَلَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ لَهٗ طَلَبًا ۞
४२- और उसकी सारी पैदावार (अज़ाब के) घेरे में आ गयी, और वह अपने उस माल पर जो उसने ख़र्च किया था, और वह बाग टट्टियों पर गिरा पड़ा था, और वह कह रहा था, ''क्या ही अच्छा होता कि मैं अपने रब के साथ किसी को साझीदार न बनाया होता!''	وَاُحِيۡطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصۡبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيۡهِ عَلٰى مَاۤ اَنۡفَقَ فِيۡهَا وَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوۡشِهَا وَيَقُوۡلُ يٰلَيۡتَنِىۡ لَمۡ اُشۡرِكۡ بِرَبِّىۡۤ اَحَدًا ۞
४३- और कोई जत्था ऐसा न हुआ जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मदद करता, और न वह खुद ही मुक़ाबला कर सका।	وَلَمۡ تَكُنۡ لَّهٗ فِئَةٌ يَّـنۡصُرُوۡنَهٗ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنۡتَصِرًا ۞
४४- (उस समय यह बात खुल गयी,) कि सारा अधिकार अल्लाह ही के लिए है, 'वही' बदला देने में सब से अच्छा है और अंजाम की दृष्टि से सब से बेहतर है।	هُنَالِكَ الۡوَلَايَةُ لِلّٰهِ الۡحَـقِّ ؕ هُوَ خَيۡرٌ ثَوَابًا وَّخَيۡرٌ عُقۡبًا ۞

४५- और उन्हें दुनिया के ज़िन्दगी की मिसाल सुनाइएः उसकी मिसाल ऐसी है कि पानी को 'हमने' आसमान से बरसाया, तो उससे ज़मीन की पैदावार खूब फली- फूली, फिर वह चूरा-चूरा हो कर रह गयी जिसे हवाएं उड़ाए लिए फिरती हैं, और अल्लाह को तो हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) है,''

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝

४६- माल और औलाद तो दुनियावी ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं, और बाक़ी रहने वाले अच्छे अ़मल हैं, जो तुम्हारे 'रब' के नज़दीक बदले की दृष्टि से बेहतर हैं और उम्मीद की दृष्टि से भी।

اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ۝

४७- और जिस दिन 'हम' पहाड़ों को चलाएंगे, और तुम ज़मीन को देखोगे कि खुला मैदान है और 'हम' लोगों को इकट्ठा करेंगे तो उन में से किसी को भी न छोड़ेंगे;

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ۝

४८- और तुम्हारे रब के सामने सफ़ बाँध कर (पंक्तिबद्ध) तरीक़े से हाज़िर किये जाएंगे- ''तो तुम 'हमारे' सामने आ पहुँचोगे जैसा कि 'हमने' तुम्हें पहली बार पैदा किया था कि बल्कि तुम्हारा तो यह दावा था; कि 'हमने' तुम्हारे लिए कोई समय निश्चित ही नहीं किया।

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ۝

४६- और (अमलों की) किताब रख दी जाएगी, तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि जो कुछ उसमें लिखा है उससे डर रहे होंगे, और कह रहे होंगे, ''हाय! हमारा दुर्भाग्य यह कैसी किताब है कि यह न छोटी बात छोड़ती है न बड़ी, बल्कि सभी को इसने अपने अन्दर सुमो लिया है।'' और जो कुछ उन्होंने किया होगा सब मौजूद पाएंगे, और आप का 'रब' किसी पर जुल्म नहीं करेगा।

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ۝

५०- और जब हमने फ़रिश्तों से कहा, ''आदम को सज्दः करो,'' तो इब्लीस के सिवा सबने सज्दः किया, वह जिन्नों में से था, तो वह अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी कर बैठा, तो क्या तुम उसे और उनके नस्ल को 'मेरे' मुक़ाबले में दोस्त बनाते हो? हालाँकि वह तुम्हारे दुश्मन हैं; और ज़ालिमों के लिए बहुत बुरा बदला है।

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ۝

५१- 'मैंने' उनको न तो आसमानों और ज़मीन के पैदा करने के वक्त बुलाया था, और न खुद उनके पैदा करने के वक्त, और 'मैं' ऐसा न था कि गुमराह करने वालों को मददगार बनाता।

مَا أَشْهَدْتُهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ
أَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾

५२- और जिस दिन 'वह' कहेगा, ''बुलाओ मेरे साझीदारों को, जिनके साझी दार होने का तुम्हें दावा था।'' तो वे उनको पुकारेंगे, मगर वे उनको कोई जवाब न देंगे, और 'हम' उनके बीच एक आड़ कर देंगे।

وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ
زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا
بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾

५३- और मुजरिम लोग आग को देखेंगे, तो वे समझ जाएंगे, कि उन्हें उसमें गिरना है और उससे बच निकलने का कोई रास्ता न पाएंगे।

وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا
وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾

५४- और 'हमने' इस कुर्आन में लोगों के लिए तरह-तरह की मिसालें बयान कर दी, मगर इन्सान सबसे बढ़कर झगड़ालू है।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ
مَثَلٍ ۚ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

५५- जब लोगों के पास हिदायत आ गई, तो इस बात से कि वे ईमान लाते, और अपने 'रब' से माफ़ी चाहते, इसके सिवा उन्हें किसी चीज़ ने नहीं रोका, कि उनके लिए वही कुछ सामने आए जो उनसे पहलों के साथ आ चुका है, यहाँ तक कि अ़ज़ाब उनके सामने आ मौजूद हो।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى
وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ
الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾

५६- और हम जो रसूलों को भेजा करते हैं, तो केवल इसलिए कि खुशख़बरी सुनाएँ, और (अ़ज़ाब से) डराएँ; और जो काफ़िर हैं वह नाहक़ झगड़े निकालते हैं ताकि उसको हक़ से फ़िसला दें; और उन्होंने हमारी निशानियों को और उसको, जिससे उन्हें डराया गया है मज़ाक़ करते हैं।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ
وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا
بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾

५७- और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा? जिसे उसके रब के कलाम (ईशवाणी) से समझाया गया, तो उसने उससे मुँह फेर लिया और जो आ़माल वह आगे कर चुका उनको भूल गया, 'हमने' उनके दिलों पर पर्दे डाल दिये कि इसे समझ न सकें और कानों में डाट लगा दिये; और अगर आप उन्हें हिदायत की ओर बुलाएँ तो यह ऐसी ह़ालत में हरगिज़ न आएँगे।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ
عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ۚ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى
قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ
وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُهُم بِمَا كَسَبُوا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۚ بَل لَّهُم مَّوْعِدٌ لَّن يَجِدُوا مِن دُونِهِ مَوْئِلًا ۝٥٨

५८- और आप का 'रब' बड़ा माफ़ करने वाला रह़मत वाला है, अगर 'वह' उन्हें उस पर पकड़ता, जो कुछ कि उन्होंने कमाया है, तो उन पर जल्द ही अ़ज़ाब आ जाता, बल्कि उनके लिए तो वादे का एक समय निश्चित है, उस से हटकर वे बच निकलने की कोई राह न पाएँगे।

وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِم مَّوْعِدًا ۝٥٩

५९- और यह बस्तियाँ वह हैं, जिन्हें 'हमने' हलाक कर डाला, जब उन्होंने जुल्म किया; और 'हमने' उन की हलाकत के लिए एक समय निर्धारित कर रखा था।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ۝٦٠

६०- और जब मूसा ने अपने सेवक से कहा था, "मैं चलता रहूंगा यहाँ तक कि दो समुद्रों के मिलने की जगह पर पहुँच जाऊँ, चाहे मुझे कितना ही समय गुज़ारना पड़े।"

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۝٦١

६१- फिर जब दोनों दो समुद्रों के मिलने की जगह (संगम) पर पहुँचे, तो अपनी मछली को दोनों भूल गये, और उसने समुद्र में जाने के लिए सुरंग की तरह अपना रास्ता बना लिया।

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ آتِنَا غَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِن سَفَرِنَا هَٰذَا نَصَبًا ۝٦٢

६२- फिर जब आगे बढ़े तो (मूसा ने) अपने सेवक से कहा, "लाओ हमारा नाश्ता, इस सफ़र से तो हमें बड़ी थकान हो गई है।"

قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنسَانِيهُ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ۝٦٣

६३- (उसने) कहा, "अरे जब हम उस चट्टान के पास ठहरे थे तो मैं (वही) उस मछली को भूल गया- और शैतान ने भुला दिया कि मैं उसका ज़िक्र करता उसने समुद्र में जाने का रास्ता विचित्र तरीक़े से निकाल लिया।"

قَالَ ذَٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۚ فَارْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا قَصَصًا ۝٦٤

६४- (मूसा ने) कहा, "वही तो था जिसे हम को तलाश थी; फिर दोनों अपने क़दमों के निशान पर वापस हुए।

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً مِّنْ عِندِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِن لَّدُنَّا عِلْمًا ۝٦٥

६५- फिर उन्होंने 'हमारे' बन्दों में से एक बन्दे को पाया, जिसे 'हमने' अपनी रह़मत से नवाज़ा था, और अपने पास से विशेष इल्म सिखाया था।

قَالَ لَهُ مُوسَىٰ هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَىٰ أَن تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ۝٦٦

६६- मूसा ने उनसे कहा; "क्या मैं आप के साथ रह सकता हूँ, कि जो इल्म आप को सिखाया गया है? उसमें से आप मुझे भी सिखा दें।"

६७- कहा, ''आप मेरे साथ रह कर सब्र न कर सकेंगे,

قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا

६८- और आप उन बातों पर सब्र कैसे कर सकेंगे! जो आप के दाइर-ए-इल्म (ज्ञान परिधि) से बाहर है।''

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا

६९- (मूसा ने) कहा, ''इन्शाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे, और मैं किसी मामले में भी आप की नाफ़रमानी नहीं करूँगा।''

قَالَ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا

७०- कहा अच्छा अगर आप मेरे साथ रहना चाहते हैं तो किसी चीज़ के बारे में मुझ से न पूछिएगा, जब तक कि मैं आप से खुद उस का ज़िक्र न करूँ।

قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا

७१- तो दोनों चले, यहाँ तक कि जब वे एक नाव में सवार हो गये तो उसने उस (नाव) में दरार डाल दिया, (मूसा ने) कहा, ''क्या आप ने उसमें इसलिए दरार डाल दी ताकि उसके सवारों को डुबो दें, यह तो आप ने बड़ी भारी बात की।''

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ۖ قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا

७२- कहा, ''क्या मैंने आप से कहा न था कि आप मेरे साथ सब्र न कर सकेंगे?''

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا

७३- (मूसा ने) कहा, ''भूल-चूक पर पकड़ मत कीजिए, और मेरे मामले में सख़्ती से काम न लीजिए।''

قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا

७४- फिर वे दोनों चले यहाँ तक कि जब एक लड़के से मिले तो उन्होंने उसे मार डाला (मूसा ने) कहा क्या आप ने एक बेगुनाह व्यक्ति को मार डाला? हालाँकि उसने किसी की जान नहीं ली थी, यह तो आप ने बहुत ही बुरा किया!''

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ قَالَ أَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا

पारा नं०-१६

७५- (खिज़्र ने) कहा, ''क्या मैंने आप से कहा नहीं था कि आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकेंगे?''

* قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا

७६- (मूसा ने) कहा, ''अगर इसके बाद मैं आप से कुछ पूछूँ तो आप मुझे अपने साथ न रखिएगा, अब तुम मेरी ओर से पूरी तरह उज़्र को पहुँच चुके।''

قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَاحِبْنِي قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا

७७- फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब एक बस्ती वालों के पास पहुँचे और उनसे खाना माँगा, तो उन्होंने उनके मेहमानी से इन्कार कर दिया, फिर उनको एक दीवार मिली, जो गिरने वाली थी, तो उसे सीधा कर दिया (मूसा ने) कहा, ''अगर आप चाहते तो इसकी कुछ मज़दूरी ही ले लेते।''

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَّ فَأَقَامَهُ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَاتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا

قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا

७८- (उन्होंने) कहा, ''यह मेरे और आप के बीच जुदाई की बात हुई, अब मैं उन चीज़ों की ह़क़ीक़त बताता हूँ जिन पर आप सब्र नहीं कर सके।''

اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِى الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا

७६- कि वह नाव ग़रीब लोगों की थी जो दरिया में काम करते थे, तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ, क्योंकि उनके आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) नाव को ज़बर्दस्ती छीन लेता था।

وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا

८०- और वह, जो लड़का था उसके माँ- बाप दोनों ईमान वाले थे, तो हम को डर हुआ कि वह इन दोनों को सरकशी और कुफ़्र में न फँसा दे;

فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا

८१- फिर 'हमने' चाहा कि उसके बदले में उनका रब उन्हें ऐसी औलाद दे, जो उससे ज़्यादा पाक और मुह़ब्बत वाला हो।

وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ۗ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا

८२- और रही वह दीवार तो वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी, और उसके नीचे उन का ख़ज़ाना गड़ा हुआ था और उनका बाप एक नेक आदमी था, तो तुम्हारे रब ने चाहा कि वह लड़के अपनी जवानी को पहुँच कर अपना गड़ा हुआ ख़ज़ाना निकाल लें; यह आप के रब की मेहरबानी थी, मैंने तो इसमें अपनी ओर से कुछ भी नहीं किया, यह उन बातों की ह़क़ीक़त है जिन पर आप सब्र न कर सके।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ۗ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا

८३- यह आप से ज़ुलक़रनैन के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए, ''उनका ज़िक्र मैं अभी तुम्हारे सामने बयान करता हूँ।''

اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِى الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا

८४- 'हमने' उसे ज़मीन पर हुकूमत दी थी, और उसे हर तरह का सामान दिया था।

فَاَتْبَعَ سَبَبًا

८५- फिर उसने (सफ़र की) एक राह अपना ली;

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا

८६- यहाँ तक कि जब सूरज के डूबने की जगह पहुँचा, तो उसे मटमैले काले पानी के एक स्रोत में डूबते हुए पाया, और उसी के क़रीब उसे एक क़ौम मिली, हमने कहा, ''ऐ ज़ुलक़रनैन! तुझे अधिकार है कि चाहे तकलीफ़ पहुँचाए और चाहे उनके साथ अच्छा व्यवहार करे।''

قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ
فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُكْرًا ۝

८७- उसने कहा ''जो कोई जुल्म करेगा उसे तो हम सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब की ओर पलटेगा तो वह भी उसे सख़्त अज़ाब देगा;

وَأَمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءً الْحُسْنَىٰ ۖ
وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ۝

८८- और जो ईमान ले आए, और भले काम करे तो उसके लिए अच्छा बदला है और 'हम' उसके लिए नर्मी का हुक्म देंगे।''

ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ۝

८९- फिर उसने एक (और) राह अपना ली;

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ
قَوْمٍ لَمْ نَجْعَلْ لَهُمْ مِنْ دُونِهَا سِتْرًا ۝

९०- यहाँ तक कि जब वह सूरज के निकलने की जगह पहुँचा तो उसने उसे एक ऐसी क़ौम पर निकलते हुए देखा, जिनके लिए 'हमने' उसके ऊपर कोई आड़ नहीं रखी थी।

كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ۝

९१- ऐसा ही ('हमने' किया) था और जो कुछ उसके पास था, उस की 'हमें' पूरी ख़बर थी।

ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ۝

९२- फिर उसने एक (और) राह अपना ली,

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا
لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ۝

९३- यहँ तक कि जब चलते-चलते दो पहाड़ों के बीच पहुँचा, तो देखा कि उनके उस ओर कुछ लोग हैं।, जो कोई बात ही नहीं समझते थे।

قَالُوا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي
الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا
وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۝

९४- उन्होंने कहा, ऐ ज़ुलक़रनैन! याजूज और माजूज इस जमीन पर बड़ा फ़साद मचाते हैं, तो क्या हम आप के लिए कुछ खर्च जमा कर दें, ताकि आप हमारे और उनके बीच कोई रोक बना दें?''

قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ
أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۝

९५- (ज़ुलक़रनैन ने) कहा, ''मेरे रब ने मुझे जो कुछ अधिकार और शक्ति दी है वह बहुत है, तुम तो बस ताक़त के ज़रिये मेरी मदद करो, मैं तुम्हारे और उनके बीच एक मज़बूत दीवार बनाए देता हूँ;

آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ
الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ
آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ۝

९६- तुम मुझे लोहे के टुकड़े ला दो।'' यहाँ तक कि जब दोनों पहाड़ों के बीच की खाली जगह को पाटकर बराबर कर दिया तो कहा, ''धौंको!'' यहाँ तक कि जब उसे आग कर दिया तो कहा, ''मुझे पिघला हुआ ताँबा ला दो, ताकि मैं उस पर उँडेल दूँ।''

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ۝

९७- फिर उनमें यह शक्ति न रही कि (याजूज-माजूज) उस पर चढ़ सकें और न यह शक्ति रही कि उसमें सेंध लगा सकें।

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ۝

९८- कहा, ''यह मेरे 'रब' की रह़मत है, फिर जब मेरे रब का वादा आ पहुँचेगा तो वह उसे (ढा कर) बराबर कर देगा, और मेरे रब का वादा सच्चा है।''

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَىِٕذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ۝

९९- और 'हम' उस दिन उन्हें छोड़ देंगे कि वे एक-दूसरे से मौजों की तरह आपस में गुत्थम-गुत्था हो जाएँगे, और 'सूर' फूँका जाएगा, तो 'हम' उन सब को एक साथ इकट्ठा कर देंगे।

وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَىِٕذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضَا ۝

१००- और उस दिन 'हम' जहन्नम को इन्कार करने वालों के सामने कर देंगे।

الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ۝

१०१- जिनकी आँखों पर 'हमारी' याद से पर्दा पड़ा हुआ था; और वह सुन ही नहीं सकते थे।

اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ۝

१०२- क्या फिर भी काफ़िरों का ख़याल है, कि मुझे छोड़कर मेरे बन्दों को अपना हिमायती बना लें? बेशक 'हमने' ऐसे काफ़िरों की मेहमानी के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ۝

१०३- कह दीजिए, ''क्या हम तुम्हें उनकी ख़बर दें, जो अपने अ़मल की दृष्टि से सबसे बढ़कर घाटा उठाने वाले हैं?-

اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ۝

१०४- यह वह लोग हैं, ''जिनकी पूरी कोशिश दुनिया ही की ज़िन्दगी में बरबाद हो कर रही, और वह अपने आप को यही समझते रहे, कि वह अच्छे काम कर रहे हैं,

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَاۗىِٕهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ۝

१०५- यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों और उसके सामने हाज़िर होने को न माना, तो इनके काम अकारथ हो गये, फिर क़ियामत के दिन 'हम' उन्हें कोई वज़न न देंगे।

ذٰلِكَ جَزَاۗؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ۝

१०६- उनका बदला वही दोज़ख़ है, इस लिए कि उन्होंने कुफ़्र (इन्कार) किया, और 'हमारी' आयतों, और 'हमारे' रसूलों की हँसी उड़ाई।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ
الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾

१०७- जो लोग ईमान लाए, और भले काम किये, उनकी मेहमानी के लिए जन्नत के बाग़ हैं;

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾

१०८-जिनमें वे हमेशा रहेंगे, वहाँ से और कहीं न जाना चाहेंगे।''

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ
قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

१०९- कह दीजिए, ''अगर समुद्र मेरे रब की बातों के (लिखने के) लिए स्याही हो, तो इससे पहले कि मेरे रब की बातें पूरी हों, समुद्र ख़त्म हो जाए चाहे हम उस जैसा एक और भी (समुद्र) उनकी मदद के लिए ले आएँ।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ
وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا
صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ﴿١١٠﴾

११०- कह दीजिए, ''मैं भी तुम्हीं जैसा एक आदमी (बशर) हूँ; मेरे पास तो बस यह वह्य आती है कि तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) एक ही मअबूद है। तो जो कोई अपने रब से मिलने की उम्मीद रखता हो, उसे चाहिए कि अच्छे काम करता रहे, और अपने रब की इबादत में किसी को साझीदार न बनाए।



अनुवाद-सूरतुमर्‌यम

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के ६६८६ अक्षर, ६६८ शब्द,६८ आयतें, और १२ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- काफ़्- हा- या- अ़ैन- साद,

كٓهيٰعٓصٓ ۝١

२- ज़िक्र है आप के रब की मेहरबानी का, जो उसने अपने बन्दे ज़करीया पर की।

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُ زَكَرِيَّا ۝٢

३- जब उन्होंने अपने 'रब' को चुपके- चुपके पुकारा;

إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا ۝٣

४- कहा, ''ऐ मेरे रब! मेरी हड्‌डियाँ कमजोर हो गईं, और सर में बालों की सफे़दी फैल गई; और तुझ को पुकार कर, ऐ मेरे 'रब' मैं कभी मह़रूम नहीं रहा;

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُن بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝٤

५- और अपने (मरने के) बाद रिश्तेदारों की ओर से डरता हूँ, और मेरी पत्नी बाँझ है, तो 'तू' ही मुझे अपनी ओर से एक वारिस (बेटा) दे,

وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِن وَرَائِي وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِن لَّدُنكَ وَلِيًّا ۝٥

६- जो मेरा वारिस हो और याकूब के घराने का, और ऐ रब! 'तू' उसे पसंदीदा (चहीता) बना।''

يَرِثُنِي وَيَرِثُ مِنْ آلِ يَعْقُوبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝٦

७- ऐ ज़करीया! 'हम' तुम को खुशख़बरी देते हैं एक लड़के की, नाम उसका 'यह़या' होगा, 'हमने' उससे पहले किसी व्यक्ति को उस जैसा नहीं बनाया।

يَا زَكَرِيَّا إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ اسْمُهُ يَحْيَىٰ لَمْ نَجْعَل لَّهُ مِن قَبْلُ سَمِيًّا ۝٧

८- उन्होंने कहा, ''मेरे रब! लड़का कैसे होगा, जबकि मेरी पत्नी बाँझ है, और मैं बुढ़ापे की आख़िरी उम्र को पहुँच चुका हूँ।''

قَالَ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا وَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝٨

९- फ़रमाया, ''ऐसा ही होगा तेरे 'रब' ने कहा है कि यह 'मेरे' लिए आसान है, इससे पहले भी 'मैं' आप को पैदा कर चुका हूँ और आप तो (इस से पहले) कुछ भी न थे।''

قَالَ كَذَٰلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَقَدْ خَلَقْتُكَ مِن قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا ۝٩

१०- (ज़करीया ने) कहा, ''मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी निश्चित कर दे।'' फ़रमाया, ''आप के लिए निशानी यह है कि आप भले चंगे (तन्दुरूस्त) रह कर भी तीन रात (और दिन) लोगों से बात-चीत न कर सकेंगे।

قَالَ رَبِّ اجْعَل لِّي آيَةً ۚ قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝

११- तो वह मेहराब (कमरे) से निकल कर अपनी क़ौम के पास आए और उन्हें इशारे से समझाया, ''सुबह और शाम (अल्लाह की) याद में लगे रहो।''

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنَ الْمِحْرَابِ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ أَن سَبِّحُوا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ۝

१२- ''ऐ यह्या! किताब को मज़बूती से थाम लें।'' और 'हमने' उन्हें बचपन ही में समझ दे दी थी।

يَا يَحْيَىٰ خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ ۖ وَآتَيْنَاهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝

१३- और अपने पास से ख़ास नर्मी और पाकीज़गी दी, और वह बड़े परहेज़गार थे;

وَحَنَانًا مِّن لَّدُنَّا وَزَكَاةً ۖ وَكَانَ تَقِيًّا ۝

१४- और अपने माँ-बाप के साथ भलाई करने वाले थे और वह सरकश नाफ़रमान न थे।

وَبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُن جَبَّارًا عَصِيًّا ۝

१५- ''और 'सलाम' हो उन पर जिस दिन वह पैदा हुए और जिस दिन उन की मौत हो, और जिस दिन वह ज़िन्दा कर के उठाये जाएं!''

وَسَلَامٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝

१६- और इस किताब में मरयम का ज़िक्र कीजिए, जब वह अपने घर वालों से अलग हो कर पूरब की ओर एक मकान में चली गई;

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذِ انتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۝

१७- फिर उसने उनकी ओर से पर्दा कर लिया, तो 'हमने' उसके पास अपनी रूह़ (फ़रिश्ता) को भेजा, और वह उसके सामने पूरा मनुष्य बन गया।

فَاتَّخَذَتْ مِن دُونِهِمْ حِجَابًا فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۝

१८- वह बोल उठीं, ''मैं तुझ से बचने के लिए रह़मान की पनाह माँगती हूँ, अगर तुम परहेज़गार हो।''

قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَٰنِ مِنكَ إِن كُنتَ تَقِيًّا ۝

१६- (फ़रिश्ते ने) कहा, ''मैं तो तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुम्हें एक पाकीज़ा लड़का दूँ''

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلَامًا زَكِيًّا ۝

२०- (मरयम) बोली, ''मेरे लड़का कैसे होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं, और न मैं बद्कार हूँ।''

قَالَتْ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ۝

قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهُۥٓ ءَايَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ أَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾

२१- (फ़रिश्ते ने) कहा, ''ऐसा ही होगा, तुम्हारे 'रब' ने फ़रमाया है, कि ऐसा करना मेरे लिए आसान है, और 'हम' यह इस लिए करेंगे ताकि 'हम' उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएं, और अपनी ओर से रह़मत, और यह एक ऐसी बात है जिस का फैसला हो चुका है।''

۞ فَحَمَلَتْهُ فَٱنتَبَذَتْ بِهِۦ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾

२२- तो उनको ह़मल (गर्भ) ठहर गया, और वह उसे लिए हुए एक दूर स्थान पर (अलग) चली गयीं।

فَأَجَآءَهَا ٱلْمَخَاضُ إِلَىٰ جِذْعِ ٱلنَّخْلَةِ قَالَتْ يَٰلَيْتَنِى مِتُّ قَبْلَ هَٰذَا وَكُنتُ نَسْيًا مَّنسِيًّا ﴿٢٣﴾

२३- फिर उसे दर्दज़ेह (बच्चा पैदा होने के वक़्त का दर्द) खजूर के तने की ओर ले आया, कहने लगीं, ''क्या ही अच्छा होता, कि मैं इससे पहले मर चुकी होती और भूली बिसरी हो गयी होती।''

فَنَادَىٰهَا مِن تَحْتِهَآ أَلَّا تَحْزَنِى قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾

२४- उस समय उसके नीचे से फ़रिश्ते ने पुकारा, ''दुखी न हो! तुम्हारे रब ने तुम्हारे नीचे से एक स्रोत जारी कर दिया है;

وَهُزِّىٓ إِلَيْكِ بِجِذْعِ ٱلنَّخْلَةِ تُسَٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾

२५- और खजूर के तने को पकड़ कर अपनी ओर हिलाओ, ताज़ा-ताज़ा खजूर तुम पर झड़ पड़ेंगी,

فَكُلِى وَٱشْرَبِى وَقَرِّى عَيْنًا ۖ فَإِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ ٱلْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِىٓ إِنِّى نَذَرْتُ لِلرَّحْمَٰنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ ٱلْيَوْمَ إِنسِيًّا ﴿٢٦﴾

२६- तो खाओ और पियो, और आँखें ठंडी करो, फिर अगर कोई आदमी नज़र आए तो कह दो मैंने रह़मान के लिए रोज़े की नज़्र मानी है, इसलिए आज किसी आदमी से हरगिज़ बात नहीं करूँगी।''

فَأَتَتْ بِهِۦ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُۥ ۖ قَالُوا۟ يَٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾

२७- फिर वह उसको लिए हुए अपनी क़ौम के पास आईं; लोग कहने लगे, ''ऐ मरयम! यह तो 'तूने' बुरा काम किया,

يَٰٓأُخْتَ هَٰرُونَ مَا كَانَ أَبُوكِ ٱمْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾

२८- ऐ हारून की बहन! न तो तेरा बाप ही बुरी आदतों वाला था और न तेरी माँ ही बद्कार थी।''

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ ۖ قَالُوا۟ كَيْفَ نُكَلِّمُ مَن كَانَ فِى ٱلْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾

२९- तो (मरयम ने) उस बच्चे की ओर इशारा किया, लोगों ने कहा, ''हम इस बच्चे से क्या बात करें जो अभी पालने में है।''

قَالَ إِنِّى عَبْدُ ٱللَّهِ ءَاتَىٰنِىَ ٱلْكِتَٰبَ وَجَعَلَنِى نَبِيًّا ﴿٣٠﴾

३०- (बच्चे ने) कहा, ''मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उसने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है;

وَجَعَلَنِى مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنتُ وَأَوْصَٰنِى بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱلزَّكَوٰةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾

३१- और मुझे बरकत वाला बनाया, जहाँ भी मैं रहूँ, और 'उसने' मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की, जब तक कि मैं ज़िन्दा रहूँ;

३२- और अपनी माँ का हक़ अदा करने वाला बनाया, और 'उसने' मुझे सरकश और बद बख़्त नहीं बनाया;	وَبَرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا ۝
३३- और सलाम है मुझ पर कि जिस दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन मैं मरूँगा, और जिस दिन ज़िन्दा करके उठाया जाऊँगा!''	وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۝
३४- यह मरयम का बेटा ईसा है, सच्ची बात है, जिसमें लोग सन्देह करते हैं।	ذَٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝
३५- अल्लाह ऐसा नहीं, कि 'वह' किसी को अपना बेटा बनाए, 'वह' पाक है, जब 'वह' किसी बात का फ़ैसला कर लेता है, तो बस कहता है, ''हो जा'' और वह हो जाती है।	مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ ۖ سُبْحَانَهُ ۚ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝
३६- और बेशक अल्लाह मेरा भी 'रब' है और तुम्हारा भी, तो उसी की इबादत करो, यही सीधी राह है।''	وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝
३७- तो उनमें कितने ही गिरोहों ने आपस में विभेद किया, तो जिन लोगों ने इन्कार किया, उनके लिए बड़ी तबाही है एक बड़े दिन के हाज़री पर;	فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ مَشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝
३८- जिस दिन यह 'हमारे' सामने हाज़िर होंगे, उस दिन वह खूब सुनेंगे, और खूब देखेंगे; मगर आज यह ज़ालिम खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।	أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا ۖ لَٰكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝
३९- और उनको पछतावे के दिन से ख़बरदार कर दो जबकि मामले का फ़ैसला कर दिया जाएगा, और वे ग़फ़लत में हैं, और ईमान नहीं लाते।	وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝
४०- बेशक हम ही ज़मीन के, और उस पर बसने वालों के वारिस हैं, और 'हमारी' ही ओर उनको लौटना है।	إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ۝
४१- और इस किताब में इब्राहीम का ज़िक्र कीजिए, बेशक ''वह बड़े सच्चे नबी थे।''	وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ ۚ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ۝
४२- जब उन्होंने अपने बाप से कहा, ''ऐ मेरे अब्बा जान! आप क्यों ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं, जो न सुनते हैं, और न देखते हैं और न आप के किसी काम आते हैं।?-	إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ۝

४३- ऐ मेरे अब्बा जान! मेरे पास वह इल्म आ चुका है; जो आप के पास नहीं था; तो आप मेरे पीछे चलें, मैं आप को सीधी राह दिखा दूँगा;

يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا

४४- ऐ मेरे अब्बाजान! शैतान की इबादत न कीजिए, शैतान तो रह़मान का नाफ़रमान है।

يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ عَصِيًّا

४५- ऐ मेरे अब्बाजान! मैं डरता हूँ कि कहीं रह़मान का अ़ज़ाब न आ पड़े, और आप शैतान के साथी हो कर रह जाएँ।''

يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِنَ الرَّحْمَٰنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا

४६- (आज़र ने) कहा, ''ऐ इब्राहीम क्या तू मेरे मअ़बूदों (उपास्यों) से फिर गया है? अगर तू बाज़ न आया, तो मैं तुझे संगसार (पत्थर मार-मार कर मार डालूँगा) करूँगा, और तू मुझसे हमेशा के लिए अलग हो जा''

قَالَ أَرَاغِبٌ أَنْتَ عَنْ آلِهَتِي يَا إِبْرَاهِيمُ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا

४७- (इब्राहीम ने) कहा, ''सलाम हो आप पर! मैं आप के लिए अपने 'रब' से माफ़ी की दरख़्वास्त करूँगा, बेशक 'वह' तो मुझ पर बहुत मेहरबान है;

قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا

४८- और मैं आप लोगों से और उनसे जिन को आप लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, अलग होता हूँ, और अपने 'रब' ही को पुकारता हूँ, उम्मीद है कि मैं अपने 'रब' को पुकार कर मह़रूम नहीं रहूँगा।

وَأَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُو رَبِّي عَسَىٰ أَلَّا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا

४९- तो जब वह उन लोगों से और जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पूजते थे, उन से अलग हो गये, तो 'हमने' उन्हें इस्ह़ाक़ और याक़ूब प्रदान किये, और उन में से हर एक को नबी बनाया;

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا

५०- और उनको अपनी रह़मत से हिस्सा दिया, और उनके लिए सच्चाई की ज़बाने (बेहतर ज़िक्र) बुलन्द कीं।

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِنْ رَحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا

५१- और आप इस किताब में मूसा का ज़िक्र कीजिए, बेशक वह चुने हुए और भेजे हुए नबी थे।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مُوسَىٰ إِنَّهُ كَانَ مُخْلَصًا وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا

५२- और 'हमने' उस को तूर (पहाड़) के दायीं ओर से पुकारा, और बात करने के लिए क़रीब कर लिया।

وَنَادَيْنَاهُ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا

وَوَهَبْنَا لَهُ مِن رَّحْمَتِنَآ أَخَاهُ هَٰرُونَ نَبِيًّا

५३- और अपनी रह़मत से उनके भाई 'हारून' को नबी बना कर उन्हें दिया।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَٰبِ إِسْمَٰعِيلَ إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا

५४- और इस किताब में इस्माईल का ज़िक्र कीजिए, वह वादे के सच्चे थे, और वह भेजे हुए नबी थे।

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَوٰةِ وَالزَّكَوٰةِ وَكَانَ عِندَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا

५५- और अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देते थे, और अपने रब के नज़दीक पसंदीदा थे।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَٰبِ إِدْرِيسَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَّبِيًّا

५६- और इस किताब में इद्रीस का भी ज़िक्र कीजिए, वह भी बड़े सच्चे नबी थे;

وَرَفَعْنَٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا

५७- और 'हमने' उन्हें बुलन्द दर्जे तक पहुँचाया।

أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّنَ النَّبِيِّـۧنَ مِن ذُرِّيَّةِ ءَادَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِن ذُرِّيَّةِ إِبْرَٰهِيمَ وَإِسْرَٰٓءِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَآ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتُ الرَّحْمَٰنِ خَرُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا

सज्दः

५८- यही वे नबी हैं, जिन पर अल्लाह का इन्आम हुआ, आदम की औलाद में से और उन लोगों की नस्ल से जिनको 'हमने' नूह़ के साथ सवार किया, और इब्राहीम और याकूब की औलाद में से, और उन लोगों में से जिनको 'हमने' हिदायत दी, और चुन लिया; जब उनके सामने रह़मान की आयतें सुनाई जाती थीं तो वे सज्दः करते, और रोते हुए गिर पड़ते थे।

فَخَلَفَ مِنۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَوٰةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا

५९- फिर उनके बाद कुछ बुरे लोग उनके जानशीन (उत्तराधिकारी) हुए, जिन्होंने नमाज़ को बरबाद किया, और मन की इच्छाओं के पीछे पड़ गये, तो जल्द ही उनकी गुमराही (उनको आगे) मिलेगी;

إِلَّا مَن تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا فَأُولَٰٓئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْـًٔا

६०- सिवाय उनके जो तौबः कर लें, और ईमान ले आएं और नेक काम करने लगें, तो ये लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, और उनका कुछ भी नुक़्सान न किया जाएगा-

جَنَّٰتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا

६१- हमेशा के लिए जन्नत़, जिन का रह़मान ने अपने बन्दों (की आँखों) से छिपा हुआ वादा किया है, बेशक 'उसके' वादे पर हाज़िर होना है-

لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَٰمًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا

६२- वहाँ वे कोई व्यर्थ (बकवास) की बात न सुनेंगे, जो कुछ सुनेंगे सलामती ही की बात होगी, और उन्हें सुबह़ और शाम अपनी रोज़ी (खाना) मिलती रहेगी;

तِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝

६३- यह है वह जन्नत जिसका वारिस 'हम' अपने बन्दों में से उनको बनाएँगे जो परहेज़गार होंगे।

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۖ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝

६४- और हम आप के रब के हुक्म के बिना नहीं उतर सकते, जो कुछ हमारे आगे है, और जो कुछ पीछे है, और जो उसके बीच में है, सब 'उसी' का है; और आप का रब भूलने वाला नहीं।

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ۝

६५- 'वह' रब है आसमानों और ज़मीन और उनके बीच की चीज़ों का, तो 'उसी' की इबादत करो, और 'उसी' की इबादत पर जमे रहो, क्या तुम्हारे इल्म में उस जैसा कोई (और) नाम है?

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ۝

६६- और इन्सान कहता है, ''क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर ज़िन्दा कर के निकाला जाऊँगा?''

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ۝

६७- क्या इन्सान को याद नहीं कि 'हम' इससे पहले उसे पैदा कर चुके हैं, और जबकि वह कुछ भी न था।

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۝

६८- तो क़सम है आप के रब की! हम उनको इकट्ठा करेंगे, और शैतानों को भी, फिर उन को दोज़ख के आस-पास हाज़िर करेंगे, (जो) घुटनों के बल गिरे हुए होंगे।

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَٰنِ عِتِيًّا ۝

६९- फिर 'हम' हर गिरोह में से, उनको अलग कर लेंगे, जो रह़मान की सरकशी में सब से ज़्यादा बढ़े हुए थे।

ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ۝

७०- फिर 'हम' उन्हें खूब जानते हैं, जो इस में झोंके जाने के ज़्यादा ह़क़दार है।

وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَقْضِيًّا ۝

७१- और तुम में से कोई भी ऐसा नहीं जिसको वहाँ तक न पहुँचना हो, यह आप के रब पर ज़रूरी है जो पूरा होकर रहेगा।

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ۝

७२- फिर उन्हें 'हम' बचा लेंगे, जो परहेज़गार थे, और ज़ालिमों को उसमें पड़ा रहने देंगे, घुटनों के बल झुके हुए।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ۝

७३- और जब उन्हें 'हमारी' खुली हुई निशानियाँ बताई जाती हैं, तो जो लोग काफ़िर हैं; वह ईमान वालों से कहते हैं, ''दोनों फ़रीक़ों में से किसका स्थान (मकान) सबसे बेहतर है और मजलिस किसकी बेहतर है?''

७४- और 'हम' उनसे पहले कितने ही गिरोहों को हलाक कर चुके हैं, वे इनसे भी बढ़-चढ़ कर थे, सामान और दिखावे में।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِءْيًا ۝

७५- कह दीजिए, ''जो (व्यक्ति) गुमराही में पड़ा हुआ था, रह़मान उसको धीरे-धीरे ढ़ील दिये जाता है, यहाँ तक कि जिस चीज़ का उनसे वादा किया गया है, जब वह उसको देख लेंगे- चाहे वह अ़ज़ाब हो, या क़ियामत उस समय उन्हें पता चल जाएगा कि किस की जगह बुरी और किसका जत्था बिल्कुल कमज़ोर है।''

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَٰنُ مَدًّا ۚ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ۝

७६- और जो लोग हिदायत की राह अपनाते हैं, अल्लाह उनकी हिदायत को बढ़ाता रहता है, और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ आप के रब के नज़दीक बदले के एतिबार से भी बेहतर और अंजाम के एतिबार से भी बेहतर हैं।

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَرَدًّا ۝

७७- क्या आपने उस व्यक्ति को देखा! जो 'हमारी' निशानियों से कुफ्र करता है? और कहता है, ''मुझे तो ज़रूर माल और औलाद मिल कर रहेंगे?''

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ۝

७८- तो क्या इसने ग़ैब (परोक्ष) की ख़बर पा ली? या रह़मान से कोई वादा ले रखा है-?

أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا ۝

७९- हरगिज़ नहीं, यह जो कुछ कहता है 'हम' उसको लिखते जाते हैं, और उसके अ़ज़ाब को बढ़ाते चले जाते हैं।

كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۝

८०- और जो कुछ वह बताता है उसके हम वारिस होंगे, और वह अकेला ही हमारे पास आएगा।

وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ۝

८१- और इन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे मअ़बूद बना रखे हैं ताकि वे इनके मददगार हों;

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لِيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ۝

८२- हरगिज़ नहीं, वे (क़ियामत के दिन) उनकी इबादत का इन्कार कर बैठेंगे, और उनके विरोधी बन जाएँगे।-

كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ۝

८३- क्या आपने देखा नहीं! कि हमने काफ़िरों पर शैतानों को छोड़ रखा है, जो इन्हें खूब उभारते रहते हैं?-

أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا ۝

८४- तो आप इनके लिए जल्दी न कीजिए, हम इनके (दिन) गिन रहे हैं।

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ۝

८५- जिस दिन 'हम' पहरहेज़गारों को रह़मान की ओर मेहमान बना कर इकट्ठा करेंगे;

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَٰنِ وَفْدًا ۝

८६- और मुजरिमों को जहन्नम की ओर प्यासे (जानवरों की तरह) हाँक ले जाएँगे।

وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وِرْدًا

८७- (उस दिन) किसी को सिफ़ारिश का अधिकार न होगा, मगर वही सिफ़ारिश कर सकेगा जिसने रह़मान से वादा (इजाज़त) लिया हो।

لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا

८८- और कहते हैं, ‘‘रह़मान ने किसी को अपना बेटा बना रखा है।’’

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا

८९- बड़ी भारी बात है जो तुम (ज़बान पर) लाते हो।

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا

९०- क़रीब है कि इस (झूठ) से आसमान टूट पड़े और ज़मीन फट जाए और पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो कर गिर पड़ें,

تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا

९१- (इस बात पर) कि इन्होंने रह़मान के लिए बेटा होने का दावा किया,

أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدًا

९२-और रह़मान की यह शान नहीं कि किसी को बेटा बनाए।

وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَٰنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا

९३- आसमानों और ज़मीन में जो भी है, एक बन्दे के रूप में रह़मान के पास हाज़िर होंगे।

إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمَٰنِ عَبْدًا

९४- सब को ‘उसने’ घेर रखा है और (एक-एक को) गिन रखा है।

لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا

९५- और सभी क़ियामत के दिन उस (रह़मान) के सामने अकेले-अकेले हाज़िर होंगे।

وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَرْدًا

९६- जो लोग ईमान लाए, और अच्छे काम किये, रह़मान उनकी मुह़ब्बत पैदा कर देगा।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَٰنُ وُدًّا

९७- ‘हमने’ इस (क़ुर्आन) को आप की ज़बान में आसान किया है, ताकि आप इससे परहेज़गारों को खुशख़बरी पहुँचा दें और झगड़ालू लोगों को इसके ज़रिये डरा दें।

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنْذِرَ بِهِ قَوْمًا لُدًّا

९८- और ‘हमने’ इससे पहले बहुत से गिरोहों को हलाक कर दिया है, क्या तुम उनमें से किसी की आहट पाते हो, या तुम्हें उनकी भनक भी सुनाई देती है।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا



अनुवाद-सूरतुत़ाहा

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के ५४६६ अक्षर, १२५१ शब्द,१३५ आयतें और ८ रूकूअ़ हैं।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- ता- हा,	طٰهٰ ۚ
२- (ऐ मुह़म्मद) 'हमने' आप पर यह कुर्आन इसलिए नहीं उतारा, कि आप मुसीबत में पड़ जाएँ;	مَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكَ الۡقُرۡاٰنَ لِتَشۡقٰٓى ۙ
३- यह तो एक नसीह़त है, उसके लिए जो डर रखें;	اِلَّا تَذۡكِرَةً لِّمَنۡ يَّخۡشٰى ۙ
४- यह उसका उतारा हुआ है 'जिसने' पैदा किया, ज़मीन को और ऊँचे-ऊँचे आसमानों को;	تَنۡزِيۡلًا مِّمَّنۡ خَلَقَ الۡاَرۡضَ وَالسَّمٰوٰتِ الۡعُلٰى ؕ
५- (वह) रह़मान, (जो) अ़र्श (राजसिंहासन) पर विराजमान।	اَلرَّحۡمٰنُ عَلَى الۡعَرۡشِ اسۡتَوٰى ۞
६- 'उसी' का है जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, और जो कुछ इन दोनों के बीच में है, और जो कुछ मिट्टी के नीचे है।	لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا وَمَا تَحۡتَ الثَّرٰى ۞
७- और अगर तुम बात पुकार कर कहो (या चुपके से) 'वह' तो चुपके से कही हुई बात, और छिपी हुई बात तक को जानता है।	وَاِنۡ تَجۡهَرۡ بِالۡقَوۡلِ فَاِنَّهٗ يَعۡلَمُ السِّرَّ وَاَخۡفٰى ۞
८- (वह) अल्लाह, कि 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, 'उसके' (सब) नाम अच्छे हैं।	اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الۡاَسۡمَآءُ الۡحُسۡنٰى ۞
९- और क्या आप को मूसा की ख़बर मिली है?-	وَهَلۡ اَتٰٮكَ حَدِيۡثُ مُوۡسٰى ۘ
१०- जब उन्होंने आग देखी! तो अपने घर वालों से कहा, ''ठहरो! मुझे आग दिखाई दी है। शायद उसमें से मैं तुम्हारे लिए अंगारा ले आऊँ, या हो सकता है उस आग पर मैं रास्ते का पता पा लूँ।''	اِذۡ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهۡلِهِ امۡكُثُوۡۤا اِنِّىۡۤ اٰنَسۡتُ نَارًا لَّعَلِّىۡۤ اٰتِيۡكُمۡ مِّنۡهَا بِقَبَسٍ اَوۡ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۞

فَلَمَّآ أَتٰىهَا نُودِىَ يٰمُوسٰىٓ ﴿١١﴾

११- फिर जब वह वहाँ पहुँचे तो आवाज़ आई ''ऐ मूसा!

إِنِّىٓ أَنَا۠ رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۖ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾

१२- मैं ही तुम्हारा रब हूँ, तो अपने जूते उतार दो; तुम 'तुवा' की पाक घाटी (या मैदान) में हो;

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحٰى ﴿١٣﴾

१३- और 'मैंने' तुम्हें चुन लिया है, तो जो वह्य (हुक्म) की जा रही है उसे सुनो;

إِنَّنِىٓ أَنَا اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَاعْبُدْنِى وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِىٓ ﴿١٤﴾

१४- बेशक 'मैं ही' अल्लाह हूँ, 'मेरे' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, तो 'मेरी' ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम करो;

إِنَّ السَّاعَةَ ءَاتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ﴿١٥﴾

१५- क़ियामत की घड़ी आने वाली है, मैं चाहता हूँ कि उसको छिपाए रखूँ, ताकि हर व्यक्ति अपनी कोशिश के अनुसार बदला पा सके;

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿١٦﴾

१६- तो जो व्यक्ति उस पर ईमान नहीं लाता, और अपनी इच्छाओं के पीछे चलता है, वह तुम्हें इस (नमाज़) से रोक न दे, कि फिर तुम हलाक हो जाओ;

وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يٰمُوسٰى ﴿١٧﴾

१७- और ऐ मूसा! यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है?''

قَالَ هِىَ عَصَاىَ أَتَوَكَّؤُا۟ عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِى وَلِىَ فِيهَا مَـَٔارِبُ أُخْرٰى ﴿١٨﴾

१८- (मूसा ने) कहा, ''यह मेरी लाठी है, इस पर मैं टेक लगाता हूँ, और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ, और इसमें मेरे और भी कई फ़ायदे हैं।''

قَالَ أَلْقِهَا يٰمُوسٰى ﴿١٩﴾

१९- फ़रमाया, ''डाल दो इसको ऐ मूसा।''

فَأَلْقٰىهَا فَإِذَا هِىَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ﴿٢٠﴾

२०- तो उन्होंने, उसको डाल दिया; अचानक वह एक साँप बन कर दौड़ने लगा;

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۖ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولٰى ﴿٢١﴾

२१- (अल्लाह ने) फ़रमाया, ''उसे पकड़ लीजिए, और मत डरिए; 'हम' उसे फिर उसकी पहली ह़ालत पर लौटा देंगे,

وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوٓءٍ ءَايَةً أُخْرٰى ﴿٢٢﴾

२२- और अपना हाथ अपने बाजू से लगा लीजिए, वह रौशन हो कर निकलेगा, बिना किसी ऐब के, (यह) दूसरी निशानी है।

لِنُرِيَكَ مِنْ ءَايٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿٢٣﴾

२३- ताकि 'हम' आप को अपनी बड़ी निशानियाँ दिखाएँ।

اذْهَبْ إِلٰى فِرْعَوْنَ إِنَّهُۥ طَغٰى ﴿٢٤﴾

२४- आप फिरऔ़न के पास जाइए, (कि) वह सरकश (उद्दंड) हो रहा है।''

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٥﴾

२५- (मूसा ने) कहा, ''ऐ रब! (इस काम के लिए) मेरा सीना खोल दीजिए।

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٦﴾

२६- और मेरा काम आसान कर दीजिए,

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ﴿٢٧﴾

२७- और मेरी ज़बान की गिरह खोल दीजिए,

يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿٢٨﴾

२८- ताकि वह मेरी बात समझ लें,

وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِي ﴿٢٩﴾

२९- और मेरे घर वालों में से (एक को) मेरा वज़ीर (सहायक) नियुक्त कर दीजिए;

هَارُونَ أَخِي ﴿٣٠﴾

३०- (अर्थात) मेरे भाई हारून को,

اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي ﴿٣١﴾

३१- उसके ज़रिये मेरी कमर (ताक़त) को मज़बूत कर दीजिए,

وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ﴿٣٢﴾

३२- और उसे मेरे काम में शरीक कर दीजिए,

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ﴿٣٣﴾

३३- ताकि हम खूब 'तेरी' तस्बीह़ बयान करें,

وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ﴿٣٤﴾

३४- और 'तेरा' खूब ज़िक्र करें,

إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ﴿٣٥﴾

३५- बेशक 'तू' हमें देख रहा है।''

قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَا مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾

३६- फ़रमाया, ''दिया गया तुझे जो 'तू ने' माँगा, ऐ मूसा!

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ ﴿٣٧﴾

३७- और 'हमने' तो आप पर एक बार और एह़सान किया था,

إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ﴿٣٨﴾

३८- जबकि 'हमने' आप की माँ को इल्ह़ाम किया, (दिल में बात डाली) जो आपको बताया जाता है;

أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِي وَعَدُوٌّ لَهُ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِنِّي ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِي ﴿٣٩﴾

३९- कि उसको सन्दूक़ में रख फिर उसको दरिया में डाल दे, फिर दरिया उसे किनारे पर डाल देगा, तो उन्हें वह (दुश्मन) उठा लेगा, जो मेरा भी दुश्मन है उनका और इनका भी, और 'मैंने' आप पर अपनी ओर से मुह़ब्बत डाल दी, और ताकि आप मेरी देख-रेख में परवरिश पाएँ।

إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَنْ يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ فُتُونًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ

४०- जबकि आपकी बहन (फ़िरऔन के यहाँ) चलती हुई आईं, फिर बोलीं कि 'क्या मैं तुम्हें उस व्यक्ति का पता बता दूँ जो इनका पालन पोषण अपने ज़िम्में ले ले? इस तरह 'हमने' फिर आप को आप की माँ के पास पहुँचा दिया, ताकि उनकी

يٰمُوْسٰى ۝

आँखें ठंडी हों; और वह ग़म न करें; आपने एक व्यक्ति को मार डाला था, तो 'हमने' आपको उस ग़म से छुटकारा दिया, और 'हमने' आप को तरह-तरह से आज़माया, और आप कई वर्ष मद्‌यन वालों में रहे, फिर आप ठीक समय पर आ गये, ऐ मूसा!

وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِيْ ۝

४१- और 'मैंने' आप को अपने (काम के) लिए चुन लिया है,

اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ۝

४२- आप और आप के भाई 'मेरी' निशानियों के साथ जाएँ, और 'मेरी' याद में सुस्ती न करें;

اِذْهَبَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝

४३- जाएँ दोनों, फ़िरऔन के पास, वह सरकश हो रहा है।

فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ۝

४४- उससे नर्मी से बात करें, शायद कि वह नसीहत हासिल कर ले या डर जाए।"

قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ۝

४५- दोनों बोले, "ऐ हमारे रब! हमें इसका डर है कि वह हम पर कहीं ज़्यादती न करे या ज़्यादा सरकश हो जाए।"

قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِيْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰى ۝

४६- (अल्लाह ने) फ़रमाया, "आप डरें नहीं, 'मैं' आप दोनों के साथ हूँ, सुनता और देखता हूँ;

فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ۝

४७- आप उसके पास जाएँ, फिर उससे कहें, 'हम 'तेरे' 'रब' की ओर से भेजे गये हैं, तो तू हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे, और उन्हें दु:ख न दे, हम तेरे पास, तेरे 'रब' की निशानी लेकर आए हैं; और सलामती हो उसके लिए जो सीधी राह पर चले।

اِنَّا قَدْ اُوْحِيَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝

४८- हमारे पास तो वह्य आ चुकी है कि अज़ाब उसी के लिए है, जो झुठलाए और मुँह फेरे।"

قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ۝

४९- (फ़िरऔन ने) कहा, "तो कौन है, तुम्हारा रब! ऐ मूसा?"

قَالَ رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ۝

५०- (मूसा ने) कहा, "हमारा रब वह है 'जिसने' हर चीज़ को उसकी आकृति (शक्ल सूरत) दी, फिर राह दिखाई।"

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ۝

५१- (फ़िरऔन ने) कहा, "अच्छा तो उन नस्लों का क्या हाल हुआ, जो पहले थीं?"

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى ﴿٥٢﴾

५२- (मूसा ने) कहा, ''उसका इल्म मेरे रब के पास एक किताब में है, मेरा 'रब' न भटक सकता है न भूल सकता है।''

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۭ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ﴿٥٣﴾

५३- ''वह (वही तो है) जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फर्श बना दिया, और तुम्हारे लिए उसमें रास्ते बना दिये; और आसमान से पानी उतारा, फिर 'हमने' उससे तरह-तरह की पैदावारें (उपज) निकालीं;

كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿٥٤﴾

५४- खाओ और अपने चौपायों को भी चराओ; बेशक इसमें निशानियाँ हैं अक़्ल वालों के लिए।

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿٥٥﴾

५५- इसी (ज़मीन) से 'हमने' तुम्हें पैदा किया, और इसी में 'हम' तुम्हें लौटाएँगे, और इसी से फिर तुम्हें दोबारा निकालेंगे।''

وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿٥٦﴾

५६- और 'हमने' उसे (फिरऔन को) अपनी सभी निशानियाँ दिखाईं मगर वह झुठलाता और इन्कार ही करता रहा।

قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٥٧﴾

५७- (फिरऔन ने) कहा, ''ऐ मूसा! क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि अपने जादू से हम को, हमारे अपने ही ज़मीन से निकाल दे?

فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾

५८- अच्छा, हम भी तुम्हारे मुक़ाबले में वैसा ही जादू लाएंगे; तुम हमारे और अपने बीच एक निर्धारित समय तय कर लो, न हम उससे फिरें और न तुम, (और यह) एक समतल मैदान में (हो)।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾

५९- (मूसा ने) कहा, ''तुम्हारे लिए ज़ीनत (उत्सव) के दिन का वादा है, और यह कि लोग दिन चढ़े (चाश्त के वक़्त) इकट्ठा हो जाएँ।''

فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾

६०- तो फ़िरऔन पलटा और अपने सारे दाँव जुटाए, फिर (मुक़ाबले में) आ गया।

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾

६१- मूसा ने उन लोगों से कहा, ''तबाही है तुम्हारे लिए, झूठ गढ़ कर अल्लाह पर न थोपो, कि 'वह' तुम्हें एक अज़ाब से तबाह कर देगा और जिसने झूठ गढ़ा, वह नाकाम (असफल) रहा।''

فَتَنَازَعُوٓا اَمۡرَهُمۡ بَيۡنَهُمۡ وَاَسَرُّوا النَّجۡوٰى ۝

६२- तो वे आपस में अपने मामले में झगड़ने और चुपके-चुपके काना -फूसी करने लगे।

قَالُوٓا اِنۡ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيۡدٰنِ اَنۡ يُّخۡرِجٰكُمۡ مِّنۡ اَرۡضِكُمۡ بِسِحۡرِهِمَا وَيَذۡهَبَا بِطَرِيۡقَتِكُمُ الۡمُثۡلٰى ۝

६३- कहने लगे, ''यह दोनों जादूगर हैं, चाहते हैं कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से निकाल दें, और तुम्हारे सुन्दर तरीक़े (धर्म) को मिटा दें;

فَاَجۡمِعُوۡا كَيۡدَكُمۡ ثُمَّ ائۡتُوۡا صَفًّا ۚ وَقَدۡ اَفۡلَحَ الۡيَوۡمَ مَنِ اسۡتَعۡلٰى ۝

६४- तो तुम सब मिलकर अपना दाँव जुटा लो, और एक पंक्ति बना कर आओ, आज जो ग़ालिब (प्रभावी) रहा वही कामियाब हुआ।''

قَالُوۡا يٰمُوۡسٰٓى اِمَّآ اَنۡ تُلۡقِىَ وَاِمَّآ اَنۡ نَّكُوۡنَ اَوَّلَ مَنۡ اَلۡقٰى ۝

६५- वे बोले, ''ऐ मूसा! या तुम (अपनी लाठी) डालो, या हम पहले (रस्सियाँ) डालते हैं।''

قَالَ بَلۡ اَلۡقُوۡا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمۡ وَعِصِيُّهُمۡ يُخَيَّلُ اِلَيۡهِ مِنۡ سِحۡرِهِمۡ اَنَّهَا تَسۡعٰى ۝

६६- (मूसा ने) फ़रमाया, ''नहीं, बल्कि तुम्हीं (रस्सियाँ) डालो,'' (जब उन्होंने रस्सियाँ डालीं) तो अचानक उनकी रस्सियां और लाठियाँ मूसा के ख़याल में ऐसी आने लगीं कि वह दौ़ड रही हैं।

فَاَوۡجَسَ فِىۡ نَفۡسِهٖ خِيۡفَةً مُّوۡسٰى ۝

६७- तो मूसा अपने जी में डरे।

قُلۡنَا لَا تَخَفۡ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡاَعۡلٰى ۝

६८- 'हमने' कहा, ''मत डरो! बेशक तुम ही ग़ालिब (प्रभावी) हो,

وَاَلۡقِ مَا فِىۡ يَمِيۡنِكَ تَلۡقَفۡ مَا صَنَعُوۡا ؕ اِنَّمَا صَنَعُوۡا كَيۡدُ سٰحِرٍ ؕ وَلَا يُفۡلِحُ السّٰحِرُ حَيۡثُ اَتٰى ۝

६९- और जो चीज़ तुम्हारे दाहिने हाथ में (लाठी) है, उसे डाल दो, वह उसको निगल जाएगी, जो कुछ उन्होंने रचा है, वह तो बस जादूगर का फ़रेब है और जादूगर कामियाब नहीं हो सकता, चाहे (जहाँ) आए।''

فَاُلۡقِىَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوۡٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوۡنَ وَمُوۡسٰى ۝

७०- तो जादूगर सज्दः में गिर गये, (और) बोले, ''हम, हारून और मूसा के 'रब' पर ईमान ले आए।''

قَالَ اٰمَنۡتُمۡ لَهٗ قَبۡلَ اَنۡ اٰذَنَ لَكُمۡ ؕ اِنَّهٗ لَكَبِيۡرُكُمُ الَّذِىۡ عَلَّمَكُمُ السِّحۡرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيۡدِيَكُمۡ وَاَرۡجُلَكُمۡ مِّنۡ خِلَافٍ وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمۡ فِىۡ جُذُوۡعِ النَّخۡلِ ۫ وَلَتَعۡلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبۡقٰى ۝

७१- (फ़िरऔन ने) कहा, ''तुम उस पर ईमान ले आए, इससे पहले कि मैं तुम्हें इसकी इजाज़त देता, ज़रूर यह तुम्हारा उस्ताद है, जिसने तुम्हें जादू सिखाया है, तो मैं तुम्हारे हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से कटवा दूँगा, और खजूर के तनों पर तुम्हें सूली दे दूँगा; तब तुम्हें ज़रूर मालूम हो जाएगा कि हममें से किस का अ़ज़ाब ज़्यादा सख़्त और देर तक रहने वाला है।;

७२- उन्होंने कहा, ''जो स्पष्ट निशानियाँ हमारे सामने आ चुकी हैं, और उस हस्ती पर, 'जिसने' हमको पैदा किया है, उसके मुक़ाबले में हम तुमको किसी तरह तर्जीह (प्राथ्मिकता) देने वाले नहीं, तो तुझ को जो करना है, कर गुजर, और तू तो बस इसी दुनिया की ज़िन्दगी पर हुक्म दे सकता है।

قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَ الَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ؕ

७३- ''हम तो अपने रब पर ईमान ले आए, ताकि वह हमारी ख़ताओं को माफ़ कर दे, और इस जादू को भी जिस पर 'तूने' हमें मजबूर किया, और अल्लाह ही बेहतर और बाक़ी रहने वाला है।''

اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى

७४- जो व्यक्ति अपने 'रब' के पास मुजरिम हो कर हाज़िर होगा, तो उसके लिए जहन्नम है, जिसमें न वह मरेगा और न जिएगा।

اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى

७५- और जो व्यक्ति आएगा मोमिन (मुस्लिम) हो कर, और अच्छे काम भी किये होंगे, तो ऐसे लोगों के लिए ऊँचे-ऊँचे दर्जे हैं;

وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى

७६- हमेशा-हमेश रहने के बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उनमें वे हमेशा रहेंगे; और यह बदला है उसका जिसने पाकी अपनाई।

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى

७७- और 'हमने' मूसा की ओर वह्य की, कि 'हमारे' बन्दों को रातों-रात निकाल ले जाओ, फिर उनके लिए दरिया में (लाठी) मार कर सूखा रास्ता बना दो, फिर तुमको न तो (फ़िरऔन के) पकड़ने का डर होगा, और न (डूबने का) डर।''

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى

७८- तो फ़िरऔन ने अपनी सेना के साथ उनका पीछा किया, तो दरिया (की मौजें) उनको ढांप ली, जैसा कि उसे उनको ढ़ाँपना था।

فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ

७६- और फिरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह कर दिया,और सीधी राह न दिखाई।

وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى

८०- ऐ बनी इस्राईल! (याक़ूब की औलाद) 'हमने' तुमको तुम्हारे दुश्मन से छुटकारा दिया, और तुमसे 'तूर' के दाहिनी छोर का वादा किया, और तुम पर 'मन्न' और 'सल्वा' उतारा;

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى

८१- ''खाओ, जो कुछ पाक अच्छी चीज़ें 'हमने' तुम्हें दी हैं, और इसमें हद से आगे न बढ़ना कि तुम पर मेरा ग़ज़ब टूट पड़े, और जिस पर 'मेरा' ग़ज़ब टूटा, वह तो गिर कर ही रहा;

كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۖ وَمَن يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ ۝

८२- और 'मैं' बड़ा माफ़ करने वाला हूँ उसके लिए जो तौबः कर ले, और ईमान ले आए, और भले काम करे, फिर सीधी राह पर चले।''-

وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ۝

८३- ''और अपनी क़ौम से (आगे चले आने में) क्यों जल्दी की, ऐ मूसा?''

وَمَا أَعْجَلَكَ عَن قَوْمِكَ يَا مُوسَىٰ ۝

८४- (मूसा ने) कहा, ''वह मेरे पीछे हैं और मैंने तेरी ओर आने की जल्दी इस लिए की, ऐ रब! ताकि तू राज़ी हो जाए।''

قَالَ هُمْ أُولَاءِ عَلَىٰ أَثَرِي وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ ۝

८५- फ़रमाया, ''अच्छा, तो 'हमने' तुम्हारे पीछे तुम्हारे क़ौम को आज़माइश में डाल दिया, और सामरी ने उन्हें गुमराह कर डाला।''

قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِن بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۝

८६- तब मूसा अपनी क़ौम के पास वापस आए, गुस्सा और अफ़सोस से भरे हुए, कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! क्या तुम्हारे 'रब' ने तुम से अच्छा वादा नहीं किया था? तो क्या तुम पर लम्बा ज़माना गुज़र गया था या तुमने यह चाहा था कि तुम पर तुम्हारे 'रब' का ग़ज़ब उतर पड़े, इसलिए तुमने मुझसे वादा ख़िलाफ़ी की।''

فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدتُّمْ أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِي ۝

८७- उन्होंने कहा, ''हमने आप से किये हुए वादे के ख़िलाफ़ अपने से कुछ नहीं किया, बल्कि क़ौम के ज़ेवरों के बोझ हम उठाए हुए थे, फिर हमने उनको (आग में) फेंक दिया, तो इसी तरह सामरी ने भी डाल दिया।''-

قَالُوا مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلَٰكِنَّا حُمِّلْنَا أَوْزَارًا مِّن زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنَاهَا فَكَذَٰلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ ۝

८८- तो वह उनके लिए एक बछड़े का जिस्म बना लाया जिसकी आवाज़ बछड़े की सी थी, फिर उन्होंने कहा, ''यही तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) है और मूसा का भी, मगर वह भूल गया है।''

فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ فَقَالُوا هَٰذَا إِلَٰهُكُمْ وَإِلَٰهُ مُوسَىٰ فَنَسِيَ ۝

८९- क्या वे लोग इतना भी नहीं देख रहे थे, कि वह न तो किसी बात का जवाब दे सकता है और न उनको नुक़सान पहुँचाने का अधिकार है और न नफ़ा का।

أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۝

९०- और हारून ने उनसे पहले ही कह दिया था कि ''लोगो तुम इसके ज़रिये फ़ित्ने में पड़ गये हो, और तुम्हारा 'रब' तो रह़मान है, तो मेरी बताई राह पर चलो और मेरी बात मानो।''

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُونُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ

९१- उन्होंने कहा, ''हम तो इसी (की इबादत) पर जमे रहेंगे, जब तक कि मूसा वापस न आएँ।''

قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى

९२- उन्होंने कहा, ''ऐ हारून तुम्हें किस चीज़ ने रोका, जब तुम ने देख लिया था कि यह भटक गये हैं;

قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا

९३- इस बात से कि तुम मेरे पीछे चले आते तो तुमने मेरे हुक्म की नाफ़रमानी की?''

اَلَّا تَتَّبِعَنِ ۭ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ

९४- (हारून ने) कहा, ''ऐ मेरी माँ के बेटे, मेरी दाढ़ी न पकड़िए और न मेरा सर! मुझे डर हुआ कि आप कहेंगे कि 'तू ने बनी इस्राईल में फूट डाल दी, और मेरी बात को ध्यान न दिया'।''

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ

९५- (मूसा ने) कहा, ''ऐ सामरी! तेरा क्या मामला है।''

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ

९६- उसने कहा, ''मुझे ऐसी चीज़ नज़र आयी, जो दूसरों को नज़र नहीं आयी, तो मैंने रसूल के पैर के निशान से एक मुट्ठी मिट्टी उठा ली, फिर उसको छोड़ दिया, और मुझे मेरे मन ने ऐसा ही सुझाया है।''

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ نَفْسِيْ

९७- कहा, ''अच्छा, तू जा! अब ज़िन्दगी भर तुझे यह कहते रहना है कि, 'कोई छुए नहीं', और तेरे लिए एक निश्चित वादा है, जो तुझ पर से हरगिज़ न टलेगा, और देख अपने इस मअ़बूद को जिस पर तू जमा बैठा है, हम अभी इसे जलाए डालते हैं, फिर इस (की राख) को दरिया में बहा देते हैं।''

قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ ۠ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰـهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۭ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا

९८- ''तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) वही अल्लाह है, जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, 'वह' अपने इल्म से हर चीज़ पर छाया हुआ है।''

اِنَّمَآ اِلٰـهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا

९९- इसी तरह 'हम' आप से गुज़रे हुए किस्सों की ख़बरें बयान करते हैं, और 'हमने' आप को अपने पास से एक नसीह़त नामा दिया।

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا

مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ۙ

१००- जिस व्यक्ति ने इससे मुँह फेरा, तो वह क़ियामत के दिन एक बोझ उठाएगा;

خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ؕ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ۙ

१०१- (वह लोग) हमेशा उसी में रहेंगे और यह बहुत बुरा बोझ होगा जिसको वह क़ियामत के दिन लादे होंगे।

يَّوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۚ

१०२- जिस दिन सूर फूँका जाएगा और हम मुजरिमों को (इस हालत में) इकट्ठा करेंगे, और उनकी आँखें नीली पड़ गयी होंगी;

يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا

१०३- वे आपस में चुपके-चुपके कहेंगे "तुम (दुनिया में) बस दस ही दिन रहे होगे।"

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ۚ

१०४- 'हम' खूब जानते हैं, "जो कुछ यह कहेंगे, उस समय उनमें सब से बेहतर अन्दाज़ा लगाने वाला कहेगा कि, तुम तो बस एक ही दिन ठहरे हो।"

وَيَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّىْ نَسْفًا ۙ

१०५- और यह लोग आपसे पहाड़ों के बारे में पूछते हैं कह दीजिए कि, "मेरा 'रब' इन्हें (धूल की तरह) उड़ा देगा,

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۙ

१०६- फिर ज़मीन को एक समतल मैदान बना कर छोड़ेगा।

لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَاۤ اَمْتًا ؕ

१०७- न तुम उसमें कोई टेढ़-मेढ़ देखोगे और न कहीं ऊँच नीच।"

يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِىَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا

१०८- उस दिन लोग एक पुकारने वाले के पीछे चलेंगे और 'उसकी' पैरवी से अकड़ न दिखा सकेंगे, और सारी आवाज़ें रह़मान के सामने दब जाएँगी तो एक आहट के सिवा तुम कुछ न सुन सकोगे।

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِىَ لَهٗ قَوْلًا

१०९- उस दिन सिफ़ारिश कुछ काम न आएगी, मगर उस व्यक्ति की जिसको रह़मान इजाज़त दे, और उसके बोलने को पसंद करे।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا

११०- 'वह' जानता है, सब के अगले पिछले ह़ालात को; और वे अपने इल्म से उस पर अहाता (घेरा) नहीं कर सकते।

وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَىِّ الْقَيُّوْمِ ؕ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا

१११- तमाम चेहरे झुके होंगे, उस ज़िन्दा बाक़ी रहने वाले (अल्लाह) के सामने, नाकाम रहेगा वह, जो ज़ुल्म लेकर आएगा।

११२- और जिसने भले काम किये होंगे, और वह ईमान वाला भी होगा, तो उसके लिए न किसी ज़ुल्म का डर होगा, और न हक़ मारे जाने का।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ۝

११३- और इसी तरह 'हमने' इसे अ़रबी क़ुर्आन के रूप में उतारा है, और इसमें तरह-तरह से चेतावनी दी, ताकि लोग उससे डरें या (अल्लाह) उनके लिए समझ पैदा करे।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۝

११४- तो सबसे ऊँचा अल्लाह, सच्चा बादशाह है; और आप क़ुर्आन के बारे में जल्दी न किया कीजिए, जब तक कि इसकी वह्य आप पर पूरी न कर दी जाए, और कहिये कि ''ऐ मेरे रब, मेरे इल्म में ज़्यादती कर।''

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰۤى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ۝

११५- और 'हमने' इससे पहले आदम से एक वादा लिया था, लेकिन वह भूल गये, और 'हमने' उनमें इरादे की मज़बूती न पाई।

وَلَقَدْ عَهِدْنَاۤ اِلٰۤى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ۝

११६- और जब 'हमने' फ़रिश्तों से कहा कि ''आदम को सज्दः करो, तो उन्होंने सज्दः किया, मगर इब्लीस ने इन्कार किया।''

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ۚ اَبٰى ۝

११७- तो 'हमने' कहा, ''ऐ आदम! यह आप का और आपकी पत्नी का दुश्मन है, तो ऐसा न हो कि यह आप दोनों को जन्नत से निकलवा दे, तो आप मुसीबत में पड़ जाएँ

فَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ۝

११८- आप के लिए तो ऐसा (आराम) है कि न आप यहाँ भूखे रहेंगे और न नंगे;

اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ۝

११६- और यह कि न यहाँ आप को प्यास लगेगी और न धूप।''

وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ۝

१२०- तो शैतान ने उनको बहकाया, कहा ''ऐ आदम! क्या मैं तुमको (ऐसा) पेड़ बताऊँ (जो) हमेशा की ज़िन्दगी दे और (ऐसी) बादशाहत, जो कभी न खत्म हो?''

فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰۤاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ۝

१२१- फिर दोनों ने उस पेड़ का फल खा लिया, तो उन पर उनकी शर्मगाहें (गुप्त अंग) खुल गईं और वे जन्नत के पत्तों से अपने को ढ़ांपने लगे, और आदम ने अपने 'रब' की नाफ़रमानी की, तो वह राह से भटक गये।

فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۚ وَعَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ۝

ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ۝	१२२- फिर उनके रब ने उन्हें चुन लिया और उनकी तौबः कुबूल कर ली और सीधी राह बताई।
قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ۝	१२३- कहा, ''आप दोनों(जन्नत से) उतरे! आप में कुछ लोग कुछ के दुश्मन होंगे'' तो अगर 'मेरी' ओर से आप के पास कोई हिदायत आए, तो जो व्यक्ति मेरी राह पर चलेगा, वह न भटकेगा, न महरूम रहेगा;
وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ۝	१२४- और जो मेरी नसीहत से मुँह मोड़ेगा तो उसकी ज़िन्दगी तंगी में गुज़रेगी और क़ियामत के दिन 'हम' उसको अन्धा उठाएँगे।''
قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ۝	१२५- वह कहेगा, ''ऐ मेरे रब! 'तूने' मुझे अन्धा क्यों उठाया, जबकि मैं आँखों वाला था।''
قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ۝	१२६- 'वह' कहेगा, ''इसी तरह तेरे पास 'हमारी' निशानियाँ आयीं तो 'तूने' उन्हें भुला दिया, इसी तरह आज हम तुझ को भुला देंगे।''
وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ۗ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ۝	१२७- और इसी तरह 'हम' उसे बदला देते हैं जो व्यक्ति ह़द से गुज़र जाता है, और अपने 'रब' की निशानियों पर ईमान नहीं लाता; और आख़िरत का अ़ज़ाब बहुत सख़्त और बहुत देर तक बाक़ी रहने वाला है।
اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۝	१२८- तो क्या यह बात लोगों के लिए हिदायत का ज़रिया न बनी, कि 'हम' उनसे पहले कितनी ही क़ौमों को हलाक कर चुके हैं, जिनकी बस्तियों में यह चलते-फिरते हैं? इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक़्ल रखते हैं
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ۝	१२६- और अगर आप के रब की ओर से पहले ही एक बात तय न हो गयी होती, और समय निश्चित न किया जा चुका होता, तो अ़ज़ाब उनको ज़रूर पकड़ लेता।
فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ۝	१३०- तो जो कुछ यह कह रहे हैं, उस पर सब्र से काम लीजिए, और अपने 'रब' की तअ़रीफ़ के साथ तस्बीह़ किया कीजिए, सूरज के निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले, और रात की कुछ घड़ियों में और दिन के किनारों पर तस्बीह़ किया कीजिए, ताकि आप राज़ी हो जाएँ।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝

१३१- और उनकी ओर आँख उठा कर न देखिए जो कुछ 'हमने' उनमें से कुछ लोगों को दुनिया के आराम की चीज़ें दे रखी हैं, ताकि 'हम' उसके ज़रिये उन्हें आज़माएँ; और आप के 'रब' की रोज़ी बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है।

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَٱلْعَٰقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ۝

१३२- और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म कीजिए, और खुद भी उस पर जमे रहिए 'हम' आप से रोज़ी नहीं माँगते, (बल्कि) आप को 'हम' ही रोज़ी देते हैं, और अच्छा अंजाम तो परहेज़गारों के लिए है।

وَقَالُوا۟ لَوْلَا يَأْتِينَا بِـَٔايَةٍ مِّن رَّبِّهِۦٓ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ مَا فِى ٱلصُّحُفِ ٱلْأُولَىٰ ۝

१३३- और कहते हैं, ''यह अपने रब की ओर से कोई निशानी हमारे पास क्यों नहीं लाते?'' क्या इनके पास उसका स्पष्ट प्रमाण नहीं आ चुका, जो कुछ पहले की किताबों में मौजूद है?

وَلَوْ أَنَّآ أَهْلَكْنَٰهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِۦ لَقَالُوا۟ رَبَّنَا لَوْلَآ أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ ءَايَٰتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ۝

१३४- और अगर 'हम' इस पहली (रसूल के आने) से पहले ही इन्हें अज़ाब के ज़रिये हलाक कर देते, तो वे कहते कि ''ऐ हमारे रब! 'तूने' हमारे पास कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि ज़लील और बदनाम होने से पहले, हम 'तेरे' हुक्म पर चलते?''

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا۟ ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَٰبُ ٱلصِّرَٰطِ ٱلسَّوِىِّ وَمَنِ ٱهْتَدَىٰ ۝

१३५- कह दीजिए, ''हर एक इन्तिज़ार में है, तो तुम भी इन्तिज़ार करो, जल्द ही तुम जान लोगे कि कौन सीधी राह पर चलने वाले हैं और कौन हिदायत (सीधी राह) पाए हुए हैं।''



अनुवाद-सूरतुल्अम्बियाअि

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के ५१५४ अक्षर, ११८७ शब्द,११२ आयतें और ७ रूकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

पारा नं०-१७

* اِقۡتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمۡ وَهُمۡ فِىۡ غَفۡلَةٍ مُّعۡرِضُوۡنَ ۚ‏ ①	१- क़रीब आ गया है लोगों का हिसाब, और वे ग़फ़लत में (पड़े हुए,) मुँह फेरे हुए हैं।
مَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ ذِكۡرٍ مِّنۡ رَّبِّهِمۡ مُّحۡدَثٍ اِلَّا اسۡتَمَعُوۡهُ وَهُمۡ يَلۡعَبُوۡنَ ۙ‏ ②	२- उनके पास उनके 'रब' की ओर से, जो भी नई नसीह़त आती है, मगर वे उसे हँसी-खेल बनाते हुए सुनते हैं।
لَاهِيَةً قُلُوۡبُهُمۡ ؕ وَاَسَرُّوا النَّجۡوَى ۖ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا ۖ هَلۡ هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُكُمۡ ۚ اَفَتَاۡتُوۡنَ السِّحۡرَ وَاَنۡتُمۡ تُبۡصِرُوۡنَ‏ ③	३- उनके दिल ग़ाफ़िल हैं और यह ज़ालिम लोग चुपके-चुपके काना-फूसी करते हैं कि ''यह तुम जैसा ही तो एक आदमी है; फिर क्या तुम देखते हुए जादू में फँस जाओगे?''
قٰلَ رَبِّىۡ يَعۡلَمُ الۡقَوۡلَ فِى السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ وَهُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ‏ ④	४- (मुह़म्मद ने) कहा, ''मेरा 'रब' जानता है उस बात को, जो आसमान और ज़मीन में है, 'वह' खूब सुनने वाला, जानने वाला है।''
بَلۡ قَالُوۡۤا اَضۡغَاثُ اَحۡلَامٍۢ بَلِ افۡتَرٰٮهُ بَلۡ هُوَ شَاعِرٌ ۖ ۚ فَلۡيَاۡتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَاۤ اُرۡسِلَ الۡاَوَّلُوۡنَ‏ ⑤	५- (नहीं,) बल्कि वे कहते हैं ''यह तो उड़ते हुए सपने हैं, बल्कि उसने इसे खुद ही गढ़ लिया है, बल्कि यह शायर (कवि) है, इसे हमारे पास कोई निशानी लानी चाहिए, जैसे कि (निशानियाँ दे कर) पहले (रसूल) भेजे गये थे।''
مَاۤ اٰمَنَتۡ قَبۡلَهُمۡ مِّنۡ قَرۡيَةٍ اَهۡلَكۡنٰهَا ۚ اَفَهُمۡ يُؤۡمِنُوۡنَ‏ ⑥	६- इनसे पहले जिन बस्तियों को 'हमने' हलाक किया, वे ईमान न ले आयी थीं तो क्या यह ईमान ले आएँगी?
وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا قَبۡلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ فَسۡـئَلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّكۡرِ اِنۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ‏ ⑦	७- और आप से पहले 'हमने' मर्दो ही को (रसूल बना कर) भेजा, जिनकी ओर 'हम' वह़्य करते थे अगर आप नहीं जानते तो ज़िक्र वालों (किताब वालों) से पूछ लीजिए;

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝

८- और 'हमने' उनके जिस्म (शरीर) ऐसे नहीं बनाए थे जो खाना न खाते हों और न वे हमेशा रहने वाले ही थे;

ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝

९- फिर 'हमने' उनके बारे में वादा सच्चा कर दिखाया, तो उन्हें 'हमने' छुटकारा दिया, और जिसे 'हम' चाहें, और हद से निकल जाने वालों को 'हमने' हलाक कर दिया।

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝

१०- 'हमने' तुम्हारी ओर ऐसी किताब उतारी है, जिसमें तुम्हारे लिए नसीहत है, क्या तुम नहीं समझते?

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝

११- और कितनी ही ज़ालिम बस्तियाँ हैं, जिनको 'हमने' हलाक कर दिया, और उनके बाद 'हमने' दूसरे लोगों को उठा खड़ा किया।

فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝

१२- जब उन्हें 'हमारा' अज़ाब महसूस हुआ, तो लगे वहाँ से भागने।

لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْئَلُوْنَ ۝

१३- ''मत भागो, और जिन (नेमतों) में तुम ऐश व आराम करते थे उनकी और अपने घरों की ओर लौट जाओ, ताकि तुमसे (इस बारे में) पूछा जाए।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝

१४- वे पुकार उठे, ''हाय! हमारा दुर्भाग्य बेशक हम ज़ालिम थे।''

فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ۝

१५- तो उनकी लगातार यही पुकार रही, यहाँ तक कि 'हमने' उन्हें ऐसा कर दिया, जैसे कटी हुई (खेती), बुझी हुई आग का ढ़ेर;

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝

१६- और 'हमने' आसमान और ज़मीन को और इन दोनों के बीच जो कुछ है, इसलिए नहीं बनाया कि 'हम' कोई खेल करने वाले हों।

لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝

१७- अगर 'हम' कोई खेल-तमाशा करना चाहते, तो अपने ही पास से कर लेते, अगर 'हमे' ऐसा करना ही होता;

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ؕ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ۝

१८- (नहीं,) बल्कि 'हम' तो सच को झूठ पर चोट लगाते हैं, तो वह उसका सर तोड़ देता है, फिर क्या देखते हैं कि वह मिट कर रहता; और तबाही हो उन बातों की वजह से जो तुम बनाते हो।

وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۝١٩

१९- और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब 'उसी' का है, और जो (फ़रिश्ते) 'उसके' पास हैं, वे न तो अपने को बड़ा समझ कर 'उसकी' इबादत से मुँह मोड़ते हैं, और न थकते।

يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ۝٢٠

२०- रात और दिन तस्बीह़ करते रहते हैं, दम नहीं लेते हैं।

اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ۝٢١

२१- क्या लोगों ने ज़मीन की चीज़ों से (कुछ को) मअ़बूद बना लिए हैं, (तो क्या) वह उनको (मरने के बाद) उठा खड़ा करेंगे

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝٢٢

२२- अगर इन दोनों (आसमान और ज़मीन) में अल्लाह के सिवा और मअ़बूद होते, तो दोनों (ज़मीन व आसमान) फ़साद से भर जाते तो पाक है अल्लाह, (जो) अर्श का 'रब' उन बातों से जो यह बयान करते हैं।

لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْئَلُوْنَ ۝٢٣

२३- 'वह' जो कुछ करता है, उससे उसकी कोई पूछ नहीं होगी, और (जो काम यह करते हैं, उसकी) इनसे पूछ होगी।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٢٤

२४- क्या लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को मअ़बूद बना लिये हैं, कह दीजिए, ''लाओ, अपना प्रमाण, जो लोग मेरे साथ हैं उनकी किताब (क़ुर्आन) है, और जो मुझसे पहले (रसूल) गुज़र चुके हैं, उनकी किताबें भी हैं, बल्कि उनमें अक्सर लोग सच बात को नहीं जानते, इसलिए वह मुँह फेर लेते हैं;

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ۝٢٥

२५- और 'हमने' आप से पहले कोई ऐसा रसूल नहीं भेजा, कि जिसके पास 'हमने' वह़्य न भेजी हो 'मेरे' सिवा कोई मअ़बूद नहीं, तो 'मेरी' ही इबादत करो।''

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۝٢٦

२६- और उन्होंने कहा, ''रह़मान औलाद रखता है।'' पाक है 'वह' बल्कि वे उसके सम्मानित बन्दे हैं;

لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ۝٢٧

२७- 'वह' उससे बढ़ कर बात नहीं कर सकते, और 'उसी' के हुक्म पर अ़मल करते हैं।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ۝٢٨

२८- 'वह' जानता है जो कुछ उनके आगे और पीछे है, और वह सिफ़ारिश नहीं कर सकते, 'मगर उस व्यक्ति की' जिससे अल्लाह खुश हो और वे 'उसके' जलाल से डरते हों।

وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝٢٩

२९- और जो आदमी उनमें से अगर यह कह दे कि ''उसके सिवा मैं अल्लाह हूँ,'' तो 'हम' उसे जहन्नम की सज़ा देंगे; 'हम' ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं।

أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾

३०- क्या इन्कार करने वालों ने नहीं देखा! कि आसमान और ज़मीन आपस में मिले हुए थे, फिर 'हमने' उन्हें अलग-अलग कर दिया, और 'हमने' पानी से हर जानदार चीज़ को बनाया, क्या फिर भी वे ईमान नहीं लाएँगे?

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾

३१- और 'हमने' ज़मीन में पहाड़ इस लिए रख दिये, ताकि ऐसा न हो कि वह लोगों को लेकर हिलने लगे, और 'हमने' उसमें ऐसे कुशादा (चौड़े) रास्ते बनाए, ताकि लोग रास्ता पाते रहें।

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾

३२- और 'हमने' आसमान को एक सुरक्षित छत बना दिया, और इस पर भी वे 'हमारी' निशानियों से मुँह फेरे हुए हैं।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾

३३- और 'वही' तो है जिसने रात और दिन को, और चाँद और सूरज को पैदा कर दिया; यह सब अपने-अपने मदार (मण्डल) में तैर रहे हैं।

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ أَفَإِنْ مِتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ﴿٣٤﴾

३४- और 'हमने' आप से पहले भी किसी इन्सान को हमेशा के लिए नहीं बनाया था, क्या अगर आप की मौत हो जाए, तो (क्या) यह लोग हमेशा रहेंगे?

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٣٥﴾

३५- हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है, और 'हम' तुम लोगों को आज़माते हैं, बुरी और अच्छी ह़ालत में डाल कर, और 'हमारी' ही ओर तुम लौट कर आओगे।

وَإِذَا رَآكَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهٰذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٦﴾

३६- और जब काफ़िर आप को देखते हैं, तो आप का मज़ाक़ उड़ाते हैं, (कहते हैं) ''क्या यही वह व्यक्ति है, जो तुम्हारे मअ़बूदों की चर्चा किया करता है?'' और उनका अपना ह़ाल यह है कि रह़मान के ज़िक्र से इन्कार करते हैं।

خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ سَأُرِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿٣٧﴾

३७- इन्सान जल्दबाज़ बनाया गया है, 'मैं' जल्द ही तुमको अपनी निशानियां दिखा दूँगा, तो तुम जल्दी मत मचाओ।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

३८- और कहते हैं, ''यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो।''

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكُفُّونَ عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿٣٩﴾

३९- अगर इन काफ़िरों को उस वक़्त की ख़बर होती, जब आग को न रोक सकेंगे अपने चेहरों से, और न अपनी पीठों से, और न ही उनको कोई मदद पहुँच सकेगी;

بَلْ تَأْتِيهِم بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٤٠﴾

४०- बल्कि वह तो अचानक आ जाएगी और उन्हें बदहवास कर देगी, फिर न तो उन्हें उसको दूर करने की ताक़त होगी, और न उन्हें मोहलत ही मिलेगी।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٤١﴾

४१- और आप से पहले भी रसूलों की हँसी उड़ाई जा चुकी है, तो उनमें से जिन लोगों ने उनकी हँसी उड़ाई थी, उन्हें उसी चीज़ ने आ घेरा, जिसकी वे हँसी उड़ाते थे।

قُلْ مَن يَكْلَؤُكُم بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَٰنِ ۗ بَلْ هُمْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِم مُّعْرِضُونَ ﴿٤٢﴾

४२- कह दीजिए, ''कौन रह़मान के मुक़ाबले में रात और दिन तुम्हारी रक्षा करेगा?'' बल्कि बात यह है कि वे अपने रब के ज़िक्र से मुँह फेरे हुए हैं।

أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَمْنَعُهُم مِّن دُونِنَا ۚ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنفُسِهِمْ وَلَا هُم مِّنَّا يُصْحَبُونَ ﴿٤٣﴾

४३- क्या उनके पास 'हमारे' सिवा और मअ़बूद हैं; जो उनको बचा सकते हों? वे तो खुद ही अपनी मदद नहीं कर सकते और न हमारे मुक़ाबले में उनका कोई साथ ही दे सकता हैं;

بَلْ مَتَّعْنَا هَٰؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۗ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ أَفَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾

४४- बल्कि 'हमने' उन्हें और उनके बाप-दादा को खूब सामान दिया, यहाँ तक कि उन पर एक लम्बा ज़माना गुज़र गया; तो क्या यह देखते नहीं! कि 'हम' इस धरती की ओर इसकी सीमाओं को घटाते हुए बढ़ रहे हैं, तो क्या यह लोग ग़ालिब रहेंगे?

قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُم بِالْوَحْيِ ۚ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ﴿٤٥﴾

४५- कह दीजिए, मैं तो बस 'वह्य' के आधार पर तुम्हें डराता हूँ, और बहरे तो पुकार सुनते ही नहीं! जबकि उन्हें डराया जाए।''

وَلَئِن مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٤٦﴾

४६- और अगर उनको आप के रब के अ़ज़ाब का एक झोंका भी छू जाए, तो यूँ कहने लगते हैं कि, ''हाय! हमारा दुर्भाग्य, बेशक हम ही ज़ालिम थे।''

وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ۖ وَإِن كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفَىٰ بِنَا حَاسِبِينَ ﴿٤٧﴾

४७- और 'हम' क़ियामत के दिन इन्साफ़ का तराजू क़ायम करेंगे, फिर किसी व्यक्ति पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा, अगर किसी का कोई अ़मल राई के दाने के बराबर भी होगा, तो 'हम' उसे ला हाज़िर करेंगे, और 'हम' हिसाब लेने के लिए काफ़ी हैं।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاءً وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾

४८- और 'हम' मूसा और हारून को फुरक़ान (फैसला), और रोशनी, और नसीह़त दे चुके हैं परहेज़गारों के लिए;

४९- जो अपने रब से बिन देखे डरते हैं, और उन्हें क़ियामत की घड़ी का डर लगा रहता है।

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ﴿٤٩﴾

५०- और यह मुबारक नसीहत है, जिसे 'हमने' नाज़िल किया, तो क्या तुम्हें इससे इन्कार है?

وَهَٰذَا ذِكْرٌ مُّبَارَكٌ أَنزَلْنَاهُ ۚ أَفَأَنتُمْ لَهُ مُنكِرُونَ ﴿٥٠﴾

५१- और इससे पहले ही 'हमने' इब्राहीम को हिदायत, और समझ दी थी, और 'हम' उनको खूब जानते थे;

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِن قَبْلُ وَكُنَّا بِهِ عَالِمِينَ ﴿٥١﴾

५२- जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, ''यह मूर्तियाँ क्या हैं, जिनसे तुम लगे बैठे हो?''

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَٰذِهِ التَّمَاثِيلُ الَّتِي أَنتُمْ لَهَا عَاكِفُونَ ﴿٥٢﴾

५३- वे बोले, ''हमने अपने बाप-दादा को इन्हीं की पूजा करते हुए पाया है।''

قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا عَابِدِينَ ﴿٥٣﴾

५४- (इब्राहीम ने) कहा, ''अगर तुम और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली गुमराही में रहे हों।''

قَالَ لَقَدْ كُنتُمْ أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٥٤﴾

५५- उन्होंने कहा, ''क्या तू हमारे पास ह़क़ लेकर आया है या यूँ ही खेल कर रहा है?''

قَالُوا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنتَ مِنَ اللَّاعِبِينَ ﴿٥٥﴾

५६- कहा, ''(नहीं) बल्कि तुम्हारा 'रब' वह है जो आसमानों और ज़मीन का 'रब' है; 'उसी' ने उनको पैदा किया, और मैं इसका गवाह हूँ;

قَالَ بَل رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُنَّ وَأَنَا عَلَىٰ ذَٰلِكُم مِّنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٦﴾

५७- और अल्लाह की क़सम! मैं ज़रूर तुम्हारे बुतों के साथ एक उपाय करूँगा, जब तुम पीठ फेर कर चले जाओगे।''

وَتَاللَّهِ لَأَكِيدَنَّ أَصْنَامَكُم بَعْدَ أَن تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ﴿٥٧﴾

५८- तो उसने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर डाला, सिवाय एक बड़े (बुत) के, ताकि वे उसकी ओर रूजूअ़ करें।

فَجَعَلَهُمْ جُذَاذًا إِلَّا كَبِيرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ ﴿٥٨﴾

५९- वे कहने लगे, ''किसने हमारे देवताओं के साथ यह हरकत की है? वह तो कोई ज़ालिम है।''

قَالُوا مَن فَعَلَ هَٰذَا بِآلِهَتِنَا إِنَّهُ لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٩﴾

६०- लोगों ने कहा, ''हमने तो एक नौजवान को उनके बारे में कुछ कहते सुना है, जिसको इब्राहीम कहते हैं।''

قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ ﴿٦٠﴾

६१- उन्होंने कहा, ''तो उसे ले आओ लोगों की आँखों के सामने, कि वे गवाह रहें।''

قَالُوا فَأْتُوا بِهِ عَلَىٰ أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ﴿٦١﴾

६२- उन्होंने कहा, ''क्या तूने हमारे मअ़बूदों के साथ यह हरकत की है, ऐ इब्राहीम।''

قَالُوا أَأَنتَ فَعَلْتَ هَٰذَا بِآلِهَتِنَا يَا إِبْرَاهِيمُ ﴿٦٢﴾

قَالَ بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَٰذَا فَاسْأَلُوهُمْ إِن كَانُوا يَنطِقُونَ

६३- (इब्राहीम ने) कहा, बल्कि उनके इस बड़े ने किया है तो इनसे पूछ लो, अगर यह बोलते हों।''

فَرَجَعُوا إِلَىٰ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوا إِنَّكُمْ أَنتُمُ الظَّالِمُونَ

६४- तो वे अपने जी में सोचने लगे फिर बोले, वास्तव में ज़ालिम तो तुम ही हो।

ثُمَّ نُكِسُوا عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هَٰؤُلَاءِ يَنطِقُونَ

६५- फिर वे अपने सरों के बल औंधे हो गये, ''बोले तुम्हें मालूम है कि यह बोलते नहीं हैं।''

قَالَ أَفَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكُمْ شَيْئًا وَلَا يَضُرُّكُمْ

६६- (इब्राहीम ने) कहा, ''क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों की पूजा करते हो, जो तुम को न फ़ायदा पहुँचा सकती हैं और न नुक़सान?-

أُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

६७- अफ़सोस है! तुम पर, जो तुम अल्लाह को छोड़ कर पूजते हो, तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?''

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ

६८- उन्होंने कहा, ''जला दो इसे और अपने मअ़बूदों की मदद करो, अगर तुम्हें कुछ करना है।''

قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ

६९- 'हमने' कहा, ''ऐ आग! तू ठंडी और सलामती हो जा, इब्राहीम पर।''

وَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَخْسَرِينَ

७०- और उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही थी, किन्तु 'हमने' उन्हीं को घाटे में डाल दिया;

وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ

७१- और 'हमने' उनको (इब्राहीम) और लूत को ऐसी ज़मीन की ओर भेजकर बचा लिया, जिसको 'हमने' दुनिया वालों के लिए बरकत बना दिया था।

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا صَالِحِينَ

७२- और 'हमने' उन्हें इस्हाक़ और याक़ूब (पोता) दिये और सब को 'हमने' नेक बनाया।

وَجَعَلْنَاهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَإِقَامَ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءَ الزَّكَاةِ ۖ وَكَانُوا لَنَا عَابِدِينَ

७३- और 'हमने' उनको इमाम (नायक) बनाया, कि 'हमारे' हुक्म से (लोगों को) राह बताएँ; और उनको नेक काम करने, और नमाज़ क़ायम करने, और ज़कात देने के लिए हुक्म भेजा, और वे हमारी ही इबादत में लगे रहते थे।

وَلُوطًا آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَت تَّعْمَلُ الْخَبَائِثَ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَاسِقِينَ

७४- और लूत को 'हमने' हिक़मत और समझ दी, और उसको उस बस्ती से छुटकारा दिया, जो गन्दे काम करते थे, बेशक वे बुरे बद्कार लोग थे।

وَاَدْخَلْنٰهُ فِیْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ

७५- और 'हमने' (लूत को) अपनी रह़मत में दाख़िल कर लिया, बेशक वह बड़े नेक लोगों में से थे।

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰی مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّیْنٰهُ
وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِیْمِ

७६- और इससे पहले 'नूह' को भी, जब उन्होंने 'हमें' पुकारा तो 'हमने' उनकी दुआ़ क़ुबूल की, तो 'हमने' उनको और उनके साथियों को बड़ी मुसीबत से बचा लिया;

وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا ۭ
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِیْنَ

७७- और 'हमने' उनकी मदद की, उन के मुक़ाबले में, जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया था; बेशक वे बहुत बुरे लोग थे, तो 'हमने' उन सबको डुबो दिया।

وَدَاوٗدَ وَسُلَیْمٰنَ اِذْ یَحْكُمٰنِ فِی الْحَرْثِ اِذْ
نَفَشَتْ فِیْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ
شٰهِدِیْنَ

७८- और 'दाऊद' और 'सुलेमान' को जब वह खेत के बारे में फ़ैसला कर रहे थे, जबकि उसमें लोगों की बकरियां जा पड़ी थीं, और 'हम' उनके मामले को देख रहे थे।

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَیْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَیْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۡ
وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ یُسَبِّحْنَ وَالطَّیْرَ ۭ وَكُنَّا
فٰعِلِیْنَ

७६- तो 'हमने' इस फ़ैसले की समझ सुलेमान को दे दी, और ह़िकमत व इल्म हर एक को दिया था; और 'हमने' दाऊद के अधीन कर दिये थे पहाड़ों को, कि वह तस्बीह़ करते थे; और पक्षियों को भी, और (ऐसा) करने वाले 'हम' ही थे।

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْ
بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ

८०- और 'हमने' उन्हें कवच (बख्तर) बनाना तुम्हारे लिए सिखा दिया, ताकि वह तुमको लड़ाई में बचाए, तो क्या तुम शुक्र अदा करते हो?

وَلِسُلَیْمٰنَ الرِّیْحَ عَاصِفَةً تَجْرِیْ بِاَمْرِهٖٓ اِلَی
الْاَرْضِ الَّتِیْ بٰرَكْنَا فِیْهَا ۭ وَكُنَّا بِكُلِّ شَیْءٍ
عٰلِمِیْنَ

८१- और 'हमने' सुलेमान के लिए तेज़ हवा को अधीन कर दिया था, कि वह उनके हुक्म से चलती, उस ज़मीन की ओर; जिसमें 'हमने' बरकत रख दी थी, और 'हम' तो हर चीज़ का इल्म रखते हैं।

وَمِنَ الشَّیٰطِیْنِ مَنْ یَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَیَعْمَلُوْنَ
عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِیْنَ

८२- और कितने शैतानों को उनके अधीन कर दिया था, जो सुलेमान के लिए ग़ोते लगाते, और दूसरे काम भी करते थे, और 'हम' ही उनको थामे रहते थे।

وَاَیُّوْبَ اِذْ نَادٰی رَبَّهٗٓ اَنِّیْ مَسَّنِیَ الضُّرُّ وَاَنْتَ
اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ

८३- और अय्यूब को, जब उन्होंने अपने रब को पुकारा कि "मुझको तकलीफ़ पहुँच रही है, और 'तू' सबसे बढ़ कर रह़म करने वाला है।"

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَیْنٰهُ
اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَ

८४- तो 'हमने' उनकी दुआ़ क़ुबूल की, और जो उनको तकलीफ़ थी दूर कर दी और उनको उनके परिवार के लोग

ذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ۝

दिये, और उनके साथ उनके जैसे और भी दिये, अपनी ओर से रह़मत के तौर पर, ताकि नसीह़त रहे, इबादत करने वालों के लिए।

وَإِسْمٰعِيْلَ وَإِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

८५- और इस्माईल और इद्रीस और ज़ुल्क़िफ़्ल को भी, यह सब सब्र करने वाले थे।

وَأَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ إِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

८६- और उन्हें 'हमने' अपनी रह़मत में दाख़िल किया, बेशक वह नेक लोगों में से थे।

وَذَا النُّوْنِ إِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ إِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

८७- और 'ज़ुन्नून' जबकि वह (मछली वाले) ग़ुस्सा होकर चले गये, तो यह समझे कि 'हम' उन पर तंगी न करेंगे, तो उन्होंने अन्धेरों में पुकारा कि 'तेरे' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, 'तू' पाक है, बेशक मैं ही ख़ताकार हूँ।''

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

८८- तो 'हमने' उनकी दुआ़ क़ुबूल की, और उन्हें ग़म से छुटकारा दिया, और इसी तरह 'हम' ईमान वालों को, छुट्कारा दिया करते हैं।

وَزَكَرِيَّآ إِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّأَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۝

८९- और ज़करीया (को याद करो) जबकि उन्होंने अपने रब को पुकारा, ''ऐ मेरे 'रब'! मुझे अकेला न छोड़, और 'तू' सबसे अच्छा वारिस है।''

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۫ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَأَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ إِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ۝

९०- तो 'हमने' उनकी दुआ़ क़ुबूल की और उसे 'यह्या' को दिया, और उसकी पत्नी को उनके लिए ठीक (औलाद के क़ाबिल) कर दिया; बेशक वे नेकी के कामों में एक-दूसरे के मुक़ाबले में जल्दी करते थे, और हमें रग़बत (लगाओ) और डर के साथ पुकारते और 'हमारे' सामने नर्म (डरते) रहने वाले थे।

وَالَّتِيْٓ أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

९१- और वह (मरयम) जिन्होंने अपनी पाक दामनी (सतीत्व) को बचाए रखा, तो 'हमने' उनमें अपनी रूह़ फूँक दी और उनको और उनके बेटे को सारी दुनिया के लिए एक निशानी बना दिया।

إِنَّ هٰذِهٖٓ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ۝

९२- यह तुम्हारी जमाअ़त एक ही जमाअ़त है और 'मैं' तुम्हारा 'रब' हूँ,' तो तुम 'मेरी' ही इबादत किया करो।''

وَتَقَطَّعُوْٓا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ؕ كُلٌّ إِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ۝

९३- और उन्होंने अपने मामले (दीन) को टुकड़े-टुकड़े कर डाला- सब 'हमारे' पास ही वापस आने वाले हैं,

فَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ

९४- तो जो कोई नेक काम करेगा, और वह ईमान वाला भी हो, तो उसकी कोशिश बेकार जाने वाली नहीं, और 'हम' तो उसे लिख लेते हैं।

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ

९५- और जिस बस्ती को 'हमने' हलाक कर दिया, कि (रूजूअ़ करें) वह रूजूअ़ नहीं करेंगे।

حَتّٰىٓ اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ

९६- यहाँ तक कि याजूज और माजूज खोल दिये जाएँ, और वे हर ऊँची जगह से निकल पड़ें।

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ

९७- और सच्चा वादा क़रीब आ जाए तो अचानक उन लोगों की आखें फटी की फटी रह जाएँ जिन्होंने इन्कार किया, ''हाय हमारा दुर्भाग्य! हम इससे ग़फ़लत में पड़े थे, बल्कि हम ही ज़ालिम थे।''

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۗ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ

९८- ''बेशक तुम और जिन की तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते रहे जहन्नम के ईंधन होंगे, उसमें तुम दाख़िल हो कर रहोगे।''

لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۤءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۗ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ

९९- अगर यह लोग मअ़बूद होते, तो इसमें क्यों जाते, और इन सब को हमेशा इसी में रहना होगा।

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ

१००- वहाँ भी चीख़ते-चिल्लाते रहेंगे, और कुछ न सुन सकेंगे।

اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰىٓ ۙ اُولٰۤىِٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ

१०१- जिन लोगों के लिए पहले ही 'हमारी' ओर से भलाई निश्चित हो चुकी है, वे इससे दूर रखे जाएँगे।

لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ

१०२- वे उसकी आहट तक न सुनेंगे, और अपनी मन चाही (नेअ़मतों में) हमेशा रहेंगे।

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰۤىِٕكَةُ ۗ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ

१०३- उन्हें सबसे बड़ी घबराहट ग़म में न डालेगी, और फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे, ''और यही है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वादा किया जाता था;

يَوْمَ نَطْوِى السَّمَاۤءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۗ كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ۗ وَعْدًا عَلَيْنَا ۗ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ

१०४- जिस दिन 'हम' आसमान को लपेट देंगे, जैसे तुमार (रोल) में काग़ज़ लपेटे जाते हैं, जिस तरह 'हमने' (दुनिया को) पहले पैदा किया था, फिर 'हम' उसे दोहरावेंगे, और यह वादा है, 'हमारे' ज़िम्मे, 'हम' इस काम को करके रहेंगे।

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِى الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ

१०५- और 'हमने' ज़बूर में नसीहत के बाद लिख दिया था कि ''धरती के वारिस 'हमारे' नेक बन्दे होंगे।''

اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ

१०६- इसमें एक सन्देश है इबादत करने वालों के लिए।

१०७– और 'हमने' आप को सारी दुनिया के लिए रह़मत बना कर भेजा है।	وَمَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ۝
१०८– कह दीजिए, ''मेरे पास यह वह्य आयी है कि, 'तुम्हारा मअ़बूद 'वही' एक अल्लाह है,' तो क्या तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) होते हो?''	قُلۡ اِنَّمَا يُوۡحٰۤى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلۡ اَنۡتُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ ۝
१०९– फिर भी अगर यह लोग मुँह फेरें तो कह दीजिए, ''मैंने तुम्हें खुल्लम- खुल्ला सचेत कर दिया, अब मैं यह नहीं जानता कि जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है वह क़रीब है या दूर।''	فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَقُلۡ اٰذَنۡتُكُمۡ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ وَاِنۡ اَدۡرِىۡۤ اَقَرِيۡبٌ اَمۡ بَعِيۡدٌ مَّا تُوۡعَدُوۡنَ ۝
११०– 'वह' ऊँची आवाज़ में कही हुई बात को भी जानता है, और उसे भी जानता है जो तुम छिपा कर करते हो।	اِنَّهٗ يَعۡلَمُ الۡجَهۡرَ مِنَ الۡقَوۡلِ وَيَعۡلَمُ مَا تَكۡتُمُوۡنَ ۝
१११– और मुझे नहीं मालूम, हो सकता है कि वह तुम्हारे लिए आज़माइश हो, और एक मुद्दत (अवधि) तक के लिए फ़ायदा,	وَاِنۡ اَدۡرِىۡ لَعَلَّهٗ فِتۡنَةٌ لَّكُمۡ وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيۡنٍ ۝
११२– कहा, ''ऐ मेरे रब! ह़क़ के साथ फ़ैसला कर दीजिए! और हमारा 'रब' रह़मान है, 'उसी' से मदद माँगी जाती है, उन बातों के मुक़ाबले में जो तुम बयान करते हो।	قٰلَ رَبِّ احۡكُمۡ بِالۡحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا الرَّحۡمٰنُ الۡمُسۡتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوۡنَ ۝



अनुवाद-सूरतुल् ह़ज्जि

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के ५४३२ अक्षर, १२८३ शब्द,७८ आयतें और १० रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- ऐ लोगो! अपने रब से डरो, क़ियामत का ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ है;

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ①

२- जिस दिन तुम उसे देखोगे, हर दूध पिलाने वाली, अपने दूध पीते (बच्चे) को भूल जाएगी, और जितनी ह़मल वालियां (गर्भवती) हैं सब अपना ह़मल डाल देंगी, और लोग तुझे नशा की ह़ालत में दिखाई देंगे, हालाँकि वे नशे में न होंगे, बल्कि अल्लाह का अ़ज़ाब है ही सख़्त चीज़।

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ②

३- और कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अल्लाह के बारे में बिना इल्म के झगड़ा किया करते हैं, और हर सरकश शैतान के पीछे हो लेते हैं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ③

४- (जबकि) उसके लिए लिखा जा चुका है, कि जो उससे दोस्ती रखेगा, तो उसे वह गुमराह कर के रहेगा, और उसको दोज़ख के अ़ज़ाब की राह दिखा देगा।

كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ④

५- ऐ लोगो! अगर तुमको (दोबारा) जी उठने में कुछ शक हो तो 'हमने' तुमको मिट्टी से, फिर बूँद से, फिर खून के लोथड़े से, फिर उससे बोटी बना कर पैदा किया जिस की बनावट अधूरी भी और पूरी भी होती है, ताकि 'हम' तुम्हारे सामने (हक़्) ज़ाहिर कर दें, और 'हम' रह़िम (गर्भाशय) में जिसको चाहते हैं एक निश्चित समय तक ठहराए रखते हैं, फिर तुमको बच्चे की शक्ल में निकालते हैं कि तुम अपनी जवानी को

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۗ وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا

يَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۚ وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝

पहुँचो; और तुम में से कोई तो पहले मर जाता है, और कोई बुढ़ापे की बदतरीन आयु तक पहुँचा दिया जाता है कि जानने के बाद भी वह कुछ नहीं जानता; और तुम देखते हो कि धरती सूखी पड़ी है, फिर जब 'हम' उस पर पानी बरसाते हैं, तो वह हरी भरी हो जाती है, और फूलने लगती है और हर तरह की सुन्दर चीज़ें उगाती है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْىِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

६- यह इसलिए कि अल्लाह ही हक़ है, और यह कि 'वह' मुर्दो को ज़िन्दा करता है, और यह कि 'उसे' हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) है।

وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝

७- और यह कि वह घड़ी ज़रूर आनी है, इसमें किसी तरह का सन्देह नहीं, और जो लोग क़ब्रों में हैं, अल्लाह उन्हें उठा खड़ा करेगा।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝

८- और इन्सानों में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, हालाँकि न उनके पास इल्म है, न सूझ-बूझ, और न कोई रौशन किताब;

ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝

९- अकड़ते हुए, ताकि लोगों को अल्लाह की राह से गुमराह करें, ऐसों के लिए दुनिया में भी रूसवाई है, और क़ियामत के दिन 'हम' उसको जलती हुई आग का अज़ाब चखाएँगे।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝

१०- कि "यह तेरे ही हाथों के करतूतों का बदला है, और यह कि अल्लाह बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म करने वाला नहीं।"

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ﹰاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ﹰانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝

११- और इन्सानों में कुछ ऐसे भी होते हैं, जो अल्लाह की इबादत किनारे पर (खड़े होकर) करते हैं, फिर अगर उसे कोई फ़ायदा पहुँच गया तो उस पर जमा रहता है, और अगर उस पर कोई आज़माइश आ गई तो वह मुँह के बल पलट जाता है, उसने दुनिया को भी खो दिया और आख़िरत को भी, यही है खुला हुआ घाटा;

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝

१२- यह अल्लाह को छोड़ कर उसे पुकारते हैं, जो न उन्हें नुक़सान पहुँचा सकें और न नफ़ा पहुँचा सकें, यही तो भटक कर दूर होना है।

يَدْعُوا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۭ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ۝

१३- वे उन्हें पुकारते हैं जिनका नुक़सान उनके फ़ायदे से ज़्यादा क़रीब है, बहुत ही बुरा दोस्त है वह, और बहुत ही बुरा साथी!

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝

१४- बेशक अल्लाह उन लोगों को, जो ईमान लाए और उन्होंने भले काम किये, ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, बेशक अल्लाह जो चाहे करता है।

مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَاۗءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ۝

१५- जो व्यक्ति यह समझता है कि अल्लाह दुनिया और आखिरत में उस (रसूल) की हरगिज़ कोई मदद न करेगा, तो उसे चाहिए कि वह आसमान की ओर एक रस्सी ताने, फिर (मदद) काट दे, फिर देख ले कि क्या उसका उपाय उस चीज़ को दूर कर सकता है, जो उसे गुस्से में डाले हुए है।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ۝

१६- और इसी तरह़ 'हमने' इस (क़ुर्आन) को स्पष्ट दलीलों के रूप में उतारा है, और अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـــِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ڰ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝

१७- जो लोग ईमान लाए, और जो यहूदी हुए, और साबिई, और ईसाई, और मजूसी, और जिन लोगों ने शिर्क किया- इन सब के बीच अल्लाह क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा; बेशक अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَاۗبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ۭ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۭ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاۗءُ ۝ सज्दः

१८- क्या तुमने देखा नहीं! कि अल्लाह ही को सज्दः करते हैं, वे सब जो आसमानों में हैं, और जो ज़मीन में है, और सूरज-चाँद, तारे, पहाड़, वृक्ष, जानवर,। और बहुत से इन्सान ऐसे हैं जिन पर अ़ज़ाब तय हो चुका, और जिसे अल्लाह अपमानित करे उसे कोई इज्ज़त देने वाला नहीं, बेशक अल्लाह जो चाहता है करता है।

هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۡ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ۭ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ۝

१९- यह दो फ़रीक़ (विवादी) हैं, जिन्होंने अपने 'रब' के बारे में झगड़ा किया; तो जो लोग काफ़िर हैं, उनके लिए आग के कपड़े काटे जाएँगे, उनके सरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा;

يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ۝

२०- इससे जो कुछ उनके पेटों में है, पिघल जाएगा और खालें भी।

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ۝

२१- और उनके (मारने के) लिए लोहे के गुर्ज़ (हथौड़े) होंगे।

كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا
فِيْهَا ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٢٢﴾

२२- जब कभी वे घबरा कर उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में लौटा दिये जाएँगे, और (कहा जाएगा), ''चखो दहकती आग का मज़ा।''

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا
مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا
حَرِيْرٌ ﴿٢٣﴾

२३- जो लोग ईमान लाए, और भले काम किये, अल्लाह उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वहाँ उन्हें सोने के कंगनों और मोती के ज़ेवरात पहनाए जाएँगे, और वहाँ उनका पहनावा रेशम का होगा;

وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوْٓا اِلٰى
صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ﴿٢٤﴾

२४- और उनको राह मिली अच्छी और पाक बातों की, और उनको तअ़रीफ़ वाले (अल्लाह) की राह दिखाई गयी।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ
ا لْعَاكِفُ فِيْهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ
بِاِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾

२५- जो लोग काफ़िर हैं, और रोकते हैं अल्लाह की राह से, और मस्जिदे ह़राम से, जिसको 'हमने' सब लोगों के लिए ऐसा बनाया है कि उसमें बराबर है, वहाँ का रहने वाला और बाहर से आया हुआ, और जो कोई भी उसके अन्दर किसी बेदीनी का इरादा ज़ुल्म से करेगा, 'हम' उसे दु:ख देने वाला अ़ज़ाब चखाएँगे।

وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ
بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ
وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾

२६- और जब 'हमने' इब्राहीम के लिए (अल्लाह के) घर को ठिकाना बनाया, (और कहा) कि, ''मेरे साथ किसी को साझीदार न बनाइयेगा, और 'मेरे' घर को पाक रखिएगा, तवाफ़ करने वालों, और क़ियाम व रूकूअ़ और सज्दे करने वालों के लिए।''

وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى
كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾

२७- और लोगों में ह़ज का एलान कर दीजिए ''(लोग) आप के पास पैदल भी आएँगे, और दुबली-दुबली ऊँटनियों पर भी, जो दूर-दूर के रास्तों से पहुँची होंगी;

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ
اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيْمَةِ
الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾

२८- ताकि अपने फ़ायदे को देखें जो उनके लिए रखे गये, और (क़ुर्बानी) निश्चित दिनों में, मवेशी-चौपायों पर अल्लाह का नाम लें, जो (अल्लाह ने) उन्हें दिये हैं फिर उसमें से खुद भी खाओ और तंगदस्त मोहताजों को भी खिलाओ।''

ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا
بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾

२९- फिर उन्हें चाहिए कि लोग अपना मैल -कुचैल दूर करें, और अपनी मन्नतें पूरी करें और इस क़दीम (प्राचीन) घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें।

ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۗ وَ اُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۝٣٠

३०- यह और जो व्यक्ति अल्लाह की ठहरायी हुई हुरमतों (अल्लाह की बाँधी हुई पाबंदियों) की इज़्ज़त करेगा, तो यह उसके 'रब' के यहाँ उसके लिए बेहतर है; और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल किये गये, सिवाय उनके जिनका हुक्म तुम्हें सुना दिया गया; तो मूर्तियों की बन्दगी से बचो, और बचो झूठी बात से;

حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ۗ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ۝٣١

३१- इस तरह कि अल्लाह ही की ओर के होकर 'उसके' साथ किसी को साझीदार न ठहराओ, और जो व्यक्ति अल्लाह के साथ साझीदार ठहराता है, तो मानो वह आसमान से गिर पड़ा, फिर चाहे उसे पक्षी उचक ले जाएँ या हवा उसे किसी दूर जगह फेंक दे।

ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ۝٣٢

३२- यह (है हमारा हुक्म) और जो व्यक्ति अल्लाह के निश्चित किये हुए निशानों का आदर करे, तो यह दिलों के परहेज़गारी की बात है।

لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝٣٣

३३- उनमें एक निश्चित समय तक तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं, फिर उनको उस क़दीम (पुरातन) घर तक पहुँचना है।

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۗ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ۗ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۝٣٤

३४- और 'हमने' हर उम्मत के लिए कुर्बानी का तरीक़ा निश्चित किया, ताकि वह उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लें, जो 'उसने' उन्हें दिये हैं; तुम्हारा अल्लाह 'एक ही अकेला अल्लाह है;' तो अपने को 'उसी' के हवाले कर दो और नर्मी (विनम्रता) अपनाने वाले को खुशख़बरी सुना दो;

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣٥

३५- जिनका हाल यह है कि जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है, तो उनके दिल दहल जाते हैं; जो मुसीबत में सब्र करने वाले और नमाज़ क़ायम करने वाले हैं; और जो रोज़ी 'हमने' उन्हें दी है उसमें से वे खर्च करते हैं।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۗ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٣٦

३६- और (कुर्बानी के) जानवरों को भी 'हमने' तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों में से बनाया है, तुम्हारे लिए उनमें भलाई है, तो उन्हें क़तार में खड़ा कर के उन पर अल्लाह का नाम लिया करो, फिर जब वे अपने पहलुओं के बल गिर पड़ें, तो खुद भी उनमें से खाओ और सब्र करने वालों और मांगने

वालों को भी खिलाओ, इस तरह 'हमने' उनको तुम्हारे बस में कर दिया, ताकि तुम शुक्र करो।

३७- अल्लाह तक न उनका गोश्त पहुँचता है, और न उनका खून, लेकिन 'उसके' पास तुम्हारा तक़्वा (परहेज़गारी) पहुँचता है, इसी तरह अल्लाह ने उनको तुम्हारे क़ाबू में कर दिया, कि 'उसने' जो तुमको राह सुझाई है, उस बदले में अल्लाह की बड़ाई बयान करो, और (ऐ नबी) नेक लोगों को खुशख़बरी सुना दीजिए।

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ
يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا
لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝

३८- अल्लाह उन लोगों की ओर से दिफ़ा (प्रतिरक्षा) करता है, जो ईमान लाए, बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता किसी ख़ियानत (दग़ाबाज़ी) करने वाले, कुफ्र करने वाले को।

اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ۝

३९- (उन लोगों को) इजाज़त दी जाती है जिनके विरूद्ध युद्ध किया जा रहा है, क्योंकि उन पर ज़ुल्म हो रहा है, और अल्लाह उनकी मदद करने पर क़ादिर (सामर्थ्य) है;

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ
عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۝

४०- (यह वे लोग हैं) जो अपने घरों से नाहक़ निकाले गये, केवल इस बात पर कि वे कहते हैं, ''हमारा 'रब' अल्लाह है,'' अगर अल्लाह लोगों को एक - दूसरे से न हटाता रहता, तो खानक़ाहें (मठ), और गिरजा, और यहूदी प्रार्थना भवन, और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का खूब नाम लिया जाता है, सब ढ़ा दिये जाते, और अल्लाह उसकी ज़रूर मदद करेगा, जो 'उसकी' मदद करेगा; बेशक अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त, ताक़त वाला है;

اِلَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّاۤ اَنْ
يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ
بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّ
صَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ
كَثِيْرًا ؕ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝

४१- तो यह वे लोग हैं कि अगर धरती पर 'हम' इन्हें सत्ता दें, तो वे नमाज़ क़ायम करेंगे, और ज़कात देंगे, और भली बात का हुक्म करेंगे और बुराइयों से रोकेंगे; और सब मामलों का अंजाम तो अल्लाह ही के हाथ में है।

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ
وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝

४२- और अगर ये लोग आप को झुठलाते हैं तो, इनसे पहले क़ौमे नूह़, और आ़द, और समूद ने भी झुठलाया था;

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ
نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ۝

४३- और क़ौमे इब्राहीम और क़ौमे लूत भी, (झुठला चुकी है;)

وَقَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ۝

४४- और मद्यन वालों ने भी झुठलाया था, और मूसा भी झुठलाए जा चुके हैं, तो 'मैंने' काफ़िरों को मोहलत दी, फिर 'मैंने' उन्हें पकड़ लिया, तो (देखो) मेरा अ़ज़ाब कैसा रहा;

وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ
لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ
نَكِيْرِ ۝

فَكَأَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَقَصْرٍ مَّشِيدٍ ۝

४५- और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें 'हमने' हलाक कर डाला कि वे ज़ालिम थीं तो वे अपनी छतों के बल गिरी पड़ी हैं, और कितने ही कुएँ बेकार हो गये, और कितने ही पक्के महल।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ فَتَكُونَ لَهُمْ قُلُوبٌ يَعْقِلُونَ بِهَآ أَوْ ءَاذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۖ فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى ٱلْأَبْصَٰرُ وَلَٰكِن تَعْمَى ٱلْقُلُوبُ ٱلَّتِى فِى ٱلصُّدُورِ ۝

४६- तो क्या यह लोग ज़मीन पर चले फिरे नहीं! कि इनके दिल ऐसे हो जाते जिनसे यह समझने लगते, या कान ऐसे हो जाते जिनसे यह सुनने लगते? वास्तव में आँखें अन्धी नहीं हुआ करतीं, बल्कि दिल अन्धे हो जाया करते हैं। जो सीनों में हैं।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِٱلْعَذَابِ وَلَن يُخْلِفَ ٱللَّهُ وَعْدَهُۥ ۚ وَإِنَّ يَوْمًا عِندَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ۝

४७- और आप से (यह लोग) अ़ज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं, और अल्लाह कभी अपने वादा के ख़िलाफ़ न करेगा, और आपके 'रब' के यहाँ का एक दिन, तुम लोगों की गिनती के अनुसार, एक हज़ार वर्ष के बराबर है।

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ أَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْتُهَا وَإِلَىَّ ٱلْمَصِيرُ ۝

४८- और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिनको मोहलत दी और वे ज़ालिम थीं फिर 'मैंने' उन्हें पकड़ लिया, और 'मेरी' ही ओर लौट कर आना है।

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّمَآ أَنَا۠ لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

४९- कह दीजिए, ''ऐ लोगो! मैं तो तुम्हारे लिए एक साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ।''

فَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

५०- तो जो लोग ईमान लाए, और भले काम किये, उनके लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) और इज़्ज़त की रोज़ी है।

وَٱلَّذِينَ سَعَوْا۟ فِىٓ ءَايَٰتِنَا مُعَٰجِزِينَ أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْجَحِيمِ ۝

५१- और जो लोग कोशिश करते रहते हैं, हमारी निशानियों के बारे में नीचा दिखाने के लिए, वही लोग दोज़ख वाले हैं।

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ وَلَا نَبِىٍّ إِلَّآ إِذَا تَمَنَّىٰٓ أَلْقَى ٱلشَّيْطَٰنُ فِىٓ أُمْنِيَّتِهِۦ فَيَنسَخُ ٱللَّهُ مَا يُلْقِى ٱلشَّيْطَٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ ٱللَّهُ ءَايَٰتِهِۦ ۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

५२- और 'हमने' आप से पहले कोई रसूल और कोई नबी ऐसा नहीं भेजा, मगर यह कि जब वह कोई तमन्ना करता था तो शैतान उसकी तमन्ना में (वस्वसा) डाल देता था, मगर अल्लाह शैतान के डाले हुए (वस्वसे) को मिटाता है, फिर अल्लाह अपनी आयतों को मज़बूत करता है, और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है;

لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِى ٱلشَّيْطَٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَٱلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ ۗ وَإِنَّ ٱلظَّٰلِمِينَ لَفِى شِقَاقٍۭ بَعِيدٍ ۝

५३- ताकि यह शैतान के डाले हुए वस्वसे को उन लोगों के लिए आज़माइश बना दे, जिनके दिलों में रोग है, और जिनके दिल कठोर हैं, बेशक यह ज़ालिम विरोध में बहुत दूर जा पड़े;

५४- और ताकि यह लोग जिन लोगों को इल्म दिया गया है, वे जान लें कि यह आप के रब की ओर से हक़ है, तो वह इस पर ईमान लाएँ, और उसके सामने उनके दिल झुक जाएँ, और अल्लाह ईमान वालों को सीधी राह दिखा देता है।

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ قُلُوبُهُمْ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادِ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٤﴾

५५- और जिन लोगों ने इन्कार किया, वे हमेशा उसकी ओर से शक ही में पड़े रहेंगे, यहाँ तक कि क़ियामत अचानक उन पर आ जाए या महरूमी के दिन का अ़ज़ाब आ जाए,

وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِنْهُ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيمٍ ﴿٥٥﴾

५६- उस दिन बादशाही अल्लाह ही की होगी, 'वह' उनके बीच फ़ैसला कर देगा, तो जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे अ़मल किये, वह नेअ़मत के बाग़ों में होंगे।

الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٥٦﴾

५७- और जिन लोगों ने इन्कार किया और 'हमारी' आयतों को झुठलाया, उनको ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब होगा;

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿٥٧﴾

५८- और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में घर-बार छोड़ा, फिर क़त्ल कर दिये गये या मर गये, अल्लाह उनको ज़रूर अच्छी रोज़ी देकर रहेगा; और बेशक अल्लाह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٥٨﴾

५९- 'वह' उन्हें ऐसी जगह दाख़िल करेगा, जिससे वह खुश हो जाएँगे, बेशक अल्लाह जानने वाला, ह़लीम (सहनशील) है।

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿٥٩﴾

६०- यह है (उनका बदला) और जो व्यक्ति बदला ले, वैसा ही जैसा कि उसके साथ किया गया, फिर उस व्यक्ति पर ज़्यादती की जाए, तो अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा; बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला है।

ذَٰلِكَ ۖ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ﴿٦٠﴾

६१- यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को रात में, और अल्लाह सुनता, देखता है;

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٦١﴾

६२- यह इसलिए भी कि अल्लाह ही बरहक़ (सत्य) है और अल्लाह के सिवा जिन को यह पुकारते हैं, वे सब असत्य हैं और इस लिए कि अल्लाह ऊँची शान वाला, बड़ा है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٦٢﴾

६३- क्या तुमने देखा नहीं! कि अल्लाह आसमान से पानी बरसाता है, तो ज़मीन हरी भरी हो जाती है? बेशक अल्लाह बारीक (सूक्ष्म) चीज़ों का जानने वाला, और ख़बर रखने वाला है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ۗ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿٦٣﴾

لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٦٤﴾

६४- 'उसी' का है जो कुछ आसमान में है और जो कुछ ज़मीन में है, और बेशक अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) और सब तअ़रीफ़ों के लायक़ है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۗ وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٦٥﴾

६५- क्या तुमने देखा नहीं! कि अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए काम में लगा रखा है? जो ज़मीन पर है, और नाव को भी, कि वह 'उसके' हुक्म से समुद्र में चलती हैं, और 'उसी' ने आसमान को धरती पर गिरने से रोक रखा है, मगर हाँ 'उसकी' इजाज़त हो तो बात दूसरी है; बेशक अल्लाह इन्सानों के हक़ में बड़ी नर्मी करने वाला मेहरबान है।

وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۗ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ﴿٦٦﴾

६६- और 'वही' तो है जिसने तुमको ज़िन्दगी दी, फिर तुम्हें मौत देगा फिर तुमको ज़िन्दा करेगा; इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है।

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ ۖ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ ۚ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۖ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُسْتَقِيمٍ ﴿٦٧﴾

६७- हर उम्मत (समुदाय) के लिए 'हमने' इबादत का एक तरीक़ा निर्धारित किया है, जिस पर वे चल रही हैं, तो ये लोग इस मामले में आप से न झगड़ें, आप अपने 'रब' की ओर बुलाते रहिए, बेशक आप सीधी राह पर हैं।

وَإِنْ جَادَلُوكَ فَقُلِ اللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾

६८- और अगर यह आप से झगड़ा करें तो कह दीजिए, ''तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे (खूब) जानता है।''

اللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾

६९- अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे बीच इस बात का फ़ैसला कर देगा, जिन बातों में तुम मतभेद करते हो।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّ ذٰلِكَ فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾

७०- क्या तुम्हें मालूम नहीं! कि अल्लाह जानता है, जो कुछ आसमान और ज़मीन में है, यह सब एक किताब में है? बेशक यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ﴿٧١﴾

७१- यह लोग अल्लाह को छोड़ कर उन चीज़ों की पूजा करते हैं, जिनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा, और न उनके बारे में उनको कोई इल्म है; और इन ज़ालिमों का कोई मदद्गार नहीं।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ۖ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۗ قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِنْ ذٰلِكُمُ ۗ النَّارُ وَعَدَهَا

७२- और जब उनको 'हमारी' साफ़-साफ़ आयतें सुनाई जाती हैं तो उनके चेहरों से नागवारी झलक रही होती है, जैसे वे उन लोगों पर हमला कर बैठेंगे जो 'हमारी' आयतें उनको सुनाते हैं, कह दीजिए, ''मैं तुम्हें बताऊँ कि इससे बद्तर चीज़ क्या है? और आग

اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝

जिसको अल्लाह ने काफ़िरों से वादा कर रखा है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।”

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّ لَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَ الْمَطْلُوْبُ ۝

७३- ऐ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, इसे ध्यान से सुनो! अल्लाह के सिवा जिनको तुम पुकारते हो, वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, चाहे वे सब इकट्ठा क्यों न हो जाएँ; और अगर मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले, तो वे उससे छुड़ा भी नहीं सकते, तालिब (मदद चाहने वाला) भी कमज़ोर और मतलूब भी (जिनसे मदद चाही)।

مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝

७४- उन्होंने अल्लाह की जैसी क़दर करनी चाहिए थी नहीं की, बेशक अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त, ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली) है।

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝

७५- अल्लाह फरिश्तों में से और इन्सानों में से पैग़ाम पहुँचाने वाले चुन लेता है, बेशक अल्लाह खूब सुनने वाला, देखने वाला है।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝

७६- 'वह' जानता है जो कुछ उनके आगे है, और जो कुछ उनके पीछे है, और सभी मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

७७- ऐ ईमान वालो! रूकूअ़ करो, सज्दः करो, अपने 'रब' की इबादत करो, और भलाई के काम करो, ताकि तुम कामियाब हो।

وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۖ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

७८- और अल्लाह की राह में, जिहाद करो जैसा कि जिहाद करने का ह़क़ है, 'उसने' तुम्हें चुन लिया, और तुम्हारे लिए दीन में कोई तंगी नहीं रखी, (और) तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन (तुम्हारे लिए पसंद किया) है; 'उसने' तुम्हारा नाम पहले (की किताबों में) भी मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा था, और इसमें भी ताकि रसूल तुम पर गवाह हों, और तुम लोगों पर गवाह हो, तो नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात दो, और अल्लाह को मज़बूती से पकड़े रहो, 'वही' तुम्हारा मौला (संरक्षक) है, तो 'वह' क्या ही अच्छा मौला है, और क्या ही अच्छा मददगार।

अनुवाद-सूरतुल्मुअ्मिनून

यह सूरः मक्के में उतरी, इसमें अ़रबी के ४५३८ अक्षर १०७० शब्द,११८ आयतें और ६ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

पारा नं०-१८

१- (बेशक) कामियाब हो गये ईमान वाले,	* قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۙ
२- जो अपनी नमाज़ में खुशूअ़ (विनम्रता) अपनाते हैं;	الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ ۙ
३- और जो व्यर्थ बातों से मुँह फेर लेते हैं	وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ۙ
४- और जो ज़कात अदा करते हैं;	وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ۙ
५- और जो अपनी शर्मगाहों (गुप्त आंगों) की ह़िफ़ाज़त (रक्षा) करते हैं,	وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ۙ
६- सिवाय अपनी पत्नियों के, या बाँदियों के, जो उनकी सम्पत्ति हैं, तो उनके बारे में कोई मलामत नहीं।	إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۚ
७- तो जो इसके सिवा ढूँढ़े, तो यही लोग ह़द से बाहर निकलने वाले हैं।	فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۚ
८- और जो अपनी अमानतों और अ़हद (प्रतिज्ञा) का ध्यान रखते हैं;	وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ۙ
९- और जो अपनी नमाज़ों की ह़िफ़ाज़त (रक्षा) करते हैं;	وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۘ
१०- यही लोग वारिस होने वाले हैं;	أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ۙ
११- जो फ़िरदौस (जन्नत) के वारिस होंगे, उसमें वे हमेशा रहने वाले हैं।	الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ
१२- और 'हमने' इन्सान को मिट्टी के जौहर (तत्व) से बनाया।	وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ طِينٍ ۚ
१३- फिर 'हमने' उसे नुत्फ़ा (वीर्य) बना कर एक सुरक्षित जगह में रखा;	ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ۚ

ثم خلقنا النطفة علقة فخلقنا العلقة مضغة فخلقنا المضغة عظما فكسونا العظم لحما ثم انشانه خلقا اخر فتبرك الله احسن الخلقين

१४- फिर 'हमने' उस नुत्फ़े (वीर्य) को जमे हुए खून का रूप दिया, फिर जमे हुए खून के टुकड़े को हड्डियों का रूप दिया, फिर हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया, फिर 'हमने' उसे एक नई सूरत में बना दिया, तो अल्लाह बड़ी बरकत वाला और सबसे अच्छा पैदा करने वाला है।

ثم انكم بعد ذلك لميتون

१५- फिर इसके बाद तुम को निश्चित रूप से मरना है;

ثم انكم يوم القيمة تبعثون

१६- फिर निश्चय ही क़ियामत के दिन उठाए जाओगे।

ولقد خلقنا فوقكم سبع طرائق وما كنا عن الخلق غفلين

१७- और 'हमने' तुम्हारे ऊपर सात आसमान पैदा किये, और 'हम' मख़्लूक़ (सृष्टिा) की ओर से ग़ाफ़िल नहीं;

وانزلنا من السماء ماء بقدر فاسكنه في الارض وانا على ذهاب به لقدرون

१८- और 'हमने' ही एक अन्दाज़े के साथ पानी उतारा, फिर उसको ज़मीन में ठहरा दिया, और 'हम' उस पर क़ादिर हैं कि उसको ग़ायब कर दें;

فانشانا لكم به جنت من نخيل واعناب لكم فيها فواكه كثيرة ومنها تاكلون

१९- फिर 'हमने' उसके ज़रिये तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किये; तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फल हैं और उसमें से तुम खाते भी हो;

وشجرة تخرج من طور سيناء تنبت بالدهن وصبغ للاكلين

२०- और वह वृक्ष भी जो 'तूर-ए-सैना' (पर्वत) से निकलता है, जो तेल और खाने वालों के लिए सालन लिए हुए उगता है;

وان لكم في الانعام لعبرة نسقيكم مما في بطونها ولكم فيها منافع كثيرة ومنها تاكلون

२१- और तुम्हारे लिए मवेशियों में भी बड़ा सबक़ है कि उनके पेटों में जो कुछ है उससे 'हम' तुम्हें (दूध) पिलाते हैं, और तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फ़ायदे हैं और कुछ को तुम खाते भी हो,

وعليها وعلى الفلك تحملون

२२- और उन पर, और नावों पर तुम सवार होते हो।

ولقد ارسلنا نوحا الى قومه فقال يقوم اعبدوا الله ما لكم من اله غيره افلا تتقون

२३- और 'हमने' नूह़ को उनकी क़ौम की ओर भेजा, तो उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! 'अल्लाह की इबादत करो,' उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, क्या तुम डरते नहीं?''

فقال الملؤا الذين كفروا من قومه ما هذا الا بشر مثلكم يريد ان يتفضل عليكم ولو شاء الله

२४- तो उनकी क़ौम के सरदार, जिन्होंने इन्कार किया था, कहने लगे कि ''यह तुम ही जैसा एक इन्सान है, तुम पर यह

لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۚۖ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۚ

बड़ापन जमाना चाहता है'', और अगर अल्लाह को मंजूर होता तो फ़रिश्तों को भेजता, हमने तो ऐसी बात अपने अगले बाप-दादों से कभी नहीं सुनी;

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ۝

२५- यह तो बस एक जुनूनी आदमी है, तो कुछ दिन इसके बारे में इन्तिज़ार करो।''

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝

२६- (नूह़ ने दुआ़ की) कहा, ''ऐ मेरे रब! मेरी मदद कर, इस बात पर कि इन्होंने मुझे झुठलाया।''

فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ۝

२७- तब 'हमने' उनकी ओर वह्य की कि ''हमारी आँखों के सामने और हमारी वह्य के अनुसार नाव बनाइए और फिर जब 'हमारा' हुक्म आ जाए, और तूफ़ान उमंड पड़े, तो हर तरह के नर और मादा का जोड़ा उसमें रख लीजिए, और अपने घर वालों को साथ ले लीजिए, और जिन के विरूद्ध पहले ही फ़ैसला हो चुका है, और ज़ालिमों के बारे में मुझ से कुछ न कहिए, वे तो डूब कर ही रहेंगे;

فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

२८- फिर जब आप नाव पर सवार हो जाएँ, और आप के साथी भी तो कहिए 'तअ़रीफ़ है अल्लाह की, जिसने हमें ज़ालिम लोगों से छुटकारा दिया,

وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ۝

२९- और कह दीजिए ''ऐ मेरे 'रब' मुझे बरकत के साथ उतार, और 'तू' सबसे अच्छा उतारने वाला है।''

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ۝

३०- बेशक इसमें कितनी ही निशानियाँ हैं, और आज़माइश तो 'हम' करते ही हैं।

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۚ

३१- फिर 'हमने' इनके बाद दूसरे गिरोह को पैदा किया,

فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۚ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۚ

३२- और उनमें 'हमने', खुद उन्हीं में से एक रसूल भेजा (उसने कहा) कि ''अल्लाह ही की इबादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं?''

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ۚ

३३- और उनकी क़ौम में जो सरदार थे, जिन्होंने इन्कार किया, और आख़िरत के मिलने को झुठलाया, और 'हमने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में ऐश भी दे रखा था, वे बोले, ''यह तो बस तुम्हारे ही तरह के एक आदमी हैं, जिस तरह का खाना तुम खाते हो, उसी तरह का यह भी खाता है और जो तुम पीते हो, उसी तरह़ का यह भी पीता है,

وَلَئِنْ أَطَعْتُم بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَاسِرُونَ ٣٤

३४- और अगर तुम अपने ही जैसे आदमी (बशर) के पीछे चल पड़े, तो तुम घाटे में रहोगे।

أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنَّكُم مُّخْرَجُونَ ٣٥

३५- क्या यह तुम से वादा करता है, ''जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियों का रूप हो जाओगे तो तुम निकाले जाओगे?'

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ٣٦

३६- दूर की बात है, बहुत दूर, की जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है?-

إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ٣٧

३७- ज़िन्दगी तो बस दुनिया ही की ज़िन्दगी है, जिसमें हम मरते और जीते हैं, और हमें हरगिज़ उठाया न जाएगा,

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ٣٨

३८- यह तो एक ऐसा व्यक्ति है जिसने अल्लाह के नाम पर झूठ गढ़ा है, और 'हम' इसकी बात को हरगिज़ मानने वाले नहीं।''

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ٣٩

३९- उन्होंने कहा, ''ऐ मेरे रब! मेरी मदद कर, जो इन्होंने मुझे झुठलाया है।''

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نَادِمِينَ ٤٠

४०- कहा, ''जल्द ही यह लोग शर्मिन्दा हो कर रहेंगे।''

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ غُثَاءً فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ٤١

४१- तो सच ही हुआ कि एक सख़्त आवाज़ ने आ पकड़ा और 'हमने' उन को कूड़ा-करकट बना डाला; और फिटकार हो, ऐसे ज़ालिमों पर।

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ٤٢

४२- फिर 'हमने' उनके बाद दूसरी नस्लों को पैदा किया।

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ٤٣

४३- कोई उम्मत (गिरोह) न तो अपने निर्धारित समय से आगे बढ़ सकती है, और न पीछे हट सकती है।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا كُلَّ مَا جَاءَ أُمَّةً رَّسُولُهَا كَذَّبُوهُ فَأَتْبَعْنَا بَعْضَهُم بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ ٤٤

४४- फिर 'हमने' लगातार अपने रसूल भेजे, जब भी-कभी किसी गिरोह में से कोई रसूल उनके पास पहुँचा तो उसे झुठलाते रहे, तो 'हम' भी एक के पीछे एक को लगाते चले गये; और उनकी कहानियाँ बन कर रह गईं फिटकार हो उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ٤٥

४५- फिर 'हमने' मूसा और उनके भाई हारून को अपनी निशानियों और खुले प्रमाण के साथ भेजा;

إلى فرعون وملإيه فاستكبروا وكانوا قوما عالين ۝

४६- फ़िरऔन और उसके सरदारों की ओर तो उन लोगों ने घमंड किया,और वे सरकश लोग थे।

فقالوا أنؤمن لبشرين مثلنا وقومهما لنا عابدون ۝

४७- तो वे कहने लगे, ''क्या हम अपने ही जैसे दो आदमियों की बात मान लें, और उनकी क़ौम के लोग हमारे ग़ुलाम हैं?''

فكذبوهما فكانوا من المهلكين ۝

४८- तो उन्होंने उन दोनों को झुठला दिया तो तबाह हो जाने वालों में शामिल हो गये।

ولقد آتينا موسى الكتاب لعلهم يهتدون ۝

४९- और 'हमने' मूसा को किताब दी थी, ताकि वे लोग राह पा सकें।

وجعلنا ابن مريم وأمه آية وآويناهما إلى ربوة ذات قرار ومعين ۝

५०- और मरयम के बेटे और उनकी माँ को 'हमने' एक निशानी बनाया, और 'हमने' उन दोनों को एक ऊँची जगह पर जो ठहरने के लायक़ थी, और जहाँ स्रोत जारी था पनाह दी थी।

يا أيها الرسل كلوا من الطيبات واعملوا صالحا إني بما تعملون عليم ۝

५१- ''ऐ रसूलों पाकीज़ा चीज़ें खाओ, और अच्छा काम करो, जो कुछ आप लोग करते हैं उसे 'मैं' जानता हूँ;

وإن هذه أمتكم أمة واحدة وأنا ربكم فاتقون ۝

५२- और यह सब तुम्हारी जमाअतें, एक ही दीन पर हैं, और 'मैं' तुम्हारा 'रब' हूँ, तो 'मुझसे' डरते रहो।''

فتقطعوا أمرهم بينهم زبرا كل حزب بما لديهم فرحون ۝

५३- तो उन्होंने खुद अपने मामले (धर्म) को आपस में टुकड़े-टुकड़े कर डाला, हर गिरोह उसी पर खुश है, जो उसके पास है।

فذرهم في غمرتهم حتى حين ۝

५४- तो उन्हें एक समय तक उनको ग़फलत में डूबे रहने दें।

أيحسبون أنما نمدهم به من مال وبنين ۝

५५- क्या यह लोग समझते हैं कि 'हम' जो उनकी माल, और सन्तान से मदद किये जा रहे हैं;

نسارع لهم في الخيرات بل لا يشعرون ۝

५६- तो यह उनके लिए भलाइयों में जल्दी कर रहे हैं, (नहीं,) बल्कि उन्हें इसका एहसास ही नहीं है।

إن الذين هم من خشية ربهم مشفقون ۝

५७- बेशक जो लोग अपने 'रब' के भय से काँपते रहते हैं,

والذين هم بآيات ربهم يؤمنون ۝

५८- और जो अपने 'रब' की आयतों पर ईमान रखते हैं,

والذين هم بربهم لا يشركون ۝

५९- और जो अपने रब के साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराते,

६०- और जो दे सकते हैं देते हैं और (हाल यह होता है कि) दिल उनके काँप रहे होते हैं, कि उन्हें अपने रब की ओर लौट कर जाना है;

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوا وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ

६१- यही वे लोग हैं, जो भलाइयों में जल्दी करते हैं और यही उनके लिए आगे लपकते हैं।

أُولَٰئِكَ يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ

६२- और 'हम' किसी व्यक्ति की ताक़त से बढ़कर उस पर बोझ नहीं डालते, और 'हमारे' पास किताब (आमाल नामा) है, जो सच-सच बतलाती है, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

६३- बल्कि उनके दिल इसकी ओर से ग़फ़लत में (फंसे हुए) हैं, और उनके सिवा उनके कुछ और भी काम हैं जो यह करते रहते हैं।

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرَةٍ مِّنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِّن دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَامِلُونَ

६४- यहाँ तक कि जब 'हम' इनके ख़ुशहाल लोगों को अ़ज़ाब में पकड़ेंगे, तो यह तिलमिला उठेंगे।

حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِم بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْأَرُونَ

६५- (कहा जाएगा), ''आज तिलमिलाओ नहीं, तुम्हें 'हमारी' ओर से कोई मदद मिलने वाली नहीं;

لَا تَجْأَرُوا الْيَوْمَ إِنَّكُم مِّنَّا لَا تُنصَرُونَ

६६- 'मेरी' आयतें तुमको पढ़-पढ़ कर सुनाई जाती थीं, तो तुम उल्टे पाँव भागते थे।

قَدْ كَانَتْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ تَنكِصُونَ

६७- ख़ुद को बड़ा समझते, और एक कहानी कहने वाला ठहरा कर छोड़ देते।''

مُسْتَكْبِرِينَ بِهِ سَامِرًا تَهْجُرُونَ

६८- तो क्या उन लोगों ने इस कलाम (क़ुर्आन) पर विचार नहीं किया, या यह कि उनके पास कोई ऐसी चीज़ आ गयी, जो उनके पहले बाप-दादा के पास न आई थी?-

أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُم مَّا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ

६९- या इन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं, इसलिए इसका इन्कार कर रहे हैं,

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنكِرُونَ

७०- या यह कहते हैं, ''इसको जुनून हो गया है;'' बल्कि इनका रसूल हक़ बात लेकर इनके पास आया है, और इनमें से बहुतों को सच बात बुरी लगती है।

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ بَلْ جَاءَهُم بِالْحَقِّ وَأَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ

७१- और अगर हक़ (अल्लाह) उनकी ख़ुशी पर चलने लगता, तो आसमान और ज़मीन, और जो कुछ उनके बीच में है टूट-फूट गये होते, बल्कि 'हमने' उनको उनकी नसीहत पहुँचाई, तो वे अपनी नसीहत से मुँह फेरते हैं।

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ۭ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝

७२- क्या आप उनसे कुछ रोज़ी माँगते हैं? रोज़ी तो आप के 'रब' की (दी हुई) सबसे बेहतर है, और 'वही' सब रोज़ी देने वालों से बेहतर है।

اَمْ تَسْـَٔــلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ڰ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝

७३- और आप तो उनको सीधी राह की ओर बुला रहे हैं,

وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

७४- और बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वह राह से बहकने वाले हैं।

وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ۝

७५- और अगर 'हम' उन पर मेहरबानी कर दें और उन्हें जो तकलीफ़ें पहँच रही हैं उसे दूर कर दें, तो भी यह अपनी गुमराही में भटकते हुए जमे रहेंगे।

وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝

७६- और 'हमने' उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ा, तब भी वे अपने 'रब' के आगे न तो झुके और न वे गिड़गिड़ाए;

وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ۝

७७- यहाँ तक कि जब 'हम' उन पर सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल देंगे तो वे निराश हो कर रह जाएँगे।

حَتّٰٓى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۝

७८- और 'वही' है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, (मगर) तुम लोग बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो;

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝

७९- और 'वही' तो है जिसने तुम को ज़मीन पर फैला रखा है, और तुम लोग 'उसी' के पास इकट्ठा किये जाओगे।

وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝

८०- और 'वही' है जो जिलाता है और मारता है, और 'उसी' के बस में है रात और दिन का उलट-फेर, तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते;

وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝

८१- (नहीं,) बल्कि यह लोग ऐसी ही बात कहते हैं जैसे पहले के (काफ़िर) कहते आए हैं।

بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ۝

८२- कहते हैं, ''जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियॉ बन जाएँगे, तो क्या हम फिर उठाए जाएँगे?-

قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝

८३- यह वादा तो हमसे और हमारे बड़ों से पहले से होता आया है, यह तो केवल अगलों की बे सनद बातें हैं।''	لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا هَٰذَا مِن قَبْلُ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝
८४- कह दीजिए, ''ज़मीन और उस पर जो कुछ है, (सब) किसका है? बताओ अगर तुम जानते हो?''	قُل لِّمَنِ الْأَرْضُ وَمَن فِيهَا إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝
८५- वे बोल पड़ेंगे, ''अल्लाह का,'' कह दीजिए, ''फिर तुम सोचते क्यों नहीं?''	سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝
८६- कह दीजिए, ''सातों आसमान का मालिक, और आलीशान अर्श (महान राजासन) का मालिक कौन है?''	قُلْ مَن رَّبُّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝
८७- वे कहेंगे ''सब अल्लाह ही का है'' कह दीजिए, ''फिर डरते क्यों नहीं?''	سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝
८८- कह दीजिए, ''वह कौन है? जिस के हाथ में हर चीज़ का अधिकार है, और वह पनाह देता है, और कोई 'उसके' मुक़ाबले में पनाह नहीं दे सकता, अगर तुम जानते हो?''	قُلْ مَن بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝
८९- वह ज़रूर यही कहेंगे कि यह सब अल्लाह ही का है,'' कह दीजिए, ''फिर तुम पर कहाँ से जादू चल जाता है?''	سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ۝
९०- (नहीं,) बल्कि हम उनके पास हक़ (सत्य) लेकर आए हैं, और बेशक यह झूठे हैं।	بَلْ أَتَيْنَاهُم بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝
९१- अल्लाह ने अपना कोई बेटा नहीं बनाया, और न 'उसके' साथ कोई और मअ़बूद (उपास्य) है; ऐसा होता तो हर मअ़बूद अपनी मख़्लूक़ (सृष्टि) को लेकर अलग हो जाते, और उनमें से एक-दूसरे पर चढ़ाई कर देते, ये जो कुछ बयान करते हैं, अल्लाह उससे पाक है;	مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِن وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَٰهٍ ۚ إِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ إِلَٰهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝
९२- 'वह' जानने वाला है, छिपे और खुले का, और उस शिर्क से बहुत ऊँचा है जो यह करते हैं!	عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝
९३- (ऐ मुहम्मद) कह दीजिए, ''ऐ मेरे 'रब'! अगर आप मुझे दिखा दें, जिसका वादा इनसे किया जा रहा है;	قُل رَّبِّ إِمَّا تُرِيَنِّي مَا يُوعَدُونَ ۝
९४- ऐ मेरे रब! मुझे इन ज़ालिम लोगों में शामिल न कीजिए।''	رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

९५- और 'हम' जो वादा इनसे कर रहे हैं, 'हम' आप को भी दिखा कर उन पर नाज़िल करने की कुदरत (सामर्थ्य) रखते हैं,

وَإِنَّا عَلَىٰٓ أَن نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَٰدِرُونَ

९६- बुरी बात के जवाब में ऐसी बात कहिए जो बहुत अच्छी हो, 'हम' खूब जानते हैं, जो यह कहा करते हैं।

ٱدْفَعْ بِٱلَّتِى هِىَ أَحْسَنُ ٱلسَّيِّئَةَ ۚ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ

९७- और कह दीजिए, ''ऐ मेरे रब! मैं तुझसे पनाह माँगता हूँ शैतान के वस्वसों से।''

وَقُل رَّبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَٰتِ ٱلشَّيَٰطِينِ

९८- और ऐ मेरे रब! ''मैं तुझसे पनाह माँगता हूँ, इससे कि वह (शैतान) मेरे पास आए।''

وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَن يَحْضُرُونِ

९९- यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मौत आ जाएगी तो कहेगा, ''ऐ मेरे रब! मुझ को (दुनिया में) वापस भेज दीजिए;

حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَ أَحَدَهُمُ ٱلْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ٱرْجِعُونِ

१००- ताकि जिस (दुनिया) को छोड़ आया हूँ उसमें (फिर जाकर) भले काम करूँ।'' हरगिज़ नहीं! यह तो बस एक बात है, जो वह कह रहा है, और उनके पीछे एक बर्ज़ख (मरने के बाद क़ियामत तक रहने की जगह) है, उस दिन तक के लिए जब वे उठाए जाएंगे।

لَعَلِّىٓ أَعْمَلُ صَٰلِحًا فِيمَا تَرَكْتُ ۚ كَلَّآ ۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ۖ وَمِن وَرَآئِهِم بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ

१०१- फिर जब सूर (नर सिंघा) में फूँक मारी जाएगी, तो उस दिन उनके बीच न रिश्तेदारियाँ होंगी, न एक-दूसरे को पूछेंगे;

فَإِذَا نُفِخَ فِى ٱلصُّورِ فَلَآ أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَآءَلُونَ

१०२- तो जिनके पलड़े भारी होंगे वही कामियाब होंगे;

فَمَن ثَقُلَتْ مَوَٰزِينُهُۥ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ

१०३- और जिनके पलड़े हल्के होंगे, वे वही होंगे, जिन्होंने अपने को घाटे में डाला, हमेशा जहन्नम में रहेंगे।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَٰزِينُهُۥ فَأُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ فِى جَهَنَّمَ خَٰلِدُونَ

१०४- आग उनके चेहरों को झुलसा देगी, और उसमें उनके चेहरे बिगड़ गये होंगे।

تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ ٱلنَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَٰلِحُونَ

१०५-''क्या 'मेरी' आयतें तुमको पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं, तो तुम उनको झुठलाते थे?''

أَلَمْ تَكُنْ ءَايَٰتِى تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ

१०६- कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! कमबख़्ती (दुर्भाग्य) हम पर छा गयी थी, और हम गुमराह हो गये थे,''

قَالُوا۟ رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّينَ

१०७- ऐ हमारे रब! हमें यहाँ से निकाल दे! फिर अगर हम (दोबारा) ऐसा करें तो हम ही ज़ालिम होंगे।''

رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَٰلِمُونَ

قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ

१०८- फ़रमाएगा ''पड़े रहो! इसी में ज़िल्लत के साथ और 'मुझसे' बात न करना।''

اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ

१०९- मेरे बन्दों में से एक गिरोह ऐसा था, जो कहता था ''ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए हैं, 'हमें' माफ़ कर, और 'हम' पर रह़म कर, और 'तू' सब रह़म करने वालों से अच्छा रह़म करने वाला है;

فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ

११०- तो तुम उनका मज़ाक़ उड़ाते रहे,यहाँ तक कि उनके पीछे मेरी याद भी भूल गये और तुम उनकी हँसी उड़ाया करते थे।

اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا ۙ اَنَّهُمْ هُمُ الْفَاۤىِٕزُوْنَ

१११- आज उनके सब्र का बदला मैंने यह दिया है, कि वे कामियाब हो गये।''

قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِى الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ

११२- (अल्लाह) पूछेगा, 'तुम' धरती में कितने वर्ष रहे।''

قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ الْعَاۤدِّيْنَ

११३- वे कहेंगे, ''एक दिन या एक दिन से भी कम, गिनती करने वालों से पूछ लीजिए।''

قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ

११४- (अल्लाह) फ़रमाएगा, ''तुम उसमें बहुत थोड़े ही रहे, काश! तुमने यह बात जान ली होती;

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ

११५- क्या तुमने यह समझा था कि 'हम ने' तुमको बेकार पैदा किया है, और यह कि तुमको हमारी ओर लौट कर नहीं आना है?''

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ

११६- तो अल्लाह 'वह' सच्चा मालिक, बहुत ऊँचा है, 'उसके' सिवा कोई बअ़बूद (उपास्य) नहीं, वही इज़्ज़त वाले अर्श का मालिक है।

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۗ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ

११७- और जो आदमी अल्लाह के साथ किसी दूसरे मअ़बूद (उपास्य) को पुकारे, जिसके पास उसका कोई प्रमाण नहीं, तो बस उसका हिसाब उसके 'रब' के पास है, बेशक इन्कार करने वाले कभी कामियाब नहीं होंगे।

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ

११८- और कहो, ''ऐ हमारे रब! हमें माफ़ कर दे, और रह़म कर, 'तू' तो सबसे अच्छा रह़म करने वाला है।''



अनुवाद-सूरतुन्नूरि

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के ६४१ अक्षर, १४२ शब्द, ६४ आयतें और ९ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

سُورَةٌ أَنزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝

१- यह एक सूरः है, जिसे 'हमने' उतारा है, और इसे 'हमने' फर्ज़ ठहराया है, और 'हमने' इसमें साफ़-साफ़ हुक्म उतारा है, शायद कि तुम नसीह़त ह़ासिल करो।

الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَلَا تَأْخُذْكُم بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

२- बद्कारी करने वाली औ़रत और बद्कारी करने वाला मर्द, दोनों में से हर एक को सौ-सौ कोड़े मारो; और अगर अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो तो अल्लाह के हुक्म को पूरा करने में इन दोनों पर ज़रा भी तरस न आए, और उन्हें सज़ा देते समय ईमान वालों की एक जमाअ़त मौजूद हो।

الزَّانِي لَا يَنكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لَا يَنكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذَٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝

३- ज़ानिया (बद्कार) मर्द निकाह़ किसी के साथ नहीं करता सिवाय ज़ानिया (बद्कार) औ़रत या मुश्रिक औ़रत के, और ज़ानिया (बद्कार) औ़रत के साथ कोई निकाह़ नहीं करता सिवाय ज़ानिया या मुश्रिक के, और यह ईमान वालों के लिए ह़राम कर दिया गया है।

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝

४- और जो लोग पाकदामन औ़रतों पर (बद्कारी का) आरोप लगाएँ! और चार गवाह न ला सकें, तो उनको अस्सी कोड़े मारो; और कभी उनकी गवाही क़ुबूल न करो और यही लोग फ़ासिक़ (कप्टाचारी) हैं;

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

५- सिवाय उनके जो इसके बाद तौबः कर लें और सुधार कर लें, तो अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ

६- और जो लोग अपनी पत्नियों पर (बद्कारी का) इल्ज़ाम लगाएँ और उनके पास खुद उनके अपने सिवा कोई गवाह

إِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِينَ ۝

मौजूद न हो, तो उनमें से एक (पति या पत्नी) चार बार अल्लाह की क़सम खाकर गवाही दे कि बेशक वह सच्चा है;

وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ إِن كَانَ مِنَ الْكٰذِبِينَ ۝

७- और पाँचवीं बार यह गवाही दे कि अगर वह झूठा हो तो उस पर अल्लाह की लानत (फिटकार) हो।

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ أَن تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهٰدٰتٍ بِاللّٰهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكٰذِبِينَ ۝

८- और पत्नी से इस तरह सज़ा टल सकती है, कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खा कर बयान करे कि बेशक यह झूठा है;

وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَا إِن كَانَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝

९- और पाँचवीं बार यह कहे कि मुझ (औरत) पर अल्लाह का ग़ज़ब हो, अगर वह सच्चा हो।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ۝

१०- और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल व रह्म न होता, और (यह बात न होती कि) अल्लाह बड़ा तौबः क़ुबूल करने वाला, हिक्मत वाला है (तो तुम मुसीबत में फंस जाते)।

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُو بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُم مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ وَالَّذِي تَوَلّٰى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

११- जो लोग तोहमत गढ़ लाए हैं तुम्हारे ही भीतर की एक टोली है, तुम उसे अपने लिए बुरा मत समझो, बल्कि वह भी तुम्हारे लिए अच्छा ही है, उनमें से हर व्यक्ति के लिए उतना ही हिस्सा है जितना गुनाह उसने कमाया, और उनमें से जिसने उसकी ज़िम्मेदारी का एक बड़ा बोझ लिया, उसके लिए बड़ा अ़ज़ाब है।

لَّوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هٰذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ۝

१२- ऐसा क्यों न हुआ! कि जब तुम ने वह बात सुनी थी, तब मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतों ने क्यों अपने दिलों में नेक गुमान न किया और (क्यों न) कहा कि "यह तो खुली तोह्मत (आरोप) है?"

لَّوْلَا جَاءُو عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولٰئِكَ عِندَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُونَ ۝

१३- यह (लोग) अपने कहने के अनुसार चार गवाह क्यों न लाए? तो जब यह गवाह नहीं लाए, तो बस यह अल्लाह के नज़दीक झूठे ही हैं;

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

१४- और अगर तुम लोगों पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह की मेहरबानी और उसका रह्म न होता, तो जिन कामों में तुम (लोग) पड़ गये थे उसकी वजह से तुम पर बड़ा अ़ज़ाब आ जाता।

إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُم مَّا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا وَهُوَ عِندَ اللَّهِ عَظِيمٌ ۝

१५- जब तुम अपनी ज़बानों से इसका एक-दूसरे से ज़िक्र कर रहे थे और अपने मुँह से वह बात कह रहे थे, जिसके बारे में तुम्हें कुछ भी इल्म न था, और तुम उसे एक हल्की बात समझ रहे थे; हालाँकि अल्लाह के नज़दीक वह बड़ी (भारी) बात थी।

وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُم مَّا يَكُونُ لَنَا أَن نَّتَكَلَّمَ بِهَٰذَا سُبْحَانَكَ هَٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ۝

१६- और जब तुमने यह बात सुनी थी तो तुमने क्यों न कह दिया ''हमें ऐसी बात ज़बान पर लाना अच्छा नहीं लगता, तू पाक है यह एक बड़ी तोहमत है।''

يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَن تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝

१७- अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है, कि फिर कभी ऐसा न करना! अगर तुम मोमिन हो।

وَيُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

१८- और अल्लाह तो आयतों को तुम्हारे लिए खोल-खोल कर बयान करता है, और अल्लाह तो जानने वाला, हिकमत वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَن تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝

१९- जो लोग चाहते हैं कि ईमान वालों में बेहयाई फैले, उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝

२०- और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल (अनुग्रह) और उसका रहम तुम पर न होता, और अल्लाह तो है ही बड़ा मेहरबान, रहम करने वाला।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ وَمَن يَتَّبِعْ خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَىٰ مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

२१- ऐ ईमान वालो! शैतान के नक़्शे क़दम (पद चिन्हों) पर न चलो, और जो कोई शैतान के नक़्शे-क़दम पर चलेगा तो वह उसे बेहयाई और बुराई का हुक्म देगा, और अगर अल्लाह की मेहरबानी और उसकी दया न होती तो तुममें से कोई व्यक्ति भी पाक न हो सकता, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पाक करता है, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है।

وَلَا يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنكُمْ وَالسَّعَةِ أَن يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

२२- और तुममें जो लोग बड़ाई वाले और क़ुदरत (सामर्थ्य) वाले हैं, वे इस बात की क़सम न खा बैठें कि रिश्तेदारों और मोहताजों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों की मदद नहीं करेंगे, उन्हें चाहिए कि माफ़ करें और दरगुज़र से काम लें, क्या तुम पसंद नहीं करते कि अल्लाह तुम्हें माफ़ कर दे? और अल्लाह तो बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

२३- जो लोग शरीफ़ पाकदामन (बुरे कामों से) बेख़बर ईमान वाली औ़रतों पर तोहमत लगाते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की गयी है और उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब है;

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

२४- जिस दिन उनकी ज़बानें और हाथ और पैर उनके (ख़िलाफ़) गवाही देंगे, जो कुछ वे करते थे;

يَوْمَئِذٍ يُوَفِّيهِمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ۝

२५- उस दिन अल्लाह उन्हें पूरा-पूरा बदला देगा जिसके वे हक़दार हैं, और जान लेंगे कि बेशक अल्लाह ही (हक़ है और) हक़ को स्पष्ट करने वाला है।

الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ ۖ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۖ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

२६- ख़बीस औ़रतें ख़बीस मर्दों के लिए हैं, और ख़बीस मर्द ख़बीस औ़रतों के लिए, और पाकीज़ा औ़रतें पाकीज़ा मर्दों के लिए, और पाकीज़ा मर्द पाकीज़ा औ़रतों के लिए, यह लोग इन बातों से बरी हैं, उनके लिए माफ़ी, और इ़ज़्ज़त की रोज़ी है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّىٰ تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝

२७- ऐ ईमान वालो! अपने घरों के सिवा दूसरे के घरों में दाख़िल न हुआ करो, जब तक कि इजाज़त हासिल कर के घर वालों को सलाम न कर लिया करो, यही तुम्हारे लिए बेहतर है, ताकि तुम याद रखो;

فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ ۖ وَإِنْ قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا ۖ هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝

२८- तो अगर तुम वहाँ किसी को न पाओ, तो अन्दर न जाओ, जब तक कि तुमको इजाज़त न मिल जाए, और अगर तुमसे वापस होने के लिए कहा जाए, तो वापस हो जाओ, यह तुम्हारे लिए पाकीज़ा तरीक़ा है और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह खूब जानता है।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ۝

२९- तुम्हारे लिए कोई हर्ज नहीं कि तुम ऐसे घरों में दाख़िल हो, जिनमें कोई न रहता हो, उसमें तुम्हारा सामान हो और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो।

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۝

३०- कह दीजिए, ''ईमान वाले मर्दों से कि अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों (गुप्त अंगों) की हिफ़ाज़त करें, यह उनके लिए पाकीज़ा तरीक़ा है, अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर रहती है, जो कुछ वे करते हैं।''

३१- और कह दीजिए, ''ईमान वाली औ़रतों से कि वे भी अपनी निगाहें नीची रखें, और अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करें,' और अपनी ज़ीनत न दिखावें, सिवाय उसके कि जो खुले रहते हैं (हाथ पैर आदि), और अपने सीनों पर अपनी ओढ़नी ओढ़े रहें; और अपना साज़ व सिंघार न दिखावें सिवाय अपने पति के, या अपने बाप के, या अपने पति के बापों (ससुर) के, या अपने बेटे के, या अपने पति के बेटों या अपने भाइयों के या अपने भतीजों के, या अपने भाँजों के, या अपनी (जैसी) औरतों के, या लौंडी-गुलाम के सिवा उन ख़ादिमों के जो औ़रतों की इच्छा न रखें या उन बच्चों के जो औ़रतों के पर्दों की चीज़ों को नहीं जानते; और अपने पैर ऐसे ज़ोर से न रखें कि उनके अन्दुरूनी ज़ेवर मालूम हो जाएँ और ऐ ईमान वालो! सब अल्लाह के सामने तौबः करो, ताकि तुम्हें कामियाबी ह़ासिल हो।

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۖ وَ لَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ۚ وَ تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

३२- और अपनी क़ौम की बेवा औ़रतों का निकाह़ कर दिया करो, तुम्हारे ग़ुलामों और तुम्हारी लौंडियों में जो नेक हों, अगर वह तंग हों तो अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से खुशह़ाल कर देगा, और अल्लाह बड़ी गुन्जाइश वाला, जानने वाला है।

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَ اِمَآئِكُمْ ۚ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝

३३- और जो लोग विवाह का सामर्थ्य न रखते हों वे अपने को पाकदामन रखें, यहाँ तक कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से उन्हें मालदार कर दे, और जिन लोगों पर तुम्हें मिल्कियत ह़ासिल है उनमें से जो (आज़ादी का) लिखित समझौता करना चाहते हों उनके साथ लिखित समझौता कर लो, अगर तुम जानते हो कि उनके अन्दर भलाई है, और उनको भी अल्लाह के उस माल में से दो, जो 'उसने' तुम्हें दिया है, और अपनी लौंडियों को कुकर्म पर मजबूर न करो, जबकि वे खुद पाकदामन रहना चाहती हों, केवल इसलिए कि तुम दुनियावी ज़िन्दगी ह़ासिल करना चाहते हो और जो उनको मजबूर करेगा, तो उनके मजबूर किये जाने के बाद अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ وَ الَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖ وَّ اٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا مِنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ ۝

३४- और 'हमने' तुम्हारी ओर खुली हुई आयतें उतार दी हैं, और उन लोगों की मिसालें भी पेश कर दी हैं, जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, और परहेज़गारों के लिए नसीहत है।

اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ مَثَلُ نُورِهِ كَمِشْكَاةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۖ الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ ۖ الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۚ نُورٌ عَلَىٰ نُورٍ ۗ يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

३५- अल्लह आसमानों और ज़मीन का नूर (प्रकाश) है, उसके नूर की मिसाल ऐसी है, जैसे एक ताक़ है, जिसमें एक चिराग़ हो- चिराग़ एक शीशा के अन्दर हो, शीशा ऐसा हो, जैसे चमकता हुआ तारा, उस चिराग़ को ज़ैतून के एक बरकत वाले पेड़ के तेल से जलाया जाता हो, जो न पूर्वी हो न पश्चिमी, उसका तेल आप ही आप भड़क रहा हो, चाहे उसे आप न भी छुएँ रोशनी पर रोशनी- (देता हो) अल्लाह जिसे चाहता है अपने नूर के हासिल होने की राह दिखा देता है, अल्लाह लोगों के लिए मिसालें देता है, और अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखने वाला है;

فِي بُيُوتٍ أَذِنَ اللَّهُ أَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۝

३६- ऐसे घरों में जिनको अल्लाह ने ऊँचा करने और जिनमें उसका नाम याद करने का हुक्म दिया है, उनमें उसकी तस्बीह़ करते रहें सुबह़ और शाम;

رِجَالٌ لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ ۙ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ۝

३७- ऐसे लोग जिन्हें व्यापार और खरीद व फ़रोख़्त अल्लाह की याद से, नमाज़ क़ायम करने से, और ज़कात देने से, ग़ाफ़िल नहीं करती; वे उस दिन से डरते हैं, जब दिल और आखें उलट जाएँगी;

لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

३८- ताकि अल्लाह उनको, उनके अच्छे अ़मल का बदला दे, और अपने फ़ज़्ल से उन्हें और ज्यादा दे, और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمْآنُ مَاءً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ فَوَفَّاهُ حِسَابَهُ ۗ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

३९- और जिन्होंने इन्कार किया, उनके काम ऐसे हैं, जैसे मैदान में चमकता हुआ रेत, कि प्यासा उसको पानी समझे, यहाँ तक कि जब उसके पास आए तो उसमें कुछ भी न पाए और अल्लाह को अपने पास मौजूद पाए, तो वह उसका हिसाब पूरा-पूरा चुका दे, और अल्लाह बहुत जल्द हिसाब करने वाला है;

أَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ إِذَآ أَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ۝

४०- या (उनके आमाल ऐसे हैं) फिर जैसे एक गहरे समुद्र में अन्धेरे हों, जिस पर लहर चढ़ी आ रही हो और लहर के ऊपर लहर छा रही हो उसके ऊपर बादल हो, अन्धेरे हों एक के ऊपर एक, जब वह अपना हाथ निकाले तो वह कुछ सुझाई न देता हो, जिसे अल्लाह ही रोशनी न दे तो उसके लिए कहीं रोशनी नहीं।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝

४१- क्या तुमने नहीं देखा! कि जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं, अल्लाह की तस्बीह़ करते रहते हैं, और पंख फैलाए हुए पक्षी भी? हर एक अपनी नमाज़ और तस्बीह़ जानते हैं, और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह को खूब मालूम है।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝

४२- अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन का राज्य और अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۝

४३- क्या तुमने देखा नहीं! कि अल्लाह बादल को चलाता है, फिर उन (टुकड़ों) को आपस में मिलाता है, फिर उसे तह पर तह कर देता है; फिर तुम देखते हो कि उसके बीच से मेंह बरसाता है? और आसमान से- जो (बादल के) पहाड़-हैं ओले बरसाता है फिर जिस पर चाहता है गिराता है, और जिस पर से चाहता है हटा देता है; ऐसा मालूम होता है कि बिजली की चमक निगाहों को उचक ले जाएगी।

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝

४४-अल्लाह ही रात और दिन को उलट फेर करता है, इबरत (सबक़) है उन लोगों के लिए, जो देखने वाली आँख रखते हों।

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى أَرْبَعٍ ؕ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

४५- और अल्लाह ही ने हर जानदार को पानी से पैदा किया, उनमें से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं, और कुछ अपने दो पैर पर, और कुछ चार पैर पर, अल्लाह जो चाहता है, पैदा करता है बेशक अल्लाह ही हर चीज़ पर क़ादिर है।

لَقَدْ أَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

४६- 'हमने' ही स्पष्ट कर देने वाली आयतें नाज़िल की हैं, और अल्लाह जिसको चाहता है सीधी राह की ओर लगा देता है।

وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝

४७- यह (मुनाफ़िक़) कहते हैं, ''हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और 'हमने' उसका हुक्म मान लिया'' फिर इसके बाद एक गिरोह मुँह मोड़ जाता है तो ऐसे लोग ईमान वाले ही नहीं।

وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم مُّعْرِضُونَ ۝

४८- और जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाया जाता है, ताकि वह उनके बीच फ़ैसला करें, तो उनमें से एक गिरोह कतरा जाता है;

وَإِن يَكُن لَّهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ۝

४६- और अगर हक़ उनके पक्ष में हो तो रसूल के पास बड़े फ़रमाँबरदार हो कर चले आते हैं।

أَفِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَمِ ارْتَابُوا أَمْ يَخَافُونَ أَن يَحِيفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ ۚ بَلْ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

५०- क्या उनके दिलों में रोग है? या धोखे में हैं, या उनको डर है कि अल्लाह और उसका रसूल उनके साथ अन्याय करेंगे, (नहीं), बल्कि यह लोग खुद ही ज़ालिम हैं

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَن يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

५१- मोमिनों की बात तो यह होती है कि जब अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाए जाएं, ताकि वह उनके बीच फ़ैसला करें, तो कहते हैं, ''हमने सुना और माना,'' तो यही लोग कामियाब होने वाले हैं।

وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَ اللَّهَ وَيَتَّقْهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝

५२- और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करे, और अल्लाह से डरे, और तक़्वा (उसकी सीमाओं का ख़याल) रखे, तो ऐसे ही लोग कामियाब होने वाले हैं।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۖ قُل لَّا تُقْسِمُوا ۖ طَاعَةٌ مَّعْرُوفَةٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

५३- और अल्लाह की पक्की क़समें खा कर कहते हैं, कि अगर आप उन्हें हुक्म दें तो वे ज़रूर निकल खड़े होंगे, कह दीजिए, ''क़समें न खाओ, सामान्य तरीक़े से फ़रमाँबरदारी करो, बेशक अल्लाह को ख़बर है जो कुछ तुम करते हो।''

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُم مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝

५४- कह दीजिए, ''अल्लाह का हुक्म मानो और उसके रसूल का कहना मानो, फिर अगर तुम मुँह मोड़ते हो तो बस (रसूल पर) वही ज़िम्मेदारी है जिसका बोझ उस पर डाला गया है, और तुम उसके ज़िम्मेदार हो जिसका बोझ तुम पर डाला गया है, और अगर तुम फ़रमाँबरदारी करोगे तो राह पा लोगे; और रसूल पर तो बस साफ़-साफ़ (सन्देश) पहुँचा देना है।''

५५- और अल्लाह ने उन लोगों से जो तुम में से ईमान लाए, और उन्होंने नेक अ़मल किये, उनसे अल्लाह का वादा है कि उनको ज़मीन में ख़लीफ़ा (सत्ताधिकारी) बनाएगा जैसे उनके पहले के लोगों को ख़लीफ़ा बनाया था; और उनका दीन जो उसने उनके लिए पसंद किया है; उसको उनके लिए मज़बूत कर देगा; और उनके डर के बदले में उनको अम्न देगा, कि वे 'मेरी' इबादत किया करें, और किसी को 'मेरा' साझीदार न ठहराएँ; और जो कोई इसके बाद इन्कार करे, तो ऐसे ही लोग फ़ासिक़ (उल्लंघनकारी) हैं।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ
وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ۭ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا
يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ۭ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰۗىِٕكَ
هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝

५६- और नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात देते रहो और रसूल की फ़रमाँबरदारी करो, ताकि तुम पर रह़म किया जाए।

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝

५७- काफ़िरों के बारे में यह न समझो कि वे 'हमारी' धरती में क़ाबू से बाहर निकल जाने वाले हैं, उनका ठिकाना आग है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ
وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝

५८- ऐ ईमान वालो! जो तुम्हारी मिल्कियत में (ग़ुलाम आदि) हों, और तुम लोगों के वे बच्चे जो अभी जवानी को नहीं पहुँचे,उनको चाहिए कि तीन वक़्तों में तुमसे इजाज़त लेकर तुम्हारे पास आएँ फज्र (भोर) की नमाज़ से पहले, और दोपहर को जबकि तुम कपड़े उतार कर रखते हो, और इशा की नमाज़ के बाद, यह तीन समय तुम्हारे लिए पर्दे के हैं, इनके अ़लावा दूसरे वक़्तों में तुम पर न कोई पकड़ है और न उन पर, कि (किसी काम के लिए) एक दूसरे के पास आते रहते हो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें स्पष्ट करता है, और अल्लाह खूब जानने वाला, ह़िकमत वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ
وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ۭ مِنْ قَبْلِ
صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَ
مِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَاۗءِ ڜ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ۭ لَيْسَ
عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ۭ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ
بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ
الْاٰيٰتِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

५९- और जब तुम्हारे बच्चे जवानी को पहुँच जाएँ, तो वह भी उसी तरह इजाज़त लिया करें, जिस तरह उनसे पहले वाले इजाज़त लेते रहे हैं, इस तरह अल्लाह अपना हुक्म तुम्हारे लिए स्पष्ट करता है, और अल्लाह इल्म वाला, ह़िकमत वाला है।

وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا
كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

६०- और वह बूढ़ी औ़रतें जो निकाह की उम्मीद नहीं रखतीं, अगर अपने कपड़े (चादर) उतार कर रख दें, तो उन पर कोई पकड़ नहीं, जबकि वे अपनी ज़ीनत की नुमाइश करने वाली न

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاۗءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا
فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ
مُتَبَرِّجٰتٍۢ بِزِيْنَةٍ ۭ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۭ

وَاللّٰهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

हों, मगर उनके ह़क़ में यही है कि वे इससे बचें, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है।

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمٰى حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ
وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلٰى أَنْفُسِكُمْ أَنْ
تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ
أُمَّهٰتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوٰتِكُمْ
أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمّٰتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ
أَخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خٰلٰتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَفَاتِحَهُ
أَوْ صَدِيقِكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا
جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا ۚ فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا
عَلٰى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً
طَيِّبَةً ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْآيٰتِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ۝

६१- न अन्धे पर कोई हरज है, और न लंगड़े पर कोई हरज है और न रोगी पर कोई हरज है, और न तुम्हारे लिए इस बात में कि तुम अपने घरों में खाओ, या अपने बापों के घरों में, या अपनी माँओं के घरों में, या अपने भाइयों के घरों में, या अपनी बहनों के घरों में, या अपने चचाओं के घरों में, या अपनी फूफियों के घरों से, या अपने मामाओं के घरों में, या अपनी ख़ालाओं के घरों में, या उन घरों में, जिनकी कुन्जिया तुम्हारे हाथ में हों, या अपने दोस्त के घरों में, तुम पर कोई हरज नहीं कि तुम सब मिल कर खाओ या अलग-अलग; फिर जब घरों में जाया करो तो अपने लोगों को सलाम किया करो, यह अल्लाह की ओर से मुबारक और पाकीज़ा (दुआ का) कलिमा है, इस तरह अल्लाह अपनी आयतें तुम पर खोलता है, ताकि तुम अक़्ल से काम लो।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهِ
وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلٰى أَمْرٍ جَامِعٍ لَمْ يَذْهَبُوا
حَتّٰى يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولٰئِكَ
الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَرَسُولِهِ ۚ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ
لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَنْ لِمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَ
اسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ۚ إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

६२- ईमान वाले तो वही हैं, जो अल्लाह और उसके रसूल पर पूरा ईमान रखते हैं, और जब किसी सामूहिक मामले में रसूल के साथ होते हैं तो उस समय तक चले नहीं जाते हैं जब तक कि उससे इजाज़त न ले लें, जो लोग आप से इजाज़त माँगते हैं, वही अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखने वाले हैं अतः जब वे किसी अपनी ज़रूरत से इजाज़त माँगे तो जिसे आप चाहें इजाज़त दे दिया करें, और उनके लिए अल्लाह से माफ़ी माँगा करें, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला रह़म वाला है।

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ
بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنْكُمْ
لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ
تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

६३- (मोमिनों!) रसूल के बुलाने को तुम आपस में एक-दूसरे का बुलाना न समझो, बेशक अल्लाह उन लोगों को खूब जानता है जो तुममें से ऐसे हैं, कि आड़ लेकर चुपके से खिसक जाते हैं, तो जो लोग उनके हुक्म को मानने से मुँह फेरते हैं,

उन्हें इस बात से डरना चाहिए कि वे किसी फ़ित्ने का शिकार न हो जाएँ या दर्दनाक अ़ज़ाब उनको पकड़ न ले।

أَلَآ إِنَّ لِلَّهِ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَآ أَنتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا۟ ۗ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌۢ

६४- सुन लो! आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है, वह अल्लाह ही का है, तुम जिस ह़ाल में भी हो ‘वह’ उसे जानता है और जिस दिन लोग ‘उसकी’ ओर लौटाए जाएँगे, कि वह क्या कर के आए हैं, ‘वह’ उन्हें बता देगा, और अल्लाह तो हर चीज़ को जानता है।



अनुवाद-सूरतुल्फ़ुरक़ानि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ३६१६ अक्षर, ८०६ शब्द, ७७ आयतें और ६ रूकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ۙ

१- 'वह' बड़ा ही बरकत वाला है जिसने फुरक़ान (सत्य और असत्य में अन्तर करने वाली) अपने बन्दे पर उतारा, ताकि वह सारे संसार के लिए चेतावनी (देने वाला) हो।

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ۝

२- 'वह' जिसके क़ब्ज़े में आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, और न तो 'उसने' अपने लिए औलाद बनाई, और न 'उसकी' बादशाही में कोई उसका साझीदार है; और 'उसने' हर चीज़ को पैदा किया, फिर उसको ठीक अन्दाज़े पर रखा।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ۝

३- और उन्होंने 'उससे' हट कर ऐसे मअ़बूद (उपास्य) बना लिए जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते, बल्कि वे खुद पैदा किये जाते हैं। उन्हें न तो अपने नुक़सान का अधिकार है, और न फ़ायदे का, और न उन्हें मौत का अधिकार है और न ज़िन्दगी का और न (मरने के बाद) उठ खड़े होने का।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَاۗءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۝ۚ

४- और जिन लोगों ने इन्कार किया, कहते हैं, ''यह तो बस मन गढ़त बातें हैं, जो इसने खुद ही गढ़ लिया है, और कुछ दूसरे लोगों ने (इस काम में) इसकी मदद की है,'' तो ये लोग ज़ुल्म और झूठ ही पर (उतर आए) हैं।

وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝

५- और कहते हैं, ''यह पहले लोगों के क़िस्से हैं, जो इस व्यक्ति ने लिखवाए हैं, तो वह उसको सुबह़ और शाम पढ़ कर सुनाई जाती हैं।''

قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

६- कह दीजिए, ''इसे उतारा है 'उसने' जो आसमानों और ज़मीन के भेद को जानता है, बेशक 'वह' बहुत माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।''

وَقَالُوا مَالِ هَٰذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ ۙ لَوْلَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونَ مَعَهُ نَذِيرًا

७- और कहते हैं, ''यह कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है, इसकी ओर कोई फ़रिश्ता क्यों न भेजा गया कि इसके साथ रह कर चेतावनी देता;

أَوْ يُلْقَىٰ إِلَيْهِ كَنزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا

८- या इसकी ओर कोई ख़ज़ाना उतार दिया जाता, या इसके पास कोई बाग़ होता, कि उसमें से यह खाता।'' और इन ज़ालिमों का कहना है, ''तुम लोग तो बस एक जादू किये हुए व्यक्ति के पीछे चल रहे हो।''

انظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا

९- देखो! यह तुम पर कैसी-कैसी मिसालें दे रहे हैं, तो यह भटक गये हैं, अब कोई राह नहीं पा सकते!

تَبَارَكَ الَّذِي إِن شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّن ذَٰلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَل لَّكَ قُصُورًا

१०- बड़ा बरकत वाला है 'वह', जो अगर चाहे तो तुम्हारे लिए इससे कहीं ज़्यादा (चीज़ें) बना दे, ऐसे बाग़, जिनके नीचे नहरें जारी हों, और तुम्हारे लिए बहुत से महल तैयार कर दे।

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِمَن كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا

११- (नहीं,) बल्कि यह लोग तो क़ियामत को झुठलाते हैं, और जो उस घड़ी को झुठला दे, उसके लिए 'हमने' दहकती आग तैयार कर रखी है;

إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا

१२- जब वह उनको दूर से देखेगी, तो यह उसके जोश (ग़ज़ब) और उसके चीखने चिल्लाने की आवाज़ को सुनेंगे;

وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا

१३- और जब वे उसके किसी तंग जगह में जकड़े हुए डाले जाएँगे, तो वहाँ मौत को पुकारेंगे;

لَّا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا

१४- ''आज एक ही मौत को न पुकारो, बल्कि बहुत सी मौतों को पुकारो!''

قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا

१५- कह दीजिए, ''यह बेहतर है या हमेशा-हमेश की जन्नत, जिसका वादा परहेज़गारों से किया गया है, यह उनका बदला और रहने का ठिकाना होगा।''

لَّهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُولًا

१६- उसमें उनके लिए वह सब कुछ होगा जो चाहेंगे, उसमें हमेशा रहेंगे, और यह वादा तुम्हारे रब के ज़िम्मे ऐसा है जो माँगने के लायक़ है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَٰؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ

१७- और जिस दिन (अल्लाह) इनको और जिनको यह अल्लाह के सिवा पूजते हैं इकट्ठा करेगा, तो उनसे पूछेगा, ''क्या तुमने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया था, या यह खुद सीधे रास्ते से भटक गये थे?''

قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَنبَغِي لَنَا أَن نَّتَّخِذَ مِن دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِن مَّتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ﴿١٨﴾

१८- वे कहेंगे, ''कि 'तू' पाक है, यह हमसे नहीं हो सकता था, कि हम 'तेरे' सिवा किसी दूसरे को संरक्षक बनाएँ, मगर 'तूने' इन्हें और इनके बाप-दादा को सुख सामग्री दी, यहाँ तक कि वे 'तेरी' याद को भुला बैठे, और ये तबाह होने वाले लोग थे।''

فَقَدْ كَذَّبُوكُم بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا ۚ وَمَن يَظْلِم مِّنكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ﴿١٩﴾

१९- तो उन्होंने तुमको और तुम्हारी बातों को झूठा ठहराया, अब न तुम अज़ाब को टाल सकते हो, और न कोई मदद पा सकते हो, और जो व्यक्ति भी तुममें से ज़ुल्म करेगा, 'हम' उसे बड़े अ़ज़ाब का मज़ा चखाएँगे।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۗ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ ۗ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ﴿٢٠﴾

२०- और 'हमने' तुमसे पहले जितने रसूल भेजे, वे खाना भी खाते थे और बाज़ारों में भी चलते-फिरते थे, और 'हमने' तुम्हें आपस में एक-दूसरे के लिए आज़माइश बना दिया, ''तो क्या तुम सब्र करोगे?'' और तुम्हारा रब खूब देखने वाला है।

पारा नं०-१९

* وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْنَا الْمَلَائِكَةُ أَوْ نَرَىٰ رَبَّنَا ۗ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيرًا ﴿٢١﴾

२१- और जो लोग 'हमसे' मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते, कहते हैं, ''क्यों न हम पर फ़रिश्ते उतारे गये या ऐसा क्यों न हुआ कि हम अपने 'रब' को देख लेते?'' इन्होंने अपने जी में अपने को बड़ा समझा और बड़ी सरकशी पर उतर आए।

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ حِجْرًا مَّحْجُورًا ﴿٢٢﴾

२२- जिस दिन ये फ़रिश्तों को देख लेंगे, उस दिन मुजरिमों के लिए कोई खुशी की बात न होगी और पुकार उठेंगे, (खुदा करे तुम) रोक लिए (और बंद कर दिए) जाओ।

وَقَدِمْنَا إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَّنثُورًا ﴿٢٣﴾

२३- और 'हम' बढ़ेंगे उन आ़माल की ओर जो उन्होंने किया होगा, और उनको- उड़ती हुई धूल कर देंगे।

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا ﴿٢٤﴾

२४- उस दिन जन्नत वालों का ठिकाना भी बेहतर होगा और आरामगाह भी खूब अच्छी होगी।

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلَائِكَةُ تَنزِيلًا ﴿٢٥﴾

२५- और जिस दिन आसमान बादल के साथ फटेगा और फ़रिश्ते उतारे जाएँगे;

الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمَٰنِ ۚ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا ﴿٢٦﴾

२६- उस दिन ह़क़ीक़ी बादशाही 'रह़मान' ही की होगी, और वह दिन काफ़िरों पर बड़ा सख्त होगा।

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ﴿٢٧﴾

२७- और ज़ालिम उस रोज़ अपने हाथ काट खाएगा (और) कहेगा, ''काश मैंने भी रसूल के साथ राह पकड़ ली होती।

يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ۝

२८- हाय मेरा दुर्भाग्य!! काश, मैं फ़लाँ व्यक्ति को दोस्त न बनाया होता!-

لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ۝

२९- उसने मुझे गुमराह करके नसीहत (क़ुर्आन) से दूर रखा, जबकि वह (नसीहत) मेरे पास आ चुकी थी, और शैतान तो है ही इन्सान को बेसहारा छोड़ने वाला।''

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ۝

३०- और रसूल कहेंगे, ''ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने इस क़ुर्आन को छोड़ दिया था।''

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ۝

३१- और इसी तरह 'हम' मुजरिमों में से हर नबी के लिए दुश्मन बनाते रहे, और तुम्हारा 'रब' रहनुमाई और मदद के लिए काफ़ी है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۛ كَذٰلِكَ ۛ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ۝

३२- और काफ़िर कहते हैं कि ''इस पर पूरा क़ुर्आन एक ही समय में क्यों नहीं उतरा?'' ऐसा इसलिए किया गया ताकि इसके ज़रिये 'हम' तुम्हारे दिल को मज़बूत करें, और हम इस (कलाम) को ठहर-ठहर कर पढ़ते रहें (या उचित क्रम के साथ रखा)।

وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ۝

३३- और यह लोग जो (एतिराज़) भी तुम्हारे सामने लाते हैं, तो 'हम' हक़ बात तुम्हारे सामने पेश कर देते हैं, और बेहतरीन तफ़्सीर (स्पष्टीकरण) के साथ।

اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝

३४- जो लोग अपने मुँह के बल जहन्नम की ओर घसीटे जाएँगे, उनका ठिकाना भी बुरा है, और उनकी राह बिल्कुल भटकी हुई है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ۝

३५- और 'हमने' मूसा को किताब दी, और उनके भाई हारून को मददगार के रूप में उनके साथ कर दिया;

فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ۝

३६- और कहा, दोनों उन लोगों के पास जाओ, जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया '' तो 'हमने' उन को तबाह कर दिया।

وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝

३७- और नूह की क़ौम ने भी, जब रसूलों को झुठलाया तो 'हमने' उन्हें डुबो दिया और लोगों के लिए उन्हें एक निशानी बना दिया, और ज़ालिमों के लिए 'हमने' एक दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

وَعَادًا وَّثَمُوْدَاۡ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ۝

३८- और आद, और समूद, और अर-रस्स वालों और उनके बीच की बहुत सी नस्लों को भी (तबाह कर दिया),

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۫ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ۝

३९- और 'हमने' हर एक के सामने मिसालें दीं, और 'हमने' हर एक को तबाह कर दिया।

وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ۝

४०- और यह (काफ़िर) उस बस्ती पर से भी गुज़रे हैं जिस पर बुरी (पत्थर की) बारिश हुई, तो क्या यह उसे देखते नहीं रहे? बल्कि ये दोबारा ज़िन्दा होकर उठने की उम्मीद ही नहीं रखते।

وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝

४१- और आप को जब यह लोग देख लेते हैं, तो आप का मज़ाक़ उड़ाने लगते हैं, ''क्या यही व्यक्ति है जिसको अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा है-

اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۭ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝

४२- इसने तो हमें भटका कर, हमको हमारे मअ़बूदों (उपास्यों) से फेर ही दिया होता, अगर हम उन पर मज़बूती से जम न गये होते।'' जल्द ही यह जान लेंगे! जब अ़ज़ाब को देखेंगे, कि कौन राह से हटा हुआ था?

اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ۭ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ۝

४३- क्या आप ने उस व्यक्ति को देखा है, जिसने अपना मअ़बूद अपनी इच्छा को बना रखा है? तो क्या आप उसकी ज़िम्मेदारी ले सकते हैं;

اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ۭ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝

४४- या आप यह समझते हैं कि इनमें अक्सर सुनते या समझते हैं? ये तो चौपायों की तरह हैं, बल्कि उनसे भी ज़्यादा राह से भटके हुए हैं।

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَاۗءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۝

४५- क्या आपने अपने 'रब' को नहीं देखा! कि 'उसने' छाया को किस तरह फैला दिया? और अगर 'वह' चाहता तो उसे ठहराया हुआ रखता, फिर 'हमने' सूरज को उसका रहनुमा (दलील) बनाया,

ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ۝

४६- फिर 'हम' उसको धीरे-धीरे अपनी ओर समेट लेते हैं।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ۝

४७- और 'वही' तो है जिसने रात को तुम्हारे लिए पर्दा, और नींद को आराम की चीज़, और दिन को उठ खड़े होने का समय बनाया।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً طَهُوْرًا ۝

४८- और 'वही' तो है जो अपनी रहमत की हवाओं को आगे-आगे खुशख़बरी बना कर भेजता है, और 'हम' आसमान से पानी बरसाते, हैं खूब पाक व साफ़;

لِّنُحْـِۧيَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ۝

४९- ताकि 'हम' इसके ज़रिए मुर्दा बस्ती में जान डाल दें और 'अपने' पैदा किये हुए बहुत से चौपायों और इन्सानों को पिलाएँ।

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۝

५०- और 'हम' इस (क़ुर्आन) को उन लोगों के बीच विभिन्न ढंग से पेश कर देते हैं, ताकि ध्यान दें, लेकिन अक्सर लोगों ने इन्कार और नाशुक्री के अ़लावा कुछ न माना।

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۝

५१- और अगर 'हम' चाहते तो हर बस्ती में डराने वाला भेज देते।

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ۝

५२- तो आप काफ़िरों की बात न मानिए और इस (क़ुर्आन) के ज़रिये उनसे जिहाद कीजिए- बड़ा जिहाद।

وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝

५३- और 'वही' तो है जिसने दो समुद्रों को मिलाया- एक मीठा स्वादिष्ट, और दूसरा खारी कड़वा- और दोनों के बीच एक पर्दा (आड़) कर दिया, और एक रूकावट खड़ी कर दी।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ۝

५४- और 'वही' है जिसने पानी से मनुष्य को पैदा किया, फिर उसको खानदान वाला, और ससुराली रिशते वाला बनाया, और आप का 'रब' बड़ी क़ुदरत (सामर्थ्य) वाला है।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ۝

५५- और ये लोग अल्लाह के मुक़ाबले में उनकी इबादत करते हैं जो न उन्हें नफ़ा पहुँचा सकते हैं और न नुक़सान, और काफ़िर अपने रब की मुखालिफ़त में बड़ा ज़ोर मारता है।

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝

५६- और 'हमने' तो आप को बस खुश-ख़बरी देने वाला और ख़बरदार करने वाला बना कर भेजा है।

قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝

५७- कह दीजिए, ''मैं तुमसे इस पर कोई बदला नहीं माँगता सिवाय इसके कि जिसका जी चाहे अपने रब की ओर (ले जाने वाली) राह अपना ले।''

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ۗ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۝

५८- और 'उस' (अल्लाह) पर भरोसा करो जो ज़िन्दा और कभी मरने वाला नहीं, और उसकी तअ़रीफ़ बयान करो, 'वह' अपने बन्दों के गुनाहों से बाख़बर रहने के लिए काफ़ी है;

الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ

५९- 'जिसने' आसमानों और ज़मीन को, और उन तमाम चीज़ों को, जो कुछ इन दोनों के बीच है छः दिनों में पैदा किया,

خَبِيرًا ۝

फिर अर्श (सिंहासन) पर जा ठहरा, रह़मान है 'वह'! तो उसकी शान, उससे पूछो जो उसकी ख़बर रखता हो।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۩

सज्दः

६०- और इन (इन्कारियों) से जब कहा जाता है कि "रह़मान को सज्दः करो," तो कहते हैं, "रह़मान क्या है? क्या हम उसको सज्दः करें जिसका तुम हमें हुक्म देते हो?" और यह चीज़ उनकी घृणा को और बढ़ा देती है।

تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُّنِيرًا ۝

६१- बड़ी बरकत वाला है 'वह' 'जिसने' आसमान में बुर्ज (नक्षत्र) बनाए, और उसमें एक चिराग़ और एक चमकता हुआ चाँद भी बनाया।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ۝

६२- और 'वही' है जिसने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने वाला बनाया, हर उस व्यक्ति के लिए (निशानी है) जो विचार करना चाहे या शुक्र गुज़ार बनना चाहे।

وَعِبَادُ الرَّحْمَٰنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ۝

६३- और रह़मान के बन्दे तो वे हैं जो ज़मीन पर आजिज़ी (विनम्रता) के साथ चलते हैं, और जब जाहिल लोग उनसे (जाहिलाना) बातें करने लगते हैं, तो वह "सलाम कहते हैं!"

وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ۝

६४- और वे जो अपने रब के आगे सज्दः करने और खड़े रहने में रातें गुज़ारते हैं;

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝

६५- और वे जो कहते हैं कि, "ऐ रब! जहन्नम के अ़ज़ाब को हमसे दूर रख," उसका अ़ज़ाब बड़ी तकलीफ़ की चीज़ है-

إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝

६६- वह बहुत बुरा ठिकाना है और बुरी ठहरने की जगह है-

وَالَّذِينَ إِذَا أَنفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَٰلِكَ قَوَامًا ۝

६७- और वे जब खर्च करते हैं, तो न फ़ुज़ूल खर्ची करते हैं और न कन्जूसी, बल्कि उनका खर्च दोनों के बीच सन्तुलित रहता है;

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ۝

६८- और वे जो अल्लाह के साथ किसी और मअ़बूद को नहीं पुकारते, और किसी जान को- जिसे अल्लाह ने ह़राम ठहराया है, क़त्ल नहीं करते- मगर ह़क़ के बिना पर, और बद्कारी नहीं करते- और जो इस काम को करे, वह सख़्त गुनाह में पड़ेगा।

يُضَاعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيهِ مُهَانًا ۝

६९- उसको दोहरा अ़ज़ाब दिया जाएगा क़ियामत के दिन, और वह उसमें अपमान के साथ हमेशा पड़ा रहेगा;

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

७०- सिवाय उसके- जिसने तौबः की, और ईमान लाया, और भले काम किये; तो अल्लाह ऐसे लोगों की बुराइयों को भलाइयों से बदल देगा, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है;

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ۝

७१- और जो तौबः करके नेक अ़मल करता है, तो बेशक वह अल्लाह की ओर पलटता है (जैसा कि पलटने का ह़क़ है-)

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ۝

७२- और वे जो झूठी गवाही नहीं देते, और जब बेहूदा चीज़ों के पास से गुज़रते हैं, तो अच्छे अन्दाज़ से गुज़र जाते हैं;

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ۝

७३- और जब उनके रब की आयतों के ज़रिये नसीह़त की जाती है, तो वह उन पर बहरे और अन्धे हो कर नहीं गिरते;

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ۝

७४- और वे जो कहते हैं, ''ऐ 'हमारे' 'रब'! हम को हमारी पत्नियों और हमारी सन्तान की ओर से आँखों की ठंडक दे और हमको परहेज़गारों का इमाम (नायक) बना।''-

أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ۝

७५- यही वे लोग हैं जिनको, उनके सब्र के बदले में ऊँचे मह़ल मिलेंगे, और वहाँ (फ़रिश्ते उन से) दुआ़ और सलाम के साथ उनका इस्तिक़बाल (स्वागत) करेंगे;

خَالِدِينَ فِيهَا ۚ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝

७६- उसमें वे हमेशा रहेंगे, और वह बहुत अच्छा ठिकाना और वह बहुत ही अच्छी रहने की जगह है।

قُلْ مَا يَعْبَأُ بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ ۖ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ۝

७७- कह दीजिए, ''मेरे रब को तुम्हारी क्या परवाह, अगर तुम 'उसको' न पुकारो; अब जबकि तुम झुठला चुके हो, तो जल्द ही उसकी सज़ा लाज़िम (ज़रूरी) होगी।



अनुवाद-सूरतुश्शुअ़राअि़

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ५६८६ अक्षर,१३४७ शब्द,२२७ आयतें और ११ रूकूअ़ हैं।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- ता- सीन्- मीम्;	طٰسٓمّٓ ۝
२- यह स्पष्ट किताब की आयतें हैं।	تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ الۡمُبِيۡنِ ۝
३- शायद, आप अपने आप को हलाक कर देंगे, इस पर कि यह लोग ईमान नहीं लाते।	لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفۡسَكَ اَلَّا يَكُوۡنُوۡا مُؤۡمِنِيۡنَ ۝
४- अगर 'हम' चाहें तो इन पर आसमान से ऐसी निशानी उतार दें, कि इनकी गर्दनें उनके आगे झुक जाएँ।	اِنۡ نَّشَاۡ نُنَزِّلۡ عَلَيۡهِمۡ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتۡ اَعۡنَاقُهُمۡ لَهَا خٰضِعِيۡنَ ۝
५- और उनके रह़मान के पास से जो भी ताज़ा नसीह़त आती है, वे उससे मुँह फेर ही लेते हैं।	وَمَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ ذِكۡرٍ مِّنَ الرَّحۡمٰنِ مُحۡدَثٍ اِلَّا كَانُوۡا عَنۡهُ مُعۡرِضِيۡنَ ۝
६- अब जबकि वे झुठला चुके हैं, तो जल्द ही उन्हें उसकी ह़क़ीक़त मालूम हो जाएगी, जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते रहे हैं।	فَقَدۡ كَذَّبُوۡا فَسَيَاۡتِيۡهِمۡ اَنۡۢبٰٓؤُا مَا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ۝
७- क्या उन्होंने ज़मीन पर निगाह नहीं डाली! कि 'हमने' उसमें कितने ही क़िस्म की उम्दा चीज़ें उगायीं?-	اَوَلَمۡ يَرَوۡا اِلَى الۡاَرۡضِ كَمۡ اَنۡۢبَتۡنَا فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ زَوۡجٍ كَرِيۡمٍ ۝
८- बेशक इसमें निशानी है, मगर इनमें से अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं।	اِنَّ فِيۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ۝
९- और तुम्हारा 'रब' ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), रह़म करने वाला है।	وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ۝
१०- और जब तुम्हारे 'रब' ने मूसा को पुकारा कि ''ज़ालिम क़ौम के पास जाओ-	وَاِذۡ نَادٰى رَبُّكَ مُوۡسٰٓى اَنِ ائۡتِ الۡقَوۡمَ الظّٰلِمِيۡنَ ۝
११- फ़िरऔ़न की क़ौम के पास- क्या यह डरते नहीं?''	قَوۡمَ فِرۡعَوۡنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوۡنَ ۝

१२- (मूसा नें) कहा, "ऐ मेरे रब! मुझे डर है कि वह मुझे झूठा समझें,	قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ
१३- और मेरा सीना घुटता है, और मेरी ज़बान नहीं चलती, तो हारून की ओर भी सन्देश (रिसालत) भेज;	وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ
१४- और मुझ पर उन लोगों का एक गुनाह भी है, इसलिए मुझे डर है कि मुझे क़त्ल कर देंगे।"	وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْبٌ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ
१५- कहा, "हरगिज़ नहीं! तुम दोनों 'हमारी' निशानियाँ लेकर जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनते रहेंगे।"	قَالَ كَلَّا فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا إِنَّا مَعَكُمْ مُسْتَمِعُونَ
१६- तो तुम दोनों फ़िरऔ़न के पास जाओ और कहो, "हम सारे संसार के 'रब' के भेजे हुए हैं;	فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ
१७- कि तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे।"	أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ
१८- (फ़िरऔन ने) कहा, "क्या हमने तुझे जबकि 'तू' बच्चा था, अपने यहाँ पाला नहीं? और तूने अपनी उम्र के बरसहा-बरस हमारे यहाँ (नहीं) गुज़ारे;	قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ
१९- और 'तूने' वह जो हरकत की थी, वह तो की, और तू बड़ा ही नाशुक्रा है।"	وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ
२०- (मूसा ने) कहा, "ऐसा तो उस समय हो गया था जबकि मैं ख़ताकारों में था;	قَالَ فَعَلْتُهَا إِذًا وَأَنَا مِنَ الضَّالِّينَ
२१- तो जब मुझे तुम्हारा डर हुआ तो मैं तुम्हारे यहाँ से भाग गया, फिर मेरे 'रब' ने मुझे हुक्म किया, और मुझे रसूलों में शामिल कर लिया;	فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ
२२- और यही एह़सान है जो तू मुझ पर रखता है कि 'तूने' बनी इस्राईल को गुलाम बना रखा है।"	وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ أَنْ عَبَّدْتَ بَنِي إِسْرَائِيلَ
२३- फ़िरऔ़न ने कहा, "और यह सारे संसार का 'रब' क्या होता है?"	قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ
२४- कहा, "आसमानों और ज़मीन का रब और उनके बीच की तमाम चीज़ों का, अगर तुम्हें यक़ीन हो।"	قَالَ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ
२५- (फ़िरऔ़न ने) अपने आस-पास वालों से कहा, "क्या तुम सुनते नहीं हो?"	قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُ أَلَا تَسْتَمِعُونَ

२६- कहा, ''तुम्हारा 'रब' और तुम्हारे अगले बाप-दादा का रब।''

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ

२७- (फ़िरऔन ने) कहा, तुम्हारा यह रसूल, जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, बिल्कुल पागल है।''

قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمُ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ

२८- (मूसा ने) कहा, ''पूरब और पश्चिम का 'रब' और जो कुछ इन दोनों के बीच में है उनका भी, अगर तुम कुछ अक़्ल रखते हो।''

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ

२६- (फ़िरऔ़न) बोला, ''अगर तूने मेरे सिवा किसी और को मअ़बूद (उपास्य) बनाया तो मैं तुझे बन्दी बना कर रहूँगा।''

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ إِلَٰهًا غَيْرِي لَأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُونِينَ

३०- (मूसा ने) कहा, ''क्या अगर मैं तेरे पास एक स्पष्ट चीज़ लाऊँ तब भी?''

قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُبِينٍ

३१- बोला, ''अच्छा तो वह ले आ, अगर तू सच्चा है।''

قَالَ فَأْتِ بِهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ

३२- फिर उन्होंने अपना अ़सा (लाठी) डाल दिया, तो उसी वक़्त एक खुला हुआ साँप बन गया।

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُبِينٌ

३३- और उन्होंने अपना हाथ बाहर खींचा, तो (क्या देखते हैं कि) वह देखने वालों को सफ़ेद नज़र आने लगा।

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ

३४- (फ़िरऔ़न ने) अपने आस-पास के सरदारों से कहा, यह कोई बड़े इल्म वाला जादूगर है;

قَالَ لِلْمَلَإِ حَوْلَهُ إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ

३५- यह चाहता है कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से निकाल बाहर करे, तो तुम्हारी क्या राय है?''

يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ

३६- उन्होंने कहा, ''इसको और इसके भाई को अभी मोहलत दीजिए, और तमाम शहरों में बुलाने वालों को भेज दीजिए,

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ

३७- कि वह तमाम माहिर जादूगरों को तुम्हारे पास ले आए।''

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيمٍ

३८- तो जादूगर निश्चित दिन, निश्चित समय पर जमा कर लिए गये;

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ مَعْلُومٍ

३६- और लोगों से कहा गया, ''तुम (सब) भी इकट्ठा होगे?''

وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُجْتَمِعُونَ

४०- ताकि हम जादूगरों के पीछे चलें, अगर वह विजयी हों।

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ إِنْ كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَئِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿٤١﴾

४१- तो जब जादूगर आए, उन्होंने फ़िरऔ़न से कहा, ''क्या हमें कोई इनआ़म भी मिलेगा, अगर हम विजयी हुए?''

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٢﴾

४२- (फ़िरऔ़न ने) कहा, ''हाँ, और तुम तो उस समय क़रीबी लोगों में से हो जाओगे।''

قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿٤٣﴾

४३- (मूसा ने) उनसे कहा, ''डाल दो जो कुछ तुम्हें डालना है।''

فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾

४४- तब उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डाल दीं और बोले, ''फ़िरऔ़न के इ़ज़्ज़त की क़सम! हम ही विजयी रहेंगे।''

فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٤٥﴾

४५- फिर मूसा ने अपनी लाठी डाली तो वह उन चीज़ों को, जो जादूगरों ने बनाई थीं, निगलने लगी;

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ﴿٤٦﴾

४६- तो जादूगर सज्दे में गिर पड़े।

قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾

४७- वे कहने लगे, ''हम सारे संसार के 'रब' पर ईमान ले आए;

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿٤٨﴾

४८- मूसा और हारून के रब पर!''

قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٩﴾

४९- (फ़िरऔ़न ने) कहा, ''तुमने उसको मान लिया, इससे पहले कि मैं इजाज़त देता! बेशक यह तुम सब का बड़ा है, जिसने तुम सबको जादू सिखाया है, तो अभी तुम सब को मालूम हो जाएगा! मैं तुम्हारे हाथ और पैर, विपरीत (मुख़ालिफ़) दिशाओं के, कटवा दूँगा और तुम सब को सूली पर चढ़ा दूँगा।''

قَالُوا لَا ضَيْرَ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنقَلِبُونَ ﴿٥٠﴾

५०- उन लोगों ने कहा, ''कुछ हरज नहीं, हम तो अपने 'रब' ही की ओर पलट कर जाने वाले हैं;

إِنَّا نَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطَايَانَا أَن كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥١﴾

५१- बेशक हमें तो उम्मीद है कि हमारा 'रब' हमारे गुनाहों को माफ़ कर देगा, क्यों कि हम सबसे पहले ईमान ले आए।''

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ﴿٥٢﴾

५२- और 'हमने' मूसा की ओर वह़्य की, ''हमारे बन्दों को रातों-रात लेकर निकल जाओ, निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जाएगा।''

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿٥٣﴾

५३- तो फ़िरऔ़न ने बुलाने वालों को शहरों में भेजा,

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ﴿٥٤﴾

५४- कि ''यह गिरे-पड़े थोड़े लोगों का एक गिरोह है;

وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَائِظُونَ ۝
५५- और यह हमें गुस्सा दिला रहे हैं,

وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَاذِرُونَ ۝
५६- और हम सब साज़ और सामान के साथ हैं।''

فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝
५७- तो 'हमने' उनको बाग़ों, और चश्मों (स्रोतों) से निकाला;

وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۝
५८- और ख़ज़ानों और बेहतरीन मकानों से;

كَذَٰلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ۝
५९- ऐसा ही 'हम' करते हैं और इनका वारिस, 'हमने' बनी इस्राईल को बना दिया।

فَأَتْبَعُوهُمْ مُشْرِقِينَ ۝
६०- तो उन्होंने सूरज निकलने के वक़्त पीछा किया।

فَلَمَّا تَرَاءَى الْجَمْعَانِ قَالَ أَصْحَابُ مُوسَىٰ إِنَّا لَمُدْرَكُونَ ۝
६१- फिर जब दोनों गिरोहों ने एक-दूसरे को देख लिया, तो मूसा के साथियों ने कहा, ''हम तो पकड़े गये।''

قَالَ كَلَّا إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۝
६२- (मूसा ने) कहा, ''हरगिज़ नहीं! मेरे साथ मेरा 'रब' है, 'वह' ज़रूर मुझे राह दिखाएगा।''

فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ۝
६३- तो 'हमने' मूसा की ओर वह्य की, ''कि अपना अ़सा (लाठी) समुद्र पर मारो,'' तो वह फट गया और हर टुकड़ा एक बड़े पहाड़ की तरह हो गया।

وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْآخَرِينَ ۝
६४- और 'हम ने' वहाँ दूसरों को क़रीब कर दिया।

وَأَنْجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ۝
६५- और 'हमने' मूसा और उन सब को जो उनके साथ थे, बचा लिया।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ۝
६६- फिर दूसरों को ग़र्क़ (डुबो) कर दिया।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝
६७- बेशक इसमें निशानी है, मगर इस में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝
६८- और आप का 'रब' ही है जो बड़ी ताक़त वाला, रह़म वाला है।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ ۝
६९- और इनको इब्राहीम की ख़बर पढ़ कर सुनाइए,

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ۝
७०- जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, ''तुम किन चीज़ों की इबादत करते हो।''

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَاكِفِينَ ۝
७१- उन्होंने कहा, ''हम बुतों की इबादत करते हैं, और हम इन्हीं की सेवा में लगे रहेंगे।''

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ۝
७२- (इब्राहीम ने) कहा, ''क्या वे तुम्हारी सुनते हैं, जब तुम उनको पुकारते हो,

७३- या यह तुम्हें फ़ायदा, या नुक़सान पहुँचाते हैं?''	أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ۝
७४- उन्होंने कहा, ''(नहीं) बल्कि हमने अपने बाप-दादा को ऐसा ही करते पाया है।''	قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ۝
७५- (इब्राहीम नें) कहा, ''क्या तुमने उन पर विचार भी किया है जिन्हें तुम पूजते रहे हो;	قَالَ أَفَرَأَيْتُم مَّا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ۝
७६- तुम भी और तुम्हारे पहले के बाप-दादा भी?''	أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمُ الْأَقْدَمُونَ ۝
७७- वह मेरे दुश्मन हैं, सिवाय रब्बुल- आ़लमीन (सारे संसार के पालनकर्ता) के,	فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝
७८- 'जिसने' मुझे पैदा किया तो 'वही' मेरी रह़नुमाई करता है,	الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ۝
७९- और 'वही' है जो मुझे खिलाता और पिलाता है,	وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ۝
८०- और जब मैं बीमार होता हूँ, तो 'वही' मुझको अच्छा करता है,	وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ۝
८१- और 'वही' है जो मुझे मारेगा, फिर ज़िन्दा करेगा;	وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ۝
८२- और 'वही' है, 'जिससे' मुझे इसकी उम्मीद है कि बदला दिये जाने के दिन वह मेरी खताएँ माफ़ कर देगा।	وَالَّذِي أَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ۝
८३- ऐ मेरे 'रब'! मुझे ह़िकमत अ़ता कर और मुझे अच्छे लोगों में शामिल कर,	رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ۝
८४- और बाद के आने वालों में मुझे सच्ची ख्याति (शोहरत) दे,	وَاجْعَل لِّي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ۝
८५-और मुझे नेअ़मत के बाग़ों (जन्नत) के वारिसों में (शामिल) कर,	وَاجْعَلْنِي مِن وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ۝
८६- और मेरे बाप को माफ़ कर दे, वह गुमराह लोगों में से है,	وَاغْفِرْ لِأَبِي إِنَّهُ كَانَ مِنَ الضَّالِّينَ ۝
८७- और मुझे उस दिन रूसवा न कर, जिस दिन लोग उठाए जाएँगे;	وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ۝
८८- जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद,	يَوْمَ لَا يَنفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ۝

८६- सिवाय उसके जो व्यक्ति सलामती वाला दिल लेकर अल्लाह के सामने आया।	اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ
६०- और जन्नत, परहेज़गारों के क़रीब लाई जाएगी;	وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ
६१- और दोज़ख़ गुमराहों के सामने लाई जाएगी,	وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ
६२- और उनसे कहा जाएगा, ''कहाँ हैं वे जिनकी तुम इबादत करते थे;	وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ
६३- अल्लाह को छोड़ कर, क्या वे तुम्हारी मदद कर सकते हैं या अपना बचाव कर सकते हैं?''	مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ
६४- तो वे और तमाम गुमराह लोग उस (जहन्नम) में औंधे झोंक दिये जाएँगे,	فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ
६५- और इब्लीस की सारी सेनाएँ भी,	وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ
६६- वे वहाँ आपस में झगड़ते हुए कहेंगे,	قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ
६७- ''अल्लाह की क़सम! हम तो खुली हुई गुमराही में थे,	تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ
६८- जबकि हम तुम्हें सारे संसार के 'रब' के बराबर ठहरा रहे थे;	اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
६६- और मुजरिमों ने ही हमें गुमराह किया था,	وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ
१००- तो (आज) हमारा कोई सिफ़ारशी नहीं;	فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ
१०१- और न कोई जिगरी दोस्त है;	وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ
१०२- अगर हमें एक बार और लौटने का मौक़ा मिल जाए, तो हम ईमान वालों में से हो जाते।''	فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
१०३- बेशक इसमें बड़ी निशानी है, इस पर भी इनमें से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं;	اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
१०४- और आप का 'रब' ही बड़ी ताक़त वाला, रह़म वाला है।	وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ
१०५- नूह़ की क़ौम ने भी रसूलों को झुठलाया,	كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ
१०६- जबकि उनसे उनके भाई नूह़ ने कहा, ''क्या तुम डरते नहीं?	اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ

१०७- मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ,	اِنِّىۡ لَـكُمۡ رَسُوۡلٌ اَمِيۡنٌۙ
१०८- तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो;	فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوۡنِۚ
१०९- और मैं इस काम का तुमसे कोई बदला नहीं माँगता हूँ मेरा बदला तो बस सारे संसार के 'रब' के ज़िम्मे है;	وَمَاۤ اَسۡـئَلُكُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ اَجۡرٍۚ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَؕ
११०- तो अल्लाह से डरो और मेरी फ़रमाँबरदारी करो।''	فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوۡنِؕ
१११- उन्होंने कहा, ''क्या हम तुम्हें मान लें, जबकि तुम्हारे पीछे तो बड़े नीच लोग चल रहें हैं?''	قَالُوۡۤا اَنُؤۡمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الۡاَرۡذَلُوۡنَؕ
११२- (नूह़ ने) कहा, ''मुझे क्या मालूम कि वे क्या करते रहे?	قَالَ وَمَا عِلۡمِىۡ بِمَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَۚ
११३- उनका हिसाब तो मेरे 'रब' के ज़िम्मे है, क्या ही अच्छा होता कि तुम समझते?-	اِنۡ حِسَابُهُمۡ اِلَّا عَلٰى رَبِّىۡ لَوۡ تَشۡعُرُوۡنَۚ
११४- और मैं उन लोगों को धुत्कारने वाला नहीं, जो ईमान लाए;	وَمَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَۚ
११५- मैं तो बस खुली हुई चेतावनी देने वाला हूँ।''	اِنۡ اَنَا اِلَّا نَذِيۡرٌ مُّبِيۡنٌؕ
११६- उन्होंने कहा, ''अगर तुम बाज़ न आए तो, 'ऐ नूह़ तुम ज़रूर संगसार (पत्थर द्वारा मार डालना) किये जाओगे।''	قَالُوۡا لَـئِنۡ لَّمۡ تَنۡتَهِ يٰنُوۡحُ لَتَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡمَرۡجُوۡمِيۡنَؕ
११७- (नूह़ ने) कहा, ''ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने मुझे झुठला दिया;	قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوۡمِىۡ كَذَّبُوۡنِۖۚ
११८- अब 'तू' मेरे और उनके बीच साफ़ फ़ैसला कर दे, और मुझे और जो ईमान वाले मेरे साथ हैं, उन्हें बचा ले।''	فَافۡتَحۡ بَيۡنِىۡ وَبَيۡنَهُمۡ فَتۡحًا وَّنَجِّنِىۡ وَمَنۡ مَّعِىَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ‏
११९- तो 'हमने' उसे और जो उसके साथ भरी हुई नौका में (सवार) थे, बचा लिया;	فَاَنۡجَيۡنٰهُ وَمَنۡ مَّعَهٗ فِى الۡفُلۡكِ الۡمَشۡحُوۡنِۚ
१२०- फिर इसके बाद बाक़ी लोगों को डुबो दिया।	ثُمَّ اَغۡرَقۡنَا بَعۡدُ الۡبٰقِيۡنَؕ
१२१- बेशक इसमें बड़ी निशानियाँ हैं, और इनमें अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं थे।	اِنَّ فِىۡ ذٰ لِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ‏
१२२- और तुम्हारा 'रब' बड़ी ताक़त वाला, (प्रभुत्वशाली) रह़म वाला है।	وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ
१२३- आ़द ने भी रसूलों को झुठलाया।	كَذَّبَتۡ عَادُ ۨالۡمُرۡسَلِيۡنَ ۖۚ
१२४- जबकि उनके भाई हूद ने उनसे कहा, ''क्या तुम डरते नहीं?-	اِذۡ قَالَ لَهُمۡ اَخُوۡهُمۡ هُوۡدٌ اَلَا تَتَّقُوۡنَۚ

१२५- मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार हूँ।
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ

१२६- तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो;
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ

१२७- और मैं इस पर तुमसे कुछ बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो रब्बुलआलमीन के ज़िम्मे है;
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ

१२८- तुम हर ऊँची जगह पर बेकार निशान तामीर (निर्माण) करते हो?
أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ

१२६- और महल बनाते हो जैसा कि तुम्हें हमेशा रहना है;
وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ

१३०- और जब (किसी को) पकड़ते हो तो बड़ी सख़्ती से पकड़ते हो;
وَإِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ

१३१- तो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो,
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ

१३२- और डरो 'उससे' जिसने तुम्हारी उन चीज़ों से मदद की, जो तुम्हें मालूम हैं:
وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ

१३३- 'उसने' तुम्हारी मदद की, चौपायों और औलाद से;
أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ

१३४- और बाग़ों, और स्रोतों से।
وَجَنَّاتٍ وَعُيُونٍ

१३५- मुझे डर है एक ऐसे दिन के अ़ज़ाब का जो बड़ा ही सख़्त होगा।''
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ

१३६- उन्होंने कहा, ''हमारे लिए सब बराबर है तुम नसीहत करो या न करो।
قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَاعِظِينَ

१३७- यह बात तो अगलों से चली आ रही है;
إِنْ هَٰذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ

१३८- और हमको अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा।''
وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ

१३६- तो उन्होंने उसको (हूद) झुठलाया, तो 'हमने' उनको हलाक कर दिया, बेशक इसमें बड़ी निशानी है, और इनमें अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं थे।
فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ

१४०- और आप का 'रब' बड़ी ताक़त वाला, रह़म वाला हैं।-
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

१४१- समूद ने भी रसूलों को झुठलाया,
كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ

१४२- जबकि उनके भाई सालेह़ ने उनसे कहा, ''क्या तुम डरते नहीं?
إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ

१४३- मैं तो तुम्हारा एक अमानतदार रसूल हूँ,
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ

१४४- तो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो,	فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ
१४५- और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो सारे संसार के 'रब' के ज़िम्मे है;	وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
१४६- क्या जो चीज़ें तुम्हारे पास हैं, उनमें चैन से छोड़ दिये जाओगे;	اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ
१४७- बाग़ों और स्रोतों में,	فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ
१४८- और खेतों, और ख़जूरों के बाग़ों में- जिनके गुच्छे बड़े मज़ेदार होते हैं;	وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ
१४६- और पहाड़ों को तराश कर तुम इमारतें बनाते हो, ताकि तुम उस पर गर्व करो,	وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ
१५०- तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो;	فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ
१५१- और ह़द से गुज़रने वालों के पीछे न चलो,	وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ
१५२- जो ज़मीन में फ़साद बरपा करते हैं, और सुधार पैदा नहीं करते।''	الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ
१५३- उन्होंने कहा, ''तुम पर जादू का असर हो गया है;	قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ
१५४- कुछ नहीं, तुम हमारे ही जैसे आदमी हो, और अगर सच्चे हो तो लाओ कोई निशानी।''	مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ
१५५- (सालेह़ ने) कहा, ''यह ऊँटनी है, एक दिन पानी पीने की बारी इसकी है, और एक निश्चित दिन पानी की बारी तुम्हारे लिए है;	قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ
१५६- और इसको कोई तकलीफ़ पहुँचाने के लिए हाथ न लगाना (वरना) एक सख़्त दिन का अ़ज़ाब तुम पर आ जाएगा।''	وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ
१५७- मगर उन्होंने उसकी कूँचें काट दीं, और फिर पछता के रह गये।	فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ
१५८- तो उन्हें अ़ज़ाब ने आ दबोचा, बेशक इसमें बड़ी निशानी है, इस पर भी इनमें से अक्सर लोग मानने वाले नहीं।	فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۗ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
१५६- और तुम्हारा रब बड़ी ताक़त वाला, रह़म वाला है।	وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ

१६०- लूत की क़ौम ने भी रसूलों को झुठलाया।

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ

१६१- जबकि उनके भाई लूत ने उनसे कहा, ''क्या तुम डरते नहीं?-

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ

१६२- मैं तो तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ;

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ

१६३- तो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो,

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ

१६४- और मैं इस काम पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो सारे संसार के 'रब' के ज़िम्मे है।

أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ

१६५- क्या सारे संसार के लोगों में तुम्हीं ऐसे हो कि (इच्छापूर्ति के लिए) मर्दों के पास जाते हो?-

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ

१६६- और अपनी पत्नियों को, जिन्हें तुम्हारे 'रब' ने तुम्हारे लिए पैदा की हैं छोड़ देते हो (इतना ही नहीं) बल्कि तुम हद से आगे बढ़े हुए लोग हो।''

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ

१६७- उन्होंने कहा, ''अगर तू बाज़ न आया, 'ऐ लूत! तो तू ज़रूर निकाल बाहर किया जाएगा।''

قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ

१६८- (लूत ने) कहा, ''मैं तुम्हारे काम से बेज़ार (विरक्त) हूँ;

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ

१६९- ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे घर वालों को, इनके कर्तूतों से छुटकारा दिला, जो वह करते हैं।''

فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ

१७०- तो 'हमने' उनको और उनके घर वालों को बचा लिया;

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ

१७१- सिवाय एक बुढ़िया के, जो पीछे रह जाने वालों में थी।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ

१७२- फिर 'हमने' बाक़ी लोगों को हलाक कर दिया,

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ

१७३- और उन पर (पत्थरों की) वर्षा की- क्या ही बुरा (पत्थराव) उन पर बरसा- जो सचेत किये जाने वालों पर बरसाया गया।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ

१७४- बेशक इसमें निशानी है, इस पर भी अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

१७५-और तुम्हारा 'रब' ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली), रह़म वाला है।

كَذَّبَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ

१७६- अल-ऐका (जंगल के रहने) वालों ने रसूलों को झुठलाया;

१७७- जबकि शुऐब ने उनसे कहा, ''क्या तुम डरते नहीं?-

إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝

१७८- मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार हूँ,

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝

१७६- तो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो,

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝

१८०- मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो सारे संसार के 'रब' के ज़िम्मे है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

१८१- नाप पूरा-पूरा भरा करो और घाटा न दिया करो।

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝

१८२- और तराज़ू सीधा रख कर तौला करो;

وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۝

१८३- और लोगों को उनकी चीज़े कम न दिया करो, और ज़मीन में फ़साद न फैलाते फिरो;

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝

१८४- और डरो उससे 'जिसने' तुम्हें और तुम से पहलों की नस्लों को पैदा किया।''

وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِينَ ۝

१८५- उन्होंने कहा, ''तुम पर जादू का असर हो गया है,

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۝

१८६- और तुम तो बस हमारे ही जैसे आदमी हो, और हम तो तुम्हें बिल्कुल झूठा समझते हैं;

وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنْ نَظُنُّكَ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ۝

१८७- अगर तुम सच्चे हो तो, हम पर आसमान का एक टुकड़ा गिरा दो।''

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝

१८८- (शुअ़ैब ने) कहा, मेरा 'रब' ही जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।''

قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

१८६- मगर उन्होंने उनको झुठला दिया, फिर छाया वाले दिन के अ़ज़ाब ने आ पकड़ा, बेशक वह एक बड़े दिन का अ़ज़ाब था;

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

१६०- इसमें बड़ी निशानी है, और इनमें से अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं;

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

१६१- और तुम्हारा रब ताक़त वाला, रहम वाला है।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

१६२- और (क़ुर्आन)यह सारे संसार के रब का नाज़िल किया हुआ है;

وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

१६३- इसको रूहुल अमीन (विश्वसनीय आत्मा) लेकर नाज़िल हुए हैं;

نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ۝

१६४- आप के दिल पर, ताकि आप चेतावनी देने वाले बनें;
عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝

१६५- स्पष्ट अ़रबी भाषा में,
بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ۝

१६६- और इसकी ख़बर पहले लोगों के ग्रन्थों में भी मौजूद है।
وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ۝

१६७- क्या उन लोगों के लिए यह निशानी नहीं है कि इसे बनी इस्राईल के उलमा (विद्वान) जानते हैं?
اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝

१६८- और अगर हम इसे किसी अ़जमी (ग़ैर जानने वाले) पर उतारते,
وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ۝

१६६- वह उनको पढ़ कर सुनाता तो भी यह उस पर ईमान लाने वाले न थे।
فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ۝

२००- इस तरह 'हमने' यह बात मुजरिमों के दिलों में दाख़िल कर दी,
كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝

२०१- वे इस पर ईमान नहीं लाएँगे, जब तक दर्दनाक अ़ज़ाब न देख लें;
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝

२०२- तो वह उन पर अचानक आएगा और उससे वे बेख़बर होंगे।
فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

२०३- तो उस समय वे कहेंगे, ''क्या हमें मोहलत मिलेगी?''
فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ۝

२०४- तो क्या यह 'हमारे' अ़ज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं?
اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝

२०५- क्या तुम ने सोचा! अगर हम इन्हें कुछ साल तक सुख भोगने दें;
اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ۝

२०६- फिर उन पर वह चीज़ आ जाए, जिससे उन्हें डराया जा रहा है?-
ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝

२०७- तो जो सुख उन्हें मिला होगा वह उनके कुछ काम न आएगा।
مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ۝

२०८- और 'हमने' किसी बस्ती को हलाक नहीं किया, मगर उसके लिए सचेत करने वाले (पहले) भेज देते थे;
وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ۝

२०६- (ताकि) नसीहत (करें) !और 'हमारा' काम ज़ुल्म करना नहीं है।
ذِكْرٰى ۛ وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝

२१०- और इस (क़ुर्आन) को शैतान लेकर नहीं उतरा,
وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ۝

२११- और न यह काम उनके बस का है, और न वह ताक़त रखते हैं;
وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝

إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ۝

२१२- वे इसके सुनने से भी दूर रखे गये हैं।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ۝

२१३- तो अल्लाह के साथ किसी और मअ़बूद (उपास्य) को न पुकारिए वरना आप सज़ा पाने वालों में शामिल हो जाएँगे;

وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ۝

२१४- और अपने क़रीबी रिश्तेदारों को भी सचेत कीजिए,

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

२१५- और जो ईमान लाने वाले आपकी पैरवी करें, उनके लिए अपने बाजू (भुजाएँ) झुका दें।

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ۝

२१६- तो अगर वे इन्कार करें तो उनसे कह दीजिए ''जो कुछ तुम करते हो उसकी ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूँ।''

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝

२१७- और भरोसा करो 'उस' पर, 'जो' बड़ी ताक़त वाला, रहम वाला है;

الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ۝

२१८- 'जो' तुम्हें देख रहा होता है, जब तुम (नमाज़ में) खड़े होते हो;

وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ ۝

२१९- और सज्दा करने वालों में तुम्हारी चलत-फिरत को भी, (वह देखता है)

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

२२०- बेशक 'वह' सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ۝

२२१- क्या 'मैं' तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं?-

تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۝

२२२- हर ढ़ोंग रचने वाले गुनहगार पर उतरते हैं;

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ۝

२२३- वे कान लगाते हैं और उनमें से अक्सर लोग झूठे होते हैं।

وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ۝

२२४- और रहे शायर (कवि), तो उनके पीछे बहके हुए लोग चला करते हैं;

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ۝

२२५- क्या तुम देखते नहीं! कि वे हर घाटी में बहकते फिरते हैं,

وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ۝

२२६- और ऐसी बातें कहते हैं जो करते नहीं?-

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانتَصَرُوا مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنقَلَبٍ يَنقَلِبُونَ ۝

२२७- सिवाय उनके, जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अ़मल किये और अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद किया, और इसके बाद भी उन पर ज़ुल्म किया गया तो उन्होंने उसका बदला लिया, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, उन्हें जल्द मालूम हो जाएगा कि वे किस जगह लौट कर जाते हैं।



अनुवाद-सूरतुन्नम्लि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ४८७६ अक्षर, ११६७ शब्द, ९३ आयतें और ७ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۙ

१- ता- सीन। ये आयतें हैं क़ुर्आन और एक स्पष्ट किताब की।

هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ

२- हिदायत और ख़ुशख़बरी है ईमान वालों के लिए;

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ

३- वे जो नमाज़ क़ायम करते, और ज़कात देते, और आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ۙ

४- जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, 'हमने' उनके काम उनके लिए ख़ुशनुमा (सुन्दर) बना दिये हैं तो वे परेशान भटकते फिरते हैं;

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ

५- ऐसे ही लोगों के लिए (दुनिया में) बुरा अ़ज़ाब है, और आख़िरत में भी, वे बड़े घाटे में होंगे।

وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ

६- और आप यह क़ुर्आन एक ह़िकमत वाले, बड़े जानने वाले की ओर से पा रहे हैं।

اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ۭ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ

७- (और याद करो) जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा, ''मैंने एक आग देखी है, मैं अभी वहाँ से तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आता हूँ या तुम्हारे पास कोई दहकता हुआ अंगारा लाता हूँ, ताकि तुम तापो।''

فَلَمَّا جَاۗءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۭ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

८- जब वह उसके पास पहुँचे तो आवाज़ आई, ''मुबारक है 'वह' जो इस आग में है, और जो इसके आस-पास है, और पाक है अल्लाह, सारे संसार का 'रब';

يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۙ

९- ऐ मूसा! वह तो, 'मैं अल्लाह हूँ,' बड़ी ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली), ह़िकमत वाला!

وَأَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۚ يَا مُوسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُونَ ﴿١٠﴾

१०- और अपना अ़सा (लाठी) डाल दें।'' जब उन्होंने देखा कि वह हरकत कर रहा है, जैसे वह कोई साँप है, तो पीठ फेर कर भागे और पलट कर भी न देखे। ''ऐ मूसा! डरो नहीं, रसूल मेरे पास डरा नहीं करते;

إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوءٍ فَإِنِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١﴾

११- सिवाय उसके कि जिसने ज़ुल्म किया हो, फिर बुराई को भलाई से बदल दिया; तो 'मैं' बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला हूँ।

وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۖ فِي تِسْعِ آيَاتٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿١٢﴾

१२- और आप अपना हाथ अपने गिरेबान में डलें, तो वह बिना किसी रोग के सफ़ेद चमकता हुआ निकलेगा, यह नौ निशानियों में से है जिनके साथ आप फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम के पास जाएँ वे बड़े फ़ासिक़ (दुराचारी) लोग हैं।''

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ آيَاتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿١٣﴾

१३- तो जब उनके सामने 'हमारी' खुली निशानियाँ आयीं, तो उन्होंने कहा, ''यह तो खुला जादू है।''

وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤﴾

१४- और ज़ुल्म और घमंड की वजह से उनका इन्कार किया, जबकि उनको अपने दिल में यक़ीन हो चुका था, तो देखो! फ़साद करने वालों का कैसा अंजाम हुआ?

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا ۖ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَىٰ كَثِيرٍ مِنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥﴾

१५- और 'हमने' दाऊद और सुलेमान को इल्म दिया, और उन्होंने कहा, ''शुक्र है अल्लाह का, जिसने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी।''

وَوَرِثَ سُلَيْمَانُ دَاوُودَ ۖ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾

१६- और दाऊद के वारिस सुलेमान हुए, और कहने लगे ''लोगो! हमें परिन्दों की बोली सिखाई गयी है, और हमें हर चीज़ दी गयी है, बेशक यह स्पष्ट मेहरबानी है।''

وَحُشِرَ لِسُلَيْمَانَ جُنُودُهُ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٧﴾

१७- और सुलेमान के लिए जिन्नों, और इन्सानों और परिन्दों में से उसकी सेनाएँ जमा की गयीं, फिर उनकी दर्जाबन्दी (पंक्तिबद्धता) की गयी;

حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا عَلَىٰ وَادِ النَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَا أَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسَاكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ وَجُنُودُهُ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٨﴾

१८- यहाँ तक कि जब चींटियों की घाटी में पहुँचे, तो एक चींटी ने कहा, ''ऐ चींटियो! अपने घरों में दाख़िल हो जाओ, कहीं सुलेमान और उसकी सेनाएँ तुम्हें कुचल न डालें और उनको एह़सास भी न हो।''

१६- तो वह उसकी बात पर ख़ुश हो कर मुस्कुराए और कहा, ''ऐ 'रब'! मुझे संभाले रख, कि मैं तेरे उस एह़सान का शुक्र अदा करता रहूँ जो 'तूने' मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर किया है, और यह कि अच्छे काम करूँ जो 'तुझे' पसंद आएँ और अपनी रह़मत से मुझे अपने भले बन्दों में दाख़िल कर।''

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِيْٓ أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَأَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

२०- और (जब) उन्होंने पक्षियों की जाँच पड़ताल की तो कहा, ''क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूँ, क्या वह ग़ायब हो गया?-

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ أَرَى الْهُدْهُدَ أَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ۝

२१- मैं उसे सख़्त सज़ा दूँगा या उसे ज़ब्ह़ कर डालूँगा, या फिर मेरे सामने कोई खुली दलील ले आए।''

لَأُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا أَوْ لَأَاذْبَحَنَّهٗٓ أَوْ لَيَأْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝

२२- फिर ज़्यादा देर नहीं लगी कि उसने आकर कहा, ''मैंने वह जानकारी ह़ासिल की है, जो आप को मालूम नहीं, मैं 'सबा' से एक सच्ची ख़बर लेकर आया हूँ;

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَّقِيْنٍ ۝

२३- और मैंने एक औ़रत (सबा) को शासन करते हुए पाया है, उसे हर चीज़ ह़ासिल है और उसका एक बड़ा सिंहासन है;

إِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ۝

२४- मैंने उसे और उसकी क़ौम को, अल्लाह को छोड़ कर सूरज को सज्दः करते हुए पाया है, और शैतान ने उसके आ़माल उसके लिए ख़ुशनुमा (शोभायमान) बना दिये हैं और उनको सीधी राह से रोक दिया है इसलिए वे राह नहीं पा रहे हैं-

وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ۝

२५- कि अल्लाह को सज्दः क्यों न करें, जो आसमानों और ज़मीन की छिपी चीज़ें निकालता है, और जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो, और जो दिखा कर करते हो;

أَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝

२६- अल्लाह, कि उसके सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, वह अर्श-अज़ीम (महान सिंहासन) का 'रब' है;''

اَللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۩

सज्दः

२७- (सुलेमान ने) कहा, ''अभी हम देख लेते हैं कि 'तूने' सच कहा, या झूठ बोलने वालों में से है;

قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝

२८- मेरा यह पत्र लेकर जा, और उनके पास डाल दे, फिर उनके पास से अलग हट कर देख कि वे क्या जवाब देते हैं?''

اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَأَلْقِهْ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ۝

२९- वह (रानी) बोली, ''ऐ दरबार वालो! मेरे पास एक महत्वपूर्ण पत्र डाला गया है,

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْۤ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ۝

३०- वह सुलेमान की ओर से है और वह यह है कि 'बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम' (शुरू अल्लाह के नाम से, जो बड़ा कृपालु, महा- दयालु है);

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

३१- यह कि मेरे मुक़ाबले में सरकशी न करो, और मुस्लिम (फरमाँबरदार) हो कर मेरे पास ह़ाज़िर हो जाओ।''

اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۝

३२- उसने कहा, ''ऐ दरबार वालो! इस मामले में मुझे सुझाव दो, मैं किसी मामले का फ़ैसला नहीं करती, जब तक कि तुम मेरे पास मौजूद न हो।''

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ۝

३३- उन्होंने कहा, ''हम बड़ी ताक़त वाले और युद्ध क्षमता वाले लोग हैं, मगर फ़ैसला आप के हाथ में है, अतः आप देख लें कि आप को क्या आदेश देना है।''

قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ۝

३४- उसने कहा, ''बादशाह जब किसी आबादी में दाख़िल होते हैं, तो उसे तोड़-फोड़ देते हैं और वहाँ के सम्मानित लोगों को अपमानित कर देते हैं, और इसी तरह यह भी करेंगे;

قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ۝

३५- और मैं उनके पास कुछ उपहार (तोह़फ़ा) भेजती हूँ; फिर देखती हूँ कि क़ासिद (दूत) क्या जवाब लेकर आते हैं।''

وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌ ۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ۝

३६- तो जब वह (दूत) सुलेमान के पास पहुँचा तो (सुलेमान ने) कहा, ''क्या तुम माल से मेरी मदद करना चाहते हो, मुझे अल्लाह ने जो कुछ दिया है वह उससे कहीं बेहतर है, जो तुम्हें दिया है? बल्कि तुम ही हो, जो अपने उपहार से खुश होते हो!

فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ۫ فَمَاۤ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ۝

३७- उनके पास वापस जाओ, 'हम' उन पर ऐसी सेनाएँ लेकर आएँगे जिनका मुक़ाबला वे न कर सकेंगे, और 'हम' उन्हें अपमानित कर के वहाँ से निकाल देंगे और वे ज़लील होंगे।''

اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَاۤ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ۝

३८- (सुलेमान ने) कहा, ''ऐ दरबारियो! तुममें से कौन उसका तख़्त (सिंहासन) लेकर मेरे पास आता है, इससे पहले कि वे मुस्लिम (आज्ञाकारी) होकर मेरे पास आएँ।''

قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۝

قَالَ عِفْرِيتٌ مِّنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَن تَقُومَ مِن مَّقَامِكَ ۖ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ۝

३९- जिन्नों में से एक अफ़रीत (बलिष्ट निर्भीक) ने कहा, ''मैं उसे आप के पास ले आऊँगा, इससे पहले कि आप अपनी जगह से उठें, मुझे इसकी शक्ति है, और मैं अमानतदार हूँ।''

قَالَ الَّذِي عِندَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَن يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَآهُ مُسْتَقِرًّا عِندَهُ قَالَ هَٰذَا مِن فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي أَأَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ ۖ وَمَن شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ ۝

४०- एक व्यक्ति जिसके पास किताब का इल्म था, कहने लगा, ''मैं उसको आप के पलक झपकने से पहले हाज़िर किये देता हूँ।'' तो जब (सुलेमान ने) तख़्त को अपने पास रखा हुआ देखा तो कहा, ''यह मेरे 'रब' का फ़ज़्ल (अनुग्रह) है, ताकि मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री, और जो शुक्र करता है, वह अपने ही फ़ायदे के लिए करता है और जो नाशुक्री करता है, तो मेरा 'रब' बेनियाज़ (बेपरवाह), बड़ा करम वाला है।''

قَالَ نَكِّرُوا لَهَا عَرْشَهَا نَنظُرْ أَتَهْتَدِي أَمْ تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ۝

४१- (सुलेमान ने) कहा, ''उसके सिंहासन का रूप बदल दो, देखें वह हक़ीक़त को पा लेती है या उन लोगों में से होकर रह जाती है, जो हक़ीक़त को नहीं पाते।''

فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَٰكَذَا عَرْشُكِ ۖ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ ۚ وَأُوتِينَا الْعِلْمَ مِن قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ۝

४२- जब वह आई तो कहा गया, ''क्या तुम्हारा सिंहासन ऐसा ही है उसने कहा, ''यह तो उसी जैसा है, और हमें तो इससे पहले ही इल्म हो चुका था; और हम मुस्लिम (फ़रमाँबरदार) हो गये थे।''

وَصَدَّهَا مَا كَانَت تَّعْبُدُ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ إِنَّهَا كَانَتْ مِن قَوْمٍ كَافِرِينَ ۝

४३- और अल्लाह को छोड़ कर वह दूसरे को पूजती थी, (सुलेमान ने) उसको उससे मना किया, बेशक वह एक काफ़िर क़ौम में से थी;

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۖ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَن سَاقَيْهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّن قَوَارِيرَ ۗ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

४४- उससे कहा गया कि, ''महल में दाख़िल हो जाओ।'' उसने जब देखा तो समझी कि गहरा पानी है और अपनी पिंडुलियाँ खोल दीं; (सुलेमान ने कहा,) ''यह महल है शीशों से जुड़ा हुआ।'' वह पुकार उठी, ''ऐ रब! मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया, और अब मैं सुलेमान के साथ अपने आप को अल्लाह रब्बुलआलमीन के सामने ईमान लाती (समर्पित करती) हूँ।''

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ ۝

४५- और 'हमने' समूद की ओर उनके भाई सालेह को भेजा, ''अल्लाह की इबादत करो।'' तो वे दो गिरोह बन कर आपस में झगड़ने लगे।

४६- (सालेह़ ने) कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचाते हो? अल्लाह से माफ़ी क्यों नहीं माँगते, ताकि तुम पर रह़म किया जाए?''

قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ
الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝

४७- वे कहने लगे, ''हम तुमको और तुम्हारे साथियों को अपशगुन (मन्हूस) समझते हैं।'' तो (सालेह़ ने) कहा, ''तुम्हारा शकुन या अपशकुन तो अल्लाह की ओर से है, बल्कि बात यह है कि तुम्हारी आज़माइश हो रही है।''

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۚ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ
عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ۝

४८- और शहर में नौ व्यक्ति थे, जो ज़मीन में फ़साद बरपा करते थे, और सुधार का कोई काम न करते थे;

وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي
الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ۝

४६- वे आपस में अल्लाह की क़सम खा कर बोले, ''हम ज़रूर उस पर और उसके घर वालों पर छापा मारेंगे, फिर उसके वारिसों से कह देंगे कि हम उसके घर वालों के हलाक होने के समय मौजूद न थे, और हम बिल्कुल सच्चे हैं।''

قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ
لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا
لَصٰدِقُوْنَ ۝

५०- और उन्होंने एक चाल-चली और 'हमने' भी एक उपाय किया कि उन्हें ख़बर भी न हुई।

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا
يَشْعُرُوْنَ ۝

५१- तो देख लो! कि उनकी चाल का कैसा अंजाम हुआ! 'हमने' उनको और उनकी क़ौम, सब को हलाक कर दिया।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ
وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

५२- तो यह उनके घर हैं जो वीरान पड़े हैं, उस ज़ुल्म की वजह से जो वे करते थे, इसमें बड़ी निशानी है, उन लोगों के लिए जो समझ रखते हों।

فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝

५३- और 'हमने' उन लोगों को बचा लिया, जो ईमान लाए और डर रखते थे।

وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝

५४- और लूत को (रसूल बना कर भेजा) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, ''क्या तुम नज़रों के सामने बद्कारी (कुकर्म) करते हो?-

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ
تُبْصِرُوْنَ ۝

५५- क्या तुम औ़रतों को छोड़ कर मर्दों के पास नफ़्सानी ख्वाहिश (काम तृप्ति) के लिए जाते हो? बल्कि बात यह है कि तुम बड़े जाहिल लोग हो।''

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۚ بَلْ
اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ۝

५६- तो उनकी क़ौम के लोगों का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा, ''निकाल बाहर करो लूत के घर वालों को अपनी बस्ती से, यह लोग बड़े पारसा बनते हैं।''

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا اٰلَ لُوْطٍ
مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝

५७- तो 'हमने' उनको और उनके घर वालों को बचा लिया सिवाय उन की पत्नी के, कि 'हमने' तय कर दिया था कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी।

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُۥٓ إِلَّا ٱمْرَأَتَهُۥ قَدَّرْنَٰهَا مِنَ ٱلْغَٰبِرِينَ ۝

५८- और 'हमने' उन पर एक बारिश बरसाई, और वह बहुत ही बुरी बारिश थी उन लोगों के हक़ में, जिन्हें सचेत किया जा चुका था।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَآءَ مَطَرُ ٱلْمُنذَرِينَ ۝

५९- कह दीजिए, ''तमाम तअ़रीफें अल्लाह ही के लिए हैं, और सलाम है 'उसके' उन बन्दों पर जिनको 'उसने' चुन लिया, क्या अल्लाह बेहतर है, या जिनको ये अल्लाह का साझी ठहराते हैं?-

قُلِ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَٰمٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ ٱلَّذِينَ ٱصْطَفَىٰٓ ۗ ءَآللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

पारा नं०-२०

६०- या 'वह' जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और तुम्हारे लिए आसमान से पानी बरसाया, और उसके ज़रिये सुन्दर बाग़ उगाए जिनके वृक्षों को तुम्हारे लिए उगाना सम्भव न था; क्या अल्लाह के साथ कोई और भी मअ़बूद (उपास्य) है? (नहीं,) बल्कि ये लोग राह से हटते चले जा रहे हैं;

* أَمَّنْ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَنۢبَتْنَا بِهِۦ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَّا كَانَ لَكُمْ أَن تُنۢبِتُوا۟ شَجَرَهَآ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ۝

६१- या 'वह' जिसने धरती को ठहरने की जगह बनाई, और उसके बीच-बीच में नदियाँ बहाईं, और उसके लिए मज़बूत पहाड़ बनाए, और दो समुद्रों के बीच एक रोक लगा दी, तो क्या अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद है? (नहीं) बल्कि उनमें से अक्सर जानते ही नहीं;

أَمَّن جَعَلَ ٱلْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَٰلَهَآ أَنْهَٰرًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَٰسِىَ وَجَعَلَ بَيْنَ ٱلْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

६२- या 'वह' जो बेक़रार की फ़रियाद सुनता हो, जबकि वह उसको पुकारता है, और वह उसके कष्ट को दूर करता है, और तुम को धरती में नायब (अधिकारी) बनाता है, तो क्या अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद है? तुम बहुत कम ध्यान देते हो;

أَمَّن يُجِيبُ ٱلْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ ٱلسُّوٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ ٱلْأَرْضِ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝

६३- भला कौन तुमको थल और जल के अन्धेरों में राह दिखाता है, और जो अपनी रह़मत के आगे हवाओं को खुशख़बरी बना कर भेजता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद है अल्लाह बहुत ऊँचा है उस शिर्क से जो यह लोग करते हैं;

أَمَّن يَهْدِيكُمْ فِى ظُلُمَٰتِ ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ وَمَن يُرْسِلُ ٱلرِّيَٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهِۦٓ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ تَعَٰلَى ٱللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

أَمَّن يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝

६४- भला कौन मख़्लूक़ (सृष्टि) को पैदा करता है, फिर उसी तरह दोबारा पैदा करेगा, और जो तुम को आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद है? कह दीजिए, ''अपना प्रमाण लाओ अगर तुम सच्चे हो।''

قُل لَّا يَعْلَمُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝

६५- कह दीजिए, ''आसमानों और ज़मीन में कोई भी ऐसा नहीं, जो ग़ैब (परोक्ष) का इल्म रखता हो, सिवाय अल्लाह के, और वे नहीं जानते कि कब उठाए जाएँगे।''

بَلِ ادَّارَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّنْهَا ۖ بَلْ هُم مِّنْهَا عَمُونَ ۝

६६- बल्कि आख़िरत के बारे में उन लोगों की जानकारी 'मुन्तही' (ख़त्म) हो गयी है बल्कि वे उसकी ओर से शक में हैं, बल्कि यह उससे अन्धे हो रहे हैं;

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاؤُنَا أَئِنَّا لَمُخْرَجُونَ ۝

६७- और जो लोग काफ़िर हैं कहते हैं, ''जब हम और हमारे बाप-दादा मिट्टी हो जाएँगे, तो क्या हमें फिर (क़ब्रों) से निकाला जाएगा?-

لَقَدْ وُعِدْنَا هَٰذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِن قَبْلُ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

६८- इसका वादा तो इससे पहले भी किया जा चुका है, हमसे भी और हमारे बाप-दादा से भी, यह तो बस पहले लोगों की कहानियाँ हैं।''

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝

६९- कह दीजिए, ''ज़मीन में चल फिर कर देख लो, कि मुजरिमों का क्या अंजाम हुआ?''

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُن فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝

७०- और (ऐ मुहम्मद) आप उन पर ग़म न कीजिए, और न दिल को तंग कीजिए इनकी चालों पर, जो वे चल रहे हैं।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝

७१- और कहते हैं, ''यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो।''

قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ رَدِفَ لَكُم بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ۝

७२- कह दीजिए, ''जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो, बहुत सम्भव है कि कोई हिस्सा तुम्हारे पीछे ही लगा हो।''

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝

७३- और तुम्हारा 'रब' तो लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल (अनुग्रह) करने वाला है, मगर इनमें अक्सर लोग शुक्र नहीं करते;

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝

७४- और बेशक तुम्हारा 'रब' खूब जानता है, जो कुछ वे सीनों में छिपाए हुए हैं, और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं।

وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝

७५- और आसमानों और ज़मीन में कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है, जो एक स्पष्ट किताब में मौजूद न हो।

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝

७६- बेशक यह क़ुर्आन बनी इस्राईल पर उन बहुत सी बातों की हक़ीक़त स्पष्ट कर रहा है जिनमें वे इख़्तिलाफ़ (मतभेद) कर रहे हैं।

وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

७७- और बेशक यह हिदायत और रह़मत है ईमान वालों के लिए।

اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِىْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝

७८- तुम्हारा 'रब' अपने हुक्म से उनके बीच फ़ैसला कर देगा, और 'वह' बड़ी ताक़त वाला, इल्म वाला है।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ۝

७६- तो अल्लाह पर भरोसा रखो! तुम तो खुले ह़क़ पर हो।

اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝

८०- बेशक तुम न मुर्दों को सुना सकते हो और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो, जबकि वे पीठ फेर कर आगे जा रहे हों।

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْىِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝

८१- और तुम अन्धों को उनकी गुमराही से हटा कर राह पर नहीं ला सकते, तुम तो उन्हीं को सुना सकते हो जो 'हमारी' आयतों पर ईमान लाते हैं, और वे मुस्लिम (आज्ञाकारी) बन जाते हैं;

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ۝

८२- और जब उन पर 'हमारी' बात पूरी हो जाएगी, तो 'हम' उनके लिए ज़मीन से एक प्राणी निकालेंगे जो उनसे बयान करेगा ''इसलिए कि लोग हमारी आयतों पर ईमान नहीं लाते थे।''

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝

८३- और जिस दिन, हम हर उम्मत (समुदाय) में से उन लोगों की एक फौज इकट्ठा करेंगे, जो 'हमारी' आयतों को झुठलाया करते थे, तो उनकी सफ़बन्दी (क्रमबद्धता) की जाएगी;

حَتّٰىٓ اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِىْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

८४- यहाँ तक कि जब (सब) हाज़िर हो जाएँगे, तो 'वह' कहेगा, ''क्या तुमने 'मेरी' आयतों को झुठला दिया था और इल्म से तुम उन पर हावी न थे, फिर तुम क्या करते थे?''

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ۝

८५- और बात उन पर पूरी होकर रहेगी, उनके ज़ुल्म की वजह से, तो वे कुछ न बोल सकेंगे।

اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ

८६- क्या उन्होंने देखा नहीं! कि हमने रात को (इसलिए) बनाया कि वे उसमें सुकून ह़ासिल करें, और दिन को रोशन बनाया? बेशक इसमें बड़ी निशानियाँ हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं।

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ

८७- और जिस दिन सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा, तो जो आसमानों और ज़मीन में हैं, सब घबरा उठेंगे, सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह चाहे, और सब आ़जिज़ होकर (कान दबाए) उसके सामने ह़ाज़िर हो जाएँगे।

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۭ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۭ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ

८८- और तुम पहाड़ों को देखते हो! तो समझते हो कि वे जमे हुए हैं, मगर वे बादलों की तरह उड़ रहे होंगे, (यह) अल्लाह की कारीगरी है 'जिसने' हर चीज़ को मज़बूत बनाया, बेशक 'वह' उसकी ख़बर रखता है, जो कुछ तुम करते हो।

مَنْ جَاۗءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَىِٕذٍ اٰمِنُوْنَ

८९- जो व्यक्ति नेकी लेकर आएगा उसको उससे बेहतर बदला मिलेगा; और ऐसे लोग उस दिन की घबराहट से सुरक्षित रहेंगे।

وَمَنْ جَاۗءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ۭ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

९०- और जो बुराई लेकर आएगा तो ऐसे लोग औंधे मुँह जहन्नम में झोंक दिये जाएँगे, तुम को उन्हीं आ़माल का बदला मिलेगा जो कुछ तुम करते रहे हो।

اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۡ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

९१- मुझे यही हुक्म दिया गया है कि इस (मक्का) शहर के 'रब' की इबादत करूँ, जिसने इसे हुर्मत वाला (प्रतिष्ठित) बनाया है, और जो हर चीज़ का मालिक है, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) बन कर रहूँ;

وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ

९२- और यह कि क़ुर्आन पढ़ा करूँ, तो जो व्यक्ति सीधी राह अपनाएगा, वह अपनी ही भलाई के लिए अपनाएगा, और जो गुमराह रहा, तो कह दीजिए कि ''मैं तो बस नसीह़त करने वाला हूँ।''

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ

९३- और कह दीजिए, ''तमाम तअ़रीफें अल्लाह के लिए हैं, 'वह' तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा और तुम उन्हें पहचान लोगे, और तुम जो कुछ कर रहे हो उससे तुम्हारा रब बेख़बर नहीं है।''



अनुवाद-सूरतुल्क़ससि

यह सूरः मक्की है, इस सूरः में अ़रबी के ६०११ अक्षर, १४५४ शब्द, ८८ आयतें और ९ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

१- ता- सीन- मीम;

طٰسٓمّٓ ۝

२- ये स्पष्ट किताब की आयतें हैं।

تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ۝

३- 'हम' आप को मूसा और फ़िरऔन की कुछ सच्ची ख़बर सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।

نَتْلُوْا عَلَیْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰی وَ فِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ۝

४- कि फ़िरऔ़न धरती में सरकश हो गया था और उसने वहाँ के रहने वालों को विभिन्न गिरोहों में बाँट दिया था, उनमें से एक गिरोह को कमज़ोर बना रखा था, उनके बेटों को ज़ब्ह़ (क़त्ल) करता, और उनकी औ़रतों को ज़िन्दा रहने देता; बेशक वह फ़साद करने वालों में से था।

اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِی الْاَرْضِ وَ جَعَلَ اَهْلَهَا شِیَعًا یَّسْتَضْعِفُ طَآىِٕفَةً مِّنْهُمْ یُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَ یَسْتَحْیٖ نِسَآءَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِیْنَ ۝

५- और 'हम' चाहते थे कि उन पर अपना फ़ज़्ल (उपकार) करें जो लोग ज़मीन में कमज़ोर पड़े थे, और उनको पेशवा (नायक) बनाएँ; और उन्हीं को वारिस बनाएँ;

وَ نُرِیْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَی الَّذِیْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِی الْاَرْضِ وَ نَجْعَلَهُمْ اَىِٕمَّةً وَّ نَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِیْنَ ۝

६- और उनको ज़मीन में सत्ता (हुकूमत) दें; और फ़िरऔ़न, और हामान और उनके लश्करों को उनके ज़रिये वह दिखाएँ, जिसका उन्हें डर था।

وَ نُمَكِّنَ لَهُمْ فِی الْاَرْضِ وَ نُرِیَ فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ وَ جُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا یَحْذَرُوْنَ ۝

७- और 'हमने' मूसा की माँ को वह़्य (संकेत) किया, ''उन्हें दूध पिलाओ फिर जब तुमको इनके बारे में कुछ डर हो, तो उन्हें दरिया में डाल देना; और न डरना और न दुःखी होना, 'हम' उनको तुम्हारे पास वापस लाएँगे और उन्हें रसूल बना देंगे।''

وَ اَوْحَیْنَاۤ اِلٰۤی اُمِّ مُوْسٰۤی اَنْ اَرْضِعِیْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَیْهِ فَاَلْقِیْهِ فِی الْیَمِّ وَ لَا تَخَافِیْ وَ لَا تَحْزَنِیْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَیْكِ وَ جَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ۝

فَالْتَقَطَهُ آلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۗ إِنَّ
فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِئِينَ ۝

८- तो फ़िरऔ़न के लोगों ने उन्हें उठा लिया, ताकि वह उनके लिए दुश्मनी और ग़म का ज़रिया बने; बेशक फ़िरऔ़न और हामान और उनकी सेनाएँ बड़ी ख़ताकार (दोषी) थीं।

وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّي وَلَكَ ۖ لَا
تَقْتُلُوهُ عَسَىٰ أَن يَنفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَهُمْ لَا
يَشْعُرُونَ ۝

९- और फ़िरऔ़न की पत्नी ने कहा, ''यह मेरी और तुम्हारी आँखों की ठंडक है, इसको क़त्ल न करो, शायद यह हमें फ़ायदा पहुँचाए या हम इसे अपना बेटा ही बना लें,'' और वे (अंजाम से) बेख़बर थे।

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فَارِغًا ۖ إِن كَادَتْ لَتُبْدِي
بِهِ لَوْلَا أَن رَّبَطْنَا عَلَىٰ قَلْبِهَا لِتَكُونَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ۝

१०- और मूसा की माँ का दिल बेचैन हो गया, अगर 'हम' उसका दिल मज़बूत न कर देते तो क़रीब था कि वह इस (गुस्से) को ज़ाहिर कर देती, ताकि वह ईमान वालों में रहे।

وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ ۖ فَبَصُرَتْ بِهِ عَن جُنُبٍ وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ۝

११- और उनकी बहन से कहा कि ''तू उसके पीछे-पीछे चली जा।'' तो वह उनको दूर से देखती रही और उन लोगों को कुछ ख़बर न थी।

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِن قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ
أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ
نَاصِحُونَ ۝

१२- और 'हमने' उन (मूसा) पर पहले ही से दूध पिलाने वालियों को ह़राम कर रखा था, उन (की बहन) ने कहा, ''क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता बताऊँ जो तुम्हारे लिए इस (बच्चे) के परवरिश का ज़िम्मा ले लें, और इसका भला चाहने वाले हों?''

فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَ
لِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ ۝

१३- इस तरह 'हमने' उनको उनकी माँ के पास लौटा दिया, ताकि उनकी आखें ठंडी हों और वह ग़म न करें, और ताकि वह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَ
كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

१४- और जब वह अपनी जवानी को पहुँच गये और उनमें गम्भीरता आ गई, तो 'हमने' उनको ह़िकमत और इल्म दिया, और 'हम' नेक लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينِ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ
فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِن شِيعَتِهِ وَهَٰذَا مِنْ
عَدُوِّهِ ۖ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِن شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ
عَدُوِّهِ فَوَكَزَهُ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ ۖ قَالَ هَٰذَا مِنْ

१५- और वह शहर में ऐसे समय दाख़िल हुए जबकि वहाँ के रहने वाले बेख़बर थे, तो देखा कि दो व्यक्ति लड़ रहे हैं, एक उनके अपने गिरोह का था और दूसरा उनके दुश्मन के गिरोह का था- जो व्यक्ति उनके गिरोह का था उसने उस व्यक्ति के

عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ۝

मुक़ाबले में, जो दुश्मन के गिरोह से सम्बन्ध रखता था, उनको मदद के लिए पुकारा! तो मूसा ने उसे घूँसा मारा और उसका काम तमाम कर दिया, कहने लगे, ''यह शैतान की हरकत है, बेशक वह खुला गुमराह करने वाला दुश्मन है।''

قَالَ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ فَغَفَرَ لَهٗ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

१६- बोले, ''ऐ रब! मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया है, अतः आप मुझे माफ़ कर दें।'' तो अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया, बेशक वह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ۝

१७- उन्होंने कहा, ''ऐ रब! तेरे इस एह़सान के बाद जो 'तूने' मुझ पर किया है, मैं कभी अपराधियों का मददगार न बनूँ।''

فَاَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ خَاۗىِٕفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ۭ قَالَ لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ ۝

१८- फिर दूसरे दिन वह शहर में डरते, टोह लगाते हुए दाख़िल हुए तो क्या देखते हैं, कि वही व्यक्ति जिसने कल मदद के लिए उनको पुकारा था, आज फिर उन्हें पुकार रहा है; मूसा ने कहा, ''बेशक तू तो खुली हुई गुमराही में है।''

فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًۢا بِالْاَمْسِ ڰ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِي الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝

१६- तो जब (मूसा ने) उस (क़िब्ती) व्यक्ति को, जो उन दोनों का दुश्मन था पकड़ने का इरादा किया, तो वह पुकार उठा, ''ऐ मूसा, क्या तुम मुझे उसी तरह क़त्ल करना चाहते हो, जिस तरह तुमने कल एक व्यक्ति को क़त्ल कर दिया था? तुम ज़मीन में जब्बार (अत्याचारी) बन कर रहना चाहते हो, और सुधार करने वाला नहीं बनना चाहते।''

وَجَاۗءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۡ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّىْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝

२०- और शहर के आख़िरी ओर से एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया, और कहने लगा, ''मूसा हुकूमत के ज़िम्मेदार तुम्हें क़त्ल करने के लिए सलाह़ कर रहे हैं, तो तुम यहाँ से निकल जाओ, मैं तुम्हारा भला चाहने वाला हूँ।''

فَخَرَجَ مِنْهَا خَاۗىِٕفًا يَّتَرَقَّبُ ۡ قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

२१- तो वहाँ से (मूसा) निकल गये डरते हुए कि देखें (क्या होता है, और) कहा, ''ऐ रब! मुझे ज़ालिम क़ौम से छुटकारा दिला।''

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاۗءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَاۗءَ السَّبِيْلِ ۝

२२- और जब मद्‌यन का रूख किया, कहने लगे, ''उम्मीद है कि मेरा रब मुझे सीधे रास्ते पर डाल दे;''

२३- और जब वह मद्यन के पानी पर पहुँचे, तो उन्होंने उस पर पानी पिलाते लोगों का एक गिरोह पाया, और उनसे हट कर एक ओर दो औ़रतों को पाया, जो अपने जानवरों को रोक रही थीं, उन्होंने कहा, ''तुम्हारा क्या मामला है?'' कहा, ''हम उस समय तक पानी नहीं पिलाते, जब तक यह चरवाहे अपने जानवर निकाल न ले जाएँ, और हमारे अब्बा बहुत बूढ़े हैं।''

وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُونَ وَوَجَدَ مِن دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۖ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۖ قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّىٰ يُصْدِرَ الرِّعَاءُ ۖ وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ﴿٢٣﴾

२४- तो (मूसा ने) उन दोनों के लिए पानी पिला (बकरियों को) दिया फिर छाया की ओर पलट गये और कहा, ''ऐ रब! जो भलाई भी तू मुझ पर नाज़िल करे, मैं उसका मुहताज हूँ।''

فَسَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ﴿٢٤﴾

२५- फिर उन दो औ़रतों में से एक उनके पास शर्माती हुई आई, उसने कहा, ''मेरे पिता आप को बुला रहे हैं, ताकि आपने जो हमारे जानवरों को पानी पिलाया है, उसका बदला आप को दें।'' फिर जब वह उनके पास पहुँचे और उन्हें सारा क़िस्सा सुनाया, तो उन्होंने कहा, ''डरो नहीं! ज़ालिम क़ौम से तुम्हें छुटकारा मिल गया।''

فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا تَمْشِي عَلَى اسْتِحْيَاءٍ قَالَتْ إِنَّ أَبِي يَدْعُوكَ لِيَجْزِيَكَ أَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۚ فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ ۖ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥﴾

२६- उन दो औ़रतों में से एक ने कहा, ''ऐ अब्बा जान! इनको मज़दूरी पर रख लीजिए; अच्छा आदमी- जिनको आप मज़दूरी पर रखें- वही हो जो मज़बूत और अमानतदार हो।

قَالَتْ إِحْدَاهُمَا يَا أَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ ۖ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ ﴿٢٦﴾

२७- (मूसा से) कहा, ''मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो बेटियों में से एक का निकाह़ तुम्हारे साथ इस शर्त पर कर दूँ कि तुम आठ वर्ष तक मेरे यहाँ नौकरी करोगे; और अगर दस वर्ष पूरा करो, तो यह तुम्हारी मर्ज़ी पर होगा, मैं तुम्हें कठिनाई में डालना नहीं चाहता, अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम मुझे नेक लोगों में पाओगे।''

قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُنكِحَكَ إِحْدَى ابْنَتَيَّ هَاتَيْنِ عَلَىٰ أَن تَأْجُرَنِي ثَمَانِيَ حِجَجٍ ۖ فَإِنْ أَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِندِكَ ۖ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ ۚ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٢٧﴾

२८- (मूसा ने) कहा, ''यह बात हमारे और आप के बीच तय हो गयी है, इन दोनों में से जो भी मुद्दत, मैं पूरी कर दूँ तो मुझ पर कोई ज़्यादती न होगी; और जो समझौता हम कर रहे हैं, अल्लाह गवाह है।''

قَالَ ذَٰلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۖ أَيَّمَا الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٢٨﴾

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ مِن جَانِبِ الطُّورِ نَارًا ۚ قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٢٩﴾

२९- जब मूसा ने मुद्दत पूरी कर दी और अपने घर वालों को लेकर चले तो 'तूर' की ओर एक आग दिखाई दी, तो अपने घर वालों से कहा, ''ठहरो, मुझे आग नज़र आयी है, शायद मैं वहाँ से कोई ख़बर ले आऊँ या आग का कोई अंगारा, ताकि तुम ताप सको;

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ مِن شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبَارَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَن يَا مُوسَىٰ إِنِّي أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٠﴾

३०- जब वह उसके पास पहुँचे तो मुबारक क्षेत्र में घाटी के दाईं ओर के एक वृक्ष (पेड़) से आवाज़ आयी, ''ऐ मूसा! मैं ही अल्लाह हूँ, सारे संसार का रब!''

وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۚ يَا مُوسَىٰ أَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۖ إِنَّكَ مِنَ الْآمِنِينَ ﴿٣١﴾

३१- और यह कि ''आप अपनी लाठी डाल दें।'' फिर जब उसे देखा कि वह साँप की तरह हरकत कर रही है, तो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड़ कर भी न देखा; ''ऐ मूसा! आगे आइए और डरिए नहीं, आप बिल्कुल सुरक्षित हैं;

اسْلُكْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ وَاضْمُمْ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ ۖ فَذَانِكَ بُرْهَانَانِ مِن رَّبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٣٢﴾

३२- अपना हाथ गिरेबान में डालिए, बिना किसी ख़राबी के सफ़ेद (चमकता हुआ) निकलेगा, और डर के समय अपने बाज़ू (भुजा) को अपने से मिलाए रखिए। यह दो निशानियाँ हैं आप के रब की ओर से फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास (जाएँ) कि वे फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) लोग हैं।''

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَن يَقْتُلُونِ ﴿٣٣﴾

३३- (मूसा ने) कहा, ''ऐ रब! मैंने उनके एक व्यक्ति की हत्या की थी, इस लिए मुझे डर है कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे;

وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا فَأَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْءًا يُصَدِّقُنِي ۖ إِنِّي أَخَافُ أَن يُكَذِّبُونِ ﴿٣٤﴾

३४- और मेरे भाई हारून की ज़बान मुझसे ज़्यादा अच्छी (धारा प्रवाह) है, तो उनको मेरे साथ मददगार बना कर भेज दीजिए ताकि वह मेरी पुष्टि करे, मुझे डर है कि वे लोग मुझे झुठलाएँगे।''

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا ۚ بِآيَاتِنَا أَنتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغَالِبُونَ ﴿٣٥﴾

३५- (अल्लाह ने) कहा, '''हम' आप के भाई के ज़रिये आप के बाज़ू मज़बूत करेंगे, और आप दोनों को ग़लबा देंगे, तो 'हमारी' निशानियों की वजह से वे आप तक पहुँच न सकेंगे, और आप (और) जिन्होंने आप की पैरवी की ग़ालिब (प्रभावी) रहेंगे।''

فَلَمَّا جَاءَهُم مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَمَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا

३६- तो जब मूसा उनके पास 'हमारी' खुली हुई निशानियाँ लेकर आए, तो उन लोगों ने कहा, ''यह तो बस एक जादू है,

الْأَوَّلِينَ ۝

और हमने तो यह बात अपने अगले बाप-दादा में कभी सुनी ही नहीं।''

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَن جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِندِهِ وَمَن تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝

३७- और मूसा ने कहा, ''मेरा रब उस व्यक्ति को खूब जानता है जो 'उसके' यहाँ से हिदायत (मार्ग दर्शन) लेकर आया है, और उसको भी जिसके लिए आक़िबत का घर है, बेशक ज़ालिम कामियाब नहीं होते।''

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرِي فَأَوْقِدْ لِي يَا هَامَانُ عَلَى الطِّينِ فَاجْعَل لِّي صَرْحًا لَّعَلِّي أَطَّلِعُ إِلَىٰ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝

३८- और फ़िरऔ़न ने कहा, ''ऐ दरबारियो! मैं तो अपने सिवा तुम्हारे किसी मअ़बूद (उपास्य) को नहीं जानता; अच्छा तो ऐ हामान! तू मेरे लिए ईटें आग में पकवा, फिर मेरे लिए एक महल बना ताकि मैं मूसा के रब (उपास्य) को झाँक आऊँ, और मैं तो उसे झूठा समझता हूँ;''

وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ۝

३९- और वह और उसकी सेनाओं ने धरती में नाह़क़ घमंड किया, और समझा कि उन्हें 'हमारी' ओर लौटना ही नहीं है।

فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝

४०- तो 'हमने' उसे और उसकी सेनाओं को पकड़ लिया, और गहरे पानी में फेंक दिया; अब देख लो कि ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ?

وَجَعَلْنَاهُمْ أَئِمَّةً يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يُنصَرُونَ ۝

४१- और 'हमने' उन्हें आग की ओर बुलाने वाला सरदार बना दिया और क़ियामत के दिन उन्हें कोई मदद न मिल सकेगी।

وَأَتْبَعْنَاهُمْ فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ هُم مِّنَ الْمَقْبُوحِينَ ۝

४२- और 'हमने' इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी और क़ियामत के दिन उनका बुरा हाल होगा।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِن بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝

४३- और अगली उम्मतों को हलाक कर देने के बाद 'हमने' मूसा को किताब दी, जिससे लोगों को कुछ सूझ-बूझ हो, और (सीधे) राह पकड़ें, और रह़मत हो, ताकि वे ध्यान दें।

وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝

४४- और (ऐ मुह़म्मद) आप तो पश्चिमी किनारे पर नहीं थे, जिस समय 'हमने' मूसा को हुक्म भेजा था, और न आप गवाहों में से थे।

وَلَٰكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنتَ ثَاوِيًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَلَٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ۝

४५- और कितनी ही उम्मतों को 'हमने' पैदा किया और उन पर बहुत समय बीत गया, और न तुम मद्‌यन वालों में रहते थे कि उनको 'हमारी' आयतें सुना रहे होते, किन्तु रसूलों (सन्देशवाहकों) को भेजने वाले 'हम' ही थे।

وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَٰكِن رَّحْمَةً مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُم مِّن نَّذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

४६- और तुम 'तूर' के पास उस समय न थे जबकि 'हमने' (मूसा को) पुकारा था, बल्कि तुम्हारे रब की यह रह़मत है कि तुम उन लोगों को सचेत करो जिनके पास तुमसे पहले कोई सचेत करने वाला नहीं आया, ताकि वे ध्यान दें।

وَلَوْلَا أَن تُصِيبَهُم مُّصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

४७- और अगर यह बात न होती कि जो कुछ उनके हाथ आगे भेज चुके हैं उसकी वजह से जब उन पर कोई मुसीबत आती तो कहने लगते, ''ऐ हमारे रब! 'तूने' क्यों न हमारी ओर कोई रसूल भेजा कि हम 'तेरी' आयतों का पालन करते और ईमान वाले होते।?''

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ مِثْلَ مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ ۚ أَوَلَمْ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ مِن قَبْلُ ۖ قَالُوا سِحْرَانِ تَظَاهَرَا وَقَالُوا إِنَّا بِكُلٍّ كَافِرُونَ

४८- तो जब 'हमारी' ओर से ह़क़ (सत्य) उनके पास आ पहुँचा तो कहने लगे, ''जो चीज़ मूसा को मिली थी उसी तरह की चीज़ हम को क्यों नहीं मिली?'' क्या वे उसका इन्कार नहीं कर चुके हैं, जो इससे पहले मूसा को दिया गया था? कहने लगे, ''दोनों (तौरेत और क़ुर्आन) जादू हैं जो एक-दूसरे की मदद करते हैं,'' और कहा, 'हम' तो हर एक का इन्कार करते हैं।''

قُلْ فَأْتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِندِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهُمَا أَتَّبِعْهُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ

४९- कह दीजिए, ''अच्छा तो लाओ अल्लाह के यहाँ से कोई ऐसी किताब, जो इन दोनों से बढ़ कर राह दिखाने वाली हो ताकि मैं उसके अनुसार चलूँ, अगर तुम सच्चे हो।

فَإِن لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّمَا يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَهُمْ ۚ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

५०- फिर अगर ये तुम्हारी माँग पूरी न करें, तो जान लो कि ये केवल अपनी इच्छाओं के पीछे चलते हैं, और उससे बढ़ कर भटका हुआ कौन होगा जो अल्लाह की ओर से किसी हिदायत (मार्गदर्शन) के बिना अपनी इच्छा पर चले? बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता।

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

५१- और 'हम' उनके लिए बराबर आयतें (रहनुमाई) भेजते रहे, कि शायद वे ध्यान दें।

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ مِن قَبْلِهِ هُم بِهِ يُؤْمِنُونَ

५२- जिन लोगों को 'हमने' इससे पहले किताब दी थी, वे इस पर ईमान लाते हैं।

وَإِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ قَالُوا آمَنَّا بِهِ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ

५३- और जब (क़ुर्आन) उनको पढ़ कर सुनाया जाता है तो कहते हैं, ''हम इस पर ईमान लाए, बेशक वह ह़क़ (सत्य) है

हमारे रब की ओर से, हम तो इसके पहले से ही मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।''

أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُم مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝

५४- यही वे लोग हैं जिनको दोहरा बदला दिया जाएगा, क्योंकि सब्र करते रहे हैं और भलाई से बुराई को दूर करते हैं और जो कुछ रोज़ी 'हमने' उन्हें दी है, उसमें से खर्च करते हैं।

وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِي الْجَاهِلِينَ ۝

५५- और जब व्यर्थ (बकवास) बात सुनते हैं तो यह कहते हुए उससे मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं ''हमारे लिए हमारे आ़माल (कर्म) हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आ़माल हैं, तुम को सलाम हो, हम जाहिलों के चाहने वाले नहीं।''

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

५६- (ऐ मुहम्मद) आप जिसे चाहें राह (हिदायत) पर नहीं ला सकते, मगर अल्लाह जिसे चाहता है, राह दिखाता है और 'वही' राह पाने वालों को खूब जानता है।

وَقَالُوا إِن نَّتَّبِعِ الْهُدَىٰ مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ أَرْضِنَا ۚ أَوَلَمْ نُمَكِّن لَّهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجْبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

५७- और कहते हैं ''अगर हम तेरे दीन की पैरवी (अनुसरण) करें तो हम अपनी जगह से उचक लिए जाएँ।'' क्या ख़तूरों से सुरक्षित हरम (कअ़बः) में हमने ठिकाना नहीं दिया, जहाँ 'हमारी' ओर से रोज़ी के रूप में हर चीज़ की पैदावार खिंची चली आती हैं? मगर उनमें से अक्सर नहीं समझते।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا ۖ فَتِلْكَ مَسَاكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَن مِّن بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ۝

५८-और 'हमने' कितनी ही बस्तियों को हलाक (बरबाद) कर दिया, जो अपनी रोज़ी (दौलत) पर इतरा चली थीं; तो ये उनके घर हैं, जो उनके बाद आबाद नहीं हुए सिवाय थोड़े से लोगों के, और (अन्त में) 'हम' ही वारिस हुए।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ۝

५९- और आप का 'रब' तो उस समय तक बस्तियों को तबाह करने वाला नहीं, जब तक कि उनकी केन्द्रीय बस्ती में कोई रसूल न भेज दे, जो उन्हें 'हमारी' आयतें सुनाए। और हम बस्तियों को तबाह करने वाले नहीं, सिवाय इस हालत में कि वहाँ के रहने वाले ज़ालिम हों।

وَمَا أُوتِيتُم مِّن شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَزِينَتُهَا ۚ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

६०- और जो चीज़ें भी तुम को दी गई हैं, वह तो दुनिया की ज़िन्दगी का फ़ायदा और उसकी ज़ीनत (शोभा) है; और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाली है, तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?

اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝

६१- क्या वह व्यक्ति जिससे 'हमने' अच्छा वादा किया है और वह उसे पाने वाला भी हो, वह उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जिसे 'हमने' दुनिया की ज़िन्दगी का फ़ायदा दिया, फिर वह क़ियामत के दिन उन लोगों में हो जो पकड़ कर पेश किये जाएँगे?

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝

६२- और जिस दिन 'वह' उन (काफ़िरों) को पुकारेगा और कहेगा, ''कहाँ हैं मेरे वे साझीदार जिन पर तुम्हें गर्व था?''

قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ اِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ۝

६३- जिन लोगों पर हक़ साबित हो चुका होगा, वे बोल उठेंगे कि ''ऐ हमारे रब! यह वे लोग हैं जिनको 'हमने' बहकाया था, जिस तरह हम खुद बहके थे उसी तरह हमने इनको भी बहकाया, हमने 'तेरे' सामने स्पष्ट कर दिया कि इनसे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं, ये हमारी इबादत (उपासना) नहीं करते थे?''

وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ۝

६४- और कहा जाएगा, ''बुलाओ, अपने साझीदारों को!'' वे उनको पुकारेंगे, तो वे उनको जवाब भी न दे सकेंगे; और अ़ज़ाब देख कर रहेंगे, काश, वे सीधी राह पर होते!

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ۝

६५- और जिस दिन (अल्लाह) उनको पुकार कर कहेगा, ''तुमने रसूलों को क्या जवाब दिया था;''

فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ۝

६६- तो वे उस दिन ख़बरों से अन्धे हो जाएँगे और वे आपस में एक-दूसरे से पूछताछ भी न कर सकेंगे।

فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ۝

६७- तो जो तौबः कर ले और ईमान ले आए, और नेक अ़मल करे; तो उम्मीद है कि वह कामियाब होने वालों में से होगा।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۗ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

६८- और आपका रब पैदा करता है जो कुछ चाहता है और चुन लेता है जिसे चाहता है, उनको कोई अधिकार नहीं अल्लाह पाक और ऊँचा है उस शिर्क से, जो वे करते हैं।

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝

६९- और आपका 'रब' जानता है जो कुछ यह अपने सीने में छिपाए हुए हैं और जो ये ज़ाहिर करते हैं।

وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

७०- और 'वही' अल्लाह है, उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, 'उसी' के लिए तअ़रीफ़ें हैं दुनिया, और आख़िरत में और हुक्म भी 'उसी' का, और 'उसी' की ओर तुम लौट कर जाओगे।

७१- कह दीजिए, ''क्या तुमने विचार किया! कि अगर अल्लाह क़ियामत के दिन तक हमेशा के लिए तुम पर रात कर दे, तो अल्लाह के सिवा दूसरा कौन मअ़बूद है जो तुम्हारे लिए रोशनी लाए? तो क्या तुम सुनते नहीं?-''

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَآءٍ ۖ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ۝

७२- कह दीजिए, ''क्या तुमने विचार किया! अगर अल्लाह क़ियामत के दिन तक हमेशा के लिए तुम पर दिन कर दे, तो अल्लाह के सिवा कौन मअ़बूद है जो तुम्हारे लिए रात लाए, जिसमें तुम आराम पाते हो? तो क्या तुम देखते नहीं?-

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝

७३- और 'उसी' ने 'अपनी' रह़मत से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए, ताकि तुम उसमें आराम पाओ और उसका फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र गुज़ार बनो।''

وَمِنْ رَّحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

७४- और उस दिन जब वह उनको पुकारेगा और कहेगा, ''कहाँ हैं मेरे वे साझीदार, जिन पर तुम्हें गर्व था?''

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝

७५-और 'हम' हर उम्मत (समुदाय) में से एक गवाह निकाल लाएँगे और (लोगों से) कहेंगे, ''लाओ अपना प्रमाण,'' उस समय मालूम हो जाएगा कि ह़क़ (सत्य) अल्लाह ही की ओर से है और जो कुछ वे गढ़ते थे, वह सब उनसे गुम हो कर रह जाएगा।

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوٓا أَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

७६- क़ारून मूसा की क़ौम में से था, फिर उसने उनके ख़िलाफ़ सर उठाया और हमने उसे इतने खज़ाने दे रखे थे कि उनकी कुंजियाँ एक शक्तिशाली गिरोह मुश्किल से उठा सकता था, जब उससे उसकी क़ौम के लोगों ने कहा, ''इतराओ नहीं, अल्लाह इतराने वालों को पसंद नहीं करता;

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَءَاتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَآ إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوٓأُ بِالْعُصْبَةِ أُولِي الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ۝

७७- और जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसके ज़रिये आख़िरत का घर बना, और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर, जैसा कि अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है; और धरती में फ़साद पर न तुल, क्यों कि अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता।''

وَابْتَغِ فِيمَآ ءَاتٰكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْأٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَآ أَحْسَنَ اللّٰهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۝

قَالَ إِنَّمَآ أُوتِيتُهُۥ عَلَىٰ عِلْمٍ عِندِىٓ ۚ أَوَلَمْ يَعْلَمْ
أَنَّ ٱللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِن قَبْلِهِۦ مِنَ ٱلْقُرُونِ مَنْ
هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا ۚ وَلَا
يُسْـَٔلُ عَن ذُنُوبِهِمُ ٱلْمُجْرِمُونَ ۝

७८- (उसने) कहा, ''यह तो मुझे अपनी क़ाबलियत (व्यक्तिगत ज्ञान) की वजह से मिला है।'' क्या वह यह नहीं जानता कि अल्लाह उससे पहले कितनी ही ज़ातियों को हलाक कर चुका है जो शक्ति में उससे बढ़-चढ़ कर और जत्थे में उससे अधिक थीं? और अपराधियों से तो उनके गुनाहों के विषय में पूछा भी नहीं जाएगा।

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِۦ فِى زِينَتِهِۦ ۖ قَالَ ٱلَّذِينَ
يُرِيدُونَ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا يَٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ أُوتِىَ
قَٰرُونُ إِنَّهُۥ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ۝

७६- फिर वह (क़ारून) अपनी क़ौम के सामने ठाठ-बाट से निकला, तो जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी के चाहने वाले थे, कहने लगे, ''जो कुछ क़ारून को मिला है, काश! हमको भी मिलता, वह तो बड़ा भाग्यशाली है।''

وَقَالَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ ٱللَّهِ
خَيْرٌ لِّمَنْ ءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا ۚ وَلَا يُلَقَّىٰهَآ إِلَّا
ٱلصَّٰبِرُونَ ۝

८०- और जिन लोगों को इल्म दिया गया था, वे कहने लगे, ''तुम पर अफ़सोस हो! अल्लाह का सवाब (इनाम) बहुत बेहतर है, उसके लिए जो ईमान लाए और भले काम करे, और वह केवल सब्र करने वालों ही को मिलेगा।''

فَخَسَفْنَا بِهِۦ وَبِدَارِهِ ٱلْأَرْضَ فَمَا كَانَ لَهُۥ
مِن فِئَةٍ يَنصُرُونَهُۥ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَمَا
كَانَ مِنَ ٱلْمُنتَصِرِينَ ۝

८१- तो 'हमने' उस (क़ारून) को और उसके घर को ज़मीन में धंसा दिया, और कोई ऐसा गिरोह न हुआ जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मदद करता, और न वह खुद भी अपना बचाओ कर सका;

وَأَصْبَحَ ٱلَّذِينَ تَمَنَّوْا۟ مَكَانَهُۥ بِٱلْأَمْسِ يَقُولُونَ
وَيْكَأَنَّ ٱللَّهَ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ مِنْ
عِبَادِهِۦ وَيَقْدِرُ ۖ لَوْلَآ أَن مَّنَّ ٱللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ
بِنَا ۖ وَيْكَأَنَّهُۥ لَا يُفْلِحُ ٱلْكَٰفِرُونَ ۝

८२- और वही लोग, जो कल तक उस (क़ारून) जैसे होने की तमन्ना करते थे, सुबह उठ कर कहने लगे, हाय अफ़सोस! ''अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और (जिस को चाहता है) तंग कर देता है, अगर अल्लाह की मेहरबाानी न होती तो हमें भी धंसा देता, अफ़सोस (हम भूल ही गये थे!) कि इन्कार करने वाले कामियाब नहीं होते।''

تِلْكَ ٱلدَّارُ ٱلْءَاخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ
عُلُوًّا فِى ٱلْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۚ وَٱلْعَٰقِبَةُ
لِلْمُتَّقِينَ ۝

८३- आख़िरत का घर 'हम' उन लोगों के लिए ख़ास कर देंगे जो न तो ज़मीन पर अपनी बड़ाई चाहते हैं और न फ़साद। और परहेज़गारों का आख़िरी अंजाम भला है।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

८४- जो व्यक्ति नेक काम करके आएगा उसे उससे बढ़ कर (बदला) मिलेगा, और जो बुरे काम कर के आएगा तो बुराइयाँ करने वालों को तो बस वही मिलेगा जो बुराइयाँ करते थे।

اِنَّ الَّذِىْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ؕ قُلْ رَّبِّىْۤ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَ مَنْ هُوَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٨٥﴾

८५- 'जिसने' आप पर क़ुर्आन फर्ज़ किया है (अर्थात ज़िम्मेदारी डाली है), 'वह' आप को एक बेहतरीन अंजाम तक पहुँचाएगा, कह दीजिए, ''मेरा रब उस व्यक्ति को खूब जानता है कि कौन हिदायत (मार्ग दर्शन) लेकर आया है, और कौन खुली गुमराही में है?''

وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْۤا اَنْ يُّلْقٰۤى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾

८६- और आप को क्या उम्मीद थी कि आप पर किताब उतारी जाएगी, सिवाय इसके कि आप के रब की मेहरबानी से दी गयी, तो आप काफ़िरों के मददगार (समर्थक) न बनिए।

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٨٧﴾

८७- और वे आप को अल्लाह की आयतों से रोकने न पाएँ, इसके बाद कि वह आप पर उतारी जा चुकी है। और अपने रब की ओर बुलाइए और हरगिज़ मुश्रिकों (बहुदेववादियों) में शामिल न होइए;

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۟ كُلُّ شَىْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٨﴾

८८- और अल्लाह के साथ किसी और मअ़बूद (उपास्य) को न पुकारना 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद नहीं, हर चीज़ फ़ना (विनष्ट) हो जाने वाली है, सिवाय 'उसकी' ज़ात (स्वरूप) के, उसी की हुकूमत है और 'उसी' की ओर तुम सब लौट कर जाओगे।



अनुवाद-सूरतुल्अ़न्कबूति

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ४४१० अक्षर, ६६० शब्द, ६६ आयतें और ७ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

الٓمٓ ۝١

१- अलिफ़्- लाम्- मीम्,

أَحَسِبَ النَّاسُ أَن يُتْرَكُوٓا أَن يَقُولُوٓا ءَامَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ۝٢

२- क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे यह कह दिये जाने पर छोड़ दिये जाएँगे कि ''हम ईमान लाए'' और उनको आज़माया न जाएगा?

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَٰذِبِينَ ۝٣

३- और जो लोग इनसे पहले गुज़रे हैं 'हमने' उन लोगों को भी आज़माया था, अल्लाह तो उन लोगों को मालूम कर के रहेगा, जो सच्चे हैं और उन को भी मालूम कर के रहेगा जो झूठे हैं।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّـَٔاتِ أَن يَسْبِقُونَا ۚ سَآءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝٤

४- क्या जो लोग बुरे काम करते हैं, उन्होंने यह समझ रखा है कि ये 'हमारे' क़ाबू से बाहर निकल जाएँगे? बहुत बुरा है जो फ़ैसला ये कर रहे हैं।

مَن كَانَ يَرْجُوا لِقَآءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَءَاتٍ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝٥

५- जिसको अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो तो (जान ले कि) अल्लाह का निश्चित किया हुआ समय ज़रूर आने वाला है, और 'वह' सब कुछ सुनने, जानने वाला है।

وَمَن جَٰهَدَ فَإِنَّمَا يُجَٰهِدُ لِنَفْسِهِۦٓ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِىٌّ عَنِ الْعَٰلَمِينَ ۝٦

६- और जो व्यक्ति जिहाद (संघर्ष) करता है वह अपने ही (फ़ायदे के) लिए जिहाद करता है, अल्लाह सारी दुनिया वालों से बेपरवाह (निस्पृह) है।

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّـَٔاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِى كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝٧

७- और जो लोग ईमान लाए और अच्छे अ़मल करते रहे, तो 'हम' उनसे उनकी बुराइयों को दूर कर देंगे और उनको उनके आ़माल का बहुत अच्छा बदला देंगे।

وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ۖ وَإِن جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

८- और 'हमने' इन्सान को ताकीद की है कि अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करे, और अगर वे तुम पर ज़ोर डालें कि तुम किसी ऐसी चीज़ को 'मेरा' साझी ठहराओ जिसकी ह़क़ीक़त तुम्हें नहीं मालूम, तो उनकी बात न मानना, 'मेरी' ही ओर तुम सबको पलट कर आना है, फिर तुम को 'मैं' बता दूँगा जो कुछ तुम किया करते थे।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ۝

९- और जो लोग ईमान लाए, और अच्छे अ़मल करते रहे, 'हम' उन्हें ज़रूर अच्छे लोगों में शामिल करेंगे।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ ۖ وَلَئِن جَاءَ نَصْرٌ مِّن رَّبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۚ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ۝

१०- और कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि ''हम अल्लाह पर ईमान लाए'' फिर जब वह अल्लाह की राह में सताए गये, तो लोगों की ओर से आई हुई आज़माइश को अल्लाह का अ़ज़ाब जैसा समझ लिया, और अगर आप के 'रब' की ओर से मदद पहुँच गयी तो कहेंगे, ''हम तो तुम्हारे साथ थे क्या जो कुछ दुनिया वालों के सीने में है, अल्लाह उसे नहीं जानता?

وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنَافِقِينَ ۝

११- और अल्लाह तो उनको मालूम कर के रहेगा जो ईमान लाए, और मुनाफ़िक़ों (कप्टाचारियों) को भी मालूम कर के रहेगा!

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطَايَاكُمْ وَمَا هُم بِحَامِلِينَ مِنْ خَطَايَاهُم مِّن شَيْءٍ ۖ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

१२- और जो काफ़िर हैं वे ईमान वालों से कहते हैं, ''तुम हमारी राह पर चलो, हम तुम्हारी ख़ताओं का बोझ उठा लेंगे।'' हालाँकि वे उनकी ख़ताओं में से कुछ भी उठाने वाले नहीं, बेशक वे ही झूठे हैं।

وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ أَثْقَالِهِمْ ۖ وَلَيُسْأَلُنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

१३- और यह अपने बोझ भी उठाएँगे और अपने बोझों के साथ और बहुत से बोझ भी, और क़ियामत के दिन ज़रूर उनसे उनके बारे में पूछा जाएगा, जो कुछ यह गढ़ते रहते थे।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۝

१४- और 'हमने' नूह़ को उनकी क़ौम के पास भेजा, तो वह पचास वर्ष कम एक हज़ार वर्ष उनमें रहे, फिर उनको तूफान ने पकड़ लिया, (ऐसे ह़ाल में) कि वे ज़ालिम थे।

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِّلْعَالَمِينَ ۝

१५- तो 'हमने' उनको और नाव वालों को बचा लिया और 'हमने' नाव को तमाम दुनिया वालों के लिए निशानी बना दी।

وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝

१६- और इब्राहीम को (भेजा) जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, ''अल्लाह की इबादत करो और 'उसी' से डरो, यह तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है, अगर तुम कुछ जानो।

اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّ تَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

१७- तुम तो अल्लाह के सिवा मूर्तियों की पूजा करते हो, और झूठी बातें बनाते हो तो तुम अल्लाह को छोड़ कर जिनको पूजते हो, वे तुम्हारे लिए रोज़ी का भी अधिकार नहीं रखते, तो तुम अल्लाह ही के यहाँ से रोज़ी तलाश करो और 'उसी' की इबादत करो और उसी के शुक्र गुज़ार बनो, तुम्हें 'उसी' की ओर लौट कर जाना है।

وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝

१८- और अगर तुम झुठलाते हो तो तुमसे पहले भी बहुत सी उम्मतें झुठला चुकी हैं, और रसूल के! ज़िम्मे तो केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है।''

اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝

१९- क्या लोगों ने देखा नहीं कि अल्लाह किस तरह सृष्टि (कायनात) को पहली बार पैदा करता है? फिर उसको दोहराएगा, यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है।

قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝

२०- कह दीजिए, ज़मीन में चलो-फिरो और देखो! कि उसने किस तरह पैदाइश शुरू की, फिर अल्लाह ही दोबारा उठा खड़ा करेगा, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) रखता है।''

يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ۝

२१- 'वह' जिसे चाहे अज़ाब दे, और जिस पर चाहे रहम करे, और 'उसी' की ओर तुम्हें पलट कर जाना है।''

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ؗ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝

२२- और तुम न तो धरती में उसके क़ाबू से बाहर निकल सकते हो और न आसमान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई काम बनाने वाला है और न मददगार।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖۤ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِىْ وَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

२३- और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का और 'उसके' मिलने का इन्कार किया, वे 'मेरी' रहमत से मायूस (निराश) हो गये हैं, और वे वही हैं जिनके लिए दुःख देने वाला अज़ाब होगा।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

२४- फिर उनकी क़ौम के लोगों का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा, ''मार डालो उसे या जला दो!'' फिर

لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

अल्लाह ने उनको आग से बचा लिया, बेशक उन के लिए निशानियाँ हैं, जो ईमान रखते हैं।

وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۡ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝

२५- और (इब्राहीम ने) कहा, ‘‘अल्लाह के सिवा तुमने जो मूर्तियों को केवल दुनिया की आपसी ज़िन्दगी में मुहब्बत के लिए, (उपास्य) ठहरा रखा है, फिर क़ियामत के दिन तुम एक-दूसरे का इन्कार करोगे, और एक-दूसरे पर लानत करोगे, और तुम्हारा ठिकाना आग होगी और कोई भी तुम्हारा मदद्गार न होगा।’’

فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

२६- फिर लूत ने उनकी बात मानी और (इब्राहीम ने) कहा, ‘‘मैं अपने रब की ओर हिजरत (अर्थात अल्लाह के लिए घर बार छोड़ना) करता हूँ, बेशक वह ग़ालिब, हिकमत वाला है।’’

وَوَهَبْنَا لَهٗ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

२७- और ‘हमने’ उसे इस्हाक़ और याकूब दिये और उसके वंश में नुबूवत और किताब का सिल्सिला जारी किया, और ‘हमने’ उसे दुनिया में भी उसका अच्छा बदला दिया, और आख़िरत में भी वह अच्छे लोगों में होंगे।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۡ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝

२८- और ‘हमने’ लूत को भेजा, जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, ‘‘तुम बेहयाई का काम करते हो?’’ जो तुमसे पहले दुनिया वालों में से किसी ने नहीं किया।

اَىِٕنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ۭ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝

२९- क्या तुम पुरूषों से काम इच्छा पूरी करते हो, और रहज़नी (लूट-मार) करते हो, और अपनी मजलिसों में बुरे काम करते हो?’’ तो उस क़ौम के पास इसके सिवा कोई जवाब न था कि उन्होंने कहा, ‘‘ले आओ अल्लाह का अ़ज़ाब, अगर तुम सच्चे हो।’’

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ۝

३०- (लूत ने) कहा, ‘‘ऐ मेरे रब! फ़साद पैदा करने वाले लोगों के मुक़ाबले में मेरी मदद कर।’’

وَلَمَّا جَاۗءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝

३१- और जब ‘हमारे’ रसूल (फ़रिश्ते) इब्राहीम के पास खुशख़बरी लेकर आए तो उन्होंने कहा, ‘‘हम इस बस्ती के रहने वालों को हलाक (नाश) करने आए हैं, उसके रहने वाले ज़ालिम हैं।’’

३२- (इब्राहीम ने) कहा, ''वहाँ तो लूत भी हैं;'' वे बोले जो कोई भी वहाँ है, हम खूब जानते हैं, हम उनको और उनके घर वालों को बचा लेंगे, सिवाय उनकी पत्नी के, वह पीछे रह जाने वालों में से होगी।''

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا ۚ قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا ۖ لَنُنَجِّيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۝

३३- और जब हमारे रसूल (फ़रिश्ते) लूत के पास आए, तो उनको देख कर परेशान और दुखी हुए और (फ़रिश्तों ने) कहा, ''डरो नहीं, न ग़म करो हम तुमको और तुम्हारे घर वालों को बचा लेंगे, सिवाय तुम्हारी पत्नी के वह पीछे रह जाने वालों में होगी।''

وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۖ إِنَّا مُنَجُّوكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۝

३४- हम इस बस्ती के रहने वालों पर आसमान से एक अ़ज़ाब उतारने वाले हैं, इसलिए कि यह नाफ़रमान हैं।''

إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝

३५- और 'हमने' उसकी एक स्पष्ट निशानी छोड़ दी है, उन लोगों के लिए जो कुछ अक़्ल रखते हों।

وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

३६- और मद्‌यन की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा, तो उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो, अल्लाह ही की इबादत करो, और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखो; और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो।''

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝

३७- फिर उन्होंने उसे झुठला दिया, तो भूकम्प ने उनको आ पकड़ा, तो वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝

३८- और आ़द और समूद को भी (हलाक किया) और तुम्हारे लिए उनकी बस्तियाँ (आँखों के सामने) स्पष्ट हैं, और शैतान ने उनके काम अच्छे कर के दिखाए, (जो वे करते थे) और उनको (सीधी) राह से रोक रखा, जब कि वे बड़े सूझ-बूझ वाले थे।

وَعَادًا وَثَمُودَا وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِنْ مَسَاكِنِهِمْ ۖ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۝

३९- और क़ारून और फ़िरऔन और हामान को, (हमने हलाक किया) और मूसा उनके पास खुली निशानियाँ ले कर आए थे, मगर उन्होंने ज़मीन में अपनी बड़ाई का दम भरा, हालाँकि वे ज़मीन में 'हमारे' क़ाबू से निकल जाने वाले न थे।

وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَابِقِينَ ۝

४०- तो 'हमने' हर एक को उनके अपने गुनाहों की वजह से पकड़ लिया, फिर उनमें से किसी पर तो पत्थराव करने वाली आँधी भेजी, और किसी को बड़े ज़ोर की चिघाड़ (धमाके) ने

فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْبِهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ مَنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا

كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ۝

आ पकड़ा, और किसी को 'हमने' ज़मीन में धंसा दिया, और किसी को डुबो दिया, और अल्लाह उन पर ज़ुल्म करने वाला न था, बल्कि वे खुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे थे।

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ
كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۭ وَاِنَّ اَوْهَنَ
الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝

४१- जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर अपने दूसरे संरक्षक बना लिए हैं, उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है जिसने अपना घर बनाया, और बेशक सब घरों से कमज़ोर मकड़ी का घर होता है, काश! यह जानते।

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ
شَيْءٍ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

४२- अल्लाह उन चीज़ों को खूब जानता है जिन्हें यह 'उससे' हट कर पुकारते हैं, और 'वह' बड़ी ताक़त वाला, हिक़मत वाला है।

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ
اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ۝

४३- और यह मिसालें 'हम' लोगों के लिए बयान करते हैं, और इसको वही लोग जानते हैं, जो इल्म वाले हैं।

خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

४४- अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हिक़मत के साथ पैदा किया, निश्चय ही इसमें ईमान वालों के लिए बड़ी निशानी है।

पारा नं०-२१

* اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ۭ اِنَّ
الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ ۭ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ
اَكْبَرُ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ۝

४५- (ऐ मुहम्मद) तिलावत (पढ़ा) कीजिए उस किताब की जो आप की ओर वह्य की गई है, और नमाज़ क़ायम कीजिए, निश्चय ही नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है, और अल्लाह का ज़िक्र (ध्यान) बहुत बड़ी चीज़ है, और जो कुछ तुम रचते बनाते हो अल्लाह उसे जानता है।

وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِىَ اَحْسَنُ ڰ اِلَّا
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا
وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَاِلٰـهُنَا وَاِلٰـهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ
لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝

४६- और किताब वालों से बहस कीजिए मगर बेहतर तरीक़े से, सिवाय उनके जो उनमें से ज़ालिम हैं! और कह दीजिए, ''हम ईमान लाए हैं उस चीज़ पर जो हमारी ओर भेजी गई है, और उस चीज़ पर भी, जो तुम्हारी ओर भेजी गई थी, और हमारा और तुम्हारा अल्लाह एक ही है, और हम 'उसी' के फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी) हैं।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَاۗءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ۭ وَمَا يَجْحَدُ
بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ۝

४७- और इसी तरह 'हमने' आप की ओर किताब उतारी है, तो जिन लोगों को 'हमने' किताबें दी थीं वे उस पर ईमान ले आते हैं और कुछ उन लोगों में से ऐसे भी हैं, कि वह भी इस पर ईमान ले आते हैं, और जो नाफ़रमान हैं 'वही' हमारी आयतों को नहीं मानते।

४८- और इससे पहले तुम न कोई किताब पढ़ते थे, और न उसे अपने हाथ से लिख ही सकते थे, ऐसा होता तो बातिल वाले (झूठा ठहराने वाले) ज़रूर शक करते।

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ
بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ

४६- बल्कि यह खुली निशानियाँ हैं उन लोगों के सीनों में, जिन्हें कुछ इल्म मिला है, और 'हमारी' आयतों का इन्कार तो ज़ालिम ही करते हैं।

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ
وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَاۤ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ

५०- और कहते हैं कि इस पर इनके 'रब' की ओर से निशानियाँ क्यों नहीं उतारी गईं, कह दीजिए, ''निशानियाँ तो अल्लाह ही के अधिकार में हैं, और मैं तो खुली हुई नसीहत करने वाला हूँ।''

وَقَالُوْا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ
اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَاۤ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ

५१- क्या इन लोगों के लिए यह काफ़ी नहीं कि 'हमने' आप पर किताब उतारी; जिसे पढ़कर सुनाया जाता है, निश्चय ही इसमें रह़मत और नसीह़त है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।

اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى
عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ

५२- कह दीजिए, ''अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है, 'वह' जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। और जो लोग बातिल (असत्य) पर यक़ीन रखते हैं और अल्लाह से इन्कार करते हैं, वही तबाह होने वाले हैं।

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَ
كَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ

५३- और यह लोग आप से अ़ज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं अगर इसका एक निर्धारित समय न होता तो उन पर ज़रूर अ़ज़ाब आ जाता, और वह तो अचानक उन पर ज़रूर आकर रहेगा, और उनको ख़बर भी न होगी।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْلَاۤ اَجَلٌ مُّسَمًّى
لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا
يَشْعُرُوْنَ

५४- यह आप से अ़ज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं, और जहन्नम तो इन्कार करने वालों को घेरे में लिए हुए है।

يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ
بِالْكٰفِرِيْنَ

५५- जिस दिन अ़ज़ाब उन्हें उनके ऊपर से ढ़ाँक लेगा, और उनके पैर के नीचे से भी और (अल्लाह) कहेगा, ''चखो उसका मज़ा जो कुछ तुम करते रहे।''

يَوْمَ يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ
اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

५६- ऐ 'मेरे' बन्दो! जो ईमान लाए हो, 'मेरी' ज़मीन विशाल है तो तुम 'मेरी' ही इबादत करो।

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ
فَاعْبُدُوْنِ

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝

५७- हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है, फिर तुम हमारी ही ओर लौट कर आओगे।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُم مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ۝

५८- और जो लोग ईमान लाए, और अच्छे अ़मल करते रहे, उनको 'हम' जन्नत के ऊँचे-ऊँचे महलों (ऊपरी मन्ज़िल) में जगह देंगे, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे उसमें हमेशा रहेंगे, क्या ही अच्छा बदला है (नेक) अ़मल करने वालों का?

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝

५९- जिन्होंने सब्र किया और अपने 'रब' पर भरोसा रखा;

وَكَأَيِّن مِّن دَابَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

६०- और कितने ही जानदार हैं, जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते, अल्लाह ही उनको रोज़ी देता है, और तुम को भी, और 'वह' सुनने वाला, जानने वाला है।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝

६१- और अगर तुम इनसे पूछो कि किसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और सूरज और चाँद को काम से लगाया, तो कह देंगे, ''अल्लाह ने,'' तो ये किधर फिरे जाते हैं।

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

६२- अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है, और जिसकी चाहता है नपी-तुली कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّن نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝

६३- और अगर आप उनसे पूछें कि किसने आसमान से पानी बरसाया, फिर उसके ज़रिये ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा किया, तो कहेंगे ''अल्लाह ने,'' कह दीजिए, ''तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, मगर अक्सर लोग समझते नहीं।''

وَمَا هَٰذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهْوٌ وَلَعِبٌ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

६४- और यह दुनिया की ज़िन्दगी तो केवल दिल का बहलावा और खेल है, और आख़िरत का घर ही अस्ल ज़िन्दगी है, क्या ही अच्छा होता कि यह लोग जान लेते?

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ۝

६५- फिर जब यह नाव में सवार होते हैं तो अल्लाह को उसके दीन के लिए ख़ालिस (निष्ठावान) हो कर पुकारते हैं, फिर 'वह' जब उनको छुटकारा देकर ख़ुश्की (थल) की ओर पहुँचा देता है, तो (छुटकारा पाते ही) वह 'उसका' साझीदार ठहराने लगते हैं।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ وَلِيَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾

६६- ताकि जो ‘हमने’ उन्हें दिया है, उससे नाशुक्री करें और मज़े उड़ाएँ, तो जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا آمِنًا وَيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۚ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَكْفُرُونَ ﴿٦٧﴾

६७- क्या उन्होंने देखा नहीं! कि ‘हमने’ ह़रम (कअ़बः) को अम्न वाला बनाया, और लोग उनके आस-पास से उचक लिए जाते हैं तो क्या फिर भी बातिल (असत्य) को मानते हैं, और अल्लाह के नेअ़मत की नाशुक्री करते हैं;

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْكَافِرِينَ ﴿٦٨﴾

६८- और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा, जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या ह़क़ को झुठलाए, जबकि वह उसके पास आ चुका हो? क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं होगा?

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٦٩﴾

६९- और जो लोग ‘हमारी’ राह में जिहाद (कोशिश) करेंगे ‘हम’ ज़रूर उन पर अपनी राहें खोल देंगे, और अल्लाह भले काम करने वालों के साथ है।



अनुवाद-सूरतुर्रूमि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ३५४७ अक्षर, ८२७ शब्द, ६० आयतें, और ६ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

१- अलिफ़्- लाम्- मीम्,

الٓمٓ ۝

२- रूम (वाले) पराजित हो गये,

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ۝

३- क़रीब के इलाक़े में, और वे अपनी पराजय के बाद बहुत जल्द विजयी हो जाएँगे,

فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ۝

४- कुछ ही साल में, हुक्म तो अल्लाह ही का है पहले भी और बाद में भी, और उस दिन ईमान वाले खुश हो जाएँगे।

فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۬ؕ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ وَيَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝

५- अल्लाह की मदद से, ‘वह’ जिसकी चाहता है मदद करता है, और ‘वही’ शक्तिशाली, रह़म वाला है।

بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝

६- और यह अल्लाह का वादा है, और अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते;

وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

७- यह तो दुनिया की ज़िन्दगी के बाहरी रूप को ही जानते हैं, और आख़िरत से ग़ाफ़िल (बेपरवाह) हैं।

يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖۚ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝

८- क्या इन्होंने अपने आप में सोच -विचार नहीं किया कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को और उनके बीच की तमाम चीज़ों को, ह़क़ के साथ और एक निश्चित समय तक के लिए पैदा किया, और बहुत से लोग तो अपने रब से मिलने का इन्कार ही करते हैं।

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۗ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ۝

९- क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं, कि देख लेते कि उन लोगों का अंजाम कैसा हुआ, जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं? वे

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً

وَّ اَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَ
جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۭ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝

इनसे अधिक शक्तिशाली थे, और उन्होंने ज़मीन को जोता था और इनसे ज़्यादा अधिक आबाद किया था, जैसा इन्होंने आबाद किया उनके पास उनके रसूल स्पष्ट निशानियाँ लेकर आते रहे, तो अल्लाह उन पर ज़ुल्म करने वाला न था, बल्कि खुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे थे

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓاٰى اَنْ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

१०- तो जिन लोगों ने बुरा किया था उनका अंजाम भी बुरा हुआ, क्योंकि अल्लाह की आयतों को झुठलाते, और उनका मज़ाक़ उड़ाते रहे।

اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

११- अल्लाह ही (सृष्टि को) पहली बार पैदा करता है, 'वही' उसको फिर पैदा करेगा, फिर तुम 'उसी' की ओर लौट जाओगे।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝

१२- और जिस दिन वह घड़ी आ जाएगी, उस दिन मुजरिम मायूस (निराश) हो जाएँगे;

وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآىِٕهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا
بِشُرَكَآىِٕهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝

१३- और उनके ठहराए हुए साझीदारों में से कोई उनका सिफ़ारिश करने वाला न होगा, और वे अपने ठहराए हुए साझीदारों का इन्कार करेंगे।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ۝

१४- और जिस दिन वह घड़ी आ जाएगी, उस दिन वे सब अलग-अलग गिरोह हो जाएँगे।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ
رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ۝

१५- तो जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे, वे बाग़ में खुशहाल होंगे;

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ
فَاُولٰٓىِٕكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ۝

१६- और जिन लोगों ने इन्कार किया और हमारी आयतों और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाया होगा, तो ऐसे ही लोग अ़ज़ाब के लिए हाज़िर किये जाएँगे।

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ۝

१७- तो अल्लाह की तस्बीह़ करो, शाम के वक्त भी और सुबह़ के वक्त भी।

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ
تُظْهِرُوْنَ ۝

१८- और उसी के लिए तमाम तअ़रीफ़ें हैं आसमानों और ज़मीन में, और पिछले पहर और जब तुम पर दोपहर हो।

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ
وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝

१९- 'वह' ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से, और ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है, और इसी तरह तुम निकाले जाओगे।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ۝

२०- और यह उसकी निशानियों में से है कि 'उसने' तुम्हें मिट्टी से पैदा किया; फिर अब तुम इन्सान होकर फैलते जा रहे हो।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

२१- और यह भी उसकी निशानियों में से है कि 'उसने' तुम्हारे लिए तुम्हारे बीच जोड़े पैदा किये, ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो, और तुम्हारे बीच मुहब्बत और रह्मत पैदा की, इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच विचार करते हैं;

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ۝

२२- और 'उसकी' निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी भाषाओं (बोलियों) और तुम्हारी रंगतों का भाँति-भाँति का होना, इसमें बड़ी निशानियाँ हैं इल्म वालों के लिए।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاۗؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ۝

२३- और 'उसकी' निशानियों में से है तुम्हारा रात और दिन में सोना, और उसके फ़ज़्ल (रोज़ी) का तलाश करना, इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝

२४- और 'उसकी' निशानियों में से यह भी है कि वह तुमको बिजली की चमक दिखाता है, जो डर पैदा करती है और उम्मीद भी, और आसमान से पानी बरसाता है और ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा कर देता है, बेशक इसमें निशानियाँ हैं अक़्ल वालों के लिए,

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَاۗءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ۭ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ڰ مِّنَ الْاَرْضِ ڰ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ۝

२५- और 'उसकी' निशानियों में से यह भी है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं, फिर जब 'वह' तुमको ज़मीन में से पुकारेगा, तो तुम अचानक निकल पड़ोगे।

وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ۝

२६- और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ भी है 'उसी' का है, सब उसी के फरमाँबरदार हैं।

وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ۭ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

२७- और 'वही' है जो ख़िल्क़त (लोगों) को पहली बार पैदा करता है फिर उसको दोबारा पैदा करेगा, और यह उसके लिए बहुत आसान है आसमानों और ज़मीन में 'उसी' की शान सबसे ऊँची है। और 'वह' बड़ा शक्तिशाली, हिकमत वाला है।

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ أَنفُسِكُمْ ۖ هَل لَّكُم مِّن مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُم مِّن شُرَكَاءَ فِي مَا رَزَقْنَاكُمْ فَأَنتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنفُسَكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

२८- ‘वह’ तुम्हारे लिए खुद तुम्हारे ही ह़ाल की एक मिसाल देता है कि क्या रोज़ी हमने तुम्हें दी है, उसमें तुम्हारे बाँदी (अधीनस्थ) या ग़ुलामों में से कोई तुम्हारे साझीदार हैं, और क्या तुम बराबर के हक़दार समझते हो, और क्या तुम उनका डर रखते हो जैसा कि तुम अपनों का डर रखते हो, इस तरह ‘हम’ उन लोगों के लिए आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं;

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ فَمَن يَهْدِي مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ۝

२९- (नहीं) बल्कि यह ज़ालिम बिना इल्म के अपनी इच्छाओं के पीछे चल रहे हैं, तो अब कौन उन्हें राह दिखाएगा जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो? और उनका तो कोई मदद्गार नहीं;

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۚ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

३०- तो तुम एक ओर के होकर अपने रूख़ को दीन (धर्म) पर जमा दो, वह स्वभाविक दीन जिस पर अल्लाह ने इन्सानों को पैदा किया, अल्लाह की बनाई हुई संरचना बदली नहीं जा सकती, यही दीन सीधा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

مُنِيبِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

३१- ‘उसी’ की ओर ध्यान रखो, और ‘उसी’ का डर रखो और नमाज़ क़ायम करो, और साझी ठहराने वालों में से न हो जाओ,

مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا ۖ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ۝

३२- (और न) उन लोगों में, जिन्होंने अपने दीन (धर्मों) को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और गिरोहों में बट गये, हर गिरोह के पास जो कुछ है, वह उसी में ख़ुश हैं।

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُم مُّنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا أَذَاقَهُم مِّنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ۝

३३- और जब लोगों को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो अपने ‘रब’ को पुकारते हैं उसी की ओर रूजूअ़ होते हैं, फिर जब वह अपनी रह़मत का मज़ा चखाता है, तो उनमें से एक गिरोह अपने रब का साझी ठहरा लेता है;

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝

३४- ताकि जो कुछ ‘हमने’ उसकों दिया है उसकी नाशुक्री करें, ‘‘अच्छा तुम मज़े उड़ा लो बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा।’’

أَمْ أَنزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ۝

३५- क्या हमने कोई प्रमाण उतारा है कि वह उसके ह़क़ में बोलता हो, जो वे उसके साथ साझी ठहराते हैं।

وَإِذَآ أَذَقْنَا ٱلنَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا۟ بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ
سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ۝

३६- और जब 'हम' लोगों को अपनी रह़मत का मज़ा चखाते हैं तो वे इतराने लगते हैं; और जब उनके करतूतों की वजह से उन पर कोई मुसीबत आ जाती है, तो तुरन्त निराश हो जाते हैं

أَوَلَمْ يَرَوْا۟ أَنَّ ٱللَّهَ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ
إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

३७- क्या देखते नहीं! कि अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है, बेशक इसमें निशानियाँ हैं, उनके लिए जो ईमान लाते हैं।

فَـَٔاتِ ذَا ٱلْقُرْبَىٰ حَقَّهُۥ وَٱلْمِسْكِينَ وَٱبْنَ
ٱلسَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ ٱللَّهِ ۖ
وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ۝

३८- तो रिश्तेदारों को उनका ह़क़ दो, और मुहताज़ों व मुसाफ़िरों को भी, यह बेहतर है उन लागों के लिए जो अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता) के चाहने वाले हों और यही कामियाब होने वाले हैं।

وَمَآ ءَاتَيْتُم مِّن رِّبًا لِّيَرْبُوَا۟ فِىٓ أَمْوَٰلِ ٱلنَّاسِ فَلَا
يَرْبُوا۟ عِندَ ٱللَّهِ ۖ وَمَآ ءَاتَيْتُم مِّن زَكَوٰةٍ تُرِيدُونَ
وَجْهَ ٱللَّهِ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُضْعِفُونَ ۝

३९- और तुम जो कुछ ब्याज (सूद) पर देते हो, ताकि वह लोगों के मालों में मिलकर बढ़ जाए तो वह अल्लाह के यहाँ नहीं बढ़ता और जो तुम ज़कात अल्लाह की खुशी के लिए देते हो, तो ऐसे ही लोग अपना माल बढ़ाते हैं।

ٱللَّهُ ٱلَّذِى خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ
يُحْيِيكُمْ ۖ هَلْ مِن شُرَكَآئِكُم مَّن يَفْعَلُ مِن
ذَٰلِكُم مِّن شَىْءٍ ۚ سُبْحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

४०- अल्लाह 'वह' है जिसने तुमको पैदा किया, फिर तुमको रोज़ी दी; फिर तुम को मौत देता है; फिर तुमको ज़िन्दा करेगा, तो क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में से कोई ऐसा है, जो इनमें से कोई काम भी कर सकता हो? 'वह' पाक है और ऊँचा है उससे, जिसे ये साझी ठहराते हैं।

ظَهَرَ ٱلْفَسَادُ فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِى ٱلنَّاسِ
لِيُذِيقَهُم بَعْضَ ٱلَّذِى عَمِلُوا۟ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

४१- थल और जल में फ़साद बरपा हो गया है खुद लोगों के ही हाथों के करतूतों से, ताकि उनको उनके करतूतों का मज़ा चखाए, शायद वे (सच्चाई की ओर) लौट आएँ।

قُلْ سِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ فَٱنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ
عَٰقِبَةُ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلُ ۚ كَانَ أَكْثَرُهُم مُّشْرِكِينَ ۝

४२- कह दीजिए, ''ज़मीन में चल-फिर कर देख लो, कि उनका कैसा अंजाम हुआ, जो पहले गुज़र चुके हैं, उनमें अक्सर मुश्रिक (बहुदेववादी) ही थे।''

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ ٱلْقَيِّمِ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِىَ يَوْمٌ
لَّا مَرَدَّ لَهُۥ مِنَ ٱللَّهِ ۖ يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ ۝

४३- तो तुम अपना रूख़ उस सीधे दीन की ओर किये रहो, इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाए जिसके लिए वापसी नहीं, उस दिन लोग अलग-अलग हो जाएँगे;

४४- जिस व्यक्ति ने इन्कार किया तो उसका इन्कार (का वबाल) उसी पर है, और जिसने अच्छे अ़मल किये, वे अपने ही लिए राह आसान कर रहे हैं;	مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ۝
४५- ताकि 'वह' अपने फ़ज़्ल (अनुग्रह) से उन लोगों को अच्छा बदला दे, जो लोग ईमान लाए और भले काम करते रहे, बेशक वह काफ़िरों को पसंद नहीं करता।	لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝
४६- और 'उसकी' निशानियों में से है कि वह हवाओं को भेजता है जो खुशख़बरी देती हैं, ताकि ''वह अपनी रह़मत का मज़ा चखाए और ताकि उसके हुक्म से नौकाएँ चलें, ताकि तुम उसका फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम उसके शुक्रगुज़ार बनो।	وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝
४७- और 'हमने' आप से पहले भी रसूल इनकी ओर भेजे थे और वे उनके पास स्पष्ट निशानियाँ लेकर आए थे, फिर हमने उन लोगों को सज़ा दी, जिन्होंने अपराध किया, और 'हम' पर तो ह़क़ है कि ईमान वालों की मदद करें।	وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَاۗءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ۭ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝
४८- अल्लाह ही तो है जो हवाओं को भेजता है, फिर वे बादलों को उठाती हैं; फिर जिस तरह चाहता है आसमान में फैला देता है, और उन्हें परतों और टुकड़ियों का रूप देता है, फिर तुम देखते हो कि उसके बीच से वर्षा की बूँदे टपकी चली आती हैं, फिर जब वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है उसे बरसा देता है, तो वे खुश हो उठते हैं;	اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَاۗءِ كَيْفَ يَشَاۗءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝
४९- और इससे पहले तो वे इसके बरसाए जाने के बारे में मायूस थे।	وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ۝
५०- तो अल्लाह की रह़मत की निशानियों की ओर देखो! कि वह किस तरह ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है बेशक वह मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।	فَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝
५१- और अगर 'हम' एक-दूसरी हवा भेज दें, जिसके प्रभाव से वे उस (खेती) को पीली पड़ी हुई देखें, तो इसके बाद वे इन्कार करने लग जाएँ।	وَلَىِٕنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ يَكْفُرُوْنَ ۝

فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۝	५२- तो तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो, जबकि वे पीठ फेरे चले जा रहे हों;
وَمَا أَنتَ بِهَادِ الْعُمْيِ عَن ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ۝	५३- और न तुम अन्धों को उनकी गुमराही से निकाल कर सीधी राह पर ला सकते हो, तुम तो उन्हीं लोगों को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, तो 'वही' मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।
اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِن بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِن بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ۝	५४- अल्लाह ही तो है, जिसने तुम्हें कमज़ोर हालत में पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद ताक़त दी; फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया, वह जो चाहता है पैदा करता है वह जानने वाला, क़ुदरत वाला (सामर्थ्यवान) है।
وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ۝	५५- और जिस दिन वह घड़ी आ जाएगी मुजरिम क़सम खाकर कहेंगे कि वे घड़ी भर से ज़्यादा नहीं रहे, इस तरह वे (रास्ते से) उल्टे जाते थे।
وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَىٰ يَوْمِ الْبَعْثِ ۖ فَهَٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَٰكِنَّكُمْ كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝	५६- और जिन लोगों को इल्म और ईमान मिला था वे कहेंगे कि, ''अल्लाह के रिकार्ड में तो तुम ज़िन्दा होकर उठने के दिन तक ठहरे रहे हो, तो यही ज़िन्दा होकर उठने का दिन है और तुमको इसका इल्म न था।''
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝	५७- तो उस दिन ज़ालिमों के लिए कोई उज़्र (सफ़ाई) काम न आएगा, और न उनसे यह चाहा जाएगा कि वह तौबः करें।
وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَلَئِن جِئْتَهُم بِآيَةٍ لَّيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ۝	५८- और 'हमने' इस क़ुर्आन में लोगों के लिए हर तरह की मिसाल पेश की है, चाहे आप कोई भी निशानी उनके पास ले आएँ, जिन लोगों ने इन्कार किया, वे तो यही कहेंगे, ''तुम तो बस झूठ बोलते हो।
كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝	५९- इसी तरह अल्लाह मुहर (ठप्पा) लगा देता है उन लोगों के दिलों पर जो इल्म नहीं रखते।
فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ وَلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ۝	६०- तो आप सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और आप कों हरगिज़ बेवज़न (हल्का) न पाएँ, जो लोग यक़ीन नहीं रखते।



अनुवाद-सूरतु लुक़्मान

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के २२१७ अक्षर, ५५४ शब्द, ३४ आयतें और ४ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

الٓمّٓ

१- अलिफ़्-लाम्-मीम्।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ

२- यह ह़िकमत वाली किताब की आयतें हैं;

هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ

३- हिदायत और रह़मत है भले काम करने वालों के लिए;

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ

४- जो नमाज़ क़ायम करते और ज़कात देते और आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं;

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

५- यही अपने 'रब' की ओर से राह पर हैं, और यही हैं कामियाब होने वाले।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۚ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ

६- और लोगों में कुछ ऐसे हैं, जो दिल को लुभाने वाली बातों को ख़रीदते हैं, ताकि बिना किसी इल्म के अल्लाह की राह से भटकाएँ और उनका मज़ाक़ उड़ाएँ, ऐसे लोगों के लिए ज़लील करने वाला (अपमान जनक) अ़ज़ाब है।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ

७- और जब उसे 'हमारी' आयतें सुनाई जाती हैं तो वह अपने आप को बड़ा समझता हुआ पीठ फेर कर चल देता है, जैसे उसने उसे सुना ही न हो, मानो उसके कान बहरे हैं तो उसे दुःख देने वाले अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ

८- जो लोग ईमान लाए और भले काम करते रहे उनके लिए नेअ़मतों के बाग़ हैं;

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

९- उनमें वे हमेशा रहेंगे, यह अल्लाह का पक्का वादा है, और वह बड़ी ताक़त वाला, ह़िकमत वाला है

१०- 'उसने' आसमानों को पैदा किया, बिना खम्बों के, जैसा कि तुम देखते हो, 'उसी ने' ज़मीन में पहाड़ डाल दिये कि तुम को लेकर लुढ़क न जाए, और उसमें हर तरह के जानवर फैला दिये, और हम ही ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उसमें हर तरह की अच्छी चीज़ें उगाईं।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِى
رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ؕ
وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ
كَرِيْمٍ ۝

११- यह है अल्लाह की पैदाइश, तो मुझे दिखाओ कि उन्होंने क्या पैदा किया है, जो उसके सिवा (पूज्य) हैं बल्कि यह ज़ालिम तो खुली गुमराही में पड़े हैं।

هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِىْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ
دُوْنِهٖ ؕ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

१२- और 'हमने' लुक़्मान को हिक़मत (तत्वदर्शिता) दी कि अल्लाह का शुक्र करो और जो व्यक्ति शुक्र करता है, उसका शुक्र करना उसके अपने ही फ़ायदे के लिए है, और जो नाशुक्री करता है, तो भी अल्लाह बेपरवाह हम्द (खूबियों) वाला है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ
يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ
غَنِىٌّ حَمِيْدٌ ۝

१३- और जब लुक़्मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा, "ऐ मेरे बेटे! अल्लाह का साझी न ठहराना, शिर्क तो बड़ा (भारी) ज़ुल्म है।"

وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَىَّ لَا تُشْرِكْ
بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ۝

१४- और 'हमने' इन्सान को ताकीद की है उसके माँ-बाप के बारे में, उसकी माँ ने तकलीफ़ पर तकलीफ़ उठा कर, उसे अपने पेट में रखा, और दो साल उसके दूध छुड़ाने में लगे कि मेरा शुक्र कर और अपने माँ-बाप का भी, आख़िरकार मेरी ही ओर लौट कर आना है।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا
عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِىْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِىْ
وَلِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَىَّ الْمَصِيْرُ ۝

१५- और अगर वे तुझ पर दबाव डालें कि तू किसी को मेरा साझीदार ठहरा, कि जिसका तुझे इल्म नहीं है, तो उनकी बात न मानना और दुनिया में उनके साथ अच्छा व्यवहार रखना, और पैरवी उनके रास्ते की करना जो व्यक्ति मेरी ओर रूजूअ़ किया, फिर मेरी ही ओर तुमको लौट कर आना है; उस समय मैं तुम्हें बताऊँगा जो कुछ तुम करते रहे।"

وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰٓى اَنْ تُشْرِكَ بِىْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ
عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِى الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۖ
وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَىَّ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ
فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

१६- (लुक़्मान ने कहा), "ऐ मेरे बेटे! अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर भी हो, फिर वह किसी चट्टान के बीच या आसमान में या ज़मीन में हो, अल्लाह उसको (क़ियामत में) निकाल लाएगा, बेशक अल्लाह बारीक से बारीक (सूक्ष्मदर्शी) की ख़बर रखने वाला है।

يٰبُنَىَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ
فَتَكُنْ فِىْ صَخْرَةٍ اَوْ فِى السَّمٰوٰتِ اَوْ فِى الْاَرْضِ
يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝

يٰبُنَيَّ أَقِمِ الصَّلٰوةَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا أَصَابَكَ ۖ إِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ

१७- ऐ मेरे बेटे! नमाज़ क़ायम कर और भली बात का हुक्म दे, और बुरी बातों से रोक और जो मुसीबत पहुँचे उस पर सब्र से काम ले, बेशक यह हौसले (साहस) के कामों में से है।

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ

१८- और लोगों से बेरूख़ी न कर और न ज़मीन पर अकड़ कर चल, बेशक अल्लाह इतराने वाले, बड़ाई हाँकने वाले को पसंद नहीं करता।

وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۚ إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ

१६- और अपनी चाल में दर्मियानी (सन्तुलन) चाल अपनाओ और अपनी आवाज़ नीची रखो, इसलिए कि सब से बुरी आवाज़ गधे की है।''

أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۗ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتٰبٍ مُنِيرٍ

२०- क्या तुम देखते नहीं, कि अल्लाह ने उन तमाम चीज़ों को जो आसमानों और ज़मीन में हैं, सबको तुम्हारे काम में लगा रखा है और उसने तुम पर अपनी खुली और छिपी नेअ़मतें पूरी कर दी हैं? और इन्सानों में कुछ ऐसे लोग हैं जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, बिना किसी इल्म, हिदायत और रोशन किताब के;

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوهُمْ إِلٰى عَذَابِ السَّعِيرِ

२१- और जब उनसे कहा जाता है, ''उस की पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारी है'' तो कहते हैं, ''(नहीं) बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है।'' क्या उस ह़ाल में भी कि अगर शैतान उन्हें भड़कती हुई आग की ओर बुला रहा हो?

وَمَنْ يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ وَإِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ

२२- और जो व्यक्ति अपने आप को अल्लाह के हवाले कर दे, और भला भी हो, तो उसने ही मज़बूत सहारा थाम लिया, और सारे मामलों का अंजाम तो अल्लाह ही की ओर है

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهُ ۚ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۚ إِنَّ اللّٰهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ

२३- और जिसने इन्कार किया उसका इन्कार आप के लिए ग़म का ज़रिया न बने, उनको तो पलट कर 'हमारी' ही ओर आना है, फिर हम बता देंगे कि उन्होंने क्या कुछ किया था? बेशक अल्लाह सीनों की बातों को जानता है।

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلٰى عَذَابٍ غَلِيظٍ

२४- हम उनको थोड़ा मज़ा उड़ाने देंगे, फिर उनको एक सख़्त अ़ज़ाब की ओर खींच कर ले जाएँगे।

२५- और अगर तुम उनसे पूछो कि, ''आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया है?'' तो ज़रूर कहेंगे, ''अल्लाह ने, कह दीजिए, तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं,'' मगर उसमें से अक्सर लोग नहीं जानते।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

२६- आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह ही का है, बेशक अल्लाह बेपरवाह ह़म्द (तअ़रीफ़) के लायक़ है।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝

२७- और अगर ज़मीन के जितने पेड़ हैं, क़लम बन जाएँ और समुद्र उसकी स्याही हो जाए, इसके बाद सात और समुद्र हों तब भी अल्लाह की बातें खत्म न हों, बेशक अल्लाह बड़ा ताक़त वाला, ह़िकमत वाला है।

وَلَوْ اَنَّ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

२८- तुम सब का पैदा करना और (तुम सब का ज़िन्दा करके) दोबारा उठाना, तो बस ऐसा ही है जैसे एक जीव का, बेशक अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है।

مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝

२६- क्या तुम देखते नहीं, कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को रात में, और उसी ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है? हर एक अपने एक निर्धारित समय तक चले जा रहे हैं? और अल्लाह को ख़बर है, जो कुछ तुम करते हो।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۡ كُلٌّ يَّجْرِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝

३०- यह इस वजह से है कि अल्लाह ही ह़क़ (सत्य) है और यह कि उसे छोड़ कर जिनको यह लोग पुकारते हैं, वे असत्य हैं,। और यह कि अल्लाह ही सबसे ऊँचा (और) महान है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝

३१- क्या तुम देखते नहीं, कि नाव समुद्र में अल्लाह के फ़ज़्ल (अनुग्रह) से चलती हैं, ताकि 'वह' तुम्हें कुछ निशानियाँ दिखाए? बेशक इसमें निशानियाँ हैं हर उस व्यक्ति के लिए, जो सब्र और शुक्र करने वाला हो।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝

३२- और जब मौजें (लहरें) उन पर बादलों की तरह ढाँप लेती हैं, तो अल्लाह ही को पुकारते हैं, दीन को उसके लिए ख़ालिस करते हुए, फिर जब वह उनको बचा कर थल की ओर ले आता है, तो उनमें से कुछ ही सही राह पर क़ायम रहते हैं, और 'हमारी' निशानियों का इन्कार तो बस वही करते हैं, जो वादा तोड़ने वाले नाशुक्रे हैं;

وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ڬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ۝

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا
يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ
عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا
تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ
الْغَرُوْرُ ۝

३३- ऐ लोगो! अपने रब का डर रखो और उस दिन से डरो जब न कोई बाप अपनी औलाद की ओर से बदला देगा और न कोई औलाद ही अपने बाप की ओर से बदला देने वाली होगी, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, तो दुनिया की ज़िन्दगी हरगिज़ तुम्हें धोखे में न डाले, और न अल्लाह के बारे में वह धोखेबाज़(शैतान) तुम्हें धोखे में डाले।

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّا
ذَا تَكْسِبُ غَدًا ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ
تَمُوْتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝

३४- उस (क़ियामत की) घड़ी का इल्म अल्लाह ही के पास है, वही बारिश बरसाता है और जानता है जो कुछ (माओं के) रहि़म (गर्भ) में है। और कोई नफ़्स (व्यक्ति) नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा और कोई नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा, बेशक अल्लाह ही सब कुछ जानने वाला, ख़बर रखने वाला है।



अनुवाद-सूरतुस्सज्दति

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के १५७७ अक्षर, २७४ शब्द,३० आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

१- अलिफ़्- लाम्- मीम्,

الٓمٓ ۝

२- इस किताब (क़ुर्आन) में कुछ शक नहीं कि सारे संसार के रब की ओर से नाज़िल हुई।

تَنْزِيلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِينَ ۝

३- क्या यह लोग कहते हैं कि, ''इस व्यक्ति ने इसे खुद गढ़ लिया है?'' (नहीं,) बल्कि वह बर-ह़क़् (सत्य) है आप के रब की ओर से, ताकि आप उन लोगों को सचेत कर दें जिनके पास आप से पहले कोई सचेत करने वाला नहीं आया, ताकि ये हिदायत पाएँ।

اَمْ يَقُولُونَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝

४- अल्लाह ही है 'जिसने' आसमानों और ज़मीन और उनके बीच की चीज़ों को जो इन दोनों में है छः दिनों में पैदा किया, फिर अर्श (सिंहासन) पर क़ायम (विराजमान) हुआ, उसके सिवा न कोई तुम्हारा काम बनाने वाला है और न कोई सिफ़ारिशी, तो क्या तुम समझते नहीं?

اَللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۖ مَا لَكُمْ مِّنْ دُونِهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيعٍ ۚ اَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝

५- 'वही' ज़मीन से आसमान तक हर काम का इन्तिज़ाम करता है, फिर सारे मामले उसी की ओर लौटते हैं वह एक दिन जिस की मिक़्दार तुम्हारी गिनती के अनुसार एक हज़ार वर्ष की होगी।

يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ۝

६- 'यही' तो है ग़ैब (छिपे) और ह़ाज़िर का जानने वाला और बड़ी ताक़त वाला, रह़म वाला है।

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

७- 'उसने' जो चीज़ बनाई, अच्छी तरह बनाई और इन्सान की पैदाइश को मिट्टी से शुरू किया,

الَّذِيٓ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ۝

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۚ

८- फिर उसका वंश ह़क़ीर पानी (वीर्य) से पैदा किया;

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ

९- फिर उसको दुरूस्त किया और उसमें अपनी रूह़ फूँक दी और तुम्हारे कान, और आँखें और दिल बनाए, तुम बहुत कम शुक्र करते हो।

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ڛ بَلْ هُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ

१०- और यह लोग कहते हैं,''जब हम ज़मीन में घुल-मिल चुके होंगे तो क्या हम फिर नये सिरे से पैदा किये जाएँगे?'' बल्कि यह लोग अपने रब ही के इन्कारी हैं।

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۧ

११- कह दीजिए, ''मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर नियुक्त है, वह तुम्हें पूरे तरीक़े से अपने क़ब्ज़े में ले लेता है, फिर तुम अपने रब की ओर वापस होगे।''

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ

१२- और अगर तुम उनको देख लेते जब वे मुजरिम अपने रब के सामने सर झुकाए होंगे, ''ऐ हमारे रब! हमने देख लिया और सुन लिया, तो अब हमें वापस भेज दे कि हम नेक अ़मल करें, बेशक हमें यक़ीन हो गया है।''

وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ

१३- और अगर 'हम' चाहते तो हर जानदार को इसकी हिदायत (सीधी राह) दे देते, लेकिन 'मेरी' वह बात पूरी हो चुकी है कि ''मैं जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों सब से भर दूँगा।''

فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

१४- तो अब चखो मज़ा इसका, कि तुमने इस दिन के मिलने को भुला रखा था, तो 'हमने' भी तुम्हें भुला दिया अब तुम अपने करतूतों के बदले हमेशा-हमेश अ़ज़ाब का मज़ा चखो।

اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۞

सज्दः

१५- 'हमारी' आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको उनसे नसीह़त की जाती है, तो सज्दे में गिर जाते हैं और अपने रब के साथ पाकी बयान करते हैं और घमंड नहीं करते।

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۡ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ

१६- उनकी पीठें बिस्तरों से अलग रहती हैं कि वे अपने रब को डर और उम्मीद के साथ पुकारते हैं, और जो कुछ 'हमने' उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं।

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ
جَزَآءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

१७- तो कोई नफ़्स (व्यक्ति) नहीं जानता कि उनके लिए कैसी आँखों की ठंडक छिपा कर रखी गई है यह उनके आ़माल का बदला है जो वे करते थे।

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا لَّا يَسْتَوُونَ

१८- क्या वह व्यक्ति जो मोमिन है उस व्यक्ति की तरह हो सकता है, जो फ़ासिक़ (नाफ़रमान) हो, दोनों बराबर नहीं हो सकते।

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ
الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

१९- जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे, उनके रहने के लिए बाग़ हैं यह मेहमानदारी उनके कामों का बदला है, जो वे करते थे।

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا
أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ
ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ

२०- और जिन्होंने नाफ़रमानी की, उनका ठिकाना दोज़ख़ है, जब कभी वे उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में ढ़केल दिये जाएँगे और उनसे कहा जाएगा चखो अब उस आग के अ़ज़ाब का मज़ा, जिसको तुम झूठ समझते थे।''

وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ
الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

२१- और 'हम' उन्हें उस बड़े अ़ज़ाब से पहले दुनिया के अ़ज़ाब का मज़ा चखाएँगे, ताकि वे (हमारी ओर) लौट आएँ।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ
عَنْهَا إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ

२२- और उस व्यक्ति से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा, जिसे उसके रब की आयतों के ज़रिये नसीहत की जाए, तो वह उनसे मुँह फेर ले, हम गुनाहगारों से बदला लेकर रहेंगे।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُن فِي مِرْيَةٍ
مِّن لِّقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ

२३- और 'हमने' मूसा को किताब दी, तो तुम उसके मिलने के बारे में शक में न पड़ो, और 'हमने' उसको बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया।

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا
صَبَرُوا وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ

२४- और 'हमने' उनमें से पेशवा (नायक) बनाए थे, जो 'हमारे' हुक्म से हिदायत (मार्गदर्शन) किया करते थे, वह सब्र पर क़ायम रहे और 'हमारी' आयतों पर यक़ीन रखते रहे।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا
فِيهِ يَخْتَلِفُونَ

२५- बेशक तुम्हारा रब ही क़ियामत के दिन उन बातों का फ़ैसला करेगा, जिनमें वे मतभेद करते रहे हैं।

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّنَ
الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾

२६- क्या उनके लिए यह चीज़ हिदायत (मार्गदर्शक) का ज़रिया न हुई, कि इनसे पहले कितनी ही नस्लों को हम हलाक कर चुके हैं, जिनके रहने बसने की जगहों पर वे चलते-फिरते हैं? बेशक इसमें निशानियाँ हैं तो क्या यह सुनते नहीं?

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ
فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنفُسُهُمْ ۖ
أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾

२७- क्या इन्होंने नहीं देखा कि हम सूखी पड़ी हुई ज़मीन की ओर पानी ले जाते हैं, फिर उससे खेती उगाते हैं, जिसमें से इनके चौपाए भी खाते हैं और वे खुद भी? तो क्या यह इनको दिखाई नहीं देता।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْفَتْحُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾

२८- और कहते हैं ''यह फ़ैसला कब होगा, अगर तुम सच्चे हो?''

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ
وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٢٩﴾

२९- कह दीजिए, ''फ़ैसले के दिन इन्कार करने वालों का ईमान लाना उनके लिए कुछ फ़ायदेमन्द न होगा और न उनको मोहलत दी जाएगी।

فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانتَظِرْ إِنَّهُم مُّنتَظِرُونَ ﴿٣٠﴾

३०- अच्छा तो उन्हें उनके ह़ाल पर छोड़ दीजिए और इन्तिज़ार कीजिए यह भी इन्तिज़ार कर रहे हैं।



अनुवाद-सूरतुलअह्ज़ाबि

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के ५६०६ अक्षर, ७३ आयतें और ६ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

१- ऐ नबी! अल्लाह से डरिए और काफ़िरों (इन्कारियों) और मुनाफ़िक़ों (कप्टाचारियों) की बात न मानिए, बेशक अल्लाह इल्म वाला, ह़िकमत वाला है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ ٱتَّقِ ٱللَّهَ وَلَا تُطِعِ ٱلْكَٰفِرِينَ وَٱلْمُنَٰفِقِينَ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

२- और पैरवी (अनुसरण) कीजिए उस वह्य की जो आप के रब की ओर से आप पर की जा रही है, बेशक अल्लाह जो तुम करते हो, उसकी ख़बर रखता है।

وَٱتَّبِعْ مَا يُوحَىٰٓ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝

३- और आप अल्लाह पर भरोसा रखिए 'वही' काम बनाने के लिए काफ़ी है।

وَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ وَكِيلًا ۝

४- अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं बनाए, और न तुम्हारी पत्नियों को जिनसे तुम ज़िहार कर बैठते हो, (अर्थात यह कह दे कि तू मेरी माँ की पीठ की तरह ह़राम है) तुम्हारी माँ बनाया और न उसने तुम्हारे मुँह बोले बेटों को तुम्हारे ह़क़ीक़ी बेटे बनाए, ये सब तुम्हारे मुँह की बातें हैं और अल्लाह तो ह़क़् बात कहता है और 'वही' सही़ राह की ओर रहनुमाई करता है।

مَّا جَعَلَ ٱللَّهُ لِرَجُلٍ مِّن قَلْبَيْنِ فِى جَوْفِهِۦ ۚ وَمَا جَعَلَ أَزْوَٰجَكُمُ ٱلَّٰٓـِٔى تُظَٰهِرُونَ مِنْهُنَّ أُمَّهَٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَآءَكُمْ أَبْنَآءَكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ قَوْلُكُم بِأَفْوَٰهِكُمْ ۖ وَٱللَّهُ يَقُولُ ٱلْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِى ٱلسَّبِيلَ ۝

५- (मोमिनो) उन्हें उनके बापों के नाम से पुकारा करो, अल्लाह के नज़दीक यही इन्साफ़ की बात है, और अगर तुम उनके बापों को न जानते हो, तो वे तुम्हारे दीनी भाई और साथी हैं, और इसमें जो ग़लती तुमसे हुई उसके लिए तुम पर कोई पकड़ नहीं, लेकिन जिसका इरादा तुमने दिल से कर

ٱدْعُوهُمْ لِءَابَآئِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِندَ ٱللَّهِ ۚ فَإِن لَّمْ تَعْلَمُوٓا۟ ءَابَآءَهُمْ فَإِخْوَٰنُكُمْ فِى ٱلدِّينِ وَمَوَٰلِيكُمْ ۚ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَآ أَخْطَأْتُم بِهِۦ وَلَٰكِن مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

लिया, (उसकी बात और है) और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह्म वाला है।

النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ ۖ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ ۗ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَن تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُم مَّعْرُوفًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝

६- नबी का हक़ ईमान वालों पर, खुद उनके अपनी जान से बढ़ कर है- और उनकी पत्नियाँ उनकी माएँ और अल्लाह की किताब के अनुसार, ईमान वालों और हिजरत करने वालों के मुक़ाबले में- नातेदार आपस में एक-दूसरे से ज़्यादा क़रीब हैं। यह और बात है कि तुम अपने साथियों के साथ कोई भलाई करो, यह बात किताब में लिखी हुई है।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنكَ وَمِن نُّوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۖ وَأَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ۝

७- और जब 'हमने' नबियों से अहद (प्रतिज्ञा) लिया, और तुमसे भी, और नूह़, और इब्राहीम और मूसा और मरयम के बेटे, ईसा, से भी, और 'हमने' मज़बूत अहद (प्रतिज्ञा) लिया था;

لِّيَسْأَلَ الصَّادِقِينَ عَن صِدْقِهِمْ ۚ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

८- ताकि उन सच्चे लोगों से उनकी सच्चाई के बारे में पूछें, और इन्कार करने वालों के लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝

६- ऐ ईमान वालो! अल्लाह के उस एह्सान को याद करो जो 'उसने' तुम पर किया- जब तुम पर फौजें चढ़ आयी थीं, तो 'हमने' उन पर आँधी भेजी, और ऐसी फौजें, जो तुमको दिखाई नहीं देती थीं, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा था;

إِذْ جَاءُوكُم مِّن فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونَا ۝

१०- जब वे तुम पर ऊपर की ओर से भी (चढ़) आए और नीचे की ओर से भी, और जब आँखें पथरा गयीं, और कलेजे मुँह को आने लगे, और तुम अल्लाह के बारे में तरह़-तरह़ के ख़याल करने लगे थे;

هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا ۝

११- उस वक़्त ईमान वाले आज़माइश में डाल दिये गये, और बुरी तरह हिला दिये गये।

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ۝

१२- और जब मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी), और वे लोग जिनके दिलों में रोग था, कहने लगे, ''अल्लाह और उसके रसूल ने जो वादे हम से किये थे वह बिल्कुल धोखा था।''

وَإِذْ قَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۚ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ ۚ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۖ إِن يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ۝

१३- और जब उनमें से एक गिरोह कहने लगा, ''ऐ यसरिब (मदीना) वालो तुम्हारे लिए (ठहरने की) कोई जगह नहीं है, तो लौट चलो,'' और उनमें से एक गिरोह यह कह कर नबी से इजाज़त माँगने लगा कि ''हमारे घर खुले पड़े हैं,'' हलाँकि वे खुले हुए (असुरक्षित) न थे, वे तो केवल भागना चाहते थे।

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِم مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَآتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ۝

१४- और अगर (फ़ौजें) शहर के चारों ओर से उन पर चढ़ आतीं और उस समय उनसे फ़ित्ने (जंग)में पड़ने के लिए कहा जाता, तो वे (तुरन्त) उसमें जा पड़ते और इसके लिए बहुत कम ठहरते;

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ لَا يُوَلُّونَ الْأَدْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا ۝

१५- हालाँकि वे लोग इससे पहले अल्लाह से अहद (प्रतिज्ञा) कर चुके थे कि पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह से किये गये अहद की ज़रूर पूछ-ताछ होगी।

قُل لَّن يَنفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِن فَرَرْتُم مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

१६- कह दीजिए, ''अगर तुम मौत या क़त्ल से भागो, तो यह भागना तुम्हारे लिए कुछ भी लाभदायक न होगा, और (इसके बाद तुम ज़िन्दगी का) मज़ा थोड़ा ही उठा सकोगे।''

قُلْ مَن ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُم مِّنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

१७- कह दीजिए, ''कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता है, अगर 'वह' तुम्हें कोई नुक़सान पहुँचाना चाहे, या अगर 'वह' तुम पर मेहरबानी करना चाहे,'' तो अल्लाह के मुक़ाबले में न कोई दोस्त पाएँगे और न कोई मददगार।

قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ۖ وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

१८- अल्लाह तुम में से उन लोगों को भी जानता है जो रूकावटें डाल रहे हैं, और अपने भाइयों से यह कहते हैं कि ''हमारे पास चले आओ।'' और वे जंग में बहुत कम हिस्सा लेते हैं।

أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُم بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۚ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

१६- वह तुम्हारा साथ देने में तंग दिल हैं फिर जब ख़तरा पेश आ जाता है, तो तुम उन्हें देखते हो, कि वे तुम्हें किस तरह ताकते हैं कि उनकी आँखें चक्कर खा रही हैं, जैसे किसी पर बेहोशी छा रही हो, फिर जब ख़तरा खत्म हो जाता है तो तेज़ ज़बानों के साथ तुम्हारे बारे में ज़बानदराज़ी करें और माल में कंजूसी करें, यह लोग ईमान लाए ही न थें, तो अल्लाह ने इनके किये हुए कामों को बरबाद कर दिया और यह अल्लाह के लिए आसान था।

يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۚ وَإِن يَأْتِ الْأَحْزَابُ
يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُم بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ
عَنْ أَنبَائِكُمْ ۖ وَلَوْ كَانُوا فِيكُم مَّا قَاتَلُوا إِلَّا
قَلِيلًا ۝

२०- (डर की वजह से) समझ रहे हैं कि हमलाआवर गिरोह अभी गये नहीं हैं, और अगर हमलाआवर गिरोह फिर आ जाएँ तो यह चाहेंगे कि वे देहात में बद्दुओं (देहातियों) के बीच हों और वहाँ से तुम्हारी ख़बरें मालूम करते रहें, और अगर यह तुम्हारे बीच रहें भी तो लड़ाई में कम ही हिस्सा लेंगे।

لَّقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن
كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ۝

२१- तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना (उत्तम आदर्श) है उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और आख़िरत का उम्मदीवार हो और वह अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करे।

وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ ۙ قَالُوا هَٰذَا مَا
وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ
وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ۝

२२- और जब ईमान वालों ने हमलाआवर गिरोहों को देखा तो पुकार उठे, ''यह वही है, जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था, और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा था'' और इस चीज़ ने उनके ईमान और फ़रमाँबरदारी को और बढ़ा दिया।

مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ
عَلَيْهِ ۖ فَمِنْهُم مَّن قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُم مَّن يَنتَظِرُ ۖ
وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ۝

२३- ईमान वालों में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से किये हुए अहद (प्रतिज्ञा) को सच कर दिखाया, उनमें से कुछ अपनी ज़िन्दगी पूरी कर चुके और कुछ इन्तिज़ार में हैं, और उन्होंने अपनी बात ज़रा भी नहीं बदली।

لِّيَجْزِيَ اللَّهُ الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ
الْمُنَافِقِينَ إِن شَاءَ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

२४- ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िकों (कप्टाचारियों) को चाहे तो सज़ा दे या उनकी तौबः कुबूल कर ले, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रह्म वाला है।

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا ۚ وَكَفَى
اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ۝

२५- और अल्लाह ने काफ़िरों को इस हाल में लौटा दिया कि वे अपने क्रोध में (भरे हुए) थे, और वे कोई भलाई हासिल न कर सके; और ईमान वालों की ओर से अल्लाह काफ़ी हो गया अल्लाह ज़बरदस्त ताक़त वाला, (प्रभुत्वशाली) है।

وَأَنزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُم مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِن
صَيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ
وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ۝

२६- और किताब वालों में से जिन लोगों ने उनकी मदद की थी, अल्लाह ने उनके क़िलों से उनको उतार दिया, और उनके दिलों में ऐसा रोअ़ब (धाक) बिठा दिया, कि कितनों को तुम क़त्ल करते रहे और कितनों को तुम ने क़ैद कर लिया।

२७- और 'उसने' तुम्हें उनकी ज़मीन, और उनके घरों, और उनके मालों का वारिस बना दिया, और उस ज़मीन का भी जिस पर तुमने अभी क़दम नहीं रखा, अ़ल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।

وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَـُٔوْهَا ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ۟

२८- ऐ नबी! अपनी पत्नियों से कह दीजिए, ''अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और ज़ीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ दे दिला कर अच्छे तरीक़े से विदा कर दूँ;

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَ اُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۟

२९- और अगर तुम अल्लाह और 'उसके' रसूल, और आख़िरत के घर को चाहती हो तो अल्लाह ने तुम में से अच्छे काम करने वालियों के लिए बहुत बड़ा अज्र (बदला) तैयार कर रखा है।''

وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ۟

३०- ऐ नबी की पत्नियो! तुममें जो किसी खुली बेह़याई (अनुचित काम) में लगेगी उसे दोहरा अ़ज़ाब दिया जाएगा, और अल्लाह के लिए यह बहुत आसान है;

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۚ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۟

३१- और तुममें से जो अल्लाह और 'उसके' रसूल की फ़रमाँबरदार बन कर रहेगी और अच्छे काम करेगी, 'हम' उसको दोहरा बदला देंगे, और 'हमने' उनके लिए इ़ज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है।

* وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَاۤ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ۟

३२- ऐ नबी की पत्नियो! तुम दूसरी औ़रतों की तरह नहीं हो, अगर तुम परहेज़गारी अपनाती हो, तो तुम दबी आवाज़ में बात न किया करो, ताकि वह व्यक्ति जिसके दिल में रोग है, वह लालसा (न) करने लगे, और भली बात कहा करो;

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۟

३३- और अपने घरों में ठहरी रहो और पिछली जाहिलियत की तरह नुमाइश न करो, नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो, और अल्लाह और उसके रसूल की फरमाँबदारी करो, अल्लाह तो बस यही चाहता है कि ऐ नबी के घरवालो, तुम से गन्दगी को दूर रखे और तुम्हें पूरी तरह पाक-साफ़ रखे।

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۗ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ۟

३४- और याद रखो अल्लाह की आयतों और ह़िकमत की उन बातों को जो तुम्हारे घरों में सुनाई जाती हैं, बेशक अल्लाह बारीक से बारीक (सूक्ष्मदर्शी) चीजों की ख़बर रखने वाला है।

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ۟

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَ
الصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ
وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ
وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا
وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

३५- मुस्लिम मर्द और मुस्लिम औरतें, ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें फरमाँबरदार (आज्ञाकारी) मर्द और फरमाँबरदार औरतें, सच्चे मर्द और सच्ची औरतें, और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें, और गिड़गिड़ाने वाले मर्द और गिड़गिड़ाने वाली औरतें, और सद्क़ा (दान) करने वाले मर्द और सद्क़ा करने वाली औ़रतें; और रोज़ः रखने वाले मर्द और रोज़ः रखने वाली औरतें, अपने शर्मगाहों (गुप्तांगों) की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाली औ़रतें, और अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करने वाले मर्द और ज़्यादा से ज़्यादा याद करने वाली औरतें, अल्लाह ने इनके लिए बड़ी माफ़ी और बहुत बड़ा बदला तैयार कर रखा है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ
أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ
اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُبِينًا ۝

३६- और न किसी ईमान वाले मर्द और न किसी ईमान वाली औ़रत को यह अधिकार है कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फ़ैसला कर दे, तो फिर उन्हें अपने मामले में कोई अधिकार बाक़ी रहे, और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करे, तो वह खुली हुई गुमराही में पड़ गया।

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ
أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ
مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ
تَخْشَاهُ فَلَمَّا قَضَى زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا لِكَيْ
لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ
إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۝

३७- और जबकि तुम उस व्यक्ति (ज़ैद) से कह रहे थे, जिस पर अल्लाह ने एह़सान किया, और तुमने भी किया कि ''अपनी पत्नी (ज़ैनब) को अपने पास रखो (आर्थात तलाक़ न दो) और अल्लाह से डरो, और तुम अपने दिल की वह बात छिपा रहे थे जिसको अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था, और तुम लोगों से डर रहे थे, हाँलाकि अल्लाह इस बात का ज़्यादा हक़दार है कि उससे डरो।'' फिर ज़ैद ने जब उससे हाजत (ज़रूरत) न रखी (उसको तलाक़ दे दी) तो 'हमने' तुमसे उसका निकाह कर दिया, ताकि ईमान वालों पर अपने मुँह बोले बेटों की पत्नियों के मामले में कोई तंगी न रहे जबकि वे उनसे अपनी ज़रूरत पूरी कर लें, अल्लाह का हुक्म तो पूरा होकर ही रहता है।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ
سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَكَانَ

३८- नबी पर उस काम में कोई तंगी नहीं जो अल्लाह ने उनके लिए ठहराया हो, यही अल्लाह का तरीक़ा उन लोगों के मामले

أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَّقْدُورًا ۝٣٨

में भी रहा है, जो पहले गुज़र चुके हैं, और अल्लाह का हुक्म निश्चित हो चुका था।

الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝٣٩

३९- जो अल्लाह के पैग़ाम को पहुँचाते थे और 'उसी' से डरते थे, और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे, और हिसाब लेने के लिए अल्लाह काफ़ी है।

مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝٤٠

४०- मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं, बल्कि वह अल्लाह के रसूल और आख़िरी नबी (खातमुन्नबीईन) हैं अल्लाह को तो हर चीज़ का पूरा इल्म है;

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۝٤١

४१- ऐ ईमान वालो! अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद किया करो।

وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝٤٢

४२- और सुबह व शाम 'उसकी' तस्बीह़ (पाकी) बयान किया करो;

هُوَ الَّذِي يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝٤٣

४३- 'वही' तो है जो तुम पर रह्मत भेजता है और 'उसके' फ़रिश्ते भी, ताकि 'वह' तुम्हें अन्धेरों से निकाल कर रोशनी की ओर ले आए, और (अल्लाह) ईमान वालों पर बहुत मेहरबान है।

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ۝٤٤

४४- जिस दिन वह 'उससे' (अल्लाह) मिलेंगे उनका स्वागत सलाम से होगा और उनके लिए इज़्ज़त वाला बदला तैयार कर रखा है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝٤٥

४५- ऐ नबी! 'हमने' आप को गवाही और खुशख़बरी देने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा है।

وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ۝٤٦

४६- और अल्लाह की इजाज़त से 'उसकी' ओर बुलाने वाला और रोशन चिराग़ (बनाया है)।

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُم مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ۝٤٧

४७- और ईमान वालों को खुशख़बरी दे दीजिए, ''उनके लिए अल्लाह की ओर से बहुत बड़ा फ़ज़्ल (अनुग्रह) है।''

وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعْ أَذَاهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝٤٨

४८- और काफ़िरों और मुनाफ़िकों (कप्टाचारियों) की बात न मानिए, उनकी पहुँचायी हुई तकलीफ़ की परवाह न कीजिए। और अल्लाह पर भरोसा रखिए, अल्लाह इस बात के लिए काफ़ी है कि 'उसपर' भरोसा किया जाए।

४९- ऐ ईमान लाने वालो! जब तुम ईमान लाने वाली औरतों से निकाह करो, और उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो तो तुम को कुछ अख़्तियार नहीं कि उनसे इद्दत पूरी कराओ, उनको कुछ दे दिला कर अच्छे तरीक़े से विदा कर दो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ
طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ
عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ وَ
سَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝

५०- ऐ नबी! 'हमने' आप के लिए आप की पत्नियों को जायज़ कर दिया, जिनके महर आप अदा कर चुके हैं, और उन औरतों को भी जो अल्लाह के दिये हुए 'माल-ए- ग़नीमत' में से आप की मिल्कियत में आईं, और आप के चचा की बेटियाँ और आपके फूफियों की बेटियाँ और आपके मामुओं की बेटियाँ और आपके ख़ालाओं की बेटियाँ, जिन्होंने आपके साथ हिजरत की, और वह ईमान वाली औरतें जो अपने आप को नबी के लिए (निकाह़ में) दे दें, बशर्त कि नबी उनको अपने निकाह़ में लाना चाहें, ईमान वालों से हट कर यह केवल आप ही के लिए है, 'हमको' मालूम है कि 'हमने' उनकी पत्नियों और उनकी मम्लूक औरतों (दासियों) के बारे में जो निश्चित किया है ताकि आप पर कोई तंगी न रहे, और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْٓ اٰتَيْتَ
اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ
عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ
هَاجَرْنَ مَعَكَ ۡ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا
لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۚ خَالِصَةً لَّكَ
مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ
فِيْٓ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ
عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

५१- आप जिस (पत्नी) को चाहें अलग रखें और जिस को चाहें अपने पास रखें, और जिसको आप अलग रखें उनमें से किसी के इच्छुक हों तो आप के लिए कुछ हर्ज नहीं, यह इसलिए है कि उनकी आँखें ठंडी हों और वे ग़मगीन न हों और जो कुछ भी आप उनको दें वे राज़ी रहेंगी। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह बड़ा इल्म वाला, ह़लीम (सहनशील) है।

تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْٓ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ۭ وَ
مَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۭ ذٰلِكَ
اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ
اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَكَانَ
اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ۝

५२- इसके बाद आप के लिए दूसरी औरतें जायज़ नहीं और न यह जायज़ है कि उनकी जगह दूसरी पत्नियाँ कर लें, चाहे उनकी सुन्दरता आप को (कितनी ही) अच्छी लगे, सिवाय उनके जो आप की मिल्कियत में हों (अर्थात दासी) आप को अख़्तियार है, और अल्लाह हर चीज़ का देखने वाला है।

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ
اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ۭ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيْبًا ۝

५३- ऐ ईमान वालो! नबी के घरों में दाख़िल न हुआ करो, मगर यह कि तुम्हें खाने पर आने की इजाज़त दी जाए, वह भी इस

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّآ
اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ ۙ

وَلَٰكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنْكُمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَاسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ۚ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ۝

तरह कि उसके तैयारी के इन्तिज़ार में न हो, लेकिन तुम्हें बुलाया जाए तो जाओ, और जब तुम खा चुको तो उठ कर चले जाओ, और बातों में जी लगा कर न बैठे रहो, यह बात नबी को तकलीफ़ देती है। मगर वे तुम से कहने में लज्जा करते हैं, और अल्लाह ह़क़ बात कहने में लज्जा (संकोच) नहीं करता। और जब तुम्हें नबी की पत्नियों से कोई चीज़ मांगना हो तो उन से पर्दे के पीछे से मांगो, यह तरीक़ा तुम्हारे दिलों के लिए पाकीज़ा है और उनके दिलों के लिए भी पाकीज़ा है; और तुम्हारे लिए हरगिज़ जायज़ नहीं कि उनको तकलीफ़ पहुँचाओ, और न यह जायज़ है कि इसके बाद भी कभी तुम उनकी पत्नियों से निकाह करो बेशक यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी (गम्भीर) बात है।

إِنْ تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

५४- अगर तुम किसी बात को ज़ाहिर करो या उसको छिपाओ, अल्लाह को तो हर चीज़ का इल्म है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ ۗ وَاتَّقِينَ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝

५५- (औरतों को) न उनके लिए अपने बापों के सामने होने (पर्दान करने) में कोई गुनाह है और न अपने बेटों से, और न अपने भाइयों से, और न अपने भतीजों से, और न अपने भाँजों से, और न अपनी जैसी औ़रतों से, और न जो उनकी मिल्कियत में हैं (अर्थात दास और दासी) और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है।

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝

५६- अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर दुरूद और सलाम भेजा करो।

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا ۝

५७- जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को तकलीफ़ देते हैं, उन पर अल्लाह ने दुनिया और आख़िरत में लानत की है और उनके लिए अपमान जनक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُبِينًا ۝

५८- और जो लोग ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औ़रतों को, ऐसे कामों पर तकलीफ़ देते हों, जो उन्होंने न किया हो तो उन्होंने अपने सर एक बोहतान (मिथ्यारोपण) और खुले गुनाह का भार उठा लिया।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ ۚ ذَٰلِكَ

५९- ऐ नबी! अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों, और ईमान वाली औ़रतों से कह दीजिए, ''अपने ऊपर अपनी चादरें डाल

أَدْنَىٰ أَن يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٩﴾

लिया करें। इससे इस बात की ज़्यादा उम्मीद है कि पहचान (न) ली जाएँ और सताई न जाएँ, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है-

لَّئِن لَّمْ يَنتَهِ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٦٠﴾

६०- मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है और जो मदीना में झूठी अफ़वाहें फैलाते हैं, अगर बाज़ न आए, तो 'हम' तुमको उनके ख़िलाफ़ उठा खड़ा करेंगे, फिर वे उसमें तुम्हारे साथ थोड़ा ही रहने पाएँगे।

مَّلْعُونِينَ ۖ أَيْنَمَا ثُقِفُوا أُخِذُوا وَقُتِّلُوا تَقْتِيلًا ﴿٦١﴾

६१- वह भी फिटकारे हुए, जहाँ पाए गये पकड़े गये और बुरी तरह क़त्ल किये गये;

سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلُ ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٦٢﴾

६२- यह अल्लाह की सुन्नत (रीति) रही है उन के मामले में भी जो लोग पहले गुज़र चुके हैं, और तुम अल्लाह की सुन्नत (नियम) में कोई परिवर्तन न पाओगे।

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ اللَّهِ ۚ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ﴿٦٣﴾

६३- लोग आप से क़ियामत की घड़ी के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए, ''इसका इल्म तो अल्लाह ही को है और तुम्हें क्या ख़बर? कि शायद वह घड़ी क़रीब ही आ गयी हो।''

إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ﴿٦٤﴾

६४- बेशक अल्लाह ने इन्कार करने वालों पर लानत की है और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है,

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَّا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٦٥﴾

६५- जिसमें वे हमेशा रहेंगे, न कोई दोस्त मिलेगा और न मददगार;

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا ﴿٦٦﴾

६६- जिस दिन उनके चेहरे आग में उलट-पलट कर दिये जाएँगे, वे कहेंगे, ''काश हमने फ़रमाँबरदारी (अनुपालन) की होती अल्लाह की, और फ़रमाँबरदारी की होती रसूल की!''

وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا ﴿٦٧﴾

६७- और कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! हमने अपने सरदारों और बड़े लोगों की पैरवी की और उन्होंने हमें राह से गुमराह कर दिया;

رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ﴿٦٨﴾

६८- ऐ हमारे रब! इनको दोगुना अ़ज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर!''

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا ۚ وَكَانَ عِندَ اللَّهِ

६९- ऐ ईमान वालो! उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने मूसा को तकलीफ़ पहुँचाई, तो अल्लाह ने उनसे, जो कुछ

وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾

उन्होंने कहा था बरी कर दिया, और वह अल्लाह के यहाँ इज्ज़तदार था।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ قُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾

७०- ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और बात सीधी कहा करो।

يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧١﴾

७१- 'वह' तुम्हारे आ़माल (कर्मो) को ठीक कर देगा, और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा, और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करेगा, तो वह बहुत बड़ी कामियाबी हासिल करेगा।

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَ اَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾

७२- हमने (वह) अमानत को आसमानों , और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश किया तो उन्होंने उसको उठाने से इन्कार किया, और उससे डर गये, और इन्सान ने उसे उठा लिया, बेशक वह बड़ा ज़ालिम और नादान (जाहिल) था।

لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾

७३- ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ (कप्टी) मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों, और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को अ़ज़ाब दे; और ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औ़रतों पर रह़म करे, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।



अनुवाद-सूरतुसबअिन्

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ३६३६ अक्षर, ८६६ शब्द, ४५ आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝

१- तमाम तअ़रीफें अल्लाह ही के लिए हैं, जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं, (सब) 'उसी' का है, और आख़िरत में भी 'उसी' की तअ़रीफ़ है और 'वही' ह़िकमत वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है।

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاۗءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۭ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ۝

२- 'वह' जानता है जो कुछ ज़मीन में दाख़िल होता है, और जो कुछ उससे निकलता है, और जो कुछ आसमान से उतरता है, और जो कुछ उस पर चढ़ता है, 'वह' रह़म करने वाला, माफ़ करने वाला है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ۭ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝

३- और जिन लोगों ने इन्कार किया, उनका कहना है, (क़ियामत की) ''वह घड़ी नहीं आएगी।'' कह दीजिए, ''क्यों नहीं! सारे संसार के ग़ैब (परोक्ष) के इल्म रखने वाले की क़सम, वह तुम पर ज़रूर आ कर रहेगी, 'उससे' ज़र्रा (कण) बराबर भी कोई चीज़ न आसमानों में छिपी है, और न ज़मीन में, और न इससे छोटी कोई चीज़ न बड़ी, मगर एक स्पष्ट किताब में (लिखी हुई) है;

لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝

४- ताकि 'वह' लोगों को बदला दे, जो ईमान लाए और अच्छे अ़मल करते रहे, उनके लिए माफ़ी और इ़ज़्जत वाली रोज़ी है;

وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝

५- और जो लोग 'हमारी' आयतों को हराने की कोशिश करते रहे, उन्हें सख्त दुःख देने वाले अ़ज़ाब की सज़ा है।''

وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ

६- और जिनको समझ दी गई है वह जानते हैं कि आप के 'रब' की ओर से जो आप पर उतारा गया है, वह ह़क़ है, और

الْحَمِيدِ ۝

'उसका' रास्ता दिखाता है जो बड़ी ताक़त वाला, ह़म्द (तअ़रीफ़) के लायक़ है।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝

७- और जिन लोगों ने इन्कार किया वे कहते हैं, ''क्या हम तुम्हें एक ऐसा आदमी बताएँ जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाओगे तो फिर नये सिरे से ज़िन्दा किये जाओगे।''

أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ ۗ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ۝

८- क्या उसने अल्लाह पर झूठ गढ़कर थोपा है, या उसे जुनून है? नहीं, बल्कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वह अज़ाब और निचले दर्जे की गुमराही में हैं।

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنْ نَشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ۝

९- क्या उन्होंने आसमान और ज़मीन को नहीं देखा, जो उनके आगे भी है और उनके पीछे भी? अगर हम चाहें तो उन्हें धरती में धंसा दें या उन पर आसमान से कुछ टुकड़े गिरा दें। बेशक इसमें निशानी है हर उस बन्दे के लिए जो रूजूअ़ करने वाला हो।

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ مِنَّا فَضْلًا ۖ يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ وَالطَّيْرَ ۖ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ۝

१०- और 'हमने' दाऊद को अपनी ओर से फ़ज़्ल (श्रेष्ठ) किया था, ऐ पहाड़ो! इन के साथ तस्बीह़ करो और परिन्दों को (उन के वश में कर दिया) और 'हमने' उनके लिए लोहे को नर्म कर दिया था;

أَنِ اعْمَلْ سَابِغَاتٍ وَقَدِّرْ فِي السَّرْدِ ۖ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

११- कि कुशादा ज़िरह (कवच) बनाओ और कड़ियों को अन्दाज़े से जोड़ो, और अच्छे काम करो, जो कुछ तुम करते हो उसको 'मैं' देख रहा हूँ।

وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۖ وَأَسَلْنَا لَهُ عَيْنَ الْقِطْرِ ۖ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ۝

१२- और हवा को सुलेमान के अधिकार में कर दिया था कि उसका सुबह का चलना एक महीने तक (की दूरी) का होता, और उसका शाम के समय भी 'महीने तक (की दूरी) का होता, और 'हमने' उनके लिए पिघले हुए ताँबे का स्रोत बहा दिया, और जिन्नो में से कितने ही जिन्न उनके रब के हुक्म से उनके सामने काम करते, ''और उनमें से जो कोई हमारे हुक्म से फिरेगा 'हम' उसको आग का मज़ा चखाएँगे।''

يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحَارِيبَ وَتَمَاثِيلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ رَاسِيَاتٍ ۚ اعْمَلُوا آلَ دَاوُودَ شُكْرًا ۚ

१३- वे (जिन्न) उनके लिए जो वह चाहते बना देते (अर्थात) इमारतें, तस्वीरें, बड़े-बड़े थाल जैसे हौज़ और देगें (डेग) जो

وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ۝

एक ही जगह रखी रहें।'' ऐ दाऊद की औलाद शुक्र अदा करो, और मेरे बन्दों में बहुत ही कम शुक्रगुज़ार हैं।

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنسَأَتَهُ ۖ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَن لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝

१४- फिर जब 'हमने' उनके लिए मौत का फ़ैसला लागू किया, तो उनकी मौत का पता बस उस ज़मीन के कीड़े ने दिया जो उनकी लाठी को खा रहा था, फिर जब वह गिर पड़े, तब जिन्नों को मालूम हुआ कि अगर वे ग़ैब (परोक्ष) का इल्म रखते तो इस अपमान भरी मुसीबत में न पड़ते।

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ ۖ جَنَّتَانِ عَن يَمِينٍ وَشِمَالٍ ۖ كُلُوا مِن رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَرَبٌّ غَفُورٌ ۝

१५- सबा के लिए उनकी बस्ती में एक निशानी थी दो बाग़-दाएँ और बाएँ, ''खाओ अपने रब की रोज़ी, और उसका शुक्रिया अदा करो, शहर भी अच्छा सा, और रब भी माफ़ करने वाला।''

فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُم بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ أُكُلٍ خَمْطٍ وَأَثْلٍ وَشَيْءٍ مِّن سِدْرٍ قَلِيلٍ ۝

१६- तो उन्होंने मुँह फेर लिया तो 'हमने' उन पर बाँध तोड़, बाढ़ भेज दी और उनके दोनों बाग़ों के बदले में उन्हें दो दूसरे बाग़ दिये, जिनमें कुछ कड़वे-कसैले फल और झाऊ थे, और कुछ थोड़ी सी झड़बेरियाँ।

ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُم بِمَا كَفَرُوا ۖ وَهَلْ نُجَازِي إِلَّا الْكَفُورَ ۝

१७- यह बदला 'हमने' उन्हें इसलिए दिया था कि उन्होंने नाशुक्री की थी, और ऐसा बदला तो हम नाशुक्रे को ही दिया करते हैं।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَقَدَّرْنَا فِيهَا السَّيْرَ ۖ سِيرُوا فِيهَا لَيَالِيَ وَأَيَّامًا آمِنِينَ ۝

१८- और 'हमने' उनके और उनकी बस्तियों के बीच, जिनमें 'हमने' बरकत रखी थी, स्पष्ट बस्तियाँ बसायी थीं जो सामने नज़र आती थीं और उनमें सफ़र की मन्ज़िलें ख़ास अन्दाज़े पर रखीं, उनमें रात-दिन बेखटके चलो-फिरो।

فَقَالُوا رَبَّنَا بَاعِدْ بَيْنَ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَزَّقْنَاهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝

१९- तो फिर उन्होंने कहा, ''ऐ हमारे रब! हमारी यात्राओं में दूरी कर दे, और इन लोगों ने खुद अपने आप पर ज़ुल्म किया तो हमने उनके क़िस्से बना दिये और उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिये, इसमें निशानियाँ हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए।

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

२०- और इब्लीस ने अपनी अटकल सच कर दिखाई, और ईमान वाले के एक गिरोह के सिवा, उन्होंने उसी की पैरवी की।

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِم مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَن يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِي شَكٍّ ۗ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٢١﴾

२१- और उसका उन पर कोई ज़ोर न था, मगर (हमारा) मक़सद यह था कि जो लोग आख़िरत में शक करते हैं, उनसे उन लोगों को, जो उस पर ईमान रखते हैं अलग कर दें और तुम्हारा 'रब' तो हर चीज़ का संरक्षक है।

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ ۖ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُم مِّن ظَهِيرٍ ﴿٢٢﴾

२२- कह दीजिए, ''अल्लाह को छोड़ कर जिनका तुम्हें दावा है, उनको पुकार कर देखो वह न आसमानों में ज़र्रा बराबर चीज़ के मालिक हैं, और न ज़मीन में, और न इन दोनों में उनका कोई साझा है, और न इनमें से कोई उस (अल्लाह) का मददगार है''।

وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا الْحَقَّ ۖ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٢٣﴾

२३- और उसके यहाँ कोई सिफ़ारिश काम न आएगी, मगर उसी के लिए जिस के बारे में 'उसने' इजाज़त दी होगी, यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाएगी, तो (फ़रिश्ते) कहेंगे, ''तुम्हारे रब ने क्या कहा?'' वे कहेंगे, ''बिल्कुल हक़ (कहा), और 'वह' ऊँचे मर्तबे वाला बहुत बड़ा है।''

قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾

२४- पूछिए, ''कौन तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देता है?'' कहिए, ''अल्लाह,'' और हम या तुम (या तो) सीधे रास्ते पर हैं या खुली गुमराही में।

قُل لَّا تُسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٥﴾

२५- कह दीजिए,''तुम से हमारे जुर्म की पूछ-ताछ न होगी, और न जो कुछ तुम कर रहे हो, उसके बारे में हमसे पूछ-ताछ होगी।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ﴿٢٦﴾

२६- कह दीजिए, ''हमारा 'रब' हम को जमा करेगा, फिर हमारे बीच हक़ के साथ फ़ैसला करेगा, और वही फ़ैसला करने वाला, इल्म वाला है।

قُلْ أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُم بِهِ شُرَكَاءَ ۖ كَلَّا ۚ بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

२७- कह दीजिए, ''मुझे उनको दिखाओ, जिनको तुमने साझीदार बना कर उसके साथ जोड़ रखा है, कुछ नहीं!! बल्कि वही अल्लाह बड़ी ताक़त वाला, हिक्मत वाला है''

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

२८- और (ऐ मुहम्मद) 'हमने' आप को तमाम लोगों के लिए ख़ुशख़बरी देने वाला, और ख़बरदार करने वाला बना कर भेजा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾

२९- और कहते हैं, यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो।''

३०- कह दीजिए, ''तुम्हारे लिए एक ऐसे दिन की अवधि निर्धारित है जिससे न एक घड़ी भर पीछे हट सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे।''

قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾

३१- और जो काफ़िर (इन्कारी) हैं, वे कहते हैं ''हम इस कुर्आन को हरगिज़ न मानेंगे और न उसको जो उसके आगे है, और अगर तुम देख लेते जबकि यह ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े कर दिये जाएँगे, वे एक-दूसरे को मलामत करेंगे, जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे, वे उन बड़े लोगों से कहेंगे, ''अगर तुम न होते तो हम ज़रूर मोमिन (मुसलमान) होते।''

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ۚ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ ِۨالْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَآ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣١﴾

३२- बड़े लोग कमज़ोर लोगों से कहेंगे, ''क्या हमने तुमको हिदायत (सच्ची राह) से रोका था, जबकि वह तुम्हारे पास आ चुकी थी? (नहीं) बल्कि तुम खुद ही मुजरिम (गुनहगार) थे।''

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾

३३- और कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे, (नहीं,) बल्कि रात और दिन की (तुम्हारी) चालें थीं, जब तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ्र करें और (दूसरों को) उसके बराबर का ठहराएं, जब वे अ़ज़ाब देखेंगे तो मन ही मन पछताएँगे, और 'हम' उन लोगों की गर्दनों में जिन्होंने कुफ्र को अपनाया था तौक़ डाल देंगे। उन्हें वही तो बदले में मिलेगा जो वे करते थे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ۚ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْٓ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾

३४- और 'हमने' किसी बस्ती में कोई सचेत करने वाला नहीं भेजा मगर वहाँ के खुशहाल लोगों ने कहा, ''जो कुछ तुम्हें देकर भेजा गया है, हम तो उसे नहीं मानते।''

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾

३५- और (यह भी) कहा, ''हम तो धन और संतान में तुमसे बढ़कर हैं, और हम को अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा।''

وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٣٥﴾

३६- कह दीजिए,''मेरा 'रब' जिसकी चाहता है रोज़ी कुशादा (ज़्यादा) कर देता है और जिसकी चाहता है नपी-तुली देता है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।''

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾

३७- और तुम्हारा माल और औलाद ऐसी चीज़ नहीं कि तुम को हमारा मुकर्रब बना दें हाँ (हमारा मुक़र्रब वह है) जो कोई ईमान लाया और उसने अच्छा काम किया, तो ऐसे ही लोग

وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۫ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾

हैं जिनके लिए उसका दो गुना बदला है, और वे ऊपरी मंजिलों में चैन (इत्मिनान) से रहेंगे।

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ

३८- और जो लोग 'हमारी' आयतों के बारे में हराने (मात देने) की कोशिश करते हैं, वे अ़ज़ाब में पकड़ लिए जाएँगे।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ يَقْدِرُ لَهٗ ؕ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ

३९- कह दीजिए, ''मेरा रब अपने बन्दों में से जिसकी चाहता है रोज़ी कुशादा (ज़्यादा) कर देता है, और जिसकी चाहता है नपी-तुली कर देता है, और जो कुछ तुम खर्च करते हो उसकी जगह वह तुमको और देगा, और वह सबसे अच्छा रोज़ी देने वाला है।''

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ

४०- और जिस दिन (अल्लाह) इन सब लोगों को इकट्ठा करेगा, ''फिर फ़रिश्तों से कहेगा, क्या यही लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे?''

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ

४१- वे कहेंगे, ''तू पाक है हमारा सम्बन्ध तो केवल तुझसे ही है, न कि इनसे, बल्कि यह लोग जिन्नात की पूजा किया करते थे, इनमें से अक्सर यक़ीन भी इन्हीं (जिन्नों) पर रखते थे।

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ

४२- ''तो आज तुममें से कोई किसी को न फ़ायदा पहुँचाने का अधिकार रखता है और न नुक़सान पहुँचाने का, और हम ज़ालिमों से कहेंगे कि जिस दोज़ख़ के अ़ज़ाब को तुम झुठलाया करते थे, अब उसका मज़ा चखो।''

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ

४३- और जब उन्हें 'हमारी' स्पष्ट आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो कहते हैं, ''यह एक (ऐसा) व्यक्ति है जो चाहता है कि तुम्हें उनसे रोक दे कि जिनको तुम्हारे बाप-दादा पूजते चले आए हैं, और कहते हैं, ''यह (क़ुर्आन) तो एक गढ़ा हुआ झूठ है, जिन लोगों ने इन्कार किया उन्होंने हक़ (सत्य) के बारे में, जबकि वह उनके पास आया, कह दिया ''यह तो खुला हुआ जादू है।''

وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ

४४- और न उन्हें 'हमने' किताबें दी थीं जिनको यह पढ़ते-पढाते हैं, और न आप से पहले हमने उनके पास कोई सचेत करने वाला भेजा।

وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ

४५- और झुठलाया उन लोगों ने भी जो उनसे पहले थे, और जो कुछ 'हमने' उन्हें दिया था ये तो उसके दसवें भाग को भी

नहीं पहुँचे हैं, तो उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया, तो मेरा कैसा अ़ज़ाब हुआ।

४६- कह दीजिए, ''बस मैं तो तुम को एक नसीह़त करता हूँ कि अल्लाह के लिए उठ खड़े हो दो-दो और एक-एक, फिर विचार करो तुम्हारे साथी (मुहम्मद) को कोई जुनून नहीं है, वह तो-तुम को आगे आने वाले एक सख़्त अ़ज़ाब से सचेत करने वाले हैं?

قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُم بِوَاحِدَةٍ ۖ أَن تَقُومُوا لِلَّهِ مَثْنَىٰ وَفُرَادَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا ۚ مَا بِصَاحِبِكُم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَّكُم بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٤٦﴾

४७- कह दीजिए, ''मैं तुमसे कुछ बदला नहीं चाहता वह तुम्हें ही मुबारक हो, मेरा बदला तो बस अल्लाह ही के ज़िम्में है, और 'वह' हर चीज़ पर गवाह है।''

قُلْ مَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٤٧﴾

४८- कह दीजिए, ''मेरा रब ह़क़ को असत्य पर ग़ालिब (प्रभावी) करता है वह ग़ैब (परोक्ष) की बातें भली-भाँति जानने वाला है।''

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿٤٨﴾

४६- कह दीजिए, ''ह़क़ (सत्य) आ गया और बातिल (असत्य मअ़बूद) न तो पहली बार पैदा कर सकता है और न दोबारा पैदा करेगा।

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴿٤٩﴾

५०- कह दीजिए, ''अगर मैं गुमराह हूँ तो अपना ही बुरा करूँगा, और अगर मैं सच्ची राह पर हूँ तो वह उस वह़्य (प्रकाशना) की वजह से है, जो मेरा रब मेरी ओर वह़्य भेजता है, बेशक 'वह' सुनने वाला, क़रीब है।''

قُلْ إِن ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي ۖ وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِي إِلَيَّ رَبِّي ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿٥٠﴾

५१- और अगर तुम देख लेते जब ये घबराए हुए होंगे तो बच न सकेंगे और क़रीब से ही पकड़ लिए जाएँगे।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَزِعُوا فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٥١﴾

५२- और कहेंगे, ''हम इस पर ईमान ले आए,'' और उनके लिए कहाँ सम्भव है कि इतनी दूर जगह से उसको पा सकेंगे!

وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾

५३- और पहले तो इससे इन्कार करते रहे और बिना देखे-भाले दूर ही से तीर (अटकलें) चलाते रहे।

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِن قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾

५४- और उनके और उनकी इच्छाओं के बीच रोक लगा दी गई, जिस तरह इससे पहले उनके जैसे लोगों के साथ किया गया, वे भी शक और भ्रम में पड़े हुए थे।

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِم مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ﴿٥٤﴾



अनुवाद-सूरतुफ़ातिरिन्

यह सूरः मक्की है, इस में अरबी के ३२८६ अक्षर, ७६२ श्ब्द, ४५ आयतें और ५ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۭ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

१- सब तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए हैं, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला (और) फ़रिश्तों को पैग़ाम पहुँचाने वाला बना कर नियुक्त करता है, जिनके दो-दो, तीन-तीन और चार-चार पर हैं, वह पैदाइश में जो चाहता है बढ़ा देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) रखता है।

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

२- अल्लाह जो रह़मत (दयालुता) लोगों के लिए खोल दे तो उसे कोई रोकने वाला नहीं, और जिसे वह रोक ले तो उसके बाद उसे कोई जारी करने वाला भी नहीं, वह बड़ा ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), ह़िकमत वाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ڮ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝

३- ऐ लोगो! अल्लाह के एहसान जो तुम पर हैं, उनको याद करो, अल्लाह के सिवा क्या और कोई पैदा करने वाला है, जो आसमान और ज़मीन से तुमको रोज़ी दे? उसके सिवा कोई इलाह (उपास्य) नहीं, फिर तुम किधर उल्टे बहके चले जा रहे हो?

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝

४- और अगर यह लोग आप को झुठलाते हैं तो आप से पहले भी कितने ही रसूल झुठलाए जा चुके हैं, और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝

५- ऐ लोगो! अल्लाह का वादा सच्चा है, तो दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें धोखे में न डाल दे और न वह धोखेबा़ (शैतान) अल्लाह के बारे में तुम्हें धोखा दे।

اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ؕ

६- शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तो तुम भी उसको दुश्मन ही समझो, वह तो अपने गिरोह को केवल इसी लिए बुला रहा है कि वह दोज़ख़ वालों में शामिल हो जाएँ।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ؕ

७- जिन्होंने इन्कार किया उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और जो ईमान लाए और अच्छे अ़मल किये उनके लिए माफ़ी और बड़ा बदला है।

اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ؕ

८- फिर क्या वह व्यक्ति जिसको उसके बुरे कामों को (शैतान ने) अच्छे काम बना कर दिखाए हों, और वह उनको अच्छा समझने लगें तो बेशक अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है सीधी राह दिखाता है, तो उन लोगों पर अफ़सोस करके आपकी जान न जाती रहे, जो कुछ ये कर रहे हैं, अल्लाह ख़ूब जानता है।

وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ؕ

९- और अल्लाह ही तो है जो हवाएँ चलाता है फिर वे बादल को उभारती हैं, फिर 'हम' उसे किसी सूखी निर्जीव ज़मीन की ओर हाँक देते हैं, फिर हम ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा कर देते हैं, इसी तरह (मरने के बाद) ज़िन्दा हो कर उठना होगा।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ؕ

१०- जो व्यक्ति इ़ज़्ज़त का चाहने वाला हो तो इ़ज़्ज़त तो सारी की सारी अल्लाह ही के लिए है, भली बातें अल्लाह तक पहुँचती हैं और भले काम उनको ऊँचा उठाते हैं, और जो लोग बुरी चालें चलते हैं उनको सख़्त अ़ज़ाब होगा, और उनकी चालें नाकाम होकर रह जाएँगी।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ؕ

११- और अल्लाह ही ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर बूँद (वीर्य) से, फिर जोड़े- जोड़े बनाए, उसके इल्म के बिना न कोई औ़रत गर्भवती होती है और न जन्म देती है, और न बड़ी उम्र वाला उम्र पाता है, और जो कुछ उसकी उम्र में कमी होती है वह सब एक किताब में(लिखा होता) है, बेशक यह सब अल्लाह के लिए आसान है।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ

१२- और दो दरिया एक तरह के नहीं हैं, एक का पानी मीठा पीने में स्वादिष्ट और प्यास बुझाने वाला, और एक का पानी खारा कड़वा, और दोनों में से ताज़ा गोश्त (मछलियाँ) खाते

और ज़ेवर (आभूषण) निकालते हो, जिसको पहनते हो, और तुम देखते हो, कि नवकाएँ नदियों में (पानी को) चीरती चली जाती हैं, ताकि तुम अल्लाह का फ़ज़्ल (अनुग्रह) तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र करो।

فِيهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾

१३- वही रात को दिन में दाख़िल करता है, दिन को रात में दाख़िल करता है, और उसी ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है हर एक निर्धारित समय तक चलता रहेगा, यही अल्लाह तुम्हारा 'रब' है उसी की हुकूमत है, और जिन्हें तुम उसके सिवा पुकारते हो, वह खजूर की गुठली के छिलके के बराबर भी अधिकार नहीं रखते।

يُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ﴿١٣﴾

१४- अगर तुम उन्हें पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार सुनेंगे भी नहीं, और अगर सुन भी लें तो तुम्हारा कहना न कर सकेंगे, और क़ियामत के दिन वे तुम्हारे साझी ठहराने का इन्कार कर देंगे, पूरी ख़बर रखने वाले (अल्लाह) की तरह तुम्हें कोई न बताएगा।

إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿١٤﴾

१५- ऐ लोगो! तुम अल्लाह के मुहताज हो, और अल्लाह बेपरवाह ह़म्द (खूबियों) वाला है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٥﴾

१६- अगर 'वह' चाहे तो तुम्हें हटा दे और एक नई मख़्लूक (सृष्टि) ला बसाए।

إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٦﴾

१७- और यह अल्लाह के लिए कुछ भी कठिन नहीं।

وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿١٧﴾

१८- और कोई (आदमी) किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा, और अगर कोई बोझ से दबा हुआ अपना बोझ उठाने के लिए पुकारेगा तो उसमें से कुछ भी न उठाया जाएगा, चाहे कितना ही क़रीबी रिश्तादार क्यों न हो, आप तो केवल उन्हीं को सचेत कर सकते हैं, जो बिना देखे अपने रब से डरते हैं, और नमाज़ क़ायम रखते हैं, और जो व्यक्ति अपने को संवारता है तो अपने ही लिए संवारता है, और लौट कर जाना तो अल्लाह ही की ओर है।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ إِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾

१९- और अन्धा और आँखों वाला बराबर नहीं,

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ﴿١٩﴾

२०- और न अन्धेरा और न उजाला,

وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ﴿٢٠﴾

२१- और न छाया और न धूप,

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ

२२- और न ज़िन्दे और न मुर्दे बराबर हो सकते हैं, अल्लाह जिसे चाहता है सुनाता है और आप उन लोगों को नहीं सुना सकते, जो क़ब्रों में हैं;

وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ

२३- आप तो केवल सचेत करने वाले हैं।

اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ

२४- 'हमने' आप को हक़ के साथ खुशख़बरी सुनाने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा है, और कोई उम्मत नहीं कि जिसमें सचेत करने वाला न गुज़रा हो।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۭ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ

२५- और अगर यह आप को झुठलाएँ तो जो लोग इनसे पहले थे, वे भी झुठला चुके हैं, उनके पास उनके रसूल निशानियाँ और ज़बूर और रोशन किताबें लेकर आते रहे।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ

२६- फिर 'मैंने' (उन लोगों को,) जिन्होंने इन्कार किया, धर पकड़ा, तो फिर कैसा रहा 'मेरा' इन्कार!

ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ

२७- क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उसके ज़रिये 'हमने' फल निकाले, जिनके रंग विभिन्न प्रकार के होते हैं? और पहाड़ों में भी विभिन्न रंगतों के टुकड़े जिनमें सफेद, लाल, और काले भुजंग भी हैं।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ۭ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ

२८- और इसी तरह आदमियों और जानवरों, और चौपायों के रंग भी विभिन्न प्रकार के हैं, अल्लाह से डरते तो उसके वही बन्दे हैं जो इल्म रखते हैं, बेशक अल्लाह बड़ा ताक़त वाला, (प्रभुत्वशाली) माफ़ करने वाला है।

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ۭ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ

२६- जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं, और नमाज़ क़ायम रखते हैं, और जो कुछ 'हमने' उन्हें दे रखा है उसमें से छिपा कर और खुले तौर पर खर्च करते हैं, वह ऐसे व्यापार की उम्मीद लगाए बैठे हैं जो कभी तबाह नहीं होगा।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ

३०- यह कि अल्लाह उनको उनका पूरा- पूरा बदला देगा अपने (कृपा) से, और उनको ज़्यादा भी देगा, वह बड़ा माफ़ करने वाला, क़दर करने वाला है।

لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ

३१- और जो किताब हमने तुम्हारी ओर वह्य की है, वही हक़

وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ

مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ
بَصِيرٌ ﴿٣١﴾

है, अपने से पहले (की किताबों) की पुष्टि करती है। बेशक अल्लाह अपने बन्दों की पूरी ख़बर रखने वाला, देखने वाला है।

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۖ
فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ وَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ
بِالْخَيْرَاتِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾

३२- फिर 'हमने' अपने बन्दों में से उन लोगों को किताब का वारिस ठहराया, जिनको हमने चुना, फिर उनमें से कुछ तो अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे हैं और कुछ उनमें से बीच की चाले चल रहे हैं, और कुछ उनमें से अल्लाह के हुक्म से भलाइयों में आगे बढ़ रहे हैं, यही बड़ा फ़ज़्ल (अनुग्रह) है;

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ
مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٣٣﴾

३३- कि वहाँ 'हमेशा' रहने के बाग़ हैं, जिनमें वे दाख़िल होंगे, वहाँ उनको सोने के कंगन और मोती का गहना पहनाया जाएगा, और वहाँ उनका वस्त्र (कपड़ा) रेशम का होगा।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۖ إِنَّ
رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٤﴾

३४- और वे कहेंगे, ''सब तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हम को ग़म से दूर कर दिया है, बेशक हमारा रब बड़ा माफ़ करने वाला, क़दर करने वाला है।''

الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِن فَضْلِهِ لَا يَمَسُّنَا
فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ﴿٣٥﴾

३५- जिसने हमको अपने फ़ज़्ल (अनुग्रह) से हमेशा रहने के घर (जन्नत) में उतारा यहाँ न हमें कोई तकलीफ़ पहुँचती है और न हमें कोई थकान ही आती है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ
فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُم مِّنْ عَذَابِهَا ۚ كَذَٰلِكَ
نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ﴿٣٦﴾

३६- और जिन्होंने इन्कार किया, उनके लिए जहन्नम की आग है, न उनका काम तमाम किया जाएगा कि मर जाएँ और न उनसे उनका अ़ज़ाब ही कुछ हल्का किया जाएगा, हम ऐसा ही बदला हर नाशुक्रे को दिया करते हैं।

وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا
غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۚ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ
فِيهِ مَن تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ ۖ فَذُوقُوا فَمَا
لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ﴿٣٧﴾

३७- और वे उसमें चिल्लाएँगे, ''ऐ हमारे रब! हमें निकाल ले, हम अच्छे अ़मल करेंगे, वैसा नहीं जैसा हम पहले करते रहे, ''क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी कि जिसमें कोई होश में आना चाहता तो होश में आ जाता? और तुम्हारे पास सचेत करने वाला भी आया था, अब मज़ा चखते रहो, ज़ालिमों का कोई मदद्गार नहीं।

إِنَّ اللَّهَ عَالِمُ غَيْبِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ
بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٣٨﴾

३८- बेशक अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों को जानता है, 'वह' तो सीनों तक की बात जानता है।

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَمَنْ كَفَرَ
فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ
إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا

३९- 'वही' तो है जिसने तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया, तो जो कोई इन्कार करेगा, उसका वबाल उसी पर होगा इन्कार करने वालों का इन्कार उनके रब के यहाँ केवल अ़ज़ाब ही को बढ़ाता है, और इन्कार करने वालों का इन्कार करने की वजह से घाटा ही होता चला जाता है।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ
شِرْكٌ فِي السَّمَاوَاتِ أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَتٍ
مِنْهُ ۚ بَلْ إِنْ يَعِدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا إِلَّا
غُرُورًا

४०- कह दीजिए, ''भला तुम देखो तो अपने साझीदारों को, जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में कौन सी चीज़ पैदा की है या आसमानों में उनका कुछ साझा है?'' या 'हमने' उनको कोई किताब दी है कि उसका कोई स्पष्ट प्रमाण उनके पास हो, (नहीं,) बल्कि ज़ालिम आपस में एक-दूसरे से केवल धोखे का वादा कर रहे हैं।

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا ۚ وَلَئِنْ
زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِنْ بَعْدِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ
حَلِيمًا غَفُورًا

४१- अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि वे टल न जाएँ और अगर वे टल जाएँ तो उसके बाद कोई भी नहीं जो उन्हें थाम सके, बेशक (निःसन्देह) वह बहुत ह़लीम (सहनशील), माफ़ करने वाला है।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَيَكُونُنَّ
أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَا
زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا

४२- और ये अल्लाह की बड़ी-बड़ी क़समें खाया करते हैं कि अगर उनके पास कोई सचेत करने वाला आएगा तो यह ज़रूर हर एक उम्मत (गिरोह) से ज़्यादा अच्छी राह पर होंगे फिर जब सचेत करने वाला आ गया, तो उससे उनकी नफ़रत और बढ़ गयी।

اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ
السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ ۚ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ ۚ
فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ
تَحْوِيلًا

४३- ज़मीन में घमंड करना और बुरी चालें चलना और बुरी चाल का वबाल उसके चलने, वाले ही पर पड़ता है ये अगले लोगों के रवय्ये (रीति) के सिवा और किसी चीज़ के इन्तिज़ार में नहीं, तुम अल्लाह के दस्तूर (नियम) में कोई परिवर्तन न पाओगे और न तुम कभी अल्लाह के नियम को टलते ही पाओगे।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ
اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ
إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٤٤﴾

४४- क्या वे धरती में चले फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का क्या अंजाम हुआ जो उनसे पहले गुज़रे हैं? हालाँकि वे शक्ति में उनसे बढ़ कर थे, अल्लाह ऐसा नहीं कि आसमानों में कोई चीज़ उसे हरा सके, और न धरती ही में, वह जानने वाला, कुदरत वाला (सामर्थ्यवान) है।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَىٰ
ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَٰكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ
مُسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ
بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ﴿٤٥﴾

४५- और अगर अल्लाह लोगों को उनके हर कामों के बदले में पकड़ने लगे तो ज़मीन पर किसी जानदार को न छोड़े, मगर वह एक निश्चित समय तक मोहलत देता है, तो जब उनका निश्चित समय आ जाएगा तो अल्लाह अपने बन्दों को खूब देख रहा है।



अनुवाद-सूरतुयासीन

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ३०६० अक्षर,७३६ शब्द, ८३ आयतें और ५ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

१- यासीन,	يسٓ ۞
२- क़सम है क़ुर्आन की जो ह़िकमत से भरा है।	وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ۞
३- (ऐ मुह़म्मद) बेशक, आप रसूलों में से हैं;	إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۞
४- सीधी राह पर।	عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۞
५- (और यह क़ुर्आन) बड़ी ताक़त वाले, रह़मत वाले का उतारा हुआ है।	تَنزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۞
६- ताकि आप ऐसे लोगों को सचेत करें, जिनके बाप-दादा को सचेत नहीं किया गया था, (इस वजह से) वह ग़फलत में पड़े हुए हैं।	لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ۞
७- उनमें से अक्सर लोगों पर यह बात पूरी हो चुकी है कि वे ईमान नहीं लाएँगे।	لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۞
८- 'हमने' उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिये हैं जो उनकी ठोड़ियों से लगे हैं, तो उनके सिर ऊपर को उठे हुए हैं।	إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُم مُّقْمَحُونَ ۞
९- और 'हमने' उनके आगे भी एक दीवार बना दी है और एक दीवार उनके पीछे भी, फिर उन पर पर्दा डाल दिया, तो उन्हें कुछ सुझाई नहीं दे सकता।	وَجَعَلْنَا مِن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۞
१०- और उनके लिए बराबर है कि तुम उनको नसीह़त करो या न करो, वे ईमान लाने वाले नहीं।	وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۞
११- आप तो केवल उस व्यक्ति को नसीह़त कर सकते हैं जो नसीह़त पर चले और बिना देखे रह़मान से डरे, तो उसको	إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ ۖ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ۞

माफ़ी और अच्छे बदले की ख़ुशख़बरी सुनाओ।

१२- बेशक हम मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे, और जो कुछ आगे भेज चुके हैं और जो निशानी पीछे छोड़ चुके हैं वह सब हम लिखते जाते हैं, और हर चीज़ को 'हमने' एक स्पष्ट किताब (लौहे महफ़ूज़) में दर्ज कर रखी है।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُبِينٍ ⑫

१३- और उनसे मिसाल के तौर पर एक बस्ती का हाल बयान कीजिए, जबकि उनके पास पैग़म्बर (दूत) आए;

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ⑬

१४- जब 'हमने' उनकी ओर दो (पैग़म्बर) भेजे, तो उन्होंने उनको झुठला दिया, तब हमने तीसरे के ज़रिये मदद पहुँचायी, तो उन्होंने कहा, ''हम तुम्हारी ओर पैग़म्बर होकर आए हैं।''

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُمْ مُرْسَلُونَ ⑭

१५- वे बोले, ''तुम तो बस हमारे ही जैसे इन्सान हो, रह़मान ने तो कोई भी चीज़ नाज़िल नहीं की है, तुम केवल झूठ बोलते हो।''

قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَٰنُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ⑮

१६- उन्होंने कहा, ''हमारा 'रब' जानता है कि हम तुम्हारी ओर (सन्देश लेकर) भेजे गये हैं;

قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ⑯

१७- और 'हमारी' ज़िम्मेदारी तो केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देने की है।''

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ⑰

१८- वे बोले, ''हम तो तुमको मन्हूस समझते हैं अगर तुम बाज़ न आए तो हम तुम्हें पथराव (संगसार) कर के मार डालेंगे, और तुम्हें ज़रूर हमारी ओर से दुःख देने वाला अ़ज़ाब पहुँचेगा।''

قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۖ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑱

१९- उन्होंने कहा, ''तुम्हारी मन्हूसियत तो तुम्हारे अपने ही साथ है, क्या इसलिए कि तुम को नसीह़त की गयी, बल्कि तुम लोग हद को पार करने वाले हो?''

قَالُوا طَائِرُكُمْ مَعَكُمْ ۚ أَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُسْرِفُونَ ⑲

२०- और शहर के दूर के सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया, उसने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! पैग़म्बरों की पैरवी करो,

وَجَاءَ مِنْ أَقْصَى الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَا قَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ⑳

२१- ऐसे लोगों के कहने पर चलो जो तुमसे बदला नहीं चाहते और सीधी राह पर हैं।''

اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُهْتَدُونَ ㉑

पारा नं०-२३

२२- और मुझे क्या हुआ है कि मैं 'उसकी' इबादत न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया, और 'उसी' की ओर तुम को लौट कर जाना है।

* وَمَا لِيَ لَآ أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

२३- क्या मैं 'उसके' सिवा किसी दूसरे को मअ़बूद (उपास्य) बनाऊँ? कि अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आए और न मुझको वे छुड़ा ही सकें,

ءَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِ آلِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنقِذُونِ

२४- तब तो मैं खुली हुई गुमराही में पड़ गया,

إِنِّي إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ

२५- मैं तो आप के 'रब' पर ईमान ले आया, तो मेरी बात सुनो।''

إِنِّي آمَنتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ

२६- हुक्म हुआ, ''दाख़िल हो जन्नत में'' उसने कहा, ''क्या ही अच्छा होता कि मेरी क़ौम जानती,

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۖ قَالَ يَا لَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ

२७- कि मेरे 'रब' ने मुझे माफ़ कर दिया और मुझको इ़ज़्ज़त वालों में शामिल कर लिया।''

بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ

२८- और उसके बाद उसकी क़ौम पर 'हमने' आसमान से कोई फ़ौज नहीं उतारी और न 'हम' इस तरह उतारते हैं।

وَمَا أَنزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِ مِن بَعْدِهِ مِن جُندٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنزِلِينَ

२९- वह तो बस एक चिंघाड़ (चीख़) थी तो वे उसी समय बुझ कर रह गये।

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَامِدُونَ

३०- बन्दों पर अफ़सोस! है कि उनके पास कोई रसूल नहीं आता मगर उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं।

يَا حَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ

३१- क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले कितनी ही नस्लों को 'हमने' तबाह कर दिया अब वह उनकी ओर पलट कर कभी नहीं आएँगी?

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ

३२- और जितने भी हैं सब 'हमारे' सामने ह़ाज़िर किये जाएँगे।

وَإِن كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ

३३- और इनके लिए मुर्दा ज़मीन एक निशानी है, 'हमने' उसको ज़िन्दा किया और उससे अनाज निकाला फिर ये उसी में से खाते हैं।

وَآيَةٌ لَّهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ

३४- और 'हमने' उसमें खजूरों और अंगूरों के बाग़ लगाए और उसमें स्रोत जारी किये।

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ

३५- ताकि वे उनके फल खाएँ, हालाँकि यह सब कुछ उनके हाथों का बनाया हुआ नहीं है, तो क्या ये शुक्र नहीं करते?

لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ أَفَلَا يَشْكُرُونَ

३६- 'वह' ज़ात पाक (महिमावान) है जिसने सब (चीज़ों) के जोड़े पैदा किये, ज़मीन जो चीज़ें उगाती है उनमें से भी, और खुद उनकी अपनी जाति में से भी, और उन चीज़ों में से भी जिनको वे नहीं जानते।

سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ

३७- और एक निशानी उनके लिए रात है कि 'हम' उसमें से दिन को खींच लेते हैं, तो उस वक़्त उन पर अन्धेरा छा जाता है।

وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ

३८- और सूरज अपने एक निश्चित ठिकाने के लिए चला जा रहा है, यह बड़ी ताक़त वाले इल्म वाले का (निश्चय किया हुआ) अन्दाज़ा है।

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

३९- और चाँद के लिए 'हमने' मंज़िलें ठहरा दीं, यहां तक कि फिर वह ऐसा हो जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी।

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ

४०- न तो सूरज ही से हो सकता है कि चाँद को जा पकड़े, और न रात ही दिन से आगे बढ़ सकती है, और सब अपने दायरे (कक्ष) में तैर रहे हैं।

لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ

४१- और एक निशानी उनके लिए यह है कि 'हमने' उनकी नस्ल को भरी हुई नाव में सवार किया।

وَآيَةٌ لَهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ

४२- और उनके लिए उसी के समान वैसी ही चीज़ें पैदा कीं, जिन पर वे सवार होते हैं।

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ

४३- और अगर 'हम' चाहें तो उन्हें डुबो दें, फिर न तो कोई उनकी चीख़-पुकार सुनने वाला हो और न उन्हें बचाया जा सके।

وَإِنْ نَشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُونَ

४४- मगर यह तो बस 'हमारा' रह़म है, और एक निश्चित समय तक के लिए सुख का सामान है।

إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ

४५- और जब उनसे कहा जाता है कि उस चीज़ का डर रखो, जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है, ताकि तुम पर रह़म किया जाए!

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

४६- और उनके पास उनके 'रब' की आयतों (निशानियों) में से जो आयत (निशानी) भी आती है, वे उससे कत्रा जाते हैं।

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٧﴾

४७- और जब उनसे कहा जाता है अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें रोज़ी दी है, उसमें से खर्च करो, तो जिन्होंने इन्कार किया है, वे उन लोगों से जो ईमान लाए, कहते हैं, ''क्या हम उन लोगों को खाना खिलाएँ जिनको अगर अल्लाह चाहता तो खुद ही खिला देता, तुम तो बस खुली हुई गुमराही में हो?''

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

४८- और कहते हैं कि ''यह वादा कब तक (पूरा) होगा? अगर तुम सच्चे हो।''

مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٤٩﴾

४९- यह तो बस एक चीख़ के इन्तिज़ार में हैं, जो उन्हें आ पकड़ेगी, जबकि आपस में झगड़ रहे होंगे।

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾

५०- फिर न तो वसीयत कर पाएँगे और न अपने घर वालों के पास लौट ही सकेंगे।

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ ﴿٥١﴾

५१- और सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा, तो अपनी क़ब्रों से (निकल कर) अपने 'रब' की ओर दौड़ पड़ेंगे।

قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۜ هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٢﴾

५२- कहेंगे, ''अफ़सोस उन! पर किसने हमें सोते हुए जगा दिया, यह वही चीज़ है जिसका रह़मान ने वादा किया था और रसूलों ने सच कहा था।''

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾

५३- बस एक ज़ोर की चिंघाड़ होगी, फिर क्या देखेंगे कि सबके सब 'हमारे' सामने आ हाज़िर होंगे।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾

५४- उस दिन किसी पर कोई ज़ुल्म न होगा और तुम्हें वही बदला मिलेगा, जो तुम करते थे।

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ ﴿٥٥﴾

५५- जन्नत वाले उस दिन अपने किसी न किसी काम में व्यस्त हो कर आनन्द ले रहे होंगे।

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُونَ ﴿٥٦﴾

५६- वे और उनकी पत्नियाँ छाए में मसहरियों पर तकिया लगाए बैठे होंगे।

لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُم مَّا يَدَّعُونَ ﴿٥٧﴾

५७- उसमें उनके लिए मेवे होंगे, और जो चाहेंगे, (वह उन्हें मिलेगा)

سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ ﴿٥٨﴾

५८- उनको सलाम कहलाया जाएगा, बड़े रह़म वाले 'रब' की ओर से।

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٩﴾

५९- ''और ऐ मुजरिमों! आज तुम अलग हो जाओ।

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ

६०- क्या 'मैंने' तुमको ताकीद नहीं की थी, ''ऐ आदम की औलाद! शैतान की इबादत न करना वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।''

وَأَنِ اعْبُدُونِي ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ

६१- और यह कि 'मेरी' ही इबादत करना यही सीधा रास्ता है।

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا ۖ أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ

६२- और उसने तुममें से बड़ी आबादी को गुमराह कर दिया था, तो क्या तुम अक्ल नहीं रखते थे?''

هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ

६३- ''यह वही जहन्नम है जिसका तुम से वादा किया जाता रहा है।

اصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ

६४- जो इन्कार तुम किया करते थे, उसके बदले में आज इसमें दाख़िल हो जाओ।''

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ

६५- आज 'हम' उनके मुँहों पर मुहर लगा देंगे और जो कुछ ये करते रहे थे, उनके हाथ हमसे बयान कर देंगे, और उनके पाँव गवाही देंगे,

وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنَّىٰ يُبْصِرُونَ

६६- और अगर 'हम' चाहें तो उनकी आँखें मिटा दें फिर वे रास्ते की ओर बढ़ें तो उन्हें कहां सुझाई देगा?

وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ

६७- और अगर 'हम'. चाहें तो उनकी जगह उनके रूप बिगाड़ कर रख दें, फिर न यह आगे बढ़ सकें और न पीछे लौट सकें।

وَمَن نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ۖ أَفَلَا يَعْقِلُونَ

६८- और जिसको 'हम' लम्बी उम्र देते हैं, उसको 'हम' उसकी ख़ल्क़त (संरचना) में उल्टा फेर देते हैं, तो क्या ये अक़्ल से काम नहीं लेते?

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنبَغِي لَهُ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ

६९- और 'हमने' इन (रसूल) को शेअ़र (कविता) नहीं सिखाया और न यह उनकी शान के मुनासिब (अनुकूल) है, यह तो एक याद दिहानी और स्पष्ट क़ुर्आन है;

لِّيُنذِرَ مَن كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ

७०- ताकि 'वह' उस व्यक्ति को ख़बरदार कर दे जो ज़िन्दा हो, और इन्कार करने वालों पर हुज्जत (सत्यापित) हो जाए।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُم مِّمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ

७१- क्या यह लोग ग़ौर नहीं करते कि 'हमने' अपने हाथों की बनाई चीज़ों में से चौपाए पैदा किये, तो यह उनके मालिक हैं।

وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ

७२- और उनको, उनके क़ाबू में कर दिया है, तो उनमें से कुछ तो उनकी सवारी के काम में आते हैं, और कुछ का ये (गोश्त) खाते हैं।

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝

७३- और उनके लिए उनमें कितने ही फ़ायदे हैं और पीने की चीज़ें भी फिर क्या ये शुक्र नहीं करते?

وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنصَرُونَ ۝

७४- और उन्होंने अल्लाह के सिवा कितनों को मअ़बूद बना लिया, कि शायद उनको मदद पहुँचे;

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُندٌ مُّحْضَرُونَ ۝

७५- (मगर) वे उनकी मदद नहीं कर सकते, हालाँकि वे उनके लश्कर की हैसियत से हाज़िर कर दिये जाएँगे।

فَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝

७६- तो उनकी बातें तुम्हारे लिए ग़म का कारण न बनें, 'हम' इनकी उन बातों को भी जानते हैं जो यह छिपाते हैं और उनको भी जो खुले तौर पर करते हैं।

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ۝

७७- क्या इन्सान ने देखा नहीं कि 'हमने' उसे नुत्फ़े (वीर्य) से पैदा किया? फिर क्या देखते हैं कि वह खुला हुआ झगड़ालू बन गया;

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَن يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۝

७८- और 'हमारे' लिए मिसालें बयान करता है, और अपनी पैदाइश को भूल जाता है, कहता है, ''हड्डियों को कौन ज़िन्दा कर सकता है, जब कि वह बोसीदा (चूर-चूर) हो चुकी होंगी?''

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ۝

७९- कह दीजिए, ''उनको 'वही' ज़िन्दा करेगा 'जिसने' उनको पहली बार पैदा किया था, और 'वह' हर एक की पैदाइश को खूब जानता है;

الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنتُم مِّنْهُ تُوقِدُونَ ۝

८०- (वही है) 'जिसने' तुम्हारे लिए हरे भरे वृक्ष से आग पैदा की, फिर तुम उससे आग जलाते हो।''

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُم ۚ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۝

८१- क्या 'वह' जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया इस बात की कुदरत (सामर्थ्य) नहीं रखता, कि इन जैसों को पैदा करे? क्यों नहीं, और 'वह' तो बड़ा पैदा करने वाला, इल्म वाला है?

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ۝

८२- 'उसकी' शान यह है कि वह जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो उसे हुक्म देता है, कि 'हो जा' तो 'वह' हो जाती है।

فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

८३- तो पाक (महिमावान) है 'वह' जिसके हाथ में हर चीज़ का पूरा अधिकार है, और 'उसी' की ओर तुम लौट कर जाओगे।



अनुवाद-सूरतुस्साफ़्फ़ाति

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ३६५१ अक्षर, ८७३ शब्द, १८२ आयतें और ५ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ

१- क़तार बाँध कर (पंक्ति बद्ध) खड़े होने वाले (फरिश्तों) की क़सम;

فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ

२- फिर झिड़क कर डाँटने वालों की;

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۙ

३- फिर ज़िक्र (क़ुर्आन की) तिलावत करने वालों की;

اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۭ

४- कि तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) एक ही है।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۭ

५- जो आसमानों और ज़मीन और इनके बीच की चीज़ों का रब है और सूरज के निकलने की जगहों का भी रब है।

اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ِۨ الْكَوَاكِبِ ۙ

६- बेशक 'हमने' ही दुनिया के आसमान को सितारों की ज़ीनत से सजाया,

وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۚ

७- और हर सरकश शैतान से उसकी हिफ़ाज़त की।

لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ڰ

८- ''वे मल-ए- आ़ला'' (सर्वोच्च दरबार) की ओर कान न लगा सकें और हर ओर से (उन पर अंगारे) फेंके जाते हैं।

دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۙ

९- वे धुत्कारे जाते हैं, और उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला अ़ज़ाब है।

اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝

१०- मगर, (यह और बात है कि) जो कोई कुछ चोरी से उचक लेना चाहता है (फ़रिश्तों की कोई बात को) तो एक दहकता हुआ शोला उसका पीछा करता है।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ۝

११- तो उनसे पूछिए, क्या उनको पैदा करना मुश्किल है या जितनी खल्क़त (सृष्टि) हमने बनाई है उनका? 'हमने' उनको लेसदार मिट्टी से पैदा किया है।

१२- बल्कि तुम तअ़ज्जुब (आश्चर्य) में हो और यह मज़ाक़ उड़ाते हैं।	بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ
१३- और जब उनको नसीहत की जाती है, तो नसीहत क़ुबूल नहीं करते,	وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ
१४- और जब कोई निशानी देखते हैं तो उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं,	وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ
१५- और कहते हैं, ''यह तो खुला हुआ जादू है।''	وَقَالُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ
१६- क्या जब 'हम' मर जाएँगे मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएँगे, तो क्या हम फिर उठाए जाएँगे?	أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ
१७- और क्या हमारे पहले बाप-दादा को भी? (जो गुज़र चुके हैं)	أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ
१८- कह दीजिए,''हाँ! और तुम ज़लील भी होगे।''	قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ
१९- तो वह बस एक ही डाँट होगी, तो उस वक़्त ये देखने लगेंगे।	فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ
२०- और कहेंगे, ''हम पर अफ़सोस! यह तो बदले का दिन है।''	وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ
२१- यह वही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाया करते थे,	هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ
२२- इकट्ठा करो, उन लोगों को जो ज़ुल्म करते थे और उनके जोड़ीदारों को भी, और उनको भी जिनकी यह इबादत किया करते थे;	احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ
२३- अल्लाह को छोड़ कर, फिर इन सबको जहन्नम की राह दिखाओ।	مِنْ دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْجَحِيمِ
२४- और उनको ठहराए रखो कि उनसे (कुछ) पूछना है;	وَقِفُوهُمْ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ
२५- ''क्या बात है, ''कि तुम एक-दूसरे की मदद नहीं करते हो?''	مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ
२६- बल्कि वे तो आज बड़े फरमांबरदार बन गये हैं।	بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ
२७- और एक-दूसरे की ओर रूख करते हुए पूछेंगे;	وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ
२८- कहेंगे, ''तुम तो हमारे पास दाएँ (और बाएँ) से आते थे।''	قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ

२६- वे कहेंगे, ''(नहीं,) बल्कि तुम तो खुद ही ईमान लाने वाले न थे।	قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝
३०- और हमारा तो तुम पर कोई ज़ोर न था, बल्कि तुम सरकश लोग थे।	وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ۝
३१- तो हम पर हमारे 'रब' का हुक्म पूरा हो कर रहा, अब हम मज़े चखेंगे।	فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَآ ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ۝
३२- तो 'हमने' तुम को भी बहकाया, (और) हम तो खुद ही बहके हुए थे।	فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ۝
३३- इस तरह उस दिन वे सब अ़ज़ाब में एक-दूसरे के साझीदार होंगे।	فَاِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ۝
३४- 'हम' मुजरिमों के साथ ऐसा ही किया करते हैं।	اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ۝
३५- उनका हा़ल यह था कि जब उनसे कहा जाता कि ''अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं तो ये घमंड में आ जाते थे।''	اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝
३६- और कहते थे, ''क्या हम एक दीवाने शायर के कहने पर अपने मअ़बूदों को छोड़ दें?''	وَيَقُوْلُوْنَ اَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ۝
३७- बल्कि वह सत्य लेकर आए हैं और रसूलों की पुष्टि करते हैं।	بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝
३८- बेशक अब तुमको दुःख देने वाले अ़ज़ाब का मज़ा चखना है।	اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ۝
३९- और तुमको उसी का बदला दिया जाएगा जो कुछ तुम करते रहे हो।	وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
४०- मगर जो अल्लाह के ख़ास बन्दे हैं।	اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝
४१- यही लोग हैं जिनके लिए निश्चित रोज़ी है।	اُولٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ۝
४२- स्वादिष्ट फल होंगे, और उन्हें सम्मानित किया जाएगा।	فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ۝
४३- नेअ़मत के बाग़ों में,	فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝
४४- तख़्तों पर आमने-सामने (बैठे होंगे;)	عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۝
४५- बहती हुई शराब की जाम उनके बीच गर्दिश करवाई जाएगी;	يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝
४६- बिल्कुल सफेद पीने वालों के लिए स्वाद ही स्वाद।	بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۝

४७- न उससे सर दर्द होगा, और न उससे मदहोश होंगे।	لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ
४८- और उनके पास औरतें होंगी जो निगाहें नीची रखती होंगी और आँखें बड़ी-बड़ी।	وَعِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ
४९- मानो वे सुरक्षित अंडे हैं।	كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ
५०- फिर वे एक-दूसरे की ओर रूख कर के सवाल करेंगे।	فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ
५१- उनमें से एक कहने वाला कहेगा ''मेरा एक साथी था;	قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ
५२- (जो) कहा करता था, ''क्या तुम भी तस्दीक़ करने वालों में से हो?	يَقُولُ أَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ
५३- क्या जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियाँ हो गये तो क्या हमें वास्तव में बदला दिया जाएगा?	أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَدِينُونَ
५४- वह कहेगा, ''क्या तुम झाँक कर देखना चाहते हो?''	قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ
५५- फिर वह झाँकेगा तो उसे दोज़ख़ के बीच में देखेगा।	فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ
५६- कहेगा, ''अल्लाह की क़सम! तुम तो मुझे तबाह ही कर देने वाले थे।	قَالَ تَاللَّهِ إِن كِدتَّ لَتُرْدِينِ
५७- और अगर मेरे रब का फ़ज़्ल (अनुग्रह) न होता तो मैं भी उन लोगों में से होता जो हाज़िर किये गये हैं।	وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ
५८- क्या (यह बात नहीं है कि) अब हम मरने वाले नहीं हैं।	أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ
५९- अतः पहली मौत थी जो आ चुकी, और अब हमें कोई अज़ाब नहीं दिया जाएगा।	إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ
६०- बेशक यही बड़ी कमियाबी है।	إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ
६१- ऐसी ही (नेअ़मतों के लिए) अ़मल करने वालों को अ़मल करना चाहिए।	لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ
६२- क्या यह मेहमानी अच्छी है या ज़क्कूम (काँटेदार) का वृक्ष?	أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ
६३- 'हमने' उस (वृक्ष) को ज़ालिमों के लिए फ़ित्ना बना रखा है।	إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِّلظَّالِمِينَ
६४- वह एक वृक्ष है (जो) जहन्नम के निचले हिस्से में ऊगेगा।	إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ
६५- उसके गाभे ऐसे होंगे मानों शैतानों के सर,	طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ
६६- तो वे उसी को खाएँगे और उसी से पेट भरेंगे।	فَإِنَّهُمْ لَآكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ

६७- फिर उनके पीने के लिए खौलता हुआ पानी दिया जाएगा	ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ
६८- फिर उनको जहन्नम की ओर लौटाया जाएगा।	ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ
६९- उन्होंने अपने बाप-दादा को गुमराह ही पाया।	إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ
७०- तो वे उन्हीं के नक़्शे क़दम (पद चिन्हों) पर दौड़े चले जा रहे हैं।	فَهُمْ عَلَىٰ آثَارِهِمْ يُهْرَعُونَ
७१- और उनसे पहले गुज़रे हुए लोग भी अक्सर गुमराह ही हुए थे,	وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ
७२- और 'हमने' उनमें सचेत करने वाले भेजे।	وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِم مُّنذِرِينَ
७३- तो देख लो उनका क्या अंजाम हुआ, जिन्हें सचेत किया गया था।	فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ
७४- मगर जो अल्लाह के ख़ास बन्दे हैं।	إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ
७५- और नूह ने 'हमको' पुकारा था, तो हम कैसे अच्छे हैं पुकार को सुनने वाले।	وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ
७६- और 'हमने' उन्हें और उनके घर वालों को बड़ी घुटन और बेचैनी से छुटकारा दिया।	وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ
७७- और 'हमने' उनकी नस्ल को ऐसा किया कि वह बाक़ी रह गये।	وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ
७८- और 'हमने' बाद में आने वाली नस्लों में उनका अच्छा ज़िक्र छोड़ा,	وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ
७९- "सलाम हो नूह पर तमाम जहान वालों में।"	سَلَامٌ عَلَىٰ نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ
८०- हम अच्छे काम करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं।	إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ
८१- बेशक वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे।	إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ
८२- फिर 'हमने' दूसरों को डुबो दिया।	ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ
८३- और उन्हीं गिरोह में से इब्राहीम भी थे	وَإِنَّ مِن شِيعَتِهِ لَإِبْرَاهِيمَ
८४- (याद करो), जबकि वह अपने रब के समक्ष भला-चंगा दिल लेकर आए;	إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ
८५- जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, "तुम किस चीज़ की पूजा करते हो?"	إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ

أَئِفْكًا آلِهَةً دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ ﴿٨٦﴾

८६- क्या अल्लाह को छोड़ कर मनगढ़त मअ़बूदों (उपास्यों) को चाह रहे हो?

فَمَا ظَنُّكُم بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾

८७- तो तुमने सारे संसार के रब के बारे में क्या गुमान (समझ) कर रखा है?

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ﴿٨٨﴾

८८- फिर उन्होंने एक नज़र तारों पर डाली,

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ﴿٨٩﴾

८९- और कहा, ''मैं तो बीमार (निढ़ाल) हूँ।''

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿٩٠﴾

९०- तो वे उनसे पीठ फेर कर लौट गये।

فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٩١﴾

९१- फिर (इब्राहीम) चुपके से उनके देवताओं के पास गये और कहा, ''तुम खाते क्यों नहीं?''

مَا لَكُمْ لَا تَنطِقُونَ ﴿٩٢﴾

९२- तुम्हें क्या हुआ, तुम बोलते भी नहीं?''

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ﴿٩٣﴾

९३- फिर उन पर टूट पड़े और दाहिने हाथ से उन पर चोटें लगाईं।

فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُّونَ ﴿٩٤﴾

९४- तो वे लोग झपटते हुए उसकी ओर आए।

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ ﴿٩٥﴾

९५- उन्होंने कहा, ''क्या तुम लोग ऐसों को पूजते हो, जिन्हें खुद ही तराशते हो,

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

९६- हालाँकि अल्लाह ने तुम्हें भी पैदा किया है और उन्हें भी, जिन्हें तुम बनाते हो?''

قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ﴿٩٧﴾

९७- वे कहने लगे ''इसके लिए एक इमारत (अग्नि कुण्ड) तैयार करो फिर उसे भड़कती हुई आग में डाल दो!''

فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿٩٨﴾

९८- तो उन लोगों ने उनके साथ एक चाल चलनी चाही, किन्तु हमने उन्हीं को नीचा दिखा दिया।

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٩٩﴾

९९- और (इब्राहीम ने) कहा, ''मैं अपने रब की ओर जाता हूँ, वह मेरी रहनुमाई करेगा।

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٠٠﴾

१००- ऐ रब! मुझे (औलाद) अ़ता कर सआ़दतमंदों में (भाग्यशाली) से।''

فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ﴿١٠١﴾

१०१- तो 'हमने' उनको एक बड़े ह़लीम (सहनशील) लड़के की खुशख़बरी दी,

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَا بُنَيَّ إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ يَا أَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ ﴿١٠٢﴾

१०२- तो जब वह उसके साथ चलने -फिरने की उम्र को पहुंचा, तो उन्होंने कहा, ''ऐ बेटे! मैं, सपने में देखता हूँ कि ''मैं तुमको ज़ब्ह़ (बलि) कर रहा हूँ, तो तुम्हारी क्या राय है'' उन्होंने कहा, ''अब्बा जान! कर गुज़रिए जिसका हुक्म आप

को दिया जा रहा है, आप इन्शाअल्लाह मुझे सब्र (धैर्य) करने वाला पाएँगे''

فَلَمَّآ اَسۡلَمَا وَتَلَّهٗ لِلۡجَبِيۡنِ ۚ

१०३- फिर जब दोनों ने अपने आप को (रब के सामने) झुका दिया और उन्होंने उसे (इस्माईल को) कनपटी के बल लिटा दिया।

وَنَادَيۡنٰهُ اَنۡ يّٰۤاِبۡرٰهِيۡمُ ۙ

१०४- और 'हमने' उनको पुकारा,''ऐ इब्राहीम!

قَدۡ صَدَّقۡتَ الرُّءۡيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡمُحۡسِنِيۡنَ

१०५- आपने सपने को सच कर दिखाया, 'हम' भले लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।''

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الۡبَلٰٓؤُا الۡمُبِيۡنُ

१०६- बेशक, यही खुली आज़माइश थी।

وَفَدَيۡنٰهُ بِذِبۡحٍ عَظِيۡمٍ

१०७- और 'हमने' फिद्‌या (मुक्तिप्रतिदान) दिया उनको, एक बड़ी कुर्बानी देकर।

وَتَرَكۡنَا عَلَيۡهِ فِى الۡاٰخِرِيۡنَ ۖ

१०८- और 'हमने' छोड़ दिया उनका ज़िक्र, पीछे आने वालों में।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبۡرٰهِيۡمَ

१०९- ''सलाम हो इब्राहीम पर।''

كَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡمُحۡسِنِيۡنَ

११०- इसी तरह 'हम' भले काम करने वालों को बदला दिया करते हैं।

اِنَّهٗ مِنۡ عِبَادِنَا الۡمُؤۡمِنِيۡنَ

१११- बेशक, वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे।

وَبَشَّرۡنٰهُ بِاِسۡحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيۡنَ

११२- और 'हमने' उनको इस्हाक़ की ख़ुशख़बरी भी दी (कि वह) नबी और नेक लोगों में से (होंगे);

وَبٰرَكۡنَا عَلَيۡهِ وَعَلٰٓى اِسۡحٰقَ ؕ وَمِنۡ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحۡسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفۡسِهٖ مُبِيۡنٌ ۠

११३- और 'हमने' उन पर और इस्हाक़ पर बरकतें नाज़िल की थीं, और उन दोनों की नस्लों में कुछ मुहसिन (भले) भी हैं, और कुछ अपने आप पर खुला ज़ुल्म करने वाले भी है।

وَلَقَدۡ مَنَنَّا عَلٰى مُوۡسٰى وَهٰرُوۡنَ ۚ

११४- और 'हमने' मूसा और हारून पर फ़ज़्ल (उपकार) किया।

وَنَجَّيۡنٰهُمَا وَقَوۡمَهُمَا مِنَ الۡكَرۡبِ الۡعَظِيۡمِ ۚ

११५- और 'हमने' उनको और उनकी क़ौम को बड़ी मुसीबत से निजात दिया,

وَنَصَرۡنٰهُمۡ فَكَانُوۡا هُمُ الۡغٰلِبِيۡنَ ۚ

११६- और उनकी मदद की, तो वही ग़ालिब (विजयी) रहे।

وَاٰتَيۡنٰهُمَا الۡكِتٰبَ الۡمُسۡتَبِيۡنَ ۚ

११७- और 'हमने' उन दोनों को स्पष्ट किताब दी,

وَهَدَيۡنٰهُمَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۚ

११८- और 'हमने' उन्हें सीधा रास्ता दिखाया।

११९- और 'हमने' बाद में आने वाली नस्लों में उनका (अच्छा) ज़िक्र छोड़ा।	وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ
१२०- सलाम हो मूसा और हारून पर।	سَلَامٌ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ
१२१- बेशक हम भले लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं,	إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ
१२२- वे दोनों हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे।	إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ
१२३- और इल्यास भी रसूलों में से थे।	وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ
१२४- जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, ''क्या तुम डर नहीं रखते?''	إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَلَا تَتَّقُونَ
१२५- क्या तुम 'बअ़ल' (देवता) को पुकारते हो, और सबसे बड़े पैदा करने वाले को छोड़ देते हो?	أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ
१२६- अल्लाह को, जो तुम्हारा रब है, और तुम्हारे बाप-दादा का भी;	اللَّهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ
१२७- फिर भी उन्होंने उसे झुठला दिया, तो वे हाज़िर किये जाएँगे।	فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ
१२८- मगर अल्लाह के ख़ास बन्दे (कि अ़ज़ाब में नहीं डाले जाएँगे);	إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ
१२९- और 'हमने' बाद में आने वालों में उनका (अच्छा) ज़िक्र छोड़ दिया।	وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ
१३०- 'सलाम' हो इल्यास पर।	سَلَامٌ عَلَىٰ إِلْ يَاسِينَ
१३१- 'हम' भले लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं।	إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ
१३२- वे 'हमारे' ईमान वाले बंदों में से थे।	إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ
१३३- और लूत भी रसूलों में से थे।	وَإِنَّ لُوطًا لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ
१३४- जब 'हमने' उनको और उनके सभी साथियों को (अ़ज़ाब से) नजात दी।	إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ
१३५- सिवाय एक बुढ़िया के, जो पीछे रह जाने वालों में से थी।	إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ
१३६- फिर बाक़ी सबको 'हमने' तहस-नहस करके रख दिया।	ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ
१३७- और तुम उन (की बस्तियों) पर से गुज़रते रहते हो सुबह को भी;	وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ

१३८- और रात को भी, तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?	وَبِالَّيْلِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ
१३९- और यूनुस भी रसूलों में से थे।	وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ
१४०- जब वह भाग कर एक भरी हुई नाव में जा पहुँचे।	إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ
१४१- उस समय उन लोगों ने क़ुरअ (पर्ची) डाला, तो वह उसमें परास्त हो गये।	فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ
१४२- फिर मछली ने उनको निगल लिया, (इस हाल में कि) और वह अपने आप को ही मलामत कर रहे थे।	فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ
१४३- तो अगर वह तस्बीह़ (गुणगान) करने वालों में से न होते,	فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ
१४४- तो लोगों के उठाए जाने के दिन तक वह उसके पेट में रहते।	لَلَبِثَ فِي بَطْنِهِ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ
१४५- फिर 'हमने' उनको एक चटियल ज़मीन में डाल दिया, इस ह़ाल में कि वह निढ़ाल थे।	فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ
१४६- और 'हमने' उन पर एक बेलदार वृक्ष उगाया।	وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِنْ يَقْطِينٍ
१४७- और उनको भेजा एक लाख या उस से भी अधिक लोगों की ओर।	وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ
१४८- तो वे ईमान लाए सो 'हम' भी उनको एक समय तक फ़ायदे देते रहे।	فَآمَنُوا فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ
१४९- अब उनसे पूछो, "क्या तुम्हारे रब के लिए तो बेटियां हों और उनके अपने लिए बेटे?	فَاسْتَفْتِهِمْ أَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ
१५०- या 'हमने' फ़रिश्तों को औ़रतें बनाया, और वह (उस वक़्त) मौजूद थे?	أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ
१५१- सुनो, यह अपनी मनगढ़त बातें कहते हैं।	أَلَا إِنَّهُمْ مِنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ
१५२- कि "अल्लाह के औलाद है! और निश्चय ही यह बिल्कुल झूठे हैं।	وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ
१५३- क्या उसने बेटों के मुक़ाबिले बेटियों को पसंद किया है।	أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ
१५४- तुम्हें क्या हो गया है? कैसा फ़ैसला करते हो?	مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ
१५५- तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते?	أَفَلَا تَذَكَّرُونَ

१५६- या तुम्हारे पास कोई स्पष्ट प्रमाण है।	أَمْ لَكُمْ سُلْطَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٥٦﴾
१५७- तो लाओ अपनी किताब, अगर तुम सच्चे हो?	فَأْتُوا بِكِتَابِكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٥٧﴾
१५८- और उन्होंने अल्लाह और जिन्नों के बीच नाता जोड़ रखा है, हालांकि जिन्नों को भली-भाँति मालूम था कि वे ज़रूर हाज़िर किये जाएँगे।	وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٥٨﴾
१५९- अल्लाह पाक (महान) है उन बातों से, जो ये बयान करते हैं।	سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٥٩﴾
१६०- मगर अल्लाह के ख़ास बन्दें (अज़ाब में नहीं डाले जाएँगे)।	إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٠﴾
१६१- तो तुम और वे, जिनकी तुम पूजा करते हो।	فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿١٦١﴾
१६२- उससे किसी को बहका नहीं सकते,	مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ بِفَاتِنِينَ ﴿١٦٢﴾
१६३- मगर उसको जो जहन्नम में जाने वाला है।	إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ ﴿١٦٣﴾
१६४- और (फ़रिश्ते कहते हैं कि) हममें से हर एक का एक मक़ाम (ठिकाना) निश्चित है।	وَمَا مِنَّا إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ﴿١٦٤﴾
१६५- और हम ही सफ़बंदी (पंक्तिबद) करते हैं।	وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُّونَ ﴿١٦٥﴾
१६६- और तस्बीह़ (पाकी बयान) करने वाले हैं।	وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ﴿١٦٦﴾
१६७- और ये लोग कहा करते थे;	وَإِن كَانُوا لَيَقُولُونَ ﴿١٦٧﴾
१६८- कि "अगर हमारे पास पहले के लोगों की शिक्षा होती।	لَوْ أَنَّ عِندَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾
१६९- तो हम अल्लाह के खास बन्दे होते,"	لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٩﴾
१७०- मगर उन्होंने उसका इन्कार कर दिया तो वे जल्द ही उनको जान लेंगे।	فَكَفَرُوا بِهِ ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾
१७१- और 'हमारे' अपने बन्दों (के हक़) में जो रसूल बना कर भेजे गये, हमारी बात पहले ही निश्चित हो चुकी है,	وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧١﴾
१७२- कि वही मदद किये हुए हैं।	إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ﴿١٧٢﴾
१७३- और 'हमारी' फ़ौज ही ग़ालिब (विजई) हो कर रहेगी।	وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿١٧٣﴾
१७४- तो इनकी ओर से अपना ध्यान हटा लीजिए, एक समय तक के लिए।	فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٤﴾
१७५- और उन्हें देखते रहिए, वे भी बहुत जल्द देख लेंगे।	وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٥﴾

१७६- क्या यह 'हमारे' अ़ज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं?

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ

१७७- तो जब वह उनके आँगन में उतरेगी तो बड़ी ही बुरी सुबह होगी जिन्हें सचेत किया जा चुका है।

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنذَرِينَ

१७८- और उनकी ओर से ध्यान हटा लीजिए एक समय तक के लिए।

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ

१७९- और देखते रहिए, ये भी बहुत जल्द देख लेंगे।

وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ

१८०- पाक (महान) है तुम्हारा रब्बुल इ़ज़्ज़त (प्रताप का स्वामी) उन बातों से जो कुछ ये बयान करते हैं।

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ

१८१- और सलाम हो रसूलों पर;

وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ

१८२- और सब तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं (जो) सारे संसार का रब है।

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ



अनुवाद-सूरतुसाद्

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ३१०७ अक्षर, ७३८ शब्द, ८८ आयतें और ५ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़्म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِی الذِّكْرِ ۝

१- साद, क़सम है! क़ुर्आन की जो नसीह़त देने वाला है;

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ۝

२- मगर जिन्होंने इन्कार किया, वे गर्व और विरोध में पड़े हुए हैं।

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ۝

३- 'हमने' उनसे पहले कितने ही गिरोहों (उम्मतों) को हलाक (विनष्ट) कर डाला, तो वे पुकार उठे! और वह समय बचने का न था।

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ۡ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝

४- और उन लोगों ने आश्चर्य किया कि उन ही में का एक डराने वाला आया, और काफ़िरों ने कहा, ''यह जादूगर है बड़ा झूठा;

اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۝

५- क्या उसने इतने मअ़बूदों (उपास्यों) को हटा कर एक ही मअ़बूद बना दिया? यह तो बड़े अचम्भे की चीज़ है!''

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يُّرَادُ ۝

६- और उनमें के कितने ही सरदार यह कहकर चल पड़े, ''चलते रहो और अपने उपास्यों पर जमे रहो (यह बात जो मुह़म्मद समझाता है), बेशक इसमें इसका कुछ इरादा है।''

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝

७- यह बात तो 'हमने' पिछले धर्म में सुनी ही नहीं, यह तो बस मनगढ़त है।

ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ۝

८- क्या हममें से चुनकर इसी पर नसीह़त (की किताब) उतरी है? बल्कि ये 'मेरी' नसीह़त के बारे में सन्देह में हैं, बल्कि उन्होंने अभी तक 'मेरे' अ़ज़ाब का मज़ा चखा ही नहीं है।

أَمْ عِندَهُمْ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۝٩

९- क्या तुम्हारे, 'उस' ज़बर्दस्त और बख्शने वाले रब की रह़मत (दयालुता) के ख़ज़ाने उनके पास हैं;

أَمْ لَهُم مُّلْكُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ۝١٠

१०- या आसमानों और ज़मीन में, और जो कुछ उनके बीच है, उन सब पर बादशाही उन्हीं की है? फिर तो चाहिए कि रस्सियों के ज़रिये (आसमानों पर) चढ़ जाएँ!

جُندٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ۝١١

११- यहाँ हारे हुए लश्करों में से, यह भी एक लश्कर है;

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ۝١٢

१२- इनसे पहले नूह़ की क़ौम, और आ़द, और मेंखों वाले, फ़िरऔ़न, ने भी झुठलाया था;

وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَٰبُ لْـَٔيْكَةِ ۚ أُولَٰٓئِكَ الْأَحْزَابُ ۝١٣

१३- और समूद, और लूत की क़ौम, और ''ऐका'' वाले (बन वाले) भी- यही वे गिरोह हैं-

إِن كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۝١٤

१४- इनमें से हर एक ने रसूलों को झुठलाया, तो 'हमारा' अ़ज़ाब उन पर लागू हो गया;

وَمَا يَنظُرُ هَٰٓؤُلَآءِ إِلَّا صَيْحَةً وَٰحِدَةً مَّا لَهَا مِن فَوَاقٍ ۝١٥

१५- और इन्हें तो बस एक चीख़ का इन्तिज़ार है, जिसके बाद ज़रा-सा भी मौक़ा न मिलेगा।

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّل لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۝١٦

१६- और कहते हैं, ''ऐ हमारे रब! हिसाब के दिन से पहले ही हमारा हिस्सा जल्द हमें दे दे।''

اصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُودَ ذَا الْأَيْدِ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝١٧

१७- (ऐ नबी) यह जो कुछ कहते हैं सब्र से काम लीजिए और ज़ोर व शक्ति वाले दाऊद को याद कीजिए (फिर भी), बेशक वह (अल्लाह की ओर) रूजूअ़ करने वाले थे;

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ۝١٨

१८- 'हमने' पहाड़ों को उनके कब्ज़े में कर रखा था कि सुबह-शाम उनके साथ तस्बीह करते थे,

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً ۖ كُلٌّ لَّهُ أَوَّابٌ ۝١٩

१९- और परिन्दे को भी जमा रखते थे, सब उनके फ़रमाँबरदार थे;

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ۝٢٠

२०- और 'हमने' उनके राज्य को मज़बूत कर दिया था और उनको ह़िकमत (तत्वदर्शिता) और फ़ैसला करने की योग्यता दी थी।

وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ۝٢١

२१- और क्या तुम्हें उन झगड़ने वालों की ख़बर पहुँची है? जब वे दीवार पर चढ़ कर मेहराब में आ पहुँचे;

२२- जब वे दाऊद के पास पहुँचे तो वे उनसे सहम गये, उन्होंने कहा, ''डरिए नहीं, हम दो विवादी हैं, हम में से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है; तो आप हमारे बीच ठीक-ठीक फ़ैसला कर दीजिए, और बात को दूर न डालिए, और हम को सीधी राह बता दीजिए;

إِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ
بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ
وَاهْدِنَآ إِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ۝

२३- यह मेरा भाई है, इसके पास निन्नानवे भेड़ें हैं, और मेरे पास एक ही भेड़ है, अब इसका कहना है कि 'अपनी भेड़ भी मुझे सौंप दे' और बात-चीत में इसने मुझे दबा लिया।

إِنَّ هٰذَآ أَخِىْ ۗ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِىَ نَعْجَةٌ
وَّاحِدَةٌ ۗ فَقَالَ أَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِىْ فِى الْخِطَابِ ۝

२४- उन्होंने कहा, ''बेशक यह तुम पर ज़ुल्म करता है कि तुम्हारे भेड़ अपनी भेड़ों से मिलाने के लिए तुम से मांग करता है, और बहुत से साथ मिल कर रहने वाले एक-दूसरे पर ज़्यादती करते हैं, सिवाय उन (लोगों) के जो ईमान लाए और भले काम किये, किन्तु ऐसे लोग थोड़े ही होते हैं।'' और दाऊद समझ गये कि 'हमने' उन्हें इम्तिहान में डाला है, तो उन्होंने अपने रब से माफ़ी मांगी और झुक कर (सज्दे में) गिर गये और रूजूअ़ हुए;

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلٰى نِعَاجِهٖ ۖ وَإِنَّ
كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَيَبْغِىْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ إِلَّا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ۗ
وَظَنَّ دَاوٗدُ أَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا
وَّأَنَابَ ۩ ۝

सज्दः

२५- तो 'हमने' उनको माफ़ कर दिया, और बेशक 'हमारे' पास उनकी निकटता और अच्छा ठिकाना है।

فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ۖ وَإِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝

२६- ''ऐ दाऊद! 'हमने' ज़मीन में आप को ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया है, तो लोगों के बीच हक़ के साथ फ़ैसला किया करिये और अपनी इच्छा पर न चलिए कि वह आपको अल्लाह की राह से भटका दे; जो लोग अल्लाह की राह से भटकते हैं, उन के लिए कड़ी सज़ा है, क्योंकि उन्होंने हिसाब के दिन को भुला दिया?

يٰدَاوٗدُ إِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْأَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ
النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۚ إِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ۝

२७- और 'हमने' आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है, उनको बेकार नहीं पैदा किया है, यह उन का गुमान है जिन्होंने इन्कार किया, तो ऐसे इन्कार करने वालों के लिए आग (जहन्नम) की तबाही है।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ۚ ذٰلِكَ
ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ۝

२८- या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक काम किये, क्या हम उनको उनके समान कर देंगे जो ज़मीन में

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ
فِى الْأَرْضِ ۖ أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ۝

फ़साद बरपा करते हैं, या हम परहेज़गारों को फ़ाजिरों (दुराचारियों) जैसा कर देंगे?

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْۤا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝

२९- यह एक बरकत वाली किताब है, जिसे 'हमने' तुम्हारी ओर नाज़िल (अवतरित) किया है, ताकि लोग इसकी आयतों में सोच-विचार करें, और ताकि अक़्ल वाले नसीहत हासिल करें।

وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ۭ نِعْمَ الْعَبْدُ ۭ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ۝

३०- और 'हमने' दाऊद को सुलेमान प्रदान किया, वह कितने अच्छे बन्दे थे, बहुत रूजूअ़ रहने वाले थे।

اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۝

३१- जब उनके सामने शाम के वक़्त सधे हुए तेज़ दौड़ने वाले घोड़े हाज़िर किये गये;

فَقَالَ اِنِّيْۤ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝

३२- तो कहने लगे, ''मैंने अपने 'रब' की याद पर (इन घोड़ों की मुहब्बत अर्थात) माल की मुहब्बत अख़्तियार की, यहाँ तक कि (सूरज) पर्दे में छिप गया,

رُدُّوْهَا عَلَيَّ ۭ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ ۝

३३- (बोले) उनको मेरे पास वापस लाओ! फिर वह उनकी पिडुंलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगे।''

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰي كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ۝

३४-और 'हमने' सुलेमान को भी इम्तिहान में डाला, और 'हमने' उनके तख़्त पर एक धड़ डाल दिया, फिर वह रूजूअ़ हुए;

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝

३५- कहा, ''ऐ रब! मुझे माफ़ कर दे और मुझे वह राज्य दे, जो मेरे बाद किसी को मुनासिब (अर्थात उपयुक्त) न हो बेशक, 'तू ही' बड़ा दाता है।''

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَاۗءً حَيْثُ اَصَابَ ۝

३६- फिर 'हमने' हवा को उनके क़ाबू में कर दिया, जो उसके हुक्म से, धीरे-धीरे चलती, जिधर का वह इरादा करते;

وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّاۗءٍ وَّغَوَّاصٍ ۝

३७- और शैतानों को भी (उसके क़ाबू में कर दिया) हर प्रकार के निर्माता और गोता खोर को;

وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۝

३८- और दूसरे को भी जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे;

هٰذَا عَطَاۗؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

३९- यह 'हमारी' बेहिसाब देन है, अब एहसान करो या रोक लो;

४०- और बेशक, उन (सुलेमान) के लिए 'हमारे' यहां मर्तबा और अच्छा ठिकाना है।	وَإِنَّ لَهُۥ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَـَٔابٍ
४१- और 'हमारे' बन्दे, अय्यूब, को याद करो, जब उन्होंने अपने 'रब' को पुकारा, ''शैतान ने मुझे तकलीफ़ पहुँचा रखी है।''	وَٱذْكُرْ عَبْدَنَآ أَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُۥٓ أَنِّى مَسَّنِىَ ٱلشَّيْطَـٰنُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ
४२- (हमने कहा) ''अपना पैर ज़मीन पर मारो, यह ठंडा पानी है नहाने के लिए भी और पीने के लिए भी।''	ٱرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۖ هَـٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَشَرَابٌ
४३- और 'हमने' उनको और उनकी पत्नी, और उनके साथ उतने ही और भी अता किये, अपनी रह़मत के तौर पर और (यह) समझ रखने वालों के लिए नसीहत थी।	وَوَهَبْنَا لَهُۥٓ أَهْلَهُۥ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرَىٰ لِأُو۟لِى ٱلْأَلْبَـٰبِ
४४- ''और ('हमने' अय्यूब से कहा) तिन्कों का एक गुच्छा अपने हाथ में लो और (अपनी बीवी को) उससे मारो और क़सम न झूठी होने दो।'' बेशक 'हमने' उनको (अय्यूब को) सब्र करने वाला पाया, बहुत अच्छे बन्दे थे, बेशक वह रूजूअ़ (इबादत) करने वाले थे।	وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَٱضْرِب بِّهِۦ وَلَا تَحْنَثْ ۗ إِنَّا وَجَدْنَـٰهُ صَابِرًا ۚ نِّعْمَ ٱلْعَبْدُ ۖ إِنَّهُۥٓ أَوَّابٌ
४५- और 'हमारे' बन्दे! इब्राहीम, इस्हाक़ और याकूब को याद करो, जो ताक़त वाले और गहरी निगाह वाले थे।	وَٱذْكُرْ عِبَـٰدَنَآ إِبْرَٰهِيمَ وَإِسْحَـٰقَ وَيَعْقُوبَ أُو۟لِى ٱلْأَيْدِى وَٱلْأَبْصَـٰرِ
४६- 'हमने' उनको एक खास बात के लिए चुना था जो वास्तविक घर (आख़िरत) की याद थी।	إِنَّآ أَخْلَصْنَـٰهُم بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى ٱلدَّارِ
४७- और वे 'हमारे' यहां चुने हुए नेक लोगों में से थे।	وَإِنَّهُمْ عِندَنَا لَمِنَ ٱلْمُصْطَفَيْنَ ٱلْأَخْيَارِ
४८- और इस्माईल, और अल्-यसअ़, और जुलकिफ़्ल को भी याद करो, वे सब भले लोगों में से थे।	وَٱذْكُرْ إِسْمَـٰعِيلَ وَٱلْيَسَعَ وَذَا ٱلْكِفْلِ ۖ وَكُلٌّ مِّنَ ٱلْأَخْيَارِ
४६- यह यादगारें हैं, और परहेज़गारों के लिए अच्छा ठिकाना है-	هَـٰذَا ذِكْرٌ ۚ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَـَٔابٍ
५०- हमेशा-हमेश की जन्नतें, जिनके दरवाज़े उनके लिए खुले होंगे।	جَنَّـٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ ٱلْأَبْوَٰبُ
५१- उनमें तकिये लगाए बैठे होंगे, बहुत से मेवे और शराब (पीने की चीज़ें) मंगवा रहे होंगे;	مُتَّكِـِٔينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَـٰكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ

५२- और उनके पास नीची निगाह वाली हमउम्र (औरतें) होंगी-	وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ
५३- यह है वह चीज़, जिसका तुमसे हिसाब के दिन के लिए वादा किया जा रहा था।	هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ
५४- यह 'हमारा' रिज़्क़ (रोज़ी) है, जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं।	اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ
५५- यह (बदला) है और सरकशों के लिए बुरा ठिकाना है-	هٰذَا ۗ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ
५६- जहन्नम- जिसमें वे दाख़िल होंगे, तो वह कितना बुरा ठिकाना है;	جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ
५७- यह है उनके लिए, तो वे इसका मज़ा चखें, खौलते हुए पानी और पीप का;	هٰذَا ۙ فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ
५८- और इसी तरह की दूसरी चीज़ों का (अ़ज़ाब होगा)।	وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖٓ اَزْوَاجٌ
५९- '' यह एक फ़ौज है जो तुम्हारे साथ दाख़िल होगी, इनको खुशी न हो ये तो आग में पड़ने वाले हैं।''	هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا ۢ بِهِمْ ۗ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ
६०- कहेंगे, '' बल्कि तुम ही को खुशी न हो तुम्हीं तो इसे हमारे आगे लाए हो, तो (यह) बुरा ठिकाना है।''	قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۟ لَا مَرْحَبًا ۢ بِكُمْ ۗ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ
६१- वे कहेंगे, '' ऐ रब! जिन लोगों ने हमें इस अंजाम तक पहँचाया है, उसको आग (जहन्नम) में दोहरा अ़ज़ाब दे!''	قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِى النَّارِ
६२- और कहेंगे, ''क्या बात है कि हम उन व्यक्तियों को नहीं देख रहे हैं जिन्हें हम बुरों में गिनते थे?-''	وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ
६३- क्या 'हमने' उनका मज़ाक़ बना लिया था, या निगाहें उनसे चूक गई हैं?-	اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ
६४- बेशक दोज़ख़ियों की यह आपसी तकरार एक सच्ची बात है।	اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ
६५- कह दीजिए, ''मैं तो केवल सचेत करने वाला हूँ, और एक अल्लाह के सिवा कोई उपास्य (मअ़बूद) नहीं 'वही' ज़ोर वाला है;	قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ	६६- आसमानों और ज़मीन और उनके बीच की सभी चीज़ों का मालिक, बड़ी ज़ोर वाला (प्रभुत्वशाली) और बख्शने वाला है।''
قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ	६७- कह दीजिए, ''यह एक बहुत बड़ी ख़बर है;
اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ	६८- जिससे तुम मुँह मोड़ रहे हो,
مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ	६९- मुझे मल-ए-आ़ला (सर्वोच्च दरबार वालों) की कोई ख़बर न थी, जब वे झगड़ रहे थे;
اِنْ يُّوْحٰى اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ	७०- मेरी ओर वह्य (प्रकाशना) केवल इसलिए की जाती है कि मैं खुला सचेत करने वाला हूं।''
اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ	७१- जब तुम्हारे 'रब' ने फ़रिश्तों से कहा, 'मैं' मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करने वाला हूँ;
فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ	७२- तो जब उसको ठीक-ठीक बना लूं और उसमें 'अपनी' रूह फूंक दूं, तो तुम उसके आगे सज्दे में गिर जाना।''
فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ	७३- तो सारे फ़रिश्तों ने सज्दः किया,
اِلَّآ اِبْلِيْسَ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ	७४- सिवाय, इब्लीस के, उसने घमंड किया और इन्कार करने वालों में से हो गया।
قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ	७५- फ़रमाया, ''ऐ इब्लीस! तुझे किस चीज़ ने इसको सज्दः करने से रोका जिस व्यक्ति को 'मैंने' अपने हाथों से बनाया? क्या तूने घमंड किया, या तू सरकश हो गया?''
قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ	७६- कहा, ''मैं इससे बेहतर हूँ 'तूने' मुझे आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से।''
قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ	७७- फ़रमाया, ''यहां से निकल जा, 'तू' मरदूद (तिरस्कृत) है,
وَّاِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ	७८- और तुझ पर 'मेरी' लानत है, बदले के दिन तक।''
قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ	७९- कहा, ''ऐ मरे रब! मुझे उस दिन तक के लिए मोहलत दे, जबकि लोग उठाए जाएँ।''
قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ	८०- फ़रमाया, ''तुझे मोहलत दी जाती है,
اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ	८१- उस दिन तक के लिए जिसका समय निर्धारित है।''

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝

८२- (शैतान ने) कहा, ''मुझे तेरे इ़ज़्ज़त की क़सम! मैं उन सब को बहका कर रहूँगा,

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ۝

८३- सिवाय 'तेरे' उन बन्दों के, जिनको 'तू' ने चुन लिया हो।''

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ۝

८४- फ़रमाया, ''तो हक़ (सत्य) यह (है) और 'मैं' ह़क़ ही कहता हूं,

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ۝

८५- कि 'मैं' जहन्नम को तुझ से और उन सबसे भर दूंगा, जो उनमें से तेरी पैरवी करेंगे।''

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ۝

८६- (मुह़म्मद) कह दीजिए, ''मैं इस पर तुमसे कोई अज्र (मज़दूरी) नहीं माँगता और न मैं बनावट करने वालों में से हूँ।''

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

८७- यह (क़ुर्आन) तो एक नसीह़त है, सारे संसार वालों के लिए।

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ۝

८८- और थोड़े ही समय (मुद्दत) के बाद इसकी ख़बर मालूम हो जाएगी।



अनुवाद-सूरतुज़्ज़ुमरि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ४६६५ अक्षर, ११८४ शब्द,७३ आयतें और ८ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ①

१- इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की ओर से है जो ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) ह़िकमत वाला है।

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ②

२- यह किताब ‘हमने’ आप की ओर सच्चाई के साथ उतारी है, अतः आप अल्लाह ही की इबादत कीजिए, दीन को ‘उसके’ लिए ख़ालिस करते हुए।

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ؕ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۬ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ③

३- सुन लो! कि इबादत सारी अल्लाह ही के लिए है, और जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे हिमायती बना रखे हैं (और कहते हैं), ‘‘हम इनकी इबादत (पूजा) केवल इसलिए करते हैं कि हमें अल्लाह से निकट कर दें।’’ अल्लाह उनमें फ़ैसला कर देगा जिस में ये मतभेद कर रहे हैं, बेशक अल्लाह उस व्यक्ति को राह नहीं दिखाता जो झूठा और नाशुक्रा हो।

لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ④

४- अगर अल्लाह किसी को अपना बेटा बनाना चाहता, तो ‘वह’ अपनी मख़्लूक़ (सृष्टि) में से जिसको चाहता चुन लेता,(लेकिन) ‘वह’ तो नक़्स व ऐ़ब से पाक (महान और उच्च) है, वह अल्लाह एक है सब पर मज़बूत पकड़ रखने वाला;

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ⑤

५- ‘उसी ने’ आसमानों और ज़मीन को ह़क़ के साथ पैदा किया, ’वह’ रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है, और ‘उसी’ ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, हर एक निर्धारित समय तक चलते रहेंगे; जान लो! ‘वही’ बड़ी ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली), बख़्शने वाला है।’’

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝

६- 'उसीने' तुमको एक जान (व्यक्ति) से पैदा किया, फिर उससे उसका जोड़ा बनाया और 'उसीने' तुम्हारे लिए मवेशियों की आठ किस्में (नर और मादा) पैदा कीं; 'वह' तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट में तीन अन्धकारों के बीच पैदा करता (और बनाता) चला जाता है- एक बनावट के बाद दूसरी बनावट में- 'वही' अल्लाह तुम्हारा 'रब' है, 'उसी' का राज्य है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो?

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۫ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

७- अगर तुम इन्कार करोगे तो अल्लाह तुमसे बेपरवाह (निस्पृह) है, और 'वह' अपने बन्दों के लिए इन्कार को पसंद नहीं करता, और अगर तुम शुक्र करोगे, तो 'वह' इसे तुम्हारे लिए पसंद करेगा; और बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, फिर तुम्हारी वापसी तुम्हारे रब ही की ओर होनी है, वह तुम को बताएगा कि तुम क्या करते थे वह तो दिलों के ह़ाल तक को जानता है?

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْۤا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖۗ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۝

८- और इन्सान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह अपने 'रब' की ओर रूजूअ़ हो कर 'उसे' पुकारने लगता है, फिर जब 'वह' उसे अपनी नेअ़मत (अनुकम्पा) अता करता है, तो 'वह' उस चीज़ को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था और अल्लाह के बराबर (समकक्ष) ठहराने लगता है, ताकि (लोगों को) 'उसकी' राह से भटका दे, कह दीजिए, ''अपने इन्कार का थोड़ा मज़ा ले लो! फिर तो तुम आग वालों में से होगे।''

اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝

९- (क्या ऊपर वाला व्यक्ति अच्छा है) या वह जो रात की घड़ियों में सज्दः और क़ियाम की हालत में (इबादत में लगा) रहता है, और आख़िरत से डरता और अपने रब की रह़मत का उम्मीदवार है? कह दीजिए, ''क्या जो लोग जानते हैं? और जो नहीं जानते दोनों बराबर हो सकते हैं? नसीह़त (शिक्षा) तो समझ वाले ही ह़ासिल करते हैं।''

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَاَرْضُ اللّٰهِ

१०- कह दीजिए ''ऐ 'मेरे' बन्दो! जो ईमान लाए हो अपने रब से डरो, जो लोग इस दुनिया में नेक बन कर रहे उनके

وَاسِعَةٌ ۗ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُم بِغَيْرِ حِسَابٍ ⓾

लिए भलाई है, और अल्लाह की ज़मीन फैली हुई है, सब्र करने वालों को तो उनका बदला बेहिसाब दिया जाएगा।''

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّينَ ⓫

११- कह दीजिए, ''मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करूं, दीन को 'उसके' लिए ख़ालिस कर के;

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ⓬

१२- और मुझे यह भी हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहले मुस्लिम (आज्ञाकारी) बनूँ।''

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ⓭

१३- कह दीजिए, ''अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी (अवज्ञा) करूँ तो मुझे एक सख़्त दिन के अ़ज़ाब का डर है।''

قُلِ اللَّهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُ دِينِي ⓮

१४- कह दीजिए, ''मैं तो अल्लाह ही की इबादत करता हूँ, दीन (श्रद्धा और दासता) को उसके लिए ख़ालिस कर के।

فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُم مِّن دُونِهِ ۗ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا ذَٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ⓯

१५- तो तुम 'उसके' सिवा जिसकी चाहो इबादत करो, कह दीजिए, ''वास्तव, में घाटे में पड़ने वाले तो वही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने परिवार वालों को क़ियामत के दिन घाटे में डाल दिया। जान लो! यही खुला घाटा है;

لَهُم مِّن فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِن تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۚ ذَٰلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهُ بِهِ عِبَادَهُ ۚ يَا عِبَادِ فَاتَّقُونِ ⓰

१६- उनके लिए उनके ऊपर से भी आग की छतरियां होंगी और उनके नीचे से भी छतरियां होंगी, यह वह चीज़ है जिससे अल्लाह अपने बन्दों को डराता है, ऐ 'मेरे' बन्दो! मेरा तक़्वा (डर) रखो।''

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَن يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ⓱

१७- और जिन लोगों ने तागूत (शैतान) की इबादत से अपने आप को बचाया और अल्लाह की ओर रूजूअ़ (आकर्षित) हुआ उनके लिए ख़ुशख़बरी है, तो 'मेरे' बन्दों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए;

الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ ⓲

१८- जो बात को ध्यान से सुनते हैं, फिर अच्छी-अच्छी बातों पर चलते हैं,- यही वे लोग हैं- जिनको अल्लाह ने हिदायत दी है, और यही बुद्धिमान हैं।

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۚ أَفَأَنتَ تُنقِذُ مَن فِي النَّارِ ⓳

१९- भला जिस व्यक्ति पर अ़ज़ाब का हुक्म हो चुका हो! तो क्या तुम उसे बचा सकते हो जो दोज़ख में जाने वाला हो?

لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّن فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَعْدَ اللَّهِ ۖ

२०- लेकिन जो लोग अपने रब से डरते हैं, उनके लिए (महल) मंज़िल पर मंज़िल बनी हुई हैं, उनके नीचे नहरें बह रही हैं, यह

لَا يُخْلِفُ اللَّهُ الْمِيعَادَ ۝

अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۝

२१- क्या तुम नहीं देखते, अल्लाह आसमान से पानी उतारता है ,फिर उसको ज़मीन के अन्दर स्रोतों के रूप में जारी कर देता है, फिर उससे खेतियां पैदा करता है- जिसके तरह-तरह के रंगे होते हैं- फिर वह सूख जाती है, और तुम देखते हो कि पीली पड़ गई हैं; फिर वह उनको चूर्ण विचूर्ण (चूर-चूर) कर देता है? बेशक, इसमें नसीहत है बुद्धि रखने वालों के लिए।

أَفَمَن شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِّلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُم مِّن ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

२२- क्या वह व्यक्ति जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया हो, फिर वह अपने रब की ओर से रोशनी पर हो? तो तबाही है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह के ज़िक्र (याद) से सख़्त हो रहे हैं, यही लोग खुली गुमराही में हैं।

اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

२३- अल्लाह ने बेहतरीन कलाम (ईशवाणी) नाज़िल किया, एक ऐसी किताब जिसकी आयतें एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं, और (इस लायक हैं कि) बार-बार दोहराई जाएँ, इससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, जो लोग अपने रब से डरते हैं, फिर उनके शरीर और उनके दिल नर्म (होकर) अल्लाह के याद की ओर झुक जाते हैं, यही अल्लाह की हिदायत (मार्गदर्शन) है, 'वह' इससे जिसको चाहता है राह दिखाता है, और जिसे अल्लाह गुमराह करे (अर्थात पथभ्रष्ट रहने दे) उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं।

أَفَمَن يَتَّقِي بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ۝

२४- क्या वह व्यक्ति जो क़ियामत के दिन बुरे अ़ज़ाब से बचने के लिए अपने चेहरे को ढाल बनाएगा (और वह जो अ़ज़ाब से बचा हुआ होगा दोनों बराबर हो सकते हैं) और ज़ालिमों से कहा जाएगा, ''चखो! मज़ा उस कमाई का, जो तुम करते रहे हो।''

كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۝

२५- जो लोग इनसे पहले थे उन्होंने भी झुठलाया था, तो उन पर वहां से अ़ज़ाब आ पहुँचा, जहां से उनको गुमान भी न था।

२६-फिर अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में भी रूसवाई का मज़ा चखाया और आख़िरत का अ़ज़ाब तो इससे भी बड़ा है, काश! ये जानते।

فَأَذَاقَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

२७- और 'हमने' इस क़ुर्आन में लोगों के लिए हर तरह की मिसालें बयान कर दी हैं, ताकि वे नसीहत ह़ासिल करें;

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾

२८- एक अ़रबी क़ुर्आन के रूप में, जिसमें कोई टेढ़ नहीं, ताकि वे परहेज़गारी अपनाएँ।

قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾

२९- अल्लाह एक मिसाल पेश करता है कि 'एक व्यक्ति है, जिसमें कई शरीक हैं आपस में खींचातानी करने वाले हैं; और एक व्यक्ति वह है, जो पूरा का पूरा एक ही व्यक्ति का है, क्या, दोनों का ह़ाल एक जैसा होगा? सारी तअ़रीफ़ (प्रशंसा) अल्लाह ही के लिए है, मगर अक्सर लोग नहीं जानते।

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾

३०-(ऐ नबी) तुम्हें भी मरना है और इन्हें भी मरना है,

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ ﴿٣٠﴾

३१- फिर तुम सब क़ियामत के दिन अपने रब के सामने झगड़ोगे।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ﴿٣١﴾

पारा नं०-२४

३२- फिर उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा, जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा और सच्चाई जब उसके पास आई तो उसे झुठला दिया, क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है!?

* فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾

३३- और जो व्यक्ति सच्चाई लेकर आया और जिसने उसको सच माना, ऐसे ही लोग मुत्तक़ी (परहेज़गार) हैं;

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿٣٣﴾

३४- उनके लिए उनके रब के पास वह सब कुछ होगा, जो वे चाहेंगे, भलाई करने वालों का यही बदला है;

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٤﴾

३५- ताकि अल्लाह उनके बुरे काम जो उन्होंने किये उनसे दूर कर दे, और उन के भले कामों के बदले में जो उन्होंने किये, उनका बदला दे।

لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٥﴾

३६- क्या अल्लाह अपने बन्दों के लिए काफ़ी नहीं! और यह लोग तुमको अल्लाह के सिवा दूसरे मअ़बूदों से डराते हैं? और

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾

अल्लाह जिसे गुमराही में डाल दे तो उसको कोई राह दिखाने वाला नहीं;

३७- और जिसे अल्लाह राह दिखाए उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं, क्या अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) बदला लेने वाला नहीं है?

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِى انْتِقَامٍ ۝

३८- और अगर आप उनसे पूछें, ''आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया?'' तो वे ज़रूर कहेंगे, ''अल्लाह ने।'' कहिए ''तुम्हारा क्या विचार है? अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचानी चाहे तो अल्लाह से हटकर जिनको तुम पुकारते हो, वे 'उसकी' पहुँचाई हुई तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं? या 'वह' मुझ पर कोई मेहरबानी करना चाहे तो क्या ये 'उसकी' रह़मत को रोक सकते हैं?'' कहिए, ''मेरे लिए अल्लाह ही काफ़ी है, भरोसा करने वाले 'उसी' पर भरोसा करते हैं।''

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِىَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِىْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِىَ اللّٰهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝

३९- कहिए, ''ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करो, मैं (अपनी जगह) काम करता रहूँगा, तो बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा;

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝

४०- कि किस पर अ़ज़ाब आता है जो उसे रूसवा कर देगा और किस पर हमेशा का अ़ज़ाब नाज़िल होता है।''

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝

४१- 'हमने' यह किताब ह़क़ के साथ लोगों के लिए तुम पर उतार दी है, तो जो व्यक्ति हिदायत हासिल करेगा वह अपने ही लिए करेगा, और जो गुमराह होगा तो उसकी गुमराही का वबाल उसी पर पड़ेगा, आप उनके ज़िम्मेदार नहीं हैं।

اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَاۤ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝

४२- अल्लाह ही रूहों (प्राणों) को क़ब्ज़ करता है- लोगों की मौत के समय-और उन को भी जिनको मौत नहीं आई- नींद की हालत में- फिर जिनकी मौत का फ़ैसला 'वह' कर चुका होता है उनको रोक लेता है, और दूसरी रूहों (प्राणों) को एक निर्धारित समय के लिए वापस भेज देता है, इसमें निशनियां हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं।

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِىْ لَمْ تَمُتْ فِىْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِىْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰۤى اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

४३- क्या उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को सिफ़ारिशी

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ؕ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا

يَمْلِكُونَ شَيْـًٔا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٣﴾

बना रखा है? कह दीजिए, ''चाहे वे किसी चीज़ का भी अख़्तियार न रखते हों और न समझते ही हों?''

قُل لِّلَّهِ ٱلشَّفَٰعَةُ جَمِيعًا ۖ لَّهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٤٤﴾

४४- कह दीजिए, ''सिफ़ारिश (शफ़ाअ़त) तो सारी की सारी अल्लाह ही के अख़्तियार में है, आसमानों और ज़मीन की बादशाही 'उसी' की है, फिर 'उसी' की ओर तुम लौटाए जाओगे।''

وَإِذَا ذُكِرَ ٱللَّهُ وَحْدَهُ ٱشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِٱلْـَٔاخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ ٱلَّذِينَ مِن دُونِهِۦٓ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٥﴾

४५- और जब केवल एक अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उनके दिल कुढ़ने लगते हैं, और जब इसके सिवा दूसरों का ज़िक्र होता है तो वे खुश हो जाते हैं।

قُلِ ٱللَّهُمَّ فَاطِرَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ عَٰلِمَ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ أَنتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِى مَا كَانُوا۟ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٤٦﴾

४६- कह दीजिए,''ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, ग़ैब (परोक्ष) और हाज़िर (प्रत्यक्ष) के जानने वाले, 'तू' ही अपने बन्दों के बीच उन बातों का फ़ैसला करेगा, जिनके बारे में वे मतभेद कर रहे हैं।''

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ مَا فِى ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُۥ مَعَهُۥ لَٱفْتَدَوْا۟ بِهِۦ مِن سُوٓءِ ٱلْعَذَابِ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۚ وَبَدَا لَهُم مِّنَ ٱللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا۟ يَحْتَسِبُونَ ﴿٤٧﴾

४७- और अगर ज़ालिमों के पास वह सब कुछ हो, जो ज़मीन में है और उसी के बराबर और भी हो, तो यह क़ियामत के दिन बुरे अ़ज़ाब से बचने के लिए सब कुछ फ़िद्या (मुक्ति प्रतिदान) में देने के लिए तैयार हो जाएंगे, और अल्लाह की ओर से उनके साथ वह मामला होगा जिसका उनको गुमान भी न था।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّـَٔاتُ مَا كَسَبُوا۟ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا۟ بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٤٨﴾

४८- और जो कुछ उन्होंने कमाया उस की बुराई उन पर ज़ाहिर हो जाएगी, और वह चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसकी वे हंसी उड़ाया करते थे।

فَإِذَا مَسَّ ٱلْإِنسَٰنَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ إِنَّمَآ أُوتِيتُهُۥ عَلَىٰ عِلْمٍۭ ۚ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٩﴾

४६- जब इन्सान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह 'हमें' पुकारने लगता है, फिर जब 'हम' उसे अपनी ओर से कोई नेअ़मत देते हैं तो कहता है, ''यह तो मुझे अपने इल्म की वजह से मिली है।'' (नहीं) बल्कि वह एक आज़माइश है, मगर उनमें अक्सर लोग नहीं जानते।

قَدْ قَالَهَا ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَمَآ أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ ﴿٥٠﴾

५०- यही बात वे लोग भी कह चुके हैं, जो इनसे पहले थे, मगर जो कुछ वे किया करते थे, वह उनके कुछ काम न आया।

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَٰؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ

५१- फिर जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयां उन पर आ पड़ीं, और उनमें से जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन पर भी जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयां जल्द ही आ पड़ेंगी, और वे क़ाबू से बाहर निकलने वाले नहीं।

أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

५२- क्या उनको मालूम नहीं कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा (ज़्यादती) कर देता है और (जिसके लिए चाहता है) नपी-तुली कर देता है? उनके लिए बड़ी निशानियां हैं जो ईमान लाते हैं।

قُلْ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

५३- (ऐ नबी) कह दीजिए, ''ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने अपने आप पर ज़्यादती की, अल्लाह की रहमत से मायूस (निराश) न हों, अल्लाह सभी गुनाहों को माफ़ कर देता है, 'वह' बड़ा बख़्शने वाला, मेहरबान है।''

وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُونَ

५४- और रूजूअ़ हो अपने रब की ओर, और 'उसी' के फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी) बन जाओ, इससे पहले कि तुम पर अ़ज़ाब आ जाए, फिर तुम्हारी मदद न की जाएगी।

وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ

५५- और तुम्हारे रब की ओर से जो बेहतरीन चीज़ (किताब) तुम्हारी ओर नाज़िल हुई है, उसकी पैरवी करो, इससे पहले कि तुम पर अचानक अ़ज़ाब आ जाए और तुमको ख़बर भी न हो।

أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ يَا حَسْرَتَىٰ عَلَىٰ مَا فَرَّطْتُ فِي جَنْبِ اللَّهِ وَإِنْ كُنْتُ لَمِنَ السَّاخِرِينَ

५६- कहीं ऐसा न हो कि कोई नफ़्स (व्यक्ति) कहने लगे, ''अफ़सोस मेरी उस कोताही पर! जो मैंने अल्लाह के मामले में की, और मैं तो मज़ाक़ उड़ाने वालों में से ही रहा;

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ

५७- या कहने लगे अगर अल्लाह ने मुझे हिदायत दी होती तो मैं भी परहेज़गारों में से होता।''

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ

५८- या यह जब अ़ज़ाब देखे तो कहने लगे, ''काश! मुझे एक बार फिर (दुनिया में) लौट कर जाना हो, तो मैं भले लोगों में से बन जाऊँ।''

بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ

५९- ''क्यों नहीं, मेरी आयतें 'तेरे' पास पहुँच गयी थीं, लेकिन तूने उनको झुठलाया और घमंड किया और इन्कार करने वालों में से हो गया;

६०- और क़ियामत के दिन तुम उनको देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ कर थोपा, कि उनके चेहरे स्याह होंगे, क्या घमंड करने वालों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है?''

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝

६१- और अल्लाह उन लोगों को नजात (मुक्ति) देगा, जो मुत्तक़ी (परहेज़गार) बने रहे, उनके कामियाबी की वजह से न कोई उनको तकलीफ़ पहुँचेगी, और न वे ग़मगीन (शोकाकुल) होंगे।

وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۫ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

६२- अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और 'वही' हर चीज़ का निगेहबान (संरक्षक) है;

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۫ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝

६३- 'उसी' के पास आसमानों और ज़मीन की कुंजियां हैं; और जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, वही घाटे में रहने वाले हैं।

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

६४- कह दीजिए, ''क्या तुम मुझे अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत करने का हुक्म देते हो, ऐ जाहिलो (ऐ अज्ञानियों)?''

قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ۝

६५- और आप की ओर जो आप से पहले गुज़र चुके हैं उनकी ओर भी वह्य की जा चुकी है, ''अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया धरा सब अकारथ हो जाएगा और तुम घाटे में पड़ने वालों में से हो जाओगे।''

وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝

६६- (नहीं,) बल्कि अल्लाह ही की इबादत करो और शुक्रगुज़ारों में से हो जाओ।

بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝

६७- और उन्होंने अल्लाह की जैसी क़द्र करनी चाहिए थी वैसी नहीं की और क़ियामत के दिन सारी ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी, और आसमान लिपटे हुए 'उसके' दाहिने हाथ में होंगे, और 'वह' पाक और बहुत बुलन्द है उससे, जो यह साझी ठहराते हैं।

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

६८- और जब सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा, तो जो लोग भी आसमानों और ज़मीन में हैं सब बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे, सिवाय उसके जिसको अल्लाह चाहे; फिर दूसरी बार सूर फूँका जाएगा, तो यकायक लोग उठ खड़े हो कर देखने लगेंगे।

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ۝

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٦٩

६९- और धरती अपने रब के नूर (प्रकाश) से जगमगा उठेगी, और किताब (कर्मपत्र) रख दी जाएगी, और नबियों, और गवाहों को लाया जाएगा, और उनमें ह़क़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा, और उन पर कोई ज़ुल्म न होगा;

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝٧٠

७०- और हर व्यक्ति को उसके किये हुए काम का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा, और 'वह' खूब जानता है, जो कुछ ये करते रहे हैं।

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ۭ حَتّٰىٓ إِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝٧١

७१- और जिन लोगों ने इन्कार किया वे गिरोह के गिरोह जहन्नम की ओर ले जाए जाएँगे, यहां तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिये जाएँगे और उसके निगराँ (प्रहरी) उनसे कहेंगे, ''क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें सुनाते और तुम्हें तुम्हारे इस दिन की मुलाकात से सचेत करते रहे हों?'' कहेंगे, ''क्यों नहीं (वे तो आए थे), किन्तु इन्कार करने वालों पर अ़ज़ाब का हुक्म पूरा हो कर रहा।''

قِيْلَ ادْخُلُوْٓا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝٧٢

७२- कहा जाएगा,''जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल (प्रवेश) हो, उसमें हमेशा रहोगे, तो क्या ही बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का!''

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۭ حَتّٰىٓ إِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ۝٧٣

७३- और जो लोग अपने रब से डरते हैं वे गिरोह के गिरोह जन्नत की ओर ले जाए जाएँगे, यहां तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे (इस हाल में) कि उसके दरवाज़े खुले होंगे, और उसके निगराँ (प्रहरी) उनसे कहेंगे, ''सलाम हो तुम पर! बहुत अच्छे रहे, अब इसमें दाख़िल हो हमेशा रहने के लिए।''

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝٧٤

७४- और वे कहेंगे, ''तमाम तअ़रीफ़ अल्लाह के लिए हैं, 'जिसने' हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया, और हमें उस ज़मीन (जन्नत) का वारिस बनाया कि हम जन्नत में जहाँ चाहें वहाँ रहें बसें।'' तो क्या ही अच्छा बदला (इनआ़म) है अ़मल करने वालों का।

وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٧٥

७५- और तुम देखोगे कि फ़रिश्ते अ़र्श (सिहांसन) के चारों ओर घेरा बनाए हुए, अपने रब की तस्बीह़ (गुणगान) कर रहे हैं, और उनमें हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा कि (और) कहा जाएगा, ''हर तरह़ की तअ़रीफ़ (स्तुति) सारे संसार के रब, अल्लाह, ही के लिए है।''



अनुवाद-सूरतुल्मुअमिनि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ५२१३ अक्षर, १२४२ शब्द, ८५ आयतें और ९ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

حٰمٓ ۚ

१- ह़ामीम्,

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ

२- इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की ओर से है, जो बड़ा ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली) इल्म वाला है;

غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ

३- जो गुनाह माफ़ करने वाला, तौबः क़ुबूल करने वाला, सख़्त सज़ा देने वाला और बड़े फ़ज़्ल (अनुग्रह) वाला है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं 'उसी' की ओर लौट कर जाना है।

مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِى الْبِلَادِ

४- अल्लाह की आयतों के बारे में केवल वही लोग झगड़ते हैं जो काफ़िर हैं, तो शहरों में उन लोगों का चलना-फिरना तुम्हें धोखे में न डाल दे।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۠ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۠ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ

५- उनसे पहले नूह़ की क़ौम झुठला चुकी है, और उनके बाद दूसरे गिरोहों ने भी, (झुठलाया) और हर उम्मत (गिरोह) ने अपने रसूलों के बारे में इरादा किया कि उसको पकड़ लें, और वे बातिल (असत्य) का सहारा लेकर झगड़ते रहे, ताकि उसके ज़रिये ह़क़ (सत्य) को उखाड़ दें, तो 'मैंने' उनको पकड़ लिया, सो कैसी रही मेरी सज़ा!

وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ

६- और इसी तरह आप के 'रब' की बात साबित हो चुकी है, जिन्होंने इन्कार किया, वे दोज़ख़ी हैं।

اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ

७- जो अर्श (सिंहासन) को उठाए हुए हैं और जो उसके चारों ओर अपने रब की तअ़रीफ़ के साथ तस्बीह़ (स्तुति) करते हैं, और 'उस' पर ईमान रखते हैं, और उन लोगों के

تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝

लिए वे क्षमा याचना करते रहते हैं जो ईमान लाए, ''ऐ 'हमारे' रब! तेरी रह़मत और तेरा इल्म हर चीज़ को अहाता (व्याप्त) किये हुए है, 'तू'! उन लोगों को माफ़ कर दे जिन्होंने तौबः की, 'तेरे' रास्ते पर चले, और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचाले;

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ
صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

८- ऐ हमारे रब! उन्हें हमेशा रहने की जन्नत में दाख़िल कर, जिनका 'तूने' उनसे वादा किया है, और उनके बाप-दादा, और उनकी पत्नियों, और उनकी औलाद में से, उनको भी, (जो योग्य हों) बेशक 'तू' बड़ी ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली) ह़िकमत वाला है;

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ ۚ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ
رَحِمْتَهُ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

९- और उन्हें बुरे अंजाम से बचा! और जिसको 'तूने' उस दिन बुरे अंजाम से बचा लिया, तो बेशक उन पर 'तूने' रह़म किया और यही बड़ी कामियाबी है।''

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِنْ مَقْتِكُمْ
أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ۝

१०- जिन लोगों ने इन्कार किया, उनको पुकार कर कहा जाएगा, अपने आप से जो तुम बेज़ार (लानत-मलामत करते) हो उससे कहीं ज़्यादा बेज़ार तुम से अल्लाह था, जब तुम्हें ईमान की ओर बुलाया जाता था, तो तुम इन्कार करते थे।''

قَالُوا رَبَّنَا أَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ
فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَىٰ خُرُوجٍ مِنْ سَبِيلٍ ۝

११- वे कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! 'आप' ने हमें दो बार मौत दी, और दो बार ज़िन्दगी दी, अब हमने अपने गुनाहों को स्वीकार किया, तो क्या निकलने का भी कोई रास्ता है,

ذَٰلِكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ ۖ وَإِنْ يُشْرَكْ
بِهِ تُؤْمِنُوا ۚ فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ۝

१२- तुम इस अंजाम को इसलिए पहुंचे कि जब एक अल्लाह की ओर बुलाया जाता था तो तुम इन्कार करते थे और अगर उसका साझी ठहराया जाता, तो मान लेते थे, तो अब फ़ैसला तो अल्लाह ही के हाथ में है, जो बुलन्द (सर्वोच्च) व महान है।

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۚ
وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُنِيبُ ۝

१३- 'वही' तो है जो तुम को अपनी निशानियाँ दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी उतारता है; और नसीहत तो वही हासिल करता है जो अल्लाह की ओर रूजूअ़ करने वाला है।

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ
الْكَافِرُونَ ۝

१४- तो अल्लाह ही को पुकारो, दीन को उसके लिए ख़ालिस करके, चाहे काफ़िरों को कितना ही नागवार (अप्रिय) हो।

رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ
مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۝

१५- 'वह' ऊँचे दर्जों वाला अर्श (सिंहासन) का मालिक है, अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपने हुक्म से रूह़

(वह्य) नाज़िल करता है, ताकि वह पेशी के दिन से डराए।

يَوْمَ هُمْ بَارِزُونَ ۚ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝

१६- जिस दिन वे निकल पड़ेंगे, उनकी कोई चीज़ अल्लाह से छिपी न रहेगी, ''आज किस की हुकूमत है? अल्लाह की, 'जो' अकेला सब पर क़ाबू रखने वाला है।''

الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

१७- आज हर व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला दिया जाएगा, आज कोई ज़ुल्म न होगा, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ۝

१८- और उन लोगों को जल्द ही आने वाली मुसीबत के दिन से डराइए, कि जब कलेजे मुँह को आ लगेंगे (और वे ग़म से घुट रहे होंगे) ज़ालिमों का न कोई दोस्त होगा और न सिफ़ारिशी जिसकी बात मानी जाए।

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ۝

१६- 'वह' निगाहों की ख़ियानत को भी जानता है, और जो सीनों में छिपा है।

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

२०- और अल्लाह ठीक-ठीक फ़ैसला कर देगा, और जिनको ये अल्लाह को छोड़कर पुकारते हैं, वे किसी चीज़ का हुक्म नहीं दे सकते, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ۝

२१- क्या उन्होंने धरती में चला-फिरा नहीं कि देखते, कि उन लोगों का क्या अंजाम हुआ, जो लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं? वे शक्ति और धरती में अपने चिन्हों की वजह से उनसे कहीं बढ़ चढ़कर थे, फिर उनके गुनाहों की वजह से अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया, और अल्लाह से उन्हें बचाने वाला कोई न हुआ।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

२२- यह तो अंजाम इसलिए सामने आया कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आते थे, तो ये इन्कार करते रहे, तो अल्लाह ने उनको पकड़ लिया, बेशक 'वह' बड़ी ताक़त वाला, सख़्त सज़ा देने वाला है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُبِينٍ ۝

२३- और 'हमने' मूसा को अपनी निशानियाँ और खुली दलीलें देकर भेजा;

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ۝

२४- फ़िरऔन, और हामान, और क़ारून की ओर, तो उन्होंने कहा, ''यह तो जादूगर है बड़ा झूठा।''

فَلَمَّا جَآءَهُم بِالْحَقِّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا اقْتُلُوٓا أَبْنَآءَ
الَّذِينَ ءَامَنُوا مَعَهُۥ وَاسْتَحْيُوا نِسَآءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ
الْكَٰفِرِينَ إِلَّا فِى ضَلَٰلٍ

२५- फिर जब (मूसा) ‘हमारी’ ओर से हक़ लेकर उनके पास गये तो कहने लगे, “जो लोग उनके साथ (अल्लाह पर) ईमान लाए हैं, उनके बेटों को क़त्ल कर डालो और औ़रतों को ज़िन्दा रखो, और काफ़िरों की तद्बीरें तो अकारथ ही होती हैं।”

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِىٓ أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُۥٓ ۖ
إِنِّىٓ أَخَافُ أَن يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَن يُظْهِرَ فِى
الْأَرْضِ الْفَسَادَ

२६- और फ़िरऔन ने कहा, “मुझे छोड़ो, मैं मूसा को मार डालूँ और उसे चाहिए कि वह अपने रब को पुकारे, मुझे डर है कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हारे धर्म को बदल डाले या यह कि वह देश में बिगाड़ पैदा करे।”

وَقَالَ مُوسَىٰٓ إِنِّى عُذْتُ بِرَبِّى وَرَبِّكُم مِّن كُلِّ مُتَكَبِّرٍ
لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ

२७- और मूसा ने कहा, “मैंने हर घमंडी के मुक़ाबले में, जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता, अपने और तुम्हारे (रब) की पनाह (शरण) ले चुका हूँ।”

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ ءَالِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ
إِيمَٰنَهُۥٓ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ رَبِّىَ اللَّهُ وَقَدْ
جَآءَكُم بِالْبَيِّنَٰتِ مِن رَّبِّكُمْ ۖ وَإِن يَكُ كَٰذِبًا فَعَلَيْهِ
كَذِبُهُۥ ۖ وَإِن يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُم بَعْضُ الَّذِى
يَعِدُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِى مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ
كَذَّابٌ

२८- और फिरऔ़न के लोगों में से एक ईमान वाले व्यक्ति ने, जो अपने ईमान को छिपाए हुए था कहा, “क्या तुम ऐसे व्यक्ति को, इसलिए मार डालोगे कि वह कहता है, ‘मेरा रब अल्लाह है, और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुले प्रमाण भी लेकर आया है?’ और अगर वह झूठा है तो उसके झूठ का वबाल उसी पर पड़ेगा, और अगर वह सच्चा है, तो जिस चीज़ की वह तुम्हें धमकी दे रहा है, उसमें से कुछ न कुछ तो तुम पर पड़कर रहेगा, बेशक अल्लाह उसको राह नहीं दिखाता जो हद से गुज़रने वाला झूठा हो।

يَٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَٰهِرِينَ فِى الْأَرْضِ
فَمَن يَنصُرُنَا مِنۢ بَأْسِ اللَّهِ إِن جَآءَنَا ۚ قَالَ
فِرْعَوْنُ مَآ أُرِيكُمْ إِلَّا مَآ أَرَىٰ وَمَآ أَهْدِيكُمْ إِلَّا
سَبِيلَ الرَّشَادِ

२९- ऐ क़ौम! आज तुम्हारी ही बादशाही है और तुम ही धरती में ग़ालिब (प्रभावी) हो, अगर अल्लाह की सज़ा हम पर आए तो कौन हमारी मदद करेगा? फ़िरऔ़न ने कहा, “मैं तुम को वही बात समझाता हूँ जो मैं समझता हूँ और वही राह बताता हूँ, जिसमें भलाई है।”

وَقَالَ الَّذِىٓ ءَامَنَ يَٰقَوْمِ إِنِّىٓ أَخَافُ عَلَيْكُم مِّثْلَ يَوْمِ
الْأَحْزَابِ

३०- और जो ईमान ला चुका था वह कहने लगा “ऐ मेरी क़ौम! मुझे डर है कि तुम पर ऐसा दिन आ पड़े, जैसा कि पिछले गिरोहों पर आ पड़ा था;

مِثْلَ دَأْبِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِنۢ
بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ

३१- जैसे नूह की क़ौम, और आ़द, और समूद और उनके बाद के लोगों का हाल हुआ, अल्लाह तो अपने बन्दों पर नहीं चाहता कि कोई ज़ुल्म करे।”

३२- और ऐ मेरी क़ौम ! मुझे तुम्हारे बारे में चीख़-पुकार के दिन का डर है;

وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ

३३- जिस दिन तुम पीठ फेर कर भागोगे, तुम को अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा, और जिस व्यक्ति को अल्लाह ही भटका दे, उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं।

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ

३४- और पहले तुम्हारे पास यूसुफ भी खुले प्रमाण लेकर आ चुके हैं तो जो कुछ वे लेकर तुम्हारे पास आए थे उसके बारे में तुम बराबर सन्देह में पड़े रहे, यहाँ तक कि जब उनकी मौत हो गई तो तुम कहने लगे, ''अल्लाह उनके बाद हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा।'' इस तरह अल्लाह उसको गुमराही में डाल देता है जो हद से गुज़रने वाला और शक में पड़ने वाला हो

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ۗ حَتّٰىٓ اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۗ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ

३५- जो लोग बिना इसके कि उनके पास कोई दलील आयी है, अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं यह बात अल्लाह और ईमान वालों के नज़दीक सख्त नापसंद है, इसी तरह अल्लाह हर घमंडी सरकशों के दिलों पर मोहर लगा देता है।

اِلَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۗ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ

३६- और फ़िरऔन ने कहा, ''ऐ हामान! मेरे लिए एक महल बनवा, ताकि मैं उस पर चढ़ कर रास्तों तक पहुँच जाऊँ;

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ

३७- आसमानों के रास्ते पर फिर मूसा के रब को झांक कर देख लूँ, और मैं तो समझता हूँ कि यह बिल्कुल झूठा है, और इस तरह फ़िरऔन के बुरे काम उसको भले करके दिखाए गये, और उसे राह से रोक दिया गया, और फ़िरऔन की चाल तो बेकार हो गई;''

اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۗ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۗ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ

३८- और कहा उस व्यक्ति ने जो ईमान लाया था, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो मेरी बात मानो, मैं तुम्हें भलाई का रास्ता बता रहा हूं।''

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ

३९- ऐ मेरी क़ौम! यह दुनिया की ज़िन्दगी तो बस थोड़े फायदे की चीज़ है, और जो आख़िरत का घर है वही हमेशा रहने का घर है;

يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۖ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ
عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ
حِسَابٍ ۝

४०- जो बुरे काम करेगा उसको वैसा ही बदला मिलेगा, और जो भलाई के काम करेगा- मर्द हो या औ़रत, और वह ईमान वाला भी हो- तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, वहाँ उनको बेहिसाब रोज़ी दी जाएगी।

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَ تَدْعُوْنَنِيْٓ
اِلَى النَّارِ ۝

४१- और ऐ मेरी क़ौम! यह मेरे साथ क्या मामला है, कि मैं तो तुम को नजात की ओर बुलाता हूं, और तुम मुझे आग की ओर बुलाते हो,

تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ
بِهٖ عِلْمٌ ۡ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ۝

४२- तुम मुझे इसलिए बुलाते हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ्र (इन्कार) करूँ और उस चीज़ को उसका साझीदार ठहराऊँ जिनको मैं नहीं जानता, और मैं तुम्हें उस ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) बख़्शने वाले की ओर बुला रहा हूँ;

لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي
الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَ اَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ
الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝

४३- सच तो यह है कि जिस चीज़ की ओर तुम मुझे बुलाते हो वह न दुनिया में पुकारे जाने के क़ाबिल है, और न आख़िरत में, और हमें लौटना भी अल्लाह ही की ओर है, और जो हद से गुज़रने वाले हैं वही जहन्नमी हैं;''

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ۚ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ
اِلَى اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝

४४- तो जल्द ही तुम याद करोगे उन बातों को, जो मैं तुमसे कह रहा हूं, और मैं अपना मामला अल्लाह को सौंपता हूँ, बेशक अल्लाह अपने बन्दों को खूब देख रहा है।

فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ
سُوْٓءُ الْعَذَابِ ۝

४५- तो अल्लाह ने उन लोगों की चालों से (मूसा को) बचा लिया, और फ़िरऔ़न वालों को बुरे अ़ज़ाब ने आ घेरा;

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ
السَّاعَةُ ۣ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ۝

४६- (अर्थात) आग कि जिसके सामने वे सुबह और शाम पेश किये जाते हैं, और जिस दिन क़ियामत आएगी, (हुक्म होगा कि) ''फ़िरऔ़न वालों को सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल करो।''

وَاِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ
عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ۝

४७- और जब वे दोजख़ में एक-दूसरे से झगड़ रहे होंगे, तो कमज़ोर लोग उन लोगों से,जो बड़े बनते थे, कहेंगे ''हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे, तो क्या तुम हम पर से आग का कुछ हिस्सा हटा सकते हो?''

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ
حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۝

४८- बड़े बनने वाले कहेंगे, ''हममें से तो हर एक इसी में पड़ा है, अल्लाह बन्दों के बीच फ़ैसला कर चुका है।''

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾

४६- और जो लोग आग में होंगे वे जहन्नम के निगराँ (चौकीदार) से कहेंगे, ''अपने रब को पुकारो कि हमारे अ़ज़ाब में से एक दिन ही अ़ज़ाब कुछ हल्का कर दे।''

قَالُوا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۚ قَالُوا فَادْعُوا ۗ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿٥٠﴾

५०- वे कहेंगे, ''क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुले प्रमाण लेकर नहीं आते रहे,'' वे कहेंगे, ''क्यों नहीं!!'' (फिर) वे कहेंगे, ''फिर तो तुम्हीं पुकारो, और काफ़िरों (इन्कार करने वालों) की दुआ़ तो बस अकारथ ही हो जाएगी''

إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ﴿٥١﴾

५१- हम अपने रसूलों की और जो लोग ईमान लाए उनकी, दुनिया की ज़िन्दगी में भी मदद करते हैं, और उस दिन भी, जबकि गवाह खड़े होंगे (अर्थात क़ियामत के दिन)।

يَوْمَ لَا يَنفَعُ الظَّالِمِينَ مَعْذِرَتُهُمْ ۖ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾

५२- जिस दिन ज़ालिमों को उनका उज़्र (सफाई) कुछ भी फ़ायदा न पहुँचाएगा, और उन पर लानत होगी और बुरा ठिकाना होगा।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ ﴿٥٣﴾

५३- और 'हमने' मूसा को हिदायत दी और बनी इस्राईल को किताब का वारिस बनाया,

هُدًى وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٥٤﴾

५४- रहनुमाई और नसीहत है बुद्धिमानों के लिए।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٥٥﴾

५५- तो सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है; और अपने गुनाहों की माफ़ी चाहो, और सुबह और शाम अपने रब के ख़ूबियों की तस्बीह़ (गुणगान) करते रहो।

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۙ إِن فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ مَّا هُم بِبَالِغِيهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٥٦﴾

५६- जो लोग बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो उनके पास आया हो, अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं, उनके सीनों में केवल घमंड है, मगर वे उस बड़ाई को पहुँचने वाले नहीं, तो तुम अल्लाह की पनाह माँगो, बेशक 'वह' देखने वाला, सुनने वाला है।

لَخَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

५७- आसमानों और ज़मीन का पैदा करना इन्सानों के पैदा करने से ज़्यादा बड़ा (काम) है, मगर अक्सर लोग नहीं जानते।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا الْمُسِيءُ ۚ قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

५८- अन्धा और आँख वाला बराबर नहीं होते, और न ईमान वाले, नेक अ़मल करने वाले और बद्कार आपस में बराबर हो सकते हैं, मगर तुम बहुत कम ध्यान देते हो।

إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

५९- क़ियामत की घड़ी आने वाली है, इसमें कोई सन्देह नहीं, मगर अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ۝

६०- और तुम्हारे रब ने कहा है, ''तुम मुझे पुकारो, मैं (तुम्हारी दुआएँ) क़ुबूल करूँगा।'' जो लोग मेरी इबादत के मामले में घमंड से काम लेते हैं वे बहुत जल्द अपमानित होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝

६१- अल्लाह ही तो है जिसने तुम्हारे लिए रात बनायी, ताकि तुम इसमें सुकून हासिल करो और दिन को रोशन बनाया, बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा मेहरबान है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।

ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝

६२- 'यही' अल्लाह तुम्हारा रब है, जो हर चीज़ का पैदा करने वाला है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, फिर तुम कहाँ उल्टे फिरे जा रहे हो?

كَذَٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۝

६३- इसी तरह वे लोग भटक रहे थे, जो अल्लाह की निशानियों का इन्कार करते थे।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

६४- अल्लाह ही तो है 'जिसने' तुम्हारे लिए ज़मीन को ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया, और तुम्हारी सूरत बनाईं! और क्या ही अच्छी तुम्हारी सूरतें बनाई, और तुम्हें अच्छी पाक चीज़ों की रोज़ी दी, यही अल्लाह तो तुम्हारा रब है, तो अल्लाह, सारे संसार का 'रब' बड़ी बरकत वाला है;

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

६५- 'वह' ज़िन्दा है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, तो 'उसी' को पुकारो इबादत को खास करते हुए, सारी तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे संसार का 'रब' है।

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَّبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

६६- (ऐ मुहम्मद) कह दीजिए, ''मुझे इस बात से रोक दिया गया है कि मैं उनकी इबादत करूँ जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो, जबकि मेरे पास मेरे रब की ओर से खुले प्रमाण आ चुके हैं, और मुझे तो हुक्म हुआ है कि मैं अपने आप को सारे संसार के रब के हवाले कर दूँ।''

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا

६७- 'वही' तो है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर वीर्य से, फिर खून के लोथड़े से; फिर 'वह' तुम्हें एक बच्चे के रूप

أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا ۚ وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ
مِن قَبْلُ ۖ وَلِتَبْلُغُوا أَجَلًا مُّسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾

में निकालता है, फिर तुम अपनी जवानी को पहुँचते हो, फिर तुम बूढ़े हो जाते हो, और तुममें से कुछ को पहले मौत आ जाती है और तुम एक निश्चित समय तक पहुँच जाते हो, और ताकि तुम समझो।

هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا
يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٦٨﴾

६८- 'वही' ज़िन्दगी देता है, और 'वही' मौत देता है, जब 'वह' किसी काम का फ़ैसला कर लेता है तो बस हुक्म देता है, कि 'हो जा' तो वह हो जाता है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنَّىٰ
يُصْرَفُونَ ﴿٦٩﴾

६९- क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जो अल्लाह की आयतों के बारे में झगड़ते हैं, यह कहाँ भटके जा रहे हैं!!

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا ۖ
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٧٠﴾

७०- जिन लोगों ने किताब को झुठलाया और उसे भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा था, तो जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा।

إِذِ الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ ﴿٧١﴾

७१- जबकि तौंक उनके गर्दनों में होंगी और ज़ंजीरों से उनको घसीटा जाएगा;

فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿٧٢﴾

७२- खौलते हुए पानी में, फिर आग में झोंक दिया जाएगा।

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٧٣﴾

७३- फिर उनसे कहा जाएगा, ''वे कहां हैं जिनको तुम साझीदार ठहराते थे;

مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَل لَّمْ نَكُن
نَّدْعُو مِن قَبْلُ شَيْئًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ
الْكَافِرِينَ ﴿٧٤﴾

७४- अल्लाह को छोड़ कर,'' वे कहेंगे, ''गुम हो गये, वे हमसे, बल्कि हम तो पहले किसी चीज़ को नहीं पुकारते थे,'' इसी तरह अल्लाह काफ़िरों (इन्कार करने वालों) को भटकता छोड़ देता है।

ذَٰلِكُم بِمَا كُنتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿٧٥﴾

७५- यह इसका बदला है कि तुम ज़मीन में नाहक़ खुश हुआ करते थे और उसकी (सज़ा है) कि इत्तराया करते थे;

ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ
مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٦﴾

७६- दाख़िल हो जाओ जहन्नम के दरवाज़े में, हमेशा उसी में रहोगे, ''तो कितना ही बुरा ठिकाना है! घमंड करने वालों का,''

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ
بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا
يُرْجَعُونَ ﴿٧٧﴾

७७- तो सब्र करो, अल्लाह का वादा सच्चा है, या तो हम तुम्हें उसका कुछ हिस्सा जिसका वादा 'हम' उनसे कर रहे हैं, दिखा दें, या तुम्हें मौत दें, तो उनको लौट कर आना तो 'हमारी' ही ओर है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُم مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُم مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ۝

७८- और 'हमने' आप से पहले रसूल भेजे, जिनमें से कुछ के ह़ालात 'हम' आप को सुना चुके हैं, और कुछ के ह़ालात नहीं सुनाए; और किसी रसूल के बस की यह बात न थी, कि वह अल्लाह की इजाज़त के बिना कोई 'मोजिजा़' (चमत्कार) ले आता; जब अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा, तो ह़क़ के साथ फै़सला कर दिया गया और नाहक़ पर चलने वाले घाटे में पड़ गये।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝

७६- अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए चौपाए पैदा किये, ताकि उनमें से कुछ पर तुम सवारी करो और उनमें से कुछ को तुम खाते भी हो,

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ۝

८०- और उनमें तुम्हारे लिए (और भी) फा़यदे हैं, और ताकि तुम उनके ज़रिये उस ज़रूरत को पूरा कर सको जो तुम्हारे सीनों में हो, और उन पर भी, और नौकावों पर तुम सवार होते हो।

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَأَيَّ آيَاتِ اللَّهِ تُنكِرُونَ ۝

८१- और 'वह' तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों का इन्कार करोगे।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

८२- फिर क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उनका क्या अंजाम हुआ, जो इनसे पहले गुज़रे हैं, वे इनसे संख्या में ज़्यादा थे और शक्ति में भी, और ज़मीन पर छोड़े हुए निशानों की दृष्टि से बढ़कर थे, तो जो कुछ वे करते थे वह उनके कुछ काम न आया।

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا عِندَهُم مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

८३- जब उनके रसूल उनके पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आए, तो जो इल्म उनके पास था वे उसी पर खुश होते रहे, और उनको उसी चीज़ ने आ घेरा जिनका वे मज़ाक़ उड़ाते थे।

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ۝

८४- फिर जब उन्होंने 'हमारा' अ़ज़ाब देखा, तो कहने लगे, ''हम ईमान लाए अल्लाह पर, 'जो' अकेला है और उनका इन्कार करते हैं, जिनको हम साझी ठहराते थे।''

فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا ۖ سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ۖ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ ۝

८५- मगर उनका ईमान लाना कुछ भी फा़यदा पहुँचा नहीं सकता था, जबकि उन्होंने 'हमारे' अ़ज़ाब को देख लिया, यही अल्लाह की सुन्नत (नियम) है, जो उसके बन्दों में पहले से चली आई और उस समय इन्कार करने वाले घाटे में पड़ कर रहे।



अनुवाद-सूरतु ह़ामीम अस्सज्दति

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ३४०६ अक्षर, ८०६ शब्द,५४ आयतें और ६ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- ह़ामीम्,	حٰمٓ ۚ
२- यह (किताब) रह़मान और रह़ीम की ओर से नाज़िल हुई है;	تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۚ
३- एक ऐसी किताब, जिसकी आयतें खोल-खोल कर बयान की गई हैं- अ़रबी क़ुर्आन- उन लागों के लिए है, जो जानना चाहते हों;	كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۙ
४- जो खुशख़बरी देने वाली, और सचेत करने वाली, मगर उनमें से अक्सर लोगों ने मुँह फेरा, तो वे सुनते ही नहीं;	بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ
५- और कहते हैं, ''जिसकी ओर तुम हमें बुलाते हो हमारे दिल उसकी ओर से पर्दों में हैं, और हमारे कान बहरे हैं, और हमारे और तुम्हारे बीच एक ओट है; तो तुम (अपना) काम करो, हम (अपना) काम करते हैं''	وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ
६- कह दीजिए, मैं तो तुम्हारी ही तरह का एक बशर (मनुष्य) हूँ, मेरी ओर यह वह़्य (प्रकाशना) की जाती है, कि तुम्हारा इलाह (उपास्य) एक ही इलाह है, तो तुम सीधे 'उसी' का रूख करो, और 'उसी' से माफ़ी चाहो।'' और तबाही हो साझी ठहराने वालों के लिए,	قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۙ
७- जो ज़कात नहीं देते, और आख़िरत का इन्कार करते हैं।	الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ
८- जो लोग ईमान लाए और भले काम किये उनके लिए ऐसा बदला है जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं।	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ
९- कह दीजिए, ''क्या तुम 'उसका' इन्कार करते हो, 'जिसने' ज़मीन को दो दिन में पैदा किया और (बुतों को) तुम 'उसके'	قُلْ اَىِٕنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ۗ ذٰلِكَ رَبُّ

बराबर ठहराते हो? 'वही' तो सारे संसार का रब है;	الْعٰلَمِيْنَ ۟
१०- और 'उसीने' (ज़मीन में) उसके ऊपर पहाड़ बनाए और उसमें बरकत रखी, और उसमें उसकी गिज़ा के सामान रखे; यह चार दिनों में हुआ (और तमाम) तलब (इच्छा) रखने वालों के लिए बराबर''।	وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ؕ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝
११-फिर 'उसने' आसमान की ओर रूख किया, और वह धुआँ के रूप में था तो, 'उसने' उससे और ज़मीन से कहा, ''आओ, (हुक्म मानो) रज़ामन्दी के साथ या बिना रज़ामन्दी के,'' उन्होंने कहा, ''हम रज़ामन्दी के साथ आते हैं।''	ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ۝
१२- तो 'उसने' सात आसमान बना दिये- दो दिनों में- और हर आसमान में उससे सम्बन्धित हुक्म की वह्य (प्रकाशन) कर दी; और दुनिया के आसमान को 'हमने' दीपों से सजाया और उसको सुरक्षित कर दिया; यह उस ज़बर्दस्त (प्रभुत्वशाली), ख़बर रखने वाले का तय किया हुआ है।	فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝
१३- फिर अगर ये मुँह फेरें, तो कह दीजिए, ''मैं तुम्हें उसी तरह कड़का देने वाले (अज़ाब) से डराता हूं जिस तरह का कड़ाका देने वाला (अ़ज़ाब आया) आ़द और समूद पर''	فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ۝
१४- जब उनके पास रसूल उनके आगे और उनके पीछे से आए, ''अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो।'' तो उन्होंने कहा, ''अगर हमारा रब चाहता तो फ़रिश्तों को उतार देता, अतः जिस चीज़ के साथ तुम्हें भेजा गया है, हम इसे नहीं मानते।''	اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝
१५- रहे आ़द, तो उन्होंने नाहक़ धरती में घमंड किया और कहा, ''कौन हमसे शक्ति में बढ़कर है?'' क्या उन्होंने नहीं देखा! कि अल्लाह, 'जिसने' उन्हें पैदा किया, 'वह' उनसे शक्ति में बढ़कर है? और वे हमारी आयतों का इन्कार ही करते रहे;	فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝
१६- तो 'हमने' उन पर मन्हूस दिनों में तेज़ हवा भेजी, ताकि उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में ज़िल्लत के अ़ज़ाब का मज़ा चखा दें, और आख़िरत का अ़ज़ाब तो इससे कहीं बढ़कर रूसवा करने वाला है, और उनको कोई मदद भी न मिल सकेगी।	فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝

وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمَىٰ عَلَى الْهُدَىٰ فَأَخَذَتْهُمْ صَاعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُونِ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ

१७- और रहे समूद तो, 'हमने' उनके सामने सीधी राह दिखाई, किन्तु उन्होंने सीधी राह छोड़कर अन्धा रहना पसंद किया, तो जो कुछ वे कमाई कर रहे थे, उसके बदले में उनको कड़क के अ़ज़ाब ने आ पकड़ा।

وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ

१८- और 'हमने' उनको बचा लिया जो ईमान लाए, और डर रखते रहे।

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ

१९- और जिस दिन अल्लाह के दुश्मनों को जहन्नम की ओर ले जाने के लिए इकट्ठा किया जाएगा (और) उनकी दर्जा बन्दी (क्रमबद्ध) की जाएगी,

حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

२०- यहां तक कि जब वे वहाँ पहुंच जाएँगे तो उनके कान उनकी आंखें और उनकी खालें (त्वचा) उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे कि वे क्या कुछ करते रहे हैं।

وَقَالُوا لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدتُّمْ عَلَيْنَا ۖ قَالُوا أَنطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

२१- और वे अपनी खालों से कहेंगे कि "तुमने हमारे खिलाफ़ क्यों गवाही दी?" वह कहेगी, "हमें 'उसी' अल्लाह ने बोलने की ताक़त दी, जिसने हर चीज़ को बोलने की ताक़त दी और 'उसी' ने तुमको पहली बार पैदा किया और तुम को 'उसी' की ओर लौट कर जाना है।

وَمَا كُنتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَن يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَٰكِن ظَنَنتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِّمَّا تَعْمَلُونَ

२२- और तुम इससे तो पर्दा नहीं करते थे कि तुम्हारे कान, तुम्हारी आँखें, और तुम्हारी खालें, तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देंगे, बल्कि तुमने तो यह समझ रखा था कि 'अल्लाह तुम्हारी बहुत सी बातों को नहीं जानता' जो तुम करते हो।

وَذَٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنتُم بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُم مِّنَ الْخَاسِرِينَ

२३- और तुम्हारे उस गुमान ने तुम्हें बरबाद किया जो अपने रब के बारे में रखते थे, तो तुम घाटे में पड़कर रहे।

فَإِن يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۖ وَإِن يَسْتَعْتِبُوا فَمَا هُم مِّنَ الْمُعْتَبِينَ

२४- अब अगर ये सब्र करेंगे तो भी जहन्नम ही इनका ठिकाना है, और अगर वे माफ़ी मांगे, तो इन्हें माफ़ नहीं किया जाएगा।

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُم مَّا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ

२५- और 'हमने' उन पर कुछ साथी (शैतान) नियुक्त कर दिये थे, फिर उन्होंने उनके आगे और उनके पीछे (के आ़माल को) जो कुछ था उसे सुहाना बनाकर, उन्हें दिखाया तो उन पर भी जिन्नों और मनुष्यों के उन गिरोहों के साथ फ़ैसला सच हो कर रहा, जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं, बेशक वे घाटा उठाने वाले थे।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَٰذَا الْقُرْآنِ
وَالْغَوْا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ﴿٢٦﴾

२६- और जिन लोगों ने इन्कार किया उन्होंने कहा,''इस कुर्आन को सुनो ही नहीं और इसके बीच में शोर-गुल मचाओ, ताकि तुम ग़ालिब (प्रभावी) रहो।''

فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَ
لَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

२७- तो हम ज़रूर उन लोगों को- जिन्होंने इन्कार किया- सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखाएंगे, और 'हम' ज़रूर उन्हें उस का बदला देंगे जो बद्तरीन काम वे करते रहे हैं।

ذَٰلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ لَهُمْ فِيهَا دَارُ
الْخُلْدِ جَزَاءً بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٢٨﴾

२८- यह है, अल्लाह के दुशमनों का बदला आग, इसी में उनका हमेशा के रहने वाला घर है, यह बदला है इस बात का कि वे 'हमारी' आयतों का इन्कार करते थे।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا
مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا
لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ﴿٢٩﴾

२९- और जिन लोगों ने इन्कार किया, वे कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! हमें दिखा दे उन जिन्नों और इन्सानों को, जिन्होंने हमको गुमराह किया था कि हम उन्हें अपने पैरों तले कुचल दें, ताकि वे सबसे नीचे जा पड़ें।''

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ
عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَ
أَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾

३०- जिन लोगों ने कहा, ''हमारा रब अल्लाह है।'' फिर उस पर मज़बूती से जमे रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे, ''न डरो और न रंजीदा हो, और उस जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनो जिसका तुमसे वादा किया जाता है।''

نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي
الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنْفُسُكُمْ
وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ﴿٣١﴾

३१- हम दुनिया की ज़िन्दगी में भी तुम्हारे दोस्त थे और आख़िरत में भी, और वहाँ तुम्हारा जो दिल चाहेगा वह तुम्हें मिलेगा, और जो चीज़ भी तुम माँगोगे वह सब तुम्हें मिलेगी।

نُزُلًا مِنْ غَفُورٍ رَحِيمٍ ﴿٣٢﴾

३२- यह मेहमानी (सत्कार) है, 'उसकी' ओर से जो बख़्शने वाला, रह़म करने वाला है।

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا
وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾

३३- और उस व्यक्ति से बेहतर बात, किस की हो सकती है? जो अल्लाह की ओर बुलाए, और नेक अ़मल करे और कहे, ''मैं मुसलमानों (फ़रमाबरदारों) में से हूँ।''

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ادْفَعْ بِالَّتِي
هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ
كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾

३४- और भलाई और बुराई बराबर नहीं हो सकती, तुम बुराई को उस तरह दूर करो जो सब से बेहतर हो, उस सूरत में तुम देखोगे कि तुम्हारे और जिस (व्यक्ति) के बीच दुश्मनी थी, गोया वह गहरा दोस्त बन गया है;

وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ۝

३५- और इसकी तौफीक़ उन ही लोगों को मिलती है जो सब्र करते हैं, और यह चीज़ उन्हीं को हासिल होती है जो बड़ी क़िस्मत वाले हैं।

وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۚ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

३६- और अगर शैतान की ओर से कोई वस्वसा मालूम हो, तो अल्लाह की पनाह माँगो, बेशक 'वह' सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝

३७- और अल्लाह की निशानियों में से रात और दिन, और सूरज और चाँद हैं, तो तुम लोग न सूरज को सज्दः करो और न चाँद को, और अल्लाह ही को सज्दः करो 'जिसने' इन चीज़ों को पैदा किया है, अगर तुम अल्लाह की इबादत करने वाले हो।

فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْئَمُوْنَ ۩ ۝ सज्दः

३८- और अगर ये लोग सरकशी करें, तो जो (फ़रिश्ते) तुम्हारे 'रब' के पास हैं वे तो रात और दिन 'उसकी' तस्बीह़ करते ही रहते हैं, और वे कभी थकते ही नहीं।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ۚ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

३९- और यह चीज़ भी 'उसकी' निशानियों में से है कि तुम देखते हो कि धरती दबी पड़ी (अर्थात सूखी) है, फिर जब 'हम' उस पर पानी बरसाते हैं तो वह लहलहाने लगती और फूल जाती है, तो 'जिसने' ज़मीन को ज़िन्दा किया, 'वही' मुर्दों को भी ज़िन्दा करने वाला है, बेशक 'वह' हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्य) है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۚ اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

४०- जो लोग 'हमारी' आयतों में टेढ़ापन पैदा करते हैं वे 'हमसे' छिपे हुए नहीं हैं, तो क्या जो व्यक्ति दोज़ख़ में डाला जाए, वह अच्छा है या वह, जो क़ियामत के दिन बेफ़िक्र (निश्चिन्त) होकर आए? जो चाहे कर लो, तुम जो कुछ करते हो 'वह' तो उसे देख रहा है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ۝

४१- जिन लोगों के पास नसीह़त आई और उन्होंने उसको न माना और यह एक ज़बर्दस्त किताब है।

لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ۚ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ۝

४२- असत्य 'उस' तक न उसके आगे से आ सकता है, और न उसके पीछे से, यह 'उसकी' ओर से नाज़िल हुई है जो ह़िकमत वाला, ख़ूबियों वाला है।

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٣﴾

४३- तुम्हें बस वही कहा जा रहा है जो उन रसूलों को कहा जा चुका है जो तुमसे पहले गुज़रे हैं, बेशक तुम्हारा रब माफ़ करने वाला भी है और दुखदाई सज़ा देने वाला भी है।

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۖ أَأَعْجَمِيٌّ وَعَرَبِيٌّ ۗ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۖ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ أُولَٰئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٤٤﴾

४४- और अगर 'हम' इसे अजमी (अ़रबी के सिवा किसी भाषा) में क़ुर्आन बनाते तो यह लोग कहते, ''इसकी आयतें क्यों नहीं (हमारी भाषा में) खोलकर बयान की गईं? यह क्या कि भाषा तो विदेशी हो और हम अरबी?'' कह दीजिए, ''जो ईमान रखते हैं उनके लिए तो यह हिदायत और शिफ़ा है, और जो लोग ईमान नहीं लाते उनके कानों में बोझ है और यह (क़ुर्आन) उनके लिए अन्धापन है, वे ऐसे हैं जिनको किसी दूर की जगह से पुकारा जा रहा हो।''

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتُلِفَ فِيهِ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ﴿٤٥﴾

४५- और 'हमने' मूसा को किताब दी, फिर उसमें भी मतभेद किया गया, और अगर तुम्हारे रब की ओर से पहले ही से एक बात तय न हो चुकी होती तो उनके बीच फ़ैसला कर दिया जाता, और यह इस (क़ुर्आन) से शंका में पड़े हुए हैं।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ ﴿٤٦﴾

४६- जिसने भले काम किये तो उसने अपने ही लिए और जिसने बुराई की, उसका वबाल भी उसी पर पड़ेगा, और तुम्हारा रब अपने बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता।

पारा नं०-२५

* إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرَاتٍ مِنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾

४७- क़ियामत की घड़ी का इल्म 'उसी' की ओर लौटता है, जो फल भी अपने कोषों से निकलते हैं और जो माँ भी गर्भवती होती, और बच्चा जनती है, मगर 'उसे' उन सब का इल्म होता है, और जिस दिन 'वह' उन्हें पुकारेगा ''कहाँ हैं मेरे साझी दार?'' तो वे कहेंगे, '' हम तेरे सामने कह चुके हैं कि हममें से कोई भी इसका गवाह नहीं;''

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُمْ مِنْ مَحِيصٍ ﴿٤٨﴾

४८- और जिन्हें वे पहले पुकारा करते थे उनसे गुम हो जाएँगे, और वे समझ लेंगे कि उनके लिए कोई भी भागने की जगह नहीं।

لَا يَسْأَمُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِنْ مَسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ﴿٤٩﴾

४९- इन्सान भलाई मांगने से नहीं उकताता, और अगर उसे कोई तकलीफ़ पहुँच जाती है तो निराश होकर मायूस हो जाता है;

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝

५०- और अगर तकलीफ़ पहुँचने के बाद 'हम' उसे अपनी रह्मत का मज़ा चखाते हैं, तो कहता है, ''मैं तो इसका हक़दार था, और मैं यह नहीं समझता था कि क़ियामत क़ायम होगी, और अगर मैं अपने रब की ओर लौटाया गया तो मेरे लिए वहाँ भी खुशहाली ही होगी।'' तो 'हम' इन काफ़िरों को ज़रूर बताएँगे जो कुछ उन्होंने किया होगा और हम उन्हें ज़रूर सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखाएंगे;

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ ۝

५१- और जब 'हम' इन्सान को नेअ़मत से नवाज़ते हैं तो वह मुँह फेर लेता है, और अपना पहलू बदल लेता है, और जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो लम्बी चौड़ी दुआएँ करने लगता है।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم بِهِ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۝

५२- कह दीजिए, ''क्या तुमने देखा नहीं! कि अगर यह (क़ुर्आन) ''अल्लाह की ओर से हुआ और तुमने इसका इन्कार कर दिया, तो उससे बढ़कर भटका हुआ कौन होगा, जो मुख़ालिफ़त में दूर जा पड़ा हो?''

سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَفِي أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

५३- जल्द ही 'हम' उनको अपनी निशानियाँ आफ़ाक़ (वह्य क्षेत्र)में दिखाएँगे और उनके अपने अन्दर भी, यहां तक कि उनपर स्पष्ट हो जाएगा कि यह (क़ुर्आन) ह़क़ है, क्या तुम को यह बात काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब हर चीज़ पर गवाह है?

أَلَا إِنَّهُمْ فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَاءِ رَبِّهِمْ ۗ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ۝

५४- देखो ये अपने रब से मिलने के बारे में सन्देह में पड़े हुए हैं, जान लो! कि 'वह' हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है।



अनुवाद-सूरतुश्शूरा

यह सूरः मक्की है, में अ़रबी के ३५८५ अक्षर, ८६६ शब्द, ५६ आयतें और ५ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- ह़ामीम्, — حٰمٓ ۝

२- अ़ैन्- सीन् क़ाफ़्, — عٓسٓقٓ ۝

३- इसी तरह अल्लाह जो बड़ा शक्तिशाली और ह़िकमत वाला है, तुम्हारी ओर और उनकी ओर जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं वह़्य (प्रकाशना) भेजता रहा है। — كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

४- आसमानों और ज़मीन में जो कुछ भी है 'उसी' का है, और 'वह' बुलन्द (और) महान है। — لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝

५-क़रीब है कि आसमान ऊपर से फट पड़ें फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह़ (गुणगान) कर रहे हैं और जो लोग ज़मीन में हैं उनके लिए माफ़ी मांगते रहते हैं, सुन लो! अल्लाह ही माफ़ करने वाला, रह़म वाला है। — تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

६- और जिन लोगों ने 'उसको छोड़कर दूसरों को संरक्षक बना लिए हैं, अल्लाह उनकी निगरानी किये हुए है, और तुमको उन पर ज़िम्मेदार नियुक्त नहीं किया गया। — وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ڮ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝

७- और इसी तरह 'हमने' आप की ओर एक अ़रबी क़ुर्आन की वह़्य (प्रकाशना) की है, ताकि आप केन्द्रीय बस्तियों (मक्का) के रहने वालों और जो लोग उसके चारों ओर हैं उनको सचेत कर दें, और सचेत करें इकट्ठा होने के दिन से, जिसमें कोई सन्देह नहीं, (उस दिन) एक गिरोह जन्नत में होगा और एक गिरोह भड़कती आग में। — وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِنْ
يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظَّالِمُونَ مَا
لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ⊙

८- और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें एक ही उम्मत (समुदाय) बना देता, लेकिन 'वह जिसे चाहता है अपनी रह़मत में दाख़िल कर लेता है, और ज़ालिमों का न कोई संरक्षक है और न मददगार।

أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۖ فَاللَّهُ هُوَ
الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ⊙

९- क्या उन्होंने 'उसको' छोड़कर दूसरों को संरक्षक बना रखा है? संरक्षक तो अल्लाह ही है, और 'वही' मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और 'वह' हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ۚ
ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ⊙

१०- और जिस चीज़ में तुम इख्तिलाफ़ करते हो उसका फ़ैसला अल्लाह के सुपुर्द है, 'वही' अल्लाह मेरा 'रब' है, 'उसी' पर मैंने भरोसा किया, और 'उसी' की ओर रूजूअ़ होता हूँ।

فَاطِرُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ
أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا ۖ
يَذْرَؤُكُمْ فِيهِ ۚ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ
الْبَصِيرُ ⊙

११- आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला 'जिसने' तुम्हीं में से तुम्हारे जोड़े, और मवेशियों के भी जोड़े- बनाए इसी तरह 'वह' तुम्हारी नस्लें और फैलाता है 'उसके' जैसी कोई चीज़ नहीं, और 'वह' सुनने वाला, देखने वाला है।

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ⊙

१२- आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ 'उसी' के क़ब्ज़े में हैं, 'वह' जिसे चाहता है कुशादा रोज़ी देता है, और (जिसे चाहता है) नपी-तुली कर देता है, बेशक 'वह' हर चीज़ का इल्म रखने वाला है।

شَرَعَ لَكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِ نُوحًا وَ
الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ
وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰ أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا
تَتَفَرَّقُوا فِيهِ ۚ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُو
هُمْ إِلَيْهِ ۚ اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ وَ
يَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ يُنِيبُ ⊙

१३- 'उसने' आप के लिए वही दीन निर्धारित किया है जिसकी हिदायत 'उसने' नूह को की थी, और जिसकी वह्य 'हमने' आप की ओर की है, और जिसकी हिदायत 'हमने' इब्राहीम और मूसा, और ईसा को की थी कि ''दीन को क़ायम रखो और इस मामले में विभेद न करो,'' आप जिसकी ओर मुश्रिकों (बहुदेववादियों) को बुलाते हैं वह उन पर भारी पड़ता है, अल्लाह जिसे चाहता है अपनी राह के लिए चुन लेता है, और अपनी ओर रह़नुमाई उसी को करता है जो 'उसकी' ओर रूजूअ़ होता है।

وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ
بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ إِلَىٰ
أَجَلٍ مُسَمًّى لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ

१४- और ये लोग आपस में एक-दूसरे से (ज़िद की वजह से) अलग-अलग बट गये, इसके बावजूद कि उनके पास इल्म आ चुका था, और अगर तुम्हारे 'रब' की ओर से एक निश्चित

أُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝

अवधि तक के लिए बात तय न हो चुकी होती तो उनके बीच फ़ैसला हो चुका होता, और जो लोग उनके बाद किताब के वारिस हुए वे 'उसकी' ओर से शक की उलझन में हैं।

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ۗ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَ رَبُّكُمْ ۗ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۗ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۗ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝

१५- तो आप उसी दीन की दअ़्वत दीजिए और उसी पर क़ायम रहिए जैसा कि आप को हुक्म दिया गया है, और उनकी इच्छाओं के पीछे न चलिए, और कह दीजिए, "अल्लाह ने जो किताब उतारी है उस पर मैं ईमान लाया, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हारे बीच न्याय करूँ, अल्लाह हमारा भी रब है और तुम्हारा भी, हमारे आ़माल हमारे लिए और तुम्हारे आ़माल तुम्हारे लिए, हमारे और तुम्हारे बीच कोई बहस नहीं, अल्लाह हम (सब) को इकट्ठा करेगा और 'उसी' की ओर लौट कर जाना है।"

وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۝

१६- और जो लोग अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, इसके बाद कि उसकी पुकार क़ुबूल कर ली गई, उनकी हुज्जत (तर्क) उनके रब के नज़दीक व्यर्थ हैं, और उन पर ग़ज़ब है, और उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है।

اَللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ۗ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ۝

१७- अल्लाह ही तो है 'जिसने' हक़ के साथ किताब उतारी और मीज़ान (तराज़ू) उतारी, और तुम्हें क्या ख़बर! शायद क़ियामत की घड़ी क़रीब आ गई हो?

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ۗ اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِي السَّاعَةِ لَفِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ۝

१८-उसके लिए जल्दी वही लोग मचाते हैं, जो लोग इस पर ईमान नहीं रखते, और ईमान रखने वाले तो इससे डरते हैं और जानते हैं कि वह हक़ है; जान लो! जो लोग उस घड़ी के बारे में सन्देह डालने वाली बहसें करते हैं, वे गुमराही में दूर जा पड़े हैं।

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝

१६- अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा मेहरबान है, 'वह' जिसे चाहता है रोज़ी देता है, और 'वह' बड़ा शक्तिशाली, ग़ालिब (प्रभावी) है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝

२०- जो व्यक्ति आख़िरत की खेती का इच्छुक हो, हम उसकी खेती को बढ़ाते हैं और जो दुनिया की खेती का इच्छुक हो, हम उसमें से उसे कुछ दे देते हैं, और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं।

أَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللّٰهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

२१- क्या उनके वे साझीदार हैं, जिन्होंने उनके लिए कोई ऐसा दीन निर्धारित कर दिया है जिसकी इजाज़त अल्लाह ने नहीं दी, अगर फ़ैसले की बात निश्चित न हो गई होती तो उनके बीच फ़ैसला हो चुका होता, और जो ज़ालिम हैं उनके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है।

تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۝

२२- तुम ज़ालिमों को देखोगे कि उन्होंने जो कुछ कमाया है उससे डर रहे होंगे, और वह उन पर आ कर रहेगा, और जो लोग ईमान लाए और भले काम करते रहे, वे जन्नत के बाग़ों में होंगे, उन के लिए उनके रब के पास वह सब कुछ होगा जिसकी वे इच्छा करेंगे, यही है बहुत बड़ा फ़ज़्ल।

ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۗ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ۗ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيْهَا حُسْنًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝

२३- यही वह (इनआ़म है) जिसकी खुशख़बरी देता है, अल्लाह अपने उन बन्दों को, जो ईमान लाए और भले काम करते रहे, (ऐ नबी) कह दीजिए, ''उनसे, मैं उस पर कोई बदला नहीं माँगता, मगर कुर्बत (निकटता) की मुहब्बत चाहता हूँ, और जो कोई नेकी कमाएगा 'हम' उसके लिए उसकी नेकी में खूबी को बढ़ाएँगे।'' बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, क़द्रदान है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ۗ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ۗ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

२४- क्या ये लोग कहते हैं, ''इस व्यक्ति ने अल्लाह पर झूठ बांधा है?'' अगर अल्लाह चाहे तो आपके दिल पर मुहर लगा दे, और अल्लाह बातिल (असत्य) को मिटाता है और हक़ को अपने कलाम (बोल) से सत्य कर दिखाता है, बेशक 'वह' दिलों तक के भेद को जानता है।

وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝

२५- और 'वही' है जो अपने बन्दों की तौबः कुबूल करता है और बुराइयों को दरगुज़र करता है, और जानता है, जो कुछ तुम करते हो।

وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۝

२६- और 'वह' उन लोगों की दुआ़ कुबूल करता है जो ईमान लाए और भले काम किये, और 'अपने' फ़ज़्ल से उन्हें और देता है; और जो इन्कार करने वाले (काफ़िर) हैं, तो उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है।

وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ۚ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ

२७- और अगर अल्लाह अपने बन्दों के लिए रोज़ी कुशादा कर देता तो ज़मीन में सरकशी करने लगते, लेकिन 'वह' एक खास

بَصِيْرٌ۝

मात्रा में जितना चाहता है उतारता है, बेशक 'वह' अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला, खूब देखने वाला है।

وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَ يَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ۭ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ۝

२८- और 'वही' तो है जो लोगों के मायूस हो जाने के बाद बारिश बरसाता है, और अपनी रह़मत को फैला देता है, और 'वही' है संरक्षक, सारी ख़ूबियों वाला।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَاۗبَّةٍ ۭ وَهُوَ عَلٰي جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَاۗءُ قَدِيْرٌ۝

२९- और उसकी निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन की पैदाइश, और उन जानवरों का जो उसने उनमें फैला रखे हैं, और 'वह' उनको जब चाहे इकट्ठा करने पर क़ादिर (समर्थ्य) है।

وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ۝

३०- और जो मुसीबत भी तुमको पहुँचती है तुम्हारे अपने करतूतों की वजह से पहुँचती है, और बहुत सी बुराइयां तो 'वह' माफ़ कर देता है।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ښ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ۝

३१- और तुम धरती में उसके क़ाबू से (बाहर) नहीं निकल सकते, और न अल्लाह के मुक़ाबले में कोई संरक्षक है, और न मददगार,

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ۝

३२- और उसकी निशानियों में से समुद्र में पहाड़ों जैसे चलने वाले जहाज़ (भी हैं)।

اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰي ظَهْرِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ۝

३३- अगर 'वह' चाहे तो हवा को ठहरा दे, तो वह (जहाज़) समुद्र की पीठ पर ठहरे रह जाएँ, इसमें निशानियां हैं हर सब्र (और) शुक्र करने वाले के लिए;

اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ۝

३४- या, उन (जहाज़ों) को उनके करतूतों की वजह से तबाह कर दे और बहुत से कुसूर माफ़ भी कर दे।

وَّيَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا ۭ مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ۝

३५- और जो लोग हमारी आयतों में झगड़ते हैं वे जान लें! कि उनके लिए कोई भागने की जगह नहीं।

فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ۝

३६- तुम को जो कुछ भी दिया गया है वह दुनिया की ज़िन्दगी का सामान है, और जो कुछ अल्लाह के यहाँ है वह कहीं बेहतर है और बाक़ी रहने वाला भी, वह उन्हीं के लिए है जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं;

३७- और जो बड़े-बड़े गुनाहों और बेशर्मी की बातों से बचते रहते हैं और जब उनको गुस्सा आता है तो माफ़ कर देते हैं;

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَٰٓئِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ

३८- और जो अपने 'रब' का हुक्म मानते और नमाज़ क़ायम करते, और अपना मामला आपसी मश्वरे (परामर्श) से करते हैं, और जो कुछ 'हमने' उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं;

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَوٰةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ يُنفِقُونَ

३९- और जो ऐसे हैं कि जब उन पर ज़ुल्म होता है तो अपना बदला लेते हैं।

وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنتَصِرُونَ

४०- और बुराई का बदला वैसी ही बुराई है, फिर जो कोई माफ़ कर दे और सुधार करे तो उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे है, बेशक वह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता।

وَجَزَٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّٰلِمِينَ

४१- और जिन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म होने के बाद बदला लिया, तो ऐसे लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं।

وَلَمَنِ انتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِم مِّن سَبِيلٍ

४२- इल्ज़ाम तो केवल उन लोगों पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं, और धरती में नाहक़ ज़्यादती करते हैं, ऐसे ही लोगों के लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है।

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

४३- और जिसने सब्र से काम लिया और माफ़ कर दिया तो यह बड़े ही अ़ज़्म (साहस) का काम है।

وَلَمَن صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ

४४- और जिस व्यक्ति को अल्लाह गुमराही में डाल दे, तो इसके बाद उसका कोई संरक्षक नहीं, और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वे अ़ज़ाब को देख लेंगे तो कहेंगे, ''क्या कोई वापसी की भी राह है?''

وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن وَلِيٍّ مِّن بَعْدِهِ وَتَرَى الظَّٰلِمِينَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلَىٰ مَرَدٍّ مِّن سَبِيلٍ

४५- और तुम उन्हें देखोगे कि वे उस (जहन्नम) के सामने इस तरह पेश किये जाएँगे कि अपमान से झुके हुए कन्खियों से देख रहे होंगे, और जो लोग ईमान लाए, वे कहेंगे; ''घाटे में पड़ने वाले वही हैं जिन्होंने क़ियामत के दिन अपने आप को और अपने लोगों को घाटे में डाल दिया, ख़बरदार! बेशक ये ज़ालिम (हमेशा के लिए) अ़ज़ाब में ही रहेंगे।

وَتَرَىٰهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خَٰشِعِينَ مِنَ الذُّلِّ يَنظُرُونَ مِن طَرْفٍ خَفِيٍّ وَقَالَ الَّذِينَ ءَامَنُوٓا إِنَّ الْخَٰسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوٓا أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ أَلَآ إِنَّ الظَّٰلِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ

४६- और अल्लाह के सिवा उनका कोई दोस्त न होगा, जो उनकी मदद करे; और जिसे अल्लाह गुमराही में डाल दे तो उसके लिए कोई राह नहीं।''

وَمَا كَانَ لَهُم مِّنْ أَوْلِيَآءَ يَنصُرُونَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن سَبِيلٍ

اسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ۚ مَا لَكُم مِّن مَّلْجَإٍ يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُم مِّن نَّكِيرٍ ۝

४७- अपने 'रब' की बात मान लो, इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाए जो वापस होने वाला नहीं, उस दिन तुम्हारे लिए न कोई ठिकाना होगा और न तुम से गुनाहों का इन्कार ही बन पड़ेगा।

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنسَانَ كَفُورٌ ۝

४८- अब भी अगर यह ध्यान में न लाएँ तो 'हमने' तो आप को उन पर कोई संरक्षक बनाकर नहीं भेजा, आप पर तो केवल पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है, और जब 'हम' इन्सान को अपनी ओर से किसी रह़मत का मज़ा चखाते हैं तो वह उस पर इतराने लगता है, और अगर उसके करतूतों की वजह से कोई मुसीबत उस पर आती है तो वह नाशुक्री करने लगता है।

لِّلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ يَهَبُ لِمَن يَشَاءُ إِنَاثًا وَيَهَبُ لِمَن يَشَاءُ الذُّكُورَ ۝

४६- आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है 'वह' जो चाहता है पैदा करता है, जिसे चाहता है बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है बेटे देता है।

أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَاثًا ۖ وَيَجْعَلُ مَن يَشَاءُ عَقِيمًا ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝

५०- या उनको बेटे और बेटियाँ दोनों देता है, और जिसको चाहता है बेऔलाद रखता है, 'वह' तो जानने वाला, क़ुदरत वाला है।

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِن وَرَاءِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ۝

५१- और किसी बशर (इन्सान) की यह शान नहीं कि अल्लाह उससे बात करे, सिवाय इसके कि वह़्य (प्रकाशना) के ज़रिये या पर्दे के पीछे से या यह कि किसी रसूल (फ़रिश्ते) को भेज दे, फिर वह उसकी इजाज़त से जो चाहे वह़्य कर दे, बेशक 'वह' ऊँची शान वाला, बड़ी ह़िकमत वाला है।

وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ وَلَٰكِن جَعَلْنَاهُ نُورًا نَّهْدِي بِهِ مَن نَّشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ۚ وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝

५२- और इसी तरह 'हमने' अपने हुक्म से आप की ओर एक रूह (फ़रिश्ता) भेजा, आप नहीं जानते थे कि किताब क्या चीज़ है और ईमान क्या चीज़ है, लेकिन 'हमने' उस (क़ुर्आन) को नूर (प्रकाश) बनाया, और अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं उसे राह दिखाते हैं, और बेशक आप सीधे रास्ते की ओर रहनुमाई कर रहे हैं;

صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ أَلَا إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ۝

५३- अल्लाह के रास्ते की ओर जो आसमानों और ज़मीन की सारी चीज़ों का मालिक है, ''सुन लो! सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटते हैं।''



अनुवाद-सूरतु ज़ुख़्रूफ़ि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ३६५६ अक्षर, ८४८ शब्द, ८६ आयतें और ७ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- ह़ामीम्,	حٰمٓ ۚ
२- स्पष्ट किताब की क़सम;	وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ
३- कि 'हमने' इसे अ़रबी क़ुर्आन बनाया, ताकि तुम समझो।	اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۚ
४- और यह 'उम्मुल-किताब' (लौहे मह़फ़ूज़) में 'हमारे' पास (लिखी हुई) बड़े ऊँचे दर्जे की, ह़िकमत वाली है।	وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۗ
५- तो क्या 'हम' तुम्हारी यादद‍िहानी से इसलिए नज़र फेर लें कि तुम सीमा को पार करने वाले लोग हो?	اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ۝
६- और 'हमने' पहले के लोगों में भी कितने नबी भेजे थे।	وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ۝
७- और जो नबी भी उनके पास आता था, वे उसका मज़ाक़ ही उड़ाते थे।	وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝
८- तो 'हमने' उनको तबाह कर दिया जो उनमें ज़्यादा शक्तिशाली थे, और अगले लोगों की मिसालें गुज़र चुकी हैं।	فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ۝
९- और अगर तुम उनसे पूछो, ''आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया है,'' तो यही कहेंगे, 'उनको ज़बर्दस्त इल्म वाले ने पैदा किया है;	وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۙ
१०- 'जिसने' तुम्हारे लिए धरती को पालना बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बना दिये, ताकि तुम राह पा सको।	الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۚ
११- और 'जिसने' आसमान से एक खास मात्रा में पानी उतारा, फिर 'हमने' उससे मुर्दा ज़मीन को जिला दिया, इसी तरह तुम (ज़मीन से) निकाले जाओगे।	وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ
الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ﴿١٢﴾

१२- और 'जिसने' तमाम चीज़ों के जोड़े पैदा किये, और तुम्हारे लिए नौकाएँ और जानवर बनाए जिन पर तुम सवार होते हो;

لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ
إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ
لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿١٣﴾

१३- ताकि तुम उनकी पीठों पर चढ़ कर बैठो, फिर याद करो अपने रब की नेअ़मत को, जब तुम उन पर बैठ जाओ और कहो, ''पाक है 'वह' हस्ती 'जिसने' इसको हमारे वश में किया, और हमारे बस में न था कि उनको क़ाबू में कर लेते;

وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ ﴿١٤﴾

१४- और हम अपने रब ही की ओर लौटने वाले हैं।''

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا ۚ إِنَّ الْإِنسَانَ لَكَفُورٌ
مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

१५- और उन्होंने उसके बन्दों में से कुछ को उसका अंश (औलाद) ठहरा लिया, बेशक इन्सान तो खुला हुआ नाशुक्रा है।

أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُم بِالْبَنِينَ ﴿١٦﴾

१६- क्या 'उसने' खुद अपनी मख़्लूक़ (सृष्टि) में से अपने लिए बेटियां रख लीं, और तुम्हारे लिए बेटे खास कर दिये।

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَٰنِ مَثَلًا ظَلَّ
وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٧﴾

१७- और जब उनमें से किसी को उसकी खुशख़बरी दी जाती है, जो वह रह़मान के लिए बयान करता है, तो उसके मुँह पर कलौंस छा जाती है और वह ग़म के मारे घुटा-घुटा रहने लगता है।

أَوَمَن يُنَشَّأُ فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ
مُبِينٍ ﴿١٨﴾

१८- क्या वह जो ज़ेवर में परवरिश पाए और झगड़े के वक़्त बात तक न कह सके।

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَٰنِ إِنَاثًا ۚ
أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ﴿١٩﴾

१६- और उन्होंने फ़रिश्तों को- जो रह़मान के बन्दे हैं- औ़रतें ठहरा ली हैं, क्या ये उनकी पैदाइश (संरचना) के वक़्त मौजूद थे? तो बहुत जल्द उनकी गवाही लिख ली जाएगी और उनसे पूछा जाएगा।

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَاهُم ۗ مَّا لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ
عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٠﴾

२०- और कहते हैं, ''अगर रह़मान चाहता तो हम उन्हें न पूजते, उन्हें इस का कुछ इल्म नहीं, वह तो बस अटकल की बातें करते हैं।

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِّن قَبْلِهِ فَهُم بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ﴿٢١﴾

२१- या 'हमने' इससे पहले उनको कोई किताब (प्रमाण के रूप में) दी थी तो ये उसे मज़बूती से पकड़े हुए हैं।

بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ

२२- (नहीं,) बल्कि वे कहते हैं, ''हमने तो अपने बाप-दादा

اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ

को एक तरीक़े पर पाया है और हम उन्हीं के नक्शे क़दम (पद-चिन्ह) पर चलकर (सीधी) राह़ पा रहे हैं।''

وَكَذٰلِكَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ

२३- और इसी तरह तुमसे पहले जिस बस्ती में भी 'हमने' कोई सचेत करने वाला भेजा उसके ख़ुशहा़ल लोगों ने यही कहा, ''हमने अपने बाप-दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम उनके नक़्शे क़दम (पद-चिन्ह) पर चल रहे हैं।''

قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ۭ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ

२४- कहा, अगर मैं उस तरीक़े के मुक़ाबले में जिस पर तुमने अपने बाप-दादा को पाया है, वह उस से कहीं सीधा रास्ता दिखाता हो, कहने लगे, ''तुम्हें जो भी देकर भेजा गया है हम तो उसका इन्कार करते हैं।''

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ

२५- तो फिर 'हमने' उनसे बदला लिया, देखो कैसा अंजाम हुआ झुठलाने वालों का!

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَاۗءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ

२६- और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, ''जिनकी तुम पूजा करते हो, मैं उनसे बेज़ार हूँ;

اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ

२७- मगर जिसने मुझको पैदा किया है, 'वही' मुझको राह दिखाएगा;''

وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ

२८- और यही बात अपनी औलाद में पीछे छोड़ गये ताकि वे उसकी ओर रूजूअ़ करें।

بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَاۗءِ وَاٰبَاۗءَهُمْ حَتّٰى جَاۗءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ

२६- बल्कि 'हमने' उन (कुफ्फार) को और उनके बाप-दादा को ज़िन्दगी गुज़ारने का सामान दिया, यहाँ तक कि उनके पास ह़क़ और खोल-खोल कर बताने वाले रसूल आ गये।

وَلَمَّا جَاۗءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ

३०- और जब ह़क़ उनके पास आ गया तो उन्होंने कहा, ''यह तो जादू है, और हम तो इसका इन्कार करते हैं।''

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰي رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ

३१- और वे कहते हैं, ''यह क़ुर्आन इन दो बस्तियों के किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया;''

اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۭ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ۭ وَرَحْمَتُ

३२- क्या यह लोग तुम्हारे रब की रह़मत को बाँटते हैं?'' दुनिया की ज़िन्दगी में उनको ज़िन्दगी गुज़ारने के साधन (रोज़ी)'हमने' उनके बीच बांट दिये, और 'हमने' उनमें से कुछ लोगों को दूसरे

رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٣٢﴾

कुछ लोगों पर दर्जे बुलन्द कर दिये हैं, ताकि वे एक-दूसरे से काम लें, और तुम्हारे रब की रह़मत इससे कहीं ज़्यादा बेहतर है, जिसे ये जमा कर रहे हैं।

وَلَوْلَآ أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ بِالرَّحْمَٰنِ لِبُيُوتِهِمْ سُقُفًا مِّن فِضَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ ﴿٣٣﴾

३३- और अगर यह बात न होती कि सब इन्सान एक ही तरीक़े पर चल पड़ेंगे, तो जो लोग रह़मान के साथ कुफ़्र करते हैं उनके लिए हम उनके घरों की छतें चाँदी की कर देते, और सीढ़ियां भी जिन पर वे चढ़ते;

وَلِبُيُوتِهِمْ أَبْوَابًا وَسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِئُونَ ﴿٣٤﴾

३४- और उनके घरों के दरवाज़े भी और तख़्त भी जिन पर तकिया लगाते हैं;

وَزُخْرُفًا ۚ وَإِن كُلُّ ذَٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْآخِرَةُ عِندَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٥﴾

३५- और सोने से भी उन्हें माला-माल करते, यह सब दुनिया की ज़िन्दगी का ही सामान है, और आख़िरत तुम्हारे रब के यहाँ केवल मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) के लिए है;

وَمَن يَعْشُ عَن ذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ نُقَيِّضْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ﴿٣٦﴾

३६- और जो रह़मान के ज़िक्र से बेपरवाह हो जाता है, 'हम' उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं तो वह उसका साथी बन जाता है;

وَإِنَّهُمْ لَيَصُدُّونَهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾

३७- और ये (शैतान) उनको अल्लाह की राह से रोकते हैं, और वे समझते हैं कि सीधी राह पर हैं;

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَا لَيْتَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِينُ ﴿٣٨﴾

३८- यहाँ तक कि जब हमारे पास आएगा तो (शैतान से) कहेगा, "काश, मेरे और तेरे बीच पूरब के दोनों किनारों की दूरी होती! तू तो बहुत ही बुरा साथी निकला।"

وَلَن يَنفَعَكُمُ الْيَوْمَ إِذ ظَّلَمْتُمْ أَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٩﴾

३९- और जब तुम ज़ुल्म कर चुके हो तो यह बात तुम्हारे लिए कुछ भी फ़ायदा न देगी कि तुम अ़ज़ाब में एक-दूसरे के साझी हो;

أَفَأَنتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَن كَانَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٠﴾

४०- क्या तुम बहरों को सुना सकते हो, या अन्धों को, और जो खुली गुमराही में पड़ा हुआ हो उसको (राह दिखाओगे)?

فَإِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُم مُّنتَقِمُونَ ﴿٤١﴾

४१- अगर हम तुम्हें उठा भी लें तब भी 'हम' उन लोगों से बदला ले कर रहेंगे,

أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِم مُّقْتَدِرُونَ ﴿٤٢﴾

४२- या 'हम' तुम्हें वह चीज़ दिखा देंगे जिसका 'हमने' उनसे वादा किया है, हमें उन पर पूरी क़ुदरत (सामर्थ्य) है।

४३- तो तुम उस चीज़ को मज़बूती से थामे रहो, जिसकी तुम्हारी ओर वह्य (प्रकाशना) की गई, बेशक तुम सीधी राह पर हो;

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

४४- और यह (क़ुर्आन) तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए नसीहत है, और बहुत जल्द तुम से पूछ-गछ होगी।

وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ۝

४५- और आप से पहले जो 'हमने' रसूल भेजे थे, उनसे पूछ लें क्या 'हमने' रह़मान के सिवा भी कुछ मअ़बूद (उपास्य) ठहराए थे, कि उनकी इबादत की जाए?

وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ ۚ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ۝

४६- और 'हमने' मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔ़न और उसके सरदारों के पास भेजा तो उन्होंने कहा, ''मैं सारे संसार के रब का रसूल हूँ।''

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّيْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

४७- तो जब वह उनके पास हमारी निशानियां लेकर आये तो वे उनका मज़ाक़ उड़ाने लगे।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ۝

४८- और 'हम' उनको एक से बढ़ कर एक निशानी दिखाते रहे और 'हमने' उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ लिया, ताकि वे रूजूअ़ हो।

وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِيَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۡ وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝

४९- और कहते, ऐ जादूगर! अपने रब से हमारे लिए दुआ़ कर, जैसा उसने तुझसे वादा कर रखा है, बेशक 'हम' सीधी राह पर चलेंगे;

وَقَالُوْا يٰۤاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ۝

५०- फिर जब भी 'हम' उन पर से अ़ज़ाब हटा लेते, तो वे अपना वादा तोड़ देते।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۝

५१- और फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम को पुकार कर कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या मिस्र का राज्य मेरा नहीं और क्या यह नहरें मेरे नीचे नहीं बह रही हैं? क्या तुम देखते नहीं हो!

وَنَادٰى فِرْعَوْنُ فِيْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِيْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِيْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝

५२- बेशक मैं बेहतर हूँ या यह व्यक्ति जो तुच्छ है, और साफ़ बोल भी नहीं पाता;

اَمْ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ۝

५३- फिर ऐसा क्यों न हुआ कि उसके लिए ऊपर से सोने के कंगन डाले गये होते, या उसके साथ फ़रिश्तों के जत्थे उतरते जो साथ रहते;

فَلَوْلَآ اُلْقِيَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ۝

फَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٤﴾

५४- तो उसने अपनी क़ौम के लोगों को मूर्ख बनाया और उन्होंने उसकी बात मान ली, बेशक वे नाफ़रमान लोग थे;

فَلَمَّا آسَفُونَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾

५५- जब उन्होंने 'हमें' गुस्सा दिलाया तो 'हमने' उनसे बदला लिया फिर उन सबको डुबो दिया।

فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِلْآخِرِينَ ﴿٥٦﴾

५६- फिर 'हमने' उन्हें ऐसा बना दिया कि वह गये-गुज़रे हो गये, और बाद वालों के लिए इबरत (मिसाल) बना दिया।

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٧﴾

५७- और जब मरयम के बेटे (ईसा) की मिसाल दी गई तो क्या देखते हैं कि उस पर तुम्हारी क़ौम के लोग चिल्लाने लगे;

وَقَالُوا أَآلِهَتُنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ ۚ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ﴿٥٨﴾

५८- और कहने लगे, ''हमारे मअ़बूद (उपास्य) अच्छे हैं या वह (मसीह), उन्होंने यह बात तुमसे केवल झगड़ने के लिए कही है, बल्कि वे तो हैं ही झगड़ालू लोग;

إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾

५९- वह (ईसा) तो बस एक बन्दे थे जिन पर 'हम' ने इनआ़म किया और उन्हें 'हमने' बनी इस्राईल के लिए एक मिसाल बनाया।

وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلَائِكَةً فِي الْأَرْضِ يَخْلُفُونَ ﴿٦٠﴾

६०- और अगर हम चाहते तो तुममें से फ़रिश्ते पैदा कर देते, जो तुम्हारी जगह ज़मीन पर (उत्तराधिकारी) होते।

وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُونِ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾

६१- और वह (ईसा) क़ियामत की बहुत बड़ी दलील है, तो तुम इसके बारे में सन्देह न करो और मेरी पैरवी करो, यही सीधी राह है।

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطَانُ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿٦٢﴾

६२- और शैतान तुम्हें इससे रोक न दे, वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

وَلَمَّا جَاءَ عِيسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿٦٣﴾

६३- और जब ईसा स्पष्ट निशानियों के साथ आए, तो उन्होंने कहा, ''मैं तुम्हारे पास हिकमत लेकर आया हूँ और इसलिए कि कुछ बातें,स्पष्ट कर दूँ, जिसके बारे में तुम मतभेद कर रहे हो, तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦٤﴾

६४- बेशक अल्लाह मेरा 'रब' है और तुम्हारा भी 'रब' है, तो उसी की इबादत करो, यही सीधी राह है।''

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ

६५- मगर उनमें के कितने ही गिरोहों ने आपस में विभेद

ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ

किया, तो तबाही है उन लोगों के लिए जिन्होंने ज़ुल्म किया, एक दुःख देने वाले अ़ज़ाब के दिन से।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

६६- क्या ये लोग इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि उन पर वह घड़ी (क़ियामत) आ जाए और उन्हें इसकी ख़बर भी न हो।

الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ

६७- उस दिन सभी दोस्त आपस में एक दूसरे के दुश्मन होंगे, सिवाय मुत्तकियों (परहेज़गारों) के।

يَا عِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ

६८- ''ऐ मेरे बन्दो! आज न तुम्हें डर है और न तुम ग़मगीन होंगे।

الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ

६६- जो लोग 'हमारी' आयतों पर ईमान लाए और मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो गये;

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ

७०- ''दाख़िल हो जाओ जन्नत में, तुम और तुम्हारी पत्नियां, इ़ज़्ज़त के साथ।''

يُطَافُ عَلَيْهِم بِصِحَافٍ مِّن ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۖ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

७१- उनके आगे सोने की तश्तरियाँ और प्याले गर्दिश करेगें और वहां वह सब कुछ होगा, जो दिलों को भाए और आँखें जिससे लज़्ज़त पाएँ ''और तुम उसमें हमेशा रहोगे।

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ

७२- और यह जन्नत, जिसके तुम मालिक बना दिये गये हो, तुम्हारे आ़माल का बदला है।

لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِّنْهَا تَأْكُلُونَ

७३- तुम्हारे लिए उसमें बहुत से मेवे हैं जिसे तुम खाओगे।''

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ

७४-गुनहगार हमेशा जहन्नम के अ़ज़ाब ही में रहेंगे।

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ

७५- उनके अ़ज़ाब में कमी न होगी और वे उसमें निराश हो कर पड़े रहेंगे;

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ

७६- और 'हमने' उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे ख़ुद (अपने ऊपर) ज़ुल्म करते रहे।

وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُم مَّاكِثُونَ

७७- और पुकारेंगे, ''ऐ अधिकारी! तुम्हारा रब हमें मौत दे दे, वह कहेगाः तुमको (इसी ह़ाल में) हमेंशा रहना है;''

لَقَدْ جِئْنَاكُم بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ

७८- ''हमने तुम्हारे सामने ह़क़ (सत्य) पेश किया था, मगर तुममें से अक्सर को हक़ नागवार था।

أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ

७६- क्या उन्होंने किसी बात को तय कर लिया है? अच्छा तो 'हमने' भी तय कर लिया है।

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۚ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾

८०- क्या यह लोग समझते हैं कि 'हम' उनकी छिपी बातों और उनकी कानाफूसी को सुनते नहीं हैं? क्यों नहीं! और 'हमारे' दूत (फ़रिश्ते) उनके पास सब बातें लिखते रहते हैं;''

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ﴿٨١﴾

८१- कह दीजिए, ''अगर रहमान के कोई औलाद होती तो सबसे पहले मैं इबादत करने वाला होता;

سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٨٢﴾

८२- पाक है आसमानों और ज़मीन का रब, अर्श (सिंहासन) का मालिक उन बातों का जो ये बयान करते हैं।

فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٨٣﴾

८३- तो उनको छोड़ दो कि बहस में उलझे रहें और खेल में लगे रहें, यहां तक कि उस दिन को देख लें जिससे उनको डराया जा रहा है।

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٨٤﴾

८४- और 'वही' आसमानों में भी इलाह (उपास्य) है, और (वही) ज़मीन में भी और 'वही' हिकमत वाला, इल्म वाला है;

وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٥﴾

८५- और बड़ी बरकत वाला है 'वह', जिसके क़ब्ज़े में आसमानों और ज़मीन और उनके बीच की सभी चीज़ों की बादशाही है, 'उसी' को (क़ियामत की घड़ी का) इल्म है और 'उसी' की ओर तुम लौटाए जाओगे।

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾

८६- और 'उसको' छोड़कर ये लोग जिन को पुकारते हैं, वे शफ़ाअ़त (सिफ़ारिश) का अख़्तियार नहीं रखते, बस 'उसे' ही यह अधिकार हासिल है जो हक़ की गवाही दें, और वे लोग जानते हैं।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٨٧﴾

८७- और अगर तुम उनसे पूछो, ''उन्हें किसने पैदा किया है?'' तो कहेंगे, ''अल्लाह ने!'' फिर ये किस तरह फ़रेब में आ जाते हैं?

وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾

८८- और उस (रसूल) ने फ़रियाद की ''ऐ मेरे रब! ये ऐसे लोग हैं, जो ईमान नहीं लाते;

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

८९- तो उनसे दरगुज़र कीजिए और कहिए, ''सलाम है तुम्हें!'' बहुत जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा।''



अनुवाद-सूरतु द्दुख़ानि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के १४६५ अक्षर, ३४६ श्ब्द, ५६ आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- ह़ामीम्,

حٰمٓ ۚ

२- स्पष्ट किताब की क़सम!

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ

३- कि 'हमने' उसे एक मुबारक रात में उतारा, बेशक हम तो ख़बरदार करने वाले थे;

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ

४- हर पक्की बात का फै़सला उसी रात में हुआ करता है;

فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۙ

५- हमारे खास हुक्म से, बेशक 'हम' ही रसूलों को भेजने वाले हैं।

اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۭ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ۚ

६- आप के 'रब' की रह़मत की वजह से, वही सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۙ

७- आसमानों और ज़मीन का 'रब' और जो कुछ इन दोनों के बीच है उसका भी, अगर तुम यक़ीन करते हो;

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ

८- उसके सिवा कोई इलाह (उपास्य) नहीं; 'वही' ज़िन्दा करता और मौत देता है; तुम्हारा 'रब' और तुम्हारे गुज़रे हुए बाप-दादा का रब।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۭ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَاۗىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ

९- बल्कि यह लोग शक में पड़े खेल रहे हैं।

بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ

१०- तो इन्तिज़ार करो उस दिन का जब आसमान से खुला हुआ धुआँ ज़ाहिर होगा!

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَاۗءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۙ

११- जो लोगों पर छा जाएगा, यह है दुःख देने वाला अ़ज़ाब!

يَّغْشَى النَّاسَ ۭ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ

१२- "ऐ 'हमारे' रब! हमसे इस अ़ज़ाब को दूर कर दे, हम ईमान लाते हैं।"

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ

أَنَّىٰ لَهُمُ الذِّكْرَىٰ وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُبِينٌ

१३- अब उनके लिए होश में आने का मौक़ा कहाँ रहा, उनका हाल तो यह है कि उनके पास साफ़ बताने वाला रसूल आ चुका है।

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَجْنُونٌ

१४- फिर भी उन्होंने उसकी ओर से मुँह मोड़ लिया और कहने लगे, '' (यह तो एक) सिखाया पढ़ाया दीवाना है।''

إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلًا ۚ إِنَّكُمْ عَائِدُونَ

१५- हम कुछ देर के लिए अ़ज़ाब दूर भी कर दें तो तुम वही करोगे जो पहले कर रहे थे।

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَىٰ إِنَّا مُنْتَقِمُونَ

१६- जिस दिन 'हम' बड़ी पकड़ में लेंगे, तो बेशक बदला लेकर रहेंगे।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ

१७- और 'हमने' इससे पहले फ़िरऔ़न की क़ौम को आज़माइश में डाला था, और उनके पास एक बड़े दर्जे का रसूल आया।

أَنْ أَدُّوا إِلَيَّ عِبَادَ اللَّهِ ۖ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ

१८- कि ''अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले करो, मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।

وَأَنْ لَا تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ ۖ إِنِّي آتِيكُمْ بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ

१६- और अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी न करो, मैं तुम्हारे लिए एक स्पष्ट प्रमाण लेकर आया हूँ!''

وَإِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُونِ

२०- और मैं इससे अपने रब और तुम्हारे रब की पनाह (शरण) ले चुका हूँ कि तुम मुझे संगसार (पथराव) करके मार डालो।

وَإِنْ لَمْ تُؤْمِنُوا لِي فَاعْتَزِلُونِ

२१- और अगर तुम मेरी बात नहीं मानते तो तुम मुझसे अलग हो जाओ।''

فَدَعَا رَبَّهُ أَنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ مُجْرِمُونَ

२२- तो उन्होंने अपने रब को पुकारा! कि यह गुनहगार लोग हैं।

فَأَسْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا إِنَّكُمْ مُتَّبَعُونَ

२३- अच्छा, आप रातों-रात मेरे बन्दों को लेकर चले जाइए, और (फिरऔ़नी) आप का पीछा किया जाएगा।

وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۖ إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُغْرَقُونَ

२४- और समुद्र को स्थिर छोड़ दीजिए, वह तो एक डूब जाने वाली सेना है।

كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ

२५- उन्होंने कितने बाग़ और स्रोत छोड़े;

وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ

२६- और खेतियाँ और उमदा ठिकाने;

وَنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ

२७- और आराम के सामान जिनमें मज़े उड़ाया करते थे।

२८- हम ऐसा ही मामला करते हैं और उन चीज़ों का वारिस 'हमने' दूसरे लोगों को बनाया।	كَذٰلِكَ وَأَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا ءَاخَرِينَ ۝
२६-फिर न तो उन पर आसमान और ज़मीन रोया और न उन्हें कोई मोहलत दी गई।	فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ۝
३०- और 'हमने' बनी इस्राईल को ज़िल्लत की मार से छुटकारा दिलाया;	وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝
३१- फ़िरऔन की ओर से, बेशक वह सरकश हद से गुज़र जाने वालों में से था।	مِن فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ۝
३२- और 'हमने' उनको जानते हुए दुनिया वालों के मुक़ाबले में चुन लिया।	وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِينَ ۝
३३- और 'हमने' उन्हें निशानियों के ज़रिये वह चीज़ दी, जिनमें खुली हुई आज़माइश थी।	وَءَاتَيْنٰهُم مِّنَ الْءَايٰتِ مَا فِيهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِينٌ ۝
३४- ये लोग बड़ी ज़ोरदारी से कहते हैं,	إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُولُونَ ۝
३५- कि ''बस यह हमारी पहली मौत है, और इसके बाद हम उठाए जाने वाले नहीं।''	إِنْ هِىَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ۝
३६- अगर तुम सच्चे हो, तो ले आओ हमारे बाप-दादा को।	فَأْتُوا بِـَٔابَآئِنَآ إِن كُنتُمْ صٰدِقِينَ ۝
३७- क्या ये अच्छे हैं या 'तुब्बा' की क़ौम और वे जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं? 'हमने' उन्हें तबाह कर दिया, बेशक वे गुनहगार थे।	أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ أَهْلَكْنٰهُمْ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝
३८- और 'हमने' आसमानों और ज़मीन को और उनके बीच की चीज़ों को खेल के तौर पर नहीं बनाया।	وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِينَ ۝
३६- 'हमने' उन्हें ह़क़ (उद्देश्य) के साथ पैदा किया, मगर अक्सर लोग नहीं जानते।	مَا خَلَقْنٰهُمَآ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝
४०- निश्चय ही फ़ैसले का दिन उन सब का निश्चित समय है;	إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقٰتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝
४१- जिस दिन कोई अपना किसी अपने के कुछ काम न आएगा और न उन्हें कुछ मदद पहुँचेगी,	يَوْمَ لَا يُغْنِى مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْـًٔا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝
४२- मगर जिस पर अल्लाह रह़म करे, वह तो बड़ा ज़बर्दस्त, रह़म करने वाला है।	إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

४३- बेशक ज़क्कूम (थूहड़) का वृक्ष,

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝

४४- गुनहगारों का खाना होगा,

طَعَامُ الْأَثِيمِ ۝

४५- गोया पिघली हुई धातु, वह पेट में खौलेगी;

كَالْمُهْلِ ۛ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝

४६- जैसे गर्म पानी खौलता है;

كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ۝

४७- ''पकड़ो इसको और घसीटते हुए भड़कती आग के बीच तक ले जाओ;

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝

४८- फिर उसके सर पर खौलते हुए पानी का अ़ज़ाब उड़ेंल दो!''

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۝

४६- मज़ा चख इसका, तू बड़ा ज़बर्दस्त (बलवान), इ़ज़्ज़त वाला है!

ذُقْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝

५०- ये वही (दोज़ख) है, जिसके बारे में तुम लोग शक में पड़े हुए थे।''

إِنَّ هَٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۝

५१- बेशक डर रखने वाले लोग बेफ़िक्री की जगह में होंगे;

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۝

५२- बाग़ों और स्रोतों में,

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝

५३-बारीक और मोटे रेशम के लिबास पहने आमने-सामने बैठे होंगे।

يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ۝

५४- ऐसा ही (उनके साथ मामला होगा,) और हम साफ़ गोरी, बड़ी आँखों वाली औ़रतों से उनका निकाह (विवाह) कर देंगे।

كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۝

५५- वहाँ वे इत्मिनान से हर तरह के फल मँगवा रहे होंगे।

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۝

५६- वहाँ वे मौत का मज़ा कभी न चखेंगे, सिवाय पहली मौत के, और (अल्लाह) उन्हें भड़कती हुई आग के अ़ज़ाब से बचा लेगा।

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝

५७- यह सब तुम्हारे 'रब' के फ़ज़्ल (अनुकम्पा) से हुआ, यही तो बड़ी कामियाबी है।

فَضْلًا مِنْ رَبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

५८- 'हमने' तुम्हारी भाषा में इस (क़ुर्आन) को आसान बना दिया है ताकि ये लोग नसीह़त ह़ासिल करें।

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝

५६- अच्छा तुम भी इन्तिज़ार करो ये भी इन्तिज़ार कर रहे हैं।

فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُرْتَقِبُونَ ۝



अनुवाद-सूरतुल् जासियति

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के २१३१ अक्षर, ४६२ शब्द, ३७ आयतें और ४ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- ह़ामीम्,

حٰمٓ ۝

२- इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाले अल्लाह की ओर से है।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝

३- बेशक ईमान लाने वालों के लिए आसमान और ज़मीन में निशानियां हैं;

اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

४- और तुम्हारी पैदाइश में, और उन जानवरों में भी जो उसने फैला रखे हैं, निशानियां हैं, यक़ीन करने वालों के लिए;

وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝

५- और रात और दिन के आने जाने में, और उस रिज़्क में जिसे अल्लाह आसमान से उतारता है, फिर इस ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा कर देता है और हवाओं की ग़र्दिश में भी, उनके लिए निशनियां हैं जो अक़्ल से काम लें।

وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝

६- यह अल्लाह की आयतें हैं, जो हम ह़क़ के साथ तुमको सुना रहे हैं, तो अब अल्लाह और उसकी आयतों के बाद वह कौन सी बात पर यह ईमान लाएँगे?

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝

७- तबाही है, हर झूठ गढ़ने वाले गुनहगार के लिए;

وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝

८- (कि) अल्लाह की उन आयतों को सुनता है जो उन्हें पढ़कर सुनायी जाती हैं, (मगर) फिर घमंड के साथ अड़ा रहता है, जैसे कि उसने उनको सुना ही नहीं, तो ऐसे व्यक्ति को दुःख देने वाले अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दीजिए।

يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝

९- और जब हमारी आयतों में से कोई बात जान लेता है तो वह उनका मज़ाक़ उड़ाने लगता है, ऐसे लोगों के लिए रूसवा कर देने वाला अ़ज़ाब है।

وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝

१०- इनके आगे जहन्नम है, और जो काम वे करते हैं वह उनके कुछ भी काम आने वाला नहीं, और न वही उनके (काम आएँगे) जिनको उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर संरक्षक बना रखा है, और उनके लिए बहुत बड़ा अ़ज़ाब है।

مِنْ وَرَائِهِمْ جَهَنَّمُ ۖ وَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ مَا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

११- यह (कुर्आन) हिदायत है, और जिन लोगों ने अपने 'रब' की आयतों का इन्कार किया, उनके लिए हिला देने वाला दुःख- -दायी अ़ज़ाब होगा।

هَٰذَا هُدًى ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رِجْزٍ أَلِيمٌ ۝

१२- अल्लाह ही तो है जिसने समुद्र को तुम्हारे वश में कर दिया, ताकि उसके हुक्म से नौकाएँ उसमें चलें, और ताकि तुम उसके फ़ज़्ल से (रोज़ी) ढूँढो; और ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो,

اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

१३- और उसने आसमानों और ज़मीन की सारी चीज़ों को अपनी ओर से तुम्हारी सेवा में लगा रखा है, इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार से काम लेते हैं।

وَسَخَّرَ لَكُمْ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

१४- जो लोग ईमान लाए उनसे कह दीजिए, जो लोग अल्लाह के दिनों की (जो आ़माल के बदले के लिए तय है) उम्मीद नहीं रखते उनसे दरगुज़र करें, ताकि 'वह' उन लोगों को उनके आ़माल का बदला दे।

قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

१५- जो अच्छा अ़मल करता है तो अपने ही लिए करता है और जो बुरा अमल करता है तो उसका वबाल उसी पर होगा, फिर तुम अपने 'रब' की ओर लौटाए जाओगे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۝

१६- और 'हमने' बनी इस्राईल को किताब और हि़कमत और नबूवत दी थी, उनको 'हमने' पाक रोज़ी दी और दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी।

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝

१७- और 'हमने' उन्हें दीन के विषय में साफ़-साफ़ हुक्म दिया, फिर जो भी विभेद उन्होंने किया इसके बाद कि उनके पास इल्म आ चुका था आपस की ज़िद की वजह से, बेशक

وَآتَيْنَاهُمْ بَيِّنَاتٍ مِنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا

كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝١٧

तुम्हारा 'रब' क़ियामत के दिन उनके बीच उन चीज़ों के बारे में फ़ैसला कर देगा, जिनमें वे आपस में इख़्तिलाफ़ करते रहे।

ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِيعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝١٨

१८- फिर 'हमने' तुमको एक स्पष्ट शरीअ़त पर (क़ायम) कर दिया, तो तुम उसी पर चलो और उन लोगों की इच्छाओं के पीछे न चलो, जो इल्म नहीं रखते।

إِنَّهُمْ لَن يُغْنُوا عَنكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۖ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ۝١٩

१९- ये अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे कुछ भी काम आने वाले नहीं, और ज़ालिम लोग एक-दूसरे के साथी हैं और अल्लाह मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) का साथी है।

هَٰذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝٢٠

२०- ये लोगों के लिए बसीरत (सूझ-बूझ) की बातें हैं, और हिदायत और रह़मत है उनके लिए जो यक़ीन करें।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَن نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝٢١

२१- क्या वे लोग, जिन्होंने बुराइयाँ की हैं, यह समझते हैं कि 'हम' उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और उन्होंने भले काम किये, उनका जीना और मरना एक जैसा हो जाए? बहुत बुरा फ़ैसला है जो ये कर रहे हैं।

وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝٢٢

२२- और अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़ (उद्‌देश्य) के साथ पैदा किया और ताकि हर नफ़्स (व्यक्ति) को उसकी कमाई का बदला दिया जाए, और उनके साथ ज़ुल्म न किया जाएगा।

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ وَخَتَمَ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ غِشَاوَةً فَمَن يَهْدِيهِ مِن بَعْدِ اللَّهِ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝٢٣

२३- क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जिसने अपनी इच्छा को अपना मअ़बूद (उपास्य) बना लिया है? जानने बूझने के बाद भी अल्लाह ने उसको गुमराह कर दिया और उसके कानों और दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँखों पर पर्दा डाल दिया, अब कौन है जो अल्लाह के बाद उसे राह पर ला सकता हो, फिर क्या तुम नसीह़त नहीं ह़ासिल करते?

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ۝٢٤

२४- और कहते हैं, ''हमारी ज़िन्दगी तो बस दुनिया की ज़िन्दगी है, (यहीं) हमें मरना और जीना है, और हमें बस ज़माने की गर्दिश तबाह करती है, और उनके पास इसका कोई इल्म नहीं, केवल बस अटकल की बातें करते हैं।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ مَّا كَانَ

२५- और जब उनके सामने 'हमारी' स्पष्ट आयतें पढ़ी जाती

حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتُوا بِآبَائِنَا
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

हैं, तो उनकी हुज्जत इसके सिवा और कुछ नहीं होती कि वे कहते हैं, ''लाओ हमारे बाप-दादा को अगर तुम सच्चे हो।''

قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ
إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

२६- कह दीजिए, ''अल्लाह ही तुम्हें ज़िन्दगी देता है, फिर 'वही' तुम्हें मौत देता है, फिर 'वही' तुमको क़ियामत के दिन जमा करेगा, और जिसके आने में कोई सन्देह नहीं, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَيَوْمَ تَقُومُ
السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَخْسَرُ الْمُبْطِلُونَ ۝

२७- और आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है, और जिस दिन वह घड़ी आएगी उस दिन झूठ वाले घाटे में होंगे।

وَتَرَىٰ كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً ۚ كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَىٰ
إِلَىٰ كِتَابِهَا ۚ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

२८- और तुम एक गिरोह को घुटनों के बल झुका हुआ देखोगे, हर गिरोह अपनी किताब की ओर बुलाया जाएगा,आज तुम्हें उसी का बदला दिया जाएगा, जो तुम करते थे;

هَٰذَا كِتَابُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّا
كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

२९- यह हमारी किताब है, जो तुम्हारे हक़ में ठीक-ठीक बोल रही है, हम लिखवाते रहे हैं जो कुछ तुम करते थे।''

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْمُبِينُ ۝

३०- तो जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये, उन्हें उनका 'रब' अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, यही खुली हुई कामियाबी है।

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ
عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُجْرِمِينَ ۝

३१- और जिन लोगों ने इन्कार किया (उनसे कहा जाएगा), ''क्या तुम्हें 'हमारी' आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं? मगर तुमने घमंड किया और तुम मुजरिम लोग थे।''

وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ
لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُمْ مَا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ
إِنْ نَظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِينَ ۝

३२- और जब कहा जाता था कि ''अल्लाह का वादा सच्चा है और उस घड़ी में कोई सन्देह नहीं,'' तो तुम कहते थे,'' 'हम नहीं जानते कि वह घड़ी क्या है? हम तो एक गुमान रखते थे, और हमें यक़ीन नहीं होता।''

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا
كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

३३- और जो कुछ वे करते रहे उसकी बुराइयां उन पर ज़ाहिर हो गईं और जिस चीज़ का वे मज़ाक़ करते थे उनको उसी ने आ घेरा।

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنْسَاكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ
هَٰذَا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝

३४- और कहा जाएगा, ''आज हम तुम्हें भुला देते हैं जिस तरह तुमने अपनी पेशी के इस दिन को भुला दिया था, तुम्हारा ठिकाना आग है और तुम्हारा कोई मदद्गार नहीं है।''

ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّ غَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۳۵﴾

३५- यह इस वजह से कि तुमने अल्लाह की आयतों की हंसी उड़ायी थी और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुम्हें धोखे में डाल रखा था, तो आज वे न तो उससे निकाले जाएँगे, और न उनकी तौबः क़ुबूल की जाएगी।

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۶﴾

३६- तो सारी तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो आसमानों का रब और ज़मीन का रब, (और) सारे संसार का रब है।

وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۪ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۳۷﴾

३७- और आसमानों और ज़मीन में बड़ाई उसी के लिए है और वही ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), हिकमत वाला है।



अनुवाद-सूरतुल्अह़्क़ाफ़ि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के २७०६ अक्षर, ७५० शब्द, ३५ आयतें और ४ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

पारा नं०-२६

* حٰمٓ ۚ

१- ह़ामीम्,

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝

२- (यह) किताब ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाले अल्लाह की ओर से उतारी गई है;

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ۝

३- 'हमने' आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के बीच है उसे केवल ह़क़् के साथ और एक निश्चित मुद्दत (अवधि) तक के लिए पैदा किया है, और इन्कारियों को जिस चीज़ की नसीह़त की जाती है उस से मुँह फेर लेते हैं।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِى السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝

४- कह दीजिए, ''क्या तुमने उनको देखा है, जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्होंने धरती की चीज़ों में से क्या पैदा किया है? या आसमानों में कोई उनकी साझेदारी है? मेरे पास इससे पहले की कोई किताब या कोई इल्मी प्रमाण ले आओ, अगर तुम सच्चे हो''

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ۝

५- और उस व्यक्ति से बढ़कर गुमराह कौन हो सकता है, जो अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारता हो, जो क़ियामत तक उनको जवाब नहीं दे सकते, और वे उनकी पुकार से बेख़बर हों;

وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝

६- और जब लोग इकट्ठा किये जाएँगे तो वे उनके दुश्मन होंगे और उनकी इबादत का इन्कार करेंगे।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

७- जब 'हमारी' स्पष्ट आयतें उन्हें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो वे लोग जिन्होंने इन्कार किया सत्य के विषय में, जबकि वह उनके पास आ चुका, कहते हैं, ''यह तो खुला जादू है।''

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۖ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

८- क्या यह कहते हैं, ''उसने इसे खुद ही गढ़ लिया है? कह दीजिए, ''अगर मैंने इसे खुद गढ़ा है, तो अल्लाह के ख़िलाफ़ मेरे लिए तुम कुछ भी अधिकार नहीं रखते, जिसके बारे में तुम बातें बनाने में लगे हो, वह उसे खूब जानता है, और 'वही' मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है, 'वह' बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।''

قُلْ مَا كُنتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

९- कह दीजिए, ''मैं कोई नया रसूल तो नहीं हूं, और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या मामला किया जाएगा और (तुम्हारे साथ क्या मामला किया जाएगा,) मैं तो केवल उस वह्य (प्रकाशना) की पैरवी करता हूँ, जो मेरी ओर वह्य भेजी जाती है, और मैं तो बस स्पष्ट ख़बरदार करने वाला हूँ।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ وَكَفَرْتُم بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّن بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَآمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

१०- कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा कि अगर यह (क़ुर्आन) अल्लाह की ओर से हुआ और तुमने उसका इन्कार किया, जबकि बनी इस्राईल में से एक गवाह ने उसके एक भाग की गवाही भी दी, तो वह ईमान ले आया और तुम घमंड में पड़े रहे, बेशक अल्लाह तो ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता।''

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَٰذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ۝

११- और जिन लोगों ने इन्कार किया, वे ईमान लाने वालों के बारे में कहते हैं, ''अगर यह (धर्म) अच्छा होता तो वे उसकी ओर हमसे आगे न बढ़ जाते, और जब उन्होंने इससे राह नहीं पायी तो अब ज़रूर कहेंगे, ''यह तो पुराना झूठ है!''

وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ وَهَٰذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ۝

१२- और इससे पहले मूसा की किताब रहनुमा और रह़मत बन कर आ चुकी है, और यह किताब, अ़रबी भाषा में है, उसकी तस्दीक़ (पुष्टि) करती है, ताकि उन लोगों को सचेत कर दे, जिन्होंने जुर्म किया और खुशख़बरी हो भले काम करने वालों के लिए।

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

१३- जिन लोगों ने कहा, ''हमारा 'रब' अल्लाह है, फिर वे उस पर जमे रहे, तो उन्हें न तो कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे।

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

१४- यही जन्नत वाले हैं, जहां वे हमेशा रहेंगे यह बदला होगा, उन कर्मों (आ़माल) का जो वे करते रहे।

१५- और 'हमने' इन्सान को अपने मां-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की है, उसकी माँ ने उसे तकलीफ़ के साथ (पेट में) उठाए रखा और उसे जना भी तकलीफ़ के साथ, और उसके गर्भ की अवस्था में रहने और दूध छुड़ाने की अवधि तीस माह (ढ़ाई वर्ष होती है); यहां तक कि जब वह अपनी पूरी शक्ति (जवानी) को पहुँचा, और चालीस वर्ष का हुआ तो उसने दुआ़ की, ''ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे इस एहसान का शुक्र अदा करूँ, जो 'तूने' मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर किये हैं, और नेक काम करूँ जो तुझे पसंद हैं और मेरी औलाद को भी मेरे लिए नेक बना दे, मैंने 'तेरी' ओर रूजूअ़ किया और मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ।''

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ
أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ
ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ
سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ
الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا
تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ
إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

१६- ऐसे ही लोग हैं जिनके 'हम' अच्छे काम, जो उन्होंने किये होंगे, क़ुबूल करेंगे और उनकी बुराइयों को दरगुज़र कर देंगे, इस ह़ाल में कि वे जन्नत वालों में से होंगे, सच्चा वादा जो उनसे किया जाता रहा है।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا
وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ
الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

१७- और जिस व्यक्ति ने अपने मां- -बाप से कहा, ''तुम पर उफ़ है! क्या तुम मुझे इससे डराते हो कि मैं (क़ब्र से) निकाला जाऊँगा, हालांकि मुझसे पहले कितनी ही नस्लें गुज़र चुकी हैं? और वे दोनों अल्लाह से फ़रियाद करते (हुए उससे कहते) हैं कि, ''अफ़सोस है तुझ पर! मान जा, अल्लाह का वादा सच्चा है तो वह कहता है, ''यह तो बस पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।''

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ
وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ
اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَيَقُولُ
مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

१८- 'यही' वे लोग हैं जिन पर अल्लाह का हुक्म (अ़ज़ाब) लागू हुआ,? उन उम्मतों में जो जिन्नों और इन्सानों में से उनसे पहले गुज़र चुकीं, बेशक वे तबाह होने वाले थे।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا
خَاسِرِينَ ۝

१६- और उनमें से हर एक के दर्जे उनके अपने किये हुए कर्मों के अनुसार होंगे, ताकि 'वह' उन्हें उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला चुका दे, और उन पर ज़ुल्म हरगिज़ न किया जाएगा।

وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِمَّا عَمِلُوا ۖ وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ وَ
هُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

२०- और जिस दिन काफ़िर आग के सामने पेश किये जाएँगे, (उनसे कहा जाएगा कि), ''तुम अपने हिस्से की अच्छी चीज़ें दुनिया की ज़िन्दगी में ले चुके और उनसे फ़ायदा भी उठा चुके,

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ
أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ
بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا

كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ
بِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ۝

तो आज तुम्हें अपमानित करने वाला अ़ज़ाब दिया जाएगा, क्योंकि तुम ज़मीन में बिना किसी ह़क़ के घमंड करते रहे और इसलिए कि तुम नाफ़रमानी करते रहे।''

وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ ۚ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ
خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا
تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيمٍ ۝

२१- और याद करो, आ़द के भाई (हूद) को, जब उन्होंने अहक़ाफ़ में अपनी क़ौम के लोगों को ख़बरदार किया! और उनके आगे और पीछे भी ख़बरदार करने वाले गुज़र चुके थे, ''अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है;''

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ آلِهَتِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا
إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝

२२- कहा, ''क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि हमको हमारे मअ़बूदों (उपास्यों) से फेर दे? अच्छा तो हम पर ले आ, जिसकी तू हमको धमकी देता है, अगर तू सच्चा है।''

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ
وَلَٰكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ۝

२३- उन्होंने कहा, ''इल्म तो अल्लाह ही के पास है और मैं तो तुम्हें वह (पैग़ाम) पहुँचा रहा हूँ जो मुझे देकर भेजा गया है लेकिन मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग जिहालत (अज्ञानता) में पड़े हुए हो।''

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا هَٰذَا
عَارِضٌ مُمْطِرُنَا ۚ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ ۖ رِيحٌ فِيهَا
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

२४- फिर जब उन्होंने उसे बादल के रूप में अपनी वादियों (घाटियों) की ओर आते देखा, तो कहने लगे, ''ये तो बादल है जो हम पर बारिश बरसाएगा!'' बल्कि (यह) वह चीज़ है जिसके लिए तुमने जल्दी मचा रखी थी, अर्थात आँधी जिसमें दुःख देने वाला अ़ज़ाब है;

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرَىٰ إِلَّا
مَسَاكِنُهُمْ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝

२५- हर चीज़ को अपने रब के हुक्म से तबाह कर देगी तो उनका ह़ाल यही हुआ कि उनके घरों के सिवा कुछ नज़र न आता था, गुनहगार लोगों को 'हम' इसी तरह बदला देते हैं।

وَلَقَدْ مَكَّنَّاهُمْ فِيمَا إِنْ مَكَّنَّاكُمْ فِيهِ وَ
جَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَأَبْصَارًا وَأَفْئِدَةً فَمَا أَغْنَىٰ
عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُمْ مِنْ
شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا
كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

२६- और 'हमने' उनको वह सत्ता दी थी, जो तुम लोगों को नहीं दीं, और 'हमने' उनको कान, आँखें और दिल दिये थे, मगर न उनके कान काम आए, न उनकी आंखें और न उनके दिल, इसलिए कि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और उनको घेर लिया उस चीज़ ने, जिसका वह मज़ाक़ उड़ाते थे।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِنَ الْقُرَىٰ وَصَرَّفْنَا

२७- और 'हम' तुम्हारे आस-पास की बस्तियों को तबाह कर

الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝

चुके हैं, हालांकि 'हमने' तरह -तरह से आयतें पेश की थीं, ताकि वे रूजूअ़ करें।

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۭ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ
اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝

२८- उन्होंने क्यों मदद न की, जिनको उन्होंने अल्लाह को छोड़कर निकटता के लिए मअ़बूद (उपास्य) बना रखा था, बल्कि वे सब उनसे खो गये, यह उनका झूठ था और उनकी गढ़ी हुई बातें थीं।

وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ
الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا
قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ۝

२९- और जब 'हमने' कुछ जिन्नों को आपकी ओर मुतवज्जह किया कि कुर्आन सुनें, तो जब वे उसके पास पहुंचे तो कहने लगे, ''चुप हो जाओ! फिर जब वह (पढ़ना) पूरा हो गया तो वे अपनी क़ौम की ओर ख़बरदार करने वाले बनकर लौटे''।

قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ
مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ
وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

३०- (उन्होंने) कहा, ''ऐ क़ौम! 'हमने' एक किताब सुनी है, जो मूसा के बाद उतारी गयी है, पुष्टि करती है, उस किताब की जो पहले आ चुकी हैं, यह सत्य और सीधी राह की ओर रहनुमाई करती है;

يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ
مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝

३१- ऐ क़ौम! अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात मानो और 'उस' पर ईमान लाओ, ताकि 'वह' तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे, और दु:ख देने वाले अ़ज़ाब से बचाए;

وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ
وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءُ ۭ اُولٰۗىِٕكَ فِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ۝

३२- और जो व्यक्ति अल्लाह की ओर बुलाने वाले को न मानेगा, तो उसके बस में नहीं है, कि ज़मीन में अल्लाह के काबू से निकल जाए, और न अल्लाह के मुक़ाबले में कोई उसका मददगार होगा, ऐसे ही लोग खुली गुमराही में हैं।''

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓي اَنْ يُّحْيِۦ
الْمَوْتٰى ۭ بَلٰٓي اِنَّهٗ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

३३- क्या उन्होंने देखा नहीं!, ''कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उनके पैदा करने से थका नहीं; क्या ऐसा नहीं कि 'वह' मुर्दों को ज़िन्दा कर दे, क्यों नहीं!! वह हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) रखता है।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَي النَّارِ ۭ اَلَيْسَ
هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا

३४- और जिस दिन वे लोग, जिन्होंने इन्कार किया, आग के सामने पेश किये जाएँगे; (तो कहा जाएगा) ''क्या यह ह़क़ नहीं

ٱلْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

है?'' तो कहेंगे, ''क्यों नहीं, हमारे रब की क़सम,'' हुक्म होगा, ''तो अब अ़ज़ाब का मज़ा चखो, उस इन्कार के बदले में जो तुम करते रहते थे।''

فَٱصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُو۟لُوا۟ ٱلْعَزْمِ مِنَ ٱلرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِل لَّهُمْ ۚ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ لَمْ يَلْبَثُوٓا۟ إِلَّا سَاعَةً مِّن نَّهَارٍ ۚ بَلَٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ إِلَّا ٱلْقَوْمُ ٱلْفَٰسِقُونَ ۝

३५- तो सब्र से काम लीजिए जिस तरह हिम्मत वाले पिछले रसूलों ने सब्र किया था, और उनके लिए जल्दी न मचाइए, जिस दिन ये उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है, तो (महसूस करेंगे कि) जैसे बस दिन की एक घड़ी भर ही ठहरे थे, यह (क़ुर्आन) पैग़ाम है, तो कौन तबाह होगा, सिवाय नाफ़रमान लोगों के?



अनुवाद-सूरतुमुह़म्मदिन

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के २४७५ अक्षर, ५५८ शब्द, ३८ आयतें और ४ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़्म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- जिन लोगों ने इन्कार किया, और अल्लाह के रास्ते से रोका, तो 'उसने' उनके कर्म को अकारथ कर दिया;

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝

२- और जो ईमान लाए, और भले काम किये, और उस चीज़ पर ईमान लाए जो मुह़म्मद पर उतारा गया-और वही ह़क़ (सत्य) है उनके 'रब' की ओर से, 'उसने' उनकी बुराइयां उनसे दूर कर दीं और उनका ह़ाल ठीक कर दिया;

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝

३- यह इसलिए कि जिन लोगों ने इन्कार किया वे बातिल (असत्य) पर चले, और जो लोग ईमान लाए, वह अपने 'रब' के बताए हुए सही़ रास्ते पर चले, इस तरह अल्लाह लोगों के लिए उनके ह़ाल बयान करता है;

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝

४- तो जब तुम्हारा मुक़ाबला काफ़िरों (इन्कारियों) से हो, तो उनकी गर्दनें उड़ा दो, यहां तक कि जब उन्हें अच्छी तरह कुचल दो, तो (जो बचें) मज़बूती से क़ैद कर लो, फिर इसके बाद या तो एह़सान करो (और छोड़ दो) या फ़िदिया (अर्थ-दण्ड) का मामला करो, यहां तक कि वे लड़ाई में अपने हथियार डाल दें, यह है तुम्हारी ज़िम्मेदारी, और अगर अल्लाह चाहे तो ख़ुद ही उनसे निपट ले, लेकिन 'उसने' चाहा कि तुम्हें एक-दूसरे के ज़रिये (लड़वा कर) आज़माए, और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये, तो उनके कामों को अल्लाह हरगिज़ अकारथ नहीं करेगा;

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ڎ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَاۗءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ڹ ذٰلِكَ ۭ وَلَوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۟ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ۭ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝

सَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝

५- 'वह' उनको राह पर लगाएगा और उनका हाल ठीक कर देगा;

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝

६- और उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा, जिसका हाल 'उसने' बता रखा है।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوٓا إِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ۝

७- ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह भी तुम्हारी मदद करेगा, और तुम्हारे क़दम जमा देगा।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ۝

८- और जिन लोगों ने इन्कार किया, तो उनके लिए तबाही है, और उनके कामों को अल्लाह अकारथ कर देगा;

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۝

९- यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ को नापसंद किया जिसे अल्लाह ने नाज़िल किया, तो 'उसने' उनके कामों को अकारथ कर दिया।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۖ وَلِلْكٰفِرِينَ أَمْثَالُهَا ۝

१०- क्या यह लोग धरती में चले-फिरे नहीं, ताकि देखते कि उनका कैसा अंजाम हुआ जो लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं? अल्लाह ने उन्हें तबाह कर दिया, और काफ़िरों (इन्कारियों) के लिए ऐसी ही तबाही है;

ذٰلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِينَ اٰمَنُوا وَأَنَّ الْكٰفِرِينَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝

११- यह इसलिए कि जो लोग ईमान लाए उनका संरक्षक अल्लाह है, और काफ़िरों का संरक्षक (मददगार) कोई नहीं।

إِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعٰمُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۝

१२- जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये, ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, और जिन लोगों ने इन्कार किया; वे फ़ायदे उठा रहे हैं, और इस तरह खा रहे हैं जिस तरह जानवर खाता है, और उनका ठिकाना आग है।

وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيٓ أَخْرَجَتْكَ ۚ أَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝

१३- और कितनी ही बस्तियां थीं, जो ताक़त में तुम्हारी उस बस्ती से, जिसने तुम्हें निकाल दिया, शक्ति में बढ़-चढ़ कर थीं 'हमने' उनको तबाह कर दिया, तो कोई उनका मददगार न हुआ।

أَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّهِ كَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوٓءُ عَمَلِهِ وَاتَّبَعُوٓا أَهْوَآءَهُمْ ۝

१४- तो क्या जो व्यक्ति अपने 'रब' की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हो, वह उन जैसा (हो सकता) है, जिन्हें उन का

बुरा कर्म ही सुहाना लगता हो, और वे अपनी इच्छाओं के पीछे ही चलने लग गये हों?

१५- जन्नत (की विशेषता,) जिसका मुत्तक़ियों से वादा किया गया है, यह है कि उसमें पानी की नहरें बह रही होंगी, जिसमें कोई बदलाव (बदबू) न होगा, और दूध की नहरें जिसका स्वाद (मज़ा) न बदलेगा, और ऐसे पीने (शराब) की नहरें होंगी जो पीने वालों के लिए बड़ी स्वादिष्ट होंगी, और साफ़-सुथरे शहद की भी नहरें होंगी, और उनके लिए हर तरह के फल होंगे, और उनके रब की ओर से मग्फ़िरत (क्षमा) है, (क्या ऐसे लोग) उन लोगों की तरह (हो सकते) हैं? जो हमेशा जहन्नम में रहने वाले हैं, और जिन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, जो उनकी आँतों को टुकड़े-टुकड़े कर के रख देगा।

مثل الجنة التي وعد المتقون ۖ فيها انهر من
ماء غير اسن ۚ وانهر من لبن لم يتغير طعمه ۚ
وانهر من خمر لذة للشربين ۚ وانهر من
عسل مصفى ۖ ولهم فيها من كل الثمرت
ومغفرة من ربهم ۖ كمن هو خالد في النار
وسقوا ماء حميما فقطع امعاءهم ۝١٥

१६- और उनमें से कुछ ऐसे भी हैं, जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास से निकलते हैं, तो जिन लोगों को इल्म मिला है, उनसे कहते हैं, कि ''उन्होंने (रसूल से) अभी क्या कहा था?'' यही वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और यह अपनी इच्छाओं के पीछे चल रहे हैं।

ومنهم من يستمع اليك ۚ حتى اذا خرجوا من
عندك قالوا للذين اوتوا العلم ماذا قال انفا ۚ
اولئك الذين طبع الله على قلوبهم واتبعوا
اهواءهم ۝١٦

१७-और जिन लोगों ने सीधी राह अपनाई, 'उसने' उनकी सूझ-बूझ और बढ़ा दी, और उन्हें परहेज़गारी अ़ता फ़रमायी।

والذين اهتدوا زادهم هدى واتهم تقوىهم ۝١٧

१८- तो क्या अब यह लोग उस घड़ी (क़ियामत) के इन्तिज़ार में हैं कि उन पर अचानक आ जाए? उसकी निशानियां (तो ज़ाहिर ही हो चुकी हैं) जब वह आ जाएगी तो उस समय उन्हें नसीहत कहाँ (फ़ायदा देगी)?

فهل ينظرون الا الساعة ان تاتيهم بغتة ۚ
فقد جاء اشراطها ۚ فانى لهم اذا جاءتهم
ذكرىهم ۝١٨

१९- तो जान लो! कि 'अल्लाह' के सिवा कोई इलाह(पूज्य)नहीं; और अपनी ग़ल्तियों के लिए मांफी मांगो, और मोमिन मर्दों और औ़रतों के लिए भी, और अल्लाह तुम्हारे चलने-फिरने को जानता है और तुम्हारे ठिकानों को भी।

فاعلم انه لا اله الا الله واستغفر لذنبك
وللمؤمنين والمؤمنت ۗ والله يعلم متقلبكم
ومثوىكم ۝١٩

२०- और जो लोग ईमान लाए वे कहते हैं, ''कोई सूरः क्यों नहीं उतरी? लेकिन जब एक पक्की सूरः उतर जाती है, जिसमें

ويقول الذين امنوا لولا نزلت سورة ۚ فاذا
انزلت سورة محكمة وذكر فيها القتال ۙ

رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَأَوْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٠﴾

क़िताल (युद्ध) का उल्लेख होता है, तो तुम उन लोगों को देखते हो-जिनके दिलों में रोग है-कि वे तुम्हारी ओर इस तरह देखते हैं, जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छा गई हो, तो अफ़सोस है उन पर!

طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ ۚ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾

२१- (उनके लिए बेहतर है) हुक्म मानना, और ठीक बात कहना, फिर जब बात पक्की हो जाए, तो अगर ये अल्लाह के लिए सच्चे साबित होते, तो उनके लिए बहुत अच्छा होता।

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِن تَوَلَّيْتُمْ أَن تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾

२२- (ऐ मुनाफ़िक़ो!) तुम से अजब नहीं कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो धरती में बिगाड़ पैदा करो और अपने रिश्तों-नातों को तोड़ने लगो-

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾

२३- यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, और उन्हें बहरा और (उनकी) आँखों का अन्धा कर दिया;

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾

२४- तो क्या ये क़ुर्आन में सोच-विचार नहीं करते, या उनके दिलों पर ताले लगे हैं?

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِم مِّن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٥﴾

२५- वे लोग जो पीठ फेर कर पलट गये, इसके बाद कि उन पर सीधी राह स्पष्ट हो चुकी थी, उन्हें शैतान ने सजा कर दिखाया और उसने उन्हें लम्बी (उम्र का वादा) दिया।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾

२६- यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ को नापसंद किया जो अल्लाह ने उतारा, कहा, ''हम कुछ मामलों में तुम्हारी बात मान लेंगे,'' अल्लाह उनकी छिपी बातों को जानता है।

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾

२७- तो उस वक़्त क्या (ह़ाल) होगा जब फ़रिश्ते उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते हुए उनकी रूहें कब्ज़ करेंगे,-

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾

२८- यह इसलिए कि यह उस पर चले जो अल्लाह को नाराज़ करने वाला था, और उन्होंने 'उसकी' खुशी को नापसंद किया, तो 'उसने' उनके सारे काम अकारथ कर दिये।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَن لَّن يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾

२९- क्या उन लोगों ने जिनके दिलों में रोग है यह समझ रखा है कि अल्लाह उनके कीनों (कपट) को, ज़ाहिर नहीं करेगा-

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم بِسِيمَاهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾

३०- और अगर 'हम' चाहते तो तुम्हें उन लोगों को दिखा भी देते, फिर तुम उन्हें उनकी सूरत ही से पहचान लेते, और तुम उन्हें उनकी बात-चीत से पहचान लोगे, और अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَ
الصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا۠ اَخْبَارَكُمْ ۝

३१– और 'हम' ज़रूर तुम्हारी आज़माइश करेंगे, यहां तक कि 'हम' उनको जान लें जो जिहाद करने वाले और सब्र करने वाले हैं, और तुम्हारे हालात की जांच कर लेंगे।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ
شَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ
لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ۝

३२– जिन लोगों ने इन्कार किया, और अल्लाह की राह से रोका, और रसूलों का विरोध किया, इसके बाद कि उन पर हिदायत स्पष्ट हो चुकी थी, वे अल्लाह का कुछ भी नुक़सान पहुंचाने वाले नहीं, और 'वह' उनका किया कराया अकारथ कर देगा।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ
وَلَا تُبْطِلُوْۤا اَعْمَالَكُمْ ۝

३३– ऐ ईमान वालो! अल्लाह के हुक्म पर चलो, और रसूल की फ़रमाँबरदारी करो, और अपने कामों को अकारथ न करो।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ
مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۝

३४– जिन लोगों ने इन्कार किया, और अल्लाह के रास्ते से रोका, और इन्कार करने वाले ही रह कर मर गये, तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ माफ़ न करेगा।

فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖۗ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖۗ
وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ۝

३५– तो तुम हिम्मत न हारो और सुलह के लिए न बुलाओ और तुम्हारी ही जीत होगी, और अल्लाह तुम्हारे साथ है और 'वह' तुम्हारे कामों को हरगिज़ अकारथ न करेगा।

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَ
تَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ۝

३६– दुनिया की ज़िन्दगी तो बस खेल और तमाशा है, और अगर तुम ईमान लाओ, और परहेज़गारी करते रहो, तो 'वह' तुम्हें तुम्हारा बदला देगा, और तुम से तुम्हारा माल न माँगेगा।

اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ
اَضْغَانَكُمْ ۝

३७– अगर 'वह' तुमसे तुम्हारा माल मांगे और तुमको तंग करे, तो तुम कंजूसी करने लगोगे, और 'वह' तुम्हारे खोट को निकाल बाहर कर देगा।

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ
فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ
نَّفْسِهٖ ؕ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ
تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا
يَكُوْنُوْۤا اَمْثَالَكُمْ ۝

३८– ऐ लोगो! जब अल्लाह की राह में खर्च करने के लिए बुलाए जाते हो, तो तुममें से ऐसे व्यक्ति भी हैं जो कंजूसी करने लग जाते हैं, और जो कंजूसी करता है वह वास्तव में अपने आप से कंजूसी करता है और अल्लाह तो ग़नी (निस्पृह) है और तुम मोहताज हो, और अगर तुम मुँह मोड़ोगे तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम को ले आएगा; फिर वह तुम जैसे न होंगे।



अनुवाद-सूरतुल् फ़त्ह़ि

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के १५५५ अक्षर, ५६८ शब्द, २६ आयतें और ४ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ۝١

१- (ऐ मुह़म्मद) 'हमने' आप को फ़त्ह़ (विजय) दी, फ़त्ह़ भी साफ़ खुली हुई;

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝٢

२- ताकि अल्लाह आप के अगले पिछले गुनाह माफ़ कर दे, और आप पर अपनी नेअ़मतें पूरी कर दे और आप को सीधी राह पर चलाए;

وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ۝٣

३- और अल्लाह आप की ज़बर्दस्त मदद फ़रमाए।

هُوَ الَّذِيْٓ أَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا إِيْمَانًا مَّعَ إِيْمَانِهِمْ ۗ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝٤

४- 'वही' है जिसने ईमान वालों के दिलों में सकीना (संतोष) उतारी, ताकि उनके ईमान के साथ, उनका ईमान और ज़्यादा हो जाए, और अल्लाह ही की हैं आसमानों और ज़मीन की सभी सेनाएँ और अल्लाह खूब जानने वाला, ह़िकमत वाला है।

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝٥

५- ताकि 'वह' मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को ऐसी जन्नतों में दाख़िल फ़रमाए, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वह उसमें हमेशा रहेंगे, और उनसे उनकी बुराइयां दूर कर दे, और यह अल्लाह के यहां बड़ी कामियाबी है।

وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۗ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۗ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝٦

६- और मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) मर्दों, और मुनाफ़िक़ औ़रतों, और मुश्रिक (बहुदेववादी) मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को अ़ज़ाब दे, जो अल्लाह के बारे में बुरा गुमान रखते हैं उन्हीं पर बुरे हादसे हों, और अल्लाह का उन पर ग़ज़ब (प्रकोप) हुआ और 'उसने' उन पर लानत की, और उनके लिए जहन्नम तैयार कर रखी है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

७- और आसमानों और ज़मीन की सब सेनाएँ अल्लाह ही की हैं, और अल्लाह बड़ी ताक़त वाला, ह़िकमत वाला है।

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝

८- 'हमने' आपको गवाही देने वाला, ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और ख़बरदार करने वाला बना कर भेजा है;

اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝

९- ताकि तुम लोग अल्लाह और 'उनके' रसूल पर ईमान लाओ, और उनकी मदद करो, और उनका आदर करो और सुबह व शाम उस (अल्लाह) की तस्बीह़ बयान करो।

لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝

१०- जो लोग आप से बैअ़त (वचन) करते हैं वे अल्लाह से बैअ़त करते हैं, अल्लाह का हाथ है उनके हाथों पर, फिर जिसने वचन तोड़ा वह अपने वचन तोड़ने का वबाल अपने ही ऊपर लेगा, और जो उस अह़्द (प्रतिज्ञा) को पूरा करेगा जो उसने अल्लाह से किया है, तो उसे 'वह' बहुत ज़ल्द बड़ा बदला देगा।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝

११- जो बद्दू (देहाती) पीछे रह गये थे, वे आप से ज़रूर कहेंगे, ''हमको हमारे माल और हमारे घर वालों ने रोक (व्यस्त) रखा था; तो आप हमारे लिए माफ़ी की दुआ़ कीजिए! यह लोग अपनी ज़बान से वह बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं हैं, कह दीजिए, ''कौन है! जो अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे लिए कुछ अधिकार रखता हो, अगर तुम को कोई नुक़सान पहुँचाना चाहे या वह तुम्हें कोई नफ़ा पहुंचाना चाहे? बल्कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है;

سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَاۤ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝

१२- बल्कि तुमने यह गुमान किया कि रसूल और ईमान वाले अब कभी अपने घर वालों में पलट कर न आ सकेंगे, और यह बात तुम्हारे दिलों को अच्छी मालूम हुई, और तुमने बुरे गुमान किये, और तबाह होने वालों में हो गये।''

بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰۤى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖۚ وَكُنْتُمْ قَوْمًا ۢبُوْرًا ۝

१३- और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान नहीं लाया, तो ऐसे काफ़िरों (इन्कारियों) के लिए 'हमने' (भड़कती हुई) आग तैयार कर रखी है।

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ۝

१४- और अल्लाह ही की है आसमानों और ज़मीन की बादशाही, 'वह' जिसे चाहे माफ़ करे और जिसे चाहे

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

अ़ज़ाब दे, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

१५- जब तुम ग़नीमतों (धर्म युद्ध में मिलने वाले माल) को ह़ासिल करने के लिए उनकी ओर चलने लगोगे, तो पीछे रहने वाले लोग कहेंगे, ''हमें भी इजाज़त दी जाए कि हम तुम्हारे साथ चलें,'' ये चाहते हैं कि अल्लाह के कलाम (कथन) को बदल दें, कह दीजिए, ''तुम हमारे साथ हरगिज़ नहीं चल सकते, अल्लाह पहले ही यह बात कह चुका है,'' इस पर कहेंगे, ''(नहीं,) बल्कि तुम लोग हमसे ह़सद (ईर्ष्या) कर रहे हो, (नहीं) बल्कि ये लोग बहुत कम समझते हैं।''

سيقول المخلفون اذا انطلقتم الى مغانم
لتاخذوها ذرونا نتبعكم ۚ يريدون ان
يبدلوا كلم الله ۚ قل لن تتبعونا كذلكم قال
الله من قبل ۚ فسيقولون بل تحسدوننا ۚ بل
كانوا لا يفقهون الا قليلا ⑮

१६- कह दीजिए उन पीछे रह जाने वाले बद्दुओं से, ''जल्द ही तुम्हें ऐसी क़ौम की ओर बुलाया जाएगा जो बड़े लड़ने वाले हैं, तुम उनसे लड़ो या वे मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो जाएँ, अगर तुमने इस हुक्म को मान लिया तो अल्लाह तुम्हें अच्छा बदला देगा, और अगर तुमने मुँह मोड़ा जैसा कि तुम पहले मुँह मोड़ चुके हो, तो वह तुम्हें दुःख देने वाला अ़ज़ाब देगा।''

قل للمخلفين من الاعراب ستدعون الى قوم
اولي باس شديد تقاتلونهم او يسلمون ۚ
فان تطيعوا يؤتكم الله اجرا حسنا ۚ وان
تتولوا كما توليتم من قبل يعذبكم عذابا
اليما ⑯

१७- न अन्धे पर कोई हरज (पाबन्दी) है, न लंगड़े पर कोई हरज है और न बीमार पर कोई हरज है, जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी करेगा, उसे 'वह' ऐसी जन्नत में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, और जो मुँह फेरेगा तो 'वह' उसे दुखदायी अ़ज़ाब देगा।

ليس على الاعمى حرج ولا على الاعرج حرج
ولا على المريض حرج ۚ ومن يطع الله و
رسوله يدخله جنت تجري من تحتها
الانهر ۚ ومن يتول يعذبه عذابا اليما ⑰

१८- अल्लाह मोमिनों से राज़ी हुआ, जब वे वृक्ष (दरख़्त) के नीचे आप से बैअ़त कर रहे थे, 'उसने' जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था इसलिए 'उसने' उन पर सकीना उतारी और बदले में उन्हें जल्द मिलने वाली फ़त्ह़ (विजय) तय कर दी;

لقد رضي الله عن المؤمنين اذ يبايعونك
تحت الشجرة فعلم ما في قلوبهم فانزل
السكينة عليهم واثابهم فتحا قريبا ⑱

१९- और बहुत सी ग़नीमतें जो उन्होंने हासिल कीं, और अल्लाह ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाला है।

ومغانم كثيرة ياخذونها ۚ وكان الله عزيزا
حكيما ⑲

२०- अल्लाह ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वादा किया है, कि तुम उनको ह़ासिल करोगे, यह फ़त्ह़ तो उसने तुम्हें जल्द ही तय कर दी, और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिये और (इसलिए

وعدكم الله مغانم كثيرة تاخذونها فعجل
لكم هذه وكف ايدي الناس عنكم ولتكون
اية للمؤمنين ويهديكم صراطا مستقيما ⑳

ऐसा किया) ताकि ईमान वालों के लिए एक निशानी हो, और वह तुम को सीधी राह पर चलाए।

وَّ اُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۗ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرًا ۝

२१- और (इस के अ़लावा) दूसरी और (विजय का भी वादा) है, और जिसकी तुम क़ुदरत (सामर्थ्य) नहीं रखते, उन्हें अल्लाह ने घेर रखा है, और अल्लाह को तो हर चीज़ पर क़ुदरत ह़ासिल है।

وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝

२२- और अगर (मक्का के) काफ़िर आप से लड़ते तो ज़रूर पीठ फेर जाते, फिर न कोई हिमायती पाते, न कोई मददगार।

سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِیْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝

२३- यह अल्लाह की सुन्नत (नियम) है जो पहले से चली आ रही है, और अल्लाह की सुन्नत में तुम हरगिज़ कोई तब्दीली (परिवर्तन) न पाओगे।

وَهُوَ الَّذِیْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۝

२४- और ''वही'' तो है जिसने मक्का की घाटी में उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिये, बाद इस के कि उन पर तुम्हें फ़त्ह़ दे चुका था, अल्लाह उसे देख रहा था जो कुछ तुम कर रहे थे।

هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْیَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِیْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝

२५- यह वही हैं जिन्होंने इन्कार किया और तुम्हें मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) से रोक दिया और क़ुर्बानी के जानवरों को भी इससे रोके रखा कि वे अपने ठिकानों पर पहुँचें, अगर यह ख़याल न होता कि बहुत से मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतें मौजूद हैं, जिन्हें तुम नहीं जानते, उन्हें कुचल दोगे, फिर उनके सिल्सिले में अंजाने में तुम पर इल्ज़ाम आएगा तो अल्लाह जिसे चाहे अपनी रह़मत में दाख़िल कर ले, अगर ईमान वाले अलग हो गये होते तो उनमें से जिन लोगों ने इन्कार किया उनको 'हम' ज़रूर दुःख देने वाला अ़ज़ाब देते।

اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْۤا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا ۝

२६- जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद (हठ) की और ज़िद भी नादानी की, तो अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर सकीना (संतोष) उतारी और उन्हें परहेज़गारी की बात का पाबन्द रखा, और वे इसी के ह़क़दार थे, और अल्लाह तो हर चीज़ का जानने वाला है।

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ

२७- बेशक, अल्लाह ने अपने रसूल को हक़ के साथ सच्चा

الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ مُحَلِّقِينَ
رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ لَا تَخَافُونَ ۖ فَعَلِمَ مَا لَمْ
تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَٰلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿٢٧﴾

ख्वाब (सपना) दिखाया था, ‘‘अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम ज़रूर मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) में अमन के साथ दाख़िल होगे, अपने सर के बाल मुड़ाते और कतरवाते हुए, तुम्हें कोई डर न होगा, तो उसने जान ली वह बात जो तुमने नहीं जानी, तो उसने जल्द ह़ासिल होने वाली फ़त्ह़ तुम्हारे लिए तय कर दी।

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿٢٨﴾

२८- ‘वही’ तो है जिसने अपने रसूल को हिदायत (मार्ग दर्शन) और सच्चा दीन देकर भेजा, ताकि तमाम दीनों पर उसको ग़ालिब (प्रभावी) कर दे और (ह़क़ ज़ाहिर करने के लिए) अल्लाह का गवाह होना ही काफ़ी है।

مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى
الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ ۖ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ
فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا ۖ سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ
مِنْ أَثَرِ السُّجُودِ ۚ ذَٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَاةِ ۚ وَ
مَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ
فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سُوقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ
لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۗ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَ
عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿٢٩﴾

२९- मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं, वे इन्कार करने वालों पर सख्त और आपस में रह़म दिल हैं, तुम उन्हें रूकूअ़ और सज्दे की ह़ालत में पाओगे, और अल्लाह के फ़ज़्ल (कृपा) और खुशी चाह रहे हैं, उनकी पहचान उनके पेशानी (मस्तक) पर सज्दों का निशान है, उनकी यह विशेषता तौरात में बयान हुई है, और इंजील में उनकी मिसाल इस तरह बयान हुई है जैसे खेती, जिसने अपनी कोपल निकाली; फिर उसे शक्ति पहुँचाई तो वह मोटी हुई और अपने तने पर सीधी खड़ी हो गयी, वह खेती करने वालों को खुश करती है, ताकि काफ़िर (इन्कार करने वाले) उनसे जलें अल्लाह ने उन लोगों से जो उनमें से ईमान लाए, और भले काम किये, उनसे अल्लाह ने माफ़ी और बहुत बड़े बदले का वादा कर रखा है।



अनुवाद-सूरतुल्हुजुराति

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के १५७३ अक्षर, ३५० शब्द, १८ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝

१- ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝

२- ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊँची न करो और न उससे इस तरह ऊँची आवाज़ से बोलो जिस तरह आपस में बोलते हो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आ़माल अकारथ हो जाएँ और तुम्हें ख़बर भी न हो।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝

३- जो लोग अल्लाह के रसूल के पास अपनी आवाज़ों को नीची करते हैं, वह लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए जाँच लिया है, उनके लिए माफ़ी और बड़ा बदला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝

४- जो लोग आप के हुजरों (कमरों) के बाहर से आप को पुकारते हैं, उनमें से अक्सर अक़्ल नहीं रखते;

وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

५- और अगर वे सब्र करते, यहां तक कि आप उनकी ओर निकल आते तो उनके लिए बेहतर था, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝

६- ऐ ईमान वालो! अगर कोई फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो उसकी छानबीन कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को अंजाने में तकलीफ़ पहुँचा दो, फिर तुम को अपने किये पर पछताना पड़े।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ

७- और जान लो! कि तुम्हारे बीच अल्लाह के रसूल मौजूद हैं, अगर बहुत से मामलों में तुम्हारी बात मान लिया करें तो

إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الرَّاشِدُونَ ۝

तुम तकलीफ़ में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह ने तुम्हारे ईमान को महबूब (प्रिय) बनाया और उसकी तुम्हारे दिलों में सुन्दरता दे दी; और कुफ्र, और फ़िस्क़ (उल्लंघन और अवज्ञा) और नाफ़रमानी को तुम्हारे लिए नफ़रत की चीज़ बना दिया; यही लोग हैं जो नेक राह पर हैं।

فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

८- अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) और एहसान है और अल्लाह खूब जानने वाला, हिकमत वाला है।

وَإِن طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا ۖ فَإِن بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ ۚ فَإِن فَاءَتْ فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝

९- और अगर ईमान वालों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच सुलह कराओ, फिर अगर उनमें से एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे, तो जो गिरोह ज़्यादती करे उससे लड़ो, यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की ओर पलट आएँ, फिर अगर वह पलट आएँ तो उनके बीच इन्साफ़ के साथ सुलह करा दो, और इन्साफ़ करो, कि अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसंद करता है।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

१०- मोमिन तो आपस में भाई- भाई ही हैं, तो अपने भाइयों के बीच सुलह कराओ और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पर रहम किया जाए।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ عَسَىٰ أَن يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّن نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَن يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۖ وَلَا تَلْمِزُوا أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ ۖ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۚ وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

११- ऐ ईमान वालो! कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाए, हो सकता है कि वे लोग उनसे बेहतर हों; और न औरतें दूसरी औरतों का (मज़ाक़ उड़ाएँ,) हो सकता है वे उनसे बेहतर हों; और न आपस में ताने दो, और न आपस में एक-दूसरे को बुरे लक़ब (उपाधियों) से पुकारो; ईमान लाने के बाद फिस्क़ (बुरा) नाम (रखना) बुरा है; और जो तौबः न करें, वे ज़ालिम हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ ۖ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ۝

१२- ऐ ईमान वालो! बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कुछ गुमान ग़लत होते हैं, और न एक-दूसरे की टोह में पड़ो, और न तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे बुराई करे- क्या तुममें से कोई इसको पसंद करेगा कि कोई अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए? तुम्हें तो इससे घिन ही आएगी। और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तौबः क़ुबूल करने वाला, रहम वाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَ جَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝١٣

१३- ऐ लोगो! 'हमने' तुमको एक ही मर्द और एक ही औ़रत से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो; अल्लाह के नज़दीक़ तुममें सबसे इ़ज़्ज़त वाला वह है, जो तुममें सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी (परहेज़गार) हो, बेशक अल्लाह जानने वाला, ख़बर रखने वाला है।

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَ لٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِىْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٤

१४- बद्दुओं ने कहा, ''हम ईमान ले आए,'' कह दीजिए, ''तुम ईमान नहीं लाए, बल्कि यूँ कहो, 'हम इस्लाम लाए,' (आज्ञाकारी हुए') और ईमान तो अभी तुम्हारे दिलों के अन्दर दाख़िल नहीं हुआ, और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी (आज्ञापालन) करोगे तो वह तुम्हारे कर्मों में से कुछ कम न करेगा, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।''

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝١٥

१५- मोमिन तो बस वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए, फिर शक में न पड़े, और अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, यही लोग सच्चे हैं।

قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ۝١٦

१६- कह दीजिए, ''क्या तुम अल्लाह को अपना धर्म जतलाते हो, और अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह को हर चीज़ का इ़ल्म है।

يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَىَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝١٧

१७- यह लोग तुम पर एह़सान जताते हैं कि इस्लाम क़ुबूल कर लिया, कह दीजिए, ''मुझ पर अपने इस्लाम लाने का एहसान न रखो, बल्कि अगर तुम सच्चे हो तो अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि 'उसने' तुम्हें ईमान की राह दिखाई;

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ ۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝١٨

१८- बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन के सभी छिपे हुए भेद को जानता है और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो।''



अनुवाद-सूरतुल् क़ाफ़्

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के १५२५ अक्षर, ३७६ शब्द, ४५ आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।



अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- क़ाफ़्; क़सम है क़ुर्आनमजीद की-

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۟

२- बल्कि इन्हें इस बात पर तअ़ज्जुब हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक सचेत करने वाला आया, फिर इन्कार करने वाले कहने लगे, ''यह तो अ़जीब बात है;

بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ۟

३- क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी हो जाएँगे (तो दोबारा ज़िन्दा किये जाएँगे)?- यह पलटना (ज़िन्दा होना) तो बहुत दूर की बात है।''

ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ۝

४- 'हम' जानते हैं धरती उनमें जो कुछ (शरीर को खाकर) कम करती है, और 'हमारे' पास सुरक्षित रखने वाली एक किताब है।

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ۝

५- बल्कि उन्होंने झुठला दिया जबकि ह़क़ उनके पास आ गया, इसलिए वे उलझन में पड़े हुए हैं।

بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ۝

६- क्या उन लोगों ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा! 'हमने' उसको कैसे बनाया और सजाया, और इसमें कोई दराड़ नहीं;

اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ۝

७- और ज़मीन को 'हमने' फैलाया और इसमें पहाड़ डाल दिये और हर तरह की इसमें सुन्दर चीज़ें उगायीं;

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۟

८- (ताकि हर उस बन्दे की) आँख खोल दे और रूजूअ़ करने वाले के लिए नसीह़त हो।

تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝

९- और 'हमने' आसमान से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उससे बाग़ और फसल के अनाज (भी जो काटी जाती हैं,)

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ۟

وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ

१०- और खजूर के वृक्ष उगाए जिनके गुच्छे तह पर तह होते हैं,

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ

११- बन्दों की रोज़ी के लिए; और 'हमने' उस (पानी) से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया, इसी तरह (क़ियामत के दिन) निकलना होगा।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ

१२- उनसे पहले नूह़ की क़ौम और अस्हाबुर्रस, और समूद झुठला चुके हैं;

وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ

१३- और आ़द और फ़िरऔ़न और लूत के भाई भी;

وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ

१४- और अल्-ऐका वाले और तुब्बा की क़ौम भी; इन सब ने रसूलों को झुठलाया, तो 'हमारा' वादा उन पर पूरा हो कर रहा।

اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ

१५- क्या 'हम' पहली बार पैदा कर के थक गये हैं?! (नहीं,) बल्कि यह एक नई पैदाइश के बारे में शक में (पड़े हुए) हैं।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۖ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ

१६- और 'हमने' इन्सान को पैदा किया है और 'हम' जानते हैं जो बातें उसके जी में आती हैं, और 'हम' उससे, उसकी गर्दन की रग से भी ज़्यादा क़रीब हैं।

اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ

१७- जब दो (फ़रिश्ते) लिखने वाले दाएँ और बाएँ बैठे रिकार्ड कर रहे होते हैं;

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ

१८- वह कोई भी शब्द नहीं निकालता मगर उसके पास एक निरीक्षक (निगरां) मौजूद होता है।

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۖ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ

१९- और मौत की बेहोशी सत्य ले कर आ पहुँची, (ऐ इन्सान) यह है वह चीज़ जिससे तू भागता था।

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ۚ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ

२०- और सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा, यही वह दिन है जिससे धमकाया गया था।

وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّشَهِيْدٌ

२१- और हर व्यक्ति इस हाल में (हाज़िर होगा) कि इसके साथ एक हाँकने वाला है और एक गवाही देने वाला।

لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ

२२- इस चीज़ की ओर से तू ग़फ़लत में रहा, 'हमने' वह पर्दा हटा दिया जो तुझ पर पड़ा था, इसलिए आज तेरी निगाह बहुत तेज़ है।

२३- और उसके साथी (फ़रिश्ते) ने कहा, ''यह जो (आ़मालनामा) मेरे पास था, हाज़िर है।''	وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ۝
२४- ''डाल दो, जहन्नम में! हर काफ़िर दुश्मन को;	اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ۝
२५- जो भलाई से रोकने वाला, सीमा का उल्लंघन करने वाला, शक में डालने वाला था;	مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبٍ ۝
२६- जिसने अल्लाह के साथ किसी दूसरे को मअ़बूद (उपास्य) ठहरा रखा था, तो डाल दो इसको सख़्त अ़ज़ाब में।''	اِلَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ۝
२७- उसके साथी ने कहा, ''ऐ हमारे 'रब'! मैंने तो इसको सरकश नहीं बनाया था, बल्कि यह ख़ुद दूर की गुमराही में पड़ गया था।''	قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ۝
२८- कहेगा, 'मेरे' पास झगड़ा न करो, 'मैं ने' तुम्हें पहले ही 'अपने' अ़ज़ाब से ख़बरदार कर दिया था;	قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ۝
२९- 'मेरे' यहां बात बदली नहीं जाती और 'मैं' बन्दों पर हरगिज़ ज़ुल्म करने वाला नहीं हूं।''	مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝
३०- उस दिन 'हम' जहन्नम से पूछेंगे, ''क्या तू भर गयी?'' और वह कहेगी, ''क्या कुछ और भी हैं?''	يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ۝
३१- और जन्नत परहेज़गारों के क़रीब कर दी जाएगी, (जो) कुछ भी दूर न होगी;	وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ۝
३२- 'यही' है वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जाता था हर रूजूअ़ करने वाले, बड़ी निगरानी करने वाले के लिए;	هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ۝
३३- जो 'रह़मान' से बिना देखे डरता रहा और रूजूअ़ होने वाले दिल के साथ हाज़िर हुआ।''	مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ۝
३४- ''दाख़िल हो जाओ इस (जन्नत) में सलामती के साथ, यह हमेशा रहने का दिन है;	اِدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ۝
३५- वहां उनके लिए वह सब कुछ होगा जो चाहेंगे, और 'हमारे' पास उससे ज़्यादा (बहुत कुछ) है।	لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ۝
३६- और उनसे पहले 'हम' कितनी ही नस्लों को तबाह कर चुके हैं, वह शक्ति में इनसे कहीं बढ़-चढ़ कर थे; तो उन्होंने शहरों को छान मारा, तो उन्हें कहाँ पनाह की जगह मिली?	وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ۝

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ۝

३७- बेशक इसमें नसीहत है, हर उस व्यक्ति के लिए जो ‘दिल’ रखता हो या हाज़िर रह कर बात सुने।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ۝

३८- और ‘हमने’ आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में पैदा किया, और ‘हमें’ कोई थकान नहीं आई।

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝

३९- तो सब्र करो इनकी बातों पर, और पाकी बयान करो अपने ‘रब’ की प्रशंसा के साथ; सूरज के निकलने और उसके डूबने से पहले,

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ۝

४०- और रात के कुछ हिस्से में भी उसकी पाकी बयान करो और सज्दों (नमाज़) के बाद भी।

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۝

४१- और कान लगा कर सुन लेना! जिस दिन पुकारने वाला बहुत क़रीब से पुकारेगा,

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ۝

४२- उस दिन यह उस हौलनाक आवाज़ को सत्य के साथ सुनेंगे, वही निकल खड़े होने का दिन है;

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ۝

४३- ‘हम’ ही ज़िन्दा करते हैं और ‘हम’ ही मौत देते हैं, और ‘हमारी’ ही ओर लौटना है।

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ۝

४४- उस दिन धरती उनके ऊपर से फट जाएगी और वे तेज़ी से निकल रहे होंगे, यह इकट्ठा करना ‘हमारे’ लिए बहुत आसान है।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ ۝

४५- ‘हम’ जानते हैं जो कुछ ये लोग कहते हैं, और आप उन पर ज़बर्दस्ती करने वाले तो नहीं हैं, तो इस क़ुर्आन के ज़रिये से नसीहत कीजिए जो हमारे वादे से डरता हो।



अनुवाद-सूरतुज़्-ज़ारियाति

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के १५५१ अक्षर, ३६० शब्द, ६० आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

अनुवाद	आयत
१- क़सम है, बिखेरने वालियों की, (हवाओं की जो गर्द उड़ाती हैं;)	وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ۙ
२- फिर बोझ उठाती हैं;	فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۙ
३- फिर नर्मी के साथ चलती हैं;	فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ۙ
४- फिर मामले को तक़सीम करती हैं;	فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۙ
५- कि जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है, वह सच है;	اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ۙ
६- और बदले का दिन निश्चित रूप से आकर रहेगा।	وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ۙ
७- क़सम है! तह दर तह बादलों वाले आसमान की,	وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۙ
८- कि तुम भिन्न-भिन्न बातें करते हो,	اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۙ
९- इससे वही फिरते हैं जो (अल्लाह की ओर से) फेरा जाए।	يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ۙ
१०- मारे जाएँ अटकल से बातें करने वाले,	قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ۙ
११- जो बेख़बरी में भूले हुए हैं,	الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ۙ
१२- पूछते हैं, ''बदले का दिन कब आएगा?''	يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ۙ
१३- उस दिन यह आग पर तपाए जाएँगे;	يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ۝
१४- ''चखो मज़ा, अपने फित्ने का! यही है जिसके लिए तुम जल्दी मचा रहे थे।''	ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ۭ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝
१५- बेशक अल्लाह से डरने वाले बाग़ों और स्रोतों में होंगे,	اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ

१६- उनके 'रब' ने उनको जो कुछ प्रदान किया होगा, वे उससे ले रहे होंगे, बेशक वे इससे पहले नेक लोगों में से थे;

آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَٰلِكَ مُحْسِنِينَ ﴿١٦﴾

१७- वे रातों में कम ही सोते थे,

كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ﴿١٧﴾

१८- और सुबह (भोर) के समय माफ़ी की दुआ करते थे,

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿١٨﴾

१६- और उनके मालों में माँगने वाले और महरूम (धनहीन) का हक़ होता है।

وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿١٩﴾

२०- और ज़मीन में बड़ी निशानियां हैं यक़ीन करने वालों के लिए;

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ ﴿٢٠﴾

२१-और खुद तुम्हारे अन्दर भी, क्या तुम देखते नही!

وَفِي أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٢١﴾

२२- और आसमान में तुम्हारा रिज़्क़ भी है और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है,

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ﴿٢٢﴾

२३- तो आसमानों और ज़मीन के 'रब' की क़सम! यह बात हक़ है, ऐसे ही जैसे तुम बोल रहे हो।

فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنطِقُونَ ﴿٢٣﴾

२४- क्या इब्राहीम के इज़्ज़तदार मेहमानों की बात तुम तक पहुंची है;

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٤﴾

२५- जब वे उनके पास आए तो कहा, ''सलाम हो तुम पर,'' उन्होंने भी कहा, ''सलाम हो'' (आप लोगों पर भी) ''यह तो अजनबी लोग हैं,''

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ ﴿٢٥﴾

२६- फिर वह (चुपके से) अपने घर वालों के पास गये, और एक मोटा ताज़ा बछड़ा (भून कर) ले आए।

فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ﴿٢٦﴾

२७- तो उसको उनके सामने पेश किया, और कहा, ''क्या आप खाते नहीं?''

فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٧﴾

२८- फिर उसने दिल में उनसे डर महसूस किया, उन्होंने कहा, ''डरिए नहीं'' और उनको इल्म वाले बेटे की खुशख़बरी सुनायी।

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ وَبَشَّرُوهُ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٢٨﴾

२६- तो (यह सुन कर) उनकी पत्नी (चकित होकर) आगे बढ़ीं और अपने मुंह पर हाथ मारा, और कहने लगी, ''(मैं तो) एक बूढ़ी बाँझ हूँ (कैसे बच्चा पैदा होगा)!''

فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ﴿٢٩﴾

قَالُوا كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝

३०- उन्होंने कहा, ''ऐसा ही तेरे 'रब' ने कहा है, बेशक 'वह' बड़ी ह़िकमत वाला, इल्म वाला है।''

पारा नं०-२७

* قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝

३१- (इब्राहीम ने) कहा, ''ऐ भेजे हुए रसूलो (दूतों) तुम्हारा क्या मतलब है।''

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ۝

३२- उन्होंने कहा, ''हम एक अपराधी क़ौम की ओर भेजे गये हैं,

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ طِينٍ ۝

३३- ताकि उनके ऊपर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाएँ,

مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ۝

३४- जो आप के 'रब' के यहां सीमा से गुज़रने वालों के लिए निशानज़द (नाम लिखे हुए पत्थर) हैं।''

فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

३५- फिर 'हमने' ईमान वालों को वहां से निकाल दिया;

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

३६- और वहाँ 'हमने' एक घर के सिवा मुसलमानों (आज्ञाकारियों) का कोई घर न पाया;

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝

३७- और 'हमने' वहां एक निशानी छोड़ दी, उन लोगों के लिए जो दुःख देने वाले अ़ज़ाब से डरते हों।

وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ۝

३८- और मूसा के ह़ाल में भी (निशानी है) जबकि 'हमने' फ़िरऔ़न की ओर खुला हुआ मोजूज़ा (चमत्कार) देकर भेजा;

فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ۝

३९- तो उसने अपनी ताक़त के घमंड में मुँह मोड़ा, और कहने लगा, ''यह जादूगर है, या दीवाना।''

فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ۝

४०- तो 'हमने' उसको और उसकी सेनाओं को पकड़ लिया और उन्हें गहरे पानी में फेंक दिया, और वह था ही मलामत वाला।

وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ۝

४१- और आ़द में भी (निशानी है), जबकि 'हमने' उन पर मन्हूस आँधी चलायी;

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ۝

४२- कि वह जिस चीज़ पर से गुज़री उसे चूर-चूर कर डाला।

وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ۝

४३- और समूद में भी (निशानी) है, जबकि उनसे कहा गया, ''एक समय तक मज़े उड़ा लो!''

فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّاعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۝

४४- तो उन्होंने अपने रब के हुक्म को न माना, तो उनको कड़क ने धर दबोचा और वे देखते ही रह गये,

४५- फिर वे न खड़े हो सके और न अपना बचाव ही कर सके।

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِن قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنتَصِرِينَ ﴿٤٥﴾

४६- और नूह की क़ौम को भी इनसे पहले पकड़ा, बेशक वह नाफ़रमान लोग थे।

وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٤٦﴾

४७- और आसमान को 'हमने' अपनी कुदरत से बनाया और 'हम' बड़ी विशालता रखने वाले हैं।

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ﴿٤٧﴾

४८- और धरती को 'हमने' ही बिछाया तो 'हम' क्या ही खूब बिछाने वाले हैं।

وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمَاهِدُونَ ﴿٤٨﴾

४६- और 'हमने' हर चीज़ के जोड़े बनाए, ताकि तुम ध्यान दो।

وَمِن كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٤٩﴾

५०- तो तुम लोग अल्लाह की ओर दौड़ो मैं 'उसकी' ओर से एक खुला हुआ ख़बरदार करने वाला हूं,

فَفِرُّوا إِلَى اللَّهِ ۖ إِنِّي لَكُم مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٠﴾

५१- और अल्लाह के साथ कोई मअ़बूद (उपास्य) न ठहराओ, मैं 'उसकी' ओर से एक खुला हुआ ख़बरदार करने वाला हूं।

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۖ إِنِّي لَكُم مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥١﴾

५२- इसी तरह उन लोगों के पास भी, जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं; जो भी रसूल आए तो उन्होंने बस यही कहा, ''जादूगर है या दीवाना!''

كَذَٰلِكَ مَا أَتَى الَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٥٢﴾

५३- क्या उन्होंने एक-दूसरे को इसकी वसीयत कर रखी है? (नहीं) बल्कि ये हैं ही सरकश लोग।

أَتَوَاصَوْا بِهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٥٣﴾

५४- तो आप इनसे रूख फेर ले, आप पर कोई मलामत नहीं है,

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنتَ بِمَلُومٍ ﴿٥٤﴾

५५-और याद दिलाते रहिए क्योंकि याद दिलाना ईमान वालों को फ़ायदा पहुँचाता है?

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَىٰ تَنفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٥﴾

५६- और 'मैंने' तो जिन्नों और इन्सानों को केवल इसलिए पैदा किया है ताकि मेरी इबादत करें।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾

५७- मैं उनसे रोज़ी नहीं चाहता और न मैं यह चाहता हूँ कि वे मुझे (खाना) खिलाएँ;

مَا أُرِيدُ مِنْهُم مِّن رِّزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَن يُطْعِمُونِ ﴿٥٧﴾

५८- अल्लाह ही है रोज़ी देने वाला, बड़ा शक्तिशाली, मज़बूत।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿٥٨﴾

५६- तो जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उनके लिए वैसा ही अ़ज़ाब का पैमाना है; जिस तरह उनके साथियों का था (अ़ज़ाब का) तो यह जल्दी न मचाएँ!	فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِّثْلَ ذَنُوبِ أَصْحَٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ۝
६०- तो इन काफ़िरों के लिए बड़ी तबाही है, जिस दिन का इनसे वादा किया जा रहा है।	فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن يَوْمِهِمُ الَّذِى يُوعَدُونَ ۝



अनुवाद-सूरतुत्तूरि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के १३३४ अक्षर, ३१९ शब्द, ४९ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

अनुवाद	आयत
१- क़सम है तूर की,	وَالطُّورِ ۝١
२- और ऐसी किताब की जो लिखी हुई है,	وَكِتَابٍ مَسْطُورٍ ۝٢
३- फैले हुए पन्नों में,	فِي رَقٍّ مَنْشُورٍ ۝٣
४- और बैतुल मामूर (फरिश्तों का आसमानी कअ़बः) की,	وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ۝٤
५- और ऊँची छत की,	وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ۝٥
६- और उमंड़ते हुए समुद्र की,	وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ۝٦
७- बेशक, तुम्हारे 'रब' का अ़ज़ाब आ कर रहेगा;	إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝٧
८- जिसे कोई टालने वाला नहीं,	مَا لَهُ مِنْ دَافِعٍ ۝٨
९- जिस दिन आसमान थरथराने लगेगा,	يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ۝٩
१०- और पहाड़ चलने लगेंगे (ऊन होकर),	وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝١٠
११- तो तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए,	فَوَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝١١
१२- जो बहस में पड़े खेल रहे हैं।	الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۝١٢
१३- जिस दिन वे धक्के देकर जहन्नम की ओर ले जाए जाएँगे।	يَوْمَ يُدَعُّونَ إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝١٣
१४- ''यही है वह आग जिसको तुम झुठलाया करते थे,	هَٰذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝١٤
१५- तो क्या यह जादू तुम्हें सुझाई नहीं देता है-	أَفَسِحْرٌ هَٰذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ۝١٥
१६- जाओ, झुलसो इसमें, अब सब्र करो या न करो; तुम्हारे लिए बराबर है, तुम्हें बदले में वही दिया जा रहा है जो तुम करते रहे।''	اصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ ۖ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝١٦

१७- बेशक, परहेज़गार, बाग़ों की नेअ़मतों में होंगे;

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَعِيمٍ ﴿١٧﴾

१८- मज़े उड़ा रहे होंगे उन नेअ़मतों का जो उनके रब ने उनको दिया होगा, और उनके रब ने उन्हें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा लिया होगा।

فَاكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿١٨﴾

१६- ''खाओ और पिओ मज़े से अपने उन कामों के बदले में जो तुम करते रहे।''

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

२०- क़तार से (पंक्तिबद्ध) तख़्तों पर तकिया लगाए होंगे और 'हम' बड़ी आँखों वाली हूरों से उनका निकाह (विवाह) कर देंगे।

مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَصْفُوفَةٍ ۖ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ﴿٢٠﴾

२१- और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद भी ईमान के साथ उनके पीछे चली, 'हम' उनकी औलाद को भी उनसे मिला देंगे, और उनके कर्मों में से कुछ भी कम न करेंगे, हर व्यक्ति अपने कमाई के बदले रहन (बन्धक, अर्थात फंसा हुआ) है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ﴿٢١﴾

२२- और वे जिस तरह के मेवे और गोश्त की इच्छा करेंगे 'हम' उनको बराबर देते रहेंगे।

وَأَمْدَدْنَاهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢٢﴾

२३- वहां वे आपस में एक-दूसरे से आगे बढ़ कर प्याले हाथों-हाथ ले रहे होंगे, जिसमें न कोई बेहूदगी होगी और न गुनाह (और न कोई उभारने) वाली बात;

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ﴿٢٣﴾

२४- और ऐसे खूबसूरत लड़के उनकी सेवा में लगे होंगे, जो गोया सुरक्षित मोती हों।

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَكْنُونٌ ﴿٢٤﴾

२५- और उनमें से कुछ व्यक्ति कुछ व्यक्तियों की ओर ह़ाल पूछते हुए रूख करेंगे,

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾

२६- कहेंगे, ''इससे पहले हम अपने घर वालों में (अल्लाह से) डरते रहते थे;

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾

२७- तो अल्लाह ने हम पर एह़सान किया और हमें झुलसा देने वाले अ़ज़ाब से बचा लिया;

فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾

२८- इससे पहले हम 'उसको' पुकारते थे, बेशक 'वह' बड़ा ही एह़सान करने वाला और रह़म वाला है।''

إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾

२६- तो आप याद दिलाते रहिए, अपने रब के फ़ज़्ल (अनुग्रह) से, न आप काहिन (अभिचारक) हैं और न दीवाने।

فَذَكِّرْ فَمَآ أَنتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ۝

३०- क्या यह लोग कहते हैं, ''यह शायर है, जिसके लिए हम ज़माने की गर्दिश (कालचक्र) का इन्तिज़ार कर रहे हैं?''

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ الْمَنُونِ ۝

३१- कह दीजिए, ''तुम इन्तिज़ार करो! मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।''

قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُتَرَبِّصِينَ ۝

३२- क्या इनकी अक़्लें इनको ऐसी ही बातें सिखाती हैं, बल्कि यह हैं ही सरकश लोग?

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُم بِهَٰذَا ۚ أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ۝

३३- क्या यह कहते हैं, ''इसको इसने खुद ही गढ़ लिया है,'' हक़ीक़त यह है कि यह ईमान ही नहीं लाना चाहते।

أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ ۚ بَل لَّا يُؤْمِنُونَ ۝

३४- अगर यह सच्चे हैं तो इस जैसा कलाम (वाणी) ले आएँ।

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ۝

३५- क्या ये किसी के पैदा किये बिना पैदा हो गये हैं या खुद ही अपने को पैदा करने वाले हैं?

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ۝

३६- क्या आसमानों और ज़मीन को इन्होंने पैदा किया है?- (नहीं,) बल्कि ये यक़ीन ही नहीं रखते;

أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ ۝

३७- क्या इनके पास आप के 'रब' के ख़ज़ाने हैं? या इन पर उनका क़ब्ज़ा है?-

أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ ۝

३८- या इनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर चढ़ कर वे सुन लेते हैं? फिर उनमें से जिसने सुन लिया हो तो वह ले आए स्पष्ट प्रमाण;

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۖ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُم بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝

३६- क्या 'उसके' लिए बेटियां हैं, और तुम्हारे अपने लिए बेटे?-

أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ۝

४०- क्या आप उनसे कोई उज्र (मुज़दूरी) मांगते हैं कि वे इस तावान के बोझ से दबे जा रहे हैं?-

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ۝

४१- या उनके पास ग़ैब (परोक्ष का इ़ल्म) है, जिसके आधार पर वे लिख लेते हैं?

أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ۝

४२- क्या कोई चाल चलना चाहते हैं? तो जिन लोगों ने इन्कार किया वही चाल के लपेट में आने वाले हैं।

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ۝

४३- क्या वे अल्लाह के सिवा उनका कोई और मअ़बूद (उपास्य) है, पाक है, 'अल्लाह' उन चीज़ों से जिनको ये उसका साझीदार ठहराते हैं।

أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

४४- और अगर ये लोग आसमान का कोई टुकड़ा गिरते हुए देख लेंगे तो कहेंगे, ''यह तो तह पर तह बादल हैं!''

وَاِنۡ يَّرَوۡا كِسۡفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوۡلُوۡا سَحَابٌ مَّرۡكُوۡمٌ ۝

४५- तो उनको छोड़ दीजिए, यहां तक कि वे अपने उस दिन को पहुंच जाएं, जिस दिन इनके होश उड़ जाएंगे;

فَذَرۡهُمۡ حَتّٰى يُلٰقُوۡا يَوۡمَهُمُ الَّذِىۡ فِيۡهِ يُصۡعَقُوۡنَۙ ۝

४६- जिस दिन न इनकी कोई चाल इनके काम आएगी और न इनको कोई मदद मिल सकेगी;

يَوۡمَ لَا يُغۡنِىۡ عَنۡهُمۡ كَيۡدُهُمۡ شَيۡـًٔـا وَّلَا هُمۡ يُنۡصَرُوۡنَؕ ۝

४७- और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उनके लिए एक अ़ज़ाब है और उसके अ़लावा भी, लेकिन उनमें से अक्सर जानते नहीं।

وَاِنَّ لِلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا عَذَابًا دُوۡنَ ذٰلِكَ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝

४८- और तुम अपने 'रब' का फ़ैसला आने तक सब्र से काम लो, तुम तो 'हमारी' निगाह में हो, और अपने 'रब' की ह़म्द (प्रशंसा) के साथ पाकी बयान करो जब भी तुम उठो;

وَاصۡبِرۡ لِحُكۡمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعۡيُنِنَا وَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ حِيۡنَ تَقُوۡمُۙ ۝

४९- और रात में भी 'उसकी' तस्बीह़ (गुणगान) करो, और सितारों के पीठ फेरने (डूबने) के समय (सुबह) भी।

وَمِنَ الَّيۡلِ فَسَبِّحۡهُ وَاِدۡبَارَ النُّجُوۡمِ ۝



अनुवाद-सूरतुन्नजमि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के १४५० अक्षर, ३६५ शब्द, ६२ आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- क़सम है तारे की, जब वह नीचे आए (अर्थात डूबे),	وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى
२- तुम्हारे साथी (मुह़म्मद) न गुमराह हुए और न बहके हैं;	مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى
३- और न वह अपनी इच्छा से बोलते हैं;	وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى
४- यह तो बस एक वह़्य है, जो की जा रही है,	اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى
५- उनको ज़बर्दस्त शक्ति वाले ने सिखाया है।	عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى
६- ताक़तवर (अर्थात जिब्रईल) ने फिर वह (फ़रिश्ता असली सूरत में) नमूदार हुआ,	ذُوْ مِرَّةٍ فَاسْتَوٰى
७- और वह ऊँचे किनारे (क्षितिज) पर थे;	وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى
८- फिर वह (फ़रिश्ता) क़रीब हुआ और आगे बढ़ा,	ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى
९- अब दो कमानों के बराबर या उससे भी ज़्यादा क़रीब हो गया।	فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى
१०- तब 'उसने' अपने बन्दे की ओर वह़्य (प्रकाशना) की, जो कुछ भी वह़्य की,	فَاَوْحٰى اِلٰى عَبْدِهٖ مَا اَوْحٰى
११- उनके दिल ने देखी हुई चीज़ में कोई ग़लती नहीं की।	مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى
१२- क्या तुम उस चीज़ पर उससे झगड़ते हो जिसको वह अपनी आँखों से देखता है?-	اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى
१३- और उसने एक बार और भी इसको नाज़िल होते देखा है,	وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى
१४- 'सिदरतुल मुन्तहा' (सातवें आसमान) के पास;	عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى

१५- जिसके पास 'जन्नतुलमावा' (ठिकाने वाली जन्नत) है-	عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوٰى
१६-जबकि छा रहा था उस सिद्रा पर, (अर्थात बेरी पर नूर) जो छा रहा था;	إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى
१७- निगाह न बहकी और न हद से आगे बढ़ी।	مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى
१८- उन्होंने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियां देखीं।	لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى
१९- क्या तुम लोगों ने 'लात' और 'उज़्ज़ा' को देखा?-	أَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى
२०- और वह जो तीसरी (देवी) मनाते हैं?	وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْأُخْرٰى
२१- क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और 'उसके' लिए बेटियां?-	أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنْثٰى
२२- अगर ऐसा है तो यह बड़ी बेइन्साफ़ी है।	تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى
२३- वे तो बस कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए, अल्लाह ने उनके लिए कोई प्रमाण नहीं उतारा, ये लोग तो केवल गुमान के पीछे चल रहे हैं और उसके पीछे जो उनके मन की इच्छा होती है; हालाँकि उनके पास उनके 'रब' की ओर से हिदायत आ चुकी है।	إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَاٰبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ رَبِّهِمُ الْهُدٰى
२४- क्या इन्सान वह कुछ पा लेगा जिसकी वह तमन्ना करता है?	أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى
२५- और आख़िरत और दुनिया का मालिक तो अल्लाह ही है।	فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْأُولٰى
२६- और आसमानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी काम नहीं आएगी, मगर उसके बाद कि अल्लाह इजाज़त दे, जिसे चाहे और पसंद करे।	وَكَمْ مِنْ مَلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضٰى
२७- जो लोग आख़िरत को नहीं मानते वे फ़रिश्तों को देवियों के नाम की मिसाल (संज्ञा) देते हैं,	إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّونَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنْثٰى
२८- और उन्हें इसका कोई इल्म भी नहीं, वे केवल गुमान (अटकल) के पीछे चल रहे हैं, और गुमान हक़ के बारे में ज़रा भी फ़ायदा नहीं देता।	وَمَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا
२९- तो आप उसकी ओर से ध्यान हटा लीजिए, जिसने 'हमारी' नसीहत से मुँह फेरा और दुनिया की ज़िन्दगी के सिवा कुछ नहीं चाहा।	فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلّٰى عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ۝

३०- ऐसे लोगों के इल्म की सीमा यहीं तक है, आपका 'रब' उसे खूब जानता है जो 'उसकी' राह से भटका और 'वह' उसे भी खूब जानता है जिसने सीधी राह अपनायी।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنٰى ۝

३१- और अल्लाह ही का है, जो कुछ आसमानों में है; और जो कुछ ज़मीन में है, ताकि जिन लोगों ने बुराई की 'वह' उन्हें उनके किये का बदला दे, और जिन लोगों ने अच्छे काम किये उन्हें अच्छा बदला दे।

الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبٰٓئِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهٰتِكُمْ ۖ فَلَا تُزَكُّوا أَنْفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۝

३२- जो छोटे गुनाहों के सिवा बड़े-बड़े गुनाहों और खुली बेहयाई से बचते हैं- बेशक तुम्हारे 'रब' के माफ़ी का दामन बहुत फैला हुआ है; 'वह' तुम्हें खूब जानता है, जबकि 'उसने' तुम्हें धरती से पैदा किया और जबकि तुम अपनी माओं के पेटों में भ्रूण अवस्था में (बच्चे) थे, तो अपने मन की पाकी और निखार का दावा न करो, 'वह' खूब जानता है कि कौन मुत्तक़ी (परहेज़गार) है?

أَفَرَءَيْتَ الَّذِي تَوَلّٰى ۝

३३- क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जिसने मुँह फेरा,

وَأَعْطٰى قَلِيلًا وَأَكْدٰى ۝

३४- और थोड़ा देकर (फिर हाथ) रोक लिया;

أَعِنْدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ۝

३५- क्या उसके पास ग़ैब (परोक्ष) का इल्म है कि वह उसे देख रहा है?

أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسٰى ۝

३६- क्या उसे उन बातों की ख़बर नहीं पहुँची जो मूसा के सही़फों (किताबों) में है?

وَإِبْرٰهِيمَ الَّذِي وَفّٰى ۝

३७- और इब्राहीम की, जिन्होंने अपना कहना पूरा कर दिखाया,

أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرٰى ۝

३८- यह कि 'कोई व्यक्ति दूसरे (के गुनाह) का बोझ न उठाएगा;'

وَأَنْ لَيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعٰى ۝

३९- और यह कि इन्सान को वही मिलता है जिसके लिए उसने कोशिश की;

وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرٰى ۝

४०- और यह कि उसकी कोशिश (बहुत जल्द) देखी जाएगी,

ثُمَّ يُجْزٰهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفٰى ۝

४१- फिर उसको पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा;

وَأَنَّ إِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ۝

४२- और यह कि अन्त में पहुँचना तुम्हारे रब ही के पास है;

وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكٰى ۝

४३- और यह कि 'वह' हँसाता और रूलाता है;

४४- और 'वही' मारता और ज़िन्दा करता है।	وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ۙ
४५- और 'वही' है जिसने मर्द और औ़रत का जोड़ा पैदा किया,	وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۙ
४६- एक नुत्फ़े (वीर्य) से, जब वह (रह़म में) टपकाई जाती है;	مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ۪
४७- और यह कि दूसरी बार भी पैदा करना 'उसी' के ज़िम्मे है;	وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ۙ
४८- और यह कि 'वही' धनी और पूंजीपति बनाता है;	وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ۙ
४९- और यह कि 'वही' शेअ़रा (नामक तारे) का 'रब' है।	وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ۙ
५०- और यह कि 'उसी' ने अगले आ़द को तबाह किया;	وَاَنَّهٗۤ اَهْلَكَ عَادَا ۨالْاُوْلٰى ۙ
५१- और समूद को भी, कि किसी को बाक़ी न छोड़ा,	وَثَمُوْدَاۡ فَمَاۤ اَبْقٰى ۙ
५२- और इनसे पहले नूह़ की क़ौम को भी, निश्चय ही वे बड़े ज़ालिम और सरकश थे।	وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ۙ
५३- और 'उसी ने' उल्टी हुई बस्तियों को भी गिरा दिया,	وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ۙ
५४- फिर उन पर (पथराव का मेह) जो छाया सो छाया;	فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ۚ
५५- तो अपने रब की किन-किन निशानियों पर झगड़ेगा?	فَبِاَىِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى
५६- यह ख़बरदार करने वाले हैं उन ख़बरदार करने वालों में से जो पहले आ चुके हैं।	هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى
५७- क़रीब आने वाली (क़ियामत) क़रीब आ गई,	اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ۚ
५८- अल्लाह के सिवा कोई नहीं जो उसे (कष्ट को) दूर कर दे?	لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ؕ
५९- क्या इस बात पर तुम आश्चर्य करते हो?	اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ۙ
६०- और हँसते हो और रोते नहीं;	وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ۙ
६१- और तुम ग़फ़लत में पड़े हो।	وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ
६२- तो अल्लाह के लिए सज्दः करो और ('उसी' की) इबादत करो।	सज्दः فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ۩



अनुवाद-सूरतुल्क़मरि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के १४८२ अक्षर, ३४८ शब्द, ५५ आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- वह घड़ी (क़ियामत) क़रीब आ गई और चांद फट गया;	اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۝
२- और अगर (काफ़िर) कोई निशानी देखते हैं तो टाल जाते हैं, और कहते हैं, ''यह तो जादू है पहले से चला आ रहा है।''	وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرِضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُسْتَمِرٌّ ۝
३- और उन्होंने झुठलाया और अपनी इच्छाओं के पीछे चले, और हर मामले के लिए एक निश्चित समय है।	وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُسْتَقِرٌّ ۝
४- और उनके पास उन (ऐतिहासिक घटनाओं) की ख़बरें पहुँच चुकी हैं जो झिंझोड़ने के लिए काफ़ी है।	وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ۝
५- इसमें पूरी ह़िकमत भी है, मगर डराना उनके कुछ काम नहीं आता!-	حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ۝
६- तो उनसे रूख फेर लीजिए-जिस दिन पुकारने वाला उन्हें ऐसी चीज़ की ओर बुलाएगा जिसको यह पहचानेंगे भी नहीं;	فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُكُرٍ ۝
७- नीची आँखें किये हुए क़ब्रों से निकल पड़ेंगे, जैसे बिखरी हुई टिड्डियां हैं;	خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُنْتَشِرٌ ۝
८- उस पुकारने वाले की ओर दौड़ रहे होंगे, और काफ़िर कहेंगे, ''यह बड़ा सख़्त दिन है!''	مُهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝
९- इनसे पहले नूह़ की क़ौम ने भी झुठलाया था, उन्होंने 'हमारे' बन्दे को झूठा ठहराया और कहा, ''यह तो दीवाना है, और उन्हें बुरी तरह झिड़का भी।''	كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ۝
१०- तो उन्होंने अपने 'रब' को पुकारा कि ''मैं कमज़ोर हो गया हूं, 'तू' ही बदला ले।''	فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ ۝

११- तब 'हमने' मूसलाधार पानी के दहाने आसमान से खोल दिये;	فَفَتَحْنَآ أَبْوَابَ ٱلسَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ
१२- और ज़मीन से (पानी के) स्रोत बहा दिये, तो पानी उस काम के लिए मिल गया जो मुक़द्दर हो चुका था।	وَفَجَّرْنَا ٱلْأَرْضَ عُيُونًا فَٱلْتَقَى ٱلْمَآءُ عَلَىٰٓ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ
१३- और 'हमने' उसे एक तख़्तों और कीलों वाली (नौका) पर सवार किया;	وَحَمَلْنَٰهُ عَلَىٰ ذَاتِ أَلْوَٰحٍ وَدُسُرٍ
१४- वह 'हमारी' निगाहों के सामने चल रही थी- यह बदला था उस व्यक्ति के लिए जिसकी क़द्र नहीं की गई।	تَجْرِى بِأَعْيُنِنَا جَزَآءً لِّمَن كَانَ كُفِرَ
१५- और 'हमने' उस (नौका) को एक निशानी बनाकर छोड़ दिया; तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला?	وَلَقَد تَّرَكْنَٰهَآ ءَايَةً فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ
१६- तो कैसा रहा 'मेरा' अज़ाब और कैसा रहा 'मेरा' डराना?	فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِى وَنُذُرِ
१७- और 'हमने' क़ुर्आन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया, तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला?	وَلَقَدْ يَسَّرْنَا ٱلْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ
१८- आद ने भी झुठलाया था, फिर कैसा रहा मेरा अज़ाब और 'मेरा' डराना?	كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِى وَنُذُرِ
१९- 'हमने' एक मन्हूस दिन जिसकी मन्हूसियत टलने वाली न थी, उन पर आँधी भेज दी,	إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِى يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ
२०- वह लोगों को उखाड़ कर इस तरह फेंक रही थी कि जैसे उखड़े ख़जूर के तने हों।	تَنزِعُ ٱلنَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنقَعِرٍ
२१- तो देखो! कैसा रहा 'मेरा' अज़ाब और (कैसा रहा) 'मेरा' डराना?	فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِى وَنُذُرِ
२२- और 'हमने' क़ुर्आन को नसीहत लेने के लिए आसान बना दिया, तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला।	وَلَقَدْ يَسَّرْنَا ٱلْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ
२३- समूद ने भी चेतावनी करने वालों को झुठलाया;	كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِٱلنُّذُرِ
२४- फिर कहने लगे, "एक अकेला आदमी, जो हम ही में से है, क्या हम उसके पीछे चलेंगे? तब तो हम गुमराह और पागलों में होंगे;	فَقَالُوٓا۟ أَبَشَرًا مِّنَّا وَٰحِدًا نَّتَّبِعُهُۥٓ إِنَّآ إِذًا لَّفِى ضَلَٰلٍ وَسُعُرٍ
२५- क्या हममें से इसी पर नसीहत उतरी है? (नहीं) बल्कि यह झूठा और घमंडी है;"	أَءُلْقِىَ ٱلذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ

سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ

२६- ''तो अब कल को मालूम हो जाएगा कि कौन झूठा और घमंडी है?

إِنَّا مُرْسِلُو النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ

२७- 'हम' ऊँटनी उनके लिए आज़माइश बनाकर भेजने वाले हैं, तो उनको देखते रहो और सब्र करो;

وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ ۖ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ

२८- और उनको बता दो कि पानी उनके बीच बांट दिया गया है, हर एक को अपनी बारी के दिन पानी पर आना है।''

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ

२९- मगर उन्होंने अपने साथी को बुलाया, और उसने आगे बढ़कर उसकी कूँचे काट दीं।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ

३०- तो देखो! कैसा रहा 'मेरा' अ़ज़ाब और (कैसा रहा) 'मेरा' डराना?

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ

३१- 'हमने' उन पर एक हौलनाक आवाज़ भेजी, तो वह बाड़ लगाने वाले की रौंदी हुई बाड़ की तरह चूरा होकर रह गये।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ

३२- और 'हमने' क़ुर्आन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान बनाया, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ

३३- लूत की क़ौम ने भी चेतावनियों को झुठलाया था;

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ ۖ نَّجَّيْنَاهُم بِسَحَرٍ

३४- तो 'हमने' उन पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेज दी, सिवाय लूत के घर वालों के; 'हमने' उनको प्रातः काल के समय बचा लिया;

نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي مَن شَكَرَ

३५- अपनी ख़ास नेअ़मत (कृपा) से, इस तरह 'हम' बदला देते हैं, जो शुक्र करते हैं।

وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ

३६- और उन्होंने 'हमारी' पकड़ से ख़बरदार कर दिया था, मगर वे चेतावनियों के बारे में संदेह में पड़े रहे।

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ

३७- और उनसे उनके मेहमानों को ले लेना चाहा, तो 'हमने' उनकी आँखें अन्धी कर दीं, ''लो चखो, मेरे अ़ज़ाब और मेरी चेतावनियों का मज़ा!''

وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ

३८- और सुबह-सवेरे ही एक अटल अ़ज़ाब उन पर आ पहुँचा।

فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ

३९- ''तो चखो, मेरे अ़ज़ाब और मेरी चेतावनियों का मज़ा!''

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن

४०- और 'हमने' क़ुर्आन को नसीहत हासिल करने के लिए

आसान बनाया, तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला?	مُّدَّكِرٍ ۝
४१- और (अगले) फ़िरऔन के पास भी चेतावनी सुनाने वाले आए थे;	وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝
४२- लेकिन उन लोगों ने 'हमारी' सारी निशानियों को झुठलाया, तो 'हमने' उनको पकड़ा जिस तरह एक ज़बर्दस्त; शक्ति- शाली पकड़ता है?-	كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝
४३- क्या तुम्हारे काफ़िर उन लोगों से अच्छे हैं या किताबों में तुम्हारे लिए कोई छुट्कारा लिखा हुआ है?	اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِى الزُّبُرِ ۝
४४- क्या यह लोग कहते हैं, हमारा गिरोह बड़ा मज़बूत है?''	اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ۝
४५- जल्द ही यह जत्था हारे गा और ये लोग पीठ फेर कर भागेंगे।	سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ۝
४६- बल्कि इनसे अस्ल वादा (तो क़ियामत का) है और (क़ियामत की) घड़ी बड़ी सख़्त और कड़वी होगी।	بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ۝
४७- बेशक मुजरिम लोग गुमराही और अक़्ल की ख़राबी में (पड़े हुए) हैं,	اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِىْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ۝
४८- उस दिन यह अपने मुँह के बल आग में घसीटे जाएँगे, ''अब चखो मज़ा आग (की लपट) का!''	يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِى النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ؕ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ۝
४९- 'हमने' हर चीज़ को अन्दाज़े (योजना) के साथ पैदा की है।	اِنَّا كُلَّ شَىْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ۝
५०- और 'हमारा' हुक्म तो बस एक बार में पलक झपकने की तरह लागू हो जाएगा।	وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ۝
५१- और 'हम' तुम्हारे जैसे लोगों को तबाह कर चुके हैं, फिर है कोई नसीहत हासिल करने वाला?	وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝
५२- और जो कुछ उन्होंने किया है, वह पन्नों में दर्ज हैं,	وَكُلُّ شَىْءٍ فَعَلُوْهُ فِى الزُّبُرِ ۝
५३- और हर छोटी और बड़ी बात लिख ली गयी है।	وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ۝
५४- परहेज़गार बाग़ों और नहरों में होंगे।	اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ۝
५५- सच्ची जगह में, एक बड़ी कुदरत वाले मालिक के पास।	فِىْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝



अनुवाद-सूरतुर्रह़मानि

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के १६८३ अक्षर, ३५१ शब्द, ७८ आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- रह़मान (जो बहुत मेहरबान),	اَلرَّحْمٰنُ ۙ
२- उसी ने क़ुर्आन सिखाया,	عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۙ
३- उसी ने इन्सान को पैदा किया,	خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ
४- उसी ने 'उसको' बोलना सिखाया,	عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝
५- सूरज और चांद एक हिसाब के पाबन्द हैं;	اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۙ
६- और सितारे और वृक्ष सज्दः करते हैं,।	وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ ۝
७- और 'उसी ने' आसमान को ऊँचा किया और मीज़ान (सन्तुलन या तराजू) रख दिया,	وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۙ
८- ताकि तुम तौलने में कमी ज़्यादती न करो;	اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ ۝
९- और इन्साफ़ के साथ वज़न को ठीक रखो और तौल में कमी न करो।	وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝
१०- और 'उसी' ने ज़मीन को ख़ल्क़त (सृष्टि) के लिए बिछाई,	وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۙ
११- कि उसमें स्वादिष्ट फल हैं और खजूर के पेड़ हैं जिन पर ग़िलाफ़ होता है;	فِيْهَا فَاكِهَةٌ ۙ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۖ
१२- और अनाज है जिसमें भूसा होता है और खुशबूदार फूल होता है।	وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۚ
१३- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
१४- 'उसने' इन्सान को ऐसी मिट्टी से जो ठीकरे की तरह बजती थी पैदा किया;	خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۙ

१५- और जिन्नों को 'उसने' आग के शोले से पैदा किया।	وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۝
१६- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
१७- 'वही' दोनों पूरबों और दोनों पश्चिमों का 'रब' (है)।	رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝
१८- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
१९- 'उसने' दो समुद्रों को मिलाया, कि आपस में मिले हुए हैं;	مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ۝
२०- उनके बीच एक पर्दा है कि दोनों आगे बढ़ नहीं सकते।	بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ۝
२१- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
२२- इन दोनों (समुद्रों) से मोती और मूँगे निकलते हैं।	يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۝
२३- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
२४- और 'उसीके' बस में हैं समुद्र में पहाड़ों की तरह ऊँचे खड़े हुए जहाज़।	وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۝
२५- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
२६- ज़मीन पर जो भी है,फ़ना (नाशवान) होना है,	كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝
२७- और तुम्हारे 'रब' की हस्ती बाक़ी रहने वाली है, (जो कि) अज़मत और इकराम (प्रतापवान, गरिमा) वाली है।	وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۝
२८- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
२९- आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब 'उसी' से माँगते हैं, हर दिन वह एक नई शान में है (अर्थात हर समय किसी न किसी काम में रहता है)।	يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِىْ شَاْنٍ ۝
३०- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝

३१- ऐ दो भारी गिरोह! हम बहुत जल्द तुम्हारे लिए खाली हुए जाते हैं (अर्थात जल्द ध्यान देने वाले हैं)।	سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ
३२- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
३३- ऐ जिन्न व इन्सान के गिरोह! अगर तुम आसमानों और ज़मीन की सरहदों (सीमाओं) से निकल सकते हो, तो निकल जाओ; (मगर) तुम हरगिज़ नहीं निकल सकते बिना शक्ति के।	يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ
३४- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
३५- तुम दोनों पर आग के शोले (अग्नि ज्वाला) और धुएं वाला अंगारा छोड़ दिया जाएगा, तो तुम अपना बचाओ न कर सकोगे।	يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ
३६- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
३७- तो जब आसमान फट जाएगा और चमड़े की तरह़ लाल हो जाएगा।	فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ
३८- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
३९- तो उस दिन न किसी इन्सान से उसके गुनाह के बारे में पूछा जाएगा और न किसी जिन्न से।	فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ
४०- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
४१- मुजरिम अपने चेहरों से पहचान लिए जाएँगे और उन्हें माथे के बल और पैर पकड़ कर घसीटा जाएगा।	يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ
४२- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
४३- यह वही जहन्नम है जिसे मुजरिम लोग झूठ ठहराते रहे।	هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ

४४- वे उसके और खौलते हुए पानी के बीच चक्कर लगा रहे होंगे।

يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ

४५- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

४६- और जो व्यक्ति अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा, उसके लिए दो बाग़ हैं।

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ

४७- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

४८- दोनों बहुत घनी डालियों वाले होंगे;

ذَوَاتَا أَفْنَانٍ

४९- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

५०- इन में दो स्रोत जारी होंगे।

فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ

५१- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

५२- उनमें हर मेवे की दो क़िस्में होंगी।

فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ

५३- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

५४- ऐसे बिछौनों पर तकिया लागाए बैठे होंगे जिनके स्तर गाढ़े रेशम के होंगे, और दोनों बाग़ों में फल क़रीब (झुके हुए) होंगे।

مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ فُرُشٍ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ

५५- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

५६- इनमें निगाह बचाए रखने वाली औ़रतें (हूरें) होंगी, जिनको उनसे पहले न किसी इन्सान ने और न किसी जिन्न ने छुआ होगा।

فِيهِنَّ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ

५७- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

५८- जैसे वे लाल (याकूत) और मरजान (मूँगा) हैं।	كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ۝
५६- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
६०- भलाई का बदला भलाई के सिवा और क्या हो सकता है?	هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ۝
६१- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
६२- और इन दोनों के अ़लावा दो बाग़ और भी हैं।	وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَانِ ۝
६३- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
६४- दोनों खूब गहरे हरे;	مُدْهَامَّتَانِ ۝
६५- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
६६- इनमें दो स्रोत होंगे जोश मारते हुए।	فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتَانِ ۝
६७- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
६८- इनमें स्वादिष्ट फल और खजूर और अनार हैं;	فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ۝
६६- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
७०- इनमें भली और सुन्दर औ़रतें होंगी।	فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ۝
७१- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
७२- हूरें खेमों में रहने वाली।	حُورٌ مَقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ۝
७३- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۝	७४- उनको उनसे पहले न किसी इन्सान ने छुआ होगा और न किसी जिन्न ने।
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝	७५- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ۝	७६- वे हरे रेशमी गद्दों और नफ़ीस (असाधारण) कालीनों पर तकिया लगाए बैठे होंगे;
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝	७७- तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝	७८- बड़ा ही बरकत वाला नाम है आप के 'रब' का जो बड़ी रोअ़ब (प्रतापवान) और इ़ज़्ज़त वाला है।



अनुवाद सूरतुल्वाक़िअ़ति

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के १७६८ अक्षर, ३८४ शब्द, ९६ आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- जब घटित होने वाली (घड़ी) घटित हो जाएगी,	اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۙ
२- उसके घटित होने में कुछ भी झूठ नहीं,	لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۘ
३- किसी को पस्त करने वाली किसी को ऊँचा करने वाली;	خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۙ
४- जब धरती थरथरा कर काँप उठेगी,	اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ۙ
५- और पहाड़ टूट-टूट कर रेज़ा-रेज़ा हो जाएँगे;	وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۙ
६- तो वे बिखरे हुए धूल (के ज़र्रे के रूप में) हो कर रह जाएँगे;	فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ۙ
७- और तुम लोगों की तीन क़िस्में हो जाएँगी;	وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ۗ
८- तो दाहिने (हाथ) वाले, तो दाहिने वालों का क्या कहना (अर्थात भाग्यशाली लोग)!	فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۗ
९- और बाएँ (हाथ) वाले तो बाएँ वाले, क्या (बुरे लोग) हैं! (अर्थात दुर्भाग्यशाली)।	وَاَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۗ
१०- और जो आगे बढ़ जाने वाले तो आगे बढ़ जाने वाले ही हैं;	وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۙ
११- वही (अल्लाह के) क़रीबी हैं,	اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۚ
१२- नेअ़मत की जन्नतों में;	فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ
१३- वे बहुत से अगले लोगों में से होंगे,	ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ
१४- और पिछलों में से कम ही होंगे-	وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۗ
१५- जड़ाऊ तख़्तों के ऊपर,	عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۙ

१६- तकिया लगाए आमने-सामने होंगे,	مُتَّكِـِٔينَ عَلَيْهَا مُتَقَٰبِلِينَ
१७- उनके पास लड़के जो हमेशा नौजवान रहेंगे, उनके आस-पास फिरेंगे।	يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَٰنٌ مُّخَلَّدُونَ
१८- उनके पास आबख़ोरे (जग) और शुद्ध पीने (की चीज़) से भरे प्याले लिए फिर रहे होंगे-	بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ
१६- इससे न तो उनके सर में दर्द होगा और न उनकी बुद्धि में ख़राबी आएगी;	لَّا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنزِفُونَ
२०- और स्वादिष्ट फल जो उनको अच्छे लगेंगे,	وَفَٰكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ
२१- और परिन्दों का गोश्त जो वे चाहें;	وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ
२२- और बड़ी आंखों वाली हूरें;	وَحُورٌ عِينٌ
२३- जैसे छिपाए हुए मोती हों-	كَأَمْثَٰلِ ٱللُّؤْلُؤِ ٱلْمَكْنُونِ
२४- यह सब उसके बदले में उन्हें मिलेगा, जो कुछ वे करते रहे;	جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ
२५- उसमें न कोई बकवास बात सुनेंगे और न गुनाह की बात,	لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا
२६- सिवाय 'सलाम-सलाम' की पुकार के;	إِلَّا قِيلًا سَلَٰمًا سَلَٰمًا
२७- और दाहिनी ओर वाले, तो इन दाहिनी ओर वालों का क्या कहना?- (अर्थात सौभाग्य लोग)	وَأَصْحَٰبُ ٱلْيَمِينِ مَآ أَصْحَٰبُ ٱلْيَمِينِ
२८- वे (वहां होंगे जहां) बिना काँटो के बेर,	فِى سِدْرٍ مَّخْضُودٍ
२६- और गुच्छेदार केले;	وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ
३०- और दूर तक फैले हुए साए (छाँव),	وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ
३१- और बहता हुआ पानी,	وَمَآءٍ مَّسْكُوبٍ
३२- और ज़्यादा से ज़्यादा फल (के बाग़ों) में,	وَفَٰكِهَةٍ كَثِيرَةٍ
३३- (जो) न कभी टूटने (ख़त्म होने) वाला होगा, और न उस पर कोई रोक टोक होगी।	لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ
३४- और ऊँचे बिछौने होंगे;	وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ
३५- बेशक, 'हमने' इन (हूरों) की एक खास सृष्टि बनाई;	إِنَّآ أَنشَأْنَٰهُنَّ إِنشَآءً

३६- तो ‘हमने’ उन्हें कुंवारियाँ बनाया,
فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۝

३७- प्यारी और समान अवस्था (हम उम्र) वाली,
عُرُبًا اَتْرَابًا ۝

३८- दाहिने ओर वालों (अर्थात भाग्यशाली लोगों) के लिए,
لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۝

३६- (यह) अगले लोगों में से भी बहुत से होंगे,
ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝

४०- और पिछलों में से भी बहुत से।
وَ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝

४१- और बाईं ओर वाले, क्या ही बुरे बाईं ओर वाले होंगे?-
وَ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۝

४२- गर्म हवा और खौलते हुए पानी में होंगे,
فِيْ سَمُوْمٍ وَّ حَمِيْمٍ ۝

४३- और काले धुएँ के साए में होंगे,
وَّ ظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ۝

४४- (जो) न ठंडा होगा और न फ़ायदेमन्द,
لَّا بَارِدٍ وَّ لَا كَرِيْمٍ ۝

४५- यह लोग इससे पहले खुशहाल थे,
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ۝

४६- और बड़े गुनाह पर अड़े रहते थे,
وَ كَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ۝

४७- और कहते थे, ‘‘क्या जब हम मर जाएँगे, और मिट्टी, और हड्डियां हो कर रह जाएँगे, तो क्या हम वास्तव में उठाए जाएँगे?-
وَ كَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝

४८- और क्या हमारे पहले बाप-दादा को भी?’’
اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۝

४६- कह दीजिए, ‘‘बेशक अगले और पिछले भी;
قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْاٰخِرِيْنَ ۝

५०- (सब) एक निश्चित दिन के समय पर जमा किये जाएँगे;
لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝

५१- फिर ऐ पथभ्रष्टो, और झुठलाने वालो!
ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۝

५२- तुम जक्कूम (थूहर नामक) वृक्ष से खाओगे,
لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۝

५३- इसी से पेट भरोगे,
فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۝

५४- तो इस पर खौलता हुआ पानी पियोगे,
فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ۝

५५- पियोगे भी तो प्यासे ऊँट की तरह;’’
فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ۝

५६- यह बदला दिये जाने के दिन उनकी पहली मेहमानी होगी!
هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۝

५७- ‘हमने’ तुमको पैदा किया, तो तुम सच क्यों नहीं मानते?
نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ۝

५८- तो क्या तुमने विचार किया जो चीज़ (नुत्फ़े) तुम टपकाते हो?-
اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ۝

५९- क्या तुम इसे आकार (पैदा कर) देते हो या 'हम' हैं आकार देने वाले?-	ءَاَنۡتُمۡ تَخۡلُقُوۡنَهٗۤ اَمۡ نَحۡنُ الۡخٰلِقُوۡنَ
६०- 'हमने' तुम्हारे बीच मौत मुक़र्रर की है और 'हम' आ़जिज़ (असमर्थ्य) नहीं हैं,	نَحۡنُ قَدَّرۡنَا بَيۡنَكُمُ الۡمَوۡتَ وَمَا نَحۡنُ بِمَسۡبُوۡقِيۡنَۙ
६१- कि तुम्हारी तरह के और लोग तुम्हारी जगह ले आएँ और तुम्हें ऐसी ह़ालत में उठा खड़ा करें, जिसे तुम जानते भी नहीं;	عَلٰٓى اَنۡ نُّبَدِّلَ اَمۡثَالَكُمۡ وَنُنۡشِئَكُمۡ فِىۡ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ
६२- और तुम तो पहली पैदाइश को जानते हो, तो फिर तुम ध्यान क्यों नहीं देते?	وَلَقَدۡ عَلِمۡتُمُ النَّشۡاَةَ الۡاُوۡلٰى فَلَوۡلَا تَذَكَّرُوۡنَ
६३- क्या तुमने देखा! जो कुछ तुम खेती करते हो?-	اَفَرَءَيۡتُمۡ مَّا تَحۡرُثُوۡنَؕ
६४- तो क्या तुम उसे उगाते हो या 'हम' उसे उगाते हैं?	ءَاَنۡتُمۡ تَزۡرَعُوۡنَهٗۤ اَمۡ نَحۡنُ الزّٰرِعُوۡنَ
६५- अगर 'हम' चाहें तो उसे चूर-चूर कर दें, और तुम बातें बनाते रह जाओ,	لَوۡ نَشَآءُ لَجَعَلۡنٰهُ حُطٰمًا فَظَلۡتُمۡ تَفَكَّهُوۡنَ
६६- कि ''हम तो तावान में पड़ गये,	اِنَّا لَمُغۡرَمُوۡنَۙ
६७- बल्कि हम हैं ही मह़रूम (वंचित)।''	بَلۡ نَحۡنُ مَحۡرُوۡمُوۡنَ
६८- क्या तुमने उस पानी को देखा! जिसे तुम पीते हो?-	اَفَرَءَيۡتُمُ الۡمَآءَ الَّذِىۡ تَشۡرَبُوۡنَؕ
६९- क्या तुमने उसको बादल से उतारा है, या उतारने वाले हम हैं?-	ءَاَنۡتُمۡ اَنۡزَلۡتُمُوۡهُ مِنَ الۡمُزۡنِ اَمۡ نَحۡنُ الۡمُنۡزِلُوۡنَ
७०- अगर 'हम' चाहें तो खारा कर दें, फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते?!	لَوۡ نَشَآءُ جَعَلۡنٰهُ اُجَاجًا فَلَوۡلَا تَشۡكُرُوۡنَ
७१- क्या तुमने उस आग को देखा जिसे तुम सुलगाते हो?	اَفَرَءَيۡتُمُ النَّارَ الَّتِىۡ تُوۡرُوۡنَؕ
७२- क्या तुमने उस वृक्ष को पैदा किया है, या उसके पैदा करने वाले 'हम' हैं?-	ءَاَنۡتُمۡ اَنۡشَاۡتُمۡ شَجَرَتَهَاۤ اَمۡ نَحۡنُ الۡمُنۡشِـُٔوۡنَ
७३- 'हमने' ही तो इसको याद दिलाने और मुसाफ़िरों के फ़ायदे के लिए बनाया है;	نَحۡنُ جَعَلۡنٰهَا تَذۡكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلۡمُقۡوِيۡنَۚ
७४- तो आप अपने महान 'रब' के नाम की तस्बीह़ (गुणगान) कीजिए।	فَسَبِّحۡ بِاسۡمِ رَبِّكَ الۡعَظِيۡمِ

७५- तो नहीं, 'मै' क़सम खाता हूँ सितारों के डूबने की जगहों की,

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ

७६- और यह बहुत बड़ी क़सम है, अगर तुम जानो;

وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ

७७- कि यह इज़्ज़त वाला क़ुर्आन है,

اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ

७८- एक सुरक्षित किताब में दर्ज (अंकित) है,

فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ

७९- इसको नहीं छूते मगर पाक-साफ़ लोग,

لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ

८०- यह सारे संसार के 'रब' की ओर से उतारा गया है;

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ

८१- तो क्या तुम इससे सुस्ती करते हो?-

اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ

८२- और अपना हिस्सा यही रखते हो कि (इसे) झुठलाते हो।

وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ

८३- भला जब जान हलक़ तक पहुंचती है?-

فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ

८४- और तुम उस समय देख रहे होते हो,

وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ

८५- और 'हम' तुमसे ज़्यादा उससे क़रीब होते हैं, लेकिन तुम देख नहीं पाते हो;

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ

८६- तो अगर तुम किसी के अधीन नहीं हो (तो क्यों नहीं);

فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ

८७- उस जान को लौटा लेते, अगर तुम सच्चे हो।

تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ

८८- तो अगर वह (अल्लाह के) क़रीबियों में से हैं;

فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ

८९- तो उसके लिए राहत, ख़ुशबू और नेअ़मत के बाग़ हैं।

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ

९०- और अगर वह दाहिने (हाथ) वालों में से है;

وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ

९१- तो ''सलामती है तेरे लिए कि तू दाहिने (हाथ) वालों में से है।''

فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ

९२- और अगर वह झुठलाने वाले, गुमराह लोगों में से हुए;

وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ

९३- तो मेहमानी गर्म पानी से होगी,

فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ

९४- और उसका दाख़िला जहन्नम में होगा,

وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ

९५- यह हक़ बात यक़ीन के लायक़ है।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ

९६- आप अपने महान 'रब' के नाम की तस्बीह़ (गुणगान) करते रहिए।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ



अनुवाद-सूरतुल्ह़दीदि

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के २५६६ अक्षर, ५८६ शब्द, २६ आयतें और ४ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- अल्लाह की तस्बीह़ करती हैं सारी चीज़ें जो आसमानों, और ज़मीन में हैं, और 'वही' ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाला है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

२- आसमानों और ज़मीन की बादशाही 'उसी' की है, 'वही' ज़िन्दा करता है और मारता है, और 'वह' हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ ۚ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

३- 'वही' अव्वल (पहला) भी है और आख़िर भी, ज़ाहिर भी और पोशीदा भी, और 'वह' हर चीज़ का इल्म रखने वाला है।

هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

४- 'वही' है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया, फिर अर्श (सिंहासन) पर जा ठहरा (विराजमान हुआ), 'वह' जानता है जो चीज़ भी ज़मीन में दाख़िल होती है और उससे निकलती है, और जो कुछ आसमान से उतरती है, और जो कुछ उसमें चढ़ती है; 'वह' तुम्हारे साथ है, जहां कहीं भी हो, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देखता है।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۚ وَ هُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

५- आसमानों और ज़मीन की बादशाही 'उसी' की है और सारे मामले 'उसी' की ओर लौटते हैं;

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝

६- ('वही') रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में, दाख़िल करता है और 'वह' सीनों में छिपी बात तक को जानता है।

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۚ وَ هُوَ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

७- ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और उसमें से खर्च करो जिसका 'उसने' तुम्हें नायब (अधिकारी) बनाया है; तो तुममें से जो लोग ईमान लाए और खर्च करते रहे, उनके लिए बड़ा बदला है।

اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ۚ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ اَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝

८- और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, ह़ालांकि रसूल तुम्हें अपने 'रब' पर ईमान लाने की दअ़वत दे रहे हैं और 'वह' तुमसे अ़हद (प्रतिज्ञा) ले चुके है, अगर तुम मोमिन हो।

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

९- 'वही' है जो अपने बन्दे पर स्पष्ट आयतें उतार रहा है, ताकि तुम्हें अन्धेरों से निकाल कर रोशनी की ओर ले आए, बेशक अल्लाह तुम पर बड़ा मेहरबान, रह़म करने वाला है।

هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖٓ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

१०- और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में खर्च न करो, हालांकि आसमानों और ज़मीन की विरासत अल्लाह ही के लिए है? तुम में से जिन लोगों ने (मक्का की) फ़त्ह़ (विजय) से पहले ख़र्च किया और लड़े वे (आपस में एक-दूसरे के) बराबर नहीं हैं, वे तो दर्जे में उनसे बढ़ कर हैं, जिन्होंने बाद में खर्च किया और बाद में लड़े; और अल्लाह ने हर एक से अच्छा वादा किया है, और तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ۚ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ۚ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝

११- कौन है, जो अल्लाह को क़र्ज़ दे? अच्छा क़र्ज़, कि 'वह' उसके लिए उसको दो गुना कर दे; और उसके लिए इज़्ज़त वाला बदला है।

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝

१२- उस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को देखोगे कि उनका नूर उनके आगे-आगे और उनके दाहिने ओर दौड़ रहा होगा; ''आज तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी है जन्नतों की जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उनमें हमेशा रहना है, यही बड़ी कामियाबी है।''

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

१३- उस दिन मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) मर्द और मुनाफिक़ औरतें ईमान वालों से कहेंगे, ''थोड़ा रूको, हमारा इन्तिजा़र करो, कि हम भी तुम्हारे नूर से कुछ फ़ायदा उठा लें!'' कहा जाएगा, ''अपने पीछे लौट जाओ, और रोशनी तलाश करो,'' इतने में उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी, जिसमें एक दरवाज़ा होगा, उसके अन्दर का ह़ाल यह होगा कि उसमें रह़मत होगी और उसके बाहर की ओर अ़ज़ाब होगा।

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۚ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ۚ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝

१४- वे उन्हें पुकार कर कहेंगे, ''क्या हम तुम्हरे साथ नहीं थे।'' वे कहेंगे, ''क्यों नहीं? मगर तुमने तो अपने आप को

يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۚ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ

फ़ित्ने में डाला, और इन्तिज़ार करते रहे, और शक में पड़े रहे, और झूठी तमन्नाओं ने तुम्हें धोखे में रखा, यहां तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया और उस धोखेबाज़ (शैतान) ने तुम्हें अल्लाह के मामले में धोखे में डाल रखा था,

الْأَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ أَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ

१५- तो आज न तुमसे कोई फ़िदिया (मुक्ति-प्रतिदान) क़ुबूल किया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने इन्कार किया, तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है, वही तुम्हारा दोस्त है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।"

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ مَأْوٰىكُمُ النَّارُ ۖ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ

१६- क्या उन लोगों के लिए जो ईमान लाए अभी वह समय नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के लिए, और 'उसके' उतारे हुए हक़ के आगे झुक जाएँ; और वे उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिनको (उनसे) पहले किताबें दी गयी थीं, फिर उन पर लम्बी मुद्दत गुज़र गयी, तो उनके दिल सख़्त हो गये और उनमें से अक्सर नाफ़रमान ही हैं।

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ۖ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ

१७- जान लो! कि अल्लाह ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है; 'हमने' अपनी निशानियां तुम्हारे लिए स्पष्ट कर दी हैं, ताकि तुम अ़क्ल से काम लो।

اِعْلَمُوْٓا أَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ

१८- सद्क़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औ़रतें, और वे जिन्होंने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया, उसको उन्हें दो गुना कर के दिया जाएगा, और उनके लिए इज़्ज़त वाला बदला है।

إِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَأَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيْمٌ

१९- और जो लोग अल्लाह और 'उसके' रसूल पर ईमान लाए, वही अपने रब के यहां सिद्दीक़ (सच्चे) और शहीद हैं, उनके लिए उनका बदला भी होगा और नूर भी; और जिन लोगों ने इन्कार किया, और 'हमारी' आयतों को झुठलाया, वही जहन्नम वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ أُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۖ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ

२०- जान लो! कि दुनिया की ज़िन्दगी बस खेल और तमाशा है, और ज़ीनत और तुम्हारा आपस में एक-दूसरे पर बड़ाई जताना, और माल और औलाद में एक- दूसरे से बढ़ जाने की चाह है; इसकी मिसाल बारिश की है जिससे खेती (वनस्पति) ने किसान का दिल मोह लिया, फिर वह लहलहाने लगती है,

اِعْلَمُوْٓا أَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ ۖ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ۖ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ

مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝

और तुम देखते हो कि वह पीली हो गयी है, फिर वह चूर-चूर हो जाती है, (अर्थात मड़ाई में); और आख़िरत में सख़्त अज़ाब भी है और अल्लाह से माफ़ी भी, और रज़ामन्दी भी; और दुनिया की ज़िन्दगी तो बस धोखे का सामान है।

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاۗءِ وَ الْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

२१- एक-दूसरे से आगे बढ़ो, अपने रब की माफ़ी और उस जन्नत की ओर जिसका फैलाव आसमान और ज़मीन के फैलाव जैसा है, वह उन लोगों के लिए तैयार की गयी है, जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसे चाहता है अ़ता करता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝

२२- कोई मुसीबत भी ज़मीन (मुल्क) पर नाज़िल नहीं होती और न तुम्हारे अपने ऊपर, मगर यह कि वह एक किताब में (लिखी हुई) है, इससे पहले कि 'हम' उसको पैदा करें, यह अल्लाह के लिए आसान है;

لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰي مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۝

२३- ताकि तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुमसे जाती रही, और उस चीज़ पर न इतराओ जो तुम ने उसको दिया हो, और अल्लाह इतराने वालों और बड़ाई जताने वालों को पसंद नहीं करता।

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝

२४- जो खुद भी कंजूसी करते हैं और लोगों को कंजूसी करने पर उभारते हैं, और जो व्यक्ति मुँह फेरेगा तो अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) और खूबियों वाला है।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝

२५- 'हमने' अपने रसूलों को स्पष्ट निशानियों के साथ भेजा, और उनके साथ किताब और मीज़ान (तराजू) उतारा, ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम हों; और लोहा भी उतारा, जिसमें बड़ी दहशत है, और लोगों के लिए बड़े फ़ायदे भी हैं, यह सब इसलिए किया गया है, ताकि अल्लाह जान ले कि कौन 'उसको' बिना देखे 'उसकी' और उसके रसूलों की मदद करता है, बेशक अल्लाह बड़ा ही शक्तिशाली, ज़बर्दस्त है।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَ

२६- और 'हमने' नूह़ और इब्राहीम को भेजा, और उन दोनों की नस्ल में नुबूवत और किताब को जारी रखा, तो उनमें से

كَثِيرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٦﴾

कुछ लोगों ने सीधी राह अपना ली, और बहुत से नाफ़रमान हो गये।

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰىٓ اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَ قَفَّيْنَا
بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَ اٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَ
جَعَلْنَا فِىْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ؕ
وَ رَهْبَانِيَّةَ ۨ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا
ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ
فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ
مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾

२७- फिर ‘हमने’ उनके नक़्शेक़दम (पदचिन्हों) पर और भी रसूल भेजे, और फिर मरयम के बेटे ईसा को भेजा और उनको इंजील दी, और जिन लोगों ने उनकी पैरवी की, उनके दिलों में ‘हमने’ ममता और दया डाल दी, और (लज़्जतों से) संन्यास (ले लिया), तो उन्होंने खुद एक नई बात निकाल ली ‘हमने’ उसे उनके लिए फर्ज़ (अनिवार्य) नहीं किया था, मगर अल्लाह को राज़ी करने की चाह में,(अपने आप ही ऐसा कर लिया था) फिर वे उसकी रिआ़यत न कर सके, जैसा कि रिआ़यत करने का ह़क़ था, तो उनमें से जो लोग ईमान लाए थे, उनका बदला ‘हमने’ उन्हें अ़ता किया, और उनमें से बहुत से नाफ़रमान ही हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ
يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا
تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٨﴾

२८- ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो, अल्लाह से डरो और ‘उसके’ रसूल पर ईमान लाओ, ‘वह’ तुम्हें अपनी रह़मत का दोहरा ह़िस्सा अ़ता करेगा और तुम्हारे लिए एक नूर देगा, जिसमें चलोगे और तुम्हें माफ़ कर देगा, और अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَىْءٍ
مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ
مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

२९- ताकि अह्ले किताब यह न समझें कि अल्लाह के फज़्ल में से वे किसी चीज़ पर अधिकार न हासिल कर सकेंगे, और यह कि फज़्ल तो अल्लाह ही के हाथ में है, जिसे चाहता है अ़ता करता है, और अल्लाह बड़ा फज़्ल वाला है।



अनुवाद-सूरतुल्मुजादलति

यह सूरः मदनी है, इस सूरः में अ़रबी के २१०३ अक्षर, ४७६ शब्द, २२ आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

पारा नं०-२८

* قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۚ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝

१- अल्लाह ने सुन ली, उस औ़रत की बात, जो तुमसे अपने पति के बारे में झगड़ती थी, और अल्लाह से शिकायत कर रही थी और अल्लाह तुम दोनों की बात सुन रहा था, निश्चय ही अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है।

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۗ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۗ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝

२- तुममें से जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार कर बैठते हैं (अर्थात माँ के समान कह देते हैं), उनकी माएं वे नहीं हैं, उनकी माएं तो वही हैं जिन्होंने उनको जन्म दिया, और बेशक वे एक बेहूदी और झूठी बात कहते हैं, और अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है।

وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۗ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝

३- और जो लोग अपने पत्नियों से ज़िहार (अर्थात माँ कह) कर बैठें, फिर जो बात उन्होंने कही थी उससे रूजूअ़ करें, तो इससे पहले कि दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएं, एक गर्दन (अर्थात गुलाम) आज़ाद करनी होगी, (यह वह बात है) जिसकी तुम को नसीह़त की जाती है, और तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है;

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۗ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۗ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۗ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

४- तो जिसको ग़ुलाम हासिल न हो, तो वह लगातार दो माह के रोज़े रखे, इससे पहले कि वे दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएं, फिर जिससे यह भी न हो सके तो साठ मोहताजों को खाना खिलाए, यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आओ, और यह अल्लाह की सीमाएं हैं, और इन्कार करने वालों के लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है।

५- जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं, वे ऐसे ज़लील होंगे, जैसे उनसे पहले लोग ज़लील हुए, और हमने स्पष्ट आयतें उतारीं, और इन्कार करने वालों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब होगा;

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُبِتُوا كَمَا كُبِتَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝

६- जिस दिन उन सब को अल्लाह दोबारा ज़िन्दा करेगा, फिर उनका सब किया हुआ उनको बतला देगा, अल्लाह ने उसको सुरक्षित कर रखा है, और यह लोग उसको भूल गये हैं, और अल्लाह तो हर चीज़ पर गवाह है।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

७- क्या आप ने नहीं देखा! कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, कभी ऐसा नहीं होता, कि तीन आदमियों की छिपी बात हो, और उनके बीच चौथा 'वह' (अल्लाह) न हो, और न पांच (आदमियों) की होती है जिसमें छटा 'वह' न होता हो, और न उससे कम की कोई होती है और न उससे ज़्यादा की, मगर 'वह' उनके साथ होता है जहां कहीं भी हों, फिर जो कुछ भी उन्होंने किया होगा क़ियामत के दिन 'वह' उन्हें बता देगा, बेशक अल्लाह को हर चीज़ का इल्म है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَا يَكُونُ مِن نَّجْوَىٰ ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ مِن ذَٰلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

८- क्या तुमने उन्हें नहीं देखा!! जिन्हें काना फूसी से रोका गया था, फिर वे वही करते रहे जिससे उन्हें रोका गया था, और यह तों गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की कानाफूसी करते हैं, और जब तुम्हारे पास आते हैं तो ऐसे दुआ़ देते हैं जैसे अल्लाह ने आप को दुआ़ नहीं दी, और अपने जी में कहते हैं जो कुछ हम कहते हैं उस पर अल्लाह हमें अ़ज़ाब क्यों नहीं देता? उनके लिए जहन्नम ही काफ़ी है, उसी में ये दाख़िल होंगे, वह तो बुरा ठिकाना है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ النَّجْوَىٰ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَاجَوْنَ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فِي أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

९- ऐ ईमान वालो! जब तुम आपस में कानाफूसी करो तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की बातें न करो, बल्कि भलाई और परहेज़गारी की बातें करो, और अल्लाह से डरो 'जिसके' सामने तुम सब इकट्ठा किये जाओगे,

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝

१०- यह कानाफूसियां शैतान की ओर से हैं ताकि ईमान वाले

إِنَّمَا النَّجْوَىٰ مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا

وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا إِلَّا بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۚ وَعَلَى ٱللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ ٱلْمُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾

(उनसे) दुःखी हों, हालांकि अल्लाह की इजाज़त के बिना वे उन्हें नुक़सान नहीं पहुंचा सकते, और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا۟ فِى ٱلْمَجَٰلِسِ
فَٱفْسَحُوا۟ يَفْسَحِ ٱللَّهُ لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ ٱنشُزُوا۟
فَٱنشُزُوا۟ يَرْفَعِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنكُمْ وَٱلَّذِينَ
أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ دَرَجَٰتٍ ۚ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١﴾

११- ऐ ईमान वालो! जब तुम से कहा जाए, ''मजलिसों में जगह कुशादा कर दो, तो कुशादा कर दिया करो, अल्लाह तुम्हारे लिए कुशादगी पैदा कर देगा,'' और जब कहा जाए, ''उठ जाओ तो उठ जाया करो,'' तुममें से जो लोग ईमान लाए, और जिनको इल्म दिया गया, अल्लाह उनके दर्जे को बढ़ा देगा, जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا نَٰجَيْتُمُ ٱلرَّسُولَ فَقَدِّمُوا۟
بَيْنَ يَدَىْ نَجْوَىٰكُمْ صَدَقَةً ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَ
أَطْهَرُ ۚ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾

१२- ऐ ईमान वालो! जब तुम को रसूल से अकेले में बात करना हो, तो अपनी बात से पहले सदक़ा दे दिया करो, यह तुम्हारे लिए अच्छा और ज़्यादा पाकीज़ा है, फिर अगर खैरात में तुम अपने को असमर्थ पाओ, तो अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

ءَأَشْفَقْتُمْ أَن تُقَدِّمُوا۟ بَيْنَ يَدَىْ نَجْوَىٰكُمْ
صَدَقَٰتٍ ۚ فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوا۟ وَتَابَ ٱللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا۟
ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ وَأَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ ۚ
وَٱللَّهُ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٣﴾

१३- क्या तुम इससे डर गये कि अपनी सरगोशियों (गुप्त बातों) से पहले सदक़े दो? तो जब तुमने ऐसा न किया और अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया, तो नमाज़ क़ायम करो ज़कात देते रहो, और अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी (अनुपालन) करो, और तुम जो कुछ भी करते हो, अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلَّذِينَ تَوَلَّوْا۟ قَوْمًا غَضِبَ ٱللَّهُ عَلَيْهِم
مَّا هُم مِّنكُمْ وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى ٱلْكَذِبِ وَ
هُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾

१४- क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जिन्होंने ऐसे लोगों को दोस्त बनाया जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वे न तुममें से हैं, और न उनमें से हैं और वे जानते-बूझते झूठी बात पर क़सम खाते हैं।

أَعَدَّ ٱللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ إِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوا۟
يَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾

१५- अल्लाह ने उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है, यह बुरे काम किया करते थे।

ٱتَّخَذُوٓا۟ أَيْمَٰنَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا۟ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ
فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٦﴾

१६- उन्होंने अपनी क़समों को ढ़ाल बना रखा है, (और) अल्लाह की राह से रोकते हैं, तो उनके लिए रूसवा कर देने वाला अ़ज़ाब है।

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

१७- अल्लाह से बचाने के लिए न उनके माल उनके काम आएँगे, और न उनकी औलाद ही, ये लोग आग वाले हैं, उसी में वे हमेशा रहेंगे।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ؕ اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝

१८- जिस दिन अल्लाह उन सब को जिला उठाएगा, तो वे उसके सामने उसी तरह क़समें खाएँगे जिस तरह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं, और समझते हैं कि वे किसी बुनियाद पर हैं, बेशक यही झूठे हैं।

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

१९- शैतान उन पर मुसल्लत हो गया, तो उसने अल्लाह की याद को भुला दिया, यही लोग शैतान की पार्टी के हैं, सुन लो! शैतान की पार्टी ज़रूर घाटे में पड़ने वाली है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اُولٰٓئِكَ فِى الْاَذَلِّيْنَ ۝

२०- जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं वही ज़लील लोगों में से हैं।

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝

२१- अल्लाह ने लिख दिया है, 'मै' और 'मेरे' रसूल ही विजयी रहेंगे, अल्लाह ताक़त वाला, ग़लूबा वाला (प्रभुत्वशाली) है।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

२२- तुम उन लागों को ऐसा कभी नहीं पाओगे, जो अल्लाह और अन्तिम दिन (क़ियामत) पर ईमान रखते हैं, कि वे उन लोगों से मुहब्बत करते हों जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया हो, चाहे वे उनके बाप या बेटे, या भाई, या उनके खानदान के लोग हों; ये वही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान को बिठा दिया है, और 'अपनी' ओर से रूह़ (आत्मा) के ज़रिये उनकी मदद की है; 'वह' उनको ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ, और वे अल्लाह से राज़ी हुए, यह लोग अल्लाह की पार्टी के हैं सुन लो! कि अल्लाह की पार्टी वाले ही कामियाब होने वाले हैं।



अनुवाद-सूरतुल्हश्रि

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के २०१६अक्षर, ४५५ शब्द, २४ आयतें और ३ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

१- अल्लाह की तस्बीह़ (गुणगान) की है, हर उस चीज़ ने, जो आसमानों और ज़मीन में है, और 'वह' ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाला है।

هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ۗ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۖ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۖ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ۝

२- 'वही' है जिसने उन लोगों को जो अह्ले किताब में से काफ़िर हुए, उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया, तुम्हारा गुमान भी न था कि वे निकलेंगे और उन्होंने यह गुमान कर रखा था कि उनके क़िले उनको अल्लाह से बचा लेंगे, तो अल्लाह उन पर ऐसी जगह से पहुंचा जिसका उनको गुमान भी न था, और उनके दिलों में रोअ़ब डाल दिया, कि अपने घरों को खुद अपने हाथों और ईमान वालों के हाथों से भी उजाड़ने लगे, तो इबरत (नसीह़त) हासिल करो, ऐ आँखें रखने वालो!

وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاۤءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝

३- और अगर अल्लाह ने उनके लिए जिला- -वतन (देश से निकालना) न लिख दिया होता, तो दुनिया में ही 'वह' उन्हें ज़रूर अ़ज़ाब दे देता, और आख़िरत में तो उनके लिए है ही आग का अ़ज़ाब।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَاۤقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاۤقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

४- यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का मुक़ाबला करने की कोशिश की, और जो व्यक्ति अल्लाह का मुक़ाबला करता है, तो अल्लाह का अज़ाब बहुत सख़्त है।

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَاۤىِٕمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ۝

५- तुम ने खजूर के जो वृक्ष काटे, या उनको उनकी जड़ों पर छोड़ दिया, तो यह अल्लाह ही की इजाज़त से हुआ, और ताकि

'वह' फ़ासिक़ों (नाफ़रमानों) को रूसवा करे।

६- और जो (माल) अल्लाह ने उन लोगों से (बिना लड़ाई के) निकाल कर अपने रसूल को दिलवाया, तो उस पर तुमने न अपने घोड़े दौड़ाए, और न ऊँट, बल्कि अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है ग़लबा (प्रभुत्व) देता है, और अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) ह़ासिल है।

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ
خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ
يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

७- जो माल अल्लाह ने अपने रसूल की ओर बस्तियों वालों से दिलवाया है, वह अल्लाह और रसूल, और रिश्तेदारों, और यतीमों, और मिस्कीनों, और मुसाफ़िरों के लिए है, ताकि यह माल तुम्हारे मालदारों ही के बीच न घूमता रहे, और रसूल जो तुम्हें दें, वह ले लो और जिससे रोक दें, उससे रूक जाओ और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।

مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ
وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ
وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ
مِنْكُمْ ۭ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۤ وَمَا نَهٰىكُمْ
عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ
الْعِقَابِ ۝

८- (यह) माल उन मोहताज मुहाजिरों के लिए है, जो अपने घरों और अपने मालों से इस ह़ालत में निकाल बाहर किये गये है, कि वह अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रज़ामन्दी चाहते हैं, और अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग सच्चे हैं।

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ
دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ
وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الصّٰدِقُوْنَ ۝

९- और जो लोग उनसे पहले (मदीना को) ठिकाना बनाए हुए थे, और ईमान पर (जमे) थे, वे उन लोगों से मुह़ब्बत करते हैं, जो हिजरत कर के उनके पास आए और जो कुछ भी उन्हें दिया गया, उससे वे अपने सीनों में कोई खटक नहीं करते, और उनको अपने मुक़ाबले में तर्जीह़ (प्राथ्मिकता) देते हैं, चाहे वह खुद ही ज़रूरतमन्द हों, और जो लोग अपने दिल की तंगी से बचा लिए गये, तो ऐसे ही लोग कामियाब होने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ
يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ
صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓي
اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۭ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ
نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

१०- और जो उनके बाद आए, वे दुआ़ करते हैं, ''ऐ हमारे रब! हमें भी माफ़ कर दे, और उन भाइयों को भी, जो हमसे पहले ईमान ले आए, और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना न रख, ऐ रब! तू बड़ा मेहरबान, रह़म करने वाला है।''

وَالَّذِيْنَ جَاۗءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا
وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ
فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ۝

११- क्या तुमने उन मुनाफ़िक़ों को नहीं देखा! जो अपने उन भाइयों को जो अह़्ले किताब में से काफ़िर हुए, कहते हैं, ''अगर तुम्हें देश से निकाला गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकलेंगे और तुम्हारे मामले में हरगिज़ किसी की बात न

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَىِٕنْ اُخْرِجْتُمْ
لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ
قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ

لَكٰذِبُوْنَ ﴿١١﴾

मानेंगे, और अगर तुम लोगों से जंग की गयी तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, मगर अल्लाह गवाही देता है कि यह झूठे हैं;

لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۙ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢﴾

१२- अगर वे निकाले गये तो यह उनके साथ नहीं निकलेंगे, और अगर उनसे जंग की गयी तो यह उनकी मदद नहीं करेंगे, और अगर मदद करेंगे भी तो पीठ फेर कर भाग जाएँगे, फिर उनकी मदद नहीं की जाएगी।''

لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٣﴾

१३- उनके दिलों में तुम्हारा डर अल्लाह से ज़्यादा है, यह इसलिए कि यह समझ नहीं रखते।

لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ۚ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ۚ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٤﴾

१४- यह इकट्ठा हो कर (आमने-सामने) नहीं, बल्कि क़िला बन्द बस्तियों में या दीवारों के पीछे से लड़ेंगे, उनकी आपस में लड़ाई बड़ी सख़्त है, तुम समझते हो! कि उनमें बड़ा एका है; हालाँकि उनके दिल फटे हुए हैं, यह इसलिए कि ये बेअक़्ल लोग हैं।

كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٥﴾

१५- उनका हाल उन लोगों का सा है जो उनसे कुछ ही पहले अपने किये का मज़ा चख चुके हैं, और उनके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है;

كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾

१६- इनकी मिसाल शैतान जैसी है, कि जब उसने इन्सान से कहा, ''कुफ़्र (इन्कार) करो!'' फिर जब वह इन्कार कर बैठा; तो कहने लगा, ''मैं तुम्हारी ज़िम्मेदारी से बरी हूं, मैं तो सारे संसार के रब, अल्लाह, से डरता हूँ।''

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٧﴾

१७- तो उन दोनों का अंजाम यह होना है कि दोनों आग में जाएँगे, उसी में वे हमेशा रहेंगे, और ज़ालिमों का यही बदला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾

१८- ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और हर व्यक्ति को यह देखना चाहिए कि उसने कल के लिए क्या भेजा है, और अल्लाह से डरते रहो, जो कुछ भी तुम करते हो, बेशक अल्लाह तुम्हारे आमाल की पूरी ख़बर रखता है।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ۚ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾

१६- और उन लोगों की तरह न हो जाना! जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया, तो उन्हें ऐसा कर दिया कि, वे अपने आप को भूल बैठे, यही लोग फ़ासिक़ (नाफ़रमान) हैं।

لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۭ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ⑳

२०- दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं हो सकते, जन्नत (में जाने) वाले ही कामियाब होने वाले हैं।

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰي جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ㉑

२१- अगर 'हम' इस क़ुर्आन को किसी पहाड़ पर उतारते, तो तुम उसको देखते कि अल्लाह के डर से दबा हुआ, और फटा जा रहा है, और ये मिसालें 'हम' लोगों के लिए इसलिए बयान करते हैं, ताकि वे सोच-विचार करें।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ㉒

२२- 'वही' अल्लाह है जिसके सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं ग़ायब और हाज़िर का जानने वाला, 'वह' बड़ा मेहरबान निहायत रह़म करने वाला है।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ㉓

२३- 'वही' अल्लाह है जिसके सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, वह बादशाह है बड़ा पवित्र, पूरी तरह सलामती, और अम्न देने वाला, रक्षा करने वाला, ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), ज़बर्दस्त बड़ाई वाला, अल्लाह महान (पाक) है उस शिर्क से जो वे करते हैं।

هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ۭ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ㉔

२४- 'वही' अल्लाह पैदा करने वाला (अविष्कारक), सूरतें बनाने वाला, उसके सब अच्छे नाम हैं, जो चीज़ें भी आसमानों और ज़मीन में हैं, 'उसी' की तस्बीह़ कर रही हैं, और 'वह' बड़ा ज़ोर वाला, ह़िकमत वाला है।



अनुवाद-सूरतुल्मुम्तहिनति

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के १५६३ अक्षर, ३७० शब्द, १३ आयतें, और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ
اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا
جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ
اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ
سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۖ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ
وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَاۤ اَخْفَيْتُمْ وَمَاۤ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝١

१– ऐ ईमान वालो! मेरे दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उनसे दोस्ती का सम्बन्ध बढ़ाते हो, हालांकि वे उस ह़क़ का इन्कार कर चुके हैं जो तुम्हारे पास आया है; उन्होंने रसूल को, और उनको इस वजह से निकाल दिया, कि तुम अल्लाह और अपने 'रब' पर ईमान लाए हो, अगर तुम 'मेरी' राह में जिहाद और 'मेरी' रज़ामन्दी ह़ासिल करने के लिए निकले हो (और), तुम छिपा कर उनकी ओर दोस्ती का सन्देश भेजते हो, और जो कुछ तुम छिपा कर करते हो, और जो कुछ ज़ाहिर कर के करते हो 'मैं' खूब जानता हूं, और जो कोई तुम में से ऐसा करे, तो वह सीधी राह से भटक गया।

اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْۤا
اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ
تَكْفُرُوْنَ ۝٢

२– अगर ये तुम को पा लें, तो तुम्हारे दुश्मन हो जाएँ और तकलीफ़ पहुंचाने के लिए तुम पर अपने हाथ चला दें, और बुराई के साथ ज़बान भी, और चाहते हैं कि तुम भी काफ़िर (इन्कारी) हो जाओ।

لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ
بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٣

३– तुम्हारी रिश्तेदारियाँ और तुम्हारी औलादें क़ियामत के दिन कुछ भी काम न आएँगी 'वह' तुम्हारे बीच फ़ैसला फ़रमाएगा, और तुम जो कुछ करते हो उसे अल्लाह देख रहा है।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ
مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ
وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۫ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا
بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى

४– तुम लोगों के लिए 'इब्राहीम' और उनके साथियों में बेहतरीन नमूना है, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम के लोगों से कह दिया, ''हम तुम से और तुम्हारे उन मअ़बूदों (उपास्यों) से जिनको तुम अल्लाह को छोड़ कर पूजते हो, बिल्कुल बरी हैं,

تُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۭ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝

हमने तुमसे इन्कार किया और हमारे और तुम्हारे बीच हमेशा के लिए दुश्मनी और बेज़ारी ज़ाहिर हो गयी, जब तक कि तुम एक अल्लाह पर ईमान न लाओ;'' इब्राहीम ने अपने बाप से कहा कि मैं आप के लिए माफ़ी की दुआ़ करूंगा, और मैं आप के लिए अल्लाह की ओर से कोई अधिकार नहीं रखता, ऐ हमारे रब! हमने 'तेरे' ही ऊपर भरोसा किया और तेरी ही ओर रूजूअ़ हुए और तेरी ही ओर लौटना है;

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

५- ऐ हमारे रब! हमें काफ़िरों (इन्कार करने वालों) के लिए फ़ित्ना न बना, और ऐ हमारे रब! हमें माफ़ कर, बेशक 'तू' ज़ोर वाला, ह़िकमत वाला है।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝

६- बेशक तुम्हारे लिए इन में अच्छा नमूना है, हर उस व्यक्ति के लिए, जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता हो, और जो कोई मुंह फेरे तो अल्लाह बे परवाह (निस्पृह) ह़म्द के लायक़ (प्रशंसित) है।

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ۭ وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

७- उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे और उनके बीच, जिससे तुमने दुश्मनी मोल ली है, मुह़ब्बत पैदा कर दे, अल्लाह बड़ी क़ुदरत रखता है, और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝

८- अल्लाह तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार और इन्साफ़ करने से नहीं रोकता, जिन्होंने दीन के मामले में तुम से जंग नहीं की, और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला, अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसंद करता है।

اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓي اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝

९- अल्लाह तो तुम्हें केवल उन्हीं लोगों से दोस्ती करने से रोकता है, जिन्होंने दीन के मामले में तुमसे जंग की, और तुम को तुम्हारे अपने घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में औरों की मदद की, और जो लोग उनसे दोस्ती करेंगे, वही ज़ालिम हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَاۗءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ۭ

१०- ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मोमिन औ़रतें हिजरत कर के आएं तो तुम उन्हें जांच लिया करो, अल्लाह उनके ईमान को बेहतर जानता है, फिर अगर तुम्हें मालूम हो जाए,

لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۖ وَآتُوهُم مَّا أَنفَقُوا ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَن تَنكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَاسْأَلُوا مَا أَنفَقْتُمْ وَلْيَسْأَلُوا مَا أَنفَقُوا ۚ ذَٰلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ ۖ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾

कि मोमिन हैं, तो उन्हें काफ़िरों की ओर वापस न करो, न वे उन (काफ़िरों) के लिए ह़लाल हैं, और न वे उनके लिए ह़लाल हैं; और उन्होंने जो कुछ भी खर्च किया है, तो वह उन्हें अदा कर दो; और उन औ़रतों से निकाह़ करने में तुम पर कोई गुनाह नहीं, जबकि तुम उनके महर उनको अदा कर दो; और काफ़िर औ़रत को अपने निकाह में रोके न रखो, और जो कुछ तुमने उनके ऊपर खर्च किया हो, उसका तुम (काफ़िरों से) मुतालबा (माँग) करो, और जो कुछ उन्होंने खर्च किया हो वह तुमसे मुतालबा करें, यह अल्लाह का हुक्म है, जो तुम्हारे बीच फ़ैसला कर रहा है, और अल्लाह इल्म वाला, ह़िकमत वाला है।

وَإِن فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُم مِّثْلَ مَا أَنفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنتُم بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

११- और अगर तुम्हारी पत्नियों में से कोई पत्नी काफ़िरों की ओर रह जाए, और फिर तुम्हारी बारी आए तो जिनकी पत्नियां चली गयी हैं उनको उतना ही अदा कर दो, जितना उन्होंने खर्च किया था, और अल्लाह से डरते रहो, 'जिस' पर तुम ईमान लाए हो।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰ أَن لَّا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ ۙ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾

१२- ऐ नबी! जब आप के पास ईमान वाली औरतें इस बात की बैअ़त (प्रतिज्ञा) करने आएँ, कि 'किसी चीज़ को अल्लाह का साझी नहीं ठहराएंगी, और न चोरी करेंगी, और न बदकारी (व्यभिचार) करेंगी, और न अपनी औलाद को मार डालेंगी, और न अपने हाथों पैरों से कोई आरोप (गढ़ कर) लाएंगी, और न किसी भले कामों में आप की नाफ़रमानी करेंगी', तो आप उनसे बैअ़त कर लिया करें, और उनके लिए माफ़ी की दुआ़ करें, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ﴿١٣﴾

१३- ऐ ईमान वालो! उन लोगों को दोस्त न बनाओ, जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वे आख़िरत से मायूस हो चुके हैं, जिस तरह काफ़िर क़ब्र वालों से मायूस हो चुके हैं।



अनुवाद-सूरतुस्सफ़्फ़

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के ६६१ अक्षर, २२३ शब्द, १४ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

१- अल्लाह की तस्बीह़ की हर उस चीज़ ने, जो आसमानों में है, और ज़मीन में है, 'वही' ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝

२- ऐ ईमान वालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं,

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝

३- अल्लाह को यह बात सख़्त नापसंद है, कि ऐसी बात कहो जो करो नहीं।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝

४- बेशक अल्लाह उन से मुह़ब्बत करता है जो लोग अल्लाह की राह में क़तार बांध कर लड़ते हैं, मानो वे शीशा पिलाई हुई दीवार हैं।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ۚ فَلَمَّا زَاغُوْۤا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝

५- और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! तुम मुझे क्यों सताते हो, हालांकि तुम जानते हो, कि मैं तुम्हारी ओर भेजा हुआ अल्लाह का रसूल हूँ।'' फिर जब उन्होंने टेढ़ अपनाई, तो अल्लाह ने भी उनके दिल टेढ़े कर दिये, और अल्लाह नाफ़रमानों को सीधी राह नहीं दिखाता।

وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

६- और जब मरयम के बेटे ईसा ने कहा, ''ऐ बनी इस्राईल! मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल हूँ, जो मुझसे पहले आ चुकी है (अर्थात) तौरात, उसकी तस्दीक़ करने वाला हूँ और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ एक रसूल की, जो मेरे बाद आएँगे, उनका नाम 'अह़मद' होगा।'' जब वह उन लोगों के पास स्पष्ट निशानियां लेकर आए तो उन्होंने कहा, ''यह तो खुला हुआ जादू है।''

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَىٰ إِلَى الْإِسْلَامِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

७- और उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा? जो अल्लाह पर झूठा आरोप लगाए, हालांकि उसको इस्लाम (अल्लाह के आगे समर्पण करने) की ओर बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधी राह नहीं दिखाता।

يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝

८- यह चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह की फूंक से बुझा दें, मगर अल्लाह अपने नूर को पूरा करके रहेगा, और चाहे काफ़िरों को (कितना ही) नागवार (अप्रिय) हो।

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝

९-'वही' तो है जिसने अपने रसूल को सीधी राह, और दीने ह़क़ देकर भेजा, ताकि उसे और सब दीने ह़क़ पर ग़ालिब करे, चाहे मुश्रिकों को (कितना ही) नागवार हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

१०- ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारत बताऊँ, जो तुम्हें दुःख देने वाले अ़ज़ाब से बचा ले;

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

११- ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर, जिहाद करो अल्लाह की राह में, अपने माल और अपनी जान से, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो।

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

१२- 'वह' तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा, और तुम को ऐसे बाग़ों में- जिनके नीचे नहरें बहती हैं- और उन अच्छे घरों में भी जो सदा बहार बागों में हैं, दाख़िल करेगा, यही बड़ी कामियाबी है;

وَأُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۖ نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

१३- और दूसरी चीज़ भी जो तुम बहुत चाहते हो, अल्लाह की ओर से मदद और जल्द ह़ासिल होने वाली विजय, और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे दो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ ۖ فَآمَنَتْ طَائِفَةٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَتْ طَائِفَةٌ ۖ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ۝

१४- ऐ ईमान वालो! अल्लाह के मददगार बनो, जैसा कि मरयम के बेटे ईसा ने ह़वारियों (साथियों) से कहा था, ''कौन हैं जो अल्लाह की राह में मेरे मदद्गार हों?'' ह़वारियों ने जवाब दिया, ''हम हैं, अल्लाह के मदद्गार,'' तो बनी इस्राईल का एक गिरोह तो ईमान ले आया और दूसरे गिरोह ने इन्कार किया, तो 'हमने' ईमान लाने वालों की, उनके दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद की, और वे ग़ालिब (प्रभावी) हो गये।



अनुवाद-सूरतुल्‌जुमुअ़ति

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के ७८७ अक्षर, १७६ शब्द, ११ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝

१- अल्लाह की तस्बीह़ करती हैं, सारी चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं, 'वही' ह़क़ीक़ी बादशाह है बड़ा पाक (पवित्र) ज़ोर वाला, ह़िकमत वाला है।

هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

२- 'वही' है जिसने उम्मियों (अनपढ़ों) में एक रसूल, उन्हीं में से भेजा, जो उनको 'उसकी' आयतें पढ़ कर सुनाते हैं, और उनको पाक करते और उन्हें किताब और ह़िकमत सिखाते हैं, और इससे पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे।

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

३- और उनमें से और लोगों की ओर भी जो अभी उनसे मिले नहीं हैं, और वह ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाला है।

ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

४- यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसे चाहता है अ़ता करता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल (अनुग्रह) वाला है।

مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ۚ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

५- उन लोगों की मिसाल जिन पर तौरात का बोझ डाला गया- फिर उन्होंने उसे न उठाया- उस गधे की सी है, जो किताब लादे हुए हो, बहुत बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, और अल्लाह ज़ालिमों को सीधी राह नहीं दिखाया करता।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝

६- कह दीजिए, ऐ यहूदियो! अगर तुम यह समझते हो कि दूसरों को छोड़ कर तुम ही अल्लाह के चहीते हो, (तो) अगर तुम सच्चे हो तो मौत की तमन्ना करो;"

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝

७- और ये कभी भी उसकी तमन्ना नहीं करेंगे, उन (करतूतों) की वजह से जो कर चुके हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है।

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلَاقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

८- कह दीजिए, ''जिस मौत से तुम भागते हो, वह तो तुम्हें आ कर रहेगी, फिर तुम उसकी ओर लौटाए जाओगे, 'जो' छिपे और खुले का जानने वाला है, तो 'वह' तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।''

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

९- 'ऐ' ईमान वालो! जब जुमुअ़ः के दिन नमाज़ के लिए पुकारा (अज़ान दी) जाए, तो अल्लाह की याद की ओर दौड़ पड़ो, और (ख़रीदना) बेचना छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो;

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

१०- फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए, तो ज़मीन में फैल जाओ, और अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो; और अल्लाह का ज़िक्र ज़्यादा से ज़्यादा करो, ताकि तुम कामियाब हो।

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انْفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِمًا ۚ قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۚ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝

११- और यह लोग जब तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी ओर टूट पड़ते हैं और तुम्हें खड़ा छोड़ देते हैं, कह दीजिए, ''जो कुछ अल्लाह के पास है, वह तमाशे और तिजारत से कहीं बेहतर है, और अल्लाह सबसे बेहतर रिज़्क़ देने वाला है।''



अनुवाद सूरतुल्-मुनाफ़िकून

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के ८२१ अक्षर, १८३ शब्द, ११ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَكَاذِبُونَ ①

१- जब मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) लोग आप के पास आते हैं तो कहते हैं, ''हम गवाही देते हैं कि बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह जानता है कि ह़क़ीक़त में आप 'उसके' रसूल हैं,'' मगर अल्लाह गवाही देता है कि यह मुनाफ़िक़ बिल्कुल झूठे हैं।

اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ②

२- उन्होंने अपनी क़समों को ढ़ाल बना रखा है, तो इस तरह़ यह अल्लाह की राह से रोकते हैं, निश्चय ही यह बहुत बुरा है, जो ये कर रहे हैं।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ③

३- यह इसलिए कि वे ईमान लाए, फिर इन्कार किया, तो उनके दिलों पर मुहर लगा दी गयी, वे अब कुछ नहीं समझते।

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُسَنَّدَةٌ ۖ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ ۖ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ④

४- और जब तुम उनको देखते हो, तो उनके शरीर तुम्हें अच्छे लगते हैं, और अगर वे बात करें तो उनकी बातों को सुनते रह जाओ, यह ऐसा ही है- जैसे लकड़ी के कुन्दे हों, (जिन्हें खड़ा कर दिया गया हो,) वे हर चौका देने वाली आवाज़ को अपने ही ऊपर लेते हैं- यही असली दुश्मन हैं, तो इनसे बचते रहो, अल्लाह की मार हो उन पर, यह कहाँ बहके जा रहे हैं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ⑤

५- और जब उनसे कहा जाता है, ''आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए माफ़ी की दुआ़ करे,'' तो अपने सर मटकाते हैं, और तुम देखते हो कि वे घमंड के साथ कत्ऱा कर निकल जाते हैं।

سَوَآءٌ عَلَيۡهِمۡ اَسۡتَغۡفَرۡتَ لَهُمۡ اَمۡ لَمۡ تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ لَنۡ يَّغۡفِرَ اللّٰهُ لَهُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡفٰسِقِيۡنَ ۝

६- उनके लिए बराबर है चाहे आप उनके लिए माफ़ी की दुआ़ करें या उनके लिए माफ़ी की दुआ़ न करें, अल्लाह उन्हें हरगिज़ माफ़ न करेगा, बेशक अल्लाह नाफ़रमानी करने वालों को सीधी राह नहीं दिखाया करता।

هُمُ الَّذِيۡنَ يَقُوۡلُوۡنَ لَا تُنۡفِقُوۡا عَلٰى مَنۡ عِنۡدَ رَسُوۡلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنۡفَضُّوۡا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَلٰـكِنَّ الۡمُنٰفِقِيۡنَ لَا يَفۡقَهُوۡنَ ۝

७- वही हैं जो कहते हैं, ''तुम उन लोगों पर खर्च न करो जो अल्लाह के रसूल के पास (रहने) वाले हैं, ताकि ये तितर-बितर हो जाएँ।'' हालांकि आसमानों और ज़मीन के खज़ाने अल्लाह ही के हैं, लेकिन मुनाफ़िक़ समझते नहीं।

يَقُوۡلُوۡنَ لَئِنۡ رَّجَعۡنَاۤ اِلَى الۡمَدِيۡنَةِ لَيُخۡرِجَنَّ الۡاَعَزُّ مِنۡهَا الۡاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الۡعِزَّةُ وَلِرَسُوۡلِهٖ وَلِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَلٰـكِنَّ الۡمُنٰفِقِيۡنَ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝

८- कहते हैं, ''अगर हम मदीना वापस पहुंच गये तो जो इ़ज़्ज़त वाला है वह ज़िल्लत वाले को वहां से निकाल बाहर करेगा,'' हालांकि इ़ज़्ज़त अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों के लिए है लेकिन यह मुनाफ़िक़ जानते नहीं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تُلۡهِكُمۡ اَمۡوَالُكُمۡ وَلَاۤ اَوۡلَادُكُمۡ عَنۡ ذِكۡرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنۡ يَّفۡعَلۡ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ۝

९- ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफिल न कर दें, और जो ऐसा करेंगे वही घाटे में रहने वाले हैं।

وَاَنۡفِقُوۡا مِنۡ مَّا رَزَقۡنٰكُمۡ مِّنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِىَ اَحَدَكُمُ الۡمَوۡتُ فَيَقُوۡلَ رَبِّ لَوۡلَاۤ اَخَّرۡتَنِىۡۤ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيۡبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنۡ مِّنَ الصّٰلِحِيۡنَ ۝

१०- और खर्च करो उसमें से जो रिज़्क़ 'हमने' तुम्हें दिया है, इससे पहले कि तुम में से किसी की मौत आ जाए, और कहे, ''ऐ मेरे रब! 'तूने' मुझे थोड़ी मोहलत और क्यों न दी कि मैं सद्क़ा करता और अच्छे लोगों में शामिल हो जाता।''

وَلَنۡ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفۡسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ۝

११- और अल्लाह हरगिज़ किसी नफ़्स (प्राणी) को मोहलत देने वाला नहीं, जब कि उसका निर्धारित समय आ जाए, और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।



अनुवाद-सूरतुत्तग़ाबुनि

यह सूरः मक्की है इस में अ़रबी के ११२२ अक्षर, २४७ शब्द, १८ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۖ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

१- अल्लाह की तस्बीह़ करती हैं वे सारी चीज़ें, जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं, 'उसी' की बादशाही है, और 'उसी' के लिए ह़म्द (प्रशंसा) है, और 'वह' हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

२- 'वही' तो है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुममें से कुछ तो इन्कार करने वाले हैं और तुममें से कुछ ईमान वाले हैं, और तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसे देख रहा है।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝

३- 'उसी' ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया, और 'उसी' ने तुम्हारी सूरतें बनायीं, तो कितनी अच्छी सूरतें बनायीं, और 'उसी' की ओर लौट कर जाना है।

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

४- 'वह' जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और तुम जो कुछ छिपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो उसे 'वह' जानता है, और अल्लाह सीनों में छिपी बातों को जानता है।

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

५- क्या तुम्हें उन लोगों की बातें नहीं पहुँचीं! जिन्होंने इससे पहले इन्कार किया था, तो उन्होंने अपने करतूतों के वबाल का मज़ा चखा, और उनके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है?

ذٰلِكَ بِاَنَّهُ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۫ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۚ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝

६- यह इस वजह से कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट निशानियों के साथ आते रहे, मगर उन्होंने कहा, ''क्या इन्सान हमारी रहनुमाई करेंगे?'' इस तरह उन्होंने इन्कार किया, और मुँह मोड़ लिया; और अल्लाह भी उनसे बेपरवाह हो गया, अल्लाह तो है ही बेपरवाह तअ़रीफ़ के लायक़।

७- जिन लोगों ने इन्कार किया, (उनका दावा है) कि वे हरगिज़ (मरने के बाद) न उठाए जाएँगे, कह दीजिए, ''क्यों नहीं, मेरे रब की क़सम! तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर जो कुछ तुमने किया है उसे तुम्हें बता दिया जाएगा, और यह काम अल्लाह के लिए आसान है।''

زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ۭ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۭ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝

८- तो ईमान लाओ अल्लाह पर और 'उसके' रसूल पर और उस नूर (क़ुर्आन) पर, जो 'हमने' नाज़िल किया है, जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।

فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝

९- जिस दिन अल्लाह तुम्हें इकट्ठा करेगा- इकट्ठा होने के दिन- वह नफ़ा-नुक़सान का दिन होगा; और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाए और भले काम करे उसकी बुराइयां अल्लाह उससे दूर कर देगा, और ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे, यही बड़ी कामियाबी है।

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

१०- और जिन्होंने इन्कार किया, और 'हमारी' आयतों को झुठलाया वही दोज़ख़ वाले हैं; जिसमें वे हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है;

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝

११- नहीं आती कोई भी मुसीबत मगर अल्लाह की इजाज़त से, और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान रखता है, तो 'वह' उसके दिल की रहनुमाई करता है, और अल्लाह हर चीज़ को जानता है।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

१२- और अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल की पैरवी करो, अगर तुम मुँह मोड़ते हो, तो 'हमारे' रसूल पर केवल साफ़-साफ़ पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी है।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰي رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝

१३- अल्लाह 'वह' है जिसके सिवा कोई इलाह (उपास्य) नहीं, और अल्लाह ही पर मोमिनों को भरोसा करना चाहिए।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝

१४- ऐ ईमान वालो! तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारी औलादों में से कुछ तुम्हारे दुश्मन भी हैं, तो तुम उनसे होशियार रहो; और अगर तुम माफ़ कर दो, और टाल जाओ, और माफ़ी दे दो तो अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

१५- तुम्हारे माल और तुम्हारी औलादें तुम्हारे लिए आज़माइश हैं, और अल्लाह के पास बड़ा बदला है।

اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝١٦

१६- तो जहां तक तुमसे हो सके अल्लाह से डरते रहो, और सुनो, और हुक्म मानो, और खर्च करो अपनी ही भलाई के लिए; और जो व्यक्ति अपने दिल की तंगी से बचा लिया गया, तो ऐसे ही लोग कामियाब होने वाले हैं।

اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝١٧

१७- अगर तुम अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दो तो वह तुम्हारे लिए उसे दो गुना कर देगा, और तुम्हारे गुनाह को माफ़ कर देगा, और अल्लाह बड़ा क्द्र करने वाला, हलीम (सहनशील) है;

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١٨

१८- ग़ायब और हाज़िर का जानने वाला, ग़ालिब, हिकमत वाला है।



अनुवाद-सूरतुत्तलाक़ि

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के १२३७ अक्षर, २६८ शब्द, १२ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۭ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ۝

१- ऐ नबी! जब आप औ़रतों को तलाक़ दें तो उन्हें तलाक़ उनकी इद्दत के ह़िसाब से दें और इद्दत का शुमार (गणना) रखें और अल्लाह का डर रखें, जो आप का रब है, उन्हें उनके घरों से न निकालें और न वे खुद निकलें- सिवाय इसके कि वे कोई खुली बद्कारी के काम कर बैठें- और यह अल्लाह की तय की हुई सीमाएं हैं, और जो अल्लाह की सीमाओं से आगे बढ़ेगा, वह अपने आप पर जुल्म करेगा; आप नहीं जानते! शायद अल्लाह इस (तलाक़) के बाद कोई (अच्छी) सूरत पैदा कर दे;

فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ۭ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۬ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝

२- जब निर्धारित समय को पहुंच जाएँ, तो उन्हें भले तरीक़े पर रोक लें या भले तरीक़े पर अलग कर दें, और अपने में से दो इन्साफ़ करने वाले मर्दों को गवाह बना लें, और गवाह अल्लाह के लिए क़ायम रखें, यह नसीह़त उनको की जाती है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हों, और जो अल्लाह से डरेगा, 'वह' उसके लिए राह निकाल देगा;

وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۭ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ۭ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝

३- और उसको ऐसी जगह से रिज़्क़ देगा, जहां से उसको गुमान भी न होगा, और जो अल्लाह पर भरोसा करेगा, तो 'वह' उसके लिए काफ़ी होगा, अल्लाह अपना काम पूरा कर के रहता है, अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा (योजना) तय कर रखा है।

وَالّٰٓـِٔيْ يَىِٕسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآىِٕكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ

४- और तुम्हारी औ़रतों में से जो मासिक धर्म (हैज़) से मायूस हो चुकी हों, उनके बारे में अगर तुम को शक हो, तो उनकी

يَحِضْنَ ۚ وَأُولَاتُ الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَن يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَل لَّهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا

इद्दत तीन महीने है, और उनकी भी जिनको मासिक धर्म न आया हो, और गर्भवती (ह़ामला) औ़रतों की इद्दत बच्चा हो जाने तक है; और जो अल्लाह से डरेगा, तो 'वह' उसके मामले में आसानी पैदा कर देगा।

ذَٰلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنزَلَهُ إِلَيْكُمْ ۚ وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا

५- यह अल्लाह का हुक्म है, जो 'उसने' तुम्हारी ओर उतारा है, और जो कोई अल्लाह का डर रखेगा उसकी बुराइयों को 'वह' दूर कर देगा और उसके अज्र (बदले) को बढ़ा देगा।

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنتُم مِّن وُجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِن كُنَّ أُولَاتِ حَمْلٍ فَأَنفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِن تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَىٰ

६- अपनी हैसियत के अनुसार जहां तुम खुद रहते हो उन्हें भी उसी जगह रखो, और उन्हें तंग करने के लिए न सताओ, और अगर वे गर्भवती (हामला) हों तो उन पर खर्च करते रहो, यहां तक कि बच्चा पैदा हो जाए, फिर अगर वह तुम्हारे लिए बच्चे को दूध पिलाएं तो तुम उनकी उजूरत (मजदूरी) दो, और भले तरीक़े पर आपसी बात-चीत के ज़रिये मामला तय कर लो, और अगर तुम कोई तंगी महसूस करो, तो फिर कोई दूसरी औ़रत उसे दूध पिलाए।

لِيُنفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِ ۖ وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا

७- हैसियत वाला अपनी हैसियत के अनुसार खर्च करे, और जिसको कम रोज़ी दी गयी है वह उसी में से खर्च करे जो अल्लाह ने उसे दिया है, अल्लाह किसी पर उससे ज़्यादा बोझ नहीं डालता जिसको जितना दिया है, जल्द ही अल्लाह तंगी के बाद आसानी पैदा कर देगा।

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا شَدِيدًا وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا نُّكْرًا

८- और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्होंने अपने 'रब' और 'उसके' रसूलों के हुक्म के मुक़ाबले में सरकशी कीं, तो 'हमने' उनकी सख़्त पकड़ की और उन्हें बुरा अ़ज़ाब दिया;

فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا

९- तो उन्होंने अपने किये का वबाल चख लिया, और उनका अंजाम घाटा ही रहा;

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ قَدْ أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا

१०- अल्लाह ने उनके लिए सख्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है, तो अल्लाह से डरो "ऐ बुद्धि वालो! जो ईमान लाए हो, अल्लाह ने तुम्हारी ओर ज़िक्र (क़ुर्आन) उतारा।"

رَّسُولًا يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

११- एक ऐसा रसूल, जो अल्लाह की स्पष्ट आयतें तुम को पढ़ कर सुनाता है, ताकि वह उन लोगों को जो ईमान लाए और

مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۚ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ۝

उन्होंने अच्छे काम किये, उनको अन्धेरों से निकाल कर रोशनी की ओर ले आए, और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाए; और भले काम करे, उसे 'वह' ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, ऐसे लोग उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह ने उनके लिए बेहतरीन रिज़्क (रोज़ी) तैयार कर रखा है।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۗ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

१२- अल्लाह ही ने सात आसमान बनाए, और वैसी ही ज़मीनें, उनमें (अल्लाह के) हुक्म उतरते रहते हैं, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है, और यह कि अल्लाह का इल्म हर चीज़ को घेरे में लिए हुए है।



अनुवाद-सूरतुत्तह़रीमि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ११२४ अक्षर, २५३ शब्द, १२ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۱

१- ऐ नबी! जिस चीज़ को अल्लाह ने ह़लाल कर रखा है, उसे आप अपनी पत्नियों को राज़ी करने के लिए क्यों ह़राम करते हैं? और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝۲

२- अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी अपनी क़समों की पाबन्दी से निकलने का उपाय निश्चित कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा मौला (संरक्षक) है, और 'वह' बड़ा इल्म वाला, ह़िकमत वाला है।

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَ اَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَ اَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝۳

३- और जब नबी ने अपनी पत्नियों में से किसी एक से राज़ की एक बात कही, तो जब उसने उसकी ख़बर कर दी; और अल्लाह ने इसे उस (नबी) पर ज़ाहिर कर दिया; तो उन्होंने उसे किसी हद तक बता दिया, और किसी हद तक उसे दरगुज़र कर दिया; फिर जब उनको उसकी ख़बर की, तो वह बोलीं, ''आपको इसकी ख़बर किसने दी?'' उन्होंने कहा, ''उसी' ने मुझको ख़बर दी है जो जानने वाला, खब़र रखने वाला है।''

اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَ اِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَ صَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝۴

४- अगर तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबः करो तो तुम्हारे दिल तो उसकी ओर झुक ही चुके हैं, और अगर तुम दोनों मिल कर उसको नाराज़ करोगी तो अल्लाह उसका मौला (संरक्षक) है, और उसके बाद जिब्रईल, और नेक ईमान वाले, और फ़रिश्ते उसके मददगार हैं।

عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ

५- उम्मीद है कि अगर वह (रसूल) तुम्हें तलाक़ दे दें, तो उसका रब तुम्हारे बदले में तुमसे अच्छी पत्नियां उनको देगा-

ثَيِّبٰتٍ وَّ اَبْكَارًا ۝

मुस्लिम, ईमान वाली, फ़रमाँबरदार, तौबः करने वाली, इबादत करने वाली, रोज़ः रखने वाली (या अल्लाह की राह में सफ़र करने वाली) शादी शुदा और कुँवारी भी।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝

६- ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ और जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं, जिस पर कठोर स्वभाव के फ़रिश्ते नियुक्त हैं, जो अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करते, और जो हुक्म उन्हें दिया जाता है उस पर अ़मल करते हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

७- ऐ काफ़िरो (इन्कार करने वालो)! आज उज़्र न पेश करो, तुम्हें बदले में वही दिया जा रहा है, जो कुछ करते आ रहे हो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ يُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِيَّ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

८- ऐ ईमान वालो! अल्लाह के आगे तौबः करो, ख़ालिस (दिल) तौबः, उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारी बुराइयां तुमसे दूर कर दे, और तुम्हें जन्नत (बाग़ों) में दाख़िल कर दे जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उस दिन अल्लाह नबी को और उन लोगों को, जो उनके साथ ईमान लाए रूसवा नहीं करेगा, और उनका नूर उनके आगे, और उनके दाईं ओर दौड़ रहा होगा, और वे दुआ़ कर रहे होंगे, ''ऐ रब! हमारा नूर हमारे लिए पूरा कर दे और हमें बख़्श दे, बेशक 'तू' हर चीज़ पर क़ादिर है।''

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ اغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝

९- ऐ नबी! इन्कार करने वालों (काफ़िरों) और मुनाफ़िक़ों (कप्टाचारियों) से जिहाद कीजिए, और उनके साथ सख़्ती से पेश आइए, उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत बुरा ठिकाना है।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ امْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝

१०- अल्लाह इन्कार करने वालों के लिए नूह़ की बीवी और लूत की बीवी की मिसाल बयान करता है, वे 'हमारे' बन्दों में से, दो नेक बन्दों के अधीन (निकाह में) थीं, मगर दोनों ने उनके साथ बेवफाई की, तो वे अल्लाह के मुक़ाबले में उन औ़रतों के कुछ भी काम न आ सके और 'उनसे' कह दिया गया, ''तुम भी दोज़ख़ में दाख़िल होने वालों के साथ दाख़िल हो जाओ।''

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَ نَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَ

११- और ईमान वालों के लिए अल्लाह ने फ़िरऔ़न की बीवी की मिसाल पेश की है, जबकि उसने कहा, ''ऐ मेरे रब! 'तू' मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना और मुझे

نَجِّنِیْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ۟

फ़िरऔ़न और उसके अ़मल से छुट्कारा दे, और छुट्कारा दे मुझे ज़ालिम लोगों से।''

وَمَرْیَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِیْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِیْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِیْنَ ۟

१२- और इमरान की बेटी मरयम की, जिन्होंने अपनी शर्मगाह (सतीत्व) की रक्षा की थी, फिर 'हमने' उसमें अपनी रूह फूँक दी, और उसने अपने 'रब' के कलिमों (बोलों), और 'उसकी' किताबों की पुष्टि की और वह फ़रमाँबरदारों में से थी।



अनुवाद-सूरतुल्मुल्कि

यह सूरः मक्की है इस में, अ़रबी के १३५६ अक्षर, ३३५ शब्द, ३० आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

पारा नं०-२६ *

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ؗ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۙ

१- बड़ी बरकत वाला है, जिसके हाथ में सारी बादशाही है, और 'वह' हर चीज़ पर क़ादिर है;

الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ

२- 'जिसने' पैदा किया मौत और ज़िन्दगी को, ताकि तुम्हें आज़माए, कि तुम में से कौन अच्छा अ़मल करने वाला है? और 'वह' बड़ी ताक़त वाला, माफ़ करने वाला है।

الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ

३- 'जिसने' सात आसमान तह दर तह बनाए, फिर देखो! तुम को रह़मान की पैदाइश में कुछ कमी या कोई दराड़ दिखाई देती है?

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ

४- फिर दोबारा नज़र डालो, तुम्हारी नज़र थकी हारी, तुम्हारे ही ओर उल्टी लौट आएगी।

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ

५- और 'हमने' दुनिया के आसमान को दीपों (तारों) से सजाया और उनको शैतान पर मार भगाने का साधन बनाया, और उनके लिए भड़कती हुई आग का अ़ज़ाब भी तैयार कर रखा है।

وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ

६- और जिन लोगों ने अपने रब का इन्कार किया, उनके लिए जहन्नम का अ़ज़ाब है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है;

اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۙ

७- जब वे उसमें डाले जाएँगे तो उसके दहाड़ने की आवाज़ सुनेंगे, और वह भड़क रही होगी;

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ؕ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ

८- ऐसा लगेगा कि मारे जोश के फट पड़ेगी, जब भी कोई समूह उसमें डाला जाएगा तो उसके चौकीदार (कर्मचारी) उनसे पूछेंगे, ''क्या तुम्हारे पास कोई सचेत करने वाला नहीं आया था?''

قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۝

९- वे कहेंगे, ''क्यों नहीं!! ज़रूर हमारे पास सचेत करने वाला आया था, मगर हमने उसको झुठला दिया, और कहा, कि अल्लाह ने कुछ भी नहीं उतारा, तुम तो बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो।''

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝

१०- और कहेंगे, ''अगर हम सुनते या समझते, तो हम दोज़ख़ वालों में शामिल न होते।''

فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحْقًا لِّأَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝

११- इस तरह वे अपने गुनाह को क़ुबूल करेंगे, सो दोज़ख़ियों के लिए (अल्लाह की रह़मत से) दूरी है।

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝

१२- जो लोग बिना देखे अपने रब से डरते हैं, उनके लिए माफ़ी और बड़ा अज्र है।

وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

१३- और तुम अपनी बात को छिपाओ या ज़ाहिर करो, 'वह' तो सीनों के भेद तक को जानता है।

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝

१४- क्या 'वह' नहीं जानेगा जिसने पैदा किया, और 'वह' बारीक से बारीक चीज़ को देखने वाला ख़बर रखने वाला है।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ۝

१५- 'वही' तो है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को नर्म कर दिया, तुम उसकी राहों पर चलो फिरो और खाओ, अल्लाह के रिज़्क़ में से, 'उसी' की ओर दोबारा उठ कर जाना है।

أَأَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ۝

१६- क्या तुम उससे 'जो' आसमान में है निडर हो गये हो? कि 'वह' तुम्हें ज़मीन में धंसा दे, और 'वह' यकायक हिलने लगे।

أَمْ أَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ۝

१७- क्या तुम उससे 'जो' आसमान में है निडर हो गये हो? कि तुम पर पथराव करने वाली हवा भेज दे, फिर तुम्हें मालूम हो जाएगा कि मेरा डराना कैसा होता है?

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۝

१८- और इनसे पहले गुज़रे हुए लोग भी झुठला चुके हैं, तो देख लो! कैसा रहा मेरा अज़ाब?

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَيَقْبِضْنَ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَٰنُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ۝

१६- क्या उन्होंने अपने ऊपर परिन्दों को लाइन से पर फैलाते और समेटते हुए नहीं देखा? अल्लाह के सिवा कोई नहीं, जो उनको थाम लेता, बेशक 'वही' हर चीज़ को खूब देखता है।

أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ جُندٌ لَّكُمْ يَنصُرُكُم مِّن دُونِ الرَّحْمَٰنِ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ۝

२०- या 'वह' कौन है जो तुम्हारी सेना बनकर अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद करे, इन्कार करने वाले तो धोखे में पड़े हुए हैं।

أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ بَلْ لَجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ﴿٢١﴾

२१- या वह कौन है? जो तुम्हें रोज़ी दे, अगर 'वह' अपना रिज़्क़ रोक ले, (नहीं,) बल्कि यह तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए हैं।

أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾

२२- तो क्या वह व्यक्ति जो अपने मुंह के बल औंधा चलता हो, वह ज़्यादा सीधी राह पर है, या वह जो सीधा हो कर सीधी राह पर चल रहा है?

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۖ قَلِيلًا مَا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾

२३- कह दीजिए, ''वही है 'जिसने' तुमको पैदा किया, और तुम्हारे कान, और आंखें और दिल बनाए, तुम कम ही शुक्र अदा करते हो।''

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾

२४- कह दीजिए, ''वही है 'जिसने' तुमको ज़मीन में फैलाया और 'उसी' की ओर तुम इकट्ठे किये जाओगे।''

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾

२५- और कहते हैं, ''अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा?''

قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٢٦﴾

२६- कह दीजिए, ''इसका इल्म तो अल्लाह ही के पास है, और मैं तो बस खुला हुआ सचेत करने वाला हूँ''

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ هَٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدَّعُونَ ﴿٢٧﴾

२७- तो जब वे उसको क़रीब से देख लेंगे तो उनके चेहरे बिगड़ जाएँगे, जिन्होंने इन्कार किया, और कहा जाएगा, ''यही है वह चीज़ जिसकी तुम मांग कर रहे थे।''

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٨﴾

२८- कह दीजिए, ''तुमने यह भी सोचा! कि अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथियों को तबाह कर दे या हम पर रह़म करे, तो काफ़िरों को दुःख देने वाले अज़ाब से कौन पनाह देगा?''

قُلْ هُوَ الرَّحْمَٰنُ آمَنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٢٩﴾

२९- कह दीजिए, ''वह रह़मान है, 'उसी' पर हम ईमान लाए हैं और 'उसी' पर हमने भरोसा किया है, तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि खुली हुई गुमराही में कौन है।''?

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَعِينٍ ﴿٣٠﴾

३०- कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा! कि अगर तुम्हारा पानी नीचे (धरती में) उतर जाए, तो फिर कौन है जो तुम्हारे लिए बहता हुआ पानी ले आए?''



अनुवाद-सूरतुल्क़लमि

यह सूरः मक्की है इस में अ़रबी के १२६५ अक्षर, ३०६ शब्द, ५२ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- नून, क़सम है क़लम की, और जो लिखते हैं;	نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۙ
२- कि आप अपने रब की नेअ़मतों के कोई दीवाने नहीं हैं,	مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ۚ
३- और आपके लिए ऐसा अज्र (बदला) है जो कभी ख़त्म न होगा,	وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ۚ
४- और आप बड़े अख़्लाक़ (अच्छे स्वभाव) के मर्तबे पर हैं,	وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ۝
५- तो बहुत जल्द तुम भी देख लोगे और यह भी देख लेंगे,	فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ۙ
६- कि तुममें से कौन गुमराह है?	بِاَيِّىكُمُ الْمَفْتُوْنُ ۝
७- आप का 'रब' उसे भी अच्छी तरह जानता है, जो 'उसकी' राह से भटक गया हो, और उनको भी खूब जानता है जो सीधी राह पर हैं;	اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۠ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝
८- तो आप इन झुठलाने वालों की बात न मानिए।	فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝
९- और ये लोग चाहते हैं कि किसी तरह आप नर्म पड़ जाएँ, तो ये भी नर्म हो जाएँ।	وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ۝
१०- और आप किसी ऐसे व्यक्ति की बात न मानिएगा जो बहुत क़समें खाने वाला और ज़लील हो,	وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ۙ
११- कचोके लगाने वाला, चुगलियां खाने वाला;	هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۢ بِنَمِيْمٍ ۙ
१२- ख़ैर (भलाई) से रोकने वाला (माल में बुख़्ल करने वाला) ज़्यादती करने वाला, भारी गुनहगार है;	مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۙ
१३- क्रूर (सख़्त मिज़ाज) इसके अ़लावा बदनाम भी;	عُتُلٍّۢ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ۙ
१४- इस वजह से कि वह माल और सन्तान वाला है।	اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ۙ

१५- जब उसको 'हमारी' आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है, ''यह तो पहले लोगों के क़िस्से हैं।''	إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٥﴾
१६- जल्द ही 'हम' उसके सूँड (नाक) पर दाग़ लगाएँगे।	سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ ﴿١٦﴾
१७- 'हमने' उन लोगों को उसी तरह आज़माइश में डाला है, जिस तरह बाग़ वालों को आज़माइश में डाला था, जब उन्होंने क़सम खाई कि सुबह़ सवेरे ज़रूर हम इसका फल तोड़ेंगे;	إِنَّا بَلَوْنَاهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٧﴾
१८- और वे इसमें छूट की कोई गुन्जाइश नहीं रख रहे थे (अर्थात इन्शाअल्लाह न कहा),	وَلَا يَسْتَثْنُونَ ﴿١٨﴾
१६- अभी वे सो ही रहे थे कि आप के रब की ओर से गर्दिश का एक झोंका आया,	فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿١٩﴾
२०- तो वह ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती,	فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾
२१- तो सुबह होते ही उन्होंने एक-दूसरे को पुकारा,	فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾
२२- ''अगर तुमको काटना, तोड़ना है तो सुबह़ ही अपनी खेती पर पहुंच जाओ;''	أَنِ اغْدُوا عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِن كُنتُمْ صَارِمِينَ ﴿٢٢﴾
२३- तो वे चुपके-चुपके बातें करते हुए चल पड़े,	فَانطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ﴿٢٣﴾
२४- कि आज कोई मिस्कीन (मुहताज) तुम्हारे पास दाख़िल न होने पाए,	أَن لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُم مِّسْكِينٌ ﴿٢٤﴾
२५- और वे सुबह़ सवेरे पक्के इरादे के साथ निकले, मानो (मुहताजों को)! रोक देने की उन्हें क़ुदरत (सामर्थ्य) है;	وَغَدَوْا عَلَىٰ حَرْدٍ قَادِرِينَ ﴿٢٥﴾
२६- तो जब उसको देखा! तो कहने लगे, ''हम रास्ते से भटक गये।''	فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُّونَ ﴿٢٦﴾
२७- (नहीं) ''बल्कि हम मह़रूम (वंचित) होकर रह गये।''	بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٢٧﴾
२८- उनमें जो बेहतर था कहने लगा, ''क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि तुम तस्बीह़ क्यों नहीं करते?''	قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ﴿٢٨﴾
२६- वे पुकार उठे, ''पाक है हमारा रब! बेशक हम ही ज़ालिम थे।''	قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٩﴾
३०- तो वे आपस में एक-दूसरे की ओर रूख करके मलामत करने लगे;	فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَاوَمُونَ ﴿٣٠﴾

३१- उन्होंने कहा, ''अफ़सोस है हम पर! हम ही सरकश थे;

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ۝

३२- उम्मीद है कि हमारा 'रब' इसके बदले में हमें इससे बेहतर (बाग़) अता करेगा, हम अपने 'रब' की ओर रूजूअ़ होते हैं।''

عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ۝

३३- इसी तरह होता है अ़ज़ाब, और आख़िरत का अ़ज़ाब तो इससे कहीं बड़ा है, काश! ये लोग जानते।

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝

३४- परहेज़गारों के लिए उनके 'रब' के यहां नेअ़मत के बाग़ हैं।

اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝

३५- तो क्या 'हम' मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) को मुजरिमों जैसा कर देंगे?

اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ۝

३६- तुम लोगों को क्या हो गया है! कैसा फ़ैसला करते हो?-

مَا لَكُمْ ۣ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝

३७- क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो;

اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ۝

३८- कि उसमें तुम्हारे लिए वह कुछ है जो तुम पसंद करते हो;

اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ۝

३९- या तुमने 'हमसे' क़समें ले ली हैं जो क़ियामत के दिन तक बाक़ी रहने वाली हैं, कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जो तुम फ़ैसला करो?

اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ ۝

४०- उनसे पूछो, ''तुममें से कौन इसकी ज़मानत लेने वाला है?''

سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ۝

४१- क्या उन्होंने शरीक ठहरा रखे हैं,? तो लाएँ अपने शरीकों को, अगर वे सच्चे हैं।

اَمْ لَهُمْ شُرَكَاۗءُ ڔ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَاۗىِٕهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ۝

४२- जिस दिन पिंडुली खुल जाएगी (अर्थात मुसीबत आ पड़ेगी) और (काफिर) सज्दे के लिए बुलाए जाएँगे, तो वे सज्दः न कर सकेंगे।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝

४३- उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, ज़िल्लत उन पर छा रही होगी, और यह सज्दः की ओर उस ह़ालत में भी बुलाए जाते थे, कि भले चंगे थे।

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ۝

४४- तो आप मुझे और उन लोगों को छोड़ दीजिए, जो इस बात को झुठलाते हैं, 'हम' उनको धीरे-धीरे ले जाएँगे ऐसे तरीक़े पर, कि उन्हें ख़बर भी न होगी।

فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ۭ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

४५- और 'मैं' उन्हें मोहलत दिये जाता हूं, बेशक 'मेरा' उपाय बहुत मज़बूत है।	وَاُمۡلِیۡ لَهُمۡ ؕ اِنَّ كَیۡدِیۡ مَتِیۡنٌ ﴿۴۵﴾
४६- क्या आप उनसे कुछ बदला मांग रहे हैं कि वह इसके जुर्माने के बोझ से दबे जा रहे हैं;	اَمۡ تَسۡـَٔلُهُمۡ اَجۡرًا فَهُمۡ مِّنۡ مَّغۡرَمٍ مُّثۡقَلُوۡنَ ﴿ۚ۴۶﴾
४७- या उनके पास ग़ैब की ख़बर है कि (जिसे) वे लिखा करते हैं?	اَمۡ عِنۡدَهُمُ الۡغَیۡبُ فَهُمۡ یَكۡتُبُوۡنَ ﴿۴۷﴾
४८- तो आप अपने 'रब' के हुक्म पर सब्र कीजिए, और मछली वाले (यूनुस) की तरह न हो जाइए जबकि उन्होंने (उस हालत में) पुकारा और वह (ग़म व) ग़ुस्से से घुट रहे थे।	فَاصۡبِرۡ لِحُكۡمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنۡ كَصَاحِبِ الۡحُوۡتِ ۘ اِذۡ نَادٰی وَهُوَ مَكۡظُوۡمٌ ﴿۴۸﴾
४६- अगर उनके रब की नेअ़मत उनके साथ न होती तो वह बुरी ह़ालत के साथ मैदान में डाल दिये जाते;	لَوۡلَاۤ اَنۡ تَدٰرَكَهٗ نِعۡمَةٌ مِّنۡ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالۡعَرَآءِ وَهُوَ مَذۡمُوۡمٌ ﴿۴۹﴾
५०- तो उनके 'रब' ने उनको चुन लिया और उन्हें अच्छे लोगों में शामिल कर दिया।	فَاجۡتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِیۡنَ ﴿۵۰﴾
५१- और जब काफ़िर ज़िक्र (क़ुर्आन) को सुनते हैं तो ऐसा लगता है कि वे अपनी निगाहों की ज़ोर से तुम्हें फिसला देंगे और कहते हैं, ''यह तो मजनून है।''	وَاِنۡ یَّكَادُ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا لَیُزۡلِقُوۡنَكَ بِاَبۡصَارِهِمۡ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكۡرَ وَیَقُوۡلُوۡنَ اِنَّهٗ لَمَجۡنُوۡنٌ ﴿ۘ۵۱﴾
५२- और यह (क़ुर्आन) सारे संसार के लिए नसीह़त है।	وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكۡرٌ لِّلۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۵۲﴾



अनुवाद-सूरतुल्ह़ाक़्क़ति

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ११३४ अक्षर, २६० शब्द, ५२ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

अनुवाद	आयत
१- सचमुच होने वाली,	اَلْحَآقَّةُ ۙ
२- वह सचमुच होने वाली क्या है?	مَا الْحَآقَّةُ ۚ
३-और आप को क्या ख़बर है कि वह सचमुच होने वाली क्या है?	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ؕ
४- समूद ने और अ़ाद ने उस खड़खड़ाने वाली को झुठला दिया,	كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌ ۢ بِالْقَارِعَةِ ۝
५- तो समूद तो ज़ोरदार आवाज़ से हलाक कर दिये गये,	فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ۝
६- और अ़ाद ठंडी तेज़ हवा के ज़रिये हलाक किये गये।	وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۙ
७- 'उस' ने उस हवा को सात रात और आठ दिन तक उन पर मुसल्लत कर दिया था, तो तुम उन लोगों को देखते कि (इस तरह) ढेर हो गये जैसे खुजूर के खोखले वृक्षों के तने हों?	سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۚ
८- तो क्या तुम्हें उनमें से कोई बचा हुआ नज़र आता है?	فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ۝
९- और फ़िरऔन और इससे पहले के लोगों ने, और उल्टी हुई बस्ती वालों ने गुनाह के काम किये थे।	وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۚ
१०- तो उन्होंने अपने 'रब' के रसूल की नाफ़रमानी की, फिर 'उसने' उनको सख़्ती के साथ पकड़ लिया।	فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ۝
११- जब पानी ह़द से ज़्यादा हो गया तो 'हमने' तुम्हें नौका में सवार कर दिया;	اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ ۙ
१२- ताकि 'हम' तुम्हारे लिए इस घटना को नसीह़त बना दें, और ताकि उसे याद रखने वाले कान याद रखें;	لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ۝

१३- तो जब सूर में एक फूँक मारी जाएगी;	فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾
१४- और उठा ली जायेगी ज़मीन और पहाड़, फिर (दोनों को) एक ही बार में चूरा-चूरा कर दिया जाएगा;	وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ﴿١٤﴾
१५- तो उस दिन घटित होने वाली घटना घटित हो जाएगी;	فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾
१६- और आसमान फट जाएगा, तो वह उस दिन कमज़ोर हो जाएगा;	وَانشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ﴿١٦﴾
१७- और फ़रिश्ते उसके किनारों पर (आ जाएँगे), और उस रोज़ आप के रब के अर्श (सिंहासन) को आठ फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे।	وَالْمَلَكُ عَلَىٰ أَرْجَائِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَانِيَةٌ ﴿١٧﴾
१८- जिस दिन तुम पेश किये जाओगे, तुम्हारी कोई बात छिपी न रहेगी।	يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾
१९- तो जिसके दाहिने हाथ में आ़माल नामा (कर्म पत्र) दिया जाएगा, तो वह कहेगा, ''लो मेरा आ़माल नामा पढ़ लो;	فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ هَاؤُمُ اقْرَءُوا كِتَابِيَهْ ﴿١٩﴾
२०- मैं पहले ही यक़ीन रखता था कि मेरा हिसाब मेरे सामने पेश होने वाला है।''	إِنِّي ظَنَنتُ أَنِّي مُلَاقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾
२१- तो वह (व्यक्ति) अपनी पसंदीदा ज़िन्दगी में होगा,	فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾
२२- बुलन्द जन्नत के बाग़ों में,	فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾
२३- जिनके फल झुके हुए होंगे,	قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾
२४- खाओ और पियो मज़े से उन आ़माल के बदले में जो तुमने पिछले दिनों में आगे भेजे थे।	كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾
२५- और जिसके बाएं हाथ में आ़माल नामा दिया जाएगा, तो वह कहेगा, ''काश, मेरा आ़माल नामा मुझे न दिया जाता;	وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ فَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَهْ ﴿٢٥﴾
२६- और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है!	وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾
२७- 'काश' मौत ही मेरा फ़ैसला कर देती!	يَا لَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾
२८- मेरे माल ने मुझे कुछ भी फ़ायदा न पहुंचाया,	مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾
२९- मेरी जो हुकूमत (सत्ता) थी वह बरबाद हो गयी।''	هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيَهْ ﴿٢٩﴾
३०- ''इसे पकड़ो और इसको तौंक पहना दो;	خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ﴿٣٠﴾
३१- फिर भड़कती हुई आग में झोंक दो,	ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ﴿٣١﴾

ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۝

३२- फिर ऐसी ज़ंजीर में इसको जकड़ दो जिसकी माप सत्तर गज़ है,

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۝

३३- यह अज़ीम (महिमावान) अल्लाह पर ईमान नहीं रखता था,

وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝

३४- और न मिस्कीन को खाना खिलाने पर उभारता था,

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَاهُنَا حَمِيمٌ ۝

३५- तो आज इसका कोई दोस्त नहीं,

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ۝

३६- और न ग़िस्लीन (पीप) के अ़लावा कोई खाना है,

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۝

३७- उसे केवल गुनहगार ही खाएंगे।''

فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ۝

३८- तो मैं उन चीज़ों की क़सम खाता हूँ जिनको तुम देखते हो,

وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ۝

३६- और उन (चीज़ों) की भी जिन को तुम नहीं देखते;

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝

४०- कि यह क़ुर्आन कलाम है एक इज़्ज़तदार फ़रिश्ते का लाया हुआ,

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۚ قَلِيلًا مَا تُؤْمِنُونَ ۝

४१- और यह किसी शायर का कलाम (वाणी) नहीं, मगर तुम लोग बहुत ही कम ईमान लाते हो;

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۚ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ۝

४२- और यह किसी काहिन का कलाम (वाणी) नहीं तुम लोग बहुत ही कम समझते हो;

تَنْزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

४३- यह उतारा हुआ है रब्बुल आ़लमीन की ओर से।

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ ۝

४४- और अगर यह (रसूल) 'हमारे' ज़िम्मे कुछ बातें गढ़ लेते,

لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۝

४५- तो 'हम' उनका दाहिना हाथ पकड़ लेते;

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۝

४६- फिर उनकी रगे दिल (अर्थात गर्दने रग) काट देते,

فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ۝

४७- तो तुम में से कोई इस से बचाने वाला न होता,

وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ لِلْمُتَّقِينَ ۝

४८- और यह (किताब) परहेज़गारों के लिए नसीहृत है।

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُكَذِّبِينَ ۝

४६- और 'हम' जानते हैं कि तुममें से कुछ इसको झुठलाने वाले हैं,

وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

५०- और यह काफ़िरों के लिए बड़ा पछतावा है,

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۝

५१- और निश्चय ही यह बिल्कुल यक़ीनी सत्य है,

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

५२- तो आप रब्बे अज़ीम (महिमावान) के नाम की तस्बीह़ बयान करते रहिए।



अनुवाद-सूरतुल्मआरिजि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ६७७ अक्षर, २६० शब्द, ४४ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- सवाल किया, एक सवाल करने वाले ने ने अ़ज़ाब के विषय में, जो होने वाला है;	سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۙ
२- काफ़िरों पर, (जिसे) कोई उसको टालने वाला नहीं;	لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ۙ
३- यह (अज़ाब) अल्लाह की ओर से होगा, जो बुलन्दियों वाला है;	مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ ۙ
४- फ़रिश्ते और रूहें 'उसकी' ओर चढ़ कर जाती हैं, यह अ़ज़ाब उस दिन होगा, जिसकी मुद्दत (अवधि) पचास हज़ार साल की होगी।	تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ
५- तो आप ऐसा सब्र कीजिए जो 'सब्र जमील' हो (उत्तम धैर्य)।	فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا
६- वह उन लोगों की नज़र में दूर हैं,	اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۙ
७- और 'हमारी' नज़र में क़रीब,	وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ۙ
८- जिस दिन आसमान ऐसा हो जाएगा जैसे पिघला हुआ ताँबा,	يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۙ
९- और पहाड़ रंगीन ऊन की तरह होंगे,	وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۙ
१०- और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा,	وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۚ
११- (हालांकि) एक-दूसरे को सामने देख रहे होंगे, मुजरिम चाहेगा कि उस दिन के अ़ज़ाब से छुटकारा पाने के लिए फ़िदिया (मुक्ति प्रतिदान) में अपने बेटों को दे दे,	يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ۚ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِىْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۢ بِبَنِيْهِ ۙ
१२- और अपनी पत्नी, और अपने भाई को;	وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ۙ
१३- और अपने ख़ानदान को, जो उसे पनाह देता था,	وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِىْ تُـْٔوِيْهِ ۙ

१४- और धरती पर जितने आदमी हैं सब को दे दे, और अपने को बचा ले;	وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنجِيهِ ﴿١٤﴾
१५- हरगिज़ नहीं!! वह भड़कती हुई आग होगी;	كَلَّا ۖ إِنَّهَا لَظَىٰ ﴿١٥﴾
१६- खाल को उधेड़ देने वाली है,	نَزَّاعَةً لِّلشَّوَىٰ ﴿١٦﴾
१७- वह अपनी ओर बुलाएगी हर उस व्यक्ति को जिसने (हक़ से) पीठ फेरी और मुंह मोड़ा।	تَدْعُو مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٧﴾
१८- और (माल) जमा किया, फिर उसको सैंत कर रखा,	وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ﴿١٨﴾
१६- बेशक इन्सान बेसब्रा पैदा किया गया है,	إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿١٩﴾
२०- जब उसको तकलीफ़ पहुंचती है तो घबरा उठता है,	إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ﴿٢٠﴾
२१- और जब उसे अच्छी ह़ालत मिल जाती है, तो कंजूसी करने लगता है;	وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ﴿٢١﴾
२२- सिवाय नमाज़ियों के,	إِلَّا الْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾
२३- जो नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं,	الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ﴿٢٣﴾
२४- और जिनके मालों में एक निर्धारित ह़क़ है,	وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ﴿٢٤﴾
२५- सवाल करने वालों और महरूमों का;	لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿٢٥﴾
२६- और जो बदला पाने के दिन को सच मानते हैं,	وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٢٦﴾
२७- और जो अपने रब के अ़ज़ाब से डरते हैं,	وَالَّذِينَ هُم مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾
२८- बेशक उनके 'रब' का अ़ज़ाब है ही ऐसा, कि उससे बेख़ौफ़ न रहा जाए;	إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾
२६- और जो अपनी शर्मगाहों (गुप्तांगों) की रक्षा करने वाले हैं।	وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾
३०- सिवाय अपनी पत्नियों या लौंडियों के, उन्हें कुछ मलामत नहीं-,	إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾
३१- तो जो लोग इनके सिवा कुछ और चाहते हों, वे सीमा से बढ़ जाने वाले हैं,	فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣١﴾
३२- और जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद (प्रतिज्ञा) की रिआ़यत करने वाले हैं;	وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٣٢﴾

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ﴿۳۳﴾

३३- और जो अपनी गवाहियों को अदा करते हैं,

وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿۳۴﴾

३४- और जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं,

اُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ﴿۳۵﴾

३५- यही लोग जन्नतों (बागों) में इ़ज़्ज़त के साथ रहेंगे,

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿۳۶﴾

३६- तो क्या हो गया है उन काफ़िरों को कि आप की ओर दौड़े चले आ रहे हैं;

عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ﴿۳۷﴾

३७- दाएं और बाएं से, गिरोह के गिरोह हो कर?

اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ﴿۳۸﴾

३८- क्या उनमें से हर व्यक्ति यह उम्मीद रखता है कि वह नेअ़मत के बाग़ में दाख़िल कर दिया जाएगा?-

كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾

३६- हरगिज़ नहीं!! 'हमने' उन्हें उस चीज़ से पैदा किया, जिसे वे जानते हैं।

فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿۴۰﴾

४०- तो कुछ नहीं, मैं क़सम खाता हूं पूरबों और पश्चिमों के 'रब' की, कि बेशक 'हम' इस पर क़ुदरत (सामर्थ्यवान) रखने वाले हैं;

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿۴۱﴾

४१- कि उनकी जगह उनसे बेहतर लोग ले आएँ और हम पीछे रह जाने वाले नहीं।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿۴۲﴾

४२- तो आप उनको उनके व्यर्थ बातों में पड़े रहने दीजिए, कि यह उसी में खेलते रहें, यहां तक कि यह उस दिन से मुलाक़ात कर लें जिसका इनसे वादा किया जा रहा है;

يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ﴿۴۳﴾

४३- उस दिन यह अपनी क़ब्रों से तेज़ी के साथ निकलेंगे, जैसे (शिकारी) शिकार के जाल की ओर दौड़ते हों;

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿۴۴﴾

४४- उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी, 'यही' वह दिन होगा जिसका उनसे वादा किया जाता था।



अनुवाद-सूरतु नूहिन्

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ६४७ अक्षर, २३१ शब्द, २८ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

إِنَّآ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلٰى قَوْمِهٖٓ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝١

१- 'हमने' नूह को उनकी क़ौम की ओर भेजा, ''अपनी क़ौम को ख़बरदार कीजिए! इससे पहले कि उन पर दुःख देने वाला अ़ज़ाब आ जाए।''

قَالَ يٰقَوْمِ إِنِّى لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝٢

२- उन्होंने कहा, ''ऐ क़ौम! मैं तुम्हें स्पष्ट ख़बर देने वाला हूँ,

أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ ۝٣

३- कि 'अल्लाह' की इबादत करो और 'उसी' से डरो और मेरी पैरवी करो।''

يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلٰىٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللّٰهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝٤

४- 'वह' तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा और तुम को एक निश्चित समय तक मोहलत देगा, जब अल्लाह का निश्चित किया हुआ समय आ जाएगा तो उसको टाला न जा सकेगा, काश तुम जान लेते,

قَالَ رَبِّ إِنِّى دَعَوْتُ قَوْمِى لَيْلًا وَنَهَارًا ۝٥

५- (जब लोगों ने न माना तो नूह ने) कहा, ''ऐ रब! मैंने अपनी क़ौम को रात और दिन बुलाया,

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِىٓ إِلَّا فِرَارًا ۝٦

६- तो मेरे बुलावे ने उनका भागना और ही ज़्यादा कर दिया;

وَإِنِّى كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوٓا أَصَابِعَهُمْ فِىٓ ءَاذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝٧

७- और मैंने जब कभी उन्हें बुलाया, ताकि 'आप' उनको माफ़ कर दें, तो उन्होंने अपनी उंगलियां अपने कानों में ठूंस लीं, और कपड़े ओढ़ लिए, और ज़िद पर अड़े रहे और बड़ा ही घमंड किया।''

ثُمَّ إِنِّى دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝٨

८- फिर मैंने उन्हें बुलन्द आवाज़ से बुलाया।

ثُمَّ إِنِّىٓ أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝٩

९- फिर मैंने उनको खुले तौर पर भी समझाया, और चुपके-चुपके भी।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا

१०- तो मैंने कहा, ''अपने रब से माफ़ी की दुआ करो, 'वह' बहुत माफ़ करने वाला है;

يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا

११- वह तुम पर ख़ूब बरसने वाली बारिश भेजेगा,

وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا

१२- और मालों से और बेटों से तुम्हारी मदद फ़रमाएगा, और तुम्हारे लिए बाग़ और तुम्हारे लिए नहरें बना देगा।''

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا

१३- तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह की बड़ाई से डरते नहीं?-

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا

१४- हालांकि तुम्हें 'उसने' विभिन्न दशाओं में पैदा किया है।

أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا

१५- क्या तुम देखते नहीं! कि किस तरह अल्लाह ने आसमान को तह दर तह बनाया,

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا

१६- और उनमें चांद को नूर और सूरज को चिराग़ बनाया।

وَاللَّهُ أَنْبَتَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا

१७- और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से खास तरीक़े से पैदा किया।

ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا

१८- फिर 'वह' तुम्हें उसी में ले जाएगा और तुम्हें (उसी से) निकालेगा।

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا

१६- और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया,

لِتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا

२०- ताकि तुम उसके खुले हुए रास्तों में चलो।

قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَنْ لَمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا

२१- नूह़ ने कहा, ''ऐ मेरे रब! उन्होंने मेरी नाफ़रमानी की, और उनकी बात मानी जिनके माल और औलाद ने उनको नुक़सान ही (ज़्यादा) पहुंचाया है-

وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا

२२- और उन्होंने बहुत बड़ी चाल चली,

وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا

२३- और कहने लगे, 'हरगिज़ न छोड़ो अपने मअ़बूदों (उपास्यों) को, और कभी न छोड़ना 'वद्य' (देव) को, और न 'सुवाअ़' (देव) को, और न 'यगूस,' (देव) को और न 'यअूक़' (देव), और 'नस्र' (देव) को;

وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا

२४- और उन्होंने बहुत लोगों को गुमराह किया है, और 'तू' इन ज़ालिमों की गुमराही को और बढ़ा दे।''

مِمَّا خَطِيئَاتِهِمْ أُغْرِقُوا فَأُدْخِلُوا نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا

२५- वे अपने गुनाहों की वजह से ग़र्क कर (डुबा) दिये गये, फिर आग में दाख़िल कर दिये गये, तो अल्लाह के सिवा उन्होंने अपना कोई मददगार नहीं पाया।

وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا

२६- और नूह ने कहा, ''ऐ मेरे रब! 'तू' धरती पर काफ़िरों (इन्कार करने वालों) में से किसी बसने वाले को न छोड़,

إِنَّكَ إِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا

२७- अगर 'तू' ने इनको छोड़ दिया तो वे 'तेरे' बन्दों को गुमराह करेंगे, और उनसे जो औलाद होगी वह भी दुराचार, काफ़िर ही होगी।

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا

२८- ऐ मेरे रब! मुझे माफ़ कर दे और मेरे मां-बाप को, और उनको जो मेरे घर में ईमान वाला बन कर दाख़िल हो, और ईमान वाले मर्दों, और ईमान वाली औरतों को भी; और ज़ालिम लोगों की हलाकत (विनाश) को और बढ़ा दे।''



अनुवाद-सूरतुल् जिन्नि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ११२६ अक्षर, २८७ शब्द, २८ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ

१- कह दीजिए, ''मेरे पास वह़्य आयी है कि जिन्नात के एक गिरोह ने मेरी ओर बात (क़ुर्आन) सुनने के लिए ध्यान दिया, तो उन्होंने कहा कि 'हमने अ़जीब क़ुर्आन सुना है;

يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۙ

२- जो भालाई और सूझ-बूझ की राह दिखाता है, तो हम उस पर ईमान ले आए, और हम अपने रब के साथ हरगिज़ किसी को साझीदार न ठहराएंगे;

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ

३- और बहुत बुलन्द है हमारे 'रब' की इ़ज़्ज़त, वह न पत्नी रखता है और न औलाद;

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ

४- और यह कि 'हममें' जो मूर्ख हैं, वह अल्लाह के विषय में झूठ गढ़ते हैं;

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۙ

५- और हम यह समझते थे कि इन्सान और जिन्न अल्लाह के विषय में झूठ नहीं बोलते,

وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۙ

६- और यह कि कुछ मर्द इन्सानों में से ऐसे थे जो जिन्नात के मर्दों की पनाह लिया करते थे,(इससे) उनकी सरकशी और बढ़ गई थी;

وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ

७- और यह कि उनका भी यही गुमान था, जैसा कि तुमने गुमान किया था, कि अल्लाह दोबारा किसी को ज़िन्दा न करेगा;

وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۙ

८- और यह कि 'हमने' आसमान को टटोला, तो 'हमने' उसे इस ह़ाल में पाया कि वह सख़्त चौकीदारों और शहाबों (शोलों) से भरा हुआ है;

وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۖ فَمَن يَسْتَمِعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شِهَابًا رَّصَدًا

९- और यह कि 'हम' उसमें बैठने की जगहों पर बातें सुनने के लिए बैठा करते थे, तो जो सुनना चाहे, तो वह अपने लिए घात में लगा एक अंगारा (उल्का़) पाएगा;

وَأَنَّا لَا نَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَن فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا

१०- और यह हम नहीं जानते कि उन के साथ जो धरती में हैं, बुराई का इरादा किया गया है, या उनके रब ने उनके लिए भलाई का इरादा किया है;

وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِنَّا دُونَ ذَٰلِكَ ۖ كُنَّا طَرَائِقَ قِدَدًا

११- और यह कि हममें से कुछ नेक हैं और कुछ उसके अतिरिक्त, हम विभिन्न तरीक़ों पर थे;

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن نُّعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَن نُّعْجِزَهُ هَرَبًا

१२- और हम ने यह समझ लिया है कि हम न धरती में अल्लाह को हरा (पराजित कर) सकते हैं, और न (आसमान में कहीं) भाग कर उसको थका सकते हैं;

وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ آمَنَّا بِهِ ۖ فَمَن يُؤْمِن بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا

१३- और जब हमने हिदायत को सुन लिया, तो हम उस पर ईमान ले आए, तो जो व्यक्ति अपने रब पर ईमान लाएगा, तो उसे न किसी कमी का डर होगा और न किसी ज़ुल्म का;

وَأَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ ۖ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا

१४- और यह कि 'हममे' से कुछ मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं और हममें से कुछ हक़ से हटे हुए, तो जिस ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया तो उसने भलाई की राह ढूंढ़ ली;

وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا

१५- और जो हक़ से हटे हुए हैं, वे जहन्नम का ईंधन होंगे।''

وَأَن لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَاهُم مَّاءً غَدَقًا

१६- और यह कि अगर ये लोग सीधी राह पर क़ायम हो जाते तो हम उन्हें पीने को बहुत सा पानी देते;

لِّنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَمَن يُعْرِضْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا

१७- ताकि 'हम' इसमें उनका इम्तिहान लें, और जो व्यक्ति अपने रब के ज़िक्र से मुंह मोड़ेगा, तो 'वह' उसे चढ़ते हुए अज़ाब में डाल देगा।

وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا

१८- और यह कि मस्जिदें (सब सज्दे) अल्लाह ही के लिए हैं, तो तुम अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो।

وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا

१९- और जब अल्लाह का बन्दा 'उसको' पुकारने के लिए खड़ा होता है, तो यह लोग उस पर जत्थे बन कर टूट पड़ते हैं।

قُلْ إِنَّمَآ أَدْعُوا۟ رَبِّى وَلَآ أُشْرِكُ بِهِۦٓ أَحَدًا ۝٢٠

२०- कह दीजिए, ''मैं तो केवल अपने 'रब' को ही पुकारता हूँ, और 'उसके' साथ किसी को साझी नहीं ठहराता।''

قُلْ إِنِّى لَآ أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝٢١

२१- कह दीजिए, ''मैं तुम्हारे लिए न किसी नुक़सान का अधिकार रखता हूँ और न किसी भलाई का।''

قُلْ إِنِّى لَن يُجِيرَنِى مِنَ ٱللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِن دُونِهِۦ مُلْتَحَدًا ۝٢٢

२२- कह दीजिए, ''अल्लाह के मुक़ाबले में मुझे कोई पनाह नहीं दे सकता और न मैं 'उसके' सिवा कोई पनाह की जगह पा सकता हूं।''

إِلَّا بَلَٰغًا مِّنَ ٱللَّهِ وَرِسَٰلَٰتِهِۦ ۚ وَمَن يَعْصِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَإِنَّ لَهُۥ نَارَ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۝٢٣

२३- हाँ, अल्लाह की बात और 'उसका' पैग़ाम पहुंचा देना (ही मेरे ज़िम्मे है), और जो व्यक्ति अल्लाह और 'उसके' रसूल की नाफ़रमानी करेगा, उनके लिए जहन्नम की आग है वे हमेशा उसी में रहेंगे।

حَتَّىٰٓ إِذَا رَأَوْا۟ مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ۝٢٤

२४- यहां तक कि जब ये लोग वह (दिन) देख लेंगे, जिसका इनसे वादा किया जाता है तब जान लेंगे कि किसके मददगार कमज़ोर हैं और किसका जत्था संख्या में कम है।

قُلْ إِنْ أَدْرِىٓ أَقَرِيبٌ مَّا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُۥ رَبِّىٓ أَمَدًا ۝٢٥

२५- कह दीजिए, ''मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का वादा तुमसे किया जा रहा है वह क़रीब है या मेरे 'रब' ने उसकी मुद्दत (अवधि) लम्बी कर दी है;

عَٰلِمُ ٱلْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِۦٓ أَحَدًا ۝٢٦

२६- ग़ैब (परोक्ष) का जानने वाला है, और 'वह' अपने ग़ैब को किसी पर ज़ाहिर नहीं करता;

إِلَّا مَنِ ٱرْتَضَىٰ مِن رَّسُولٍ فَإِنَّهُۥ يَسْلُكُ مِنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِۦ رَصَدًا ۝٢٧

२७- सिवाय उसके जिसे उसने रसूल की हैसियत से पसंद कर लिया हो, तो उसके आगे और पीछे से उसके लिए निगहबान (रक्षक) लगा देता है,

لِّيَعْلَمَ أَن قَدْ أَبْلَغُوا۟ رِسَٰلَٰتِ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَىْءٍ عَدَدًۢا ۝٢٨

२८- ताकि वह जान लें कि उन्होंने अपने 'रब' के पैग़ाम पहुंचा दिये, और 'वह' उनके पूरे हालात को घेरे हुए है, और हर चीज़ को 'उसने' गिन रखा है।



अनुवाद-सूरतुल् मुज़्ज़म्मिलि

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ८६४ अक्षर, २०० शब्द, २० आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- ऐ कपड़े में लिपटने वाले,	يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۝
२- रात को (नमाज़ में) खड़े रहा करो, मगर थोड़ी सी रात;	قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝
३- आधी रात या उससे थोड़ा कम,	نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۝
४- या उससे कुछ ज़्यादा कर लो, और क़ुर्आन को तर्तीब (ठहर-ठहर कर) के साथ पढ़ो।	اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ۝
५- 'हम' आप पर बहुत जल्द एक भारी कलाम डालने वाले हैं।	اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ۝
६- कुछ शक नहीं कि रात का उठना जी को दबाने के लिए ज़्यादा प्रभावी और बात को ज़्यादा दुरूस्त रखने वाला है;	اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ۝
७- आप दिन को काम में व्यस्त रहते हैं,	اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ۝
८- और अपने रब के नाम का ज़िक्र करते रहें और सबसे हट कर 'उसी' की ओर ध्यान करें।	وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ۝
९- ('वही') पूरब और पश्चिम का रब है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं; तो 'उसी' को अपना करता-धरता बना लो।	رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۝
१०- और सब्र कीजिए, यह लोग जो कुछ कहते हैं, और भले तरीक़े से उनसे अलग हो जाइए;	وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ۝

११- और मुझे और उन झुठलाने वाले खुशहाल लोगों का मामला छोड़ दीजिए और उनको थोड़ी सी मोहलत दीजिए,

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا

१२- कुछ शक नहीं कि 'हमारे' पास बेड़ियां हैं और भड़कती हुई आग है,

إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا

१३- और गले में अटकने वाला खाना है, और दुःख देने वाला अज़ाब है।

وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا

१४- जिस दिन धरती और पहाड़ कांप उठेंगे और पहाड़ बिखरी हुई रेत बन जाएँगे।

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَهِيلًا

१५- 'हमने' तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा, जो तुम्हारे ऊपर गवाह है, जैसा कि 'हमने' फ़िरऔन की ओर रसूल भेजा था;

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا

१६- तो फ़िरऔन ने रसूल की नाफ़रमानी की, तो 'हमने' उसे सख़्त वबाल में पकड़ लिया;

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا

१७- अगर तुमने भी इन्कार किया तो उस दिन से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा;

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا

१८- आसमान उसकी वजह से फट जाएगा, 'उसका' वादा तो हो कर रहेगा?

السَّمَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهِ ۚ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا

१९- यह (क़ुर्आन) तो एक नसीहत है, तो जिसका जी चाहे अपने 'रब' का रास्ता अपना ले।

إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا

२०- आप का रब खूब जानता है कि आप और आप के साथ के लोग दो तिहाई रात के क़रीब और आधी रात, और तिहाई रात तक (नमाज़ में) खड़े रहते हैं, और अल्लाह रात और दिन के समय को निर्धारित करता है, 'वह' जानता है कि उसकी ठीक-ठीक गिनती नहीं कर सकते, तो उसने तुम पर मेहरबानी की, तो तुम क़ुर्आन से उतना हिस्सा पढ़ लिया करो जो आसान हो, 'वह' जानता है कि तुम में मरीज़ भी होंगे, और कुछ वह

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَنْ لَنْ تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ أَنْ سَيَكُونُ مِنْكُمْ مَرْضَىٰ ۙ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ ۙ وَآخَرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۚ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا

الزَّكٰوةَ وَ اَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۭ وَمَا تُقَدِّمُوْا
لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا
وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ۭ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

लोग भी होंगे जो ज़मीन में सफ़र करते हैं और अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करते हैं, और कुछ अल्लाह की राह में क़िताल (युद्ध) करेंगे, तो तुम क़ुर्आन में से उतना हिस्सा पढ़ लिया करो जितना कि आसानी से पढ़ा जा सके; और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात देते रहो, और अल्लाह को नेक क़र्ज़ दो, और अच्छा क़र्ज़; तुम जो भलाई अपने लिए भेजोगे उसे अल्लाह के पास पाओगे, वह बेहतर और बदले में बहुत बढ़ कर होगा, और अल्लाह से माफ़ी मांगते रहो, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रहम वाला है।



अनुवाद-सूरतुल्मुद्दस्सिर

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ११४५ अक्षर, २५६ शब्द, ५६ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- ऐ कपड़े में लिपटने वाले,	يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝
२- उठिए और ख़बरदार कीजिए;	قُمْ فَاَنْذِرْ ۝
३- और अपने 'रब' की बड़ाई बयान कीजिए,	وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝
४- और अपने कपड़ों को पाक रखिए,	وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝
५- और (बुतों की) गन्दगी से अलग रहिए;	وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝
६- और किसी पर एह़सान इसलिए न कीजिए कि ज़्यादा (बदला) ह़ासिल हो जाए,	وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝
७- और अपने 'रब' के लिए सब्र कीजिए।	وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝
८- तो जब सूर फूँका जाएगा,	فَاِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ۝
९- तो वह दिन बड़ा ही सख़्त दिन होगा,	فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۝
१०- इन्कार करने वालों पर आसान न होगा,	عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ۝
११- छोड़ दो 'मुझे' और उस व्यक्ति को जिसे 'मैंने' अकेला पैदा किया है,	ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۝
१२- और उसको बहुत सा माल दिया;	وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۝
१३- और हाज़िर रहने वाले बेटे (दिये),	وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ۝
१४- और 'मैंने' उसके लिए हर तरह का सामान दिया,	وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ۝
१५- फिर वह उम्मीद रखता है कि 'मैं' उसे और ज़्यादा दूंगा,	ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ۝
१६- ऐसा हरगिज़ नहीं, यह हमारी आयतों का विरोधी है,	كَلَّا ۭ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ۝
१७- जल्द ही 'मैं' उसे 'सऊद' (अर्थात दोज़ख के पहाड़) पर चढ़ा दूंगा।	سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ۝

إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾

१८- उसने सोचा और एक बात बनाई,

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾

१६- तो उस पर अल्लाह की मार हो कैसी बात बनाई?-

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢٠﴾

२०- फिर यह मारा जाए उसने कैसी बात बनाई?

ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾

२१- फिर उसने देखा,

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾

२२- फिर मुंह बनाया और ज़्यादा मुंह बनाया,

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾

२३- फिर मुंह मोड़ा, और फिर घमंड किया;

فَقَالَ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ﴿٢٤﴾

२४- तो बोला, ‘‘यह एक जादू है जो पहले से चला आ रहा है,

إِنْ هَٰذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾

२५- यह इन्सान का कलाम (वाणी) है।’’

سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾

२६- ‘मैं’ जल्द ही उसे ‘सक़र’ (दोज़ख़) में झोंक दूँगा;

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾

२७- और तुम्हें क्या मालूम कि सक़र क्या है?-

لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾

२८- न वह बाक़ी रखेगी, और न छोड़ेगी;

لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾

२६- वह शरीर को बिगाड़ देने वाली है,

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾

३०- उस पर उन्नीस (फ़रिश्ते) नियुक्त हैं;

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۙ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا ۙ وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ ۙ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۚ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾

३१- और ‘हमने’ उस आग के निगरां फ़रिश्ते बनाए हैं, और ‘हमने’ उनकी संख्या को इन्कार करने वालों के लिए मुसीबत और आज़माइश बना कर रखा है, ताकि अह्ले किताब को यक़ीन हो जाए, और ईमान वालों का ईमान और बढ़ जाए, अह्ले किताब और ईमान वाले किसी शक में न पड़ें; और जिन लोगों के दिलों में रोग है, और काफ़िर कहेंगे, ‘‘इस मिसाल से अल्लाह का क्या मक़सद है?’’ इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है, और जिसे चाहता है सीधी राह दिखाता है, और तुम्हारे रब की सेनाओं को खुद ‘उसके’ सिवा कोई नहीं जानता, और यह (क़ुर्आन) इन्सान के लिए नसीहत है;

كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾

३२- हाँ, चाँद की क़सम!

وَاللَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ﴿٣٣﴾

३३- और रात की जब वह पीठ फेरे,

وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ ﴿٣٤﴾

३४- और सुबह की जब वह रोशन हो जाए,

إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾

३५- कि वह (आग) एक बहुत बड़ी (आफ़त) है,

३६- बशर (इन्सानों) को ख़बरदार करने वाली;	نَذِيرًا لِّلْبَشَرِ
३७- जो तुममें से आगे बढ़ना चाहे या पीछे रहना चाहे;	لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ
३८- हर व्यक्ति जो कुछ उसने कमाया है उसके बदले रेहन (गिरवी) है,	كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ
३९- सिवाय दाएं वालों के;	اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ
४०- वे जन्नत के बागों में होंगे, वहाँ वे पूछ रहे होंगे;	فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ
४१- मुजरिमों से,	عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ
४२- ''तुम्हें क्या चीज़ 'सक़र' (दोज़ख) में ले आयी?''	مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ
४३- वे कहेंगे, ''हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे,	قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ
४४- और न मिस्कीनों (मोहताजों) को खाना खिलाते थे,	وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ
४५- और बहस करने वालों के साथ हम भी बहस करते थे,	وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ
४६- और बदला के दिन को झुठलाते थे,	وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ
४७- यहां तक कि यक़ीनी चीज़ (मौत) हमारे सामने आ गयी।''	حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ
४८- तो सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश कुछ भी फ़ायदा न पहुंचा सकेगी।	فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ
४९- उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से मुंह फेर रहे हैं,	فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ
५०- जैसेः- बिदके हुए जंगली गधे है;	كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ
५१- जो शेर से (डर कर) भाग जाते हैं।	فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ
५२- बल्कि उनमें से हर व्यक्ति चाहता है कि उसे खुला सहीफ़ा (किताबें)दिया जाए;	بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً
५३- ऐसा हरगिज़ नहीं, बल्कि यह आख़िरत से डरते नहीं।	كَلَّا ۭ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ
५४- कुछ शक नहीं कि यह (क़ुर्आन) तो एक नसीहत है,	كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ
५५- तो जिसका जी चाहे नसीहत हासिल कर ले।	فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ
५६- और याद भी तभी रखेंगे जब अल्लाह चाहे, 'वह' डरने के लायक़ और बख़्शिश का मालिक है।	وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ



अनुवाद-सूरतुल्क़ियामति

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ६८२ अक्षर, १६४ शब्द, ४० आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- मैं क़सम खाता हूँ क़ियामत के दिन की,	لَآ أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۝
२- और क़सम खाता हूं ऐसे नफ़्स (आत्मा) की, जो अपने ऊपर मलामत करे;	وَلَآ أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝
३- क्या इन्सान यह समझता है कि 'हम' हरगिज़ उसकी हड्डियों को इकट्ठा न करेंगे?	أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهُ ۝
४- क्यों नहीं! 'हम' तो इस पर क़ादिर हैं कि उसकी पोरों तक को ठीक कर दें?	بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى أَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهُ ۝
५- बल्कि इन्सान चाहता है कि अपने आगे की ज़िन्दगी में भी बुरे कर्म करता रहे,	بَلْ يُرِيْدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۝
६- पूछता है, ''क़ियामत का दिन कब आएगा?''	يَسْـَٔلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ۝
७- तो जब निगाह चौंधिया जाए;	فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝
८- और चांद बेनूर हो जाए;	وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝
९- और सूरज और चांद इकट्ठे कर दिये जाएँ;	وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝
१०- उस दिन इन्सान कहेगा, ''कहां भाग जाऊँ?''	يَقُوْلُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ۝
११- बेशक कहीं पनाह नहीं;	كَلَّا لَا وَزَرَ ۝
१२- उस दिन केवल तेरे रब ही के पास ठिकाना होगा;	إِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ الْمُسْتَقَرُّ ۝
१३- उस दिन इन्सान को उसका सब अगला पिछला किया हुआ बता दिया जाएगा;	يُنَبَّؤُا الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۝
१४- बल्कि इन्सान अपनी ह़ालत पर खुद ही निगाह रखता है;	بَلِ الْإِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۝

१५- और चाहे वह कितने ही हीले बहाने तलाश करे।	وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ۝
१६- (ऐ मुहम्मद) आप अपनी ज़बान को हरकत न दें इस (क़ुर्आन) को जल्दी याद करने के लिए;	لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ۝
१७- 'हमारे' ज़िम्मे है उसका जमा करना और पढ़वा देना;	اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۝
१८- तो जब 'हम' उसको पढ़ें, तो फिर आप भी वैसे ही पढ़ें,	فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ۝
१९- फिर उसे स्पष्ट करना 'हमारे' ज़िम्मे है।	ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ۝
२०- बल्कि (लोगों!) तुम दुनिया से मुहब्बत करते हो;	كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۝
२१- और आख़िरत को छोड़ देते हो।	وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۝
२२- उस दिन बहुत से चेहरे-तरो ताज़ा होंगे,	وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۝
२३- अपने 'रब' की ओर देख रहे होंगे।	اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝
२४- और बहुत से चेहरे उस दिन उदास होंगे;	وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۝
२५- वे समझ रहे होंगे कि उनके साथ कमरतोड़ मामला होने वाला है।	تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۝
२६- देखो! जब जान हंसली (कण्ठ) तक पहुंच जाएगी;	كَلَّا اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۝
२७- और लोग कहने लगेंगे ''है कोई झाड़- -फूंक करने वाला?''	وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ۝
२८- और वह समझेगा कि यह सबसे जुदाई का समय है;	وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۝
२९- और पिंडुली से पिंडली लिपट जाएगी;	وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۝
३०- उस दिन तुझ को अपने रब की ओर जाना होगा।	اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ اِلْمَسَاقُ ۝
३१- तो उसने न तस्दीक़ की और न नमाज़ पढ़ी,	فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۝
३२- और झुठलाया और मुंह मोड़ा,	وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝
३३- फिर अपने घर वालों की ओर अकड़ता हुआ चल दिया,	ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ۝
३४- अफ़सोस है! तुझ पर? फिर अफ़सोस है!!	اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۝
३५- फिर अफ़सोस है!!! तुझ पर, फिर अफ़सोस है;	ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۝
३६- क्या इन्सान यह समझता है कि उसे यूँ ही छोड़ दिया जाएगा?	اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ۝

३७- क्या वह वीर्य की एक बूंद न था? जो (रह़म में) टपकाया जाता है?	اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ۝
३८- फिर वह खून का लोथड़ा था, तो अल्लाह ने उसको (शरीर) बनाया और उस (के अंगों) को दुरूस्त किया;	ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ۝
३६- फिर उससे जोड़ा बनाया, मर्द और औ़रत;	فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝
४०- क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे?	اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ۝



अनुवाद-सूरतुद्दह्रि

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के १०६६ अक्षर, २४६ शब्द, ३१ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْئًا مَّذْكُورًا ۝

१- बेशक इन्सान पर एक ऐसा वक्त भी आ चुका है, जिसमें कि वह कोई ऐसी चीज़ न था, ''जिसका ज़िक्र किया जाता।''

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝

२- 'हमने' इन्सान को एक मिले-जुले नुत्फ़ा (वीर्य) से पैदा किया, ताकि उसे आज़माएं, तो 'हमने' उसे सुनने, देखने वाला बनाया।

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ۝

३- 'हमने' उसे राह दिखाया, तो वह (चाहे) शुक्रगुज़ार हो या नाशुक्रा हो।

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلَ وَأَغْلَالًا وَسَعِيرًا ۝

४- 'हमने' इन्कार करने वालों के लिए ज़ंजीरें और तौक़ और दहकती हुई आग तैयार कर रखी है।

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۝

५- भले लोग ऐसे जाम से पिएँगे जिसमें काफूर मिला हुआ होगा;

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۝

६-एक ऐसा स्रोत होगा! जिससे अल्लाह के बन्दे पिएँगे, इस तरह कि उसे बहाकर (नहरें जहां चाहेगे) ले जाएँगे;

يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۝

७- यह लोग नज़र (मन्नत) पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं, जिसकी मुसीबत हर ओर से फैली हुई होगी;

وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ۝

८- और इसके बावजूद कि उनको खुद खाने की ख्वाहिश है, मिस्कीनों को, और यतीमों को, और कैदियों को खिलाते हैं।

إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ۝

९- 'हम' तुम्हें केवल अल्लाह को राज़ी करने के लिए खिलाते हैं, 'हम' तुमसे कोई बदला या शुक्रिया नहीं चाहते।

१०- 'हम' अपने 'रब' से उस दिन से डरते हैं जिस दिन कि सख़्त परेशानी छायी होगी।	إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ۝
११- तो अल्लाह उनको उस दिन की मुसीबत से बचा लेगा और ताज़गी और ख़ुशी देगा;	فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّ سُرُوْرًا ۝
१२- और उन्होंने जो सब्र किया, उसके बदले में उन्हें जन्नत और रेशम (का लिबास) अ़ता किया जाएगा;	وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝
१३- वहां वे तख़्तों पर तकिया लगाए बैठे होंगे, न उन्हें धूप की सख्ती महसूस होगी और न सख़्त सर्दी की तेज़ी;	مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۝
१४- और उन पर उस (बाग़) के साये क़रीब होंगे, और उसके फल झुके हुए होंगे,	وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۝
१५- उनके आगे चांदी के बरतन और शीशे के गिलास गर्दिश में होंगे-	وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا ۝
१६- शीशे भी चांदी के- जो ठीक अन्दाज़ा करके बनाए गये होंगे;	قَوَارِيْرَا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ۝
१७- और वहां वे एक और जाम पिएँगे जिसमें ज़न्जबील (सोंठ) मिली हुई होगी।	وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۝
१८- यह एक स्रोत होगा, जिसका नाम सल-सबील है।	عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ۝
१९- और उनकी सेवा में ऐसे लड़के भाग दौड़ कर रहे होंगे जो हमेशा उसी आयु के रहेंगे, जब तुम उन्हें देखोगे तो समझोगे कि बिखरे हुए मोती हैं;	وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ۝
२०- और जब तुम देखोगे तो बहुत सी नेअ़मतें और विशाल राज्य दिखाई देगा;	وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ۝
२१- उनके ऊपर हरे बारीक रेशमी कपड़े होंगे, और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए जाएँगे और उनका रब उन्हें शराबे-तहूर (पवित्र पेय) पिलाएगा।	عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۚ وَّحُلُّوْا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ۝
२२- ''यह है तुम्हारा बदला और तुम्हारी कोशिश का शुक्रिया।''	اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۝

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ﴿٢٣﴾

२३- 'हमने' आप पर क़ुर्आन उतारा थोड़ा-थोड़ा कर के;

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا أَوْ
كَفُورًا ﴿٢٤﴾

२४- तो आप अपने 'रब' के हुक्म और फ़ैसले के लिए सब्र से काम लीजिए, और उन लोगों में से किसी गुनहगार, या नाशुक्रे की बात न मानिए;

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٢٥﴾

२५- और अपने रब का ज़िक्र कीजिए सुबह और शाम,

وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾

२६- और रात के कुछ हिस्से में भी 'उसे' सज्दः कीजिए, और रात को देर तक उसकी तस्बीह़ कीजिए।

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ
وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ﴿٢٧﴾

२७- यह लोग जल्द ह़ासिल होने वाली चीज़ (दुनिया) से मुह़ब्बत करते हैं, और एक भारी दिन को अपने पीछे छोड़ देते हैं।

نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ ۖ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا
أَمْثَالَهُمْ تَبْدِيلًا ﴿٢٨﴾

२८- 'हमने' ही उनको पैदा किया है, और उनके जोड़ मज़बूत बनाए, और 'हम' जब चाहें उनके जैसे लोग बदल दें।

إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ
رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٢٩﴾

२९- यह एक नसीह़त है, तो जो चाहे अपने रब की ओर जाने की राह अपना ले;

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٠﴾

३०- और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते जब तक कि अल्लाह ही न चाहे, बेशक अल्लाह इ़ल्म वाला, ह़िकमत वाला है।

يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظَّالِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣١﴾

३१- 'वह' जिसे चाहता है अपनी रह़मत में दाख़िल करता है, और ज़ालिमों के लिए उसने दु:ख देने वाला अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।



अनुवाद-सूरतुल्मुर्सलाति

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के ८४६ अक्षर, १८१ शब्द, ५० आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- उन हवाओं की क़सम! जो लगातार भेजी जाती हैं,	وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ۝
२- तो खूब तेज़ हो जाती हैं,	فَالْعَاصِفَاتِ عَصْفًا ۝
३- और (बादलों को) उठाकर फैलाती हैं,	وَالنَّاشِرَاتِ نَشْرًا ۝
४- फिर उनको फाड़ कर अलग करती हैं,	فَالْفَارِقَاتِ فَرْقًا ۝
५- फिर याददिहानी डालती हैं, (अर्थात फ़रिश्तों की क़सम! जो वह्य लाते हैं),	فَالْمُلْقِيَاتِ ذِكْرًا ۝
६- हुज्जत क़ायम करने या ख़बरदार करने के लिए (ताकि उज्र दूर कर दिया जाए),	عُذْرًا أَوْ نُذْرًا ۝
७- जिसका वादा तुमसे किया जा रहा है वह होकर रहेगा।	إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٌ ۝
८- तो जब सितारे बेनूर कर दिये जाएँगे,	فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ ۝
९- और जब आसमान फट जाएगा,	وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ۝
१०- और पहाड़ चूर-चूर कर दिये जाएँगे,	وَإِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۝
११- और जब रसूलों को इकट्ठा किया जाएगा।	وَإِذَا الرُّسُلُ أُقِّتَتْ ۝
१२- किस दिन के लिए (उनका मामला) टाला गया है?-	لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ ۝
१३- फ़ैसले के दिन के लिए,	لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۝
१४- और तुम्हें क्या मालूम कि फ़ैसले का दिन क्या है?-	وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۝
१५- तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए।	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝
१६- क्या 'हमने' अगले लोगों को तबाह नहीं किया?-	أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ۝

१७- फिर बाद वालों को उनके पीछे तबाह करते रहे?-	ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِیْنَ ﴿۱۷﴾
१८- मुजरिमों के साथ 'हम' ऐसा ही मामला करते हैं।	كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِیْنَ ﴿۱۸﴾
१६- तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए,	وَیْلٌ یَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۱۹﴾
२०- क्या 'हमने' तुमको मामूली पानी से पैदा नहीं किया,	اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِیْنٍ ﴿۲۰﴾
२१- फिर 'हमने' उसे एक सुरक्षित जगह में रखा,	فَجَعَلْنٰهُ فِیْ قَرَارٍ مَّكِیْنٍ ﴿۲۱﴾
२२- एक निश्चित अवधि तक?	اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۲۲﴾
२३- तो 'हमने' एक योजना बनायी (और) 'हम' क्या ही खूब योजना बनाने वाले हैं?	فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿۲۳﴾
२४- तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए;	وَیْلٌ یَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۲۴﴾
२५- क्या 'हमने' धरती को समेटने वाली नहीं बनायी-	اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿۲۵﴾
२६- ज़िन्दों को और मुर्दों को-	اَحْیَآءً وَّاَمْوَاتًا ﴿۲۶﴾
२७- और उसमें ऊँचे-ऊँचे पहाड़ जमाए और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया?	وَّجَعَلْنَا فِیْهَا رَوَاسِیَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَیْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ﴿۲۷﴾
२८- तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए,	وَیْلٌ یَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۲۸﴾
२६- चलो! उस चीज़ की ओर जिसे तुम झुठलाते थे,	اِنْطَلِقُوْۤا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿۲۹﴾
३०- चलो तीन शाखाओं वाली छाया की ओर-	اِنْطَلِقُوْۤا اِلٰى ظِلٍّ ذِیْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿۳۰﴾
३१- जिसमें न छांव है और न शोलों की लपट से बचाव-	لَّا ظَلِیْلٍ وَّلَا یُغْنِیْ مِنَ اللَّهَبِ ﴿۳۱﴾
३२- वह आग महल की तरह ऊँची चिंगारियां फेंकती होगी-	اِنَّهَا تَرْمِیْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿۳۲﴾
३३- मानो वे ज़र्द (पीले) ऊँट हैं।	كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿۳۳﴾
३४- तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए,	وَیْلٌ یَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۳۴﴾
३५- यह वह दिन होगा कि होंट तक न हिला सकेंगे,	هٰذَا یَوْمُ لَا یَنْطِقُوْنَ ﴿۳۵﴾
३६- और न उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि उज्र (कारण) पेश कर सकें;	وَلَا یُؤْذَنُ لَهُمْ فَیَعْتَذِرُوْنَ ﴿۳۶﴾
३७- तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए,	وَیْلٌ یَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۳۷﴾
३८- ''यही फ़ैसले का दिन है, 'हमने' तुम को इकट्ठा कर दिया है और तुम से पहले के लोगों को भी,	هٰذَا یَوْمُ الْفَصْلِ ۚ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِیْنَ ﴿۳۸﴾

३९- अगर तुम कोई चाल चल सकते हो तो मेरे मुक़ाबले में चल कर देखो।	فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ۝
४०- तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए,	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝
४१- बेशक, परहेज़गार सायों और स्रोतों में होंगे;	إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ ۝
४२- और उन फलों के बीच जो वे चाहें।	وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝
४३- ''खाओ- पियो मज़े से, उन कामों के बदले में जो तुम करते रहे हो;''	كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
४४- 'हम' अच्छे काम करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं;	إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝
४५- तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए;	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝
४६- ''खाओ और मज़े उड़ा लो, थोड़ा सा, तुम बेशक मुजरिम हो!''	كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُّجْرِمُونَ ۝
४७- तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए;	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝
४८- और जब उनसे कहा जाता है, ''झुको, तो नहीं झुकते।''	وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ۝
४९- तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए;	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝
५०- अब इसके बाद यह किस कलाम (वाणी) पर ईमान लाएँगे?	فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۝



अनुवाद-सूरतुन्नबई

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ८०१ अक्षर,१७४ शब्द,४०आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

पारा नं०-३०

१- लोग किस चीज़ के बारे में पूछ-गच्छ कर रहे हैं?	* عم يتساءلون ۝
२- उस बड़ी ख़बर के बारे में;	عن النبإ العظيم ۝
३- जिसमें यह लोग मतभेद कर रहे हैं।	الذي هم فيه مختلفون ۝
४- हरगिज़ ऐसा नहीं, जल्द ही मालूम हो जाएगा;	كلا سيعلمون ۝
५- फिर जल्द ही इन्हें मालूम हो जाएगा।	ثم كلا سيعلمون ۝
६- क्या 'हमने' ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया;	ألم نجعل الأرض مهادا ۝
७- और पहाड़ों को मेखें?	والجبال أوتادا ۝
८- और 'हमने' तुमको जोड़ा-जोड़ा भी (नर-मादा) पैदा किया;	وخلقناكم أزواجا ۝
९- और 'हमने' तुम्हारी नींद को तुम्हारे आराम का ज़रिया बनाया।	وجعلنا نومكم سباتا ۝
१०- और 'हमने' रात को पर्दा बनाया;	وجعلنا الليل لباسا ۝
११- और 'हमने' दिन को रोज़ी कमाने का ज़रिया बनाया;	وجعلنا النهار معاشا ۝
१२- और 'हमने' ही तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए;	وبنينا فوقكم سبعا شدادا ۝
१३- और 'हमने' ही चिराग़(सूर्य) बनाया;	وجعلنا سراجا وهاجا ۝
१४- और 'हमने' भरे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया;	وأنزلنا من المعصرات ماء ثجاجا ۝
१५- ताकि उससे अनाज और हरियाली;	لنخرج به حبا ونباتا ۝

१६- और घने-घने बाग़ उगाए।	وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ﴿١٦﴾
१७- बेशक फ़ैसले का वक़्त निश्चित है;	اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ﴿١٧﴾
१८- जिस दिन 'सूर' में फूंक मारी जाएगी तो तुम लोग झुंड के झुंड चले आओगे।	يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ﴿١٨﴾
१९- और आसमान खोल दिया जाएगा, तो (उसमें) दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएँगे;	وَّفُتِحَتِ السَّمَاۗءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ﴿١٩﴾
२०- और पहाड़ चलाए जाएँगे, तो वह चमकती हुई रेत के समान हो कर रह जाएँगे।	وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾
२१- बेशक दोज़ख घात में है;	اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾
२२- सरकशों का वही ठिकाना है;	لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ﴿٢٢﴾
२३- उसमें बेमुद्दत पड़े रहेंगे;	لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ﴿٢٣﴾
२४- उसमें न वे ठंडी चीज़ का ज़ायक़ा चखेंगे न किसी पीने की चीज़ का;	لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾
२५- सिवाय खौलता हुआ पानी और बहती हुई पीप के।	اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾
२६- बदला है पूरा-पूरा।	جَزَاۗءً وِّفَاقًا ﴿٢٦﴾
२७- बेशक यह लोग हिसाब की उम्मीद ही न रखते थे;	اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾
२८- और 'हमारी' आयतों को खूब झुठलाया करते थे;	وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾
२९- और 'हमने' हर चीज़ की गिनती करके किताब में दर्ज कर दिया है;	وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾
३०- बस अब मज़ा चखते रहो (अज़ाब, को) और अधिक बढ़ाते ही रहेंगे।	فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾
३१- बेशक परहेज़गारों के लिए कामियाबी है;	اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ﴿٣١﴾

حَدَآئِقَ وَأَعْنَابًا ۝

३२- (जहाँ) बाग़ और अंगूर,

وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۝

३३- और नौजवान, हम उम्र अ़ौरतें;

وَكَأْسًا دِهَاقًا ۝

३४- और (शराब के) छलकते प्याले;

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّابًا ۝

३५- न वहाँ वे बकवास सुनेंगे, और न झूठ;

جَزَآءً مِّن رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ۝

३६- यह आपके रब की ओर से बदला है तय (किया हुआ) इनआ़म,

رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ۝

३७- वह आसमानों और ज़मीन का और इन दोनों के बीच जो कुछ है सब का रब बड़ी रह़मत वाला है, उस से बात करना, उनके बस में न होगा।

يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ۝

३८- जिस दिन रूह़ (जिब्रईल अ़लै०) और तमाम फ़रिश्ते क़तार बाँधे खड़े होंगे। तो कोई बोल न सकेगा, मगर जिसको रह़मान ही इजाज़त दे और वह बात भी ठीक कहे।

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَن شَآءَ اتَّخَذَ إِلٰى رَبِّهِ مَآبًا ۝

३९- वह दिन सच है, अब जो कोई चाहे अपने रब के पास अपना ठिकाना बना ले।

إِنَّآ أَنذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يٰلَيْتَنِي كُنتُ تُرٰبًا ۝

४०- 'हमने' तुमको उस क़रीब आने वाले अ़ज़ाब से ख़बरदार कर दिया है, जिस दिन आदमी देख लेगा, जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा था,और काफ़िर(इन्कारी) कहेगा, ''काश मैं मिट्टी ही (अर्थात मिट्टी से आदमी बनाया ही न गया) होता।''



अनुवाद-सूरतुन्-नाज़िआ़ति

यह सूरः मक्का में उतरी इसमें अ़रबी के ७३१ अक्षर, ८१ शब्द, ४६ आयतें और २ रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- उन (फ़रिश्तों) की क़सम, जो (इन्कारियों की जान) डूब कर खींचते हैं; — وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۝

२- और उन (फ़रिश्तों) की क़सम जो आसानी से निकालते हैं; — وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۝

३- और उन (फ़रिश्तों) की जो तैरते फिरते हैं, — وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۝

४- फिर एक-दूसरे से आगे बढ़ते हैं; — فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۝

५- फिर (दुनिया के) कामों का इन्तिज़ाम करते हैं। — فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۝

६- जिस दिन हिला डालने वाली घटना हिला डालेगी; — يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝

७- (फिर) उसके पीछे आने वाला (भौंचाल) आएगा। — تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۝

८- उस दिन (लोगों के) दिल काँप रहे होंगे; — قُلُوْبٌ يَّوْمَىِٕذٍ وَّاجِفَةٌ ۝

९- उनकी आँखें (ख़ौफ़ से) झुकी हुई होंगी, — اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۝

१०- यह लोग कहते हैं क्या पहली हालत में फिर लौटाए जाएँगे,? — يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ۝

११- क्या जब हम सड़ी गली खोखली हड्डियाँ हो जाएँगे? — ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۝

१२- कहते हैं यह वापसी तो बड़े घाटे की होगी? — قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۝

फَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾	१३- (अल्लाह कहता है) वह तो केवल एक ज़ोर की डांट होगी;
فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ﴿١٤﴾	१४- फिर वे एक समतल मैदान में जमा होंगे,
هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ﴿١٥﴾	१५- क्या आपको मूसा के क़िस्से की ख़बर पहुँची है,?
إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٦﴾	१६- जब उनके रब ने उन्हें पाक मैदान 'तुवा' में पुकारा।
اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿١٧﴾	१७- फ़िरऔन की ओर जाओ वह बहुत शरारत पर उतर आया है;
فَقُلْ هَل لَّكَ إِلَىٰ أَن تَزَكَّىٰ ﴿١٨﴾	१८- फिर कहो, "क्या तू चाहता है कि (अपने आप को) पाक-साफ़ कर ले?"
وَأَهْدِيَكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ﴿١٩﴾	१६- और मैं तुझे तेरे रब की ओर राह बताऊँ ताकि तू डरे।
فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ﴿٢٠﴾	२०- तो (मूसा ने) उस (फ़िरऔन) को बड़ी निशानी दिखाई;
فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ﴿٢١﴾	२१- फिर उसे भी झुठला दिया और न माना।
ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ﴿٢٢﴾	२२- फिर पलटा और (विरोध में) कोशिश करने लगा;
فَحَشَرَ فَنَادَىٰ ﴿٢٣﴾	२३- फिर (लोगों को) इकट्ठा किया फिर पुकारा;
فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ﴿٢٤﴾	२४- फिर कहा, मैं हूँ तुम्हारा सबसे बड़ा रब।
فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾	२५- तो अल्लाह ने उसे दुनिया व आख़िरत के अज़ाब में पकड़ लिया।
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ﴿٢٦﴾	२६- बेशक इसमें बड़ी नसीहत है हर उस व्यक्ति के लिए जो डरे।
أَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ ۚ بَنَاهَا ﴿٢٧﴾	२७- (इनसे पूछो) क्या तुम लोगों का पैदा करना कठिन काम है, या आसमान का? उसी ने उसको बनाया;

२८- उसकी छत को ऊँचा किया, फिर उसे बराबर कर दिया।	رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا ۝
२९- और उसी ने रात को अंधेरी बनाया और (दिन को) धूप निकाली;	وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ۝
३०- और उसके बाद ज़मीन को फैला दिया।	وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا ۝
३१- उसी ने इसमें से उसका पानी और चारा निकाला;	اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰىهَا ۝
३२- और पहाड़ों को उसमें जमा दिया।	وَالْجِبَالَ اَرْسٰىهَا ۝
३३- यह सब कुछ तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों के फ़ायदे के लिए।	مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ۝
३४- तो जब वह बड़ी आफ़त आएगी।	فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ۝
३५- तो उस दिन इन्सान अपने किये को याद करेगा।	يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ۝
३६- और जहन्नम सामने लाई जाएगी जो देखना चाहे,	وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى ۝
३७- तो जिसने शरारत की,	فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ۝
३८- और दुनिया की ही ज़िन्दगी को अहमियत (प्रमुखता) दी होगी;	وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝
३९- (बेशक) उसका ठिकाना जहन्नम होगा।	فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِىَ الْمَاْوٰى ۝
४०- और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरता रहा, और अपने जी को मनमानी से रोकता रहा;	وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۝
४१- तो बेशक उसका ठिकाना जन्नत होगा।	فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِىَ الْمَاْوٰى ۝
४२- (ऐ मुहम्मद) आप से पूछते हैं कि वह घड़ी कब	يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۝

आएगी,?

فِيمَ أَنتَ مِن ذِكْرَاهَا ﴿٤٣﴾

४३- तो आप उसके ज़िक्र से, किस फ़िक्र में हैं?

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَاهَا ﴿٤٤﴾

४४- उसकी जानकारी आप के रब ही को (मालूम) है

إِنَّمَا أَنتَ مُنذِرُ مَن يَخْشَاهَا ﴿٤٥﴾

४५- बेशक आप तो केवल सचेत करने वाले हैं हर उस व्यक्ति को, जो उसका डर रखे।

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ﴿٤٦﴾

४६- जिस दिन यह लोग उसे देख लेंगे, तो उन्हें ऐसा महसूस होगा कि, यह (दुनिया में केवल) एक दिन के पिछले पहर या अगले पहर से ज़्यादा नहीं ठहरे।



अनुवाद- सूरतु अ़-ब-स

यह सूरः मक्का में उतरी, इस में अ़रबी के ५५३ अक्षर, ११३ शब्द, ४२ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

(मक्का के कुछ सरदारों से आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस्लाम के विषय में कुछ बातचीत कर ही रहे थे कि उसी समय आप के अतिप्रेमी, चूंकि अन्धे थे, इसलिए आते ही कुछ सवालात शुरू कर दिये, आप ने सोचा कि इनकी बात पूरी हो जाए तो मैं दूसरी ओर ध्यान दूँ, और यह तो मेरे अति प्रेमी हैं ही इनसे तो बाद में भी बात कर सकता हूँ, इस पर यह आयतें उतरीं कि आप इन्हें प्राथ्मिकता दें।

१- (उसने) त्योरी चढ़ाई और मुँह फेर लिया;	عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ۝
२- (इस बात पर) कि उनके पास एक अन्धा आया।	اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ۝
३- और आप को क्या मालूम, शायद वह सुधार पैदा करता,?	وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىٓ ۝
४- या नसीह़त पर ध्यान देता और नसीह़त करना उसके लिए लाभदायक होता।	اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ۝
५- जो आदमी लापरवाही करता है;	اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ۝
६- उसकी ओर तो आप ध्यान देते हैं।	فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ۝
७- और (वह न सुधरे तो) आप पर उसकी कुछ (ज़िम्मेदारी) नहीं;	وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ۝
८- और जो (आदमी) आप के पास दौड़ता हुआ आया,	وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ۝
९- और वह(अल्लाह से) डर रहा होता है;	وَهُوَ يَخْشٰى ۝
१०- तो आप उससे ग़फ़लत बरतते हैं,	فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ۝
११- हरग़िज़ ऐसा न कीजिए, बेशक यह (क़ुर्आन) तो एक नसीह़त नामा है;	كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝

१२- जिसका जी चाहे याद रखे।	فَمَنْ شَاۤءَ ذَكَرَهٗ ۝
१३- यह (क़ुर्आन) अदब के क़ाबिल पन्नों पर है।	فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝
१४- जो बुलन्द मक़ाम पर (और) पाक है;	مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍۢ ۝
१५- (ऐसे) लिखने वालों के हाथों में;	بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ ۝
१६- जो मुह़तरम(सम्मानीय) और नेक हैं।	كِرَامٍۢ بَرَرَةٍ ۝
१७- (अल्लाह की) मार हो ऐसे इन्सानों पर, यह कैसा नाशुक्रा है।	قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ۝
१८- उसे (अल्लाह ने) किस चीज़ से पैदा किया?	مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ۝
१६- नुत्फ़े (**sperm**) से पैदा किया, फिर उसे एक ख़ास अन्दाज़ से बनाया;	مِنْ نُّطْفَةٍ ۗ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۝
२०- फिर उसका (दुनिया में आने का) रास्ता आसान कर दिया;	ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ۝
२१- फिर उसे मौत दी,फिर क़ब्र में पहुँचाया।	ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ۝
२२- फिर जब चाहेगा, उसे (दुबारा) उठा कर खड़ा करेगा।	ثُمَّ اِذَا شَاۤءَ اَنْشَرَهٗ ۝
२३- कुछ सन्देह नहीं कि अल्लाह ने उसे जो हुक्म दिया था, उसने उस पर अ़मल न किया।	كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ۝
२४- तो इन्सान को चाहिए कि अपने खाने पर नज़र डाले;	فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ۝
२५- बेशक 'हमने' ही तो (मूसलाधार) पानी बरसाया;	اَنَّا صَبَبْنَا الْمَاۤءَ صَبًّا ۝
२६- फिर 'हमने' ही ज़मीन को चीरा फ़ाड़ा;	ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ۝
२७- फिर 'हमने' ही उसमें से अनाज उगाया;	فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ۝
२८- और अंगूर और तरकारियाँ;	وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ۝
२६- और ज़ैतून और खजूरें;	وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ۝
३०- और घने-घने बाग़;	وَّحَدَاۤىِٕقَ غُلْبًا ۝

३१- और फल और चारा;	وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ﴿٣١﴾
३२- तुम्हारे और तुम्हारे मवेशियों के लिए बसर का सामान (बनाया)।	مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٢﴾
३३- तो जब (कान फाड़ देने वाली) आवाज़ आएगी;	فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ﴿٣٣﴾
३४- उस दिन आदमी अपने भाई से दूर भागेगा;	يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٣٤﴾
३५- और अपनी माँ, और अपने बाप से;	وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ﴿٣٥﴾
३६- और अपनी पत्नी और अपने बेटों से,	وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ﴿٣٦﴾
३७- हर आदमी को, उस दिन अपनी ही ऐसी चिन्ता होगी, कि उसको अपने सिवा किसी का होश न होगा।	لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿٣٧﴾
३८- और कितने चेहरे उस दिन चमक रहे होंगे;	وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾
३९- हँसते और खिले हुए चेहरे;	ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾
४०- और कितने चेहरों पर उस दिन धूल पड़ी होगी;	وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾
४१- और (उनके चेहरों पर) कालस छा रही होगी;	تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾
४२- यही काफ़िर (इन्कार करने वाले,) और फ़ाजिर (दुराचारी) लोग होंगे।	أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾



अनुवाद- सूरतुत्तक्वीरि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ४३६ अक्षर,१०४ शब्द, २९ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला(असीम कृपालु महा दयालु) है।

१- जब सूरज लपेट दिया जाएगा;	إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝
२- और जब तारे धुँधले हो जाएँगे;	وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۝
३- और जब पहाड़ चलाए जाएँगे;	وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝
४- और जब दस महीने की गाभिन ऊँटनियाँ (व्यर्थ) छूटी फिरेंगी;	وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝
५- और जब जंगली जानवर इकट्ठे हो जाएँगे;	وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝
६- और जब समुद्र भड़का दिये जाएँगे;	وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝
७- और जब रूहें (बदनों से) मिला दी जाएँगी	وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝
८- और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा;	وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ۝
९- वह किस क़ुसूर में मारी गई?	بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۝
१०- और जब नाम-ए-आमाल (कर्म-पत्र के दफ़्तर) खोल दिये जाएँगे;	وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝
११- और जब आसमान का पर्दा खींच लिया जाएगा;	وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝
१२- और जब जहन्नम दहकाई जाएगी;	وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝
१३- और जब जन्नत क़रीब लाई जाएगी;	وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝
१४- तब हर नफ़्स (जीव) को मालूम हो जाएगा कि वह क्या लेकर आया है।	عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا أَحْضَرَتْ ۝

फَلَآ اُقۡسِمُ بِالۡخُنَّسِ

१५- तो मैं उन (सितारों) की क़सम खाता हूँ, जो पीछे हटने लगते हैं।

الۡجَوَارِ الۡكُنَّسِ

१६- और चलते-चलते दुबक (छिप) जाते हैं।

وَالَّيۡلِ اِذَا عَسۡعَسَ

१७- और रात की, जब फैल जाए;

وَالصُّبۡحِ اِذَا تَنَفَّسَ

१८- और सुबह की जब वह साँस ले; (अर्थात नमूदार हो)।

اِنَّهٗ لَقَوۡلُ رَسُوۡلٍ كَرِيۡمٍ

१९- बेशक यह (क़ुर्आन) एक बाइज़्ज़त फ़रिश्ते का लाया हुआ पैग़ाम (वाणी) है;

ذِىۡ قُوَّةٍ عِنۡدَ ذِى الۡعَرۡشِ مَكِيۡنٍ

२०- जो बड़ा बलवान (और) अ़र्श (सिंहासन) के मालिक के नज़दीक़ उसका बड़ा मर्तबा है;

مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيۡنٍ

२१- (वहाँ) उसका हुक्म माना जाता है और अमानतदार है।

وَمَا صَاحِبُكُمۡ بِمَجۡنُوۡنٍ

२२- और तुम्हारे साथी (मुहम्मद) कोई दीवाने नहीं हैं;

وَلَقَدۡ رَاٰهُ بِالۡاُفُقِ الۡمُبِيۡنِ

२३- और उन्होंने तो उस (फ़रिश्ते) को आसमान के खुले किनारे (क्षितिज) पर देखा है;

وَمَا هُوَ عَلَى الۡغَيۡبِ بِضَنِيۡنٍ

२४- और वह ग़ैब (परोक्ष) की बातों के बताने में कंजूस नहीं,

وَمَا هُوَ بِقَوۡلِ شَيۡطٰنٍ رَّجِيۡمٍ

२५- और न यह (क़ुर्आन) किसी धिक्कारे हुए शैतान की बात है।

فَاَيۡنَ تَذۡهَبُوۡنَ

२६- तो तुम लोग किधर चले जा रहे हो?

اِنۡ هُوَ اِلَّا ذِكۡرٌ لِّلۡعٰلَمِيۡنَ

२७- यह (क़ुर्आन) तो सारे संसार वालों के लिए एक नसीहत है;

لِمَنۡ شَآءَ مِنۡكُمۡ اَنۡ يَّسۡتَقِيۡمَ

२८- तुममें से हर उस व्यक्ति के लिए जो सीधा रास्ता अपनाना चाहे;

وَمَا تَشَآءُوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الۡعٰلَمِيۡنَ

२९- और तुम (कुछ) नहीं चाह सकते जब तक कि वह अल्लाह रब्बुलआ़लमीन (सारे संसार का रब) न चाहे।



अनुवाद- सूरतुल्-अिन्फ़ितारि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ३३४ अक्षर, ८० शब्द, १६ आयतें, और एक रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालू महा दयालु) है।

१- जब आसमान फट जाएगा;	إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ۝
२- और जब सितारे टूट-कर बिखर जाएँगे;	وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝
३- और जब समुद्र बह (कर मिल) जाएँगे;	وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝
४- और जब क़ब्रें उखाड़ दी जाएँगी;	وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۝
५- तब हर जानदार (आदमी) को मालूम हो जाएगा कि आगे उसने क्या भेजा था, और क्या उसने पीछे छोड़ा था?	عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ۝
६- ऐ इन्सान! किस चीज़ ने तुझ को अपने उस करम वाले रब की ओर से धोखे में डाल रखा है,?	يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝
७- जिसने तुम को बनाया, फिर (तुम्हारे अंगों को) ठीक किया, और फिर तुमको सन्तुलित किया;	الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ۝
८- जिस रूप में चाहा तुम को बना दिया।	فِي أَيِّ صُورَةٍ مَا شَاءَ رَكَّبَكَ ۝
९- मगर अफ़सोस है कि तुम लोग बदला दिये जाने को झुठलाते हो।	كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ ۝
१०- हालाँकि तुम पर निगरानी करने वाले (फ़रिश्ते) तैनात हैं;	وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ۝
११- बाइज़्ज़त (प्रतिष्ठावान) लिखने वाले;	كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝
१२- जो कुछ तुम करते हो उनको उसकी ख़बर है।	يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۝

१३- बेशक नेक लोग मज़े (जन्नत) में होंगे;	إن الأبرار لفي نعيم ﴿١٣﴾
१४- और बुरे (लोग) जहन्नम में;	وإن الفجار لفي جحيم ﴿١٤﴾
१५- इन्साफ़ के दिन उसमें दाख़िल होंगे;	يصلونها يوم الدين ﴿١٥﴾
१६- और वह 'उससे' कहीं ग़ायब न हो सकेंगे,	وما هم عنها بغائبين ﴿١٦﴾
१७- और तुम क्या जानों कि बदले का दिन क्या है,?	وما أدراك ما يوم الدين ﴿١٧﴾
१८- फिर तुम्हें क्या मालूम कि बदले का दिन कैसा है,?	ثم ما أدراك ما يوم الدين ﴿١٨﴾
१९- (वह दिन ऐसा है) जिसमें कोई आदमी किसी का कुछ भी भला न कर सकेगा और हुक्म (शासन) उस दिन अल्लाह ही का होगा।	يوم لا تملك نفس لنفس شيئا والأمر يومئذ لله ﴿١٩﴾



अनुवाद- सूरतुल् मुतफ़्फ़िफ़ीन

यह सूरः मक्का में उतरी, इस में अ़रबी के ७५८ अक्षर,१७२ शब्द,३६ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान, निहायम रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- नाप तौल में कमी करने वालों के लिए ख़राबी है;	وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۝
२- जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लें;	الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۝
३- और जब उनको नाप कर या तौल कर दें तो कम दें।	وَإِذَا كَالُوهُمْ أَو وَّزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ۝
४- क्या इन्हें इसका ख़याल नहीं है कि उठाए भी जाएँगे,?	أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُم مَّبْعُوثُونَ ۝
५- एक बड़े दिन में;	لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝
६- उस दिन, जबकि सारे इन्सान 'रब्बुल आ़लमीन' (सारी दुनिया के रब) के सामने खड़े होंगे।	يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
७- सुन लो बद्‌कारों के आ़माल नामे 'सिज्जीन' में हैं,	كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَّارِ لَفِي سِجِّينٍ ۝
८- और आप को क्या मालूम कि सिज्जीन क्या है?-	وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ۝
९- एक लिखा लिखाया दफ़्तर है।	كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ۝
१०- उस दिन बड़ी दुर्दशा होगी, झुठलाने वालों की;	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝
११- जो इन्साफ़ के दिन को झुठलाते हैं;	الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ۝
१२- और उसे नहीं झुठलाता,मगर वह जो सीमा से बढ़ने वाला गुनाहगार है।	وَمَا يُكَذِّبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝
१३- जब भी उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो कहता है, ''यह तो पहले लोगों के क़िस्से, हैं।	إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝
१४- सुन लो ऐसा नहीं, बल्कि उनके दिलों पर उनके बुरे कामों का ज़ंग बैठ गया है।	كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

१५- सुन लो बेशक उस दिन यह लोग अपने 'रब' के दीदार(दर्शन) से रोक दिये जाएँगे।	كَلَّآ إِنَّهُمْ عَن رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ۝
१६- फिर बेशक, इन्हें जहन्नम में डाल दिया जाएगा।	ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ۝
१७- फिर उनसे कहा जाएगा, ''यह उसी का नतीजा है जिसे तुम झुठलाते थे।''	ثُمَّ يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝
१८- सुन लो, कि नेक लोगों के आ़माल (कर्मपत्र) अ़िल्लीयीन में (विद्यमान) है?	كَلَّآ إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ۝
१९- और तुम को कुछ मालूम भी है कि अ़िल्लीयीन क्या है?-	وَمَآ أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ۝
२०- एक लिखा लिखाया दफ़्तर है;	كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ۝
२१- जिस की निगरानी अल्लाह के मुक़र्रब (समीपवर्ती) फ़रिश्ते करते हैं।	يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ۝
२२- बेशक नेक लोग बड़ी नेअ़मतों में होंगे;	إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝
२३- मस्नदों (सिंहासन) पर बैठे नज़ारे कर रहे होंगे;	عَلَى الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ ۝
२४-उनके चेहरों पर तुम सुख आनन्द की ताज़गी महसूस करोगे;	تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ۝
२५- उनको सील बंद उम्दा ख़ालिस शराब पिलाई जाएगी,	يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ۝
२६- जिस पर मुश्क(कस्तूरी के सुगन्ध) की मुहर लगी होगी, जो लोग दूसरों पर बाज़ी ले जाना चाहते हों,वह इस चीज़ को पाने में बाज़ी ले जाने की कोशिश करें-	خِتَامُهُ مِسْكٌ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ۝
२७- और उस शराब में 'तस्नीम' (जन्नत का स्रोत) के पानी की मिलावट होगी;	وَمِزَاجُهُ مِن تَسْنِيمٍ ۝
२८- वह एक झरना है जिससे मुक़र्रब (समीपवर्ती बन्दे) पिएँगे।	عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۝
२९- जो मुजरिम थे वे (दुनिया में) ईमान वालों की हँसी उड़ाया करते थे,	إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ۝
३०- और जब उनके पास से गुज़रते थे, तो वह ह़िक़ारत से इशारा करते थे;	وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ۝

३१- और जब अपने घरों को लौटते थे तो इतराते हुए लौटते थे;	وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ٣١
३२- और जब उनको देखते तो कहा करते थे, ''यह (लोग) तो गुमराह हैं।''	وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ٣٢
३३- और (हालाँकि) वे उन पर निगराँ (संरक्षक) बना कर नहीं भेजे गये थे।	وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ٣٣
३४- तो आज के दिन ईमान वाले, काफ़िरों (इन्कार करने वालों) पर हसेंगे,	فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ٣٤
३५- और मस्नदों (सिंहासन) पर (बैठकर) देख रहे होंगे।	عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ٣٥
३६- क्या खूब इन काफ़िरों को बदला मिला, जो यह किया करते थे।	هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ٣٦



अनुवाद- सूरतुल् इन्शिक़ाक़ि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ४४८ अक्षर, १०८ शब्द, २५ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान, निहायम रहम करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है

१- जब आसमान फट जाएगा,	اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ۙ
२- और अपने रब का हुक्म बजा लाएगा और हक़ भी यही है।	وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۙ
३- और जब धरती फैला दी जाएगी;	وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ۙ
४- और जो कुछ इसके अन्दर है उसे बाहर फेंक देगी, और ख़ाली हो जाएगी,	وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ۙ
५- और अपने रब के फ़रमान को बजा लाएगी, और उसे चाहिए भी यही।	وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۙ
६- ऐ इन्सान! बेशक तू मेहनत करता ही है अपने रब की ओर पहुँचने में, खूब मेहनत किये जा, तो उससे जा मिलेगा।	يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۚ
७- तो जिसका आ़माल-नामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा,	فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ
८- उससे आसान हिसाब लिया जाएगा।	فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۙ
९- और वह अपने घरवालों के पास खुश- खुश लौटेगा।	وَّيَنْقَلِبُ اِلٰٓى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۗ
१०- और जिसका आ़माल नामा उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा,	وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ۙ
११- वह मौत को पुकारेगा,	فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۙ

وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ۝

१२- और भड़कती आग में दाख़िल होगा।

اِنَّهٗ كَانَ فِيْٓ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۝

१३- वह अपने घर वालों में मस्त रहता था,

اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ۝

१४- उसने समझ रखा था कि उसको कभी लौटना नहीं है।

بَلٰٓى ۚ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ۝

१५- क्यों नहीं उसका रब तो उसको देख रहा था।

فَلَآ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۝

१६- नहीं, मैं क़सम खाता हूँ,शफ़क़ (संध्या लालिमा) की,

وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝

१७- और रात की और जो कुछ वह अपने अन्दर समेट लेती हैं, उसकी;

وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ۝

१८- और चाँद की जब वह पूरा हो जाता है;

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ۝

१९- कि तुम को निश्चय ही एक मन्ज़िल से दूसरे मन्ज़िल में पहुँचना है।

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

२०- फिर इन लोगों को क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते?

وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ۝

सज्दः

२१- और जब उनके सामने क़ुर्आन पढ़ा जाता है तो सज्दः नहीं करते।

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ۝

२२- बल्कि काफ़िर (इन्कार करने वाले) झुठला रहे हैं,

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ۝

२३- और यह लोग जो कुछ जमा कर रहे (अर्थात छिपा रहे) हैं, उसे अल्लाह ख़ूब जानता है।

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝

२४-तो आप उनको एक दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝

२५- हाँ, जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल किये, उनके लिए अच्छा बदला है जो कभी ख़त्म न होगा।



अनुवाद- सूरतुल् बुरूजि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ४७५ अक्षर, १०६ शब्द, २२ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- बुर्जो (किलेबन्द) वाले आसमान की क़सम,

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۝

२- और उस दिन की, (क़सम) जिसका वादा है,

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۝

३- और हाज़िर होने वाले की और जिसमें हाज़िरी होती है उसकी (अर्थात ह़ज के दिन की,)

وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ۝

४- कि मारे गये ख़न्दक़ों (गढ़े) वाले,

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۝

५- आग जिसमें ईंधन (झोंक रखा) था,

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۝

६- जबकि वे उन (के किनारे) पर बैठे हुए थे,

اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ۝

७- और जो (दुर्व्यवहार) ईमान वालों के साथ कर रहे थे, उनको सामने देख रहे थे;

وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ۝

८- उनको मोमिनों (ईमानवालों) की यही बात बुरी लगती थी कि वे अल्लाह पर ईमान ले आए थे, जो हर तरह ज़बरदस्त प्रशंसा के लायक़ है,

وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝

९- जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है और अल्लाह हर चीज़ का साक्षी (जानने वाला) है।

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝

१०- बेशक जिन लोगों ने ईमान वाले और ईमानवालियों को सताने के बाद तौबः न की, तो उनके लिए जहन्नम का अ़ज़ाब होगा और उनके लिए जलने का भी अ़ज़ाब होगा।

اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ۝

११- बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उनके लिए ऐसे बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हुई होंगी, यही है बड़ी कामियाबी।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ﴿١١﴾

१२- बेशक तुम्हारे रब की पकड़ बहुत सख़्त है।

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ﴿١٢﴾

१३- बेशक 'उसी ने' पहली बार पैदा किया है और 'वही' दुबारा (ज़िन्दा) करेगा।

إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ﴿١٣﴾

१४- और 'वही' बख़्शने वाला (क्षमाशील), मुहब्बत करने वाला है।

وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ﴿١٤﴾

१५- अर्शवाला(अर्श का स्वामी) बड़ा बुजुर्ग (गौरव शाली) शान वाला,

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ﴿١٥﴾

१६- तो जो चाहता है कर देता है,

فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴿١٦﴾

१७- क्या आप तक उन सेनाओं की ख़बर पहुँची है?

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ﴿١٧﴾

१८- फ़िरऔन और समूद की;

فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ﴿١٨﴾

१६- बल्कि यह काफ़िर (इन्कारी) झुठलाने में लगे हुए हैं।

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ﴿١٩﴾

२०- और अल्लाह (भी) उन्हें चारों ओर से घेरे हुए है (अर्थात इनकी एक-एक बात उसे मालूम है,)

وَاللَّهُ مِن وَرَائِهِم مُّحِيطٌ ﴿٢٠﴾

२१- बल्कि यह तो वह क़ुर्आन है जो बड़ी शान वाला (गौरवशाली ग्रन्थ) है,

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ﴿٢١﴾

२२- (उस) लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पाट्टिका) में,

فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ﴿٢٢﴾



अनुवाद- सूरतुत्ता़रिक़ि

यह सूरः मक्का में उतरी, इस में अ़रबी के २५४ अक्षर, ६१ शब्द, १७ आयतें और १ रूकुअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़्म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- आसमान की क़सम, और (उस तारे की) जो रात में नमूदार (उदय) होता है,	وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۝
२- और तुम्हें क्या मालूम कि रात में उदय होने वाला क्या है?	وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۝
३- वह चमकता हुआ तारा है (जो प्रातः काल होने के निकट उदय होता है),	النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝
४- बेशक हर जानदार पर (एक) संरक्षक नियुक्त है।	إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝
५- फिर इन्सान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है।	فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝
६- वह (उस) उछलने वाले पानी से पैदा किया गया है,	خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۝
७- जो (पुरूष की) पीठ और (स्त्री की) छाती की हड्डियों के बीच से निकलता है।	يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ۝
८- बेशक 'वह' उसको (दुबारा पैदा करके) लौटाने पर क़ुदरत (सामर्थ्य) है।	إِنَّهُ عَلٰى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝
९- जिस दिन छिपे भेद जाँचे जाएँगे,	يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۝
१०- तो (उस समय) उसके पास न कोई ताक़त होगी और न कोई मददगार,	فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ۝
११- क़सम है पानी बरसाने वाले आसमान की,	وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝

وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾	१२-और ज़मीन की, जो (बीज का अंकुर फूटते समय) फट जाती है;
إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾	१३-बेशक यह कलाम (वाणी) फ़ैसला कर देने वाला है।
وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾	१४- और यह कोई हंसी मज़ाक़ में टालने की बात नहीं।
إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ﴿١٥﴾	१५- यह लोग चालें चल रहें हैं;
وَأَكِيدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾	१६- और 'हम' भी (उनकी चालों का फ़ल चखाने का) उपाय कर रहे हैं।
فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾	१७-तो आप इन काफ़िरों (इन्कारियों) को यूँ ही रहने दीजिए, इनको इनके ह़ाल पर छोड़ दीजिए।



अनुवाद- सूरतुल् अअ़ला

यह सूरः मक्का में उतरी, इस में अ़रबी के २६६ अक्षर ७२ शब्द १६ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۝

१- (ऐ रसूल!) अपने आलीशान रब के नाम की तस्बीह़ (गुण गान) कीजिए,

الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۝

२- 'जिसने' पैदा किया और (शरीर को) दुरूस्त किया,

وَالَّذِيْ قَدَّرَ فَهَدٰى ۝

३- और 'जिसने' (हर जीवधारी की दशा के अनुकूल) योजना बनाई फिर (उसे उसकी) राह दिखाई,

وَالَّذِيْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۝

४- और 'जिसने' चारा उगाया,

فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ۝

५- फिर उसको सूखा काला कूड़ा करकट बना दिया।

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۝

६- 'हम' जल्द ही आप को पढ़ाएँगे कि आप (उसमें से कुछ) नहीं भूलेंगे।

اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ۝

७- मगर जो अल्लाह चाहै। बेशक 'वह' खुली और छिपी बात को जानता है।

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۝

८- और 'हम' आपको आसान तरीक़े की राह हमवार (प्रशस्त) कर देंगे।

فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۝

९- तो नसीह़त करते रहिए,जहाँ तक नसीह़त के फ़ायदा पहुँचने की उम्मीद हो,

سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۝

१०- जो (अल्लाह का) खौफ़ रखता होगा, वही नसीह़त क़ुबूल करेगा,

११- इस (नसीहत नामे) से अलग वही रहेगा, जो बड़ा बद़नसीब होगा,	وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ۝
१२- जो बड़ी आग में दाख़िल होगा;	الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَى ۝
१३- फिर न उसमें मरेगा, न जिएगा।	ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۝
१४- बेशक वह कामियाब हो गया जिसने अपना तज़किया (निखारने का काम) किया,	قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّى ۝
१५- और अपने रब का नाम लिया और नमाज़ पढ़ता रहा।	وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّى ۝
१६- बल्कि तुम लोग तो दुनिया की ज़िन्दगी को प्रमुखता देते हो,	بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝
१७- और आख़िरत (परलोक) बेहतर और बाक़ी रहने वाली है।	وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۝
१८- यह शिक्षा पहले सहीफ़ों (ईश ग्रन्थों) में भी है	إِنَّ هَذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَى ۝
१९- इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में।	صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ۝



अनुवाद- सूरतुल् ग़ाशियति

यह सूरः मक्का में उतरी, इस में अ़रबी के ३८४ अक्षर ६३ शब्द २६ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला(असीम कृपालु महादयालु) है।

१- क्या आप को उस छा जाने वाली घटना (क़ियामत) की ख़बर पहुँची है?	هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝
२- कितने चेहरे उस दिन ख़ौफ़ से सहमे हुए होंगे,	وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝
३- मेहनत करने वाले थके माँदे,	عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝
४- दहकती हुई आग में दाख़िल होंगे,	تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝
५- खौलते हुए गर्म पानी के स्रोत से उन्हें पानी पिलाया जाएगा।	تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝
६- उनको 'ज़रीअ़' (काँटेदार झाड़ियों) के सिवा और कोई खाना न मिलेगा।	لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۝
७- जो न मोटा करेगा न भूख मिटाएगा।	لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۝
८- और बहुत से चेहरे उस दिन खिले हुए होंगे।	وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝
९- अपने आ़माल से खुश होंगे।	لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝
१०- आ़ला (उच्च) दर्जे के बाग़ (जन्नत) में होंगे।	فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝
११- कोई बेहूदा या बकवास बात वहाँ न सुनेंगे।	لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ۝
१२- उसमें बहता हुआ चश्मा (स्रोत) होगा,	فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝
१३- उसमें ऊँचे बिछे हुए तख़्त (सिंहासन) होंगे।	فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ۝
१४- और मीना (जग, गिलास) रखे हुए होंगे।	وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۝
१५-और गाव तकिये बराबर से (पंक्तिबद्ध) लगे हुए होंगे।	وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۝

وَزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ﴿١٦﴾	१६- और उम्दा फ़र्श (कालीन) बिछी हुई होंगी।
أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾	१७- क्या वह ऊँटों को नहीं देखते कि कैसे (अजीब) पैदा किये गये हैं?
وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾	१८- और आसमान की ओर (नहीं देखते!) कि कितना ऊँचा बनाया गया है।
وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾	१९- और पहाड़ों की ओर कि कैसे जमाए गये हैं?
وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾	२०- और ज़मीन को, कि कैसे बिछाई गयी है।
فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾	२१- सो आप नसीहत करते रहिए, आप तो केवल नसीहत ही करने वाले हैं।
لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾	२२- आप उन पर दारोग़ा (निरीक्षक) नहीं हैं।
إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾	२३- मगर जो मुँह मोड़ेगा और इन्कार करेगा।
فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ﴿٢٤﴾	२४- तो अल्लाह उसको बड़ा अ़ज़ाब देगा।
إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾	२५- बेशक इनको तो हमारी ओर ही लौट कर आना है।
ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾	२६- फिर इनका ह़िसाब लेना हमारे ही ज़िम्मे है।



अनुवाद- सूरतुल् फ़ज्रि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ५८५ अक्षर, १३७ शब्द, ३० आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- फ़ज्र(भोर) की क़सम;	وَالْفَجْرِ
२- और दस रातों की,	وَلَيَالٍ عَشْرٍ
३- और सम और विषम (जुफ्त-ताक़) की;	وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ
४- और रात की जबकि वह विदा हो रही हो;	وَالَّيْلِ إِذَا يَسْرِ
५- यह चीज़ें अक़लमन्दों के नज़दीक क़सम खाने योग्य हैं।	هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ
६- क्या तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे रब ने आद (जाति) वालों के साथ क्या किया?	أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ
७- जो इरम वाले ऊँचे खम्बों (लम्बेक़द) वाले;	إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ
८- वे ऐसे थे जिनके समान, बस्तियों में पैदा नहीं हुए,	الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ
९- और समूद के साथ जो घाटी में पत्थरों को तराशा करते (घर बनाते) थे।	وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ
१०- और फ़िरऔ़न के साथ (क्या किया) जो मेखें (खेमें) रखता था?	وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ
११- जो मुल्कों में सरकश हो रहे थे;	الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ
१२- तो उनमें बड़ा फ़साद मचा रखा था;	فَأَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ
१३- तो आप के रब ने उन पर अ़ज़ाब का कोड़ा बरसाया।	فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ
१४- बेशक आपका रब (अवज्ञाकारियों की) घात में है।	إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ

فَأَمَّا الْإِنسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ	१५- मगर इन्सान का ह़ाल यह है कि जब इज़्ज़त और नेअ़मत देकर उसका 'रब' उसे आज़माता है तो वह खुश होकर कहता है कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी।
وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ	१६- और जब वह उसे आज़माता है (कि) उसकी रोज़ी उस पर तंग कर देता है तो कहता है, ''मेरे रब ने मुझे ज़लील किया।''
كَلَّا بَل لَّا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ	१७- ऐसा नहीं, बल्कि तुम लोग यतीम की इज़्ज़त नहीं करते;
وَلَا تَحَاضُّونَ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ	१८- और न मिस्कीन (मोहताजों) को खाना खिलाने पर (एक-दूसर को) उभारते हो।
وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا	१९- और मय्यित का सारा माल समेट कर खा जाते हो।
وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا	२०- और धन के मोह में मस्त रहते हो।
كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا	२१- कुछ नहीं जब धरती तोड़-फ़ोड़ कर चूरा कर दी जाएगी।
وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا	२२- और आपका 'रब' (विराजमान होगा) और फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध खड़े होंगे;
وَجِيءَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ	२३- और उस दिन जहन्नम सामने लाई जाएगी तब इन्सान की समझ में आ जाएगा, और उस समय उसके समझने से क्या लाभ?
يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي	२४- वह कहेगा कि काश! मैं अपने इस जीवन के लिए कुछ नेक काम कर लिया होता,
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ	२५- फिर उस दिन ऐसा अ़ज़ाब देगा, जैसा अ़ज़ाब देने वाला कोई नहीं;
وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ	२६- और जैसा (मुजरिमों को) जकड़ेगा वैसा किसी ने भी जकड़ा न होगा;
يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ	२७- ऐ इत्मिनान पाने वाली रूह़ (शान्ति आत्मा!);

२८- वापस चल अपने रब की ओर (कि) तू उससे राज़ी वह तुझसे राज़ी,	ارْجِعِيٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿۲۸﴾
२६- तू शामिल हो जा, मेरे (नेक) बन्दों में;	فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿۲۹﴾
३०- और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।	وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿۳۰﴾



अनुवाद-सूरतुल् बलदि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ३४७ अक्षर, ८२ शब्द, २० आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला(असीम कृपालु महादयालु) है।

१- मैं क़सम खाता हूँ इस शहर (मक्का)की-	لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝
२- और (ऐ रसूल) आपके लिए इस शहर को ह़लाल कर दिया गया।	وَاَنْتَ حِلٌّ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝
३- और क़सम खाता हूँ,बाप (अर्थात आदम) और उसके औलाद की;	وَ وَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۝
४- वास्तव में 'हमने' इन्सान को तकलीफ़ (की ह़ालत) में (रहने वाला) बनाया।	لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِىْ كَبَدٍ ۝
५- क्या उसने यह समझ रखा है कि उस पर कोई क़ाबू न पा सकेगा,?	اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ۝
६- वह कहता है ''मैंने'' बहुत सा माल बर्बाद कर दिया;	يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ۝
७- उसने क्या समझ रखा है कि कोई उसे देख नहीं रहा है?	اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ۝
८- क्या 'हमने' उसे दो आँखें नहीं दीं?	اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ۝
९- और एक ज़बान और दो होंठ, (नहीं दिए)	وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ۝
१०- और उसको (अच्छे बुरे) दोनों रास्ते भी दिखा दिये।	وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ۝
११- फ़िर भी वह घाटी से (सुरक्षित) पार नहीं हुआ।	فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝
१२- और तुम्हें क्या मालूम कि वह घाटी क्या है?	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝

१३- किसी गर्दन को (दास्ता से) छुड़ाना;

فَكُّ رَقَبَةٍ ۝

१४- या भूख के दिन खाना खिला देना;

أَوْ إِطْعَامٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۝

१५- या किसी रिश्ते नाते वाले यतीम को;

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝

१६- या किसी फ़क़ीर को जो मिट्टी में (लोट रहा) हो,

أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝

१७- फिर यह उन लोगों में से हो जो ईमान लाए और सब्र करने की नसीहत करते हैं और एक दूसरे पर रहम करने की वसीयत करते हैं।

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝

१८- यही लोग दाहिने वाले (अर्थात भाग्यशाली) हैं।

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۝

१९- और जिन्होंने 'हमारी' आयतों को मानने से इन्कार किया वे बाएँ वाले (अर्थात दुर्भागी) हैं।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۝

२०- उन पर आग होगी (जिसे) बन्द कर दिया गया होगा।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُؤْصَدَةٌ ۝



अनुवाद- सूरतुश्शम्सि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के २५४ अक्षर ५६ शब्द, १५ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- सूरज और उसके धूप चढ़ने की क़सम,	وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ۝١
२- और चांद की, जबकि उसके पीछे आए,	وَالْقَمَرِ إِذَا تَلٰهَا ۝٢
३- और दिन की, जब उसे चमका दे,	وَالنَّهَارِ إِذَا جَلّٰهَا ۝٣
४- और रात की, जबकि वह (सूरज पर) छा जाए,	وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشٰهَا ۝٤
५- और आसमान की और उस ज़ात की 'जिसने' उसे क़ायम किया;	وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا ۝٥
६- और ज़मीन की और उस ज़ात की जिसने 'उसे' बिछाया।	وَالْأَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ۝٦
७- और नफ़्स (मानव-आत्मा) की और उस ज़ात की 'जिसने' उसे ठीक-ठाक किया।	وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَا ۝٧
८- फिर 'उसने' बुराई और परहेज़गारी में तमीज़ करने की समझ उसके जी में डाल दिया।	فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوٰهَا ۝٨
९- बेशक वह कामियाब हो गया जिसने अपने नफ़्स को (गुनाहों से) पाक रखा।	قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا ۝٩
१०- और वह नाकाम हुआ जिसने अपने मन को (पापों में) दबा दिया।	وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا ۝١٠
११ समूद (जाति) ने अपनी शरारत से झुठलाया,	كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوٰهَآ ۝١١
१२- जब उनमें का एक बड़ा बद्नसीब उठा,	إِذِ انْبَعَثَ أَشْقٰهَا ۝١٢

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيٰهَا

१३- तो अल्लाह के रसूल (सालेह) ने उन से कहा खबरदार! अल्लाह की ऊँटनी और उसके पिलाने से, (बाधा न डालना),

فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا ۥ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْبِهِمْ فَسَوّٰىهَا

१४- मगर उन्होंने उसकी बात झुठलाई और नसें काट दीं, तो उन पर उनके रब ने ऐसी आफ़त डाली कि एक साथ सब को (मिट्टी में) बराबर कर दिया।

وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا

१५- और उसे किसी दुष्फ़ल (अंजाम) का कोई डर नहीं।



अनुवाद- सूरतुल्लैलि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ३१४ अक्षर, ७१ शब्द, २१ आयतें और १ रूकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- रात की क़सम, जबकि ढाक ले,	وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشٰى ۝
२- और दिन की क़सम, जबकि वह रौशन हो,	وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلّٰى ۝
३- और क़सम है उस ज़ात की जिसने नर और मादा को पैदा किया,	وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنْثٰى ۝
४- बेशक तुम सबकी कोशिश तरह-तरह की है।	إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝
५- तो जिसने (अल्लाह के रास्ते में माल) दिया और (बुराई से) बच कर चला,	فَأَمَّا مَنْ أَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝
६- और भली बात को सच माना,	وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝
७- तो उसको 'हम' आसान रास्ते की तौफ़ीक़ (सुविधा) देंगे,	فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرٰى ۝
८- और जिसने कंजूसी की और (अल्लाह से) बेपरवाह बना रहा,	وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝
९- और भली बात को झुठलाया,	وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۝
१०- तो 'हम' उसे तंगी वाले रास्ते में पहुँचा देंगे,	فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرٰى ۝
११- और उस का माल उसके कुछ काम न आएगा, जबकि वह (दोज़ख़ में) गिरेगा।	وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدّٰى ۝
१२- बेशक हिदायत देना 'हमारे' ज़िम्मे है।	إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝
१३- और बेशक आख़िरत और दुनिया दोनों के 'हम' ही मालिक हैं।	وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولٰى ۝

१४- तो मैंने तुमको डरा दिया है भड़कती हुई आग से।	فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ﴿١٤﴾
१५- उसमें नहीं झुलसेगा, मगर वह (जो) बद्नसीब (होगा);	لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ﴿١٥﴾
१६- जिसने झुठलाया और मुहँ फेरा।	الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٦﴾
१७- और उससे बचा लिया जाएगा जो बहुत परहेज़गार है,	وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ﴿١٧﴾
१८- जो अपना माल (गुनाहों से) पाकीज़गी ह़ासिल करने के लिए देता है।	الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ﴿١٨﴾
१९- और उसके ऊपर किसी का कोई एह़सान नहीं था जिसका बदला चुकाने के लिए (माल) देता हो,	وَمَا لِأَحَدٍ عِندَهُ مِن نِّعْمَةٍ تُجْزَىٰ ﴿١٩﴾
२०- बल्कि वह अपने सर्वश्रेष्ठ रब की रज़ामंदी हासिल करने के लिए देता है।	إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ﴿٢٠﴾
२१- और वह बहुत जल्द खुश हो जाएगा।	وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ﴿٢١﴾



अनुवाद-सूरतुज़्ज़ुहा

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के १६६ अ़क्षर, ४० शब्द, ११ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- सूरज की रोशनी की क़सम,
وَالضُّحٰى ۙ

२- और रात की (अंधेरी) जब वह छा जाए।
وَالَّيۡلِ اِذَا سَجٰى ۙ

३- (ऐ मुहम्मद!) आप के रब ने न तो आप को छोड़ा और न नाराज़ हुआ।
مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ؕ

४- और आख़िरत (बाद का युग) आप के लिए पहले (के युग अर्थात दुनिया) से कहीं बेहतर है।
وَلَلۡاٰخِرَةُ خَيۡرٌ لَّكَ مِنَ الۡاُوۡلٰى ؕ

५- और जल्द ही आप का रब आप को इतना देगा कि आप राज़ी हो जाएँगे।
وَلَسَوۡفَ يُعۡطِيۡكَ رَبُّكَ فَتَرۡضٰى ؕ

६- क्या (यह सत्य) नहीं है कि उसने आप को यतीम पाया तो ठिकाना दिया?
اَلَمۡ يَجِدۡكَ يَتِيۡمًا فَاٰوٰى ۪

७- और रास्ते से अन्जान देखा तो सीधा रास्ता दिखा दिया?
وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۪

८- और नादार(निर्धन) पाया तो ग़नी (धनवान) कर दिया।
وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغۡنٰى ؕ

९- तो आप भी यतीम पर सितम (अत्याचार) न कीजिएगा,
فَاَمَّا الۡيَتِيۡمَ فَلَا تَقۡهَرۡ ؕ

१०- और माँगने वाले को मत झिड़किएगा,
وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنۡهَرۡ ؕ

११-और अपने रब के एहसान को बयान करते रहा कीजिए।
وَاَمَّا بِنِعۡمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثۡ ࣖ



अनुवाद- सूरतुइन्शिराह़

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के १०३ अक्षर, २७ शब्द, ८ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- (ऐ मुह़म्मद!) क्या 'हमने' आपके लिए आप का सीना खोल नहीं दिया?	اَلَمۡ نَشۡرَحۡ لَكَ صَدۡرَكَ ۝
२-और आप से वह भारी बोझ उतार दिया,	وَوَضَعۡنَا عَنۡكَ وِزۡرَكَ ۝
३- जो आप की कमर तोड़े डाल रहा था?	الَّذِیۡۤ اَنۡقَضَ ظَهۡرَكَ ۝
४- और आप का ज़िक्र (चर्चा) बुलंद किया,	وَرَفَعۡنَا لَكَ ذِكۡرَكَ ۝
५- तो बेशक हर मुश्किल के साथ आसानी भी है।	فَاِنَّ مَعَ الۡعُسۡرِ يُسۡرًا ۝
६- बेशक हर मुश्किल के साथ आसानी है।	اِنَّ مَعَ الۡعُسۡرِ يُسۡرًا ۝
७- बस जब भी आप फ़ारिग़ (निश्चिंत) हों, तो इबादत में लीन हो जाया करें,	فَاِذَا فَرَغۡتَ فَانۡصَبۡ ۝
८- और अपने रब की ओर लौ लगाया करें।	وَاِلٰى رَبِّكَ فَارۡغَبۡ ۝



अनुवाद- सूरतुत्तीनि

यह सूरः मक्का में उतरी,इसमें अ़रबी के १६५ अक्षर, ३४ शब्द, ८ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला(असीम कृपालु, महादयालु) है।

१- इन्जीर और ज़ैतून की क़सम,	وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ ۝
२- और तूरे सीनीन की,	وَطُورِ سِينِينَ ۝
३- और इस अमन वाले शहर (मक्का) की,	وَهَٰذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۝
४- बेशक ‘हमने’ इन्सान को बहुत ही खूबसूरत (साँचे में ढ़ाल कर) बनाया।	لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝
५- फिर उसे (दोज़ख़ में) नीचों से भी नीचे कर दिया;	ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ۝
६- मगर जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे, उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला बदला है।	إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝
७- फिर तुझको क्या हो गया है, (ऐ आदम की औलाद!) जो तू बदले के दिन को झुठलाता है?	فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ۝
८- क्या अल्लाह सब ह़ाकिमों से बड़ा ह़ाकिम नहीं?	أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَاكِمِينَ ۝



अनुवाद-सूरतुल् अ़लक़ि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के २९० अक्षर, ७२ शब्द, १९ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- अपने रब का नाम लेकर पढ़िए, 'जिसने' पैदा किया।	اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ
२- 'उसने' इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया।	خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ
३- पढ़िए और (याद रखिए कि) आपका रब बड़ा करीम है,	اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ
४- 'जिसने' क़लम के ज़रिये इल्म सिखाया,	الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ
५- और इन्सान को वह इल्म सिखाया, जिसे वह न जानता था।	عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْ ؕ
६- मगर इन्सान शरारत पर उतर आता है।	كَلَّاۤ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَیَطْغٰۤی ۙ
७- (इस आधार पर) कि वह अपने आप को बेनियाज़ समझता है,	اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰی ؕ
८- बेशक (सबको) आपके रब ही की ओर लौट कर जाना है।	اِنَّ اِلٰی رَبِّكَ الرُّجْعٰی ؕ
९- आपने उस व्यक्ति को देखा, जो रोकता है,	اَرَءَیْتَ الَّذِیْ یَنْهٰی ۙ
१०- एक बन्दे को जबकि वह नमाज़ पढ़ता है?	عَبْدًا اِذَا صَلّٰی ؕ
११- भला देखो तो अगर वह हिदायत (सीधी राह) पर हों,	اَرَءَیْتَ اِنْ كَانَ عَلَی الْهُدٰۤی ۙ
१२- या परहेज़गारी का हुक्म देता हो।	اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰی ؕ
१३- भला देखो तो अगर उसने (दीन को) झुठलाया और उससे मुँह मोड़ा,	اَرَءَیْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰی ؕ
१४- क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह देख रहा है?	اَلَمْ یَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ یَرٰی ؕ

كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ﴿١٥﴾

१५- खबरदार, अगर वह बाज़ न आएगा तो हम उसकी पेशानी (माथे) के बाल पकड़ कर घसीटेंगे,

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿١٦﴾

१६- (उस) पेशानी को जो झूठा और खताकार है।

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ﴿١٧﴾

१७- तो वह बुला ले अपने हिमायतियों की टोली को!

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾

१८- हम भी बुलाएँगे, अज़ाब के अपने फ़रिश्तों को।

كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِب ۩ ﴿١٩﴾

सज्दः

१९- खबरदार, आप उसका कहना न मानिए और सज्दे करते रहिए और कुर्ब (निकटता) ह़ासिल करते रहिए। (सज्दः)



अनुवाद- सूरतुल्-क़द्रि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ११५ अक्षर,३० शब्द, ५ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- 'हमने' इस (क़ुर्आन) को शबे क़द्र में नाज़िल किया। — إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ

२- और आप को क्या मालूम कि क़द्र की रात क्या है? — وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ

३- क़द्र की रात हज़ार महीनों से बेहतर है; — لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ

४- इसमें फ़रिश्ते और रूहुल अमीन (जिब्रईल अलै०) अपने रब की इजाज़त से हर हुक्म लेकर उतरते हैं। — تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ

५- यह (रात अम्न व) सलामती है, फ़ज्र (भोर) के तुलूअ़ (उदय) होने तक। — سَلَامٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ



अनुवाद-सूरतुल् बय्यिनति

यह सूरः मदीना में उतरी, इसमें अ़रबी के ४१३ अक्षर ९५ शब्द ८ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ مُنفَكِّينَ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝

१- किताब वालों और मुश्रिकों में से जो लोग काफ़िर थे वे बाज़ आने वाले नहीं, जब तक कि उनके पास स्पष्ट प्रमाण न आ जाए;

رَسُولٌ مِّنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝

२- (अर्थात) अल्लाह की ओर से एक रसूल, जो पाक सह़ीफ़ों (ग्रन्थों) को पढ़ कर सुनाए;

فِيهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝

३- जिनमें सह़ी ठोस अह़काम (आदेश) लिखे हुए हों,

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝

४- और जिन लोगों को किताब (ग्रन्थ) दी गयी थी, वे इसके बाद भी फूट में पड़ गये कि उनके पास स्पष्ट प्रमाण आ चुका था।

وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ ۚ وَذَٰلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ ۝

५- और उनको इसके अलावा कोई हुक्म नहीं दिया गया था, कि केवल अल्लाह ही की इबादत करें, अपने धर्म को उसके लिए ख़ालिस करके, (एकाग्र होकर) और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें, और यही सह़ी दीन (धर्म) है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ أُولَٰئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝

६- बेशक जो लोग काफ़िर हैं अह्ले किताब और मुश्रिकों में से वे जहन्नम की आग में पड़ेंगे, (और) हमेशा उसी में रहेंगे,यही तमाम मख़्लूक़ (प्राणियों) में सबसे बुरे हैं

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝

७- बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम करते रहे वे तमाम मखलूक़ में सबसे बेहतर हैं,

جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ۚ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۚ ذٰلِكَ
لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ⑧

८- उनका बदला (पुरस्कार) उनके रब के पास हमेशा रहने के लिए जन्नतें (बाग़) हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेश रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी होगा और वे 'उससे' राज़ी होंगे, यह (इनआ़म) उसके लिए है जो अपने रब से डरे।



अनुवाद-सूरतुज़्ज़िल्ज़ालि

यह सूरः मदीना में नाज़िल हुई, इस में अ़रबी के१५८ अक्षर, ३७ शब्द, ८ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝

१- जब धरती भोंचाल से हिला दी जाएगी;

وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۝

२- और धरती अपने (अन्दर के) सारे बोझ बाहर निकाल फेंकेगी;

وَقَالَ الْإِنسَانُ مَا لَهَا ۝

३- और इन्सान कहेगा, ''इस को क्या हो गया है?''

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝

४- उस दिन वह अपने (ऊपर गुज़रे हुए) ह़ालात की ख़बर बयान कर देगी,

بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۝

५- क्योंकि आप के रब ने उसे हुक्म दे दिया होगा।

يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۝

६- उस दिन लोग अलग-अलग टोलियों में आएँगे, ताकि उन्हें उनके आ़माल (कर्मपत्र) दिखा दिए जाएँ।

فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۝

७- तो जिसने ज़र्रा बराबर (कण भर) भी भलाई की होगी,वह उसको देख लेगा;

وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۝

८- और जिसने ज़र्रा बराबर (कण भर) भी बुराई की होगी वह उस को देख लेगा।



अनुवाद- सूरतुल् आ़दियाति

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के १७० अक्षर, ४० शब्द, ११ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- उन सरपट दौड़ने वालों (घोड़ों) की क़सम, जो हाँफ़ उठते हैं,	وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۝
२- फिर पत्थरों पर (नाल) मार कर आग निकालते हैं,	فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۝
३- फिर प्रातः काल (दुश्मनों पर) धावा बोलते हैं,	فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۝
४- फिर उस समय धूल उड़ाते हैं।	فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۝
५- फिर उस समय भीड़ (दुश्मन की फौज) में जा घुसते हैं।	فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۝
६- बेशक इन्सान अपने रब का नाशुक्रा है,	اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۝
७- और बेशक वह इस पर खुद गवाह है।	وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۝
८- और बेशक वह तो माल से सख़्त मुह़ब्बत करने वाला है।	وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۝
९- क्या वह नहीं जानता कि (एक दिन) क़ब्रों में जो कुछ है उसे बाहर निकाल लिया जाएगा।	اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۝
१०- और जो दिलों में हैं, वे ज़ाहिर कर दिये जाएँगे।	وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ۝
११- बेशक उनका रब, उस दिन उनसे खूब अच्छी तरह बाख़बर (भिज्ञ) होगा।	اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ۝



अनुवाद- सूरतुल्क़ारिअ़ति

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के १६० अक्षर, ३५ शब्द,११ आयतें और १ रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु महादयालु)है।

१- (वह) खड़खड़ाने वाली (आफ़त);
الْقَارِعَةُ ۝

२- क्या है? (वह) खड़खड़ाने वाली!
مَا الْقَارِعَةُ ۝

३- और आपको क्या मालूम कि वह खड़खड़ाने वाली (आफ़त) क्या है?
وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝

४- उस दिन, जब लोग पतिंगों की तरह बिखरे हुए होंगे,
يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ۝

५- और पहाड़ रंग बिरंगे धुने हुए ऊन की तरह हो जाएंगे।
وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ۝

६- फिर जिस (के आमाल) का पलड़ा भारी होगा,
فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝

७- वह (मनपसंद) ऐश में राज़ी होंगे।
فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝

८- और जिस का पलड़ा हल्का होगा,
وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝

९- तो उसका ठिकाना ''हाविया'' (अर्थात आग का गढ़ा) होगा।
فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝

१०- और आप को क्या मालूम कि वह क्या चीज़ है?
وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ۝

११- (वह) दहकती हुई आग है।
نَارٌ حَامِيَةٌ ۝



अनुवाद- सूरतुत्तकासुरि

यह सूरः मक्का में उतरी, इस में अ़रबी के १२३ अक्षर, २८ शब्द, ८ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- (लोगो!) एक-दूसरे से (धन में) बढ़ने की इच्छा ने तुमको गफ़लत में डाल रखा है,	اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۝
२- यहाँ तक कि तुम क़ब्रों तक पहुँच जाते हो।	حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝
३- देखो, तुमको बहुत जल्द मालूम हो जाएगा।	كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝
४- फिर सुन लो, तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा।	ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝
५- सत्य यह है कि अगर तुम्हें सच्चा इल्म हो जाता, (तो दुनिया के पीछे न पड़ते)-	كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝
६- तुम ज़रूर दोज़ख देखोगे।	لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝
७- फिर तुम अपनी आँखों से ऐसा साफ़-साफ़ देखोगे कि तुमको यक़ीन आ जाएगा।	ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝
८- फिर उस दिन तुमसे नेअ़मतों के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा।	ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝



अनुवाद- सूरतुल्-अ़स्रि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ७४ अक्षर १४ शब्द, ३ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- अ़स्र (ज़माने) की क़सम,	وَالْعَصْرِ ۝
२- बेशक इन्सान बड़े घाटे में है,	اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝
३- मगर उन लोगों के सिवा जो ईमान लाए और भले काम करते रहे और एक दूसरे को ह़क़ (सत्य) की नसीह़त करते रहे, और सब्र की ताकीद करते रहे।	اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝



अनुवाद- सूरतुल् हुमज़ति

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के १३५ अक्षर, ३३ शब्द, ९ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- तबाही है हर उस व्यक्ति के लिए जो ताने देता है, (और) बुराइयाँ करने का आदी है।	وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝
२- जिसने माल जमा किया और उसे गिन-गिन कर रखा।	الَّذِىْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝
३- वह समझता है कि उसका माल हमेशा उसके पास रहेगा।	يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ۝
४- हरगिज़ नहीं, वह व्यक्ति 'हुतमा' (कुचल देने वाली) में फेंक दिया जाएगा,	كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ۝
५- और आप को क्या मालूम कि 'हुतमा' क्या है?	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝
६- वह अल्लाह की भड़काई हुई आग,	نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝
७- जो दिलों पर जा चढ़ेगी।	الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝
८- बेशक वह उनमें (चारों तरफ से) बंद कर दिए जाएँगे	اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝
९- (वे) ऊँचे-ऊँचे सुतूनों (आग के स्तम्भों) में होंगे।	فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝



अनुवाद- सूरतुल्-फ़ीलि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ६४ अक्षर, २४ शब्द, ५ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु) महादयालु है।

१- क्या आप ने नहीं देखा कि आपके रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया?	اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١
२-क्या उन की तदबीर (उपाय) को बेकार नहीं कर दिया?	اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٢
३- और उन पर परिंदों के झुँड के झुँड भेजे,	وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣
४- उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर फेंक रहे थे।	تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤
५- तो उनको ऐसा कर दिया, जैसे खाया हुआ भूसा।	فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥



अनुवाद-सूरतु कुरैशिन

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ७६ अक्षर, १७ शब्द,४ आयतें और १ रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू करता हूँ, अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है

१- कुरैश के अभ्यस्त (मानूस) करने की वजह से,	لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۙ
२- (अर्थात) उनको जाड़े गर्मी में सफर करने की वजह से, (आदत पड़ गयी है,)	اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۚ
३- तो उनको चाहिए कि इस घर (कअ़बे) के रब की इबादत करें;	فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۙ
४- जिसने उनको भूख की हालत में खाना दिया और खौफ़ से अमन दिया।	الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۧ



अनुवाद-सूरतुल्-माऊनि

यह सूरः मक्का में उतरी इसमें अ़रबी के ११५ अक्षर, २५ शब्द, ७ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ,जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝

१- क्या आप ने उस व्यक्ति को देखा जो बदले के दिन को झुठलाता है?

فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝

२- सो यह वही है जो यतीम को धक्के देता है,

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝

३- और मिस्कीन (मुहताज) को खिलाने की तर्ग़ीब (प्रोत्साहन) नहीं देता।

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝

४- तो ऐसे नमाज़ियों के लिए तबाही है,

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝

५- जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल (बेखबर) रहते हैं,

الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝

६- जो दिखावा करते हैं,

وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝

७- और मामूली चीज़ें भी (थोड़ी देर के लिए) नहीं देते।



अनुवाद- सूरतुल्-कौसरि

यह सूरः मक्का में उतरी इसमें अ़रबी के ३७ अक्षर, १० शब्द, ३ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

إِنَّآ أَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝

१- बेशक 'हमने' आपको कौस़र (अर्थात जन्नत की एक नहर) प्रदान की,

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝

२- तो आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और कुर्बानी किया कीजिए।

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝

३- बेशक आपका दुश्मन ही जड़ कटा (अर्थात बेनाम व निशान) है।



अनुवाद-सूरतुल्-काफ़िरून

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ९९ अक्षर, २६ शब्द, ६ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- कह दीजिए, ''ऐ काफ़िरों (दीन का इन्कार करने वालो),	قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ
२- न मैं उनकी इबादत (उपासना) करता हूँ, जिन (देवी, देवताओं) की तुम इबादत करते हो,	لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ
३- और न तुम 'उस' (अल्लाह) की इबादत करने वाले हो, जिसकी इबादत मैं करता हूँ।	وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ
४- और न मैं उनकी इबादत करने वाला हूँ, जिनकी इबादत तुम करते हो।	وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ
५- और न तुम 'उसकी' इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूँ।	وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۭ
६- तुम अपने दीन पर, मैं अपने दीन पर!'' (अर्थात तुमको तुम्हारे कर्मो का बदला मिलेगा और मुझ को मेरे कर्मो का बदला मिलेगा)।	لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۧ



अनुवाद-सूरतुन्नस्रि

यह सूरः मदीना में उतरी, इसमें अ़रबी के ८१ अक्षर, १६ शब्द, ३ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू करता हूँ, अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ

१- जब अल्लाह की मदद और फ़तह़ (विजय) आ पहुँची,

وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ

२- और आप ने देख लिया कि लोग अल्लाह के दीन (इस्लाम) में झुंड के झुंड दाख़िल हो रहे हैं,

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا

३- तो अपने रब की ह़म्द (प्रशन्सा) के साथ तस्बीह़ कीजिए और उसी से मग्फ़िरत (क्षमा) माँगिए, बेशक 'वह' बड़ा तौबः कुबूल करने वाला है।



अनुवाद- सूरतुल्-लहबि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ८१ अक्षर, २४ शब्द, ५ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- टूट गये अबू लहब के हाथ और वह तबाह (बर्बाद) हो गया!	تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝
२- न तो उसका माल ही उसके कुछ काम आया और न वह जो उसने कमाया।	مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝
३- वह बहुत जल्द भड़कती हुई आग में डाला जाएगा,	سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝
४- और उस की पत्नी भी जो सिर पर ईंधन लाद कर लाती है।	وَّامْرَاَتُهٗ ۭ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝
५- उसकी गर्दन में मूँझ की रस्सी होगी।	فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝



अनुवाद- सूरतुल्-इख़्लासि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ४६ अक्षर, १७ शब्द, ४ आयतें और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ

१- कह दीजिए, ''वह अल्लाह एक है''

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ

२- अल्लाह सबसे बेनियाज़ (अर्थात वह किसी का मुह़ताज नहीं सब उसी के मुह़ताज) है,

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ

३- न वह जनित है और न जन्य, (अर्थात न वह किसी का बाप है और न वह किसी का बेटा)

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۚ

४- और न कोई उसके बराबर (समान)।



अनुवाद- सूरतुल्-फ़लक़ि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ७३ अक्षर, २३ शब्द, ५ आयतें, और १ रूकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

१- कह दीजिए, मैं प्रातःकाल (सुबह़) के रब की पनाह (शरण) लेता हूँ;	قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ
२- हर चीज़ की बुराई से, जो 'उसने' पैदा की,	مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ
३- और रात के अँधेरे की बुराई से, जबकि वह छा जाए,	وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ
४- और गिरहों (गंडो) पर (पढ़-पढ़ कर) फूँकने वालियों (औ़रतों) की बुराई से,	وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ
५- और ह़सद (ईर्ष्या) करने वाले की बुराई से, जबकि वह ह़सद करे।	وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ



अनुवाद- सूरतुन्नासि

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के ८१ अक्षर, २० शब्द, ६ आयतें और १ रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू करता हूँ अल्लाह का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِۙ

१- (आप) कह दीजिए मैं पनाह मांगता हूँ इन्सानों के रब की,

مَلِكِ النَّاسِۙ

२-इन्सानों के ह़क़ीक़ी बादशाह की,

اِلٰهِ النَّاسِۙ

३-इन्सानों के मअ़बूद (उपास्य) की,

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ۬ الْخَنَّاسِۙ

४-वस्वसा डालने वाले खन्नास (छिपनेवाले) के शर (बुराई) से,

الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِۙ

५- जो लोगों के सीनों में वस्वसे डालता है,

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ۠

६-(चाहे वह) जिन्नों में से हो और (चाहे) इन्सानों में से हो।



دعاء ختم القرآن

اللّٰهُمَّ آنِسْ وَحْشَتِي فِي قَبْرِي اللّٰهُمَّ ارْحَمْنِي بِالْقُرْآنِ الْعَظِيمِ وَاجْعَلْهُ لِي

إِمَامًا وَنُورًا وَهُدًى وَرَحْمَةً اللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِي مِنْهُ مَا نَسِيتُ وَعَلِّمْنِي مِنْهُ

مَا جَهِلْتُ وَارْزُقْنِي تِلَاوَتَهُ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِي حُجَّةً

يَا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ

ख़त्म क़ुर्आन की दुआ़

ऐ अल्लाह! मेरी क़ब्र में वहशत (घबराहट) और परेशानी को दूर फ़रमा। या अल्लाह क़ुर्आन की बरकत और रह़मत से मुझे नवाज़ दे। क़ुर्आन को मेरे लिए पेशवा (पथ प्रदर्शक) बना और साथ ही नूर और हिदायत का ज़रिया और रह़मत बना।

ऐ अल्लाह इसमें से जो मैं भूल गया हूं, मुझे याद दिला दे और इस में से जो मैं नहीं जानता, वह मुझको सिखा दे और रात दिन मुझे इस की तिलावत (पाठ) की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा और क़ियामत के दिन इस को मेरे लिए दलील बना। ऐ सारे संसार के पालने वाले (मेरी दुआ़ क़ुबूल फ़रमा।) (आमीन)

क़ुर्आन में प्रयोग होने वाले शब्दों का आसान अर्थ

अ

अ़र्श- एक ऐसी चीज़ जो ज़मीन व आसमान सब को घेरे हुए है, या सिंहासन, परन्तु यहाँ मतलब अल्लाह की विश्व ब्यवस्था और शासन है।

अर-रसवाले- एक प्राचीन जाति का नाम जिसका उल्लेख क़ुर्आन में है।

अल्लाह- अल्लाह उस सत्ता का नाम है जो संपूर्ण सद्गुणों से युक्त, सम्पूर्ण सृष्टि का सृष्टा और सब का स्वामी है।

अरफ़ात- वह मैदान जहाँ ६ ज़िलूहिज्जः को ह़ाजी इकट्ठा होते हैं।

अंसार- सहायता करने वाले अर्थात मदीना के मुसलमान जिन्हों ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और हिजरत करने वाले मुसलमानों की मदद की।

अ़ज़ाब- दण्ड, सजा, कष्ट, दुःख।

अहले किताब- जिनके पास कोई आसमानी किताब हो।

अन्तिम दिन- जिस दिन अल्लाह दोबारा उठा कर मामलों का फैसला करेगा।

अ़स्र- दिन का चौथा पहर (वह नमाज़ जो दिन डूबने के थोड़ी देर पहले पढ़ी जाती है)

अम्बिया- नबी का बहुबचन है और नबी का अर्थ होता है ख़बर देने वाला अर्थात अल्लाह का संदेश लोगों को सुनाने वाला।

आ़द- अ़रब की एक प्राचीन जाति।

आ

आख़िरत- परलोक, मरने के बाद का लोक जिसमें जन्नत और जहन्नम (स्वर्ग व नर्क) होगी।

आयत- निशानी, चिह्न, संकेत, परन्तु क़ुर्आन में आयत कई अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। जैसे- १- प्राकृतिक लक्षणों, तथ्यों और ऐतिहासिक धारणाओं २- चमत्कार ३- क़ुर्आन का वाक्यांश या वाक्य।

इ

इ़द्दत- गिनती- अर्थात वह दिन जिनके बीतने से पहले विधवा या तलाक़ पाई हुई औ़रत दूसरा विवाह नहीं कर सकती है।

इब्लीस- एक जिन्न का नाम है पहले अल्लाह का बड़ा भक्त था अवज्ञा और उद्वण्डता के कारण अल्लाह ने उसे धुत्कार दिया, इसका दूसरा नाम शैतान है।

इस्लाम- समर्पण अर्थात स्वच्छा पूर्वक अल्लाह की अधीनता स्वीकार करना।

इन्जील- ईसा मसीह़ पर अवतरित ग्रन्थ।

इलाह- उपास्य, अराध्य।

इशा- रात का पहला पहर वह नमाज़ जो सूरज डूबने के बाद की लालिमा ख़त्म होने के बाद पढ़ी जाती है।

इबादत- उपासना अर्थात पूर्णरूप से दास्ता प्रकाट करना।

इह़राम- बिना सिली एक चादर और धोती अर्थात वह कपड़ा जिसे ह़ज या उमरः करते समय प्रयोग किया जाता है।

ई

ईसाई- ईसा मसीह़ के अनुयायी होने का दावा करने वाले।

ईमान- आस्था मानना अर्थात पुष्टि करना।

ईला- पति का पत्नी के पास चार माह या उससे अधिक समय के लिए न जाने की क़सम खा लेना।

ईमान लाना- एक अल्लाह और उसके रसूलों, किताबों, तक़्दीर, फ़रिश्तों, क़ियामत, पर आस्था रखते हुए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की बताई हुई तमाम बातों पर विश्वास करना।

उ

उम्मत- वे लोग जिनकी ओर कोई रसूल भेजा गया हो, या जमाअ़त व समूह।

उसवा- नमूना।

उमरः- निर्माण, अर्थात उमरः भी ह़ज की तरह कअ़बः के दर्शन के साथ किया जाता है परन्तु ह़ज का समय निश्चित होता है और उमरः का निश्चित नहीं।

उम्मी- अशिक्षित, या जिस जाति के पास कोई आसमानी किताब न हो।

ए

एतिकाफ़- एकान्तवास अर्थात कुछ समय के लिए विशेषरूप से रमज़ान के दस दिन या कभी भी मस्जिद में एकान्तवास करना और अल्लाह की याद में लगे रहना।

ऐ

ऐकावाले- ऐका, तबूक का एक प्राचीन नाम है, वहाँ के निवासियों को ऐकावाले कहते हैं

क

कलिमः- "लाइलाहइल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि।" को कलिमा कहते हैं।

काफ़िर- इन्कार करने वाला, सच्चाई को छिपाने वाला अर्थात अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत को न मानने वाला।

कफ़्फ़ारा- प्रायश्चित किसी गुनाह के दोष से मुक्त होने के लिए किया जाने वाला उपाय।

कातिब- किताब लिखने वाला।

कअ़बः- मक्का में स्थित अल्लाह का घर।

किताब- यह शब्द क़ुर्आन में कई अर्थों मे प्रयोग हुआ है जैसे (१) वाणी (२) आदेश, धर्म विधान, शरीअ़त (३) अल्लाह का वह अभिलेख जिसमें हर चीज़ अंकित है (४) वह किताब जिसमें उसके फैसले अंकित हैं (५) कर्म पत्र (६) तक़्दीर।

क़िब्ला- मक्के में अल्लाह का घर जिसकी ओर मुहँ करके नमाज़ पढ़ी जाती है।

क़ियामत- जिस दिन यह वर्तमान संसार अल्लाह के हुक्म से मिट जाएगा और सब लोगों को एक जगह जमा करके अच्छे बुरे कर्मों का ह़िसाब होगा, उस को क़ियामत या महा प्रलय भी कहते हैं।

काहिन- वे व्यक्ति जिनके अधीन जिन्न और शैतान हुआ करते हैं और वे उनकी मदद से भविष्य की सच्ची या झूठी ख़बरें दिया करते हैं।
किरामन कातिबीन- हर व्यक्ति के साथ वे दो फ़रिश्ते जो अच्छे और बुरे कार्य के लिखने पर नियुक्त हैं।
क़िब्ती- मिस्र के प्राचीन निवासी, जो बहुदेववादी थे।
क़िसास- हत्या, दण्ड, अर्थात खून का बदला।
क़ुर्आन- क़ुर्आन का अर्थ होता है पढ़ना, अल्लाह की अन्तिम किताब जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर उतरी।
क़ुर्बानी- बलिदान, जानवर को अल्लाह के नाम पर क़ुर्बान करना।
क़ुरैश- ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) का एक प्रतिष्ठित क़बीला
कुफ़्र- इन्कार, कुफ़्र का अर्थ होता है ढ़ाँकना, परदा डालना, इस्लाम का इन्कार करना।

ख

खलीफ़ा- प्रतिनिधि, नायक या उत्तराधिकारी।
ख़ालिक़- पैदा करने वाला।
ख़ुला- पत्नी को कुछ दे दिला कर छुट्कारा ह़ासिल करना।
ख़ुत्बा- भाषण, ईद या जुमअः की नमाज़ में इमाम जो मिम्बर पर भाषण देता है।

ग

गुमराह- पथभ्रष्ट।
ग़ैब- परोक्ष, अदृष्ट, छिपा हुआ, जिसके जानने का हमारे पास कोई साधन न हो।
ग़नीमत- शत्रु धन जो रणक्षेत्र में विजय पाने के बाद मिलता है

ज

जन्नत- जिस जगह इस दुनिया के शुभ कर्मो का बदला मिलेगा और हर तरह का सुख और आराम होगा, उसे जन्नत कहते हैं जिसे बहिश्त भी कहते हैं।
जनाबत- स्त्री प्रसंग या वीर्यपात के बाद से लेकर स्नान करने तक की ह़ालत का नाम 'जनाबत' है, जब तक मनुष्य स्नान न कर ले, वह जुनबी कहलाता है इस दशा में मनुष्य का शरीर अशुद्ध (नापाक) होता है।
जहन्नम- नरक, दोज़ख़, आख़िरत में जहाँ अल्लाह के विद्रोहियों और अवज्ञाकारियों को रखा जाएगा।
ज़बूर- पट्टिका, किताब, वह किताब जो ह़ज़रत दाऊद (अलै०) पर अवतरित हुई।
ज़कात- एक प्रकार का दान जो अमीरों (अर्थात जिसके पास बावन तोला चाँदी या साढ़े सात तोला सोने के बराबर की मालियत हो उस पर साल गुज़र जाए) से धन का चालीसवाँ भाग अर्थात ढाई प्रतिशत लेकर ग़रीबों पर खर्च किया जाता है।
जिज़्या- रक्षा कर, अर्थात इस्लामी राज्य में ग़ैर मुस्लिमों को रक्षा के बदले में लिया जाने वाला कर, मगर मुहताज और विवश गैर मुस्लिमों से जिज़्या नहीं लिया जाता।
जिन्न- मनुष्यों की तरह एक मख़लूक़ जो दिखाई नहीं देती।
जिब्रईल- उच्च कोटि के एक फ़रिश्ते का नाम, जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के पास अल्लाह का कलाम (वाणी) लेकर आते थे।

जिहाद– शब्दिक अर्थ होता है 'जान तोड़ कोशिश करना' अर्थात अल्लाह के आदेशों को ऊँचा रखने और अल्लाह के रास्ते में तन-मन धन निछावर करने का नाम जिहाद है।

ज़ुह्र– तीसरा पहर अर्थात जो नमाज़ दिन ढ़लने के बाद पढ़ जाती है।

त

तक़्वा– परेहज़गारी, संयमी।

तयम्मुम– पानी न मिलने पर ग़ुस्ल और वुज़ू के बदले तयम्मुम से काम लेते हैं, अर्थात पाक मिट्टी पर हाथ मार कर मुँह और हाथ पर फेरना।

तस्बीह़– अल्लाह की महानता का वर्णन करना।

तौबः– बुरा काम करने के बाद जब आदमी पछताता और लज्जित होता है, और फिर अल्लाह से डर कर दिल से यह दृढ़ प्रतिज्ञा करता है कि अब मैं बुरा काम न करूँगा इस को तौबः कहते हैं।

तवक्कुल– साधनों को अपना कर अल्लाह पर भरोसा रखना।

तवाफ़– चक्कर लगाना।

तहज्जुद– आधी रात के बाद पढ़ी जाने वाली नमाज़।

तागूत– सीमा से आगे बढ़ना, हर उस चीज़ को तागूत कहते हैं जिस में अल्लाह के मुक़ाबले में उद्दण्डता पाई जाती हो, या उद्दण्डता पर लोगों को उभारता हो, चाहे वह आदमी की अपनी इच्छा हो या समाज का कोई व्यक्ति हो, या कोई हुकूमत या संस्था हो या खुद शैतान या इब्लीस हो।

तूर– एक विशेष पहाड़ का नाम है।

तौह़ीद– एकेश्वरवाद, अल्लाह को एक मानना और किसी को उस का साझी और समकक्ष न ठहराना।

फ

फ़िद्या– जो धन क़ैदियों के छुड़ाने में दिया जाता है उसे फ़िद्या कहते हैं।

फ़रिश्ता– एक जाति जो नूर अर्थात प्रकाश से बनाई गई है, खाने पीने की उनको कुछ ज़रूरत नहीं होती वह अल्लाह की आज्ञा पालन के लिए हर समय तैयार रहते हैं उनको फ़रिश्ता और मलाइका कहते हैं।

फ़ज्र– उषाकाल, जो नमाज़ सूर्योदय से पहले पढ़ी जाती है।

फ़िरदौस– जन्नत, बैकुण्ठ, स्वर्ग।

ब

बैतुल मक़्दिस– पवित्र घर, मस्जिदे अक्सा, वह पाक घर जो यरूशलम में है, जिसके निर्माण का संकल्प ह़ज़रत दाऊद (अलै०) ने किया था और यह काम उनके बेटे ह़ज़रत सुलेमान (अलै०) के पुत्र के हाथों पूरा हुआ।

बैअ़त– वचन देना, आज्ञापालन की प्रतिज्ञा करना।

बनी इस्माईल– ह़ज़रत इस्माईल अलै० की संतान के लोग।

बनी इस्राईल- इस्राईल की संतान, यहूदी, इस्राईल, ह़ज़रत याक़ूब (अलै०) का दूसरा नाम था। ह़ज़रत याक़ूब (अलै०), ह़ज़रत इस्ह़ाक (अलै०) के बेटे और ह़ज़रत इब्राहीम (अलै०) के पौत्र थे, यहूदी उन्हीं की वंश से हैं इस लिए इन्हें बनी इस्राईल कह कर पुकारा गया है।

म

मुश्रिक- अनेकेश्वरवादी, शिर्क करने वाला, किसी अन्य को अल्लाह के समकक्ष घोषित करने वाला।

मुनाफ़िक़- कप्टाचारी, उन लोगों को कहा जाता है जो दिल से अल्लाह के रसूल और इस्लाम को न मानते हों। मगर ज़ाहिरी तौर से मुसलमानों के साथ हों।

मुहाजिरीन- जो मुसलमान मक्के के काफ़िरों से तंग आकर मदीना चले आए थे।

मुसलमान- इस्लाम का अनुयायी। (ईश्वरीय आदेशानुसार जीवन यापन करने वाला)

मोमिन- ईमानवाला, हज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की लाई हुई हर बात को मानने वाला।

मस्जिदे ह़राम- प्रतिष्ठित मस्जिद जिस के बीच कअ़बः स्थित है।

मलऊन- वह व्यक्ति जिसको अल्लाह की कृपा से वंचित कर दिया गया हो।

मुस्लिम- आज्ञाकारी, इस्लाम का अनुयायी।

मजूस- ईरान के अग्नि पूजक लोग, जो प्रकाश और अन्धकार के दो अलग-अलग खुदा मानते हैं और अपने को ज़रदुश का अनुयायी कहते हैं।

मद्यन वाले- अ़रब की एक पुरानी ज़ाति, जिसका केन्द्र मद्यन नगर था।

मन्न- प्राकृतिक खाद्य पदार्थ जो इस्राईलियों को बेघर होने की दशा में ४० वर्षों तक मिलता रहा।

मह्र- वह रक़म या माल जो विवाह के नाते से पति अपनी पत्नी को देता है, क़ुर्आन में इसके लिए 'सद्क़ात' शब्द प्रयुक्त हुआ है, जो सद्क़ः का बहुबचन है। 'मह्र' वास्तव में स्त्री पुरूष के सम्बन्धों और उनके प्रेम भाव के बने रहने का एक प्रतीक या चिन्ह् है।

मीकाईल- एक प्रसिद्ध फ़रिश्ते का नाम।

य

यहूद- यहूदी लोग जो अपना सम्बन्ध ह़ज़रत मूसा (अलै०) से जोड़ते हैं।

यतीम- अनाथ।

र

रब- पालनकर्ता, संरक्षक, स्वामी, प्रबन्धकर्ता।

रब्बानी- धर्माधिकारी, यहूद के यहाँ जो धर्म ज्ञाता धार्मिक पदों पर नियुक्त होते थे और धार्मिक विषयों में मार्गदर्शन करना उनका कर्तव्य होता था। उन्हें रब्बानी कहते थे।

रसूल- पैग़म्बर, दूत; वह व्यक्ति जो रिसालत के पद पर लोगों को अल्लाह का मार्ग दिखाता हो। रसूल और नबी में थोड़ा अन्तर है, ''रसूल'' वह पैग़म्बर होता है जिसे अल्लाह की ओर से नई शरीअ़त (धर्मशास्त्र) और किताब प्रदान हुई हो, और 'नबी' हर पैग़म्बर को कहते हैं चाहे उसे नई शरीअ़त और किताब मिली हो या उसे केवल पूर्व कालिक किताब और शरीअ़त पर लोगों को चलाने का कार्यभार सौंपा गया हो।

रब्बी अल्लाह वाले, ईशभक्त;।

रूकूअ़- सिर झुकाना, नमाज़ का एक अंग जिसमें आदमी अल्लाह की बड़ाई का ध्यान करते हुए उसके आगे नत्मस्तक होता है।

रूहूल कुदुस- पवित्रात्मा, वह वह्य का ज्ञान जो हज़रत ईसा (अलै०) को दिया गया था और इससे मुराद फ़रिश्ता, हज़रत जिब्रईल (अलै०), भी हैं जो अल्लाह की वाणी पैग़म्बर तक पहुँचाते थे; और इस से मुराद हज़रत ईसा (अलै०) की अपनी पवित्रता भी होती है।

रोजः- व्रत, कुर्आन में 'सियाम' शब्द आया है, रोज़े में आदमी सुबह़ पौ फटने से लेकर सूर्यास्त तक खाने-पीने और कामवास्ना की पूर्ति से रूका रहता है।

ल

लौंडी- वे स्त्रियाँ जो इस्लामी युद्ध में गिरफ्तार हुई हों।

व

वुज़ू- नमाज़ पढ़ने से पहले, शुद्धता के लिए हाथ, मुँह और पैरों को धोना तथा सर पर हाथ फेरना।

श

शुहदा- यह शहीद का बहुबचन है धर्म मार्ग में जो मारा जाय उसे शहीद कहते हैं।

शआ़इर- इसका एक वचन होता है, शिआ़र खास धार्मिक चिन्ह को शिआ़र कहते हैं।

शरीअ़त- धर्म के नियम।

शिर्क- अनेकेश्वरवाद, किसी को अल्लाह का शरीक या साझीदार ठहराना।

शैतान- इब्लीस या अग्नि स्वभाव वाला, अशान्त, सरकशी और क्रूरता वाला, शैतान के ये दुर्गुण किसी जिन्न में भी पाए जा सकते हैं और किसी मनुष्य में भी।

स

सज्दः- झुकना, सर ज़मीन पर रख देना नमाज़ का एक विशेष अंग।

सद्क़ः- दान, ख़ैरात, अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करना, कुर्आन में ज़कात और ख़ैरात दोनों ही के लिए यह शब्द प्रयुक्त हुआ है।

सब्र- धैर्य।

समूद- अ़रब की एक प्रसिद्ध प्राचीन जाति।

सह़ीफ़ा- लिखित वर्ण ईश्वरीय ग्रन्थ या पन्ने।

सिद्दीक़- अत्यन्त सच्चा।

सूर- सूर बिगुल या नरसिंघा।

सूरः- कुर्आन छोटे बड़े ११४ भागों में है जिनमें से प्रत्येक भाग को सूरः कहते हैं।

सिद्दीक़ीन- यह 'सिद्दीक़' का बहुबचन है इस का अर्थ होता है बहुत सच बोलने वाला।

सा़लिह़ीन- यह 'सालेह़' का बहुबचन है नेक और धर्मात्मा मनुष्य को सा़लेह़ कहते हैं।

सवाब- नेक काम का अच्छा बदला।

सहाबी- वह व्यक्ति जिसने ईमान की हलत में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को देखा और ईमान की ही हालत में मरा हो।

संगसार- पत्थरों से मार-मार कर मार डालाना।

ह

हक़- जिसका होना सत्य हो।

हम्द- गुणगान, प्रशंसा,।

हज- इरादा करना, ज़ियारत हज एक इबादत है जिसमें आदमी कअ़बः के दर्शन का इरादा करता है।

हरम- प्रतिष्ठित स्थान, मक्का का विशेष भू-भाग।

हराम- अवैध, वर्जित।

हलाल- वैध, अवर्जित जो इस्लामी धर्म शास्त्र के अनुकूल हो।

हवारी- सच्चा साथी, सहायक, हज़रत ईसा मसीह (अलै०) के साथियों की उपाधि।

हिकमत- तत्वज्ञान, तत्वदर्शिता,।

हिजरत- स्वदेश त्याग, अल्लाह की राह में घर-बार छोड़ना रसूलुल्लाह (सल्ल०) का मक्का छोड़कर मदीना का प्रस्थान करना।

हिदायत- मार्गदर्शन, सीधे रास्ते पर लाना, सीधी राह पर चलाना।

हदिया- तोहफ़ा।

हदीस- प्रत्येक वह कार्य या कथन या गुण जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से सम्बन्धित हों।

हादी- रास्ता दिखाने वाला।

हुदूद- धार्मिक नियम (की अन्तिम सीमा)।

हुक्म- मामलों में फैसला करने का अल्लाह की ओर से अधिकार।

हुरूफ़ मुक़त्तिआ़त- हुरूफ़ शब्द, हर्फ़ का बहुवचन है अर्थात अक्षर, और मुकत्तआ़त का अर्थ है कटा हुआ, अलग-अलग किया हुआ कुर्आन की कुछ सूरतों का आरम्भ अ़रबी के कुछ अक्षरों से हुआ है, ये अक्षर अलग-अलग पढ़े जाते हैं इन्हें मिलाकर शब्द के रूप में नहीं पढ़ा जाता, इसी लिए इन्हें हुरूफ़ मुक़त्तआ़त कहते हैं।



-:सन्देश-:

हज़रत मौलाना सय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी मद्दज़िल्लहुल आली के कलम से-

सहसम्पादक 'अर्राइद' व उस्तादे हदीस, दारूल उलूम नदवतुल उलमा, (लखनऊ)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुर्आन इन्सानियत की हिदायत (रहनुमाई) की आख़री और वाहिद किताब है। जिसके बिना कोई भी इन्सान हिदायत के रास्ता पर नहीं आ सकता। अल्लाह ने यूँ तो बहुत से हिदायत नामे भेजे और उन से बहुत से लोगों को हिदायत का रास्ता मिला, लेकिन उसको लोगों ने बदल डाला, और कुछ का कुछ कर दिया, जिसका एतिराफ़ उनके मानने वाले खुद करते हैं, इस लिए यह ज़रूरत क़ियामत तक बाक़ी रहेगी कि कुर्आन मजीद के तर्जुमे दुनिया भर की ज़बानों में किये जाते रहें, ताकि तमाम दुनिया के सामने रौशनी आ जाए।

अल्हमदुलिल्लाह यह सिलसिला अर्सा से जारी है, हमारा मुल्क जिसमें बसने वालों की तअदाद एक अरब से आगे जा रही है, के लिए जितने तर्जुमों की ज़रूरत थी उसमें बहुत कोताही होती रही, पहले तो तर्जुमे का अमल भी बहुत देर से हज़रत हकीम शाह वलीउल्लाह साहब के ज़रिये बाक़ाइदा शुरू हुआ फिर तो एक सिलसिला शुरू हो गया। लेकिन वह तमाम तर्जुमे उर्दूदाँ या फ़ारसीदाँ हज़रत के लिए थे, हमारे मुल्क की सब से ज़्यादा बोली जाने वाली हिन्दी ज़बान जो सरकारी ज़बान भी है, उस में तर्जुमें की बहुत कमी थी, अगर तर्जुमें कुछ हुए भी तो उन में कुर्आनी तर्जुमें के आदाब का पूरा लिहाज अक्सर तर्जुमे करने वालों ने नहीं रखा, ज़रूरत थी कि कोई अच्छा हिन्दीदाँ जो अरबी से भी वाक़िफ़ हो इस काम को अन्जाम देता, और वह अस्ल में किसी उर्दू तर्जुमे को सामने रख कर हिन्दी का जामा पहनाता।

बड़ी खुशी की बात है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा के फ़ाज़िल 'मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी साहब नदवी' ने मौलाना फ़तेह मुहम्मद साहब जालन्धरी के उर्दू तर्जुमें को सामने रखते हुए हिन्दी में तर्जुमानी की कोशिश की है, फ़तेह मुहम्मद साहब का तर्जुमः मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०) को बहुत पसन्द था और इसकी तअरीफ़ किया करते थे, जो इसके मुस्तनद और मोअतबर होने के लिए काफ़ी है, अल्लाह तआला इस तर्जुमानी को क़बूल फ़रमाए, और तमाम गुमराह लोगों के लिए इसको हिदायत का ज़रिया बनाये।

अब्दुल्लाह हसनी नदवी
२४/मई/२००४

-:सन्देश:-

हज़रत मौलाना अब्दुलक़ादिर साह़ब नदवी मज़ाहिरी मद्दज़िल्लहुल्आली

उस्ताद दारूल उलूम नदवतुल उ़लमा, लखनऊ, के क़लम से-

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

कुर्आन मजीद अल्लाह की ऐसी किताब है, जो तमाम इन्सानों के लिए रहती दुनिया तक, ज़िन्दगी के हर शोअ़बे में बेहतरीन रहनुमाई के लिए, अल्लाह की तरफ़ से उतारी गयी, गोया यह परवरदिगार-ए-आ़लम का पूरी इन्सानियत के नाम एक अबदी पैग़ाम है लिहाज़ा इसको हर इन्सान तक पहुंचना चाहिए ताकि वह इससे फ़ायदा उठाकर अपनी ज़िन्दगी को हर मरहला में अच्छी तरह गुज़ार सके।

एक तरफ़ कुर्आन करीम की यह हैसियत है तो दूसरी तरफ़ उससे ना वाक़फ़ियत और दूरी का यह आ़लम है कि ग़ैर तो ग़ैर अपने भी उसके पैग़ाम से ना वाक़िफ़ हैं।

जब तक आ़म मुसलमानों में उर्दू से वाक़फ़ियत रही, तो फिर भी बात ग़नीमत थी कि उर्दू किताबों के वास्ता से भी बहरहा़ल कुछ वाक़फ़ियत हो जाती थी मगर तक़्सीमे मुल्क के बाद तो आहिस्ता-आहिस्ता उर्दू से इतनी दूरी होती चली गई कि अ़वाम तो अ़वाम ख़वास नौजवान नस्ल, चाहे घरेलू माहौल की वजह से, कुछ उर्दू बोल ले मगर लिखने पढ़ने से बिल्कुल ना बलद हो गयी।

लिहाज़ा ज़रूरत थी कि कुर्आन पाक का तर्जुमः ऐसी ज़बान में किया जाये जिसको नई नस्ल जानती है, यानी मुल्की ज़बान हिन्दी में, हाँ हिन्दी में कुछ तर्जुमें ज़रूर हैं मगर वह आ़मतौर से ऐसे लोगों के किये हुए हैं जो आ़लिम न होने की वज़ह से उर्दू तर्जुमे को अस्ल मदार बनाने पर मजबूर थे लिहाज़ा ऐसे हिन्दी, तर्जुमे का तर्जुमा कहे जाने के ज्यादा लाएक़ हैं गोया वह कुरान के तर्जुमे के तर्जुमे हैं।

हमारे अ़ज़ीज़े गिरामी 'मुफ़्ती मौलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' ने जो नदवा से सनद याफ़्ता होने के साथ हिन्दी से भी वाक़िफ़ हैं, वाक़िफ़ ही नहीं बल्कि मुसल्सल इस तरह के कामों में लगे रहने की वज़ह से अ़वाम में समझी जाने वाली हिन्दी जो हिन्दुस्तानी ज़बान है उससे भी वाक़िफ़ हैं इन्होंने इस काम को अपने ज़िम्मे लिया है और एक हद तक उसको पाये तकमील तक पहुंचा कर एक हिस्सा शाए भी किया और अब पूरे कुर्आन का तर्जुमः शाए करने जा रहे हैं जिस पर वह मुबारकबाद के मुस्तह़िक़ हैं।

कुर्आन पाक का तर्जुमः आसान बात नहीं न उसके लिए सिर्फ ज़बान दानी काफ़ी है बल्कि और भी बहुत कुछ इल्म व तजुर्बः ज़रूरी है लिहाज़ा तमाम तर कोशिशों के बावजूद कहीं लग़ज़िश हो गई हो तो उसके लिए वह हर तरह के मुफ़ीद मश्वरह के लिए फ़राख़ दिल हैं।

इन जुमला उमूर के पेशेनज़र यह हम सब अहले इस्लाम की तरफ़ से हिम्मत अफ़ज़ाई और शुक्रिया और दुआ़ओं के मुस्ताह़िक़ हैं ''जज़ा हुमुल्लाहु खैरन जज़ा.''

अब्दुल क़ादिर नदवी

१० रबीउस्सानी १४२५ हि० पट्टन, गुजरात

-:सन्देश-:

मुकर्रमी जनाब डा० अन्सार अह़मद सिद्दीक़ी साह़ब

अध्यक्ष हिन्दी विभाग इस्लामिया डिग्री कालेज, इन्दौर एम०पी०

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

यही क़ुर्आन मजीद है जिसने अ़रब के बद्दुओं, खानाबदोशों को जिन पर दुनिया का ध्यान भी इधर न जाता था, कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया-

खुद न थे जो राह पर औरों के हादी बन गए,
क्या नज़र थी जिसने मुर्दो को मसीहा कर दिया।

हम अगर ग़नी हैं तो इसी क़ुर्आन मजीद के ख़ज़ाने की वजह से, बड़े-बड़े बादशाहों, सरमायादारों और दौलतमंदों को देने के लिए अगर कोई चीज़ है जो बढ़ा सकती है, दुनिया बदल सकती है, किस्मत चमका सकती है, वह क़ुर्आन मजीद का एजाज़ है, क़ुर्आन मजीद की फ़िक्र है। हम अगर दौलतमंद हैं तो वह इसी क़ुर्आन मजीद के ख़ज़ाने से, क़ुर्आन मजीद के पढ़ने से कुछ मोती हाथ लग जाएँ तो यह हमारी ख़ुशक़िस्मती है।

अ़रब के सह़ाबा ने क़ैसर व किसरा के ताज को पैरों से रौंदा और उन के तख़्त व सल्तनत पर ऐसे बैठे जैसे बोरिये पर बैठते हैं, यह क़ुर्आन की ही देन है। क़ुर्आन से हटकर संसार के किसी मनुष्य को कामियाबी नहीं मिल सकती, यह भी क़ुर्आन का चैलेंज है।

क़ुर्आन शरीफ़ की व्याख्या करने का प्रयास बड़े-बड़े फ़लास्फ़रों, बुद्धिजीवियों ने अपने-अपने अनुसार हर युग में किया, अनेक भाषाओं में भी किया और अभी भी प्रयास जारी हैं और जब तक संसार रहेगा यह कोशिश जारी रहेगी।

हमारे लिए बड़े गर्व एवं प्रसन्नता की बात है कि हमारे प्रिय मित्र जनाब 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी' साह़ब ने हिन्दी भाषा में क़ुर्आन का अनुवाद और व्याख्या करने का बहुत महान प्रयास किया है। अल्लाह तआ़ला उन के इस प्रयास को सफ़ल बनाए यह हमारी दिली दुआ़ है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि विश्वास है कि हिन्दी जगत में सब लोग लाभ उठाएँगे।

अन्सार अह़मद सिद्दीक़ी
2 रजब 1419 हि०

क़ुर्आन के प्रमुख विषयों की सूची

तौहीद (एकेश्वरवाद) का बयान

पारा	सूरः	आयत
1-	अल्बक़रः	29
7-	अल्अन्आ़म	1
7-	अल्अन्आ़म	73
7-	अल्अन्आ़म	101
17-	अंबिया	33
18-	अल्मूमिनून	12-14
"-	अल्अन्नूर	45
"-	अल्फ़ुर्क़ान	2
21-	लुक़मान	10
27-	अर्रह्मान	14-15
3-	आलेअ़िमरान	36
5-	अन्निसा	53
6-	अल्माइदः	17
"-	" "	"
"-	" "	76
14-	अन्नह्ल	73
15-	बनी इस्राईल	111
18-	अल्मूमिनून	88
22-	अस्सबा	202
"-	फ़ातिर	13
"-	" "	"
24-	अज्ज़ुमर	43
25-	अज्ज़ुख़रूफ़	86
26-	अल्फ़त्ह	11
"-	" "	14
6-	अल्माइदः	41
9-	अल्अअ़राफ़	188
11-	यूनुस	49
13-	अर्रअ़द	16
15-	बनी इस्राईल	56
18-	अल्फ़ुर्क़ान	3
26-	अल्फ़त्ह	11
28-	अल्मुम्तहिना	4
29-	अल्जिन्न	21
2-	अल्बक़रः	212
7-	अल्माइदः	88
12-	हूद	6
13-	अररअ़द	26
17-	अल्हज	58

पारा	सूरः	आयत
20	अल्अन्कबूत	17
21-	" "	60
21	अर्रूम	40
22-	फ़ातिर	3
24-	अल्मूमिनून	13
25-	अश्शूरा	27
27-	अज्ज़ारियात	58
28-	अत्तलाक़	3
29-	अल्मुल्क	21
2-	अल्बक़रः	163
3-	" "	255
3-	आलेअ़िमरान	62
6-	अन्निसा	171
6-	अल्माइदः	73
7-	अन्आ़म	46
8-	अल्अअ़राफ़	65
13-	इब्राहीम	52
14-	अन्नह्ल	22
14-	" "	51
15-	बनी इस्राईल	22
16-	अल्कहफ़	110
17-	अल्अंबिया	108
"	अल्हज	34
18-	अल्मूमिनून	91
20-	अन्नम्ल	60
20	अल्क़सस	71
23-	स़ाद	65
24-	हामीम् सज्दः	6
25-	अज्ज़ुख़रूफ़	84
27-	अत्तूर	43

इल्म ग़ैब से सम्बन्धित

पारा	सूरः	आयत
1-	अल्बक़रः	30-34
7-	अल्माइदः	109
"	" "	116
"	अल्अन्आ़म	59
"	" "	73
10-	अत्तौबः	78
11-	" "	94
"	" "	105
11-	यूनुस	20
12-	हूद	123
15-	अल्कहफ़	26
22-	फ़ातिर	38
"	अस्सबा	3
26-	अल्हुजुरात	18
7-	अल्अन्आ़म	50
9-	अल्अअ़राफ़	187
"	" "	188
29-	अल्जिन्न	25-27

अल्लाह के सिवा कोई औलाद नहीं

पारा	सूरः	आयत
25-	अश्शूरा	49-50

बीमार को अल्लाह के सिवा कोई अच्छा करने वाला नहीं

पारा	सूरः	आयत
19-	अश्शूरा	80

मुसीबत में उसके सिवा कोई काम आने वाला नहीं

पारा	सूरः	आयत
11-	यूनुस	12
84-	अंबिया	84
15-	बनी इस्राईल	24
	अज्ज़ुमर	38

अल्लाह के अलावह किसी से दुआ़ नहीं माँगी जा सकती

पारा	सूरः	आयत
7-	अल्अन्आ़म	4-41
8-	अल्अअ़राफ़	29
11-	यूनुस	106
13-	अररअ़द	14
19-	अल्फ़ुर्क़ान	68
24-	अल्मूमिन	14
2-	अल्बक़रः	186
20-	अन्नम्ल	62
24-	अज्ज़ुमर	49
1-	अल्बक़रः	119
5-	अन्निसा	79
13-	अररअ़द	30
15-	बनी इस्राईल	105
17-	अल्अंबिया	107
22-	अल्अहज़ाब	45
"	अस्सबा	28
"	यासीन	3

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) सबसे अफ़ज़ल हैं

पारा	सूरः	आयत
२२-	अहज़ाब	४०
''	अस्सबा	२८
११-	अतुतौबः	१२८
१७-	अंबिया	१०७
२२-	अहज़ाब	५-४६
''	अस्सबा	२८
३-	आलेअिम्रान	२०
''	अलुमाइदः	६
७-	'' ''	६२
''	'' ''	६६
१३-	अररअ़द	४०
२५-	अश्शूरा	४८
५-	अन्निसा	१०२
५-	अतुतौबः	१०३
५-	अन्निसा	६५
५-	'' ''	१०५
४-	आलेअिम्रान	१२१
५-	अन्निसा	८४
१०-	अलुअन्फ़ाल	५७
''	अलुअन्फ़ाल	६५
''	अलुअन्फ़ाल	७०
४-	आलेअिम्रान	१५६

तक़दीरे इलाही का ज़िक्र

पारा	सूरः	आयत
११-	यूनुस	५
१४-	अलुहिज्र	२१
''	'' ''	६०
१८-	अलुमूमिन	१८
१८-	अलुफ़ुर्क़ान	२
२२-	अलुअहज़ाब	३८
२२-	अस्सबा	१८
२३-	यासीन	३६
२४-	हामीम् सज्दः	१०
२५-	अश्शूरा	२७
२७-	अलुक़मर	१२
''	'' ''	४६
''	अलुवाक़िअः	६०
२६-	अलुमुज़म्मिल	२०
२६-	अलुमुर्सलात	२२
''	'' ''	२३
३०	अ-ब-स	१६
''	अलुअअ़ला	३

क़ियामत से पहले

पारा	सूरः	आयत
१६-	अलुकहफ़	६८-६६
१७-	अलुअंबिया	६६
२०-	अनुनम्ल	८२
२५-	अज्जुख़रूफ़	६१

पारा	सूरः	आयत
२५-	अद्दुख़ान	१०-११
२६-	मुहम्मद	१८
२७-	अन्नज्म	७-५८
''	अलुक़मर	१
२६-	अलुमआ़रिज	६-७

मरने के बाद जीने का सुबूत

पारा	सूरः	आयत
१-	अलुबक़रः	७२
७-	'' ''	२५६
८-	अलुअअ़राफ़	२६
''	'' ''	५७
१४-	अन्नहल	३८
१५-	बनी इस्राईल	६८
''	अलकहफ़	२१
१६-	मरयम	६६
''	ताहा	१५
१७-	अंबिया	१०४
''	अलुहज	५-७
२०-	अन्नम्ल	८६
२०-	अन्कबूत	१६
२१-	अर्रूम	१६
''	'' ''	२७
''	'' ''	५०
२२-	अस्सबा	३
२२-	अलुफ़ातिर	६
२३-	यासीन	३३
''	'' ''	७८
२३-	अस्साफ़्फ़ात	११
''	साद	२७
२४-	अज्जुमर	४२
२४-	अलुमूमिन	५७
''	हामीम् सज्दः	३८
२५-	अद्दुख़ान	३६
''	अलुजासिया	२१
२६-	अलुअहक़ाफ़	३
''	'' ''	३३
''	क़ाफ़	६-११
''	अज़्ज़ारियात	१-६
२७-	अतुतूर	१-१०
२७-	अलुवाक़िअः	५७
२६-	अलुक़ियामः	३-४
''	अलुमुर्सलात	१-७
३०-	अन्नबा	६-१७
''	अन्नाज़िआत	२७-३२
''	अतुतारिक़	५
''	अतुतीन	४-८

नाफ़रमानों का दुनिया की ओर लौटने की तमन्ना करना

पारा	सूरः	आयत
१३-	इब्राहीम	४४
२१-	अस्सज्दः	१२
२५-	अश्शूरा	४४

नाफ़रमानी का अपने मअ़बूदों से दुश्मनी

पारा	सूरः	आयत
२-	अलुबक़रः	१६६
२१	अर्रूम	१३

पाकी का बयान और गुस्ल के मसायल

पारा	सूरः	आयत
६-	अलुमाइदः	६
५-	अन्निसा	४३
२-	अलुबक़रः	२२२

वुज़ू का बयान

पारा	सूरः	आयत
६-	अलुमाइदः	६
६-	'' ''	६

तयम्मुम का बयान

पारा	सूरः	आयत
५-	अन्निसा	४३

नमाज़ का बयान

पारा	सूरः	आयत
१-	अलुबक़रः	४३
१-	'' ''	१२५
२-	'' ''	२३८
५-	अन्निसा	१०१-१०३
१५-	बनी इस्राईल	७८-७६
१५-	'' ''	११०
१६-	ताहा	१३०
१८-	अलुमूमिनून	२
''	'' ''	६
२१-	अलुअन्कबूत	४५
२८-	अलुजुमुअः	६
३०-	अलुमाऊन	४-६

ज़कात का बयान

पारा	सूरः	आयत
२-	अलुबक़रः	२१५
३-	'' ''	२६७
''	'' ''	२७१
''	'' ''	२७३
८-	अलुअन्आ़म	१४१
१०-	अत्तौबः	६०
१८-	अन्नूर	५६
१६-	अलुफ़ुर्क़ान	६७
२१-	अर्रूम	३६
२६-	अद्दहर	८-६

रोज़ों का बयान

पारा	सूरः	आयत
१-	अलुबक़रः	१२५
२-	'' ''	१८३
३-	'' ''	१८७
''	'' ''	१८७

पारा	सूरः	आयत
२५-	अद्दुख़ान	३-५
३०-	अलक़द्र	१-५

हज का बयान

पारा	सूरः	आयत
१-	अलबक़रः	१२५
४-	आलेअिम्रान	९६-९७
१७-	अलहज	२६-२७
२-	अलबक़रः	१९७-१९९
१७-	अलहज	२६
१-	अलबक़रः	१२५
२-	अलबक़रः	१५८
२-	” ”	१९४
२६-	अलफ़त्ह	२७
६-	अलमाइदः	१
७-	” ”	९५
”	” ”	९६
२-	अलबक़रः	१९६
७-	अलमाइदः	९७
१७-	अलहज	२८
१७-	अलहज	३०-३३
”	” ”	३६-३७
७-	अलमाइदः	९५
२-	अलबक़रः	१९६

निकाह का बयान

पारा	सूरः	आयत
४-	अन्निसा	३
२-	अलबक़रः	२२१
५-	अन्निसा	२३-२४
५-	अन्निसा	२५
२-	अलबक़रः	२३६
५-	अन्निसा	२४
२०-	अलक़सस	२७
२२-	अलअहज़ाब	५०
१८-	अन्नूर	३२
५-	अन्निसा	१२९

दूध पिलाने और छुड़ाने की मुद्दत

पारा	सूरः	आयत
२-	अलबक़रः	२३३
२६-	अलअहक़ाफ़	१५

तलाक़ का बयान

पारा	सूरः	आयत
२-	अलबक़रः	२२९
२-	अलबक़रः	२३१
२-	” ”	२३२
२-	” ”	२३०
२-	” ”	२२८
२-	” ”	२२६
२-	” ”	२२९
२-	” ”	२२८
२-	” ”	२३४
२-	” ”	२४०
२१-	अलअहज़ाब	२८
२८-	अलमुजादिला	२-४

पारा	सूरः	आयत
१८-	अन्नूर	६
२२-	अलअहज़ाब	४९
२८-	अत्तलाक़	४
”	” ”	६-७

चोरी की सज़ा का बयान

पारा	सूरः	आयत
६-	अलमाइदः	३८
”	” ”	३३

ज़ानी की सज़ा

पारा	सूरः	आयत
४-	अन्निसा	१५-१६
१८-	अन्नूर	२-४

पर्दे का हुक्म

पारा	सूरः	आयत
१८-	अन्नूर	२७-३१
”	” ”	५८-६०
२२-	अलअहज़ाब	५३-५५
”	” ”	५९

मीरासा और वसीयत का बयान

पारा	सूरः	आयत
२-	अलबक़रः	१८०-१८२
”	” ”	२४०
४-	अन्निसा	७-८
”	” ”	११-१२
७-	” ”	३३
५-	” ”	१७७
६	अलमाइदः	१०६
१०-	अलअन्फ़ाल	७५

ख़रीदने और बेचने का बयान

पारा	सूरः	आयत
२-	अलबक़रः	१९८
५-	अन्निसा	२९
१८-	अन्नूर	३७
२८-	अलजुमुअः	१०
२९-	अलमुज़म्मिल	२०

सूद का बयान

पारा	सूरः	आयत
३-	अलबक़रः	२७५
३-	” ”	२७८
६	अन्निसा	१६१

जिहाद और ग़ज़्वे का बयान

पारा	सूरः	आयत
३-	आलेअिम्रान	१३
९-	अलअन्फ़ाल	५-१८
१०-	” ”	४१-४४
”	” ”	४८
४-	आलेअिम्रान	१२१-१२७
”	” ”	१४०-१४३
”	” ”	१५२-१५५
’’’	’ ”	१६५-१७३
२८-	अलहश्र	२-६
४-	आलेअिम्रान	१७२-१७५
२१-	अलअहज़ाब	९-२५

पारा	सूरः	आयत
२१-	” ”	२६-२७
२६-	अलफ़त्ह	१
३०-	अन्नसर	१
१०-	अत्तौबः	२५-२६
१०-	अत्तौबः	४२-५६
१०	” ”	८१-८३
”	” ”	९६

दुश्मन के साथ व्यवहार

पारा	सूरः	आयत
१०-	अन्फ़ाल	५६-५८
१०-	” ”	६०-६३
१०-	अत्तौबः	१-४
१०-	” ”	६
३-	अलमाइदः	८
६-	” ”	४१-४२

इस्लाम क़बूल करने में ज़बर्दस्ती नहीं

पारा	सूरः	आयत
२-	अलबक़राः	२५६-२५७
”	” ”	१९
”	” ”	१९१

वालिदैन और पड़ोसियों के हुक़ूक़

पारा	सूरः	आयत
२-	अलबक़रः	२७७
५-	अन्निसा	३६
१८-	अन्नहल	९०
१५-	बनीइस्राईल	२३-२५
”	” ”	२६-२८
१६-	मरयम	१४
”	” ”	५५
१६-	ता-हा	१३२
१८-	अन्नूर	२२
२०-	अन्कबूत	८
२१-	अर्रूम	३८
”	लुक़मान	१४-१५
”	अलअहज़ाब	६
२६-	” ”	१०
२८-	तहरीम	६
३०-	अलबलद	१५

शौहर और बीवी के हुक़ूक़

पारा	सूरः	आयत
२-	अलबक़रः	१८७
”	” ”	२२३
”	” ”	२२९
”	” ”	२३१
”	” ”	२३३
४-	अन्निसा	३-४
५	” ”	३४-३५
५	” ”	१२८
”	” ”	१२९-१३०
२८-	अत्तग़ाबुन	१४
”	अत्तलाक़	६-७

विज्ञान और खगोल विद्या

पारा	सूरः	आयत
१-	अल्बक़रः	२६
१-	” ”	११७
२-	” ”	१६४
२-	” ”	१८६
३-	” ”	२५५
३-	आलेअिम्रान	२७
४-	” ”	१६०
४-	” ”	१६१
४-	अलुअन्आम	१
४-	” ”	१४
५-	” ”	७३
५-	” ”	७६
५-	” ”	६६
५-	” ”	६७
५-	” ”	१०१
८-	अलुअअ़राफ़	५४
१-	” ”	१८५
१०-	अत्तौबः	३६
११-	यूनुस	५
११-	” ”	६
१२-	हूद	७
१३-	अर्रअ़द	२
१३-	इब्राहीम	३२
१३-	” ”	३३
१४-	अलुहिज्र	१६-१८
१४-	अन्नहल	१२
१४-	” ”	१६
१५-	बनी इस्राईल	१२
१५-	अलुकहफ़	१७
१५-	” ”	२५
१५-	” ”	२६
१७-	अलुअंबिया	१३
१७-	” ”	३०
१७-	” ”	३२
१७-	” ”	३३
१७-	अलुहज	६१
१७-	” ”	६५
१८-	अलुमोमिन	१७
१८-	” ”	७१
१८-	” ”	८१
१८-	अन्नूर	४४
१६-	अलुफ़ुर्क़ान	४५-४७
१६-	” ”	५६
१६-	” ”	६१
१६-	” ”	६२
२०-	अन्नम्ल	८२
२०-	अलुक़सस	७१
२०-	” ”	७१
२१-	अलुअन्कबूत	६१

पारा	सूरः	आयत
२१-	अर्रूम	२५
२१-	लुक़्मान	१०
२१-	” ”	२६
२१-	अस्सज्दः	४
२१-	” ”	५
२२-	फ़ातिर	१३
२३-	” ”	४१
२३-	या-सीन	३६
२३-	” ”	४०
२३-	अस्साफ्फ़ात	६
२३-	अज़्ज़ुमर	५
२४-	” ”	६३
२४-	अलुमोमिन	६१
२४-	” ”	६४
२४-	ह० मीम्० अस् सज्दः६-१२	
२४-	” ”	३७
२५-	” ”	५३
२५-	अश्शूरा	१२
२५-	” ”	२७
२५-	अज़्ज़ुखरूफ़	१२
२६-	क़ाफ़	६
२६-	अज़्ज़ारियात	७
२७-	” ”	४७
२७-	अर्रहमान	५
२७-	” ”	७
२७-	” ”	१७
२७-	” ”	२६
२७-	” ”	३३
२७-	” ”	३७
२७-	अलुवाक़िअः	७५
२७-	” ”	७६
२७-	अलुहदीद	६
२८-	अत्तलाक़	१२
३६-	अलुमुल्क	३-५
२६-	अलुमआरिज	८
२६-	” ”	४०
२६-	नूह	१५
”	” ”	१६
३०-	अन्नाज़िआत	२७
३०-	” ”	३२
३०-	अत्तकवीर	१५
३०-	” ”	१८
३०-	अलुइन्शिक़ाक़	१६
३०-	” ”	१६
३०-	अलुबुरूज	१
३०-	अत्तारिक़	१-३
३०-	अलुग़ाशियः	१८
३०-	अश्शम्स	१-६
३०-	अल्लैल	१-२
३०-	अज़्ज़ुहा	१-२

इन्सानों की पैदाइश

पारा	सूरः	आयत
३	आलेअिमरान	६
४	अन्निसा	१
७	अलुअन्आम	२
८	अलुअअ़राफ़	११
६	” ”	१८६
१३	अर्रअ़द	१४
१४	अन्नहल	१४
”	” ”	७८
१६	अहक़ाफ़	३७
१६-	मरयम	६७
१६-	ता०हा	५०
१७-	अलुहज	५
१८-	अलुमोमिनून	१४-१५
”	” ”	७८
२१-	अर्रूम	२१-२२
”	लुक़मान	१४-३१
”	अस्सज्दः	६
२२-	फ़ातिर	११
२३-	सअ़द	७१-७६
२३-	अज़्ज़ुमर	६
२४-	अलुमोमिन	६४-६७
२५-	अश्शुअ़रा	११
२६-	अलुअहक़ाफ़	१५
२७-	अत्तूर	३-५
२७-	अन्नज्म	३२-४२
”	” ”	४७
२८-	अलुवाक़ियः	५८-५६
”	अत्तग़ाबुन	३
”	अत्तलाक़	५-१०
२६-	अलुमुल्क	२३-२४
”	नूह	१४
”	अलुक़ियामः	३७-४०
”	अद्दहर	१-२
”	अलुमुर्सलात	२०-२३
३०-	अ-ब-स	१७-२२
”	अलुइन्फ़ितार	६-८
”	अलुअ़लक़	१-२

अफ़वाहें फ़ैलाने की मुमानियत

पारा	सूरः	आयत
५-	अन्निसा	८३

मज़लूम की मदद

पारा	सूरः	आयत
१७-	अलुहज	६०

गवाही छिपाने की मुमानियत

पारा	सूरः	आयत
३-	अलुबक़रः	२८३
२६-	अलुमआरिज	३३

क़ुर्आन की सूरतें एक नज़र में

सूरः फ़ातिह़ा– यह क़ुर्आन की पहली सूरः है, इस में अल्लाह ने अपने बन्दों को यह सिखाया है कि हिदायत व इस्लाह के लिए, हम से किस तरह दरख़्वास्त करो।

बक़रः– यह सूरः फ़ातिह़ा के बाद है इस में इस दरख़्वास्त की मन्ज़ूरी है, और हिदायत की किताब का अ़ता होना और हिदायत के उसूल व मसायल का बयान है।

आले अ़िमरान– इस सूरः में आख़िरत का बयान है, नेकी व बदी की जज़ा व सज़ा का ज़िक्र है। जिस का अहले हिदायत को जानना ज़रुरी है, इसी तरह जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह का बयान और तक़वा अख़्तियार करने की तर्ग़ीब है।

निसा– इसमें वह मामलात हैं जो मुख़ालिफ़ीन के साथ हुए हैं। दूसरे आपसी मामलात, और तीसरे अल्लाह व बन्दे के दर्मियान मामलात हैं।

माइदा– इस सूरः में अल्लाह ने ज़्यादहतर अहकामात ज़िक्र किये हैं।

अनआ़म– इसमें तौह़ीद रिसालत व उसूले शरीअ़त का ज़िक्र है। मुन्किरीन की हठधर्मी और उन की वअ़ीद, झुठलाने वालों के ह़ालात, मुख़ालिफ़ीन के रुसूम और दीने ह़क़ की दअ़वत है।

अअ़राफ़– इसमें दीने ह़क़ की तब्लीग़ का हुक्म है, नुबूव्वत और मुश्रिकीन के हठधर्मी व फ़साद का ज़िक्र है।

अन्फ़ाल– इस में उस वबाल का बयान है जो इस जहल व हठधर्मी की वजह से उन पर आया और उस के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम हैं, इसमें मुन्किरीन व मोमिनीन दोनों को ख़िताब है।

तौबः– अन्फ़ाल में मुश्रिकीन की हठधर्मी व वबाल का ज़िक्र है। इस में एलाने अह़द और कुफ़्फ़ार का बयान है।

यूनुस– इसमें कुफ़्फ़ार, शिर्क, तौह़ीद व रिसालत का बयान है और दीने ह़क़ की तरफ़ इशारा है।

हूद– इस में दीने ह़क़ की ह़क़ीक़त बयान की गई है।

यूसुफ़– चूंकि कुफ़्फ़ार के अ़मल से रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तकलीफ़ होती थी और कुफ़्फ़ार इस्लाम की राह़ में रोड़े अटकाते थे। उस पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को रंज होता था। इस सूरः में ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का क़िस्सा बयान करके आप को तसल्ली दी गई है, और दिखाया गया है कि मुख़ालिफ़ीन से अहले ह़क़ को नुक़्सान नहीं पहुँचता। आख़िर में तौह़ीद व रिसालत का वादा, वअ़ीद और ह़क़ीक़ते क़ुर्आन का जमाल ज़िक्र किया गया है।

रअ़द– इस में सूरः यूसुफ़ के आख़िरी मज़ामीन की तकमील की गई है, और रिसालत, ह़क़ीक़ते क़ुर्आन और वादा वअ़ीद का ज़िक्र है।

इब्राहीम– इस में मज़मूने रिसालत की तक्मील और तौह़ीद व आख़िरत का ज़िक्र है।

ह़िज्र– क़ियामत के बाद सज़ा व जज़ा के बयान की ज़रूरत थी, वह इस सूरः में है और तौह़ीद और ह़क़ीक़ते क़ुर्आन व रिसालत का ज़िक्र है।

नह़ल– इसमें तौह़ीद के दलायल का ज़िक्र है।

बनी इस्राईल–	तौहीद के कुछ वाक़िआत तर्गीब के लिए बयान किये गये हैं।
कहफ़–	इस में मज़ामीने तौहीद के साथ शिर्क रिसालत व हिकारते दुनिया, जज़ा व सज़ा और तकब्बुर का बयान है।
मरयम	सूरः कहफ़ का ख़ात्मा तौहीद व रिसालत पर है इस में उस को पूरा किया गया है।
ताहा–	सूरः मरयम के मज़ामीन की तक्मील और उन का बयान है।
अम्बिया–	इस में तौहीद व नुबूव्वत और आख़िरत की तहक़ीक़ है।
हज–	इस में नुबूव्वत के मुतअ़ल्लिक़ शुब्हात का जवाब है और मरने के बाद हिसाब-किताब जन्नत दोज़ख़ और क़ियामत का ज़िक्र है।
मोमिनून–	सूरः हज का ख़ात्मा नमाज़ व ज़कात के बयान पर है। इस में उन की ताकीद व तफ़्सील है, और अच्छे अख़लाक़ के मज़ामीन हैं।
नूर–	पिछली सूरः के आख़िर में बयान था कि इन्सान की पैदाईश में एक हिकमत यह भी है कि उस को अहकाम का मुकल्लफ़ किया जाए और आख़िरत में जज़ा व सज़ा दी जाए। इसी सूरः में अहकामे अ़मलिया और तौहीद व रिसालत पर ईमान लाने का बयान है।
फ़ुर्क़ान–	इस में शिर्क व मुश्रिकीन के बयान के साथ रिसालत का बयान, अ़ामाले फ़ाज़िला व आख़िरत का ज़िक्र है।
शुअ़रा–	रिसालत व क़ुर्आन की हक़्क़ानियत, दलायल तौहीद और मुन्किरीन के अन्जाम का बयान है।
नहल–	इस में पिछले मज़ामीन की तकमील और तौहीद का बयान है।
अ़नकबूत–	इस सूरः में दीन पर इस्तिक़ामत का ज़िक्र है।
रूम–	इस में बाज़ वाक़िआत ऐसे बयान हुए हैं जो अहले ईमान की तक़्वियत व ख़ुशी का बाइस हों और इस्बाते तौहीद और बाज़ अ़ामाल का ज़िक्र है।
लुक़मान–	इस में शिर्क और लुक़्मान को हिकमत अ़ता होने का ज़िक्र है।
सज्दः	इसमें किताबे हिकमत की हक़ीक़त रिसालत व इन्कारियों का जवाब है।
अहज़ाब–	पिछली सूरः का इख़्तिताम कुफ़्फ़ार के जवाब पर था कि वह रसूल करीम (सल्ल०) से कहते थे कि आप जिस फ़ैसले को कहते हैं यानी फ़ैसला आख़िरत, वह कब होगा? और यह एतिराज़ हिकारत व तज़लील से करते थे। इस सूरः में उन के जवाब में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मदद का ज़िक्र है।
सबा–	पिछली सूरः का ख़ात्मा हम्दे इलाही पर था इस की इब्तिदा हम्द से है, और बयाने तौहीद व रिसालत का ज़िक्र है।
फ़ातिर–	इसमें पिछले मज़मून तौहीद की तक्मील और शिर्क व रिसालत का ज़िक्र है।
यासीन–	इस में रिसालत, और इस्बाते तौहीद है।
साफ़्फ़ात–	दलायले तौहीद, आख़िरत व रिसालत का ज़िक्र है।
साद–	मुन्किरीन रिसालत की मज़म्मत, रिसालत की दलील और तौहीद का ज़िक्र है।
ज़ुमर–	इसमें तौहीद, शिर्क और झुठलाने वालों की मज़म्मत है।

मोमिन–	तौह़ीद पर इस्तिदलाल, और रिसालत का ज़िक्र है।
हामीम सज्दः–	इसमें तौह़ीद, सब्र, क़ुर्आन और मुन्किरीन का ज़िक्र है।
शूरा–	इसमें तौह़ीद, शिर्क, आख़िरत में बदला का ज़िक्र है।
ज़ुख़रूफ़–	इसमें तह़क़ीरे दुनिया, शिर्क, वह्य और रिसालत का ज़िक्र है।
दुख़ान–	इसमें तौह़ीद व आख़िरत का ज़िक्र है।
जासिया–	इसमें तौह़ीद के सुबूत और आख़िरत का ज़िक्र है।
अह़क़ाफ़–	इसमें तौह़ीद व आख़िरत का ज़िक्र है।
मोह़म्मद–	इसमें मुन्किरीन की मज़म्मत का ज़िक्र है।
फ़तेह़–	इसमें ह़क़ पर क़ायम रहने वालों की कामियाबी का ज़िक्र है।
ह़ुजुरात–	पहली सूरत में जिहाद का ज़िक्र है और इस में नफ़्स की इस्लाह़ का बयान है।
क़ाफ़–	इस में मरने के बाद उठाये जाने और बदला दिये जाने का ज़िक्र है।
अलज़ारियात–	इसमें दोबारा ज़िन्दा करने और इंकार करने वालों की सज़ा और क़ियामत के दिन का बयान है।
तूर–	इसमें मोमिनों के लिए वादा और तौह़ीद व रिसालत का ज़िक्र है।
नज्म–	इसमें तौह़ीद व रिसालत का ज़िक्र है।
क़मर–	इसमें क़ियामत का ज़िक्र है।
रह़मान–	इसमें अल्लाह की नेअ़मतों का और जन्नत व जहन्न का ज़िक्र है।
वाक़िअ़ः–	इसमें क़ियामत दोज़ख़ व जन्नत का ज़िक्र तफ़्सील से है।
हदीद–	इसकी शुरुआत तस्बीह़ से है, फिर आख़िरत का ज़िक्र है।
मुजादिला–	इसमें अल्लाह की सिफ़ात का ज़िक्र है, और मुनाफ़िक़ो की मज़म्मत की गई है।
ह़श्र–	इसमें यहूद से बुग्ज़ व अदावत का ज़िक्र है।
मुम्तह़िना–	पिछली सूरः में मुनाफ़िक़ों की यहूद से दोस्ती रखने में मज़म्मत थी। इसमें मुसलमानों को कुफ़्फ़ार से तअ़ल्लुक़ात और मुश्रिकों से निकाह़ करने की मुमानियत है।
सफ़–	इसमें काफ़िरों से क़िताल का ज़िक्र है।
जुमअ़ः–	इसमें यहूद के दोस्तों और मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र है।
मुनाफ़िक़ून–	इसमें यहूद के दोस्तों और मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र है।
तग़ाबुन–	इसमें आख़िरत और औलाद के वबाले जान होने का ज़िक्र है।
त़लाक़–	इसमें ह़ुक़ूक़ और तलाक़ के तरीक़े का ज़िक्र है।
तह़रीम–	इसमें पिछले मज़मून को पूरा करके रिसालत का ज़िक्र है।
मुल्क–	इसमें तौह़ीद के ख़िलाफ़ करने पर उसकी सज़ा का ज़िक्र है।
क़लम–	इसमें नुबूव्वत के इन्कार करने वालों का और काफ़िरों का दुनिया में बदला और आख़िरत की सज़ा का ज़िक्र है।
ह़ाक़्क़ः–	इसमें क़ुर्आन के ह़क़ होने का ज़िक्र है।

मआ़रिज–	इसमें वह्य का ज़िक्र है।
नूह़–	इसमें ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) को झुठलाने का वबाल और रसूल को न मानने की सज़ा का ज़िक्र है।
जिन्न–	इसमें तौह़ीद व रिसालत का ज़िक्र है और काफ़िरों को तौह़ीद व रिसालत पर ईमान लाने की तर्ग़ीब है।
मुज़म्मिल–	इसमें उनके ईमान न लाने पर रसूल (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है।
मुद्दस्सिर–	इसमें न मानने वालों को डराया गया है और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है।
क़ियामः–	इसमें आख़िरत का ह़ाल तफ़्सील से बयान किया गया है।
दहर–	इसमें क़ियामत का ज़िक्र है।
मुर्सलात–	इसमें आख़िरत का ज़िक्र है।
नबा–	इसमें क़ियामत और वाक़िआ़त, जज़ा व सज़ा का बयान है।
नाज़िआ़त–	इसमें आख़िरत और झुठलाने वालों के अंजाम का ज़िक्र है।
अ़–ब–स–	इसमें भी आख़िरत का ज़िक्र है।
तकवीर–	इसमें क़ियामत का ज़िक्र है।
इन्फ़ितार–	इसमें भी क़ियामत का ज़िक्र है।
मुतफ़्फ़िफ़ीन–	इसमें बन्दों के ह़क़ और कुछ आ़माल का ज़िक्र है।
इन्शिक़ाक़–	इसमें क़ियामत का ज़िक्र है।
बुरूज–	इसमें अहले ईमान को तसल्ली और कुफ़्फ़ार के लिए वई़द है।
तारिक़–	इसमें आख़िरत में उठाये जाने की दलील है।
आ़ला–	इसमें क़ुर्आन का ज़िक्र और आख़िरत में कामियाबी का ज़िक्र है।
ग़ाशिया–	इसमें आख़िरत पर यक़ीन करने और न करने वालों का बदला और अल्लाह की क़ुदरत और उसके निशानियों का ज़िक्र है।
फ़ज्र–	इसमें ह़क़ को मानने और न मानने वालों के अन्जाम का ज़िक्र है।
बलद–	इसमें अच्छे और बुरे आ़माल का ज़िक्र है।
शम्स–	इसमें ईमान और कुफ़्र का ज़िक्र है।
लैल–	इसमें तस्दीक़ करने और झुठलाने वालों के अन्जाम का ज़िक्र है।
ज़ुह़ा–	इसमें रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर किये गये इनआ़म और कुछ आ़माल का ज़िक्र है।
अलम नशरह़–	इसमें रसूलुल्लाह (सल्ल०) के फ़ज़ाइल के ज़िक्र के साथ दो तरक़्क़ी के रुक्न का ज़िक्र है।
तीन–	इसमें इन्सानों के अच्छे अ़मल करने में तरक़्क़ी करने वालों के इनआ़म का ज़िक्र है।
इक़रा–	इस में इन्सान की फ़ज़ीलत और उसकी तरक़्क़ी और सरकशी का ज़िक्र है।
क़द्र–	इस में इन्सान की फ़ज़ीलत और हिदायत की किताब का ज़िक्र है।
बय्यिनः	इसमें ईमान लाने और उसके बदले का ज़िक्र है।
ज़िल्ज़ाल–	इसमें बदला मिलने का वक़्त और नेकी व बदी के अन्जाम का ज़िक्र है।

आ़दियात- इसमें ईमान न कुबूल करने वालों की हठधर्मी और क़ब्र से उठने और आख़िरत में हाज़िर होने का ज़िक्र है।

क़ारिअ़ः- इसमें अल्लाह के पास ह़ाज़िर होने की यानी क़ियामत की ख़बर दी गई है।

तकासुर- इसमें बताया गया है कि दुनिया के माल की लालच में ग़ाफ़िल न हो जाओ और याद रखो कि अल्लाह की नेअ़मतों के बारे में सवाल होगा।

अ़स्र- इसमें बताया गया है कि दुनिया का माल ह़ासिल करना कामियाबी नहीं, बल्कि लालच में पड़ना नुक़्सान की बात है।

हु़म्जः- इसमें नुक़्सान में पड़ने के ज़रिये का बयान है।

फ़ील- इसमें अल्लाह की क़ुदरत का बयान है ।

क़ुरैश- इसमें क़ुरैश वालों से कहा गया है कि अल्लाह ने कअ़बः को बचा लिया अब तुम बुतपरस्ती छोड़कर इस घर के रब पर ईमान ले आओ, इसलिए उन पर किया गया इनआ़म याद दिलाया गया है।

माऊ़न- इसमें उन रुहानी मर्ज़ों का ज़िक्र है जो इन्सान की ज़ाहिरी और बातिनी ख़राबी का ज़रिया होते हैं।

कौसर- इसमें ज़िक्र ख़ैर को बताकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तरफ़ इशारा किया गया है कि आप कामियाब हैं।

काफ़िरून- इसमें कहा गया है कि ऐ मुह़म्मद (सल्ल०)! आप एलान कर दीजिए इन काफ़िरों से कि मैं तुम्हारे मअ़बूदों की पूजा नहीं कर सकता, चाहे तुम कितनी ही कोशिश कर लो या कितनी ही लालच दो और तुमसे भी मुझे उम्मीद नहीं है।

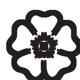
नस्र- इसमें दुनिया में अल्लाह का हुक्म कुबूल करने वालों के लिए मदद का ज़िक्र है।

लहब- इसमें बताया गया है कि अल्लाह के हुक्म न मानने वालों के लिए दुनिया व आख़िरत में नुक़्सान है और मुश्रिकीन बड़े घाटे में हैं।

इख़्लास- इसमें तौह़ीद और उस पर ईमान लाने की तर्ग़ीब है।

फ़लक़- इसमें हर बुराई से अल्लाह की पनाह चाही गई है।

नास- इसमें इन्सान और जिन्नात की बुराई से पनाह चाही गई है।



नाम	मूल्य
33. सूर-ए- फ़ातिहा की तफ़्सीर	30 रू.
34. तौहीद की हक़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
35. पवित्र क़ुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम	30 रू.
36. इस्लाम धर्म तलूवार से फैला या सदाचार से	60 रू.
37. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)	60 रू.
38. मीरास की तक़्सीम	30 रू.
39. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अअ़माले हस्ना की रौशनी में)	60 रू.
40. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही	40 रू.
41. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल (शरीअ़त की रोशनी में)	30 रू.
42. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में	20 रू.
43. सृष्टि का सृष्टा कौन?	30 रू.
44. प्राकृतिक नियम, ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास	40 रू.
45. इस्लामी विरासत एक नज़र में	20 रू.
46. इस्लाम?	10 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब द्वारा लिखित उर्दू पुस्तकें

नाम	मूल्य
47. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	140 रू.
48. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब	50 रू.
49. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी	40 रू.
50. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात	40 रू.
51. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा	40 रू.
52. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद	40 रू.
53. अ़ामाल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत	40 रू.
54. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम	40 रू.
55. उम्मते मुहम्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार और बनी इस्राईल	40 रू.
56. कायनात के अ़जायबात और इन्सान का अल्लाह से तअ़ल्लुक़	40 रू.
57. ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)	50 रू.
58. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर	50 रू.
59. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के हुक़ूक़	50 रू.
60. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रूफ़	90 रू.
61. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में।	40 रू.
62. बौद्ध धर्म और इस्लाम	40 रू.
63. कलिमा-ए-तय्यबः की हक़ीक़त और उस के तक़ाज़े	80 रू.
64. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में	80 रू.

नाम	मूल्य
65. अल्लाह तआला का तआरुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल	70 रू.
66. क़ियामत तक के फ़ित्नें (रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पेशीनगोई की रोशनी में)	70 रू.
67. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
68. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत	50 रू.
69. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल	70 रू.
70. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
71. रसलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (मुस्तनद कुतुबे सीरत की रोश्नी में)	40 रू.
72. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती (सवाल व जवाब की रोशनी में) 30 रू.	
73. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	80 रू.
74. जन्नत के हालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र	80 रू.
75. कुफ़्र व शिर्क की हक़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	80 रू.
76. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सहाबा से मुतअ़ल्लिक़ अक़ीदा	80 रू.
77. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाने की मुमानिअ़त	60 रू.
78. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
79. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा	40 रू.
80. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल	40 रू.
81. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
82. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
83. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह़क़ीक़त	40 रू.
84. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)	50 रू.
85. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़	30 रू.
86. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआ़त और चन्द तफ़ासीर का तआ़रुफ़	30 रू.
87. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	120 रू.
88. इस्लामी मआ़शियात का तक़ाबुली जायज़ा	40 रू.
89. इस्लाम का ज़रई निज़ाम	40 रू.
90. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत	40 रू.
91. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अक़ायद	80 रू.
92. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम	50 रू.
93. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)	60 रू.
94. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें	30 रू.
95. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात	30 रू.
96. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी	60 रू.
97. मुस्तनद मस्नून दुआ़एँ	20 रू.
98. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर	50 रू.
99. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा	30 रू.
100. अअ़माले ह़स्ना (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	100 रू.

नाम	मूल्य
101. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**50 रू.**
102. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**50 रू.**
103. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**50 रू.**
104. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**90 रू.**
105. ख़ातिमुन्नबीईन (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**90 रू.**
106. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80 रू.**
107. नबियों की जीवनी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**100 रू.**
108. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60 रू.**
109. इ़ल्म से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
110. तहारत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
111. ह़िफ़ाज़ते क़ुर्आन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
112. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60 रू.**
113. ई़दैन व जुमअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**50 रू.**
114. तरावीह़ व एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**50 रू.**
115. सफ़र और सद्क़-ए-फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60 रू.**
116. क़ुर्बानी से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60 रू.**
117. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80 रू.**
118. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60 रू.**
119. ह़िबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
120. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
121. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80 रू.**
122. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक मसायल(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
123. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
124. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
125. तर्बियत, रज़ाअ़त व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80 रू.**
126. ज़कात से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80 रू.**
127. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
128. इमामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
129. क़िरत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
130. सज्द-ए-तिलावत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
131. इस्लामी पर्दा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80 रू.**
132. मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**

मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब की अ़रबी पुस्तकें

133. ग़ज़्व-ए-हुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविल् क़ुर्आन	**120 रू.**
134. अल्हिन्दूसिया मुबादिओहा व अक़ाइदोहा, मुनज़्ज़िमातुहा व अहदाफ़ुहा	**140 रू.**

नाम	मूल्य
135. ज़िक्र मुहम्मदिन (सल्ल०) फ़िल् वेद	80 रू.
136. सिफ़ातु रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम	80 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब की अंग्रेज़ी पुस्तकें

137. मुहम्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण	40 रू.
138. मुहम्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप	30 रू.
139. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम	80 रू.
140. दी स्वाड आफ़ इस्लाम	40 रू.
141. अज़ान, ए कालिंग फ़ार ह्यिूमेनिटी	40 रू.
142. इस्लाम?	10 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब की अनुवाद की हुई पुस्तकें

143. मुन्तख़ब अहादीस (लेखक- हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह०)	60 रू.
144. क़ादियानियत नुबूवते मुहम्मदी के ख़िलाफ बग़ावत (लेखक- इमामे हरम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल)	40 रू.
145. अक़ीदतुल् वास्तिया (लेखक- अहमद बिन अ़ब्दुल हलीम इब्ने तैमिया रह०)	60 रू.
146. सलासिले अरबअ़ (लेखक-हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अ़ली नदवी रह०)	30 रू.
147. दारे अरक़म का एहसान इन्सानी दुनिया पर (लेखक-हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी रह०)	30 रू.
148. मानवता आज भी उसी चौखट की मुहताज़ है (लेखक- मौलाना मुहम्मद हसनी रह०)	30 रू.
149. रमज़ान का तोहफ़ा (लेखक- मौलाना मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी)	20 रू.
150. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार (लेखक- मौलाना मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी)	20 रू.
151. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन? (विचारक- मुहम्मद मुस्तफ़ा क़ादरी) (तस्हीह व तर्तीब- मु० मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी)	30 रू.
152. यतीमों की किफ़ालत (लेखक-मुहम्मद आमिर सिद्दीक़ी नदवी)	40 रू.

ज़ेरे तबाअ़त पुस्तकें

153. सूद से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
154. किरायेदारी से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
155. कारोबार में शिरकत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
156. सुन्नत व नवाफ़िल से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
157. रोज़ः रुयते हिलाल से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
158. इल्म व उ़ल्मा से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
159. तक़्लीद व इज्तिहाद की शरई हैसियत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
160. सज्द-ए-सह्व के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
161. बिद्अ़त की नहूसत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
162. हैज़ व निफ़ास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
163. ग़ैर मुस्लिमों से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
164. दो सौ समाजी मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
165. इस्लाम के अ़दालती फ़ैसले (तारीख़ व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.